

स्थापित वि. संवत् १९३२
(१८७५ ई.)

ॐ गणेशाय नमः

कवितकर्ता पं. पद्म लाल ज्योतिषी एम. ए. प्रौढ पं. देवी दयालु ज्योतिषी (लखनौ) की अतर्ही व प्रामाणिक एवं २००९-०६ ई.

दिल्ली की दैनिक लगन सारणी सहित

गौरवशाली प्रकाशन वर्ष १३०वाँ



एक मात्र वितरक :

मॉडर्न पब्लिशर्स

रेलवे रोड, जालन्धर

फोन : 2457160

मशहूर आलम

पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी

माई हीरां गेट (अड्डा होशियारपुर), जालन्धर शहर - 144008

मूल्य

48.00 रु.

अन्य प्राप्ति स्थान :

जनरल बुक डिपो

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर

फोन : 2457959

स्वागत सं० 1875 ई०

नौकमयी वर्ष प्रवेश 130वां

मशहूर आलम पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी के सर्वप्राचीन प्रतिष्ठित पंचांग दिवाकर ज्योतिष कार्यालय के नियम

परम पिता परमात्मा की असीम कृपा से उत्तरी भारत में सर्वप्राचीन एवं सुप्रतिष्ठित मशहूर पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान से छपने वाली सुप्रसिद्ध पंचांग दिवाकर व मुफ़ीद-आलम जन्त्री उर्दू, हिन्दी, पंजाबी एवं अन्य ज्योतिष व धार्मिक प्रकाशनों को, पंचांग प्रवर्तक पं० देवी दयाल (लाहौर) से लेकर आज तक की दीर्घविधि में, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जो ख्याति प्राप्त हुई है, वह हमारे सुविज्ञ पाठकों से छिपी नहीं।

हमारे ज्योतिष कार्यालय में प्रामाणिक जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि शुद्ध गणित द्वारा तैयार किए जाते हैं जिससे आप घर बैठे ही अपना भविष्य जान सकते हैं। ध्यान रहे, सही फलादेश का आधार वैज्ञानिक ढंग से बनी शुद्ध जन्मपत्री है। जीवन के महत्वपूर्ण पक्षों जैसे विद्या में सफलता, व्यवसाय एवं कैरियर सम्बन्धी प्रश्न, भाग्योदय विवाह-सन्तानादि, पारिवारिक सुख, विदेश यात्रा योग इत्यादि प्रश्नों के उत्तर जन्मपत्री एवं ग्रहों के आधार पर अनुशीलन करके भेजे जाते हैं। यदि ग्रहों सम्बन्धी कोई विघ्न बाधाएं हों, तो अनिष्ट ग्रहों के उपाय भी शास्त्रोक्त विधि पर आधारित निर्दिष्ट किए जाते हैं।

मध्यम जन्मपत्री—संक्षिप्त रूप से अपना भविष्य जानने के लिए जन्म तारीख, जन्म समय, जन्म स्थान, पिता का नाम, दादा का नाम, गोत्र आदि लिखें। जिसकी फीस 301 रूप्य होगी। विदेश में उत्पन्न जातक की जन्मपत्री के लिए 551 रूप्य अथवा 11 पौंड होगी।

सम्पूर्ण वृहद् जन्मपत्री—आपके जीवन में होने वाली महत्वपूर्ण घटनाओं, नौकरी, व्यवसाय, शिक्षा, विवाहादि के सम्बन्ध में विस्तृत रूप से विवरण दिया जाता है। बड़ी हस्तलिखित जन्मपत्री बनवाने के लिए जन्म समय, जन्म स्थान, जन्म तारीख, गोत्र, प्रसिद्ध नाम, पिता का नाम, दादा का नाम, वर्तमान व्यवसाय आदि लिख भेजें। इसके लिए **वृहद् जन्मपत्री** के लिए फीस 551 रूप्य से 1100 रूप्य तक। विदेश में उत्पन्न जातक के लिए फीस

1000 रूप्य अथवा 31 पौंड होगी। डाक व्यय अलग।

वर्षफल—आपके लिए आगामी वर्ष कैसा रहेगा ? इसके लिए जन्म कुण्डली की फोटो काफी अवश्य साथ भेजें। यदि जन्मपत्री नहीं है, तो जन्म समय, तारीख, सन, ई० व्यवसाय अंग्रेजी तारीख, स्थान तथा अपनी पारिवारिक व कारोबारी समस्या स्पष्ट लिखते हुए मनपसन्द फूल का नाम लिखें। फलादेश के लिए फीस 275 रूप्य होगी। कृपया पूर्ण राशि अग्रिम भेजें। विदेश के लिए 21 पौंड होगी। डाक व्यय अलग।

वायदा-व्यापारियों के लिए चौंस—वायदा व हाज़िर व्यापारियों के लिए रुई, विनौले, खल, सरसों, गुड़, चने आदि के लिए चौंस की मासिक रिपोर्ट तैयार की जाती है। मासिक रिपोर्ट की फीस 401 रूप्य है। यदि एक जन्म से अधिक होगी तो रूप्य अतिरिक्त होंगे।

शेयर-बाज़ार—शेयर बाज़ार के उतार-चढ़ाव तथा प्रमुख शेयरों के तेजी से चौंस के लिए शेयर बाज़ार की मासिक रिपोर्ट की फीस 400 रूप्य। साथ में अपनी जन्मपत्री की फोटो काफी भी भेज दें।

नोट—पण्डित जी से प्रत्यक्ष केवल शनिवार एवं बुधवार को मिला जा सकता है। अतः दूर से आने वाले सज्जन फोन या पत्र द्वारा पहले समय निश्चित करके सम्पर्क करें।

कम्प्यूटर (Computerized) शुद्ध/वैज्ञानिक

जन्मपत्री—लैटैस्ट प्रामाणिक सॉफ्टवेयर से तैयार कम्प्यूटर जन्मपत्री एवं हस्तलिखित उपायों सहित मध्यम 251/- रूप्ये, वृहद् षड्वर्गी फलादेश व हस्त लिखित उपायों सहित 550 रूप्ये।



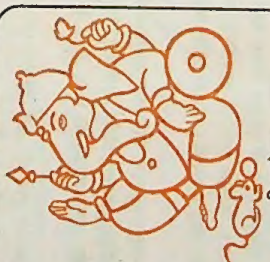
Pt. Panna Lal Jyotishi M.A. Office Pt. Devi Dayal Jyotishi & Sons.

Adda Hoshiarpur, Jalandhar-144008. Contact Ph-2457959

कृपया ड्राफ्ट/मनीआर्डर पं० घन्ना लाल ज्योतिषी, जालन्धर के नाम से ही भेजें।



गणितकर्ता : पं. पन्ना लाल ज्योतिषी



श्री गणेशाय नमः



संस्थापक : पं. देवी दयालु ज्योतिषी



श्री सरस्वत्यै नमः



स्वर्गीय : पं. चूनी लाल ज्योतिषी

अखिल भारतोपयोगी चित्रापक्षीय दृक् गणिताधारित

पंचाँग दिवाबक

वि. संवत् २०६२ (सन् २००५-०६ ई.)

असली, शुद्ध एवं प्रामाणिक पंचाँग

मशहूर आलम

पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज (लाहौर वाले)

गणितकर्ता : पं. पन्ना लाल ज्योतिषी एम.ए. (संस्कृत-हिन्दी) (स्वर्णपदक प्राप्त)

सुपुत्रः स्वर्गीय पं. चूनी लाल ज्योतिषी प्रपौत्र पं. देवी दयालु ज्योतिषी

सह-संपादक : पं. विवेक शर्मा (एम.ए.एल.बी.,), पं. पंकज शर्मा (एम.कॉम M.Tech.)

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर— 144 008 (भारत) फोन नं. : 2457959, फैक्स 2227388

प्रकाशक : मॉडर्न पब्लिशर्स, रेलवे रोड, जालन्धर शहर फोन : 2458388

राजा शनि



मन्त्री बुध



गौरवशाली प्रकाशन वर्ष

१३० वां

स्थापित वि. संवत्

१९३२

सूचना : इस पंचाँग का टाईटल व विषय सामग्री ट्रेड मार्क एवं कॉपीराईट Act के अन्तर्गत भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है। इसके किसी भी अंश की नकल करना गैर कानूनी होगा।

पंचांग दिवाकर देखने की विधि

पंचांग दिवाकर के १२५वें गौरवमयी वर्ष प्रवेश पर

अनन्त श्री विभूषित श्री श्री १००८ काशी धर्म पीठाधीश्वर

जगद् गुरु शंकराचार्य स्वामी नारायणप्रबन्ध तीर्थ महाराज जी का शुभाशीर्वाद
भारतीय पञ्चाङ्ग पद्धतिस्माकं हिन्दुसभ्यतायाः गौरवान्वितायाः समृद्धाश्च संस्कृतेराभिव्यञ्जनां करोति। एकं प्रामाणिकं पञ्चाङ्गं धर्मपरायणसमाजस्य कृते पर्वत्याहार ग्रहसंचारग्रहणविवरणं मुहूर्तज्योतिषादीनां विषयेषु आलोकास्तम्भस्य कार्यं करोति।

शताधिकवर्षेभ्यः प्राक् गणिताचार्यो सुप्रसिद्धे पण्डित देवीदयाल महाभागेन लवणुरे संस्थापितं प्रकाशितं च प्रसिद्धं लोकाप्रियं च पञ्चाङ्गदिवाकरम् आगामिवर्षे निज १२५तमे वर्षे प्रवेशं लभमानमस्ति। सम्प्रति तस्यैव पण्डितप्रवरस्य प्रपौत्रः गणिताचार्यः पण्डित पन्नालाल शर्मा ज्योतिर्विद निज सुयोग्य पुत्रं दुर्गमधवेन पञ्चाङ्ग कार्यं शुद्धस्पष्टसूक्ष्मगणितागत वित्रापथीय नियणपद्धतिमनुसरन् पञ्चाङ्गदिवाकरस्य लेखनं सम्पादनं च कुर्वन्नास्ति। नवीने पञ्चाङ्ग दिवाकरे ज्योतिषः व्रतपवादि धर्मशास्त्र विषयकानामुपयोगिविषयानां च समावेशनात् पञ्चाङ्ग दिवाकरं सम्प्रति सर्वविधमपरायण जनसामान्यस्य कृते सुतरापुरयोगी प्रतीयते।

आशङ्क्यते यद् लोकहितं समुखीनं कृत्वा निज कुल परम्परा परिपालने पण्डित पन्ना लाल ज्योतिर्विद निज सुपुत्रयोः सहयोगेन पञ्चाङ्गदिवाकरोऽप्यधिकं उपयोगिनं कर्तुं प्रयासरतो भविष्यति। अस्य प्रबुधः प्रचारः प्रसारश्च भवेत् अस्मोन्नतिं सुतरां कामयमानः शुभाशीरपि कामये।

तिथी श्री हस्त-मुद्रा—

वैशाख पूर्णिमा, भुवनासरः

प्रविष्टे १७ वैशाख, सं. २०५६ विक्रमी

१००८ स्वामी नारायणानन्द तीर्थ रामेश्वर महः

श्री काशी धर्म पीठाधीश्वर काशीक्षेत्रम् (वाराणसी)

क्या आप ज्योतिष सीखना चाहते हैं ? (अनुपम ग्रन्थ माला)

हमारे संस्थान पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ध द्वारा ज्योतिष सीखने तथा ज्योतिषियों के लिए पाठ्यक्रम के रूप में तीन पुस्तकों का एक सेट तैयार किया है। जिससे पढ़कर एक साधारण पढ़ा-लिखा व्यक्ति बिना गुरु के भी अच्छा ज्योतिषी बन सकता है तथा ज्योतिषी भाई गणित व फलित सम्बन्धी अपने ज्ञान में वृद्धि करके लोगों मार्गदर्शन कर सकें। अत्यन्त सरल सुबोधगम्य भाषा में इनका लेखन पंचांग दिवाकर के अनुमती लेखकों द्वारा किया गया है। इनमें प्रत्येक लगन के ग्रह-फल एवं योगों को अनेक उदाहरण कुण्डलियों देकर समझाया गया है।

(1) ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड) - प्रारम्भिक इतिहास से लेकर ज्योतिष सम्बन्धी प्रारम्भिक ज्ञान-सम्पूर्ण बड़ी जन्मपत्री निर्माण शैली अत्यन्त सरल शैली में प्रस्तुत किया गया है। मूल्य 60/- रु.

(2) ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड-भाग-I) - फलित सम्बन्धी आरम्भिक तथा विशेष सूत्र, मेष से कन्या लगन तक प्रत्येक ग्रह का प्रत्येक भाव में फल, दो-तीन चार ग्रहों का फल, दृष्टि फल तथा अनेक योगों को सरल शैली में प्रस्तुत किया गया है। मूल्य 250/-

(3) ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड-भाग-II) - तुला से मीन लगन तक प्रत्येक ग्रह का प्रत्येक भाव में फल, दो-तीन-चार-पंच-षष्ठ्यादी योगों का फल, ज्योतिष सम्बन्धी विशेष योगों का फल, मंगलीक दोष पर विश्लेषण, ज्यो. द्वारा क्लिष्ट रोग विचार तथा योगिनी दशा-अन्तर्दशाओं का फल आदि अनेक विषयों का समावेश किया गया है। मूल्य 250/-

इन तीनों पुस्तकों को पढ़कर आपको फलित सम्बन्धी कई नई एवं गुप्त बातों का सरल, स्पष्ट शब्दों में ज्ञान होगा, ऐसा हमारा विश्वास है। अतः आज ही मंगवाएँ।

पता—जनरल बुक डिपो, अड़्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर।

(१) पंचांग दिवाकर का निर्माण ग्रीनविच (Greenwich) से पूर्व रेखांश ७५° १३४ एवं अक्षांश ३१° १९ उत्तर के आधार पर लिया गया है। पंचांग में निर्दिष्ट मुख्यतः सूर्योदयास्त भी इसी अक्षांश अर्थात् जालन्धर शहर का है।

(२) इस पंचांग का गणित भारतीय ज्योतिषाचार्यों द्वारा प्रामाणित तथा इसके निर्माण में भारत सरकार द्वारा मान्य सूक्ष्म दृक् गणित एवं चित्रा पक्षीय निरयण पद्धति का आश्रय लिया गया है।

(३) पक्ष वाले पृष्ठों पर दैनिक सूर्योदय, सूर्यास्त भारतीय समयानुसार जालन्धर के हैं। सूर्योदयास्त में किरण वक्री भवन-संस्कार होने से सूर्योदयादिदि बचाने में उपयोगी होंगे। प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में दो मिनट घटावें और सूर्यास्त में दो मिनट जमा कर दें।

(४) तिथि, नक्षत्र, योग एवं करणों के सामने दिए गए घड़ी पल उनका सूर्योदय से समाप्तिकाल बतलाते हैं। तिथि, नक्षत्रों आदि के घड़ी पलों के घण्टे-मिनट बनाकर उसमें स्थानीय (अपने नगर) का सूर्योदय जमा कर देने तिथि-नक्षत्रों आदि का समाप्तिकाल भा. स्टैं. टा. में निकल आता है। पाठकों की सुविधा हेतु तिथि-नक्षत्रों एवं ग्रहों आदि के समाप्तिकाल भा. स्टैं. टाईम में भी दिए गए हैं। जहाँ पर २४, २५, २६ आदि अंक लिखे हैं, वहाँ २४ रात्रि १२ बजे, २५ को रात्रि के १ बजे, २६ को रात्रि के २ बजे जानें। इसी प्रकार आगे के अंकों में भी २४ घटा कर अर्ध रात्रि के बाद का समय जानें। जब तक आगामी दिवसीय सूर्योदय न हो, तब तक भारतीय ज्योतिष परम्परानुसार पिछली तारीख का दिन ही माना जाता है।

(५) दिनमान घड़ी पलों में है तथा दाएँ अंग्रेजी तारीख एवं देशीय प्रविष्टों के पश्चात् लस्टर में चन्द्र राशि-संचार भद्रा, पंचक आदि व सूर्यादि ग्रहों के नक्षत्र राशि प्रवेश काल, उदयास्तादि घड़ी पलों में दिए गए हैं। निर्दिष्ट घड़ी पलों को घण्टे मिनट बनाकर उन में स्थानीय सूर्योदय जमा करके उनको भा. स्टैं. टाईम में परिवर्तित किया जा सकता है। ध्यान रखें, चन्द्र संचार व सूर्यादि ग्रहों के राशि, नक्षत्र प्रवेश सूर्योदयात् प्रवेश काल है, न कि समाप्ति काल है। तिथि, नक्षत्रादि के घंटा मिनट एवं दैनिक ग्रह स्पष्ट भू-केन्द्रीय होने से भा. स्टैंडर्ड टाईम में सर्वत्र भारतेष्योगी होंगे।

(६) पक्षों में शुक्ल पक्ष को शुद्धि या चौदना पक्ष, तथा कृष्ण पक्ष को वदि या अन्धेरा पक्ष भी कहते हैं। पूर्णिमा १५ के अंक से तथा अमावास्या को ३० के अंक में निर्दिष्ट किया गया है। तिथि क्षय के आगे शून्य (०) के चिह्न लगाए गए हैं। जहाँ तिथि, नक्षत्र या योग के आगे ६०। ०० घड़ी लिखा है, उससे तिथि, नक्षत्रादि की वृद्धि समझे।

(७) गत अनेक वर्षों से सूर्य, चन्द्र आदि ग्रह नक्षत्रों के संचार एवं पर्व-त्योहारों के विवरण घड़ी/पलों के साथ-साथ घण्टों/मिनटों का भी समावेश किया गया है, जोकि आधुनिक अंग्रेजी पठित ज्योतिर्विदों के लिए भी 'पंचांग' समान रूप से उपयोगी हो गया है।

पंचांगदिवाकर की तरह मुफ्रीद आलम जंत्री उर्दू-हिन्दी-पंजाबी भाषाओं में सन् 2005 ई० की भी छपकर तैयार है जोकि उर्दू-पंजाबी पाठकों के लिए समान रूप से उपयोगी होंगी।

☆ यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, येन जातानि जीवन्ति।

यत्प्रयत्यभि संविशति, तद् विजिज्ञासत्स तदब्रह्म॥ उपनिषद्

अर्थात् जिस (परमात्म) तत्व से यह सम्पूर्ण सृष्टि उत्पन्न हुई है, जिसमें यह जीवित रहती है, और जिसमें फिर लीन हो जाती है, वही परब्रह्म परमात्मा है, उसी को जानने की इच्छा करो।

☆ आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, ग्रह-नक्षत्र, चराचर सभी दिशाएँ, वृक्ष-वनस्पतियाँ, नदियाँ और समुद्र—ये सभी श्री भगवान् के शरीरंग हैं। सभी रूपों में स्वयं भगवान् प्रकट हैं—ऐसा समझ कर सभी को अनन्य भाव से प्रणाम करें। (श्रीमद्भगवद)

☆ युक्ताहार विहारस्य युक्त चेष्टस्य कर्मसु।

युक्तस्वप्न बोधस्य योगोभवति दुःखहा॥ (गीता ६, १६)

अधिक खाने वाला या बिस्कुल नहीं खाने वाला, अधिक सोने वाला, या अधिक जागने वाला ही व्यक्ति योग को नहीं पा सकता। इसको तो उचित आहार और व्यवहार में सन्तुलन रखने वाला, अपने सभी कर्मों में सन्तुलित आचरण रखने वाला, उचित मात्रा में जागरण एवं उचित नींद लेने वाला सन्तुलित व्यक्ति ही योग को प्राप्त कर दुःखों का निवारण कर लेता है।

☆ साधूनां दर्शनं पुण्य तीर्थभूता हि साधवः। कालेन फलते तीर्थं सद्यः साधुसमागमः॥

साधुओं अर्थात् सज्जन लोगों का दर्शन तीर्थ स्थलों की भांति साक्षात् पुण्य कारक एवं पवित्र करने वाला होता है। तीर्थों पर किए गए जप-तान आदि का फल तो कुछ समय परचात् मिलता है, परन्तु साधु अर्थात् महान् पुरुषों के समागम का फल तुरन्त प्राप्त हो जाता है।

☆ दुर्लभं त्रयमेव एतद् देवानुग्रह हेतुकम्। मनुष्यत्वं मुमुक्षत्वं महापुरुष संश्रयः॥

अर्थात् तीन अत्यन्त दुर्लभ वस्तुएँ तो केवल श्री भगवान् की कृपा से ही प्राप्त होती हैं—मनुष्यत्व, मुमुक्षुत्व (मोक्ष पाने की उत्कट इच्छा) तथा महापुरुषों का संग॥

☆ शान्ति के लिए ईश्वरपरायण होना अनिवार्य—

नारित्तुद्विरयुक्तस्य न चा युक्तस्य भावना।

न चाभावयतः शान्तिः, अशान्तस्य कुतः सुखम्॥ श्रीगीता ॥ २॥

अर्थात् जो व्यक्ति आयुक्त (जो ईश्वर या धर्म-परायण नहीं) उसकी बुद्धि निश्चयात्मक नहीं होती और उसमें दया, करुणा आदि भावनाएँ भी नहीं होती, भावनाहीन व्यक्ति को शान्ति नहीं मिलती तथा जिस व्यक्ति को शान्ति नहीं, उसे सुख प्राप्त कैसे हो सकती है ?

☆ न च परशयति जन्मान्धाः कामान्धो नैव परशयति। मदोन्मत्ता न परशयन्ति अर्थी दोषं न परशयति॥ अर्थात् जन्म के अन्धों को कुछ दिखाई नहीं देता है। कामासक्त व्यक्ति को भी कुछ नहीं सूझता, नशे आदि से उन्मत्त व्यक्ति को भी कुछ दिखाई नहीं देता और अपने स्वार्थ में संलग्न व्यक्ति को भी कोई दोष दिखाई नहीं देता है।

☆ आहार निद्राभय मेथुनानि सामानि चैमानि नृणां पशूनाम्।

ज्ञानं नराणामपि को विशेष ज्ञानेन हीनः पशुभिः समानः॥

अर्थात् भोजनहार, निद्रा, भय, भोग-विलास आदि प्रसंग—ये सब मनुष्यों और पशुओं में समान हैं। पशुओं की अपेक्षा मनुष्यों में केवल ज्ञान ही विशेष अतिरिक्त गुण है। अतः ज्ञान से हीन मनुष्य पशु के समान है।

| विषय | पृष्ठ | विषय | पृष्ठ |
|--|---------|------------------------------------|---------|
| पर्व, त्यौहार व छुट्टियाँ | 4-6 | शुद्ध विवाह मुहूर्त | 121-125 |
| हिमाचल, जम्मू, पंजाब आदि के मेले | 7 | राशियों के अनुसार विवाह मुहूर्त | 126-128 |
| सरकारी छुट्टियाँ, सिक्ख पर्व | 8 | मुण्डन, गृहप्रवेशादि मुहूर्त | 129-133 |
| गण्डमूल, पंचक विचार | 10 | लक्ष्मी, भद्रा परिहार | 135-136 |
| ग्रहण-विचारण | 11-16 | मुहूर्तों पर विशेष लेख | 137 |
| शनि-सादेसाती व पायाविचार | 17-19 | षाडश संस्कारों के मुहूर्त | 140-142 |
| गुरु व राहु-केतु गोचरफल | 20-21 | किस दिन क्या करना शुभ है ? | 143-144 |
| सर्वाथ सिद्धि, अमृत सिद्धि | 22-23 | यात्रादि मुहूर्त | 145 |
| द्रुपिष्कर, त्रिपुष्कर योग | 24 | प्रसूति लग्न, बालारिष्ट योग | 147-149 |
| स्त्री जातक विचार | 25-26 | नौव में रखने योग्य पदार्थ | 150 |
| वैवाहिक विलाख विचार | 28-29 | गण्डान्त नक्षत्र विचार | 152-153 |
| प्राकृतिक नियमों का प्रदर्शक-वास्तुशास्त्र | 32-33 | घाती, नक्षत्र, राशि, वर्णादि चक्र | 154-157 |
| पर्व-त्यौहारों में अन्तर क्यों ? | 34-38 | वर्णादि अष्टकृत, मंगलीक परिहार | 158-161 |
| अनित्य ग्रहों के उपाय | 39-42 | वर-कन्या मिलान सारिणी | 163-167 |
| व्यापारिक मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र | 43-49 | प्रमुख लग्न सारिणीयाँ | 171-173 |
| चामत्कारिक मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र | 50-52 | भारत के नारों के अक्षांश-रेखांश | 174-175 |
| बारह राशियों का मासिक फलादेश | 53-60 | विदेशी नारों के अक्षांश-रेखांश | 176-177 |
| राजा-मन्त्री, आदारी प्रवेश फल | 61-64 | किसी भी नगर का सूर्योदय निकालें | 178-182 |
| आकाशी कौंसिल, प्रमुख भविष्यवाणियाँ | 65-66 | हिमाचल के नारों के सू.उ.-सू.अ. | 183-186 |
| सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश | 67 | चन्द्रस्पष्ट द्वारा भोग्यदशा जानना | 187-189 |
| संदिग्ध व्रत-पर्वों का निर्णय | 68 | दशाऽन्तर्दशा, प्रत्यन्तरदशा चक्र | 190-193 |
| महालक्ष्मी पूजन, कर्वाचौष के चं. उ. | 69-92 | वर्षफल सारिणी (घण्टा-मिनटों में) | 210 |
| संवत्सर फल, त्रयोदश दिन पक्ष | 93-104 | नक्षत्र चरण प्रवेश काल तालिका | 211 |
| चैत्रादि पक्ष (घड़ी-पलों में) | 105-108 | दैनिक लग्न सारिणी दिल्ली | 213-218 |
| तिथि, नक्षत्र, ग्रहों के घटा-मिट | 110-120 | दैनिक लग्न सारिणी जालन्धर | 223-229 |
| चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश | | द्वादश भावों से रोग विचार | 231-234 |
| दैनिक ग्रहस्पष्ट, चन्द्रोदय-चन्द्रास्त | | पुस्तक सूची | 240 |

इस वर्ष के नवीन, उपयोगी एवं आकर्षक विषय

| | | | |
|--|-------|---|---------|
| स्त्री जातक विचार | 22-23 | कर्वाचौष के दिन प्रमुख नारों का चंद्र-उदय | 67 |
| वैवाहिक एवं सन्तान विलाख के उपाय | 24 | तेरह (13) दिन का पक्षफल | 68 |
| प्राकृतिक नियमों का प्रदर्शक-वास्तुशास्त्र | 25-26 | राजस्थान, जम्मू-कश्मीर, हरियाणा | 174-175 |
| कालसर्प योग के उपाय | 27 | प्रदेशों के अक्षांश-रेखांश | 191-193 |
| पर्व-त्यौहारों में अन्तर क्यों ? | 28-29 | प्रत्यन्तर दशा सारिणी | 194-197 |
| संदिग्ध व्रत-पर्व निर्णय | 65-66 | विंशोत्तरी दशा फल | 198-199 |
| | | योगिनी दशा फल | 199-200 |

प्रमुख व्रत, पर्व, त्यौहार एवं छुट्टियाँ (सन् 2005-06 ई.)

| -जनवरी 2005 ई.- | | -फरवरी- | | -मई- | | -जून- | | -मार्च- | | -अप्रैल- | |
|-------------------------|----------------|-------------------|--------------|---------------------|--------------|-----------------------|----------------|-----------------------|----------------|-------------------------|-----------------|
| इंग्लिश नववर्ष प्रारंभ | 1 जन. शनि | भौमवती मौनी अमावस | 8 फर. मं. | गौरी वृतीया | 11 फर. शुक्र | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | करवा चौथ व्रत | 20 अक्टू. गुरु |
| लोहड़ी पर्व | 12 जन. बुध | गौरी वृतीया | 11/12 फर. | तिल चतुर्थी व्रतादौ | 13 फर. रवि | होलाष्टक प्रारंभ | 18 मार्च शुक्र | होलाष्टक प्रारंभ | 18 मार्च शुक्र | अहोई अष्टमी व्रत | 25 अक्टू. मंग |
| मकर संक्रान्ति (माघी) | 13 जन. गुरु | रथ-आरोग्य सप्तमी | 15 फर. मंग | बसन्त पंचमी | 16 फर. बुध | गोविन्द द्वादशी | 22 मार्च मंग. | गोविन्द द्वादशी | 22 मार्च मंग. | गोवत्स द्वादशी | 29 अक्टू. शनि |
| पुत्रदा एकादशी व्रत | 20 जन. गुरु | भौमवती मौनी अमावस | 8 फर. मं. | गौरी वृतीया | 11 फर. शुक्र | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | घन त्रयोदशी | 30 अक्टू. रवि |
| पौष पूर्णिमा | 25 जन. मंग | गौरी वृतीया | 11 फर. शुक्र | तिल चतुर्थी व्रतादौ | 13 फर. रवि | होलाष्टक प्रारंभ | 18 मार्च शुक्र | होलाष्टक प्रारंभ | 18 मार्च शुक्र | नरक चतुर्थी | 31 अक्टू. चंद्र |
| माघस्नान प्रारंभ | 25 जन. मंग | गौरी वृतीया | 11 फर. शुक्र | तिल चतुर्थी व्रतादौ | 13 फर. रवि | होलाष्टक प्रारंभ | 18 मार्च शुक्र | होलाष्टक प्रारंभ | 18 मार्च शुक्र | श्री हनुमान जयन्ती | 31 अक्टू. चंद्र |
| गणतन्त्र दिवस भारत | 26 जन. बुध | भौमवती मौनी अमावस | 8 फर. मं. | गौरी वृतीया | 11 फर. शुक्र | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | दीपावली | 1 नव. मंग |
| श्रीगणेश संकट चतुर्थी | 29 जन. श. | गौरी वृतीया | 11 फर. शुक्र | तिल चतुर्थी व्रतादौ | 13 फर. रवि | होलाष्टक प्रारंभ | 18 मार्च शुक्र | होलाष्टक प्रारंभ | 18 मार्च शुक्र | महालक्ष्मी पूजन | 1 नव. मंग |
| -फरवरी- | | भौमवती मौनी अमावस | 8 फर. मं. | गौरी वृतीया | 11 फर. शुक्र | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | अन्नकूट, गोवर्धन पूजा | 2 नव. बुध |
| भौमवती मौनी अमावस | 8 फर. मं. | गौरी वृतीया | 11 फर. शुक्र | तिल चतुर्थी व्रतादौ | 13 फर. रवि | होलाष्टक प्रारंभ | 18 मार्च शुक्र | होलाष्टक प्रारंभ | 18 मार्च शुक्र | विश्वकर्मा दिवस (पंजाब) | 2 नव. बुध |
| गौरी वृतीया | 11 फर. शुक्र | भौमवती मौनी अमावस | 8 फर. मं. | गौरी वृतीया | 11 फर. शुक्र | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | भाई दूज, यमद्वितीया | 3 नव. गुरु |
| तिल चतुर्थी व्रतादौ | 13 फर. रवि | गौरी वृतीया | 11 फर. शुक्र | तिल चतुर्थी व्रतादौ | 13 फर. रवि | होलाष्टक प्रारंभ | 18 मार्च शुक्र | होलाष्टक प्रारंभ | 18 मार्च शुक्र | सूर्य षष्ठी व्रत | 7 नव. चंद्र |
| बसन्त पंचमी | 16 फर. बुध | भौमवती मौनी अमावस | 8 फर. मं. | गौरी वृतीया | 11 फर. शुक्र | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | गोपाष्टमी | 9 नव. बुध |
| भौष्माष्टमी | 20 फर. रवि | गौरी वृतीया | 11 फर. शुक्र | तिल चतुर्थी व्रतादौ | 13 फर. रवि | होलाष्टक प्रारंभ | 18 मार्च शुक्र | होलाष्टक प्रारंभ | 18 मार्च शुक्र | अक्षय-कृष्णाष्ट नवमी | 10 नव. गुरु |
| माघ पूर्णिमा | 24 फर. गुरु | भौमवती मौनी अमावस | 8 फर. मं. | गौरी वृतीया | 11 फर. शुक्र | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | भौष्म पंचक प्रारंभ | 11 नव. शुक्र |
| माघ स्नान समाप्त | 24 फर. गुरु | गौरी वृतीया | 11 फर. शुक्र | तिल चतुर्थी व्रतादौ | 13 फर. रवि | होलाष्टक प्रारंभ | 18 मार्च शुक्र | होलाष्टक प्रारंभ | 18 मार्च शुक्र | देवप्रबोधिनी एकादशी | 12 नव. शनि |
| गुरु रविदास जयंती | 24 फर. गुरु | भौमवती मौनी अमावस | 8 फर. मं. | गौरी वृतीया | 11 फर. शुक्र | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | चातुर्मास्यादि समा. | 12 नव. शनि |
| -मार्च- | | भौमवती मौनी अमावस | 8 फर. मं. | गौरी वृतीया | 11 फर. शुक्र | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | गुलसी विवाह | 13 नव. रवि |
| श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | गौरी वृतीया | 11 फर. शुक्र | तिल चतुर्थी व्रतादौ | 13 फर. रवि | होलाष्टक प्रारंभ | 18 मार्च शुक्र | होलाष्टक प्रारंभ | 18 मार्च शुक्र | बैकुण्ठ चौदश | 14 नव. चंद्र |
| होलाष्टक प्रारंभ | 18 मार्च शुक्र | भौमवती मौनी अमावस | 8 फर. मं. | गौरी वृतीया | 11 फर. शुक्र | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | श्रीगुरु नानक जयन्ती | 15 नव. मंग |
| गोविन्द द्वादशी | 22 मार्च मंग. | गौरी वृतीया | 11 फर. शुक्र | तिल चतुर्थी व्रतादौ | 13 फर. रवि | होलाष्टक प्रारंभ | 18 मार्च शुक्र | होलाष्टक प्रारंभ | 18 मार्च शुक्र | भौष्मपंचक समाप्त | 15 नव. मंग |
| पूर्णिमा, होली पर्व | 25 मार्च शुक्र | भौमवती मौनी अमावस | 8 फर. मं. | गौरी वृतीया | 11 फर. शुक्र | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | कार्तिक स्नान समाप्त | 15 नव. मंग |
| होलाष्टक समाप्त | 25 मार्च शुक्र | गौरी वृतीया | 11 फर. शुक्र | तिल चतुर्थी व्रतादौ | 13 फर. रवि | होलाष्टक प्रारंभ | 18 मार्च शुक्र | होलाष्टक प्रारंभ | 18 मार्च शुक्र | कार्तिक पूर्णिमा | 15 नव. मंग |
| होलिका दहन | 25 मार्च शुक्र | भौमवती मौनी अमावस | 8 फर. मं. | गौरी वृतीया | 11 फर. शुक्र | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | मेला पुष्कर, रामतीर्थ | 15 नव. मंग |
| गुड फ्राइडे | 26 मार्च श. | गौरी वृतीया | 11 फर. शुक्र | तिल चतुर्थी व्रतादौ | 13 फर. रवि | होलाष्टक प्रारंभ | 18 मार्च शुक्र | होलाष्टक प्रारंभ | 18 मार्च शुक्र | श्रीकाल भैरवाष्टमी | 23 नव. बुध |
| होला मेला (आनंदपुर सा.) | 26 मार्च श. | भौमवती मौनी अमावस | 8 फर. मं. | गौरी वृतीया | 11 फर. शुक्र | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | -दिसम्बर- | |
| -अप्रैल- | | भौमवती मौनी अमावस | 8 फर. मं. | गौरी वृतीया | 11 फर. शुक्र | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 8 मार्च मंग | स्कन्द-चमपा षष्ठी | 6 दिसं. मंग |
| श्री शीतलाष्टमी व्रत | 2 अप्रै. शनि | गौरी वृतीया | 11 फर. शुक्र | तिल चतुर्थी व्रतादौ | 13 फर. रवि | होलाष्टक प्रारंभ | 18 मार्च शुक्र | होलाष्टक प्रारंभ | 18 मार्च शुक्र | मोक्षदा एकादशी व्रत | 11 दिसं. रवि |

-जनवरी 2006 ई.-

इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ
पुत्रदा एकादशी व्रत
लोहड़ी पर्व
मकर संक्रान्ति (माघी)
पूर्णिमा, माघस्नान प्रारंभ
श्रीगणेश सकट चतुर्थी
भारत गणतन्त्र दिवस
माघ-मौनी अमावस
२९ जन. रवि

-फरवरी-

गौरी वृतीया
श्रीगणेश तिल चतुर्थी
वसन्त पंचमी
रथ-आरोहण सप्तमी
भीष्माष्टमी
भीष्म द्वादशी
माघ पूर्णिमा स्नान
माघ स्नान समाप्त
गुरु रविदास जयंती
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत
सोमवती फा. अमावस
१ फर. बुध
१ फर. बुध
२ फर. गुरु
४ फर. शनि
५ फर. रवि
९ फर. गुरु
१३ फर. चंद्र
१३ फर. चंद्र
१३ फर. चंद्र
२६ फर. रवि
२७ फर. चंद्र

-मार्च-

होलाष्टक प्रारम्भ
गोविन्द द्वादशी
पूर्णिमा, होली पर्व
होलिका दहन (भद्रा वाद)
होलाष्टक समाप्त
होला मेला (आनंदपुर सा.)
श्रीशीतलाष्टमी व्रत
वातरणी योग
खण्डास सूर्यग्रहण
वि. संवत् २०६२ पूर्ण
७ मार्च मंग
११ मार्च शनि
१४ मार्च मंग
१४ मार्च मंग
१४ मार्च मंग
१५ मार्च बुध
२३ मार्च गुरु
२७ मार्च सोम
२९ मार्च बुध
२९ मार्च बुध

एकादशी व्रत

सफला एका. (पौष कृ.) ६ जन. गु.
पुत्रदा एका. (पौष शुक्ल) २० जन. गु.
षट्तिला एका. (माघ कृ.) ५ फर. श.
जया एका. (माघ शु.) १९ फर. श.

विजया एका. (फागु. कृ.) ६ मार्च र.
आमलकी एका. (फागु. शु.) २१ मार्च चं.
पापमोचनी एका. (चैत्र कृ.) ५ अप्रै. चं.
कामदा एका. (चैत्र शुक्ल) २० अप्रै. बु.
वरुथिनी एका. (वैशा. कृ.) ४ मई बु.
मोहिनी एका. (वैशा. शु.) २० मई शु.
अपरा एका. (ज्ये. कृ.) २ जून गु.
निर्जला एका. (ज्ये. शु.) १८ जून श.
योगिनी एका. (आषा. कृ.) २ जुला. श.
देवशयनी एका. (स्मात्) १७ जुला. र.
देवशयनी एका. (आषा. शु.) १८ जुला. चं.
कामिका एका. (श्राव. कृ.) ३१ जुला. र.
पवित्रा एका. (श्राव. शु.) १६ अग. मं.
अजा एका. (भाद्र. कृ.) ३० अग. मं.
पद्मा एका. (भाद्र. शु.) १४ सितं. गु.
इन्दिरा एका. (आश्वि. कृ.) २९ सितं. गु.
पापाकुशा एका. (आ. शु.) १३ अक्टू. गु.
पापाकुशा एका. वैष्णव १४ अक्टू. शु.
रमा एका. (कार्ति. कृ.) २८ अक्टू. शु.
देवयोधिनी एका. (का. शु.) १२ नव. श.
रुक्मिणी एका. (मार्ग. कृ.) २७ नव. र.
मोक्षदा एका. (मार्ग. शु.) ११ दिसं. र.
सफला एका. (पौष कृ.) २७ दिसं. मं.

(स्वन् २००६ ई.)

पुत्रदा एका. (पौष शु.) १० जन. मं.
षट्तिता एका. (माघ कृ.) २६ जन. गु.
जया एका. (माघ शु.) ८ फर. बु.
विजया एका. (फा. कृ.) २४ फर. शु.
आमलकी एका. (फा. शु.) १० मार्च शु.
पापमोचनी एका. स्मा. २५ मार्च शु.
पापमोचनी एका. वैष्ण २६ मार्च र.

व्रत श्री सत्यनारायण

पौष पूर्णिमा व्रत २४ जन. चं.
माघ पूर्णिमा व्रत २३ फर. बु.
फाल्गुन पूर्णिमा व्रत २५ मार्च शु.
चैत्र पूर्णिमा व्रत २३ अप्रै. श.
वैशाख पूर्णिमा व्रत २३ मई चं.
ज्येष्ठ पूर्णिमा व्रत २१ जून मं.

आषाढ पूर्णिमा व्रत २१ जुला. गु.
श्रावण पूर्णिमा व्रत १९ अग. शु.
भाद्रपद पूर्णिमा व्रत १७ सितं. श.
आश्विन पूर्णिमा व्रत १६ अक्टू. र.
कार्तिक पूर्णिमा व्रत १५ नव. मं.
मार्गशीर्ष पूर्णिमा व्रत १५ दिसं. गु.
पौष पूर्णिमा व्रत १३ जन. शु.
फाल्गुन पूर्णिमा व्रत १२ फर. र.
चैत्र पूर्णिमा व्रत १४ मार्च मं.

(स्वन् २००६ ई.)

श्रीगणेश संकट चतुर्थी २९ जन. श.
श्रीगणेश तिल चतुर्थी ११-१२ फ.
श्रीगणेश चतुर्थी (फाल्गुन) २७ फर. र.
श्रीगणेश चतु. (चैत्र) २९ मार्च मं.
श्रीगणेश चतु. (वैशाख) २७ अप्रै. बु.
श्रीगणेश चतु. (ज्येष्ठ) २६ मई गु.

चैत्र अमावस ८ अप्रै. शु.
वैशाख अमावस ८ मई र.
ज्येष्ठ (सोमवती) अमा. ६ जून चं.
आषाढ अमावस ६ जुला. बु.
श्रावण अमा. (तर्पणाय) ४ अग. गु.
श्रावण अमा. (स्नानदानार्थ) ५ अग. शु.
भाद्रपद अमावस (पिऊरी) ३ सितं. श.
आश्विन अमावस ३ अक्टू. चं.
कार्तिक अमा. (तर्पणाय) १ नव. मं.
कार्तिक अमा. (स्नानदानार्थ) २ नव. बु.
मार्गशीर्ष अमावस १ दिसं. गु.
पौष अमा. (तर्पणाय) ३० दिसं. शु.
पौष अमा. (स्नानदानार्थ) ३१ दिसं. श.
माघ अमा. (मौनी) अमावस २९ जन. र.
फाल्गुन (सोमवती) अमा. २७ फर. चं.
चैत्र अमावस २९ मार्च बु.

श्री गणेश चतुर्थी व्रत

श्री गणेश संकट चतुर्थी २९ जन. श.
श्री गणेश तिल चतुर्थी ११-१२ फ.
श्रीगणेश चतुर्थी (फाल्गुन) २७ फर. र.
श्री गणेश चतु. (चैत्र) २९ मार्च मं.
श्री गणेश चतु. (वैशाख) २७ अप्रै. बु.
श्री गणेश चतु. (ज्येष्ठ) २६ मई गु.

श्री गणेश चतु. (आषाढ) २५ जून श.
श्री गणेश चतु. (श्रावण) २४ जुला. र.
श्री गणेश चतु. (भाद्र.) २२ अग. चं.
श्रीसिद्धि विनायक (भाद्र. शु.) ७ सितं.
श्रीगणेश चतु. (आश्विन) २१ सितं. बु.
श्रीगणेश चतु. (कार्तिक) २० अक्टू. गु.
श्रीगणेश चतु. (मार्ग.) १९ नव. श.
श्रीगणेश चतु. (पौष) १९ दिसं. चं.
श्रीगणेश संकट चतुर्थी १८ जन. बु.
श्रीगणेश तिल चतुर्थी १ फर. बु.
श्रीगणेश चतु. (फाल्गुन) १६ फर. गु.
श्रीगणेश चतु. (चैत्र) १८ मार्च श.

जैन व्रत-पर्व व उत्सव

श्रीपार्वनाथ जयंती ६ जन. गु.
मेरु त्रयोदशी ७ फर. चं.
मर्यादा महोत्सव १५ फर. मं.
जैन महोत्सव (कांगड़ा) २३-२५ मा.
ऋषभदेव जयंती १ अप्रै. शु.
वरसी तप शुरु २ अप्रै. श.
ओली तप शुरु १७ अप्रै. र.
महावीर जयंती २२ अप्रै. शु.
ओली तप समाप्त २४ अप्रै. र.
वरसी तप समाप्त ११ मई बु.
केवल ज्ञान दिवस १८ मई बु.
मे. चक्रेश्वरी देवी (सरहिन्द) ५-७ जून
चतुर्मास्य व्रतादि प्रारंभ २१ जुला. गु.
तेरापन्थ स्थापना दिवस २१ जुला. गु.
जैन महोत्सव ५ अग. शु.
पुरुषण पर्वारम्भ ३१ अग. बु.
श्रीजयाचार्य निर्वाण ३१ अग. बु.
संवत्सरी महापर्व ७ सितं. बु.
श्रीकालू निर्वाण दिवस १० सितं. श.
श्रीतुलसी पट्टारोहण १२ सितं. चं.
श्री महावीर निर्वाण १ नव. मं.
श्री वीर संवत् २५३१ शुरु २ नव. बु.
जन्म आचार्य श्रीतुलसी ३ नव. गु.

ज्ञान पंचमी ६ नव. र.
चतुर्मास्य व्रतादि समाप्त १५ नव. मं.
मौनी एकादशी ११ दिसं. र.
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा २० दिसं. मं.
श्री पार्वनाथ जयंती २६ दिसं. चं.
(स्वन् २००६ ई.)
मेरु त्रयोदशी २७ जन. शु.
मर्यादा महोत्सव ४ फर. श.
जैन महोत्सव (कांगड़ा) १२-१४ मार्च
ऋषभदेव जयंती २२ मार्च बु.
वरसी तप शुरु २३ मार्च गु.

मुस्लिम त्यौहार

इंदुलजुहा (बकरीद) २१ जन. शु.
मुहर्रम, १४२६ हिजरी प्रा. ११ फर. शु.
मुहर्रम (ताजिया) २० फर. र.
चेहलुम ३१ मार्च गु.
आखिरी चहार ६ अप्रै. बु.
शहादत-ए-ईमामहसन ८ अप्रै. शु.
ईद-ए-मिलाद २२ अप्रै. शु.
ईद-ए-मौलाद २७ अप्रै. बु.
ग्यारहवीं शरीफ २० मई शु.
जन्म श्री हजरत अली १९ अग. शु.
शबे-मिराज २ सितं. शु.
शबे-बारात २० सितं. मं.
रमजान (रोजे शुरु) ६ अक्टू. गु.
शहादत-ए-हजरत अली २६ अक्टू. बु.
जमातुलविदा २८ अक्टू. शु.
शबे-फेदर १ नव. मं.
ईद-उल-फितर ४ नव. शु.

(स्वन् २००६ ई.)
इंदुलजुहा (बकरीद) ११ जन. बु.
मुहर्रम, १४२७ हिजरी प्रा. ३१ जन. मं.
मुहर्रम (ताजिया) ९ फर. गु.
चेहलुम २० मार्च चं.
आखिरी चहार २९ मार्च बु.
शहादत-ए-इमाम हसन २९ मार्च बु.

पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और यू.पी. के मुख्य मेले-सन् 2005 ई.

| | | | |
|------------------------------|-------------|--|--------------|
| मे. लोहड़ी (सर्वत्र) | 12 जन. | मेला रामनक्मी | 18 अप्रै. |
| मे. दाऊ (रोपड़, चण्डीगढ़) | 12 जन. | कांसादेवी (रोपड़) पं. प्रारंभ | 23-24 अप्रै. |
| मे. मापी (मुक्तसर) | 13 जन. | देवी मेला हथौरा (कुरुक्षेत्र) | 24 अप्रै. |
| मे. पौगल (द. भारत) | 13 जन. | श्रीस्वामी स्वरूपानन्द निर्वाणदिवस (भूपतवाला रोड़, हरिद्वार) | 26 अप्रै. |
| मे. मस्तुआणा (पंजाब) | 31 जन. | मेला मिर्जौर (हरियाणा) | 8 मई |
| मेला श्रीनी-अमावस (यू.पी.) | 8 फर. | गंगा सप्तमी (हरिद्वार) | 15 मई |
| हरिद्वार आदि | 13 फर. | मे. भद्रकाली (कपूरथला) | 2 जून |
| बसन्त पंचमी | 13 फर. | गंगा दशहरा (हरिद्वार) | 17 जून |
| श्रीस्वा. स्वरूपानन्दजी जयं. | 13 फर. | मे. मडाली शरीफ | 28 जून |
| (भूपतवाला रोड़, हरिद्वार) | 18 फर. | रथयात्रा उत्सव (पुरी) | 8 जुला. |
| मेहनू बाहरी (जालन्धर) | 21-24 फर. | गुरु पूर्णिमा उत्सव | 21 जुला. |
| मे. जैसलमेर (राज.) | 21-24 फर. | महामण्डव. स्वा. गु. प्रेमानन्द जी जयं. | 21 जुला. |
| मे. जयंती देवी (चण्डीगढ़) | 24 फर. | (भूपतवाला रोड़, हरिद्वार) | 21 जुला. |
| मे. माघी पूर्णिमा (यू.पी.) | 8 मार्च | मे. काहनूवाल (गुरदासपुर) | 25 जुला. |
| मे. श्री महाशिवरात्रि | 8 मार्च | मे. नाग पंचमी (राज.) | 8 अग. |
| नीलकण्ठ महादेव (गढ़वाल) | 18-25 मार्च | मे. सिंधारा तीज | 8 अग. |
| होलिया होलाष्टक (यू.पी.) | 23 मार्च | गौरी तीज (जयपुर) राज. | 26/27 अ. |
| मेला सावातिल्ला | 26 मार्च | श्रीकृष्णजन्माष्टमी पर्व (मथुरा) | 28 अग. |
| होला मेला (आनंदपुर सा.) | 30 मार्च | गुरगा नक्मी (अम्बाला, पंजा.) | 28 अग. |
| श्री गुरु रामराय (देहरादून) | 30 मार्च | गोगामेड़ी (गंगानगर) राज. | 3 सितं. |
| मे. नवचण्डी (मेरठ) | 30 मार्च | मेला सुधरेशाह (दिल्ली) | 5 सितं. |
| मे. वीरभद्रास, बडौली (पटि.) | 30 मार्च | श्रीगुसाईआणा (कुराली) पं. | 13 सितं. |
| भण्डारा स्वा. संतदास जी, | 30 मार्च | रामदेव-रोणेवा (जोधपुर) राज. | 13 सितं. |
| गोपाल नगर, जालन्धर | 1-2 अप्रै. | वामन द्वादशी (पटि., अम्बाला) | 15 सितं. |
| शीतलामाता (कुराली) पंजा. | 7 अप्रै. | मे. छपार (मलेरकोटला) पं. | 17 सितं. |
| पिहोवा तीर्थ (हरियाणा) | 9 अप्रै. | बाबा सोडल (जालंधर) पं. | 17 सितं. |
| मे. चीमा (नानकसर) | 9 अप्रै. | मे. गोईदवाल सा. (अमृतसर) | 18 सितं. |
| मेला नवरात्रे | 9-18 अप्रै. | गुरगाभीर, लुधियाना | 17-18 सितं. |
| (मनसादेवी, हरिद्वार) | 9-18 अप्रै. | मेला फाल्गू (कुरुक्षेत्र) प्रा. | 3 अक्टू. |
| मनसादेवी (पंचकूला) हरि. | 11 अप्रै. | आशापूर्णी (पठानकोट) पं. | 4-12 अक्टू. |
| गौरी तीज (जयपुर) | 13 अप्रै. | मे. हरचोवाल (गुरदासपुर) | 11-12 अक्टू. |
| मेला वैशाखी (पंजाब) | 13 अप्रै. | मे. दशहरा (सर्वत्र) | 12 अक्टू. |
| रामधनदास (फाजिल्का) | 13 अप्रै. | बाबा बुड्ढा सा., अमृतसर | 12 अक्टू. |
| माईसर खाना (बठिण्डा) | 14 अप्रै. | मह. अग्रसेन, अगरसोधागम, हिसार | 17 अक्टू. |

जम्मू-कश्मीर के मेले

| | |
|-----------------------------------|--------------|
| लोहड़ी पर्व | 12 जन. |
| मे. पुरमण्डल (जम्मू) | 6-7 अप्रै. |
| गुलतंगा (अखनूर) | 7-9 अप्रै. |
| नवरात्रे पर्व (कटड़ा) | 9-17 अप्रै. |
| गुरुगद्दी 1008 सतरु बा. | 13-14 अप्रै. |
| कशीगिरि जी (सुन्दरबनी) | 17 अप्रै. |
| मे. बाहूफोर्ट | 18 अप्रै. |
| मे. रामबन | 22 मई |
| गुसिंह चौदश (ऊधमपुर) | 13-14 जून |
| मे. मानसर | 15 जून |
| मे. क्षीर भवानी | 22 जून |
| शुद्ध महादेव (ऊधमपुर) | 23 जून |
| जन्म गुरु हरगोबिन्द | 13 जुला. |
| शहीदी दिवस | 16 जुला. |
| मे. शरीक भवानी | 17-18 जुला. |
| मे. हरिप्रयाग (बनी) | 20 जुला. |
| मे. ज्वालामुखी | 21 जुला. |
| मे. रुद्रगंगा, चंदेणी देसा (डोडा) | 16 अग. |
| मे. रामबन | 19 अग. |
| दर्शन श्री अमरनाथ गुफा | 19 अग. |
| मेला स्वा. शंकराचार्य | 1-2 सितं. |
| कैलाश यात्रा प्रारंभ | 9-10 सितं. |
| मेला पात (मद्रवाह) | 2-3 अक्टू. |
| मेला आशापति, मार्तण्ड | 15 नव. |
| मेला झिड़ी बाबा | 30 नव. |
| मेला पुरमण्डल | |

हिमाचल प्रदेश के मेले-सन् 2005 ई.

| | | | |
|---------------------------|--------------|------------------------------|--------------|
| मे. श्री ब्रह्मा (कुल्लू) | 19 जन. | मे. नारकण्डा (बिलासपुर) | 29-30 मई |
| बसन्त पंचमी (बिलासपुर) | 13 फर. | ग्राम पंचगाई (बिलासपुर) | 29-30 मई |
| श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी) | 8-17 मार्च | श्यामाकाली (सरकाघाट) | 30 मई |
| कालेश्वर महादेव (नादौन) | 8 मार्च | श्याल मडोल | 1-4 जून |
| मे. स्वर्गाश्रम (नूरपुर) | 8 मार्च | मे. अहल (हमीरपुर) | 14 जून |
| मे. काठगढ़ | 10 मार्च | मे. नौवाही देवी (सरकाघाट) | 14 जून |
| मे. वैजनाथ (कांगड़ा) | 14 मार्च | मेला मुन्तर | 15-17 जून |
| बाबा बालकनाथ प्रारंभ | 14 मार्च | मे. पीपलू (हमीरपुर) | 18 जून |
| कनिहारा (धर्मशाला) प्रा. | 17-22 मार्च | टौणी देवी (हमीरपुर) | 23 जून |
| नलवाड़ (बिलासपुर) | 22-29 मार्च | मे. माँसूलीनी (सोलन) | 26 जून |
| नलवाड़ (सुन्दरनगर) | 22-25 मार्च | मे. त्रिमौणी (सिरमौर) | 10 जुला. |
| वड़भाग सिंह (ऊना) | 25-29 मार्च | मे. नागनी (नूरपुर) | 16 जुला. |
| सुजानपुर टिहरा (हमीरपुर) | 26 मार्च | सिद्ध बाबा शिक्वा (ज्वाली) | 17 जुला. |
| होला मेला (पौंटा साहिब) | 9-24 अप्रै. | मिंजर (चम्बा) प्रारंभ | 24 जुला. |
| बाला सुन्दरी (सिरमौर) | 9-18 अप्रै. | मे. चित्तपूर्ण (ऊना) प्रा. | 6-13 अग. |
| नयना देवी (बिलासपुर) | 11-17 अप्रै. | नयनादेवी (बिलासपुर) | 13 अग. |
| ललवाड़ (सुन्दरनगर) | 12-15 अप्रै. | संतोषी माता (लदरौर) | 16 अग. |
| मे. भारकण्डा (बिलासपुर) | 13 अप्रै. | गुरगा नक्मी (बिलासपुर) | 28 अग. |
| कालेश्वर महादेव, देहरा | 13 अप्रै. | बदाल (कुल्लू) | 28 अग. |
| राजगढ़ (सिरमौर) | 13 अप्रै. | अम्बिकादेवी-सदर (मण्डी) | 2 सितं. |
| बिश्नू | 15 अप्रै. | यात्रा मनीमहेश (चम्बा) प्रा. | 9 सितं. |
| हिमाचल दिवस | 15 अप्रै. | गणपति उत्सव (मण्डी) | 7-17 सितं. |
| लाहौल (मण्डी) | 15 अप्रै. | मे. वामन द्वादशी (नाहन) | 15 सितं. |
| कशाधा, डुरला (कुल्लू) | 15-17 अप्रै. | मे. नलवाड़ (चिच्योट) | 16-23 सितं. |
| खुनाली (भिम, कुल्लू) | 19-20 अप्रै. | मे. लदरौर (हमीरपुर) | 16 सितं. |
| मेला रोहरा (महासू) | 20-21 अप्रै. | मे. सायर (अर्को) | 16 सितं. |
| पीपल जातर (कुल्लू) | 28-30 अप्रै. | मे. चापुण्डा (कांगड़ा) | 4-12 अक्टू. |
| मे. स्वीटी | 30 अप्रै. | मे. बगुलामुखी (वनखण्डी) | 4-12 अक्टू. |
| डुंगरी जातर (मनाली) | 14-15 मई | मे. रामलीला | 11 अक्टू. |
| घाघरस (बिलासपुर) | 14 मई | शीतलामाता (मच्छिभवन) | 11-12 अक्टू. |
| मे. कमलाहिया (धर्मपुर) | 15 मई | मे. तारादेवी (शिमला) | 12-17 अक्टू. |
| पशु मेला | 16 मई | मे. ज्वालामुखी | 11-12 अक्टू. |
| मे. बंजार (कुल्लू) | 14-18 मई | मे. दशहरा (कुल्लू) | 12-17 अक्टू. |
| मे. मनीकरण (कुल्लू) | 18-23 मई | मे. काली बाड़ी (शिमला) | 1-2 नव. |
| मे. शाही जातर, नगर | 18-23 मई | मे. लावी (रामपुर, चिच्योट) | 11-14 नव. |
| मे. शीतलदेवी (सुंदरनगर) | 22-24 मई | मे. रेणुका शिवलसर (सिरमौर) | 12-13 नव. |
| मे. मिरपरी (मण्डी) | 24-25 मई | बाबा रुद्रोन्नन्दनारी (ऊना) | 12-15 नव. |
| मे. मुरारी देवी (सरकाघाट) | 25-27 मई | मे. जोगी पांगा, ऊना | 15 नव. |

भारत सरकार एवं प्रादेशिक सरकारों की छुट्टियां (सन् 2005-06 ई.) (इन छुट्टियों को भारत सरकार के गजट की सूची से मिला लें)

| लोहड़ी | | वैशाखी (पंजाब) | | (सन् 2006 ई.) | | क्रिश्चियन त्यौहार | |
|--------------|---------------------------|-------------------------|---------------|-----------------------|--------------|--------------------|--------------|
| 12 जन. बु. | 13 अप्रै. बु. | महात्मा गांधी जयंती | 2 अक्टू. र. | ईदुलजुला (बकरीद) | 11 जन. बु. | नववर्ष प्रारम्भ | 1 जन. श. |
| 13 जन. गु. | 14 अप्रै. गु. | दशहरा | 12 अक्टू. बु. | लोहड़ी पर्व | 13 जन. शु. | गुड फ्राइडे | 25 मार्च शु. |
| 21 जन. शु. | 23 मई चं. | श्रीबाल्मीकि जयन्ती | 17 अक्टू. चं. | भारत गणतन्त्र दिवस | 14 जन. श. | ईस्टर सण्डे | 27 मार्च र. |
| 26 जन. बु. | 8 जुला. शु. | जमातुलविदा | 28 अक्टू. शु. | मुहर्म्म (ताजिया) | 26 जन. गु. | लो सण्डे | 3 अप्रै. र. |
| 20 फर. र. | शही. स: ऊधम सिंह (पं.) | दीपावली | 1 नव. मं. | गुरु रविदास जयंती | 9 फर. गु. | क्रिसमिस डे | 25 दिसं. र. |
| 24 फर. गु. | भारत स्वतन्त्रता दिवस | विश्वकर्मा दिवस (पंजाब) | 2 नव. बु. | श्रीमहाशिवरात्रि व्रत | 13 फर. चं. | | (2006 ई.) |
| 8 मार्च मं. | जन्म श्रीहजरत अली | ईद-उल-फितर | 4 नव. शु. | होली | 26 फर. र. | | |
| 25 मार्च शु. | श्रीकृष्ण जन्माष्टमी | श्री गुरु नानक जयंती | 15 नव. मं. | होली मेला (पंजाब) | 14 मार्च मं. | | |
| 26 मार्च श. | श्रीगणेश चतुर्थी (महारा.) | क्रिसमिस डे | 25 दिसं. र. | | 15 मार्च बु. | | |

सिक्ख पर्व एवं गुरुपर्व आदि—2005-06 ई.

| नाम गुरु साहिबान | (प्राचीन परम्परा अनुसार) | | | (नानकशाही कैलण्डर अनुसार) | | |
|---|--------------------------------|------------------------------------|--------------|-----------------------------|------------|--------------|
| | जन्मदिन | गुरयाई | ज्योति-ज्योत | जन्मदिन | गुरयाई | ज्योति-ज्योत |
| 1. श्री गुरु नानकदेव जी | 15 नवम्बर | जन्म से | 27 सितंबर | 15 नवम्बर | जन्म से | 22 सितंबर |
| 2. श्री गुरु अंगददेव जी | 9 मई | 22 सितंबर | 12 अप्रैल | 18 अप्रैल | 18 सितंबर | 16 अप्रैल |
| 3. श्री गुरु अमरदास जी | 22 मई | 9 अप्रैल | 18 सितंबर | 23 मई | 16 अप्रैल | 16 सितंबर |
| 4. श्री गुरु रामदास जी | 19 अक्टूबर | 16 सितम्बर | 6 सितंबर | 9 अक्टूबर | 16 सितंबर | 16 सितंबर |
| 5. श्री गुरु अर्जुनदेव जी | 30 अप्रैल | 5 सितंबर | 11 जून | 2 मई | 16 सितंबर | 16 जून |
| 6. श्री गुरु हरगोबिन्द जी | 23 जून | 30 मई | 13 अप्रैल | 5 जुलाई | 11 जून | 19 मार्च |
| 7. श्री गुरु हरियाय जी | { 21 फर. 05 ई. 10 फर. 06 ई. | { 6 अप्रै. 05 ई. 27 मार्च 06 ई. | 26 अक्टूबर | 31 जनवरी | 14 मार्च | 20 अक्टूबर |
| 8. श्री गुरु हरकिशन जी | 29 जुलाई | 26 अक्टूबर | 23 अप्रैल | 23 जुलाई | 20 अक्टूबर | 16 अप्रैल |
| 9. श्री गुरु तेग बहादुर जी | 28 अप्रैल | 22 अप्रैल | 6 दिसम्बर | 18 अप्रैल | 16 अप्रैल | 24 नवम्बर |
| 10. श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी | { 16 जन. 05 ई. 6 जन. 06 ई. | 4 दिसंबर | 6 नवम्बर | 5 जनवरी | 24 नवंबर | 21 अक्टूबर |
| श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रथम प्रकाश | भाद्र. शुक्ल प्रतिपदा तदनुसार | 4 सितं., 2005 ई. | | 17 भादों-1 सितं., 2005 ई. | | |
| श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी को गुरयाई मिली | कार्ति. शुक्ल द्वितीया तदनुसार | 3 नवं., 2005 ई. | | 6 कार्ति.-20 अक्टू. 2005 ई. | | |
| खालसा पन्थ साजना दिवस | 1 वैशाख प्रविष्टे तदनुसार | 13 अप्रै., 2005 ई. | | 1 वैशाख-14 अप्रै. 2005 ई. | | |

दशमहाविद्या जयन्ती

| | |
|-------------------------|-----------------|
| श्री महातारा जयंती | 18 अप्रै. चंद्र |
| श्री मातङ्गी जयंती | 11 मई बुध |
| श्री बगुलामुखी जयंती | 17 मई मंगल |
| श्री छिन्नमस्तिका जयंती | 23 मई चंद्र |
| श्री धूमावती जयंती | 15 जून बुध |
| श्री महाकाली जयंती | 26 अग. शुक |
| श्री भुवनेश्वरी जयंती | 15 सितं. गुरु |
| श्री कमला जयंती | 20 अक्टू. गुरु |
| श्री त्रिपुरभैरव जयंती | 15 दिसं. गुरु |
| श्री ललिता जयंती | 13 फर. चंद्र |

दशावतार जयंतियां

| | |
|------------------------|-----------------|
| श्री मत्स्यावतार जयंती | 11 अप्रै. चंद्र |
| श्री रामावतार जयंती | 18 अप्रै. चंद्र |
| श्री परशुराम जयंती | 10 मई मंगल |
| श्री नृसिंहावतार जयंती | 22 मई रवि |
| श्री कूर्मावतार जयंती | 23 मई चंद्र |
| श्री बुद्धावतार जयंती | 23 मई चंद्र |
| श्री कल्कि अवतार | 11 अग. गुरु |
| *श्री कृष्णावतार जयंती | 26 अग. शुक |
| श्री वाराहावतार जयंती | 6 सितं. मंगल |
| श्री वामनावतार जयंती | 15 सितं. गुरु |

सन् 2005 ई. में एकादशी व्रत, प्रदोष व्रत, सत्यनारायण व्रत, गणेश चतुर्थी व्रतादि-एक दृष्टि में

| पक्ष | एकादशी व्रत (स्मार्तों के लिए) | प्रदोष व्रत | व्रत | श्री गणेश चौथ | संक्रान्ति | अमावस (स्नानदानार्थ) |
|---------------|-----------------------------------|-------------|----------------|---------------|------------|-------------------------|
| शुक्ल/कृष्ण | | | श्रीसत्यनारायण | | | |
| पौष कृष्ण | 6 जन. (सफला) | 8 जन. | — | 30 दिसं. (04) | — | 10 जन. |
| पौष शुक्ल | 20 जन. (पुत्रदा) | 22 जन. | 24 जनवरी | — | 13 जनवरी | — |
| माघ कृष्ण | 5 फर. (षट्दिला) | 6 फर. | — | 29 जनवरी | — | 8 फर. |
| माघ शुक्ल | 19 फर. (जया) | 21 फर. | 23 फरवरी | — | 12 फरवरी | — |
| फाल्गुन कृष्ण | 6 मार्च (विजया) | 8 मार्च | — | 27 फरवरी | — | 10 मार्च |
| फाल्गुन शुक्ल | 21 मार्च (आमलकी) | 23 मार्च | 25 मार्च | — | 14 मार्च | — |
| चैत्र कृष्ण | 5 अप्रै. (पापमोचनी) | 6 अप्रै. | — | 29 मार्च | — | 8 अप्रैल |
| चैत्र शुक्ल | 20 अप्रै. (कामदा) | 21 अप्रै. | 23 अप्रैल | — | 13 अप्रैल | — |
| वैशाख कृष्ण | 4 मई (वरुधिनी) | 5 मई | — | 27 अप्रैल | — | 8 मई |
| वैशाख शुक्ल | 20 मई (मोहिनी) | 21 मई | 23 मई | — | 14 मई | — |
| ज्येष्ठ कृष्ण | 2 जून (अपरा) | 4 जून | — | 26 मई | — | 6 जून |
| ज्येष्ठ शुक्ल | 18 जून (निर्जला) | 19 जून | 21 जून | — | 14 जून | — |
| आषाढ़ कृष्ण | 2 जुला. (योगिनी) | 3 जुला. | — | 25 जून | — | 6 जुलाई |
| आषाढ़ शुक्ल | 18 जुला. (देवशयनी) | 19 जुला. | 21 जुलाई | — | 16 जुलाई | — |
| श्रावण कृष्ण | 31 जुला. (कामिका) | 2 अग. | — | 24 जुलाई | — | 5 अगस्त |
| श्रावण शुक्ल | 16 अग. (पवित्रा) | 17 अग. | 19 अगस्त | — | 16 अगस्त | — |
| भाद्रपद कृष्ण | 30 अग. (अजा) | 1 सितं. | — | 22 अगस्त | — | 3 सितंबर |
| भाद्रपद शुक्ल | 14 सितं. (पद्मा) | 15 सितं. | 17 सितम्बर | — | 16 सितम्बर | — |
| आश्विन कृष्ण | 29 सितं. (इन्दिरा) | 30 सितं. | — | 21 सितम्बर | — | 3 अक्टूबर |
| आश्विन शुक्ल | 13 अक्तू. (पापंकुशा) | 15 अक्तू. | 16 अक्टूबर | — | 17 अक्टूबर | — |
| कार्तिक कृष्ण | 28 अक्तू. (रमा) | 30 अक्तू. | — | 20 अक्टूबर | — | 1 नवम्बर |
| कार्तिक शुक्ल | 12 नवं. (देवप्रबो.) | 13 नवं. | 15 नवम्बर | — | — | — |
| मार्ग कृष्ण | 27 नवं. (उत्पन्ना) | 29 नवं. | — | 19 नवम्बर | 16 नवम्बर | 1 दिसम्बर |
| मार्ग शुक्ल | 11 दिसं. (मोक्षदा) | 13 दिसं. | 15 दिसम्बर | — | — | — |
| पौष कृष्ण | 27 दिसं. (सफला) | 28 दिसं. | — | 19 दिसम्बर | 15 दिसम्बर | 31 दिसम्बर |

वि. संवत् २०६२ में प्रमुख संवत्तों का प्रारम्भ

- वि. संवत् (विलम्ब नामक) २०६२ का शुभारम्भ = ९ अप्रै., शनिवार, तन्मध्यो अन्य संवत्तों (सन् आदि) की प्रारम्भ तिथियाँ =
- कल्पदि से गत वर्ष = १, ९७, २९, ४९, १०६ वर्ष
- सृष्टि का आरम्भ वर्ष = १, ९५, ५८, ८५, १०५ वर्ष
- इनमें सतयुग की कुल समयावधि = १७, २८, ००० वर्ष
- त्रेतायुग की कुल समय अवधि = १२, ९६, ००० वर्ष
- द्वारपर युग की कुल समय अवधि = ८, ६४, ००० वर्ष
- कलियुग की कुल समय अवधि = ४, ३२, ००० वर्ष
- भोग्य कलि वर्ष = ४२६८९४ संवत्
- वि. सं. २०६२ में कलियुग का कल्कि सं. ५१०६=१० अग., बुधवार
- श्री कृष्ण जन्म संवत् ५२४१ प्रा.=२६ अग., शुक्रवार
- सत्तार्षि संवत् ५०८१ प्रा. = ९ अप्रै., शनिवार
- श्री बुद्ध संवत् २६२९ प्रा. = २३ मई, २००५ ई., सोमवार
- श्रीमहावीर निर्वाण सं. २५३१ प्रा.=१ नव., २००५ ई., मंगलवार
- सन् ईसवी (क्रिश्चियन) २००६ प्रारम्भ = १ जन., २००६, रविवार
- शाका संवत् १९२८ प्रा. = २२ मार्च, सन् २००६ ई., बुधवार
- मुस्लिम हिजरी सन् १४२७ प्रा. = ३१ जन., २००६ ई., मंगलवार
- फसली सन् १४१३ प्रारम्भ = १८ सितं., २००५ ई. रविवार
- बंगाली सन् १४१२ प्रारम्भ = १५ अप्रै., २००५ ई., शुक्रवार
- नानकशाही संवत् ५३७ प्रा. = १५ मार्च, सन् २००५ ई.,
- खालसा संवत् ३०७ प्रारम्भ = १३ अप्रैल, सन् २००५ ई.
- जय हिन्द संवत् ५९४० प्रा. = १५ अग., सन् २००५ ई.
- 'पंचांगदिवाक्च' का प्रवेश वर्ष, १३०४=९ अप्रै., शनिवार

राजा-मन्त्री तथा सम्वत्सर के फल के विस्तृत विवरण के लिए पढ़ें पृष्ठ नं. 50

गण्डमूलक नक्षत्रों का प्रारम्भ व समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) संवत् २०६२ वि.

(1 जनवरी, सन् 2005 ई. से 31 मार्च, 2006 ई. तक)

| प्रारम्भ काल | | समाप्ति काल | | प्रारम्भ काल | | समाप्ति काल | | प्रारम्भ काल | | समाप्ति काल | | समाप्ति काल | |
|--------------|---------|-------------|---------|--------------|---------|-------------|---------|---|---------|-------------|---------|-------------|---------|
| ता. मा. | घं. मिं | 2005 | घं. मिं | 2005 | घं. मिं | 2005 | घं. मिं | 2005 | घं. मिं | 2005 | घं. मिं | 2005-06 | घं. मिं |
| 8 जन. | 2 39 | 9 जन. | 21 06 | 24 मई | 14 49 | 26 मई | 10 31 | 8 अक्टू. | 8 02 | 10 अक्टू. | 6 50 | 6 जन. 06 | 14 30 |
| 16 जन. | 5 46 | 18 जन. | 7 26 | 1 जून | 24 31 | 3 जून | 25 16 | 16 अक्टू. | 18 48 | 18 अक्टू. | 16 04 | 15 जन. | 24 11 |
| 26 जन. | 2 09 | 28 जन. | 7 17 | 11 जून | 15 35 | 13 जून | 21 29 | 25 अक्टू. | 24 42 | 28 अक्टू. | 6 38 | 25 जन. | 18 57 |
| 4 फर. | 11 56 | 6 फर. | 7 47 | 20 जून | 24 53 | 22 जून | 19 58 | 4 नव. | 14 07 | 6 नव. | 12 16 | 2 फर. | 21 53 |
| 12 फर. | 15 05 | 14 फर. | 15 14 | 29 जून | 6 02 | 1 जुला | 6 45 | 13 नव. | 3 02 | 14 नव. | 25 15 | 12 फर. | 6 32 |
| 22 फर. | 8 42 | 24 फर. | 13 30 | 8 जुला | 22 07 | 11 जुला | 4 09 | 22 नव. | 8 55 | 24 नव. | 14 56 | 22 फर. | 3 34 |
| 3 मार्च | 18 32 | 5 मार्च | 15 52 | 18 जुला | 11 05 | 20 जुला | 6 35 | 1 दिसं. | 22 22 | 3 दिसं. | 19 21 | 2 मार्च | 7 53 |
| 12 मार्च | 1 34 | 13 मार्च | 24 43 | 26 जुला | 13 01 | 28 जुला | 12 42 | 10 दिसं. | 9 00 | 12 दिसं. | 8 16 | 11 मार्च | 12 35 |
| 21 मार्च | 16 07 | 23 मार्च | 20 53 | 5 अग. | 4 07 | 7 अग. | 10 05 | 19 दिसं. | 16 57 | 21 दिसं. | 22 56 | 21 मार्च | 10 00 |
| 30 मार्च | 23 55 | 1 अप्रै. | 21 40 | 14 अग. | 19 53 | 16 अग. | 16 40 | 29 दिसं. | 8 36 | 31 दिसं. | 5 01 | 29 मार्च | 19 02 |
| 8 अप्रै. | 11 13 | 10 अप्रै. | 10 23 | 22 अग. | 22 08 | 24 अग. | 20 22 | अश्वि., अश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूला एवं रेवती - ये गण्डमूल नक्षत्र कहलाते हैं - इन नक्षत्रों में | | | | | |
| 17 अप्रै. | 24 10 | 20 अप्रै. | 5 15 | 1 सितं. | 10 13 | '3 सितं. | 16 04 | उत्पन्न जातक स्वयं अपने या माता-पिता के स्वास्थ्य, व्यवसाय एवं उन्नति आदि के सम्बन्ध में अशुभ | | | | | |
| 27 अप्रै. | 6 19 | 29 अप्रै. | 3 14 | 11 सितं. | 2 36 | 12 सितं. | 24 49 | होते हैं। गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक के नक्षत्र की लगभग 27 दिन पश्चात् उसी नक्षत्र में विद्वान् | | | | | |
| 5 मई | 18 46 | 7 मई | 18 44 | 19 सितं. | 8 37 | 21 सितं. | 5 52 | एवं योग्य ब्राह्मण द्वारा शान्ति करवानी चाहिए। यदि जन्मकाल के समय शान्ति न करवाई गई हो तो, | | | | | |
| 15 मई | 8 12 | 17 मई | 13 44 | 28 सितं. | 17 01 | 30 सितं. | 22 51 | जातक के जन्मदिन के निकट उसी नक्षत्र में दान-पूजन करवा लेना शुभकारक रहता है। | | | | | |

पंचकारम्भ एवं समाप्ति काल—सं० २०६२ (1 जन. सं. 2005 ई० से 31 मार्च 2006 ई० तक)

| प्रारम्भ काल | | समाप्ति काल | | प्रारम्भ काल | | समाप्ति काल | |
|--------------|----------|-------------|----------|--------------|----------|-------------|----------|
| 2005 | घं. मिं. | 2005 | घं. मिं. | 2005-06 | घं. मिं. | 2005-06 | घं. मिं. |
| 12 जन. | 22 30 | 17 जन. | 6 13 | 16 सितं. | 5 11 | 20 सितं. | 6 57 |
| 9 फर. | 9 47 | 13 फर. | 14 45 | 13 अक्टू. | 13 33 | 17 अक्टू. | 17 14 |
| 8 मार्च | 20 10 | 13 मार्च | 0 47 | 9 नव. | 19 36 | 14 नव. | 2 01 |
| 5 अप्रै. | 4 05 | 9 अप्रै. | 10 33 | 6 दिसं. | 25 02 | 11 दिसं. | 8 30 |
| 2 मई | 9 52 | 6 मई | 18 34 | 3 जन. | 8 22 | 7 जन. | 13 53 |
| 29 मई | 15 24 | 2 जून | 24 41 | 30 जन. | 18 28 | 3 फर. | 20 32 |
| 25 जून | 22 36 | 30 जून | 6 06 | 27 फर. | 5 54 | 3 मार्च | 5 46 |
| 23 जुला | 8 02 | 27 जुला | 12 29 | 26 मार्च | 16 17 | 30 मार्च | 16 36 |
| 19 अग. | 18 49 | 23 अग. | 20 52 | | | | |

पंचाव्ह नक्षत्र विचार

वासवोत्तर दलादि पंचके याघ्यादिगमनं गृहगोपनम्।

प्रेत दाहवृण काष्ठ संचयं शय्यका वितरणं च वर्जयेत् ॥

—पंचक नक्षत्रों में काष्ठ छेदन (लकड़ी तोड़ना), तिनके तोड़ना, दक्षिण दिशा की यात्रा, प्रेतादि-दाहसंस्कार, स्तम्भारोपण, वृण, ताम्बा, पीतल, लकड़ी आदि का संचय, दुकान, मकान या झोपड़ी आदि की छत डालना, चारपाई, खाट, चटाई आदि बुनना, बैठक की गदियों का निर्माण करना त्याज्य माना गया है। पंचकों में हानि, लाभ एवं व्याधि आदि पाँच गुणा, त्रिपुष्कर में तीन गुणा तथा द्विपुष्कर में दोगुणा लाभ या हानि की सम्भावना होती है। विधिवत् नक्षत्र पूजा, दान एवं ब्राह्मण भोजन करवाना शुभप्रद होता है।

ध्यान रहे, मुहूर्त ग्रन्थों में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृह प्रवेश, वधू-प्रवेश, उपनयन आदि तथा रक्षा-बंधन, भैया दूज आदि पर्वों में पंचक नक्षत्रों के निषेध के बारे में कहीं भी विचार नहीं किया जाता।

—समादक।

नोट—हमारे कार्यालय से 'ग्रह नक्षत्र-शान्ति रहस्यम्' पुस्तक पूजनादि कार्यों के लिए मंगवा सकते हैं।

ग्रहण विवरण (संवत् २०६२ वि.)

वि. संवत् २०६२ में पृथ्वी पर कुल चार ग्रहण होंगे—

- (1) कंकण सूर्यग्रहण (8/9 अप्रैल, 2005 ई., शुक्र/शनि)
- (2) कंकण चन्द्रग्रहण (3 अक्टूबर, 2005 ई., सोमवार)
- (3) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (17 अक्टूबर, 2005 ई., सोमवार)
- (4) खग्रास/खण्डग्रास सूर्यग्रहण (29 मार्च, 2006 ई., बुधवार)

जं. (1) वाला ग्रहण भारत में दृश्य नहीं होगा, जबकि शेष तीनों ग्रहण भारत में दृश्य होंगे। इसके अतिरिक्त 24 अप्रैल, 2005 ई. को चन्द्रमा का छाया ग्रहण भी घटित होगा। इस उपच्छाया चन्द्रग्रहण के समय जप, दानादि का कोई महत्त्व नहीं होगा तथा न ही सूतकादि का विचार रहेगा।

भारत में अदृश्य ग्रहण का संक्षिप्त विवरण

(1) कंकण सूर्यग्रहण (8/9 अप्रैल, 2005 ई., शुक्र/शनि)—यह ग्रहण चैत्र कृष्ण अमावस, शुक्रवार, वि. संवत् २०६१ तदनुसार 8 अप्रैल, 2005 ई. को भा. स्टैं. टा. के अनुसार रात्रि २३ घं. २१ मिं. पर प्रारम्भ 9 अप्रैल की प्रातः 4 घं. 50 मिं. पर समाप्त हो जाएगा। इसका परम ग्रास 8 अप्रैल की रात्रि 25 घं. 46 मिं. पर होगा। यह ग्रहण न्यूजिलैण्ड, मध्य एवं दक्षिण अमेरिका, कैरेबियन (वेस्ट इण्डीज) में दिखाई देगा।

भारत में दृश्य ग्रहणों का विस्तृत विवरण

(1) कंकण सूर्यग्रहण (3 अक्टूबर, 2005 ई., सोमवार)—यह ग्रहण आश्विन कृष्ण अमावस, सोमवार को भारत में कंकण तथा खण्डग्रास के रूप में सारे भारत में अलग-अलग रूप में दिखाई देगा। भा. स्टैं. टा. के अनुसार इसका स्पर्श-मोक्ष इस प्रकार से है—

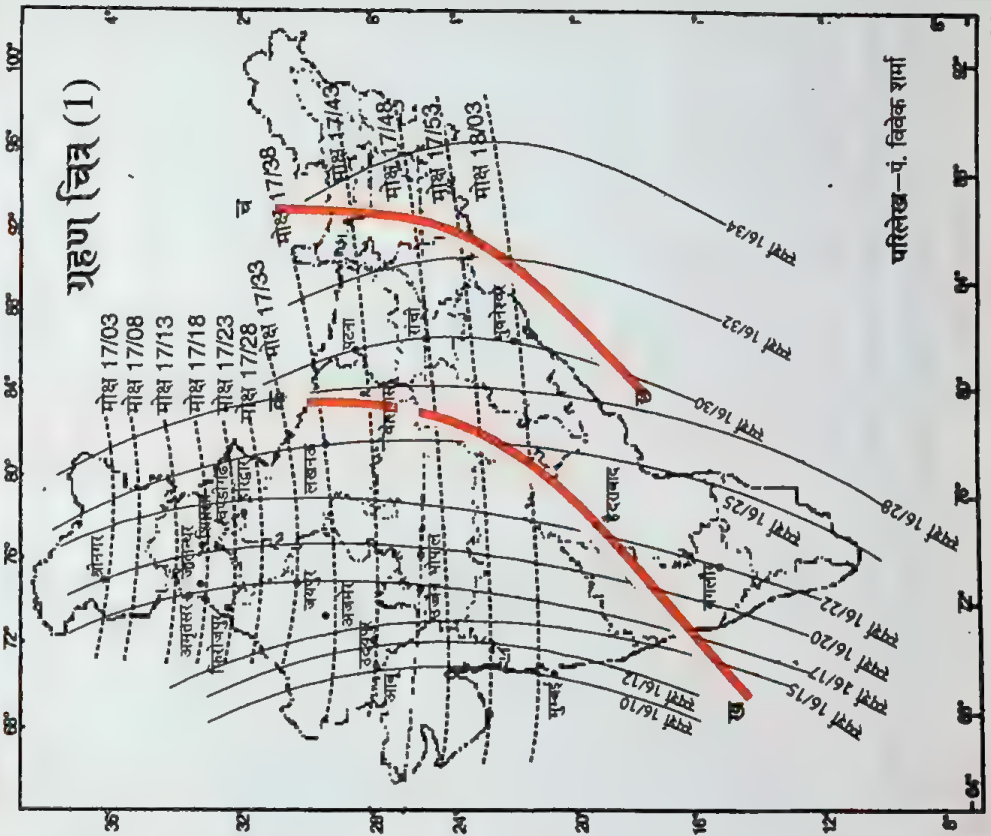
| ग्रहण आरम्भ | घण्टा/मिनट (भा. स्टैं. टा.) |
|------------------|--------------------------------|
| ग्रास आरम्भ | 13-06 |
| परम ग्रास | 14-13 |
| ग्रास समाप्त | 16-02 |
| ग्रहण समाप्त | 17-51 |
| परमग्रास की अवधि | 18-58 |
| | 4 मिं. 26 सैं. |

यह ग्रहण सम्पूर्ण भारत के अतिरिक्त पूर्वी ग्रीनलैण्ड, आईसलैण्ड, यूरोप (इंग्लैण्ड सहित), दक्षिण भागों को छोड़कर अफ्रीका, भारत सहित पश्चिमी एशिया में ही दिखाई देगा।

भारत के पूर्वी एवं सूदूर दक्षिणी भागों में कंकण सूर्यग्रहण का केवल आरम्भ ही दृश्य होगा। इन क्षेत्रों में सूर्य ग्रस्त हो अस्त होगा अर्थात् ग्रहण समाप्ति से पूर्व ही सूर्य अस्त हो जाएगा। जबकि उत्तर-पश्चिमी, उत्तर भारत में कंकण सूर्यग्रहण की समाप्ति देखी जा सकेगी। ग्रहण चित्र (1) में इस ग्रहण का स्पर्श (प्रारम्भ) व मोक्ष (समाप्ति) बतलाने वाली रेखाओं से भारत के किसी भी स्थल पर इस ग्रहण का प्रारम्भ व समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.) जाना जा सकता है। आगामी पृष्ठ पर लगभग 80 नगरों में इस ग्रहण का प्रारम्भ व समाप्ति काल दिया गया है। इनके साथ ही इन नगरों के 3 अक्टूबर के दिन सूर्यास्तकाल भी दिया गया है। अतः इन नगरों के साथ दिए गए सूर्यास्तकाल से यह ज्ञात किया जा सकता है कि अनुकूल नगर में ग्रहण का मोक्ष सूर्यास्त से पहले होगा या नहीं। ग्रहण चित्र (1) में स्पर्श तथा मोक्ष रेखाओं के मध्य आप अपने नगर में होने वाले कंकण सूर्यग्रहण का आरम्भ व समाप्ति काल सरलता से जान सकते हैं।

कंकण खण्डग्रास सूर्यग्रहण 3 अक्टू. 2005 ई.

ग्रहण चित्र (1)



परिलेख—पं. विवेक शर्मा

ग्रहण चित्र (1) में दो गई 'क-ख' रेखा से दाईं ओर बसे स्थलों पर सर्वत्र सूर्यग्रहण ही अस्त हो जाएगा। इस रेखा से बाईं ओर बसे नगरों में ग्रहण समाप्ति के बाद ही सूर्यास्त होगा। इसी चित्र में 'च-छ' रेखा भी दी गई है। इस रेखा से दाईं ओर वाले स्थलों पर इस ग्रहण का मध्य (परमग्रास नहीं दिखाई देगा, क्योंकि वहाँ पर ग्रहण मध्यकाल से पूर्व (पहले) ही सूर्य अस्त हो जाएगा। संक्षिप्त में, भारतीय भूक्षेत्रों पर यह ग्रहण सायं लगभग 4 बजे से सायं 6-20 तक दृश्य रहेगा।

ग्रहण का सूतक—इस खण्डग्रास कंकण सूर्यग्रहण का सूतक 3 अक्टू, 05 ई. को सामान्यतः सूर्योदय के समय से प्रारम्भ हो जाएगा। लेकिन ग्रस्तास्त ग्रहण हो तो सूर्योदयकाल से, अन्यथा सूर्यकाल से ठीक 12 घण्टे पहिले सूतक का वास्तविक प्रारम्भ काल होता है। क्योंकि पंजाब, हरियाणा, हि. प्र., जम्मू आदि प्रदेशों में यह ग्रहण कंकण रूप में दिखाई देगा, अतएव अपने स्थानीय नगर के स्पर्शकाल से 12 घण्टे पूर्व सूतक का प्रारम्भकाल जायें। 3 अक्टू. की प्रातः लगभग सबसे पहले द्वारिका में 4-02 से सूतक प्रारम्भ हो जाएगा। जैसे अमृतसर का स्पर्शकाल 16-17 है तो सूतक प्रातः 4-17 से प्रारम्भ होगा।

—कंकण सूर्यग्रहण—

कुक्षेत्र में परमग्रास का मान
(१६ घं. ५२ मिं.)

शीर्ष



द.

प.

भारत के प्रसिद्ध नगरों में कंकण सूर्यग्रहण (3 अक्टू., 2005 ई.) का स्पर्श, मोक्षदि काल (भा. स्ट. टा.)

इन नगरों में खण्डग्रास (कंकण) सूर्यग्रहण ही दिखाई देगा। जहाँ मोक्षकाल नहीं दिखाया गया है, वहाँ मोक्ष से पहले ही सूर्यास्त हो जाएगा।

| नगर | स्पर्श घं. मिं. | परमग्रास घं. मिं. | मोक्ष घं. मिं. | *सूर्यास्त घं. मिं. | *पूर्वकाल घं. मिं. | नगर | स्पर्श घं. मिं. | परमग्रास घं. मिं. | मोक्ष घं. मिं. | *सूर्यास्त घं. मिं. | *पूर्वकाल घं. मिं. |
|------------------|--------------------|----------------------|-------------------|------------------------|-----------------------|-------------------|--------------------|----------------------|-------------------|------------------------|-----------------------|
| अगरतला | 16 33 | — | — | 17 06 | 0 33 | देहरादून | 16 23 | 16 53 | 17 21 | 17 59 | 0 58 |
| अजमेर | 16 16 | 16 58 | 17 37 | 18 12 | 1 21 | नागपुर | 16 22 | 17 12 | 17 57 | 18 00 | 1 35 |
| अम्बाला | 16 21 | 16 52 | 17 21 | 18 02 | 1 00 | नगल | 16 20 | 16 45 | 17 18 | 18 09 | 0 58 |
| अमृतसर | 16 17 | 16 46 | 17 14 | 18 09 | 0 57 | नाहन (हि. प्र.) | 16 23 | 16 47 | 17 20 | 18 01 | 0 57 |
| अहमदाबाद | 16 10 | 17 02 | 17 49 | 18 21 | 1 39 | पंचकुला (ह.) | 16 22 | 16 48 | 17 19 | 18 03 | 0 57 |
| अलमोड़ा | 16 23 | 16 55 | 17 25 | 17 51 | 1 02 | पणजी | 16 15 | 17 17 | 18 13 | 18 27 | 1 58 |
| एजावल | 16 34 | — | — | 17 03 | 0 29 | पटना | 16 30 | 17 08 | — | 17 32 | 1 02 |
| इटागर | 16 35 | — | — | 16 56 | 0 21 | पोंडीचेरी | 16 25 | 17 28 | — | 18 03 | 1 38 |
| इलाहाबाद | 16 26 | 17 06 | 17 43 | 17 47 | 1 17 | पोर्ट-ब्लेयर | 16 35 | — | — | 17 10 | 0 35 |
| इम्फाल | 16 35 | — | — | 16 55 | 0 20 | पणो | 16 14 | 17 12 | 18 04 | 18 22 | 1 50 |
| उदयपुर (राज.) | 16 13 | 17 00 | 17 44 | 18 16 | 1 31 | पानीपत (ह.) | 16 19 | 16 53 | 17 26 | 18 04 | 1 07 |
| उज्जैन | 16 17 | 17 05 | 17 49 | 18 09 | 1 32 | पुछ (का.) | 16 16 | 16 42 | 17 05 | 18 13 | 0 51 |
| उपमपुर (का.) | 16 19 | 16 45 | 17 08 | 18 07 | 0 49 | फरीदकोट | 16 14 | 16 47 | 17 20 | 18 12 | 1 06 |
| ककुआ (का.) | 16 20 | 16 46 | 17 11 | 18 07 | 0 51 | फिरोजपुर | 16 15 | 16 48 | 17 19 | 18 12 | 1 04 |
| कलकत्ता | 16 32 | 17 15 | — | 17 19 | 0 47 | बंगलोर | 16 22 | 17 25 | — | 18 10 | 1 48 |
| कोहिमा | 16 35 | — | — | 16 55 | 0 20 | भोपाल | 16 19 | 17 06 | 17 50 | 18 04 | 1 31 |
| करनाल | 16 20 | 16 53 | 17 25 | 18 03 | 1 05 | भुवनेश्वर | 16 30 | 17 17 | — | 17 30 | 1 00 |
| कुस्क्षेत्र | 16 20 | 16 52 | 17 23 | 18 04 | 1 03 | मण्डी (हि. प्र.) | 16 23 | 17 50 | 17 15 | 18 03 | 0 52 |
| कुल्लू | 16 23 | 16 50 | 17 15 | 18 02 | 0 52 | माजुंडी-आबू | 16 10 | 16 59 | 17 43 | 18 26 | 1 33 |
| कांगड़ा | 16 21 | 16 47 | 17 12 | 18 05 | 0 51 | मेरठ | 16 12 | 17 10 | 18 03 | 18 23 | 1 51 |
| कुरगली | 16 20 | 16 50 | 17 18 | 18 06 | 0 58 | राजमुंदरी (आ.) | 16 22 | 16 55 | 17 27 | 18 01 | 1 05 |
| गंगटोली | 16 33 | 17 06 | 17 30 | 18 03 | 1 11 | राजपुर (छत्ती) | 16 26 | 17 13 | — | 17 48 | 1 23 |
| गुडगाँव | 16 19 | 16 56 | 17 30 | 18 05 | 0 31 | राजमुंदरी (आ.) | 16 26 | 17 21 | — | 17 52 | 1 26 |
| गुआहटी | 16 34 | — | — | 17 05 | 0 31 | लुधियाना | 16 19 | 16 49 | 17 17 | 18 07 | 0 58 |
| गुवाहाटी | 16 19 | 16 56 | 17 30 | 18 03 | 1 11 | लखनऊ | 16 25 | 17 02 | 17 37 | 17 49 | 1 20 |
| गुवाहाटी | 16 19 | 16 56 | 17 30 | 18 03 | 1 11 | विशाखापटनम् | 16 27 | 17 20 | — | 17 47 | 1 13 |
| चम्बा (हि. प्र.) | 16 21 | 16 51 | 17 12 | 18 10 | 0 53 | वाराणसी | 16 28 | 17 07 | — | 17 41 | 1 13 |
| चेन्नई | 16 22 | 16 47 | 17 11 | 18 05 | 0 49 | शिमला | 16 34 | — | — | 17 05 | 0 31 |
| छपरा (बि.) | 16 29 | 17 03 | — | 17 34 | 1 05 | श्रीनगर | 16 20 | 16 50 | 17 17 | 18 02 | 0 55 |
| जम्मू | 16 18 | 16 45 | 17 10 | 18 10 | 0 52 | सहारनपुर | 16 23 | 16 55 | 17 24 | 18 01 | 1 01 |
| जयपुर | 16 17 | 16 57 | 17 35 | 18 09 | 1 18 | संगरूर | 16 18 | 16 41 | 17 22 | 18 08 | 1 04 |
| जालन्धर | 16 18 | 16 48 | 17 16 | 18 09 | 1 25 | सोलन | 16 22 | 16 50 | 17 17 | 18 03 | 0 53 |
| जोधपुर | 16 12 | 16 55 | 17 37 | 18 20 | 1 25 | हरिद्वार | 16 23 | 16 54 | 17 23 | 17 59 | 1 00 |
| झाँसी (म. प्र.) | 16 23 | 17 05 | 17 46 | 17 59 | 1 23 | देहराबाद | 16 22 | 17 18 | — | 18 04 | 1 42 |
| थिम्फू (भूटा.) | 16 34 | 17 07 | — | 17 16 | 0 42 | हमीपुर (हि. प्र.) | 16 22 | 16 49 | 17 15 | 18 05 | 0 53 |
| द्वारिका | 16 02 | 16 59 | 17 50 | 18 38 | 1 48 | होशियारपुर | 16 19 | 16 48 | 17 16 | 18 07 | 0 57 |
| दार्जिलिंग | 16 33 | 17 07 | — | 17 19 | 0 46 | | | | | | |
| दिल्ली | 16 20 | 16 55 | 17 29 | 18 03 | 1 09 | | | | | | |

*स्पर्श से मोक्ष तक का काल 'पूर्वकाल' कहलाता है। जहाँ मोक्ष से पूर्व ही अस्त हो जाता है, वहाँ स्पर्श से सूर्यास्त तक के काल को 'पूर्वकाल' माना जाता है।

**यहाँ दिया गया सूर्यास्त काल 'किरण वक्रोपवन संस्कार' सहित है। जोकि जंती/पंचांग में दिए गए सूर्यास्त समय से लगभग 2 मिनट बाद होगा।

कृत्य अकृत्य—ग्रहण के सूतक और ग्रहण काल में स्नान-दान, जप-पाठ, मन्त्र-अनुष्ठान, तीर्थ-स्नान, ध्यान, हवननादि शुभ कृत्यों का सम्पादन करना कल्याणकारी होता है।

ध्यान रहे, ग्रस्तास्त ग्रहण (क-ख रेखा के दाईं ओर बसे नगरो में) का पर्वकाल (दान, जपदि का समय) सूर्य के अस्त काल पर ही समाप्त हो जाता है। इसलिए जहाँ सूर्य ग्रस्ता ही अस्त होगा, वहाँ इस ग्रहण का पर्वकाल सूर्यास्त पर समाप्त हो जाएगा।

जहाँ यह ग्रहण ग्रस्तास्त होगा, वहाँ के धार्मिक लोगों को सूर्यास्त के बाद स्नान करके सायं सन्ध्या जपदि करना चाहिए, लेकिन उन्हें तब तक खाना नहीं चाहिए जब तक कि वे 4 अक्ती के सूर्योदय के समय शुद्ध (ग्रहण-मुक्त) सूर्यबिम्ब को नहीं देख लेते। वृद्ध, रोगी, बालक एवं गर्भवती स्त्रियों को यथानुकूल भोजन या दवाई अदि लेने में दोष नहीं। ग्रहण उपरान्त स्नान एवं यथाशक्ति दानादि करना शुभ एवं कल्याणकारी होता है।

सूतक एवं ग्रहणकाल में मूर्ति स्पर्श करना, अनावश्यक खाना-पीना, मैथुन, सोना, तैल, तैलाभ्यंग वर्जित है तथा अन्य निन्दित कार्य करने से परहेज करना चाहिए।

पका हुआ अन्न, कटी हुई सब्जी व फल ग्रहणकाल में दूषित हो जाते हैं, उन्हें नहीं खाना चाहिए। लेकिन तेल या घी में पका (तला हुआ) अन्न, घी, तेल, दूध, दही, लस्सी, मक्खन, पनीर, आचार, चटनी, मुरब्बा में तिल या कुशा रख देने से ग्रहणकाल में ये दूषित नहीं होते।

कंकण सूर्यग्रहण पर हस्ति, कुस्सेत्र, प्रयागादि तीर्थों पर स्नान, दानादि का विशेष माहात्म्य होता है। कंकण खण्ड सूर्यग्रहण को नंगी आँखों से नहीं देखना चाहिए। वैज्ञानिक ढंग से काले किए हुए शीशे द्वारा देखना ठीक होगा।

ग्रहण का राशिफल—यह ग्रहण कन्या राशि तथा हस्त नक्षत्र में घटित हो रहा है, इसलिए कन्या राशि और हस्त नक्षत्र वालों के लिए यह ग्रहण विशेष रूप से अशुभफली रहेगा। बारह राशि वालों के लिए इस ग्रहण का फल इस प्रकार होगा—

| पेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चि | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|--------|-------|--------|------|------|-------|------|--------|---------|--------|-------|---------|
| लाभ | गुल | सिद्धि | धन | धन | शरीर | धन | धन | लाभ | विघ्न, | हानि | स्त्री, |
| उन्नति | चिंता | शरीर | लाभ | हानि | कष्ट, | हानि | लाभ | तत्काली | धन | कष्ट | पति |
| | | कष्ट | | | चोट | | | | हानि | | कष्ट |

ग्रहण का अन्य फल—यह ग्रहण आश्विन मास, कन्या राशि एवं हस्त नक्षत्र में घटित हो रहा है। फलस्वरूप कृषकों, कवि, लेखकों, गायकों, पण्डितों, व्यापारी, व्यापार की वस्तुओं, कारीगरों को कष्ट व पीड़ा, स्त्रियों के गर्भों को पीड़ा तथा चावल व औषधियों का नाश होगा। ग्रहण का स्पर्श सन्ध्याकाल में होने से गर्भवती स्त्रियों को पीड़ा, गायों के गर्भों का नाश तथा वर्षा का अभाव रहेगा।

सन्ध्याकाले तु गर्भस्था गृहीतः पीडयेत् प्रजाः।

गावो गर्भ विमुच्यन्ति न च वर्षत् पुरन्दरः॥

(2) ग्रस्तोदय (चूड़ामणि) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (17 अक्टूबर, 2005 ई., सोमवार)

—यह खण्डग्रास चन्द्रग्रहण 17 अक्टूबर, 2005 ई. को भारत के सतु पश्चिमी भागों को छोड़कर शेष भारत में दिखाई पड़ेगा। यह ग्रहण पश्चिमी बंगाल, मिजोरम, आसाम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय आदि भागों में चन्द्रोदय के बाद प्रारम्भ होगा। राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र के सुदूर पश्चिमी भागों को छोड़कर शेष भाग में इस ग्रहण का आरम्भ चन्द्रोदय से पहिले ही हो जाएगा अर्थात् वहाँ यह ग्रहण ग्रस्तोदय होगा।

इस ग्रहण के स्पर्श आदि के काल (भा. स्टैं. टा.) इस प्रकार हैं—

| ग्रहण स्पर्श | घं. मिं. |
|--------------|----------|
| ग्रहण मध्य | 17-04 |
| ग्रहण मोक्ष | 17-34 |
| | 18-03 |

17 अक्टूबर, 2005 ई.

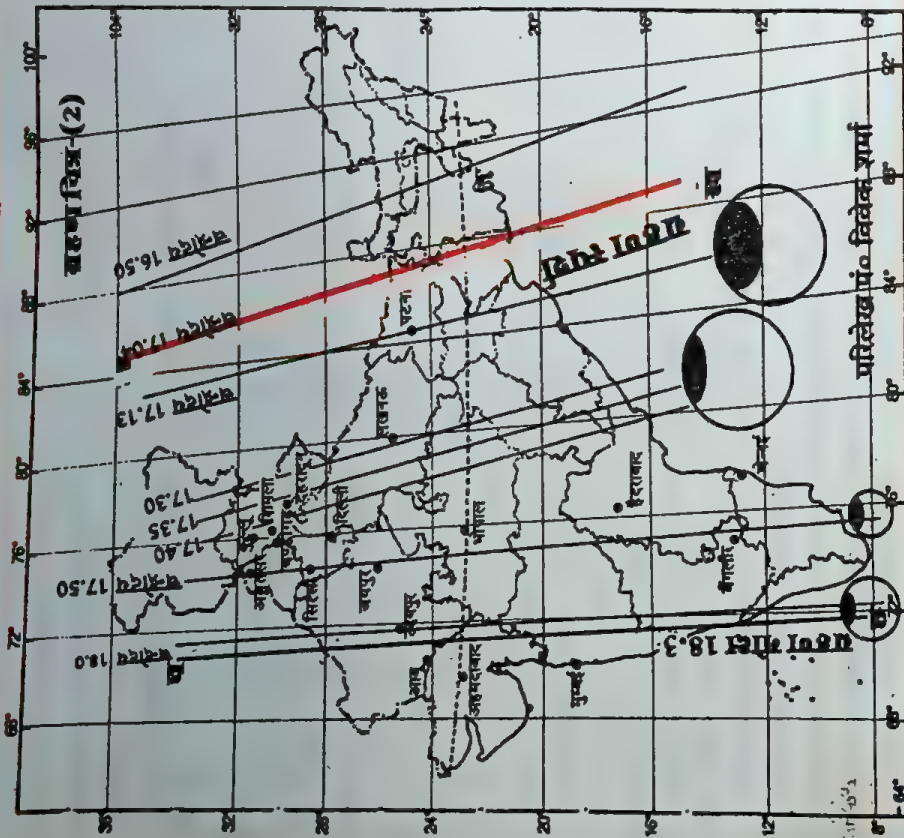
भारत के सतु उत्तर पूर्वी भागों में ही खण्डग्रास चन्द्रग्रहण का आरम्भ देखा जा सकेगा। ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण की समाप्ति सतु पश्चिमी क्षेत्रों को छोड़ सारे भारत में दिखलाई देगी। आगामी पृष्ठ पर बायें ओर भारत का मानचित्र (2) दिया गया है। ग्रहण चित्र (2) में नौ (9) तिरछी रेखाएं खींची गई हैं। ये रेखाएं जिन स्थलों पर से गुजरती हैं, उन स्थलों पर 17 अक्ती को चन्द्रोदय का काल इन रेखाओं के ऊपर लिखा गया है। इन स्थलों पर चन्द्रोदय के समय ग्रास की अकृति और दिशा का निर्देश भी इन रेखाओं पर किया गया है। इस ग्रहण चित्र में अंकित 'क-ख' रेखा से दाईं ओर स्थित नगरों पर ग्रहण का प्रारम्भ चन्द्रोदय के बाद होगा अर्थात् इन प्रदेशों में यह ग्रहण ग्रस्तोदय नहीं होगा। जबकि 'क-ख' रेखा के बाईं ओर स्थित नगरों पर ग्रहण का प्रारम्भ चन्द्रोदय से पहिले ही हो जाएगा अर्थात् यहाँ पर यह ग्रहण ग्रस्तोदय खण्डग्रास के रूप में दिखलाई देगा।

इसी प्रकार 'च-छ' रेखा के बाईं ओर स्थित नगरों में ग्रहण समाप्ति के बाद चन्द्रोदय होगा। अतएव इन नगरों/स्थलों पर चन्द्रग्रहण दिखाई नहीं देगा।

भारत के अतिरिक्त खण्डग्रास चन्द्रग्रहण उत्तरी अमेरिका के मध्य तथा पश्चिमी भागों में, उत्तर-मध्य अमेरिका, पूर्वी एशिया, इण्डोनेशिया, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, सतु पश्चिमी क्षेत्रों (अफगानिस्तान, पश्चिमी पाकिस्तान, ईरान) को छोड़कर सम्पूर्ण एशिया में दिखाई देगा।

ग्रहण का पर्वकाल—आगे पृष्ठ 15 पर भारत के प्रसिद्ध लगभग 200 नगरों का 17 अक्ती को चन्द्रोदयकाल (भा. स्टैं. टा.) तथा ग्रहण का पर्वकाल भी दिया गया है। चन्द्रग्रहण में स्नानदान, जप आदि का विशेष माहात्म्य होता है। सामान्यतः ग्रहण का पर्वकाल ग्रहण आरम्भ से ग्रहण समाप्ति तक का काल पर्वकाल माना जाता है, क्योंकि यह ग्रहण भारत के सुदूर पूर्वी तथा पश्चिमी क्षेत्रों को छोड़कर उत्तर व उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों जैसे—पंजाब, हि. प्र., दिल्ली, जम्मू-काश्मीर, हरि., म. प्र., उ. प्र., बिहार, उत्तरांचल में ग्रस्तोदय ही होगा। अतः यहाँ चन्द्रोदय से ग्रहण समाप्ति तक के काल को पर्वकाल माना जाएगा—ध्यान रखें। इन ग्रस्तोदय वाले प्रदेशों की जनता को स्नानारम्भ चन्द्रोदय होने पर ही करना चाहिए अर्थात् उन्हें चन्द्रोदय को ही ग्रहण आरम्भ मानकर सभी धार्मिक क्रियाओं का अनुष्ठान करना चाहिए।

ग्रस्तोदय खण्डग्रस चन्द्रग्रहण 17 अक्तू. 2005 ई.



यह ग्रस्तोदय खण्डग्रस चन्द्रग्रहण सोमवार के दिन घटित हो रहा है। अतएव यह "चूड़ाणि ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण" कहलाएगा। स्नान-दान आदि का विशेष माहात्म्य होगा। ग्रहण का सूतक—जहाँ यह ग्रहण ग्रस्तोदय होगा, वहाँ इस ग्रहण का सूतक स्थानीय सूर्योदयकाल से तथा अन्य जगह अर्थात् पूर्वी भारत (आसाम, नागालैण्ड आदि) में प्रातः 8 घं. 04 मि. (भा. स्टैं. टा.) से प्रारम्भ होगा।

ग्रहण का राशिफल—यह चन्द्रग्रहण रेवती व अश्विनी तथा मीन एवं मेष राशि कालीन घटित हो रहा है। अतएव इन नक्षत्र वालों तथा मीन व मेष राशि वालों को ग्रहण का फल विशेष रूप से अशुभ एवं कष्टकारी हो सकता है। जिस राशि के लिए ग्रहण का फल अशुभ लिखा है, वह यथाशक्ति जप-पाठ, ग्रहशान्ति एवं दानादि द्वारा ग्रहण के अनिष्ट प्रभाव को क्षीण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त ग्रहणोपरान्त औषधि-स्नान करने से भी अनिष्ट की शान्ति होती है। बारह राशियों के लिए इस ग्रहण का शुभाशुभ फल इस प्रकार से होगा—

| राशि मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चि. | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|---------------------------------|----------------------|------------------------------|-----------------------------------|----------------------------------|---------------------------------|--------------------------|-----------------|----------------------|--------------------|----------------|-----------------|
| तनाव धन चोट्यादिहानि, शरीर कष्ट | धन एवं सुख चिंता लाभ | धन एवं सुख कार्य सिद्धि खर्च | कोई कार्य शत्रु भय संघर्ष खर्व हो | कष्ट एवं शत्रु भय संघर्ष खर्व हो | कष्ट एवं रोग भय, संघर्ष खर्व हो | स्त्री/पति संबंधी पेशानी | सुख साधन वृद्धि | गुप्त चिन्ता, संघर्ष | कष्ट, अव्यय संघर्ष | धन हानि अपव्यय | तुल्य शरीर कष्ट |

जिस राशि को ग्रहण का फल अशुभ लिखा है, उन्हें ग्रहण का अवलोकन नहीं करना चाहिए।

ग्रहण का अन्य फल—ग्रस्तोदित खण्डग्रस चन्द्रग्रहण सोमवार को होने से रूई का संग्रह करने से 2 मास में लाभ होगा। उत्तराभाद्रपद तथा रेवती नक्षत्र में घटित होने से ब्राह्मण, अधिक वैभव वाले, महादानी, तपस्वी, पाखण्डी, यज्ञ करने वाले, आश्रमी, राजा, व्यापारी वर्ग को पीड़ा होगी। मीन तथा मेष राशि में घटित होने से पंजाब, उ. प्र., म. प्र., आन्ध्र प्रदेश, शस्त्र तथा अग्नि या जल से आजीविका करने वाले, विद्वान, धनवान, समुद्र के किनारे के देशों में रहने वालों को पीड़ा होगी। आश्विन मास में सूर्यग्रहण व चन्द्रग्रहण घटित होने से कुछ मन्त्रीगणों, व्यापारी वर्ग, वैद्यों व सामान्य लोगों के दुःखों व कष्टों में वृद्धि होगी। राजयुद्ध प्रजानाशं ग्रस्तोऽस्ति ॥ अधिक कष्टों के कारण साधारण प्रजा में क्षोभ एवं असन्तोष की भावनाएं व्याप्त होंगी।

उत्तर

स्पर्श

पक्षि

मोक्ष

पक्षि

पक्षि

पक्षि

पक्षि

पक्षि

पक्षि

पक्षि

17 घं. 04 मि.

17 घं. 14 मि.

17 घं. 24 मि.

17 घं. 34 मि. ग्रहण मध्य

17 घं. 44 मि.

17 घं. 54 मि.

18 घं. 03 मि.

दक्षिण

भारत के प्रसिद्ध नगरों में 17 अक्टू., 2005 ई. को चन्द्रोदयकाल तथा ग्रहण का पर्वकाल

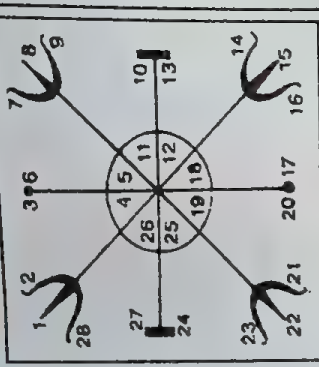
| नगर | चंद्रोदय घं. मि. | पर्वकाल* घं. मि. | नगर | चंद्रोदय घं. मि. | पर्वकाल* घं. मि. | नगर | चंद्रोदय घं. मि. | पर्वकाल* घं. मि. | नगर | चंद्रोदय घं. मि. | पर्वकाल* घं. मि. | नगर | चंद्रोदय घं. मि. | पर्वकाल* घं. मि. |
|------------------|---------------------|---------------------|------------------|---------------------|---------------------|--------------------|---------------------|---------------------|--------------------|---------------------|---------------------|--------------------|---------------------|---------------------|
| अमरावती | 16 50 | 0 59 | कांगडा | 17 43 | 0 20 | जालौर (रा.)** | 18 04 | — | नीमच (म. प्र.) | 17 57 | 0 06 | बांसवाड़ा (रा.) | 17 58 | 0 05 |
| अजमेर | 17 55 | 0 08 | कांचीपुरम् | 17 48 | 0 15 | जोधराट | 16 36 | 0 59 | नैनीताल | 17 34 | 0 29 | बिजौरी (उ.प्र.) | 17 49 | 0 14 |
| अनन्तनाग (का.) | 17 45 | 0 18 | कानपुर | 17 33 | 0 30 | जौनद (ह.) | 17 46 | 0 17 | पंचकूला (ह.) | 17 42 | 0 21 | बिलासपुर (म.प्र.) | 17 29 | 0 34 |
| अमरावती (आ.) | 17 48 | 0 15 | कालका (ह.) | 17 41 | 0 22 | जैसलमेर** | 18 09 | — | पंजिम** | 18 10 | — | बिलासपुर (हि.प्र.) | 17 42 | 0 21 |
| अमरोहा | 17 37 | 0 26 | किस्तीवाड़ (का.) | 17 44 | 0 19 | जोधपुर | 18 02 | 0 01 | पटना | 17 13 | 0 50 | बोकारो | 17 59 | 0 04 |
| अमृतसर | 17 50 | 0 13 | कुलाली (पंजा.) | 17 43 | 0 20 | झरिया (बि.) | 17 10 | 0 53 | पठानकोट | 17 45 | 0 18 | बुलन्दशहर | 17 41 | 0 22 |
| अमेठी | 17 27 | 0 36 | कुल्सेत्र | 17 43 | 0 20 | झांसी (म. प्र.) | 17 41 | 0 22 | पटियाला | 17 44 | 0 19 | बूंदी (रा.) | 17 52 | 0 11 |
| अम्बाला | 17 43 | 0 20 | कुल्लू | 17 40 | 0 23 | झुंझुनू (रा.) | 17 50 | 0 13 | पिहोवा (ह.) | 17 44 | 0 19 | वाराणसी | 17 22 | 0 41 |
| अयोध्या | 17 24 | 0 39 | कैथल | 17 44 | 0 19 | टोक (रा.) | 17 51 | 0 12 | पानीपत | 17 43 | 0 20 | भटिण्डा | 17 50 | 0 13 |
| अलवर | 17 45 | 0 18 | कोटखाई (हि.प्र.) | 17 39 | 0 24 | डिब्रूगढ़ | 16 33 | 0 59 | पालमपुर (हि.प्र.) | 17 42 | 0 21 | भरतपुर (रा.) | 17 43 | 0 20 |
| अल्मोड़ा | 17 41 | 0 22 | कोटा (रा.) | 17 52 | 0 11 | डिडवाना | 17 55 | 0 08 | पल्ली (रा.) | 18 01 | 0 02 | भिवानी (ह.) | 17 46 | 0 17 |
| अल्मोड़ा | 17 31 | 0 32 | कोहिमा | 16 36 | 0 59 | झुंझुनू (रा.) | 18 01 | 0 02 | पिलानी | 17 50 | 0 13 | भुवनेश्वर | 17 15 | 0 48 |
| अहमदाबाद** | 18 06 | — | कोयंबटूर | 17 56 | 0 07 | थानेसर (ह.) | 17 42 | 0 21 | पुणें** | 17 50 | 0 13 | भुवनेश्वर | 17 15 | 0 48 |
| अलीगढ़ | 17 40 | 0 23 | खन्ना | 17 44 | 0 19 | दरभंगा | 17 10 | 0 53 | पुरी (उड़ी) | 18 05 | — | भोपाल | 17 47 | 0 16 |
| आगरा | 17 41 | 0 22 | खुर्जा (उ. प्र.) | 17 41 | 0 22 | दाजिलिंग | 17 00 | 0 59 | पोरबन्दर** | 17 17 | 0 46 | मथुरा | 17 41 | 0 22 |
| आबमण्ड (उ. प्र.) | 17 21 | 0 42 | गंगोके | 16 57 | 0 59 | दिल्ली | 17 43 | 0 20 | पोर्ट-ब्लेयर | 16 58 | 0 59 | मन्दासौर (म.प्र.) | 17 56 | 0 07 |
| आबू (राज.)** | 18 04 | — | गया | 17 15 | 0 48 | देवबन्द (उ. प्र.) | 17 39 | 0 24 | पाण्डेचेरी | 17 46 | 0 17 | मंसूरी | 17 38 | 0 25 |
| इटवा (उ. प्र.) | 17 37 | 0 26 | गाजियाबाद | 17 41 | 0 22 | देवरिया (उ. प्र.) | 17 18 | 0 45 | प्रातागढ़ (उ.प्र.) | 17 26 | 0 37 | मेहराड़ (ह.) | 17 47 | 0 16 |
| इन्दौर | 17 54 | 0 09 | गुडगांव | 17 44 | 0 19 | देवास (म. प्र.) | 17 53 | 0 10 | प्रयाग | 17 27 | 0 36 | मलेकोटला | 17 46 | 0 17 |
| इम्फाल | 16 38 | 0 59 | गुलासपुर | 17 46 | 0 59 | देवप्रयाग (उ.प्र.) | 17 36 | 0 27 | फावाड़ा | 17 46 | 0 17 | मिर्जापुर | 17 25 | 0 38 |
| इटानगर | 16 37 | 0 59 | गुवाहाटी | 16 46 | 0 59 | द्वारिका** | 18 22 | — | फरीदकोट | 17 50 | 0 13 | मुंगेर (बि.) | 17 09 | 0 54 |
| उज्जैन | 17 54 | 0 09 | गोरखपुर | 17 20 | 0 43 | देहरादून | 17 38 | 0 25 | फिरोजपुर | 17 50 | 0 13 | मुजफ्फरनगर | 17 40 | 0 23 |
| उदयपुर (राज.) | 18 00 | 0 03 | खालियर | 17 41 | 0 22 | धनबाद | 17 10 | 0 53 | फिल्लौर (पं.) | 17 46 | 0 17 | मुम्बई** | 18 09 | — |
| उन्नाव (उ. प्र.) | 17 31 | 0 32 | चण्डीगढ़ | 17 42 | 0 21 | धर्मशाला (हि.) | 17 43 | 0 20 | फरीदाबाद (ह.) | 17 47 | 0 16 | मुम्बई** | 18 09 | — |
| उधमपुर (का.) | 17 47 | 0 15 | चम्बा (हि. प्र.) | 17 42 | 0 21 | धुरी (पंजा.) | 17 47 | 0 16 | फरीदाबाद (ह.) | 17 43 | 0 20 | मुम्बई** | 18 09 | — |
| ऊना (हि. प्र.) | 17 44 | 0 19 | चित्तौड़गढ़ | 17 56 | 0 07 | नवलगढ़ (रा.) | 17 51 | 0 12 | फाजिल्का | 17 54 | 0 09 | मुम्बई** | 18 09 | — |
| एटा (उ. प्र.) | 17 37 | 0 26 | चुरू (रा.) | 17 52 | 0 09 | नागपुर | 17 42 | 0 21 | फरीदाबाद (ह.) | 17 43 | 0 20 | मुम्बई** | 18 09 | — |
| एज़ाबल | 16 44 | 0 59 | चेन्नई | 17 46 | 0 17 | नागौर (रा.) | 17 58 | 0 05 | बटाला | 17 47 | 0 16 | मुम्बई** | 18 09 | — |
| कटक | 17 16 | 0 47 | छपरा (बि.) | 17 15 | 0 48 | नाथद्वारा (रा.) | 18 00 | 0 03 | बंगलौर | 17 55 | 0 08 | मुम्बई** | 18 09 | — |
| कटुआ (का.) | 17 46 | 0 17 | जबलपुर (म.प्र.) | 17 37 | 0 26 | नाभा (पंजा.) | 17 45 | 0 18 | बड़ौदा** | 18 05 | — | मुम्बई** | 18 09 | — |
| कन्नौज (उ. प्र.) | 17 33 | 0 30 | जम्मू | 17 47 | 0 16 | नारनौल (ह.) | 17 47 | 0 15 | बदायूं (उ. प्र.) | 17 46 | 0 17 | मुम्बई** | 18 09 | — |
| कपूरथला | 17 47 | 0 16 | जयपुर | 17 50 | 0 13 | नालागढ़ (हि.प्र.) | 17 42 | 0 21 | बलिया (उ. प्र.) | 17 17 | 0 46 | मुम्बई** | 18 09 | — |
| करनाल | 17 42 | 0 21 | जामनगर** | 18 18 | — | नाहन (हि.प्र.) | 17 40 | 0 23 | बाँसगाँव (रा.)** | 18 08 | — | मुम्बई** | 18 09 | — |
| कलकत्ता | 17 03 | 0 59 | जालन्धर | 17 47 | 0 16 | नासिक (मह.)** | 18 05 | — | बाँसगाँव (रा.)** | 18 08 | — | मुम्बई** | 18 09 | — |

* = प्रस्तोदय चन्द्रग्रहण वाले नगरों में चन्द्रोदय से ग्रहण समाप्ति तक और अन्य नगरों में ग्रहणारम्भ से ग्रहण समाप्ति तक के काल को यहाँ पर्वकाल लिखा गया है।

** = वाले नगरों में ग्रहण समाप्ति के बाद चन्द्रोदय होगा। अतएव इन नगरों में चन्द्रग्रहण दिखाई नहीं देगा।

आज का दिन कैसा गुजरेगा ?

जिस दिन को मालूम करना हो कि आज का दिन आपको कैसा गुजरेगा ? तो उस दिन आप पंचांग में देखें कि चन्द्रमा किस नक्षत्र पर है। आप उस नक्षत्र को नं. १ पर मे गिन कर ऊपर लिखे चक्र के क्रमानुसार २८ नक्षत्र लगा लें। फिर देखें कि आपके नाम का नक्षत्र किस स्थान पर आता है। वैसा फल जानें। यदि आपके नाम का नक्षत्र वृत्त (गोलाकार) के अन्दर पड़ेगा तो उस दिन शुभ समाचार, प्रिय वस्तु से मिलाप व धन लाभ होगा। यदि गोल वृत्त के बाहर पड़े तो दिन का आधा भाग खुशी में, आधा भाग फिकर और चिन्ता में व्यतीत होगा। यदि त्रिशूल के ऊपर पड़े तो पूरा दिन परेशानी, झगड़े, धन हानि व चिन्ता में व्यतीत होगा। उदाहरणार्थ आज यदि मघा नक्षत्र हो तो, उसे नं. १ लें। इसी क्रम में पूजा आदि २८ नक्षत्र क्रम से लिख लें। नक्षत्रों की तालिका इसी पंचांग के अन्तिम पृष्ठों में देखें।



---खोई हुई वस्तु मिलेगी या नहीं ?---

विनष्टार्थरथ लाभोऽन्धे शीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः। स्यात् दूरश्रवणं मध्ये श्रुत्याप्ती न सुलोचने॥

१. अन्धाक्ष नक्षत्रों में गुम हुई अथवा चोरी हुई वस्तु पूर्व दिशा की ओर जाती है और उसकी पुनः प्राप्ति की शीघ्र सम्भावना रहती है।
२. सुलोचन नक्षत्रों में गुम हुई वस्तु उत्तर दिशा में जाती है परन्तु उसका न तो पता चलता है और न ही प्राप्त होती है।
३. मध्याक्ष नक्षत्र में खोई वस्तु पश्चिम दिशा की ओर अति दूर चली जाती है। पता चलने पर भी प्राप्त (हस्तगत) नहीं होती।
४. मन्दक्ष नक्षत्र में गुम अथवा चोरी हुई वस्तु दक्षिण की ओर चली जाती है तथा अत्यधिक प्रयत्न करने पर अन्ततोगत्वा वह प्राप्त हो जाती है। अन्धाक्षदि नक्षत्र निम्नलिखित हैं—

| नक्षत्र संज्ञा | रोह. | पुण्य. | उफा. | विशा. | पूषा. | धनि. | रेव. | मिलेगी या नहीं |
|----------------|--------|----------|--------|---------|-------|-------|-------|------------------------------|
| (१) अन्धाक्ष | कृति. | पुन. | पूफा. | स्वा. | मूला. | श्रव. | रेव. | शीघ्र मिलेगी। |
| (२) सुलोचन | भर. | आर्द्रा. | मघा. | चित्रा. | ज्य. | अभि. | उभा. | नहीं मिलेगी। |
| (३) मध्याक्ष | अश्वि. | मृग. | आश्ले. | हस्त. | अनु. | उषा. | पूषा. | पता लगाने पर भी नहीं मिलेगी। |
| (४) मन्दक्ष | | | | | | | शत. | बहुत यत्न करने पर मिलेगी। |

(3) खग्रास सूर्यग्रहण (29 मार्च, 2006 ई., बुधवार)—यह सूर्यग्रहण भारत में खग्रास, ग्रस्तास्त खण्डग्रास के रूप में दिखाई देगा। यह ग्रहण भारत के उत्तरी, उत्तर-पश्चिमी तथा उत्तर-पूर्वी भागों में दिखाई देगा। भारत के अतिरिक्त यह खग्रास सूर्यग्रहण ब्राजील, घाना, लीबिया, टर्की, दक्षिण-पश्चिमी रूस, कजाकिस्तान, दक्षिणी रूस तथा उत्तरी मंगोलिया में दिखाई देगा।

भा. स्टैं. टा. के अनुसार इस ग्रहण का स्पर्श, मोक्षादि इस प्रकार होगा—

| | |
|--------------|--------------------------|
| ग्रहण स्पर्श | चं. मिं. |
| ग्रहण मोक्ष | 13 07 } (भा. स्टैं. टा.) |
| | 18 16 } |

भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में जहाँ सूर्यास्त 18 घं. 16 मिं. से पहिले हो जाएगा, वहाँ यह खग्रास सूर्यग्रहण ग्रस्तास्तः खण्डग्रास रूप में ही दिखाई देगा जबकि उत्तर व उत्तर-पश्चिमी नगरों में जहाँ 29 मार्च, 2006 ई. को सूर्य 18 घं. 16 मिं. के बाद अस्त होगा, वहाँ सूर्यग्रहण खग्रास रूप में दिखाई देगा। इस ग्रहण के बारे में सविस्तर एवं सचित्र आगामी वर्ष के पंचांगदिवाकर में लेख दिया जाएगा। क्योंकि दो ग्रहणों के बारे में पहिले ही सविस्तर लिख दिया है। स्थानाभाव के कारण इस ग्रहण का विस्तृत विवरण आगामी वर्ष के पंचांग में दिया जाएगा। क्योंकि उत्तर-पश्चिमी राज्यों—पंजाब, हिमाचल, जम्मू-काश्., हरियाणा, दिल्ली, राज., उ. प्र. में इसका खग्रास रूप देखने को मिलेगा, इसलिए धार्मिक लोगों के लिए इसका विशेष महत्त्व होगा।

अयोध्या, फैजाबाद, प्रतापगढ़ (सभी उ. प्र.) के दायों ओर के क्षेत्रों में बिहार, आसाम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय आदि में यह खग्रास सूर्यग्रहण ग्रस्त हुआ ही अस्त हो जाएगा अर्थात् ग्रहण समाप्ति से पूर्व ही सूर्य अस्त हो जाएगा। अतएव यहाँ यह ग्रहण ग्रस्तास्त खण्डग्रास रूप में दिखाई देगा। जबकि प्रतापगढ़ के बाईं ओर के क्षेत्रों जैसे—पंजाब, हि. प्र., हरियाणा, दिल्ली, पश्चिमी, उ. प्र. (जैसे लखनऊ, बरेली, मथुरा आदि), उत्तरांचल, जम्मू-काश्. में ग्रहण समाप्ति के बाद ही सूर्यास्त होगा। अतएव यहाँ यह ग्रहण खग्रास रूप में दिखाई देगा।

सूतक विचार—इस ग्रहण का सूतक 28 मार्च की रात्रि 1 बजकर 07 मिनट से प्रारम्भ हो जाएगा। ग्रहण के सूतक एवं ग्रहणकाल में तीर्थ स्थान—दान, जप-पाठ, मन्त्र-तन्त्र अनुष्ठान, ध्यान, हवनानि शुभ कृत्यों का सम्पादन करना शुभ होता है। सूतककाल में वृद्ध, बालक, रोगी एवं गर्भवती स्त्री को छोड़कर अन्य लोगों को बार-बार खान-पान, वृथालाप, आलस्य, मूर्ति स्पर्श करना, मैथुन, व्यर्थ भ्रमण सर्वथा निषेध कहा गया है।

ग्रहणकाल में अपने इष्टदेव पूजन, जप-पाठ, तर्पण, मन्त्र-अनुष्ठान, हवन तथा हर्षिद्वार, इलाहाबाद, कुरुक्षेत्र, काशी आदि तीर्थों पर अथवा नदी, कूपदि में स्नान, भजनादि शुभ कृत्यों का सम्पादन तथा ग्रहणोपरान्त स्नान, अनाज, वस्त्र, दक्षिणादि का यथाशक्ति दान करना शुभ एवं कल्याणकारी होता है।

शनि साढ़ेसाती, डैय्या एवं सुवर्णादि पाया विचार (सन् 2005-06 ई.)

वर्ष 2005 ई. में जनवरी के प्रारम्भ से ही शनि वक्री अवस्था में कर्क राशि में संचरणशील है। 13 जन. (05 ई.) को वक्री स्थिति में शनि (दुप. 3 बजकर 2 मिनट से) मिथुन राशि में प्रविष्ट होगा। 22 मार्च से शनि मार्गी होगा तथा फिर 26 मई गुरुवार की प्रातः को 7 बजकर 26 मिनट से शनि धनु राशि के चन्द्रमा कालीन पुनः कर्क राशि में प्रवेश होगा और सम्वत् के अन्त तक कर्क राशि में ही संचार करता रहेगा। शनि का मिथुन राशि में तथा कर्क राशि में संचार के फल यद्यपि हम गतवर्षीय पंचांग सं. 20६१ में लिख चुके हैं। परन्तु सन् 2005 ई. के दौरान राशि परिवर्तन के समय शनि के सुवर्णादि पाया में परिवर्तन हो जाने से उनके शुभाशुभ फलों में भी न्यूनाधिकेन अन्तर आ जायेंगे। आगे संक्षेप में सन् 2005 ई. में शनि के गोचरफल का प्रभाव लिख रहे हैं—

—मिथुन राशिस्थ शनि की साढ़ेसाती, डैय्या एवं पाया का फल— (13 जनवरी 2005 ई. से 25 मई 05 ई. तक)

मिथुन राशि में संचरणकालीन वृष, मिथुन और कर्क राशि वाले जातकों पर शनि की साढ़ेसाती का अशुभ प्रभाव तथा वृश्चिक और मीन राशि वालों पर शनि की डैय्या का अशुभ प्रभाव 25 मई (2005 ई.) तक विशेष रूप से रहेगा।

मेघ राशि—वर्षारम्भ से शनि इस राशि पर सुवर्ण के पाया पर राशि परिवर्तन करेगा। 24 मार्च तक राहु का संचार भी होने से प्रारम्भ में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहेगा। आय कम व खर्च अधिक होंगे। अप्रैल मास से हालात में बेहतरी होगी।

वृष—शनि साढ़ेसाती का प्रभाव उतरती हुई अवस्था में 25 मई तक रहेगा। परन्तु इस राशि पर शनि का पाया ताम्र होने से विघ्न-बाधाओं एवं परेशानियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

मिथुन—इस पर शनि साढ़ेसाती का प्रभाव हृदय पर चढ़ती हुई स्थिति में होगा। मानसिक तनाव एवं आय के साधनों में विघ्न-बाधाएँ पड़ेंगी। शनि का पाया रजत (चाँदी) होने से धन लाभ व उन्नति के अवसर भी मिलेंगे।

कर्क—शनि साढ़ेसाती मस्तक पर चढ़ती अवस्था में तथा शनि का पाया 'लोह' होने से परिवारिक लोगों के साथ कलह-क्लेश, रोगभय तथा धन हानि एवं अपथ्य तथा तनाव बढ़ेंगे।

सिंह—वर्ष के आरम्भिक महीनों में शनि की विशेष दृष्टि पड़ने से व्यवसाय सम्बन्धी भाग-दौड़ व खर्च अधिक रहेंगे। निकट बन्धुओं से कलह रहे, परन्तु पाया ताम्र होने से गुजारे योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

कन्या—राशि से शनि का संचार दशमस्थ होने से व्यवसाय के सम्बन्ध में संघर्ष अधिक करना होगा। शनि का पाया सुवर्ण होने से धन के खर्च अधिक होने से परेशानियाँ बढ़ेंगी।

तुला—नवमस्थ शनि भाग्योन्नति में अड़चन पैदा करेगा। परन्तु पाया रजत होने से रूकावटों के बावजूद निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनते रहेंगे।

वृश्चिक—अष्टमस्थ शनि होने से शनि की डैय्या का अशुभफल रहेगा। वनते कामों में अड़चन होंगी। शनि का पाया भी लोह होने से घरेलू उलझने, तनाव व आर्थिक परेशानियाँ होंगी।

धनु—शनि का संचार सप्तमस्थ होने से सहयोगी जनों के साथ मनमुटाव एवं वैमनस्य बढ़ेगा। धनागम के मार्ग में भी रूकावटें पैदा होंगी; परन्तु शनि का पाया ताम्र होने से लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे।

मकर—षष्ठ भावस्थ शनि से शत्रुओं पर विजय तथा लाभ एवं उन्नति के अवसर प्राप्त करारंगा। शनि का पाया भी रजत होना शुभ एवं लाभप्रद रहेगा। परन्तु स्वास्थ्य सम्बन्धी सावधानी बरतें।

कुम्भ—25 मई तक शनि पंचमस्थ होने से व्यवसाय में अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाईयों के बाद ही धन के साधन बनेंगे। शनि का पाया भी सुवर्ण होने से धन के खर्च एवं घरेलू उलझने अधिक बढ़ेंगी।

मीन—मीन राशि को शनि चतुर्थस्थ होने से शनि की डैय्या का अशुभ प्रभाव रहेगा। सुख में कमी, धन लाभ में विघ्न बाधाएँ रहें तथा खर्च भी अधिक रहें। शनि का पाया लोह होने से गुप्त चिन्ताएँ भी रहेंगी।

—कर्क राशिस्थ शनि की साढ़ेसाती, डैय्या एवं पाया विचार— (26 मई (05 ई.) से वि. संवत् 2062 के अन्त (29 मार्च, 2006 ई.) तक)

✱ मिथुन राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती पाँच पर उतरती हुई, अर्थात् अन्तिम चरण में होगी।

✱ कर्क राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती हृदय पर चढ़ती हुई, अर्थात् द्वितीय चरण में होगी।

✱ सिंह राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती मस्तक पर चढ़ती हुई, आरम्भिक अवस्था में होगी।

डैय्या विचार—26 मई (05 ई.) के बाद मेघ और धनु राशि के जातकों को शनि की डैय्या का अशुभ प्रभाव रहेगा। शनि की डैय्या के प्रभावस्वरूप जातक को घरेलू उलझने, कलह-क्लेश, धन-हानि, अनवश्यक खर्च, गुप्त चिन्ताएँ, रोग व शत्रुभय तथा शारीरिक एवं मानसिक कष्टों का भय होता है।

शनि की साढ़ेसाती के प्रभावस्वरूप जातक को परिवारिक एवं व्यवसाय सम्बन्धी उलझने, आकस्मिक खर्चों की अधिकता, निकट बन्धुओं से विरोध, वृथा-दोड़धूप, वनते कामों में विघ्न/बाधाएँ, गुप्त रोग, शत्रुभय, धन-हानि आदि अशुभ फल घटित होते हैं।

शनि साढ़ेसाती अथवा शनि डैय्या का फल सदा अनिष्टकारी ही होगा—ऐसा आवश्यक नहीं। यदि किसी जातक की कुण्डली में शनि उच्चस्थ, मित्रक्षेत्री, स्वक्षेत्री अथवा वर्गात्मन स्थिति में पड़ा हो, तो जातक की जन्म राशि या नाम राशि पर शनि का साढ़ेसाती या डैय्या के अशुभत्व का प्रभाव अपेक्षाकृत कम होगा। वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर या कुंभ लग्न की कुण्डली में शनि यदि शुभ स्थिति में हो, तो शनि की दश व्यवसाय एवं कैरियर की दृष्टि से विशेष शुभ रहती है। अधिक विवरण के लिए फसित ज्योतिष की ज्योतिष तत्त्व (द्वितीय खण्ड) का अध्ययन कर सकते हैं।

कर्क राशिस्थ शनि का द्वादश राशियों पर प्रभाव (26 मई से संवत्तन्त तक)

(साढ़ेसाती, डैय्या एवं सुवर्णादि फल विवरण सहित)

मेघ राशि—शनि की डैय्या के कारण धन सम्बन्धी परेशानियाँ, खर्चाधिक्य, तनाव एवं घरेलू उलझने बढ़ेंगी, वनते कामों में अड़चन पड़ेंगी, परन्तु शनि का पाया रजत (चाँदी) होने से धन लाभ एवं उन्नति के साधनों में भी वृद्धि होगी।

वृष-भार्यवश धन लाभ एवं सुख के साधनों में वृद्धि होगी। प्रयासों में सफलता हों, परन्तु शनि का पाया लौह होने से स्वास्थ्य में हानि, उलझने, लाभ में कमी एवं खर्च अधिक रहें।

मिथुन-शनि-साढ़ेसाती का प्रभाव अभी रहेगा। जिससे अत्यन्त संघर्षपूर्ण एवं कठिन परिस्थितियों का सामना रहेगा। बनते कामों में अड़चने एवं विलम्ब हों। परन्तु शनि का पाया ताम्र होने से येनकेन प्रकारेण गुजारे योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

कर्क-शनि साढ़ेसाती का प्रभाव विशेष रूप से रहेगा। जिससे घरेलू व आर्थिक उलझनें बढ़ेंगी। स्वास्थ्य भी ठीक न रहे। शनि का पाया सुवर्ण होने से आय कम व खर्च अधिक रहेंगे।

सिंह-राशि को शनि साढ़ेसाती मस्तक पर चढ़ती हुई प्रारम्भिक अवस्था में होगी। बनते कामों में विघ्न/बाधाएँ रहेंगी। धन के खर्च भी बहुत अधिक रहें। परन्तु शनि पाया रजत होने से परिश्रम करने पर निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

कन्या-राशि पर शनि एकादश स्थान में राशि परिवर्तन होने से इस जातक को कई मास के पश्चात् अकस्मात् धन लाभ, उन्नति एवं सुख-साधनों में वृद्धि के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु शनि का पाया लोहा होने से परिवारिक उलझनें एवं व्यवसाय सम्बन्धी परेशानियाँ भी रहेंगी।

तुला-राशि को शनि दशमस्थ होने से कैरियर एवं व्यवसाय के सम्बन्ध में संघर्ष अधिक रहेगा, परन्तु इस पर शनि का पाया ताम्र होने से वर्ष के उत्तरार्ध भाग में निर्वाह योग्य धन लाभ एवं उन्नति के अवसर प्राप्त होते रहेंगे।

वृश्चिक-भाग्योन्नति में अड़चनें एवं विलम्ब पैदा होंगे। अत्यधिक परिश्रम करने पर भी धन लाभ अल्प व खर्च अधिक रहेगा। इस राशि पर शनि रजत का पाया होने से बीच-बीच में धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे।

धनु-राशि से शनि अष्टमस्थ होने से शनि की डैय्या का अशुभ फल रहेगा। इस पर शनि का पाया भी सुवर्ण होने से व्यवसाय में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहेगा। घरेलू कलह एवं वृथा खर्च बढ़ेंगे।

मकर-मकर राशि को शनि सप्तमस्थ होने से परिवारिक एवं व्यवसाय सम्बन्धी परेशानियाँ बढ़ेंगी। इस राशि को शनि लौह के पाया पर संचार होने से स्वास्थ्य में विकार, आय में कमी तथा खर्च अधिक बढ़ेंगे।

कुम्भ-कुम्भ राशि को शनि षष्ठ स्थान में होने से विघ्न/बाधाओं के बावजूद धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। गत किए गए प्रयासों में सफलता होगी। परन्तु इस राशि को शनि का पाया सुवर्ण होने से शरीर कष्ट शत्रु भय, आकस्मिक खर्च तथा निकटस्थ वन्धुओं के साथ वैगनस्य बढ़ेंगे।

मीन-मीन राशि को शनि पंचम स्थान पर राशि परिवर्तन करने से सौखी हुई योजनाओं में अड़चनें रहेंगी। अत्यधिक खर्च व मानसिक तनाव रहेंगे। परन्तु इस राशि को शनि का पाया ताम्र होने से व्यवसाय में लाभ व उन्नति के अवसर भी प्राप्त होंगे।

शनि साढ़ेसाती, डैय्या एवं शनि पाया के अशुभ फल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र का 23 हजार की संख्या में विधिपूर्वक जाप करना, तदुपरांत दशमंश संख्या में हवन करना या करवाना कल्याणकारी रहता है। इसके अतिरिक्त शनिवार के दिन का व्रत रखना, उड़द, सप्तधाण्यादि दान, कृष्ण वस्त्र, शिव उपासना, शनि स्तोत्र तथा शनि से सम्बन्धित अन्य वस्तुओं का दान करने से लाभ होता है। इसके अतिरिक्त शुभ मुहूर्त में नीलम एवं विधिपूर्वक निर्मित शनि यन्त्र धारण करना भी लाभप्रद रहता है।

शनि का बीज मन्त्र—“ॐ प्रां प्रीं प्रां साः शनये नमः॥”

शनि का वैदिक मन्त्र—

“ॐ शन्नो देवी रभिष्टये आपो भवन्तु पीतये, शंय्यो रभिषवन्तु नः॥”

सर्वारिष्ट शान्त्यर्थ शनि स्तोत्र—

“ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते यक्षरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तु ते॥

नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते शौरये विभो॥

नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥” (धर्मासिन्धु)

प्रतिदिन प्रातःकाल भगवान् शिव की पूजापरान्त पीपल वृक्ष के समीप इस स्तोत्र का पाठ करके कच्ची लस्सी में काले तिल डालकर वृक्ष के मूल में लस्सी चढ़ाना तथा सायंकाल को तैल का दीपक जलाकर प्रार्थना करने से शनि-जनित अरिष्टों की शान्ति होती है।

—गुरु का शुभाशुभ गोचरफल—संवत् २०६२—

गत सम्वत् २०६१ में २७ अगस्त, सन् २००४ ई. को गुरु उषा नक्षत्र कालीन रात्रि ११ वज्रकर ३६ मिनट पर कन्या राशि में प्रविष्ट हुआ था। सम्वत् २०६२ में गुरु २७ सितम्बर, ०५ ई. तक कन्या राशि में ही संचार करेगा। २८ सितम्बर, ०५ ई. बुधवार की प्रातः ५ वज्रकर ३५ मिनट पर, पुष्य नक्षत्र एवं कर्क के चन्द्रमा कालीन तुला राशि में प्रविष्ट होकर सम्वत् के अन्त तक इसी राशि में संचार करेगा। दोनों राशियों पर संचरण कालीन विभिन्न राशियों पर अलग-अलग प्रभाव रहेंगे। ध्यान रहे, मात्र एक ग्रह (गुरु, शनि, राहु आदि) के गोचर प्रभाव का विचार करते समय अपनी राशि पर अन्य ग्रहों के संचार, वृष्टि आदि की भी समीक्षा कर लेनी चाहिए॥

—कन्या राशिगत गुरु का गोचर फल—

(२७ अगस्त, २००४ ई० से २७ सितं., २००५ ई. तक)

| मेघ | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|----------------------|---|----------------------------|--------------------------------------|--|--|---------------------------|-----------------------------------|---|---|---|-------|
| रंग व शत्रु भय, खर्च | कार्यों में सफलता, लता, सुख-साधनों में वृद्धि | वृथा-दौड़-धूप व गुर्च अधिक | विघ्नों के बा-वज्रद कुछ धन लाभ होगा। | लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे, प्रिय मिलन | तनाव एवं खर्च अधिक होंगे, बन्धु से विरोध | प्रिय बन्धु से अधिक विरोध | नवीन कार्य की योजना, धन लाभ अन्धा | धोखा मिलने के संकेत आय. कम व खर्च अधिक हों। | धन लाभ व तरक्की के अवसर मिलेंगे, मंगल कार्य भी होगा | अत्यधिक संघर्ष व परिश्रम के बाद कार्यों में सफलता हो। | विशेष |

—तुला राशिगत गुरु का गोचर पल— (28 सितम्बर, 2005 ई. से सम्बन्ध के अन्त तक)

| मेघ | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|--|--|--|--|--|--|---|---------------------------------------|--|---|---|--|
| विशेष रोग व परिश्रम के बाद ही कार्य में सफलता मिलेगी | रोग व शत्रुभय साधनों के में वृद्धि दौड़-खर्च अधिक कार्य में सफलता मिलेगी | सुख के साधनों व धन के में वृद्धि दौड़-खर्च अधिक कार्य में सफलता मिलेगी | संघर्ष व वृथा धूप बढ़ेगी खर्च में सफलता मिलेगी | विधियों के वृथा निर्वह योग्य आय के साधन भी अधिक मिलेगी | किसी प्रिय वन्धु से मिलन लाभ व उन्नति के अ-वसर मिलेंगे | निकट वन्धुओं से प्रिय वन्धु से मिलन लाभ व उन्नति के अ-वसर मिलेंगे | किसी धन-लाभ व उन्नति के अ-वसर मिलेंगे | अचानक धन-लाभ व उन्नति के अ-वसर मिलेंगे | किसी निकट वन्धु से मिलन लाभ व उन्नति के अ-वसर मिलेंगे | गृह में कोई कार्य हो गुजार योग्य आय के साधन बनेंगे। | अत्यधिक संघर्ष के बाद गुजार योग्य आय के साधन बनेंगे। |

गुरु के अशुभ फल की शान्ति—अथवा गुरु की शुभता बढ़ाने के लिए वृद्ध ब्राह्मण को भोजन कराना, प्रत्येक अमावस्या तथा गुरुवार का व्रत रखना, पुखराज धारण करना, पीले वस्त्र, चने की दाल, कांस्य पात्र, सुवर्ण, शक्कर, केले, लड्डुओं, धार्मिक ग्रन्थ आदि का दान यथाशक्ति करने तथा गुरु के बीज मन्त्र अथवा गुरु गायत्री मन्त्र का जाप 19,000 की संख्या में विधिपूर्वक करना शुभ एवं फलदायक रहेगा। गुरु धनु और मीन राशि का स्वामी है। पति सौख्य की प्राप्ति के लिए स्त्रियों को गुरु के बीज मन्त्र, व्रत, पुखराज धारण तथा यथाशक्ति दान करना लाभदायक रहता है।

गुरु गायत्री मन्त्र—

“ॐ अगिरो जाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्”

गुरु बीज मन्त्र—“ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः॥”

सामान्य मन्त्र—“ॐ वृं बृहस्पतये नमः॥”

राहु-केतु का शुभाशुभ गोचरफल—संवत् २०६२

25 मार्च सं. 2005 ई. शुक्रवार की प्रातः 5 बजकर 53 से राहु (वकी अवस्था में) कन्या राशि के चन्द्रमा कालीन मीन राशि में प्रवेश करेगा तथा 25 मार्च की प्रातः 5/53 बजे से ही केतु कन्या राशि में प्रविष्ट होगा। इनके गोचर का शुभाशुभ फल इस प्रकार से होगा—

मीन राशिस्थ राहु का गोचरफल (25 मार्च, 05 से संवत् 2062 के अन्त तक)

| मेघ | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|-----------------------------------|-------------------------------|----------------------------------|-----------------------------|---------------------------|--------------------------------|---------------------------------------|---------------------------|-----------------------|------------------------------|--------------------------------------|--|
| वनतें कार्यों में अ-इच्छे अप-व्यय | गत किए हुए प्रयासों में सफलता | घर में मांग-लिक कार्या, धन सफलता | गुजारे याग्य आय के माधन रहे | शरीर कष्ट संघर्ष अधिक रहे | मान-सिक तनाव आर्थिक समस्या में | विगत किए गए आर्थिक प्रयासों में सफलता | रोग भय एवं गुण चिन्ता रहे | आय कम, खर्च अधिक तनाव | धन लाभ रुकावटें अधिक दुरांगी | अचानक लाभ कलह-कलेश, के योग वृथा हैं। | पारिवारिक लाभ कलह-कलेश, के योग वृथा हैं। |

कन्या राशिस्थ केतु का गोचरफल

(25 मार्च, 05 से संवत् के अन्त तक)

| मेघ | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|---------------------------|--|--|----------------------------------|------------------------|---|--|--------------------------------------|---------------------------------|-------------------------------|-------------------------------------|---------------------------------------|
| धन लाभ कार्यों में सफ-लता | परिवार में मत-भेद लाभ परेशा-निर्वा, तनाव | घरेलू कलह, क्लेश, आर्थिक कार्यों में सुधार | सफ-लता, बिगड़े कार्यों में सुधार | लाभ कम व खर्च अधिक रहे | रुका-वडें शरीर कष्ट स्त्री/पति तनाव रहे | शत्रु भय, फिजूल खर्च, रोग, पति शोषक तनाव रहे | सुख साधनों में वृद्धि, धन लाभ साधारण | मंगल कार्य हो, लाभ कम खर्च अधिक | शरीर कष्ट, चोट भय, आय में कमी | धन हानि, रोग भय संतान संबंधी चिन्ता | स्त्री/पति को कष्ट, किसी से शोषा मिले |

अनिष्ट राहु की शान्ति हेतु तिल, तेल, भूरे रंग का वस्त्र, कम्बल, नारियल, सतधान्य, सतनाजा, कृष्ण-पुष्प आदि का दक्षिणा सहित दान करना कल्याणकारी रहता है। जन्मपत्नी अनुशीलन के बाद गमेध भी धारण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त राहु के बीज मन्त्र ‘ॐ भ्रा भ्रीं भौं सः राहवे नमः’ का 18 हजार की संख्या में जाप करें। गजेन्द्र मोक्ष स्तोत्र का पाठ भी शुभ है। राहु का वैदिक मन्त्र—

‘ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूति सदावृधः सखा। कयाशश्चिष्टया वृता॥’

केतु के अरिष्ट की शान्ति हेतु लोहा, सतधान्य, लाल-काला वस्त्र, नारियल, कम्बल, कस्तूरी, बेल, कुष्ठश्रम आदि में भोजन, क्षीर का दान तथा जन्मपत्नी विश्लेषण के पश्चात् लहसुनिया नग धारण करना कल्याणकारी रहता है। केतु के बीज मन्त्र ‘ॐ खां खीं खौं सः केतवे नमः’ की 17 हजार की संख्या में जाप करना तथा श्री गणेश स्तोत्र एवं अपराजिता स्तोत्र का पाठ करना शुभ है। केतु की शान्ति के लिए वैदिक मन्त्र—

‘ॐ केतुं कृण्वन्केतवे पेशो मर्या अपेशसे। सुमषद्भिरजायाथाः॥’

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के सम्बन्ध में और अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी प्रकाशय पुस्तक अनिष्ट ग्रह शान्ति और उपयोगी उपाय मँगवा कर पढ़ें।

सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, गुरु पुष्यादि योग:-वि. संवत् २०६२

किसी विशेष कार्य हेतु आवश्यक परिस्थितिबोध अथवा शीघ्रता में कोई सुनियोजित एवं निश्चित मुहूर्त न मिलता हो, तो आगे लिखे गए सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, रवि योग, गुरु पुष्य आदि योगों में अभीष्ट कार्यों का शुभारम्भ करके मनोवांछित कार्यों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

सर्वार्थ सिद्धि योगों में—अनुबन्ध करना, परीक्षा, नौकरी, प्रतियोगिता अथवा चुनाव आदि के लिए आवेदन करना, क्रय-विक्रय करना, यात्रा या मुकदमा करना, भूमि, सवारी, वस्त्र-आभूषणादि का क्रय करना इत्यादि कृत्य किए जा सकते हैं। **अमृत सिद्धि योगों में** स. पि. योगों वाले कृत्यों के अतिरिक्त प्रेम विवाह करना, विभी कार्य सिद्धि हेतु सवाम अनुष्ठान करना आदि। **रवि योग** स. सि. योगों की भांति शुभ कार्यों के लिए प्रशस्त माने जाते हैं। **रवि योग** की उपलब्धता में यदि कोई कुयोग भी हो, तो 'रवि योग' अन्य कुयोगों का नाश करके शुभफल प्रदान करता है। **अयोग**: सिद्धियोगश्च, द्वौवैतौ भवतौ यदि। अयोगो हन्यते तत्र, सिद्धियोगः प्रवर्तते ॥ राजमार्तण्ड

| सर्वार्थ सिद्धि योग | | | | सर्वार्थ सिद्धि योग | | | | सर्वार्थ सिद्धि योग | | | | सर्वार्थ सिद्धि योग | | | |
|---------------------|-----------------|------------------|------------------|---------------------|------------------|------------------|------------------|---------------------|------------------|-----------------------------------|-----------------|---------------------|-----------------|------------------|-----------------|
| प्रारम्भ काल | समाप्ति काल | प्रारम्भ काल | समाप्ति काल | प्रारम्भ काल | समाप्ति काल | प्रारम्भ काल | समाप्ति काल | प्रारम्भ काल | समाप्ति काल | प्रारम्भ काल | समाप्ति काल | प्रारम्भ काल | समाप्ति काल | प्रारम्भ काल | समाप्ति काल |
| 2005 ई. घं. मि. | 2005 ई. घं. मि. | 2005 ई. घं. मि. | 2005 ई. घं. मि. | 2005 ई. घं. मि. | 2005 ई. घं. मि. | 2005 ई. घं. मि. | 2005 ई. घं. मि. | 2005 ई. घं. मि. | 2005 ई. घं. मि. | 2005 ई. घं. मि. | 2005 ई. घं. मि. | 2005 ई. घं. मि. | 2005 ई. घं. मि. | 2005 ई. घं. मि. | 2005 ई. घं. मि. |
| 3 अप्रै. सू. उ. | 18 37 | 3 अप्रै. सू. उ. | 16 जून सू. उ. | 4 सित. सू. उ. | 5 सित. सू. उ. | 30 नव. सू. उ. | 23 16 | 1 दिसं. सू. उ. | 22 22 | 9 फर. सू. उ. | 25 22 | 11 फर. सू. उ. | 3 49 | 2006 ई. घं. मि. | 2006 ई. घं. मि. |
| 4 अप्रै. सू. उ. | 16 56 | 18 जून सू. उ. | 18 जून सू. उ. | 10 सित. सू. उ. | 10 सित. सू. उ. | 4 दिसं. सू. उ. | 17 31 | 5 दिसं. सू. उ. | सू. उ. | 18 फर. सू. उ. | 23 54 | 19 फर. सू. उ. | सू. उ. | 18 फर. सू. उ. | 23 54 |
| 8 अप्रै. सू. उ. | 11 13 | 20 जून सू. उ. | 20 जून सू. उ. | 12 सित. सू. उ. | 12 सित. सू. उ. | 5 दिसं. सू. उ. | 15 39 | 6 दिसं. सू. उ. | सू. उ. | 21 फर. सू. उ. | 3 05 | 21 फर. सू. उ. | सू. उ. | 21 फर. सू. उ. | 3 05 |
| 10 अप्रै. सू. उ. | 10 23 | 24 जून सू. उ. | 25 जून सू. उ. | 18 सित. सू. उ. | 19 सित. सू. उ. | 11 दिसं. सू. उ. | 8 30 | 12 दिसं. सू. उ. | सू. उ. | 25 फर. सू. उ. | 22 07 | 26 फर. सू. उ. | सू. उ. | 25 फर. सू. उ. | 22 07 |
| 12 अप्रै. सू. उ. | 11 52 | 28 जून सू. उ. | 29 जून सू. उ. | 20 सित. सू. उ. | 21 सित. सू. उ. | 13 दिसं. सू. उ. | 8 20 | 15 दिसं. सू. उ. | सू. उ. | 2 मार्च सू. उ. | 7 53 | 4 मार्च सू. उ. | सू. उ. | 2 मार्च सू. उ. | 7 53 |
| 13 अप्रै. सू. उ. | सू. उ. | 30 जून सू. उ. | 1 जुला सू. उ. | 22 सित. सू. उ. | 22 सित. सू. उ. | 18 दिसं. सू. उ. | 14 24 | 19 दिसं. सू. उ. | 16 57 | 6 मार्च सू. उ. | सू. उ. | 7 मार्च सू. उ. | सू. उ. | 6 मार्च सू. उ. | सू. उ. |
| 15 अप्रै. सू. उ. | सू. उ. | 4 जुला सू. उ. | 5 जुला सू. उ. | 24 सित. सू. उ. | 24 सित. सू. उ. | 20 दिसं. सू. उ. | सू. उ. | 20 दिसं. सू. उ. | 19 51 | 9 मार्च सू. उ. | 7 18 | 10 मार्च सू. उ. | सू. उ. | 9 मार्च सू. उ. | 7 18 |
| 17 अप्रै. सू. उ. | 24 10 | 7 जुला सू. उ. | 8 जुला सू. उ. | 2 अक्तू. सू. उ. | 3 अक्तू. सू. उ. | 28 दिसं. सू. उ. | 9 27 | 29 दिसं. सू. उ. | 8 36 | 15 मार्च सू. उ. | 24 40 | 16 मार्च सू. उ. | सू. उ. | 15 मार्च सू. उ. | 24 40 |
| 27 अप्रै. सू. उ. | 6 19 | 13 जुला सू. उ. | 9 24 सू. उ. | 7 अक्तू. सू. उ. | 8 अक्तू. सू. उ. | (सन् 2006 ई.) | | | | 18 मार्च सू. उ. | सू. उ. | 19 मार्च सू. उ. | सू. उ. | 18 मार्च सू. उ. | सू. उ. |
| 30 अप्रै. सू. उ. | सू. उ. | 16 जुला सू. उ. | सू. उ. | 9 अक्तू. सू. उ. | 10 अक्तू. सू. उ. | 1 जन. सू. उ. | सू. उ. | 1 जन. सू. उ. | 24 06 | 20 मार्च सू. उ. | 9 06 | 21 मार्च सू. उ. | सू. उ. | 20 मार्च सू. उ. | 9 06 |
| 5 मई सू. उ. | 18 46 | 18 जुला सू. उ. | 12 50 सू. उ. | 16 अक्तू. सू. उ. | 16 अक्तू. सू. उ. | 2 जन. सू. उ. | सू. उ. | 2 जन. सू. उ. | 21 34 | 25 मार्च सू. उ. | 7 27 | 26 मार्च सू. उ. | सू. उ. | 25 मार्च सू. उ. | 7 27 |
| 9 मई सू. उ. | 20 25 | 22 जुला सू. उ. | 11 05 सू. उ. | 18 अक्तू. सू. उ. | 18 अक्तू. सू. उ. | 6 जन. सू. उ. | 14 30 | 7 जन. सू. उ. | सू. उ. | 28 मार्च सू. उ. | 21 41 | 29 मार्च सू. उ. | सू. उ. | 28 मार्च सू. उ. | 21 41 |
| 11 मई सू. उ. | सू. उ. | 26 जुला सू. उ. | 13 01 सू. उ. | 19 अक्तू. सू. उ. | 20 अक्तू. सू. उ. | 8 जन. सू. उ. | सू. उ. | 8 जन. सू. उ. | 13 45 | 30 मार्च सू. उ. | सू. उ. | 31 मार्च सू. उ. | सू. उ. | 30 मार्च सू. उ. | सू. उ. |
| 13 मई सू. उ. | 24 01 | 28 जुला सू. उ. | 12 42 सू. उ. | 24 अक्तू. सू. उ. | 25 अक्तू. सू. उ. | 10 जन. सू. उ. | सू. उ. | 10 जन. सू. उ. | 14 51 | अमृत सिद्धि योग (2005-06 ई.) | | | | | |
| 15 मई सू. उ. | 5 16 | 30 जुला सू. उ. | सू. उ. | 25 अक्तू. सू. उ. | 26 अक्तू. सू. उ. | 11 जन. सू. उ. | सू. उ. | 11 जन. सू. उ. | सू. उ. | | | | | | |
| 21 मई सू. उ. | सू. उ. | 1 अग. सू. उ. | 19 34 सू. उ. | 31 अक्तू. सू. उ. | 31 अक्तू. सू. उ. | 13 जन. सू. उ. | 19 24 | 14 जन. सू. उ. | सू. उ. | | | | | | |
| 23 मई सू. उ. | 4 13 | 4 अग. सू. उ. | 4 07 सू. उ. | 4 नव. सू. उ. | 4 नव. सू. उ. | 15 जन. सू. उ. | सू. उ. | 15 जन. सू. उ. | 24 11 | | | | | | |
| 28 मई सू. उ. | सू. उ. | 10 अग. सू. उ. | 17 36 सू. उ. | 6 नव. सू. उ. | 6 नव. सू. उ. | 16 जन. सू. उ. | सू. उ. | 16 जन. सू. उ. | 18 57 | | | | | | |
| 31 मई सू. उ. | सू. उ. | 19 अग. सू. उ. | 8 20 सू. उ. | 13 नव. सू. उ. | 14 नव. सू. उ. | 25 जन. सू. उ. | सू. उ. | 25 जन. सू. उ. | 10 55 | | | | | | |
| 2 जून सू. उ. | सू. उ. | 24 अग. सू. उ. | सू. उ. | 15 नव. सू. उ. | 17 नव. सू. उ. | 29 जन. सू. उ. | सू. उ. | 29 जन. सू. उ. | 7 58 | | | | | | |
| 6 जून सू. उ. | सू. उ. | 24 अग. सू. उ. | सू. उ. | 21 नव. सू. उ. | 22 नव. सू. उ. | 30 जन. सू. उ. | 21 53 | 4 फर. सू. उ. | सू. उ. | | | | | | |
| 8 जून सू. उ. | 7 27 | 27 अग. सू. उ. | 23 23 सू. उ. | 22 नव. सू. उ. | 23 नव. सू. उ. | 6 फर. सू. उ. | 20 23 | 7 फर. सू. उ. | सू. उ. | | | | | | |
| 9 जून सू. उ. | 12 39 | 1 सित. सू. उ. | 10 13 सू. उ. | 27 नव. सू. उ. | 27 नव. सू. उ. | 8 फर. सू. उ. | सू. उ. | 8 फर. सू. उ. | 23 15 | | | | | | |
| 3 अप्रै. सू. उ. | 3 अप्रै. सू. उ. | 3 अप्रै. सू. उ. | 3 अप्रै. सू. उ. | 3 अप्रै. सू. उ. | 3 अप्रै. सू. उ. | 3 अप्रै. सू. उ. | 3 अप्रै. सू. उ. | 3 अप्रै. सू. उ. | 3 अप्रै. सू. उ. | 8 अप्रै. सू. उ. | 11 13 | 9 अप्रै. सू. उ. | सू. उ. | 8 अप्रै. सू. उ. | 11 13 |
| 4 अप्रै. सू. उ. | 4 अप्रै. सू. उ. | 4 अप्रै. सू. उ. | 4 अप्रै. सू. उ. | 4 अप्रै. सू. उ. | 4 अप्रै. सू. उ. | 4 अप्रै. सू. उ. | 4 अप्रै. सू. उ. | 4 अप्रै. सू. उ. | 4 अप्रै. सू. उ. | 27 अप्रै. सू. उ. | सू. उ. | 27 अप्रै. सू. उ. | सू. उ. | 27 अप्रै. सू. उ. | सू. उ. |
| 8 अप्रै. सू. उ. | 11 13 | 9 अप्रै. सू. उ. | 9 अप्रै. सू. उ. | 9 अप्रै. सू. उ. | 9 अप्रै. सू. उ. | 9 अप्रै. सू. उ. | 9 अप्रै. सू. उ. | 9 अप्रै. सू. उ. | 9 अप्रै. सू. उ. | 6 मई सू. उ. | सू. उ. | 6 मई सू. उ. | सू. उ. | 6 मई सू. उ. | सू. उ. |
| 10 अप्रै. सू. उ. | 10 23 | 10 अप्रै. सू. उ. | 10 अप्रै. सू. उ. | 10 अप्रै. सू. उ. | 10 अप्रै. सू. उ. | 10 अप्रै. सू. उ. | 10 अप्रै. सू. उ. | 10 अप्रै. सू. उ. | 10 अप्रै. सू. उ. | 7 जून सू. उ. | 5 21 | 7 जून सू. उ. | सू. उ. | 7 जून सू. उ. | 5 21 |
| 12 अप्रै. सू. उ. | 11 52 | 12 अप्रै. सू. उ. | 12 अप्रै. सू. उ. | 12 अप्रै. सू. उ. | 12 अप्रै. सू. उ. | 12 अप्रै. सू. उ. | 12 अप्रै. सू. उ. | 12 अप्रै. सू. उ. | 12 अप्रै. सू. उ. | 4 जुला सू. उ. | 11 31 | 4 जुला सू. उ. | सू. उ. | 4 जुला सू. उ. | 11 31 |
| 13 अप्रै. सू. उ. | सू. उ. | 13 अप्रै. सू. उ. | 13 अप्रै. सू. उ. | 13 अप्रै. सू. उ. | 13 अप्रै. सू. उ. | 13 अप्रै. सू. उ. | 13 अप्रै. सू. उ. | 13 अप्रै. सू. उ. | 13 अप्रै. सू. उ. | 7 जुला सू. उ. | 19 10 | 7 जुला सू. उ. | सू. उ. | 7 जुला सू. उ. | 19 10 |
| 15 अप्रै. सू. उ. | 18 23 | 15 अप्रै. सू. उ. | 15 अप्रै. सू. उ. | 15 अप्रै. सू. उ. | 15 अप्रै. सू. उ. | 15 अप्रै. सू. उ. | 15 अप्रै. सू. उ. | 15 अप्रै. सू. उ. | 15 अप्रै. सू. उ. | 30 जुला सू. उ. | 15 07 | 30 जुला सू. उ. | सू. उ. | 30 जुला सू. उ. | 15 07 |
| 17 अप्रै. सू. उ. | 24 10 | 17 अप्रै. सू. उ. | 17 अप्रै. सू. उ. | 17 अप्रै. सू. उ. | 17 अप्रै. सू. उ. | 17 अप्रै. सू. उ. | 17 अप्रै. सू. उ. | 17 अप्रै. सू. उ. | 17 अप्रै. सू. उ. | | | | | | |
| 27 अप्रै. सू. उ. | 6 19 | 27 अप्रै. सू. उ. | 27 अप्रै. सू. उ. | 27 अप्रै. सू. उ. | 27 अप्रै. सू. उ. | 27 अप्रै. सू. उ. | 27 अप्रै. सू. उ. | 27 अप्रै. सू. उ. | 27 अप्रै. सू. उ. | | | | | | |
| 30 अप्रै. सू. उ. | 24 01 | 30 अप्रै. सू. उ. | 30 अप्रै. सू. उ. | 30 अप्रै. सू. उ. | 30 अप्रै. सू. उ. | 30 अप्रै. सू. उ. | 30 अप्रै. सू. उ. | 30 अप्रै. सू. उ. | 30 अप्रै. सू. उ. | | | | | | |
| 5 मई सू. उ. | 18 46 | 5 मई सू. उ. | 5 मई सू. उ. | 5 मई सू. उ. | 5 मई सू. उ. | 5 मई सू. उ. | 5 मई सू. उ. | 5 मई सू. उ. | 5 मई सू. उ. | | | | | | |
| 9 मई सू. उ. | 20 25 | 9 मई सू. उ. | 9 मई सू. उ. | 9 मई सू. उ. | 9 मई सू. उ. | 9 मई सू. उ. | 9 मई सू. उ. | 9 मई सू. उ. | 9 मई सू. उ. | | | | | | |
| 11 मई सू. उ. | सू. उ. | 11 मई सू. उ. | 11 मई सू. उ. | 11 मई सू. उ. | 11 मई सू. उ. | 11 मई सू. उ. | 11 मई सू. उ. | 11 मई सू. उ. | 11 मई सू. उ. | | | | | | |
| 13 मई सू. उ. | 24 01 | 13 मई सू. उ. | 13 मई सू. उ. | 13 मई सू. उ. | 13 मई सू. उ. | 13 मई सू. उ. | 13 मई सू. उ. | 13 मई सू. उ. | 13 मई सू. उ. | | | | | | |
| 15 मई सू. उ. | 5 16 | 15 मई सू. उ. | 15 मई सू. उ. | 15 मई सू. उ. | 15 मई सू. उ. | 15 मई सू. उ. | 15 मई सू. उ. | 15 मई सू. उ. | 15 मई सू. उ. | | | | | | |
| 21 मई सू. उ. | सू. उ. | 21 मई सू. उ. | 21 मई सू. उ. | 21 मई सू. उ. | 21 मई सू. उ. | 21 मई सू. उ. | 21 मई सू. उ. | 21 मई सू. उ. | 21 मई सू. उ. | | | | | | |
| 23 मई सू. उ. | 4 13 | 23 मई सू. उ. | 23 मई सू. उ. | 23 मई सू. उ. | 23 मई सू. उ. | 23 मई सू. उ. | 23 मई सू. उ. | 23 मई सू. उ. | 23 मई सू. उ. | | | | | | |
| 28 मई सू. उ. | सू. उ. | 28 मई सू. उ. | 28 मई सू. उ. | 28 मई सू. उ. | 28 मई सू. उ. | 28 मई सू. उ. | 28 मई सू. उ. | 28 मई सू. उ. | 28 मई सू. उ. | | | | | | |
| 31 मई सू. उ. | सू. उ. | 31 मई सू. उ. | 31 मई सू. उ. | 31 मई सू. उ. | 31 मई सू. उ. | 31 मई सू. उ. | 31 मई सू. उ. | 31 मई सू. उ. | 31 मई सू. उ. | | | | | | |
| 2 जून सू. उ. | सू. उ. | 2 जून सू. उ. | 2 जून सू. उ. | 2 जून सू. उ. | 2 जून सू. उ. | 2 जून सू. उ. | 2 जून सू. उ. | 2 जून सू. उ. | 2 जून सू. उ. | | | | | | |
| 6 जून सू. उ. | सू. उ. | 6 जून सू. उ. | 6 जून सू. उ. | 6 जून सू. उ. | 6 जून सू. उ. | 6 जून सू. उ. | 6 जून सू. उ. | 6 जून सू. उ. | 6 जून सू. उ. | | | | | | |
| 8 जून सू. उ. | 7 27 | 8 जून सू. उ. | 8 जून सू. उ. | 8 जून सू. उ. | 8 जून सू. उ. | 8 जून सू. उ. | 8 जून सू. उ. | 8 जून सू. उ. | 8 जून सू. उ. | | | | | | |
| 9 जून सू. उ. | 12 39 | 9 जून सू. उ. | 9 जून सू. उ. | 9 जून सू. उ. | 9 जून सू. उ. | 9 जून सू. उ. | 9 जून सू. उ. | 9 जून सू. उ. | 9 जून सू. उ. | | | | | | |

अमृत सिद्धि योग

| प्रारम्भ काल | समाप्ति काल |
|-----------------------|--------------|
| 2005 ई. चं. मि. 19 34 | 1 अग. 21 40 |
| सू. उ. 28 07 | 11 अग. 11 52 |
| सू. उ. 24 09 | 12 अग. 12 09 |
| 23 अग. 20 52 | 13 अग. 13 31 |
| सू. उ. 23 23 | 14 अग. 15 44 |
| 27 अग. 23 23 | 15 अग. 18 23 |
| सू. उ. 10 13 | 16 अग. 5 15 |
| 1 सितं. 5 52 | 17 अग. 8 57 |
| 20 सितं. 7 02 | 22 अग. 24 01 |
| सू. उ. 16 04 | 25 अग. 24 01 |
| 3 अक्तू. 22 03 | 28 अग. 10 12 |
| 18 अक्तू. 22 03 | 6 नव. 26 29 |
| सू. उ. 7 08 | 7 नव. 8 12 |
| 24 दिसं. 7 08 | 15 मई 8 12 |
| 28 दिसं. 9 27 | 19 मई 17 27 |

(सन् 2006 ई.)

6 जन. 7 जन.

14 30 सू. उ.

25 जन. 18 57

3 फर. 20 32

7 मार्च 3 57

रवि सिद्धि योग

| | |
|-----------------|-----------------|
| 31 मार्च 22 55 | 1 अप्रै. 21 40 |
| 11 अप्रै. 10 49 | 12 अप्रै. 11 52 |
| 13 अप्रै. 13 31 | 13 अप्रै. 24 09 |
| 14 अप्रै. 15 44 | 15 अप्रै. 18 23 |
| 17 अप्रै. 24 10 | 20 अप्रै. 5 15 |
| 22 अप्रै. 8 20 | 23 अप्रै. 8 57 |
| 29 अप्रै. 25 36 | 30 अप्रै. 24 01 |
| 10 मई 21 59 | 11 मई 10 12 |
| 11 मई 24 01 | 12 मई 26 29 |
| 14 मई 5 16 | 15 मई 8 12 |
| 17 मई 13 44 | 19 मई 17 27 |

रवि सिद्धि योग

| प्रारम्भ काल | समाप्ति काल |
|-----------------------|-----------------|
| 2005 ई. चं. मि. 18 22 | 22 मई 17 45 |
| 21 मई 12 39 | 11 जून 15 35 |
| 10 जून 18 36 | 13 जून 21 29 |
| 12 जून 2 05 | 18 जून 3 59 |
| 16 जून 2 38 | 20 जून 24 53 |
| 20 जून 7 47 | 28 जून 6 36 |
| 27 जून 25 09 | 11 जुला 4 09 |
| 9 जुला 6 58 | 13 जुला 9 24 |
| 12 जुला 12 28 | 17 जुला 12 21 |
| 15 जुला 9 07 | 20 जुला 2 26 |
| 19 जुला 6 35 | 21 जुला 3 40 |
| 20 जुला 13 01 | 12 29 |
| 26 जुला 12 53 | 15 26 |
| 8 अग. 17 36 | 19 13 |
| 10 अग. 20 25 | 18 36 |
| 13 अग. 11 22 | 19 अग. 8 20 |
| 18 अग. 20 22 | 25 अग. 20 38 |
| 24 अग. 23 10 | 7 सितं. 24 49 |
| 6 सितं. 25 58 | 9 सितं. 26 35 |
| 8 सितं. 26 00 | 14 सितं. 20 57 |
| 11 सितं. 15 52 | 17 सितं. 13 14 |
| 16 सितं. 5 53 | 24 सितं. 7 02 |
| 23 सितं. 7 34 | 7 अक्तू. 8 01 |
| 6 अक्तू. 8 02 | 9 अक्तू. 7 37 |
| 12 अक्तू. 4 13 | 13 अक्तू. 24 35 |
| 15 अक्तू. 20 38 | 16 अक्तू. 18 48 |
| 22 अक्तू. 17 21 | 23 अक्तू. 19 19 |
| 24 अक्तू. 3 45 | 24 अक्तू. 21 50 |
| 4 नव. 14 07 | 5 नव. 13 19 |
| 6 नव. 11 49 | 6 नव. 12 16 |
| 7 नव. 11 02 | 8 नव. 9 42 |
| 10 नव. 6 54 | 12 नव. 4 13 |
| 14 नव. 2 01 | 15 नव. 1 15 |

रवि सिद्धि योग

| प्रारम्भ काल | समाप्ति काल |
|------------------------|----------------|
| 2005-06 चं. मि. 22 नव. | 8 55 23 नव. |
| 4 दिसं. 17 31 | 5 दिसं. 15 39 |
| 9 दिसं. 13 52 | 7 दिसं. 12 16 |
| 13 दिसं. 9 49 | 11 दिसं. 8 30 |
| 21 दिसं. 8 20 | 14 दिसं. 8 44 |
| 22 दिसं. 22 56 | 22 दिसं. 26 01 |
| 2 जन. 21 34 | 3 जन. 19 14 |
| 4 जन. 17 13 | 5 जन. 15 37 |
| 7 जन. 13 53 | 9 जन. 14 05 |
| 12 जन. 17 31 | 13 जन. 19 24 |
| 20 जन. 12 18 | 21 जन. 15 00 |
| 1 फर. 2 14 | 1 फर. 23 49 |
| 2 फर. 21 53 | 3 फर. 20 32 |
| 5 फर. 19 47 | 6 फर. 10 48 |
| 6 फर. 20 23 | 8 फर. 23 15 |
| 11 फर. 3 49 | 12 फर. 6 32 |
| 18 फर. 23 54 | 19 फर. 15 25 |
| 19 फर. 25 49 | 21 फर. 3 05 |
| 2 मार्च 7 53 | 3 मार्च 5 46 |
| 4 मार्च 4 13 | 4 मार्च 21 42 |
| 5 मार्च 3 23 | 6 मार्च 3 17 |
| 8 मार्च 5 19 | 10 मार्च 9 46 |
| 12 मार्च 15 36 | 13 मार्च 18 42 |
| 21 मार्च 10 00 | 22 मार्च 10 17 |
| 31 मार्च 14 35 | 31 मार्च 16 49 |

उज्ज्वलमुखी योग 2005 ई.

| | |
|-----------------|----------------|
| 16 फर. 18 36 | 17 फर. 20 39 |
| 14 मार्च 8 44 | 15 मार्च 1 23 |
| 18 अप्रै. 11 40 | 19 अप्रै. 2 54 |
| 22 जून 9 44 | 22 जून 19 58 |
| 26 अग. 8 35 | 26 अग. 21 40 |
| 27 अग. 9 15 | 27 अग. 23 23 |
| 21 सितं. 22 43 | 22 सितं. 5 30 |
| 26 अक्तू. 22 31 | 27 अक्तू. 3 42 |

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योग (2005-06 ई.)

(गाड़ी, आभूषणदि बहुमूल्य वस्तुएँ खरीदने हेतु विशेष मुहूर्त)

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योगों में बहुमूल्य एवं उपयोगी पदार्थ, वस्तुएँ जैसे—जमीन—जायदाद, हारे—जवाहरात, स्वर्ण—चौडी के आभूषण, कार, ट्रक, फुटर, गाय—धैम ब्रय करना, नवीन उद्योग की स्थापना आदि करना लाभदायक रहता है। इन योगों में यदि किसी को हानि हो जाए, तो भी दुर्गुणी अथवा तीन गुणा हानि होने की सम्भावना हो जाती है।

द्विपुष्कर योग

| प्रारम्भ काल | समाप्ति काल |
|--------------------------|---------------|
| 2005-06 चं. मि. 22 जन. | 8 30 22 जन. |
| 1 फर. सू. उ. 1 फर. | 1 फर. 13 27 |
| 27 मार्च सू. उ. 27 मार्च | 25 04 25 04 |
| 5 अप्रै. 10 04 5 अप्रै. | 15 15 15 15 |
| 21 मई सू. उ. 21 मई | 6 43 6 43 |
| 29 मई 8 33 29 मई | 26 40 26 40 |
| 8 जून 4 52 8 जून | सू. उ. सू. उ. |
| 23 जुला सू. उ. 23 जुला | 8 45 8 45 |
| 31 जुला 23 46 1 अग. | सू. उ. सू. उ. |
| 24 सितं. 7 02 24 सितं. | 23 26 23 26 |
| 4 अक्तू. 16 56 5 अक्तू. | सू. उ. सू. उ. |
| 27 नव. 22 35 28 नव. | सू. उ. सू. उ. |
| 7 दिसं. 6 12 7 दिसं. | सू. उ. सू. उ. |
| 21 जन. 15 00 22 जन. | 8 03 8 03 |
| 26 मार्च 5 26 26 मार्च | 26 08 26 08 |

रवि पुष्प योग

| | |
|----------------------------|---------------|
| 21 फर. 5 53 21 फर. | सू. उ. सू. उ. |
| 20 मार्च 13 16 21 मार्च | सू. उ. सू. उ. |
| 17 अप्रै. सू. उ. 17 अप्रै. | 24 10 24 10 |
| 15 मई सू. उ. 15 मई | 8 12 8 12 |
| 21 नव. 6 14 21 नव. | सू. उ. सू. उ. |
| 18 दिसं. 14 24 19 दिसं. | सू. उ. सू. उ. |
| 15 जन. सू. उ. 15 जन. | 24 11 24 11 |

गुरु पुष्प योग

| | |
|------------------------|---------------|
| 7 जुला 19 10 8 जुला | सू. उ. सू. उ. |
| 4 अग. सू. उ. 5 अग. | 4 07 4 07 |
| 1 सितं. सू. उ. 1 सितं. | 10 13 10 13 |

त्रिपुष्कर योग

| प्रारम्भ काल | समाप्ति काल |
|----------------------------|---------------|
| 2005-06 चं. मि. 2 जन. | 10 02 3 जन. |
| 11 जन. 13 38 11 जन. | 14 46 14 46 |
| 15 फर. 16 32 15 फर. | 17 06 17 06 |
| 20 फर. 2 55 21 फर. | 4 09 4 09 |
| 26 फर. सू. उ. 26 फर. | 12 55 12 55 |
| 7 मार्च 2 42 7 मार्च | सू. उ. सू. उ. |
| 16 अप्रै. सू. उ. 16 अप्रै. | 6 56 6 56 |
| 26 अप्रै. सू. उ. 26 अप्रै. | 7 34 7 34 |
| 30 अप्रै. सू. उ. 30 अप्रै. | 24 01 24 01 |
| 19 जून 3 42 19 जून | 18 13 18 13 |
| 28 जून सू. उ. 28 जून | 6 36 6 36 |
| 2 जुला 11 27 3 जुला | 9 31 9 31 |
| 21 अग. 2 30 21 अग. | 16 15 16 15 |
| 30 अग. 14 42 31 अग. | सू. उ. सू. उ. |
| 5 सितं. 2 17 5 सितं. | सू. उ. सू. उ. |
| 23 अक्तू. 19 19 24 अक्तू. | सू. उ. सू. उ. |
| 29 अक्तू. 9 15 30 अक्तू. | 11 26 11 26 |
| 8 नव. सू. उ. 8 नव. | 9 42 9 42 |
| 17 दिसं. 12 18 17 दिसं. | 23 58 23 58 |
| 27 दिसं. 16 30 28 दिसं. | सू. उ. सू. उ. |
| 1 जन. 2 38 1 जन. | 24 06 24 06 |
| 10 जन. 10 53 10 जन. | 14 51 14 51 |
| 19 फर. 25 49 20 फर. | सू. उ. सू. उ. |
| 25 फर. सू. उ. 25 फर. | 16 55 16 55 |
| 1 मार्च 2 18 1 मार्च | सू. उ. सू. उ. |
| 5 मार्च 14 05 6 मार्च | 3 17 3 17 |

स्त्री ज्ञानावक विचार

(विवाह, सन्तान आदि सम्बन्धी विशेष योग) ज्योतिष तत्त्व (फलित) भाग दो से उद्धृत

आजकल परिवर्तित परिस्थितियों में लड़कियाँ भी पुरुषों के समान उच्च विद्या प्राप्त करके लगभग प्रत्येक क्षेत्र में उच्च पद की नौकरी अथवा व्यवसाय करते हुए अपने परिवार एवं समाज में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। इस प्रकार परिवारिक एवं आर्थिक, दोनों क्षेत्रों में अपना उत्तरदायित्व सफलतापूर्वक निभा रही हैं। इसलिए स्त्री सम्बन्धित ज्योतिष के अनेक प्राचीन योगों को आधुनिक सन्दर्भों में विश्लेषण करके वर्णित करने की विशेष आवश्यकता है। आगे स्त्री जातक सम्बन्धी कुछ विशेष योग दिए जाते हैं। ध्यान रहे, स्त्रियाँ सम्बन्धी फलादेश जन्म लग्न के अतिरिक्त चन्द्रमा को भी लग्न मानकर करना चाहिए।

(1) यदि स्त्री की कुण्डली में लग्न व चन्द्रमा समराशि में हों, तो स्त्री पतिव्रता, सुन्दर, सुशील, चरित्रवान्, गुणवती एवं रूपवती होती है। यदि समराशिस्थ लग्न व चन्द्रमा शुभ ग्रहों से दृष्ट हो, तो स्त्री अनेक गुणों से युक्त तथा सुवर्ण आभूषण, अलंकारों, भूमि एवं वाहन आदि सुखों से युक्त होती है—

प्रकृतिरथा लग्नेन्द्रोः समभे सच्छोलरूपाढ्या।

भूषण गुणैरुपेता, शुभवीक्षितयोश्च युवतिः स्यात् ॥ सारावली ॥

(2) यदि स्त्री की कुण्डली में लग्न व चन्द्रमा विषम राशि में हों, तो स्त्री पुरुष की आकृति के समान मुखकृति वाली एवं पुरुषों जैसे कठोर स्वभाव से युक्त एवं स्वाभिमानी परन्तु परेशानियों से घिरी रहने वाली होगी। यदि विषम राशिस्थ लग्न व चन्द्र पाप (क्रूर) ग्रहों से युक्त या दृष्ट हों, तो स्त्री कुटिल बुद्धि की, पति से उग्र (क्रोधपूर्ण) व्यवहार करने वाली, नियन्त्रण में न रहने वाली, पर पुरुष में चेष्टा रखने वाली तथा दूसरों से ईर्ष्या व द्वेष करने वाली होती है।

(3) यदि लग्न और चन्द्रमा विषम राशि में हों तथा वह शुभ ग्रह से युक्त व उन्हें शुभ ग्रह देखते हों, तो स्त्री मिश्रित (शुभाशुभ) गुणों वाली, पुरुष-स्त्री मिश्रित आकृति, स्थिर, चाल और मिश्रित बुद्धि वाली होती है।

(4) लग्न व चन्द्रमा में से जो अधिक बली हो, उससे स्त्रियों की देह का शुभाशुभ फल का विचार करे। सप्तम भाव से पति के सुख एवं सौभाग्य का, अष्टम से पति की मृत्यु का तथा पंचम भाव से सन्तति का विचार करें—

वैधव्यं विधेयं चिन्त्यं शरीरं जन्मलग्नतः। सप्तमे पतिसौभाग्यं पंचमे प्रसवस्तथा ॥

(5) यदि 1, 4, 5, 7 एवं 12वें भावों में शुभ ग्रह हों, तो ऐसी स्त्री अपने पति के वश में रहती है तथा उसका पति भी उसके वश में रहता है तथा पति-पत्नी में अच्छा प्रेम रहता है।

6. वैधव्य योग—(क) जिस स्त्री की कुण्डली में सप्तमेश अष्टम स्थान में बैठा हो और अष्टमेश सप्तम स्थान में बैठा हो और वे पापग्रह से युक्त या दृष्ट हों, तो स्त्री को वैधव्य योग होता है।

(ख) जब सप्तमेश तथा अष्टमेश छठे या बारहवें भावों में पापग्रह के साथ पड़े हों, तो ऐसी स्त्री को वैधव्य अथवा पति के सुख में कमी होती है।

सप्तमेशोऽष्टमे शरयाः सप्तमे निधनाधिपः। पापेक्षणयुताद् वाला वैधव्यं लभते ध्रुवम्। सप्तमाष्टपती षष्ठे व्यये वा पापपीडितो। तदा वैधव्यमाज्जोति नारी नैवात्र संशयः ॥

(ग) लग्न अथवा चन्द्रमा से सप्तम अथवा अष्टम स्थान में पापग्रह होने से स्त्री को वैधव्य होने की सम्भावना होती है।

(घ) यदि दो पापग्रह सप्तम स्थान में हों, तो स्त्री काम से पीडित, विधवा और कुल का क्षय करने वाली होती है।

(ङ) यदि तीन पापग्रह सप्तम स्थान में हों, तो स्त्री कुलटा तथा परपुरुष गामिनी एवं पति की धातिनी होती है।

(च) सप्तम स्थान में राहु नित्य अरिष्ट करके स्त्री की हानि करता है।

(छ) लग्न से अष्टम क्रूर ग्रह, नीच, शत्रु या पापवर्गों में हों, तो पति की आयु के लिए अरिष्टकर होता है

क्रूर व्योमचरः स्त्रीणामष्टमस्थो विलग्नतः। नीचारिपाप वर्गेषु पत्युः मृत्यु करः स्मृतः ॥ इसके अतिरिक्त 8वें एवं 12वें स्थानों पर पापयुक्त मंगल हो, लग्न में राहु हो, तो भी वैधव्य की सम्भावना होती है। यदि लग्न में सूर्य, मंगल अथवा शनि हो, तो भी दुर्भाग्य युक्त होती है— व्याघाटो कुजे क्रूरयुते राहौ विलग्नो। रण्डाथ लग्नो सूर्ये वा भौमे वा दुर्भागशौ।

(झ) चन्द्रमा से सप्तम एवं अष्टम स्थान में पापग्रह हों, अथवा कन्या अमावस्या के दिन उत्पन्न हुई हो, तो पति के सुख में कमी रहती है। यदि चन्द्रमा पापग्रह से युक्त अथवा पापग्रहों के मध्य में हो, तो भी पति सुख में कमी होती है।

7. यदि लग्न अथवा चन्द्रमा से सप्तम स्थान में शुभग्रह अथवा सप्तमेश हों, तो वैधव्य दोष, सन्तानहीन सम्बन्धी एवं विपकन्या सम्बन्धी दोषों एवं विषकन्या सम्बन्धी दोषों का नाश हो जाता है।

लग्नान्त विधोर्वा यदि जन्मकाले शुभग्रहो वा मदनाधिपस्य। दूनस्थितो हन्ति अनपत्यदोषं वैधव्य दोषं च विषांगनाख्यम् ॥

8. किसी जातिका के गुरु नवम, पंचम या केन्द्र में स्थित हो अथवा उच्चादि स्थिति में हों, तो जातिका शील से युक्त, (सुशील), साध्वी, सुपुत्र आदि सुखों से युक्त, पति को सुख देने वाली, गुणवती और निश्चय ही दोनों कुलों का यश बढ़ाने वाली होती है।

वाचस्पतौ नवमपंचम केन्द्रं सस्ये तुंगादिके भवति शीलसमन्विता च।

साध्वी सुपुत्र जननी सुखिनी गुणढ्यां नूनं कुल द्रव्यशरकारिणी भवेत्सा ॥ जा. पा. 9. यदि कुण्डली में शुभ ग्रह लग्न को देखते हों, तो स्त्री शिल्प, कला, संगीत आदि कलाओं की रानकार, शुद्ध चित्त वाली, स्त्रियोन्वित लज्जान्तर, रमणीय मूर्ति, पुत्रवती, पति की प्रिया, धन-वाहन आदि सुखों से युक्ता, पति के प्रति समर्पित तथा शुभ लक्षणों से युक्त होती है।

10. यदि सप्तम भाव में शुभ राशि, शुभ ग्रहों का योग, शुभ ग्रह की दृष्टि एवं शुभ ग्रह का नवांश हो, तो उस स्त्री को आकर्षक व्यक्तित्व वाला, यश, विद्या, धन-सम्पदा आदि से युक्त, उच्चप्रतिष्ठित पति मिलता है। यदि इसका उलटा हो, अर्थात् सप्तम भाव मध्य पर अशुभ राशि, अशुभ नवांश हो, तो कुत्सित शरीर वाला, चालाक तथा साधनहीन पति मिलता है।

11. किसी स्त्री की कुण्डली के सप्तम भाव में सूर्य सिंह राशि में हो अथवा सप्तम भाव सम्बन्धी ही सिंह का नवांश हो, तो ऐसी स्त्री का पति सुन्दर, कामुक परन्तु क्राधी होता है।

12. यदि सप्तम भाव में कर्क राशि का चन्द्रमा हो, अथवा सप्तम भाव सम्बन्धी कर्क नवांश हो, तो उस जातिका का पति कामुक, सुख साधनों से युक्त परन्तु पटु स्वभाव का होता है।

13. सप्तम भाव में मंगल मेष या बुधिक राशि का हो, अथवा सप्तम भाव सम्बन्धी ग्रह का नवांश हो, तो ऐसी कन्या को सुन्दर, विद्वान, धनी एवं योग्य पति मिलता है।

15. यदि गुरु सप्तम भाव में धनु या मीन राशिगत हो, अथवा सप्तम भाव सम्बन्धी गुरु का नवांश हो, तो ऐसी कन्या का पति उच्च विद्या प्राप्त, प्रतिष्ठित, विद्वान एवं गुणवान होता है।

16. यदि शुक्र वृष या तुला राशिगत सप्तम भाव में अथवा सप्तम भाव सम्बन्धी शुक्र का नवांश हो, तो ऐसी कन्या का पति सुन्दर व्यक्तित्व, रोमांटिक, संगीत, गायन अभिनय आदि कलाओं का शौकीन होता है।

17. यदि शनि, सप्तम भाव में मकर या कुम्भ राशिगत हो अथवा नवांश कुण्डली में सप्तम भाव, से सम्बन्धित ग्रह को राशि हो, तो ऐसी कन्या का पति अधिक आयु का दिखने वाला, चिन्तनशील एवं सदा परेशानियों से घिरे रहने वाला होता है।

विवाह में विलम्ब योग-

(क) द्वितीय (कुटुम्ब) भाव तथा सप्तम भाव में सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु आदि क्रूर ग्रह पड़े हों, तो कन्या के विवाह में विलम्ब एवं विघ्न होते हैं।

(ख) सप्तमेश अष्टम में हो एवं अष्टमेश सप्तम में होकर दोनों में राशि परिवर्तन हो, तो भी विवाह कार्य में अनावश्यक विलम्ब होते हैं।

(ग) चन्द्रमा या राहु सप्तम भाव में हो तथा सप्तमेश ग्रह तथा गुरु का सम्बन्ध दुःस्थानों (6, 8, 12वें) में हो, तो विवाह में विलम्ब होता है।

(घ) सप्तम, अष्टम एवं द्वितीय भावों में पापग्रह पड़ें हों तो तथा अष्टमेश पंचम भाव में हो, तो भी वैवाहिक सुख में विलम्ब होते हैं।

(ङ) सप्तमेश एवं चन्द्र दोनों पापग्रह से युक्त तथा पाप ग्रहों से दृष्ट हों, तो भी वैवाहिक सुख में विलम्ब अथवा कमी रहती है। देखें उदाहरण कुण्डली संख्या नं० 103। 'ज्यो. तत्त्व', फालित भाग-दो

(च) सप्तम भाव पर भौम आदि पाप ग्रह की दृष्टि हो, सप्तमेश एवं लग्नेश पर शनि की क्रूर दृष्टि हो तथा पंचम भाव भी दूषित हो, तो विवाह में विशेष विलम्ब होता है। प्रस्तुत कुण्डली की जातिका अमावस तिथि को मीन लग्न में उत्पन्न हुई है। कुण्डली में सप्तम भाव पर मंगल की अशुभ दृष्टि है तथा सप्तमेश बुध एवं सूर्य, गुरु आदि पर भी शनि की कर्त्री दृष्टि पड़ रही है। पंचम भाव में केतु तथा उस पर पुनः शनि की क्रूर दृष्टि और पंचमेश चन्द्र का अष्टम भाव में होना इत्यादि कारणों से 32 वर्ष की आयु तक भी कन्या का विवाह नहीं हो पाया है।

इसके अतिरिक्त (क्षीण चन्द्र) अमावस तिथि में उत्पन्न कन्या के विवाह सुख में विलम्ब या विघ्न होते पाए जाते हैं।

(छ) विवाह एवं सन्तानकारक ग्रह अकेला सप्तम भाव में हो तथा उस पर मंगल, शनि आदि ग्रहों की अशुभ दृष्टि पड़े हो, तो भी जातिका का विवाह विलम्ब से होता है। प्रस्तुत कुण्डली की जातिका जन्मका जन्म 29 नव., 1963 ई. में हुआ—का विवाह 34 वर्ष की आयु में हुआ, उस समय इसको चन्द्र मध्ये शुक्र की अन्तर्दशा चल रही थी।

सन्तान योग-

(क) स्त्री की कुण्डली में उपचय स्थान (3, 6, 10 एवं 11वें) में गोचरक वलवान् चन्द्र व मंगल आ जावे अथवा स्वराशि या स्वनवांश में आने पर उस मास एवं उस दिन में स्त्री को गर्भ स्थिति होनी सम्भव होती है।

(ख) पंचम भाव पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो, पंचमेश केन्द्र या त्रिकोण में होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो, तो उस स्त्री को पुत्र सन्तान अधिक होती है।

(ग) पंचम भाव में चन्द्र, शुक्र या शनि हो, तो कन्या सन्तति अधिक होती है।

(घ) पंचम में जितने ग्रह हों और इस स्थान पर जितने ग्रहों की दृष्टि हो, उतनी संख्या में सन्तान संख्या जाननी चाहिए। पुरुष ग्रहों के योग और दृष्टि से पुत्र और स्त्री ग्रहों के योग और दृष्टि से कन्या सन्तति की संख्या का अनुमान करना चाहिए।

(ङ) सूर्य, गुरु, मंगल तथा पंचमेश ग्रह—ये चारों पुरुष राशि के नवांश में हों अथवा कुण्डली में पुरुष ग्रहों से युक्त या दृष्ट हों, तो पुत्रों की संख्या अधिक होती है।

(च) पंचम में स्त्री ग्रह हों अथवा पंचमेश स्त्री ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, नवम में भी शुक्र हो, तो कन्या सन्तति अधिक होती है।

(छ) पंचम, अष्टम या 12वें भावों में पापग्रह हों, तो सन्तान सुख में कमी होती है।
★ लग्न में चन्द्र-गुरु का योग हो तथा सातवें भाव में शनि या मंगल हो तो सन्तान अभाव का योग होता है।

★ सातवें भाव में बुध-शुक्र, चतुर्थ भाव में पाप ग्रह और पंचम भाव में अकेला गुरु हो, तो पुत्र सन्तान प्रतिबन्धक योग होता है।

★ लग्नेश, पंचमेश और नवमेश—ये तीनों ग्रह शुभग्रह से युक्त होकर 6, 8, या 12वें भाव में पड़े हों, तो विलम्ब से सन्तान होती है।

★ पंचम या पंचमेश द्वारा ग्रहीत राशि का स्वामी, पंचमेश द्वारा अधिष्ठित नवांश राशि का स्वामी अथवा गुरु स्थित राशि के स्वामी की महादशा या अन्तर्दशा में पुत्र सन्तान प्राप्ति के योग होते हैं।
नोट—और अधिक विस्तृत जानकारी के लिए विवाह एवं सन्तान सम्बन्धी हमारी शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली “सुतभाव प्रकाश” फालित नामक पुस्तक की प्रतीक्षा करें।

उदाहरण कुण्डली
जन्म 17-11-1971 ई.

| | | | |
|--------|----|-----|---------|
| 2 | 1 | 11 | 10 |
| श. (व) | 12 | मं. | रा. |
| 3 | 9 | 6 | 8 |
| के. | 4 | 7 | बु. गु. |
| 5 | 6 | चं. | |

उदाहरण कुण्डली

जन्म 29-11-1963 दिल्ली

| | |
|------------|-----|
| 7 | 5 |
| 8 | 4 |
| सू. बु. | 6 |
| मं. शु. के | 3 |
| 10 | 12 |
| श. | रा. |
| 11 | चं. |

विवाह एवं सन्तान सुख में बाधक अनिष्ट ग्रह और उनके उपाय—

20. (क) सूर्य पंचम या सन्तान भाव में नीच (तुला) राशि का होकर पड़ा हो, तथा नवांश कुण्डली में सूर्य शनि की राशि में होकर पाप पीड़ित हो, अथवा सूर्य अष्टम भाव में, शनि पंचम में तथा पंचमेश राहु से युक्त हो, अथवा गुरु सिंह राशि में हो, पंचम भाव में पाप ग्रह हों तथा पंचमेश सूर्य के साथ हो, तो पितृ श्राप/दोष के कारण विवाह एवं सन्तान सुख में कमी होती है।

(ख) सूर्य, गुरु एवं सप्तमेशया पंचमेश राहु, शनि, केतु आदि पाप ग्रहों से युक्त या आक्रान्त हों, तो भी पितृ दोष के कारण सन्तानभाव या सुख में कमी होती है।

(ग) सप्तम/सप्तमेश एवं पंचमेश, पंचम या नवम भाव में चन्द्रमा राहु, शनि या मंगल आदि पापग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो मातृ श्राप के कारण विवाह एवं सन्तान सुख में विलम्ब होता है।

(घ) निष्कर्षतः— विवाह या सन्तान बाधाकारक सूर्य हो, तो भगवान् शंकर और गरुड़ के क्रोध के कारण अतवा पितरों के श्राप का फल है। यदि विवाह या सन्तान में प्रतिबन्धक चन्द्रमा है, तो माता या किसी अन्य स्त्री के चित्त को दुःख पहुंचाने के कारण या भगवती का शाप या (अनादर) विवाह या सन्तान सुख में बाधाकारक होता है—

द्रोहात् शंभु सुपर्णयो हि सुतः शापात् पितृणां रवेः,

इन्द्रोः मातृ सुवासिनी भगवती कोपात् मनोदोषतः।

यदि मंगल विवाह सुख बाधक हो, तो ग्राम देवता, भगवान् कार्तिकेय स्वामी को अवज्ञा करने से अथवा भाई बन्धुओं के श्राप से या गाँवों के प्रति दुष्ट व्यवहार से वैवाहिक कष्ट होता है।

यदि बुध विवाह/सन्तान सुख में बाधक हो, तो बिल्ली को मारने, गछालियों या किसी अन्य प्राणियों के अण्डों को नष्ट करने या छोटे बालक, बालिका के श्राप से या भगवान् विष्णु के क्रोध से विवाह कष्ट होता है। यदि कुण्डली में गुरु (बृहस्पति) विवाह या सन्तान सुख में बाधाकारक हो, तो यह समझना चाहिए कि जातक ने पिछले जन्म अपने कुल गुरु या कुल पुरोहित का अपमान किया है या पूर्व जन्म में फलदार वृक्षों को काटा है।

यदि जन्म कुण्डली में शुक्र के कारण सन्तान सुख में बाधा हो, तो उस व्यक्ति ने किसी फूलों वाले वृक्षों को कटवाया है, या गाय के प्रति कोई पाप किया है, अथवा किसी राधास्त्री के श्राप से ऐसा हुआ है। ऐसी स्थिति में प्रायः यक्षिणी का श्राप समझना चाहिए। यदि जन्म कुण्डली में विवाह या सन्तान भाव शनि के कारण दूषित हुआ है, तो समझिए कि जातक/जातिका ने पीपल के पेड़ कटवाए हैं और यमराज, प्रेत, पिशाच पितरों आदि के श्राप से विवाह या सन्तान कष्ट हुआ है।

यदि विवाह या पंचम में राहु हो, या वह इन भावों के स्वामी को दूषित करता हो, और उसके कारण विवाह या सन्तान सुख में बाधा हो रही हो, तो सर्प के शाप का प्रभाव समझें। यदि केतु के कारण विवाह आदि सुख में कमी हो, तो उसमें हेतु ब्राह्मण का शाप समझना चाहिए। जिस ग्रह के कारण विवाह / सन्तान आदि सुख में कमी आती हो, उस ग्रह सम्बन्धी जप, दान एवं सम्बन्धित दोष का प्रतिकार करना चाहिए। जैसे सूर्य विवाह या सन्तान सुख में बाधक हो, तो अपने पितरों के निमित्त श्राद्ध, तर्पण, दान एवं ब्राह्मण भोजन करवाना चाहिए। अनिष्ट ग्रहों के उपायों सम्बन्धी विस्तृत जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से शीघ्र प्रकाशित होने वाली “अनिष्ट ग्रह और चमत्कारी उपाय” नामक पुस्तक की प्रतीक्षा करें।

विवाह में विलम्ब निवारक विशेष उपाय

हमारे प्राचीन ज्योतिष आचार्यों ने मनुष्य जीवन में मिलने वाले कष्टों एवं प्रतिकूल परिस्थितियों में अनुकूलता लाने के लिए अनेक प्रकार के उपायों को ग्रहण करने के परामर्श दिए हैं, जैसे रत्न धारण करना, श्री भगवत् स्तुति, मन्त्र-जाप, तन्त्र, यन्त्र, शुभमुहूर्त एवं औषधि प्रयोग, व्रतोपासना, दान, हवन-यज्ञादि अनुष्ठान, औषधि स्नान इत्यादि। स्थानाभाव के कारण यहाँ पर सभी सम्भव उपायों का वर्णन करना सम्भव नहीं, तथापि कुछेक प्रयोग देंगे। अधिक जानकारी के लिए उपायों सम्बन्धी हमारी शीघ्र प्रकाशित होने वाली पुस्तक का अध्ययन करें।

प्रयोग (१) : श्री दुर्गा या गौरी के मन्दिर में अथवा अपने घर में किसी पवित्र स्थान पर माता की मूर्ति स्थापित करके उसके सामुद्र शुद्धासन पर बैठकर प्राणायाम, आचमन एवं पवित्रीकरण आदि के मन्त्र पढ़कर शुद्ध चित्त होकर एक माला अथवा कम-से-कम २१ बार निम्नलिखित मन्त्र पढ़ें। पाठ करते समय पास में लाल पुष्प, देसी त्री ज्योत, नारियल, प्रसाद एवं जल से भरी गड़बी पास रखनी चाहिए।

ॐ सर्वं मङ्गल माङ्गल्ये सर्वार्थं साधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते ॥१॥ इसके पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र की भी एक माला का पाठ करना चाहिए। ऐसा नियमित रूप से ३१ दिन तक करें—

मन्त्र—“हे माते ! त्वं शक्तिस्त्वं स्वधा स्वाहा त्वं सावित्री सरस्वती।

पतिं देहि गृहं देहि सन्तानं देहि नमोऽस्तुते” ॥ २ ॥

जप का अनुक्रम बीच में ही छोड़ नहीं देना चाहिए। यदि अस्वस्थता आदि के कारण किसी दिन पाठ न कर सकें, तो आपके स्थान पर आपकी माता, वहन आदि कोई निकटस्थ बन्धु भी कर सकता है। ३१ दिन पूर्ण हो जाने पर उद्यापन के रूप में किसी ब्राह्मण दम्पति को भोजन, मिष्ठान एवं दक्षिणा सहित खिलाना चाहिए। इसी बीच गाँवों को मोटी चापातियाँ, कौओं एवं कुत्तों को तैल से चुपड़ कर चापातियाँ भी डालनी चाहिए। सब कार्य श्रद्धापूर्वक करना चाहिए। भगवती माँ की कृपा से विवाह/सन्तान आदि की कामना अवश्य पूरी होगी। यदि किसी कारणवश विलम्ब रहे, तो उपरोक्त उपाय की पुनरावृत्ति करनी चाहिए।

प्रयोग (२) : ऊपरलिखित द्वितीय (२) मन्त्र के स्थान पर निम्नलिखित प्रचलित मन्त्रों का पाठ भी किया जा सकता है—

(क) ॐ काल्यायनि महामये महायोगिनी अधीश्वरी।

नन्दगोपसुते देवि ! पतिं मे कुरु ते नमः ॥ (भगवत)

(ख) हे गौरी शंकर अर्धाङ्गि यथा त्वं शंकर प्रिया।

तथा मां कुरु कल्याणि कान्तकान्तो सुदुर्लभाम् ॥

इसके अतिरिक्त कई अन्य विशिष्ट उपाय (लड़कों या लड़के के विवाह, सन्तान सम्बन्धी विलम्ब एवं विधवा के निवारण हेतु) हमारी उपायों सम्बन्धी शीघ्र प्रकाशित होने वाली पुस्तक में गंगाकर लाभ उठाएँ।

—पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी

प्राकृतिक नियमों का प्रदर्शक-वास्तुशास्त्र

ईश्वर ने मनुष्य एवं वनचर आदि प्राणियों के सुखों के लिए अपार प्राकृतिक सम्पदाएँ प्रदान की हैं। यदि मनुष्य ईश्वर-प्रदत्त प्राकृतिक सम्पदाओं का विवेकशील होकर प्रयोग करें, तो निश्चय ही निरोग, सुखी एवं सम्यक् हो सकता है। सूर्य, चन्द्र आदि ग्रह तथा वायु, जल, अग्नि, पृथ्वी, आकाश आदि पंचमहाभूत मनुष्य को स्वास्थ्य, दोषार्थ एवं जीवन शक्ति प्रदान करने के लिए परमावश्यक हैं। सूर्य समस्त सृष्टि को ऊर्जा एवं प्रकाश प्रदान करता है। सूर्य के बिना तो मनुष्य-जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। सूर्य के प्रचण्ड प्रकाश में रोगकारी तत्वों को नष्ट करने की विशेष क्षमता होती है। मनुष्य का शरीर भी पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश नामक पाँच महाभूत तत्वों से बना है। शरीर में जब तक इन पाँचों तत्वों का सन्तुलन बना रहता है तब तक मनुष्य मानसिक एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ एवं निरोग रहता है, तथा जब शरीर में इन तत्वों का सन्तुलन बिगड़ जाता है, तब मनुष्य के स्वास्थ्य में भी विकार उत्पन्न होने लगते हैं और वह रुग्ण होने लगता है।

वास्तुशास्त्र प्राकृतिक तत्वों पर आधारित उच्चकोटि का विज्ञान है, जो मानव को पंच महाभौतिक तत्वों में सन्तुलन बनाए रखने की प्रेरणा देता है। वास्तुशास्त्र परोक्ष रूप से प्रकृति के नियमों का अनुसरण करता है। गुरुत्वाकर्षण एवं चुम्बकीय शक्ति, विद्युत्-तंत्रों का प्रवाह, जल एवं वायु प्रवाह, पर्यावरण का प्रभाव, सूर्य राशियों का प्रवाह, दिशाओं का महत्व आदि पर भी यह शास्त्र स्पष्टतः संकेत करता है। चढ़ते हुए सूर्य की किरणें हमारे स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं, इसके पीछे पूर्व एवं ईशान को अधिक खुला रखने का नियम काम करता है, जिससे सौर ऊर्जा अधिकतम रूप से गृह और उसके स्वामी को मिल सके। वास्तुशास्त्र में भूमि, जल, अग्नि आदि पाँच महाभूतों के महत्त्व को उसके नियमों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है—

1. भूमि—भूमि का कारक मंगल ग्रह है। किसी जातक की कुण्डली में मंगल, चतुर्थेश चतुर्थ भाव एवं लग्नेश ग्रह वलान्वित हो, तो जातक को मंगल की दशा में भूमि एवं मकान का सुख अवश्य प्राप्त होता है।

भूमि की परीक्षा—ग्रहणीय भूमि की खुदाई के समय पत्थर, ईंट, ताम्र आदि धातु की श्रादि होना शुभ माना गया है। जिस भूमि में गड्ढा खोदने पर कोयला, भस्म, तड़्डो, भूसा, कपाल, केश, दीमक- (चिऊटी), अण्डे, जली हुई लकड़ी निकले उस भूमि पर मकान बनाकर रहने से रोग होते हैं तथा आयु का हास होता है। इसके अतिरिक्त चूहों के बिल वाली, बान्नी वाली, फटी हुई, ऊबड़-खाबड़ गड्ढों वाली टीलों वाली, भूमि त्याग देनी चाहिए।

गृह का आकार—चौकोर और आयताकार मकान उत्तम होता है। आयताकार मकान में चौड़ाई की दुगुनी से अधिक लम्बाई नहीं होनी चाहिये। तीन या छः कोन वाला घर आयु का क्षयकारक है। पाँच या उससे अधिक कोन वाला घर सन्तान और रोग उत्पन्न करता है। विशेष रूप से घर को किसी एक ही दिशा में भागे नहीं बढ़ाना चाहिए।

1. जल—जल की निकाली न प्रवाह के लिए उत्तर-पूर्व (North-East) की दिशा-कोण

सर्वथा उपयुक्त व शुभ होता है। कुआँ, ट्यूबवेल, पम्पिंगसेट, रिक्विंगपूल, नल आदि उत्तर-पूर्व में होना चाहिए। स्नानघर का जल भी उत्तर-पूर्व में गिरना चाहिए। वर्षा के जल का प्रवाह भी उत्तर-पूर्व में होना चाहिए। विशेष रूप से यदि उपयोग में आने वाला स्वच्छ जल दिन में सूर्य की किरणों से एवं रात्रि में चन्द्रमा की किरणों से प्रभावित होता है तो इस तरह के जल के उपयोग से निरोगता प्राप्त होती है।

अग्नि—हमारे प्राचीन ग्रन्थों में अग्नि को शुभ कार्यों में एक विशिष्ट स्थान प्रदान किया गया है। प्रत्येक शुभ कार्य में हवन का प्रावधान है। अग्नि के आविष्कार उपरान्त मानव अपने भोजन को पका कर खाने लगा है। अतः मकान में अग्नि से सम्बन्धित कार्य अग्नेय कोण अर्थात् दक्षिण-पूर्व (South-East) में करना चाहिए। रसोईघर में चूल्हा, फायर-व्लेस आदि अग्नेय कोण में रखना चाहिए। मकान में विद्युत् का मेन-मीटर भी इसी कोण में लगाना चाहिए।

वायु—वायु का प्रवेश भवन में उत्तर-पूर्व (North-East) से होना चाहिये। दरवाजे, खिड़कियाँ, रोशनदान, कूलर, ए.सी., बरामदा, बालकनी आदि हवा आने के साधन इसी दिशा में होने चाहिये।

आकाश—नैसर्गिक ऊर्जाओं का प्रभाव निर्वाह रूप से मिलने के लिए खुले आकाश का महत्त्व है। अतः मकान में खुला आँगन, लॉन व वगीचे का महत्त्व इसके अन्तर्गत आता है। आँगन या चौक के रूप में खाली जगह रखकर आकाशीय नैसर्गिक ऊर्जाओं का लाभ प्राप्त करना चाहिये।

—गृह निर्माण में वास्तु नियम—

मकान के अन्दर किस-किस स्थान का उपयोग किस-किस प्रयोजन के लिए करना चाहिए। इसका भी वास्तुशास्त्र में निर्देश है।

| वायव्य | उत्तर | ईशान | पश्चिम | पूर्व |
|--|-------------|------------|--------|-------|
| | | | | |
| अन्न भण्डार अतिथि गृह, परगृह, शौचालय, स्नानाघर | मुख्य द्वार | पूजा-स्थल | | |
| भोजन | शयनकक्ष | मुख्यद्वार | | |
| शौचालय | शयनकक्ष | रसोई | | |

नैऋत्य दक्षिण आग्नेय

शौचालय नहीं होना चाहिए। स्नानघर के जल का वहाव उत्तर-पूर्व में होना चाहिए। गीजर लगाना हो तो दक्षिण-पूर्व कोण में लगाया जा सकता है क्योंकि यह आग्नेय कोण है। गीजर का सम्बन्ध अग्नि से है।

रसोई घर—रसोई के लिए आग्नेय कोण (पूर्व-दक्षिण) सर्वश्रेष्ठ है। अतः रसोई मकान के दक्षिण-पूर्व कोण में होनी चाहिए। रसोई में भी जो दक्षिण-पूर्व का कोना हो वहाँ गैस-सिलिण्डर या चूल्हा या स्टोव या माइक्रोवेव आदि रखा जाना चाहिए।

भोजन कक्ष—भोजन यदि रसोईघर में न किया जाये तो इसकी व्यवस्था ड्राइंग रूम में की जाती है। अतः ड्राइनिंग टेबल ड्राइंग रूम के दक्षिण-पूर्व में रखना चाहिए।

बैठक (Drawing Room)—वर्तमान समय में ड्राइंगरूम का विशेष महत्त्व है। इसमें फर्नीचर दक्षिण और पश्चिम की दिशाओं में ही रखना चाहिए। उत्तर और पूर्व की तरफ खुली जगह छोड़नी चाहिए।

सामान्य कक्ष (General Room)—इसका निर्माण उत्तर-पश्चिम में कराना चाहिए।

अतिथि कक्ष—यदि अतिथि कक्ष का निर्माण किया जाए तो उत्तर-पश्चिम दिशा उपयुक्त है।

सीढ़ी (Staircase)—सीढ़ियाँ उत्तर-पूर्व का छोड़कर अन्य दिशाओं में सुविधानुसार बनाई जा सकती हैं।

किन्तु पश्चिम या उत्तर दिशा इसके लिए अभीष्ट हैं। सीढ़ियों का निर्माण विषम संख्या (Odd Numbers) में होना चाहिए एवं चढ़ते समय सीढ़ियाँ हमेशा दाईं ओर मुड़नी चाहिए।

—वास्तु दोष निवारण हेतु चमत्कारी उपाय—

- (1) ईशान दिशा में पति पत्नी को शयन करने से रोग होना अवश्यम्भावी है।
- (2) सदा पूर्व या दक्षिण की तरफ सिर करके सोना चाहिये। उत्तर या पश्चिम की तरफ सिर करके सोने से शरीर में रोग होते हैं तथा आयु क्षीण होती है।
- (3) दिन में उत्तर की ओर तथा रात्रि में दक्षिण की ओर मुख करके मल-मूत्र का त्याग करना चाहिये। दिन में पूर्व की ओर तथा रात्रि में पश्चिम की ओर मुख करके मल-मूत्र का त्याग करने से आध्यासीसी रोग होता है।
- (4) दिन के दूसरे और तीसरे पहर यदि किसी वृक्ष, मन्दिर आदि की छाया मकान पर पड़े तो वृद्ध, रोग उत्पन्न करती है।
- (5) एक दीवार से मिले हुए दो मकान यमराज के समान गृहस्वामी का नाश करने वाले होते हैं।
- (6) किसी मार्ग या गली का अन्तिम मकान कष्टदायी होता है।
- (7) दीपक (बल्ब आदि) का मुख पूर्व अथवा उत्तर की ओर रहना चाहिये।
- (8) रसोईघर, शौचालय तथा पूजा स्थान एक-दूसरे के पाग-पास न बनायें।
- (9) रसोईघर मुख्य द्वार के ठीक सामने नहीं होना चाहिये।
- (10) घर में नुट्टे हुए दर्पण, खाट, फर्नीचर और अन्य दृष्ट-फुट सामान नहीं होना चाहिए।

रखना चाहिए।

(12) विद्यार्थी उत्तर अथवा पूर्व दिशा की ओर मुंह करके अध्ययन करें।

(13) घर में अखण्ड रूप से श्री रामचरितमानस के नौ पाठ करने से वास्तुजनित दोष दूर हो जाता है।

(14) घर में नौ दिन तक अखण्ड भगवन्नाम-कीर्तन करने से वास्तुजनित दोष का निवारण हो जाता है।

(15) मुख्य द्वार पर गजलक्ष्मी की मूर्ति लगाना, मुख्य द्वार के ऊपर सिन्दूर से मूर्खितक का चिन्ह बनाना। यह चिन्ह नौ अंगुल लम्बा तथा नौ अंगुल चौड़ा होना चाहिये। घर में जहाँ-जहाँ वास्तुदोष हो, वहाँ-वहाँ यह चिन्ह बनाया जा सकता है।

(16) अमावस्या को गाय के गोबर से निर्मित कण्डे को पूर्णतः जलाकर हवन कुण्ड या किसी पात्र में रख लें। फिर घर का प्रत्येक सदस्य निम्न 8 पदार्थों के मिश्रण की 5-5 आहुतियाँ दें। इस से परिवार में मुख, स्वास्थ्य एवं समृद्धि आती है। घर में ऋणायनों को वृद्धि होती है। धनात्मक परिणाम शीघ्र दिखाई लगते हैं।

सामग्री—देसी गौधृत, चावल, काले तिल, जौ, गुड़, चंदन का चुरा, देसी कपूर, गुग्गुलु।

विशेष ध्यान दें—आहुतियाँ देने से पूर्व एवं पश्चात् हाथ जोड़कर वास्तु देवता, स्थान देवता, अपने कुल देवी-देवता को प्रणाम कर कल्याण के लिए प्रार्थना करें।

(17) केला-तुलसी के साथ सभी दिशाओं में शुभ, आम का पेड़ पूर्व दिशा में, पीपल पश्चिम में तथा गुलाब का पौधा ईशान कोण में अशुभ परन्तु अन्य दिशाओं में शुभ होता है।

(18) घर में पूजा-आराधना के लिए ईशान कोण में कक्ष बनाना चाहिए। विश्वकर्मा प्रकाश में कहा गया है—“ईशान्या देवता गेहम्”।

शिवावरात्रि व्रत कथा (भाषा टीका)

शिवरात्रि पूजन कैसे करें ?

श्रीमहाशिवरात्रि का व्रत मय व्रतों में उत्तम एवं कल्याणकारी है। जैसे गंगा जी के समान कोई तीर्थ नहीं है। भगवान् शंकर के समान कोई दूसरा देवता नहीं है तथा शिवरात्रि से बढ़कर दूसरा कोई व्रत एवं तप नहीं है।

व्याख्याकार पं. पन्ना न्याल द्वारा प्रणीत इस महाशिवरात्रि व्रत कथा में माहात्म्य, आध्यात्मिक रहस्य एवं सम्पूर्ण पूजन विधि, उद्यापन, व्रत कथा, रत्नाटक, शिव पंचाक्षर, शिव चालीसा, शिव पंडक्षर स्तोत्र, शिवमानस पूजा, आरती सहित बहुत सरल एवं सुकोधगम्य ढंग में प्रस्तुत की गई है जिसमें शिव भगन मय शिवरात्रि पूजन कर पुण्य लाभ ले सकें।

पूजनक स्वर्गदत्त समय व्याख्याकार पं. पन्ना लाल ज्योतिषी का नाम तथा जनगल बुक डिपो का पता अवश्य देवें। अथवा मोक्ष बो.पो. द्वारा मंगलार्ग। मूल्य 25/-। डाक नमय अलग।

कालसर्पयोग-अष्टिष्ट निवारक कुछ उपाय

जन्म कुण्डली में यदि राहु और केतु के बीच एक ही तरफ में सभी सातों ग्रह (सू, चं, मं, बु, शु, श.) पड़ जाएँ, तो कालसर्प नामक योग बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक (पुरुष अथवा स्त्री) को व्यवसाय, धन, परिवार एवं सन्तानादि के कारण विविध परेशानियों एवं दुःखों से पीड़ित रहना पड़ता है—अग्रे वा चेत पृष्ठतोऽप्येकशरर्ष भानाष्टके राहुकेत्वो न खेटः।

योगः प्रोक्तः कालसर्पश्च तस्मिन्नातो जाता वाऽथपुत्रन्मियात ॥

कालसर्प योग से पीड़ित कुछ उल्लेखनीय महत्त्वपूर्ण कुण्डलियाँ इस प्रकार से हैं—स्वतन्त्र भारतवर्ष में पाकिस्तान की जन्म कुण्डली, पं० जवाहर लाल नेहरू, पाकिस्तान के भूतपूर्व शासक जुल्फकार भट्टो, हिटलर (जर्मनी), सुशी लतामंगेशकर इत्यादि। इनकी कुण्डलियों का विश्लेषात्मक अध्ययन ज्योतिष तत्त्व (फलिट खण्ड) में पढ़ें।

वास्तव में राहु-केतु छाया ग्रह हैं। राहु का नक्षत्र भरणी है एवं इसका देवता 'काल' है। केतु का नक्षत्र अश्लेषा है एवं इसके देवता सर्प हैं। कालसर्प योग के प्रभाव के कारण प्रत्येक कार्य में विघ्न-वाधाएँ तथा आर्थिक उन्नति में बाधाएँ रहती हैं। परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि कुण्डली में केवल कालसर्प योग हो प्रभावित कर रहा हो। कुण्डली में बैठे अन्य शुभ योग जातक को आश्चर्यजनक सफलताएँ दिला सकता है। कालसर्प योग अत्यन्त समृद्ध साधन सम्पन्न अमीर व्यक्ति की कुंडली में भी हो सकता है। अथवा दीन, अभावग्रस्त गरीब व्यक्ति की कुण्डली में भी हो सकता है। मुख्यतः इस योग के प्रभावस्वरूप मनुष्य अपनी अन्तर्भूत शक्तियों की पूर्णतया उपयोग नहीं कर पाता अथवा सब सुख-साधन सम्पन्न होते हुए भी मानसिक तनाव एवं असन्तोष बना रहता है तथा अज्ञातभय एवं असुरक्षा की भावना व्याप्त रहती है।

लक्षण—इस योग के कारण जातक को स्वर्णों में सर्प दिखाई देते हैं, पानी दिखना, अपने-आप को उड़ते हुए देखना, परिवार के किसी सदस्य पर विपत्ति आना, पितृशिव देखना, सर्प और नेवले की लड़ाई दिखने तो निश्चय ही ग्रह-कलह हो सकता है। कालसर्प योग का उपाय कर लें। ये सब लक्षण हैं कि आपकी कुण्डली में कालसर्प या आंशिक कालसर्प योग है। आप अपनी कुण्डली किसी विद्वान् ज्योतिषी को दिखाकर उपाय करें।

कालसर्प दोष केवल ग्रह-जनित पीड़ा है, इसलिए इसकी शान्ति मुख्य रूप से—(१) द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से किसी एक ज्योतिर्लिंग के निकट (२) क्योंकि इस योग के अधिष्ठाता श्री महाकाल ही हैं। अतएव यदि प्रसिद्ध महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग एवं सिद्ध शक्ति पीठ, कलिया नाग के निवास स्थल पुण्य सलिला क्षिप्रा गंगा के तट पर उज्जैन नगर में है। (३) प्रयागराज (४) नासिक में (५) अथवा यदि सम्भव न हो तो शिव मन्दिर में द्वादश ज्योतिर्लिंग का ध्यान करते हुए करें।

कालसर्प दोष की शान्ति के लिए मुख्य रूप से (१) ग्रह शान्ति (२) सर्प दोष (३) पितृ दोष शान्ति एवं नागबलि एवं शिव पूजन वैदिक पुराणोक्त विधि से किसी योग्य ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। (४) विधिपूर्वक महामृत्युञ्जय का जप भी करें।

यदि कुण्डली में काल सर्पयोग पड़ा हो, तो निम्नलिखित किञ्चित् उपाय करने शुभ एवं कल्याणकारी होंगे—(१) कालसर्प की अष्टिष्ट शान्ति के लिए शिव मन्दिर में सवा लाख उँठ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करना तथा पाठोपरान्त रुद्राभिषेक करवाने का विशेष महत्त्व है। साथ ही शिवलिंग पर चांदी का सर्प गुगल-नाग स्तोत्र एवं नाग पूजनादि करके चढ़ाना शुभ होगा।

नाग गायत्री मन्त्र—ॐ नव कुलाय विद्महे विपदाय धीमहि तन्नो सर्पः प्रचोदयात् ॥

(२) प्रत्येक शनिवार एक नारियल को तैल एवं काले तिलों का तिलक लगाकर, मोली लेपेत्कर अपने शिर से तीन वाग घुमा कर उँठ भ्रां भ्रां भ्रां सः राहवे नमः मन्त्र कम-से-कम तीन बार पढ़कर चलते पानी में वहा देंगे—ऐसे कम-से-कम पाँच शनिवार करें।

(३) प्रत्येक शनिवार कुत्तों को दूध और चपाती डालनी तथा गाँओं, कौओं को दान के छोटें देकर रसोई की प्रथम चपातियाँ डालना शुभ है।

(४) कालसर्प योग के कारण यदि वैवाहिक जीवन में बाधा आती हो, तो जातक पत्नी के साथ दोबारा विवाह करें एवं घर के चौखट द्वार पर चांदी का स्वस्तिक चिन्ह बनवा कर लगावाएँ।

(५) घर में मयूर पंख का एंखा पवित्र स्थान पर रखें तथा भावान् शिव का ध्यान करते हुए प्रातः उठते ही तथा सोने से पूर्व मयूर पंखें द्वारा हवा करें।

(६) प्रत्येक संक्रान्ति को गंगा जल सहित गोमूत्र का छिड़काव घर के सभी कमरों में करें।

(७) कालसर्प योग शान्ति के लिए नवनाग देवताओं के नाम का उच्चारण करना चाहिए—अनंत वासुकि शेष पद्मानाभश्च च कंबलम्।

शंखपालं ककौटकं कालियं तक्षकं तथा ॥

एतानि संस्मरेन्नित्यं आयुः कामार्थं सिद्ध्ये।

सर्पदोष क्षयार्थं च पुत्रपौत्रान् समृद्धये ॥

तस्मै विषभयं नाति सर्वत्र विजयी भवेत् ॥

(८) महाकुम्भ पर्व के अवसर पर प्रमुख स्नान करें और कुम्भ में स्थित शिव मन्दिर में जाकर विधिपूर्वक पूजन करें। चांदी के बने नाग-नागिन के कम-से-कम ११ जोड़ों को प्रतिदिन शिवलिंग में चढ़ाएँ तथा महादेव से इस कुयोग से मुक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करें।

(९) सोना—७ रत्न, चांदी—१२ रत्न, ताँबा—१६ रत्न—ये तीनों मिलाकर सर्पकार अंगुली अनामिका अंगुली में धारण करने से बर्धित लाभ प्राप्त होता है। जिस दिन धारण करें, उस दिन राहु की सामग्री का आंशिक दान भी करना चाहिए।

(१०) नागपंचमी का व्रत करें तथा नवनाग स्तोत्र का पाठ करें। 'अनन्त चतुर्दशी' का व्रत भी विधिपूर्वक रखें।

(११) प्रत्येक बुधवार को काले वस्त्र में उड़द या मूँग एक मुट्ठी डालकर, राहु का मन्त्र जाप कर किसी भिखारी को देंगे। यदि दान लेने वाला कोई नहीं मिले तो वहले पानी में उस अन्न को छोड़ देना चाहिए। इस प्रकार ७२ बुधवार करते रहने से अवश्य लाभ होता है।

(१२) यदि किसी स्त्री की कुंडली रस योग से दूषित है तथा संतति का अभाव है, पूजन-विधि नहीं करावा सकती तो किसी अश्वत्थ (वट) के वृक्ष से नित्य १०८ प्रदक्षिणा (घेरें) लगाने चाहिए। तीन सौ दिन में जब २८००० प्रदक्षिणा पूरी होगी तो दोष दूर होकर स्वतः ही संतति की प्राप्ति होगी।

(१३) इसके अतिरिक्त महाकाल रुद्र स्तोत्र, मनसादेवी नाग स्तोत्र, महामृत्युञ्जय आदि स्तोत्रों का विधि-विधान से पूजन, हवन करने से कालसर्प दोष की शान्ति हो जाती है।

कालसर्प दोष की शान्ति के लिए हमारी पुस्तक की प्रतीक्षा कीजिए।

पार्व-त्यौहान्शी वकी तान्तीरवी र्गी तान्तीरवी वर्यो ?

लेखक - पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी, गणितकर्ता पंचांग दिवाकर, जालन्धर

किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति की महक वहाँ के लोगों द्वारा परम्परा से मनाए जाने वाले पर्व-त्यौहारों से अवश्य प्रतिभासित होती है। भारतवर्ष में मनाए जाने वाले अधिकांश पर्व-त्यौहारों से भारत की समृद्ध एवं गरिमामयी सभ्यता का इतिहास आज भी अधिव्यजित होता है। यह अत्यन्त खेद का विषय है कि भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की गरिमा के प्रतीक पर्व-त्यौहारों के सम्बन्ध में कई बार मतान्तर हो जाने से पर्व-त्यौहारों की तिथियों एवं तारीखों के बारे में भ्रान्तियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। फलस्वरूप, धर्म परायण लोगों के मन में कई प्रकार शकआँ पैदा होने लगती हैं, जिससे उनकी श्रद्धा एवं आस्था को भी ठेस पहुँचती है।

अधिकांशतः लोगों को पर्व-त्यौहारों एवं छुट्टियों सम्बन्धी जानकारी अलग-अलग प्रांतों से छपने वाले जन्त्री/पंचांगों, समाचार-पत्र, मैगजीन, कैलेंडर, डायरियाँ, तिथि-पत्र, रेडियो, टेलीविजन आदि संचार-साधनों द्वारा प्राप्त होती है। केन्द्रिय एवं प्रांतीय सरकारों द्वारा उद्घोषित पर्व-त्यौहारों एवं सरकारी छुट्टियों की घोषणा राष्ट्रीय कैलेंडर समिति (National Calendar Committee) द्वारा प्रस्तावित सूचि के अनुसार की जाती है। इनमें राष्ट्रीय स्तर के पर्व-जैसे 15 अगस्त, 26 जनवरी, 2 अक्टूबर आदि छुट्टियों की तारीखों के सम्बन्ध में तो कोई मतभेद नहीं होता है, परन्तु हिन्दुओं के धार्मिक पर्व-त्यौहारों की तारीखों के सम्बन्ध में कई बार मतान्तर एवं भेद की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। मेरे विचारानुसार पर्व-त्यौहारों की तारीखों में भिन्नता के कई कारण होते हैं। इनमें से कुछ निम्नलिखित कारण विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं—

- (1) देश में छपने वाली विभिन्न जन्त्री पंचांगों की तिथ्यादि पंचांग-गणित में अन्तर।
- (2) पर्व-त्यौहारों के सम्बन्ध में कतिपय कैलेंडरों, मैगजीन आदि में छपने वाली अपुष्ट जानकारी।
- (3) प्राचीन आचार्यों के वचनों में एकरूपता का अभाव।
- (4) अक्षांशरेखांश भेद के कारण विभिन्न प्रांतों के स्थानीय सूर्योदय, चन्द्रोदय, अस्तादि में अन्तर।
- (5) कुछ धार्मिक सम्प्रदायों में मतान्तर होना।
- (6) सरकारी तन्त्र का प्रभाव।

प्रस्तुत लेख में मैं प्रथम (1) कारण का ही विशेष रूप से विवेचन करना चाहूँगा, अन्य कारण तो प्रत्यक्षतः तथ्याधारित हैं।

(1) तिथ्यादि पंचांग-गणित में अन्तर—देश में छपने वाली विभिन्न प्रकार की पंचांग/जन्त्रियाँ, कैलेंडरों/डायरियों इत्यादि में तिथ्यादि के मान-में कई बार भारी अन्तर पाया जाता है। विशेषकर अप्रामाणिक एवं अस्तरीय पंचांग-गणित को आधार मानकर छपने वाली जन्त्रियों, पंचांगों, डायरियों अथवा कैलेंडरों में तिथि/नक्षत्रों एवं पर्व-त्यौहारों सम्बन्धी तिथियों में भारी विसंगतियाँ एवं अशुद्धियाँ पाई जाती हैं। उपलब्ध जानकारी के अनुसार भारतवर्ष में आजकल प्रतिवर्ष लगभग 150 पंचांग जन्त्री छप रहे हैं। तिथि-कैलेंडरों की संख्या तो इससे भी अधिक ही होगी। इनमें अधिकांश आधुनिक पंचांगकर्ता चित्राप्रभोय दृक् गणिताधारित निरयण पंचांग की गणना अनुसार पंचांग गणित करते हैं। यह गणित शास्त्र अनुमोदित होने के साथ-

साथ प्रत्यक्षतः दृश्य होने से विज्ञान सम्मत भी है। आधुनिक सूक्ष्म संस्कारों पर आधारित कम्प्यूटर प्रक्रिया (Computer Programming) द्वारा तैयार किए जाने वाले पंचांगों के तिथि, नक्षत्र, योग, ग्रह के राशि संचार, भागांश, सूर्य-चन्द्रोदयास्तादि तथा कम्प्यूटरीकृत विन्तु जम्पपत्री की रचना भी भारतीय दृग्गणित पद्धति द्वारा ही जाती है।

परन्तु यह अत्यन्त खेद का विषय है कि हमारे देश के कतिपय पंचांगकार तथा रामायण, महाभारत कल्याण आदि उच्चकोटि के धार्मिक साहित्य एवं पुराण, उर्गनयद आदि वैदिक ग्रन्थों के प्रकाशक (गीता प्रैस, गोरखपुर) भी प्राचीनता के मोहवश अवैज्ञानिक एवं अशुद्ध पंचांगगणित का ही आश्रय ले रहे हैं। उनके इस कृत्य से पर्व त्यौहारों की तारीखों में प्रतिवर्ष कहीं न कहीं भेद उत्पन्न हो जाता है जिससे सामान्य लोगों में भ्रान्तियाँ पैदा होती हैं।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य—आज से लगभग नब्बे (90) वर्ष पूर्व भारतवर्ष में अधिकांश पंचांगकर्ता पौराणिक सिद्धान्त ग्रन्थों (सूर्य सिद्धान्त, आर्य-सिद्धान्त, मकरन्द सा. ब्रह्म सिद्धान्त शिरोमणि, ग्रह-लाघव आदि) में प्रतिपादित सूत्रों के अनुसार तिथ्यादि पंचांग-गणित का कट-साध्य कार्य करते थे। विभिन्न स्थानीय पंचांगों के तिथ्यादि-मान में भी अन्तर रहते थे। परन्तु 19वीं शताब्दी में नाभकीय विज्ञान (Spherical Science) एवं गणितीय क्षेत्रों में उत्तरोत्तर उन्नति के साथ-साथ सूर्यादि ग्रहों की गत्यादि के सम्बन्ध में भी अनेक संशोधनात्मक प्रयास हुए हैं। उदाहरणस्वरूप सूर्य सिद्धान्त द्वारा प्रतिपादित वर्षमान तथा आधुनिक वैधसिद्ध अनुसन्धान द्वारा प्रमाणित वर्षमान में 8 पल एवं 37 विपलों, अर्थात् लगभग साढ़े तीन मिंट, 3-1/2 मिन्टों का अन्तर प्रतिवर्ष रहता है, जिस कारण प्राचीन सूर्य सिद्धान्तीय वर्ष प्रवेश सारिणी तथा आधुनिक वैध सिद्ध सूक्ष्म सारिणी द्वारा वर्ष लगनों में अन्तर आ जाना स्वाभाविक ही है। आधुनिक कम्प्यूटरों द्वारा निर्मित वर्ष कुण्डलियाँ भी नवीन वैध सिद्ध संशोधित सिद्धान्त की परिपुष्टि करती हैं।

मानवकृत ज्ञान-प्रशाखा के प्रत्येक क्षेत्र में युग एवं परिस्थितियों के अनुसार सुधार एवं यथोचित संस्कारों की सम्भावना रहती है। गणित ज्योतिष के क्षेत्र में भी समय के भेद एवं काल-गति के भेद से ग्रहों के गणित में थोड़ा-थोड़ा अन्तर पड़ता जाता है। 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ से लेकर पाणचात्य एवं भारतीय वैज्ञानिकों ने आधुनिक कम्प्यूटरीकृत यन्त्रों की सहायता से अन्तरिक्ष एवं ग्रह विज्ञान के क्षेत्रों में जो आश्चर्यजनक प्रगति की है, उसका लाभ पंचांग-गणित को भी मिला है। इस सम्बन्ध में भारतीय गणिताचार्य एवं विद्वानों ने भी पंचांग-गणित की प्रक्रिया में वैध-सिद्ध दृक्-तुल्य संस्कार (संशोधन) करके भारतीय पंचांग पद्धति को वैज्ञानिक दृष्टिकोण दिया है। इनमें पं. सुधाकर द्विवेदी, पं. बाणदेव शास्त्री, लोक मान्य तिलक, पं. वैकंठेश केसरकर, पं. केरोपन्त आदि विद्वानों के नाम विशेषतौर पर उल्लेखनीय हैं। उनके मतानुसार भी सूर्य-चन्द्रादि ग्रहों के संचार, तिथि, नक्षत्र आदि भोग्य काल दृक् तुल्य होना ही श्रेष्ठ और शास्त्र सम्मत है। इस सम्बन्ध में शास्त्र प्रमाण की उद्धृत किए जाते हैं, जैसे—

नैवेद्यः स्याद् ग्रहणादि द्रुक्सममिमं प्रोक्ता मया सा तिथिः ।

ग्राह्या मंगल-धर्म निर्णया विधावेष्टा यतो दृक् समा ॥ (ति.चि.) अन्येऽपि—

यास्मिन् पक्षे येन काले दृश्यते गणितैक्यम् । तेन पक्षेण ते कार्ये गृहास्तत् समयोद्भवः ॥

(बह्म सि.) सिद्धान्त शिरोमणि, वराहः नारद-विष्णु आदि पुराणों में भी सूर्य, चन्द्रमा को दृक्बुल्य स्पष्ट करके दृक् तिथियों द्वारा ही धार्मिक मुहूर्तों एवं पूर्व-त्यौहारों का निर्णय करना शास्त्र-सम्मत माना गया है ।

आज के वैज्ञानिक युग में पंचाँग-गणित में तिथि, नक्षत्रों एवं सूर्य-चन्द्रादि ग्रहों की संचार गति के सम्बन्ध में घण्टों एवं दिनों का अन्तर पड़ना अत्यन्त आश्चर्य की बात है तथा एक नैतिक अपराध भी कहा जा सकता है । सूर्य-चन्द्रमा के 12 अंशत्मक पूर्वापर अन्तर को ही एक तिथि का मान कहते हैं । पूर्णिमा, प्रतिपदा..... चतुर्थी आदि तिथियों के अंशत्मक अन्तर को आधुनिक वेध-सिद्ध यन्त्रों द्वारा घण्टा-मिनटाल्मक सूक्ष्म रूप से प्रमाणित किया जा सकता है । इसी कारण सूक्ष्म दृक् गणित द्वारा निर्मित भारत की किसी भी मानक (Standard) पंचाँग में दिए गए पूर्णिमा आदि तिथि के मान, भा. स्टैं. या. में विश्व के किसी भी देश के स्टैंडर्ड अन्तर का संस्कार करके तिथि का स्टैंडर्ड मान अभीष्ट देश के समय में जान सकते हैं । उदाहरण-स्वरूप पंचाँग दिवाकर (2061) के पंचाँग में 26 नवंबर, 2004 को पूर्णिमा समा. के घण्टा-मिनट, 25-38 में से यदि 5 घं. 30 मि. (स्टैंडर्ड अन्तर) घटा दें, तो हमें इंग्लैण्ड के स्टैं. टा. में 20 घं. 08 मि. पर पूर्णिमा समाप्ति टाइम प्राप्त होगा । ऐसे हमने Raphael's की Astronomical Ephemeris's 2004 से बहुत सी तिथियों का मिलान करके देखा है । ध्यान रहे यह ऐफिमेरिस Greenwich Observatory के दृक् बुल्य सिद्धान्तों के अनुसार निर्मित होती है । लिखने का तात्पर्य है कि जो पंचाँग-गणित विश्वस्तरीय ग्रहण की जाती है । जिस दृक् बुल्य सूक्ष्मगणित को भारत सरकार के तत्त्वावधुषम में 13 भाषाओं में छपने वाली राष्ट्रीय पंचाँग ने मान्यता दी है । N.C. Lahiri (Calcutta), बम्बई (महाराष्ट्र), मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश (वाराणसी), राजस्थान, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा आदि से छपने वाली अनेक मर्धन्य एवं पंचाँगकारों ने भी जिस दृक्बुल्य पंचाँगगणित को श्रेष्ठ, प्रामाणिक एवं शास्त्रसम्मत स्वीकारा है । इन सभी तथ्यों की अनदेखी करते हुए अब भी कुछ पण्डित महोदय अप्रत्यक्ष एवं स्थूलगणित को आर्षगणित बतलाकर मकरन्द, करणकुतूहल, सूर्य सिद्धान्त, ग्रहलाघव आदि के सूत्रों के आधार पर अज्ञानतावश प्राचीन एवं वृत्तिपूर्ण पंचाँग-गणित से तिथियों एवं पूर्व-त्यौहारों का प्रणयन कर रहे हैं । इससे धर्म-परायण लोग भ्रमित एवं गुमराह होते हैं । राजस्थान एवं उत्तरप्रदेश (वाराणसी, दिल्ली, गोरखपुर आदि) में छपने वाले कतिपय पंचाँग अभी भी प्राचीन एवं वृत्तिपूर्ण पंचाँग-गणित का अनुसरण कर रहे हैं । जैसे कि हमारे सभी सुविज्ञ पाठक जानते ही हैं कि भारतवर्ष के आंध्रकाश पूर्व-त्यौहार चान्द्र-तिथियों एवं नक्षत्रों पर ही आधारित होते हैं । अतएव जन्त्री / पंचाँगों, कलेंडरों इत्यादि में वर्णित यदि तिथि, नक्षत्रों की गणित में अन्तर होगा, तो हमारे पूर्व-त्यौहारों की तारीखों में भी अन्तर पड़ना स्वाभाविक है ।

उदाहरणस्वरूप गीता प्रेस गोरखपुर से छपने वाली धार्मिक पत्रिका "कल्याण" जिसमें अनेक वर्षों से पूर्व-त्यौहारों सम्बन्धी स्थूल एवं वृत्तिपूर्ण पंचाँग-गणित ग्रहण करने से बहुत बार पूर्व-त्यौहारों में अन्तर पड़ जाता है । उदाहरणतया सन् 2003 ई० में उनकी पत्रिका एवं दैनिकी डायरी में अन्य बहुत-सी अशुद्ध तिथियों के अतिरिक्त करवा चौथ और आश्विन शुक्ल नवरात्रारम्भ

की तारीखों में भी एक दिन का विशेष अन्तर पाया गया था । सन् 2004 ई. में भी शारदीय नवरात्रारम्भ 14 अक्टूबर, 04, गुरुवार की बजाए 15 अक्टूबर, शुक्रवार को दर्शाया गया है । इसका मुख्य कारण है तिथि सम्बन्धी अशुद्ध गणित का प्रणयन ।

उदाहरणस्वरूप—प्रस्तुत मासिक 'कल्याण' पत्रिका में तिथि / नक्षत्रों के मान में अनेक स्थलों पर भारत की किसी मानक (Standard) पंचाँग से 2 से 5 घण्टों का अन्तर भी पाया जाता है । जैसे 8 अक्टूबर, 2004 ई. को दशमी तिथि किसी भी मानक पंचाँग में 8.50 घं० मि० तक विद्यमान है, परन्तु 'कल्याण' के व्रतोत्सव पर्व के पृष्ठ ८७१ पर यह तिथि ६.४१ घं० मि० तक है । इस प्रकार 2 घण्टे, 9 मिनट का अन्तर है । इसी भांति 8 नवंबर की सभी मानक पंचाँगों (पंचाँग दिवाकर, राष्ट्रीय 23.43 पंचाँग आदि) में रमा एका० अर्धरात्रि 26.43 घं० मि० तक है जबकि 'कल्याण' में रात्रि 23.43 (११.३४) तक होने से दोनों का अन्तर ३ घण्टे, 9 मिनट का अन्तर हुआ । इसी भांति नक्षत्रों के मान में भी भारी अन्तर परिलक्षित होता है । जैसे १५ नवंबर, 0४ को मूला नक्षत्र के मान में ४ घण्टे, २१ मिनट का, १६ नव. 0४ को पूषा में ४ घण्टे, ५४ मि० का, १७ नव. 0४ को उषा में किसी भी मानक पंचाँग की ५ घण्टे, ९ मि० का अन्तर पड़ गया है ।

१६ अक्टूबर, २००४ को पड़ने वाली तुला संक्रान्ति में तो १३ घण्टे, २१ मिनट का अन्तर पड़ा हुआ है । निरयण-तुला संक्रान्ति राष्ट्रीय पंचाँग सहित सभी मानक पंचाँगों ने १६ अक्टूबर को 28 घं०, 34 मि० तक विद्यमान है, जबकि 'कल्याण' पत्रिका में 17 अक्टूबर को सायं 17 घं० 55 मि० तक दर्शाई गई है ।

ध्यान रहे, तिथि, नक्षत्रों के मान में 5-5 घण्टों के अन्तर होने से एकादशी पूर्णिमा, जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी, प्रदोष व्रत संक्रान्ति पुण्य आदि की तारीखों में अन्तर तो होता है, साथ में ज्योतिष-शास्त्रीय अन्य महत्वपूर्ण अंगों में भी अन्तर हो जाता है । जैसे गण्डमूल नक्षत्र, दशा अन्तर दशाओं में अन्तर, जन्मकुण्डली में ग्रहों का अन्तर, पंचक, भदा व्याप्ति अव्याप्ति आदि सभी विषयों में अन्तर आ जाने से धर्म से सम्बद्ध ज्योतिष विद्या भी झूठ और हास्यास्पद लगने लगती है । इस सम्बन्ध में एकजुट होकर सभी सम्प्रदाय समूहों को महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने की आवश्यकता है । पूर्व-त्यौहारों के सम्बन्ध में ऐसे ही अनेकों उदाहरण भरे पड़े हैं, जिनमें तिथि, नक्षत्र सम्बन्धी वृत्तिपूर्ण पंचाँग गणित के कारण पूर्व-त्यौहारों की तिथियों (तारीखों) में भिन्नता एवं मतान्तर पड़ रहा है ।

इस धार्मिक संस्थान के सम्बन्ध में हमारे एवं अन्य धार्मिक जनता के मन में विशेष श्रद्धा भाव है, अतएव उनसे अनुरोध है कि वह अशुद्ध, वृत्तिपूर्ण एवं अशास्त्रीय गणित का आश्रय न लें । पूर्व-त्यौहारों की तारीखों के बारे में मतभेद, लोगों को धर्म-सम्बन्धी खण्डित धारणाओं को प्रकट करता है, दूसरे राष्ट्रीय एकता की भावना को भी ठेस पहुंचती है । इसी भांति कई बार सरकारी क्षेत्र द्वारा भी किसी सम्प्रदाय विशेष से प्रभावित होकर किसी पूर्व त्यौहार सम्बन्धी छुट्टी कर देने से सामान्य लोग भ्रमित होते हैं । उदाहरणस्वरूप श्री कृष्णजन्माष्टमी के व्रत, जप आदि के निमित्त आंध्रकाश शास्त्रकारों ने अद्वैतांत्रि व्यापिनी भाद्र कृष्ण अष्टमी तिथि, रोहिणी ग्राह्य माना है, परन्तु भारत सरकार प्रायः प्रभाववश उदयकालिक अष्टमी की ही उद्घोषणा करती है । इस प्रकार धर्म परायण लोग संशय में पड़ जाते हैं । अतएव धार्मिक संस्थाओं से अनुरोध है कि वह उपरोक्त भ्रममूलक परिस्थितियों का निराकरण करने के प्रयास करें जिससे धार्मिक लोगों की पूर्व-त्यौहारों की तिथियों के सम्बन्ध में शंका उत्पन्न न हो ।

सूर्यादि ग्रहों के अरिष्टफल की शानि हेतु ग्रह एवं अपादि मन्त्र

| सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु | हवन |
|------------|-------------|-------------|---------------|------------|-----------------|------------|-------------|-------------|-------------------|
| कनक | चावल | मसूर | मूंग | पीतथाय | चावल | उड़द | सप्तथाय | लसनिया | चावल |
| मोती | मूंग | पन्ना | पुखराज | होरा | नीलम | गोमेद | लोहा | कांस्थपात्र | मोती |
| तांबा | चांदी | तांबा | कांस्थपात्र | चांदी | लोहा | सीसा | लोहा | कांस्थपात्र | मोती |
| सोना | सोना | सोना | सोना | सोना | सोना | सोना | सोना | सोना | सोना |
| लाल | श्वेत | लाल | लाल | लाल | लाल | लाल | लाल | लाल | लाल |
| गाय | वैल | वैल | शस्त्र | अश्व | श्वेत | चाड़ा | काली | गाय | चाड़ा |
| गुड़ | मिश्री | गुड़ | शक्कर | लवण | मिसरी | कुलथी | ताम्र | पात्र | नारियल |
| घी | दही | घी | घी | दूध | तेल | तेल | तेल | घृत | श्वेतपुष्प |
| कमलालि | श्वेत पुष्प | लाल कनेर | सर्व रंग पु. | पीले पुष्प | श्वेत पुष्प | काले पुष्प | कृष्ण पुष्प | धूम्र पुष्प | श्वेतपुष्प |
| रक्तवस्त्र | श्वेतवस्त्र | लालवस्त्र | पीतवस्त्र | सफेदवस्त्र | कालावस्त्र | नीलवस्त्र | कालावस्त्र | श्वेतवस्त्र | हाथीदांत |
| लालचंदन | श्वेतचंदन | लाल चंदन | अनेक फल | पीला फल | सफेद चंदन | काले जूते | नारियल | शस्त्र ध्वज | हाथीदांत |
| मूंगा | शंख | केशर | हाथीदांत | धर्मग्रंथ | दही | धैस | कैवल | कैवल | मुंशे ग्रह. |
| केशर | कपूर | कस्तूरी | कपूर | लवणशहद | सुगन्धित द्रव्य | कस्तूरी | खड्ग | कस्तूरी | ग्रह अनुसार |
| सूर्योदय | संध्याकाले | सू. ३. २ १५ | सू. ३. ५ घड़ी | संध्याकाले | सू. ३. काल | संध्याकाल | रात्रि | रात्रि | प्रातः |
| ७००० | ११००० | १०००० | १०००० | १०००० | १६००० | २३००० | १८००० | १७००० | मुंशे ग्रह अनुसार |

विशेष — ध्यान रहे, प्रत्येक ग्रह के दाने के साथ यथाशक्ति दक्षिणा भी अवश्य देनी चाहिए। सप्तधान्य — गेहूँ, उड़द, मूंगी, चने, जौ, कंगनी और धान्य, चावल।

सूर्यादि ग्रहों के अरिष्ट निवारण हेतु औषधि स्नान

| सूर्य | चन्द्रमा | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|------------|------------|-----------|----------|-------------|-----------|------------|---------|----------|
| मनःशिला | पंचगव्य | बिल्व छाल | गाबर | चमेलीपुष्प | पिपरामूल | कालोतिल | लोबान | लोबान |
| इलायची | गोधू | लाल पुष्प | अक्षत | पुष्प | जायफल | सरमा | तारपीन | तारपीन |
| देवदंदा | गोबर | हींग | मोती | श्वेत सरसों | मूथरा | लोबान | गजदंत | तिलपत्र |
| केशर | गजमद | गोदनी | शहद | शहद | मूली बीज | सौंफ | गजदंत | गजदंत |
| खश | शंख | जटाभांसी | सुवर्ण | गुलर | मैनशिला | खश | कस्तूरी | छागमूत्र |
| रक्तपुष्प | गंगाजल | मौलसिरी | जायफल | दमयंती | इलायची | खिल्ला | तिलपत्र | लाल चंदन |
| रक्तचंदन | श्वेत चंदन | सिगरफ | पिपरामूल | मुलटवी | श्वेतचंदन | शतकुसुम | गंगाजल | गंगाजल |
| कनेर पुष्प | स्फटिक | मालकंगनी | इत्यादि | नवीनपते | गंगाजल | गोदीमिश्रत | — | — |
| मि. गंगाजल | गोमूत्र | गंगाजल | गंगाजल | गंगाजल | गंगाजल | गंगाजल | गंगाजल | गंगाजल |

होमादि में अग्नि वास जानना

जिस दिन को होम/हवन करना हो, उस दिन की तिथि और वार की संख्या को जोड़कर १ जमा करें फिर कुल जोड़ को ४ द्वारा भाग दें। यदि शेष शून्य (०) अथवा ३ बचें, तो अग्नि का वास पृथ्वी पर होगा। इस दिन होम करना कल्याणकारक होता है। यदि शेष २ बचें तो अग्नि का वास पाताल में होता है। इसी दिन होम करने से धन का नुकसान होता है। यदि ४ का भाग देने से १ शेष बचे तो आकाश में अग्नि का वास होगा, इसमें होम करने से आयु का क्षय होता है। वार की गणना रविवार से तथा तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से करनी चाहिए। तदुपरान्त ग्रह के मुख आहुति चक्र का विचार करना चाहिए।

ग्रहों के मुख में आहुति चक्र

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने से यदि ३ या ३ से कम की संख्या आए तो होमाहुति सूर्य के मुख में जाने, तीन से आगे की संख्या से ६ तक की संख्या में मिले, तो बुध के मुख में आहुति जायें। इसी प्रकार, निम्न क्रमानुसार सब ग्रहों में होमाहुति जायें।

| ग्रह | सूर्य | बुध | शुक्र | शनि | चंद्र | मंग. | गुरु | राहु | केतु |
|---------|-------|-----|-------|------|-------|------|------|------|------|
| नक्षत्र | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| फल | अशुभ | शुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | अशुभ | अशुभ |

नवग्रहों के जपनीय होमार्थ (हवन) मन्त्र

सूर्य मन्त्र — अर्क (आक) समिधा द्वारा "ॐ आकुण्ठेन रजसा वर्तमानो निवेशयामृतं मर्त्यं हिरण्येन साविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम ॥ १ ॥
चन्द्रमा मन्त्र — (पलाश समिधा के साथ) — "ॐ इमं देवाऽमल Ω सुवर्चम महते क्षत्राय महते ज्येष्ठाय महते जानराज्यायेन्द्राय इमममुष्य पुत्रममुष्य पुत्रमस्य विश एष वाऽमो राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणं Ω राजा। ॐ सोमाय स्वाहा ॥ इदं चन्द्रमसे न मम ॥ २ ॥
भौम मन्त्र — (खैर की लकड़ी से) — "ॐ अग्निमूर्द्धां दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा Ω रता Ω सि जियन्ति। ॐ भौमाय स्वाहा ॥ इदं भौमाय इदं न मम ॥"
बुध मन्त्र — ॐ उदबुध्यस्वाने प्रतिजागृहिर्विमिष्टापतं स Ω सृजेथामर्त्यं च। अग्निमन्त्रस्थे अधुतरस्मिन् विश्वेदेवा यजामानश्च सीदत। ॐ बुधाय स्वाहा। इदं बुधाय इदं न मम ॥
गुरु मन्त्र — (पीपल) ॐ वृहस्पतये अतिवदर्यो अर्हाद्बुधमिष्टिभति क्रतुमन्त्रजेषु। यददीदयच्छयस क्रतुप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥ ॐ वृहस्पतये स्वाहा ॥ इदं वृहस्पतये, इदं न मम।
शुक्र मन्त्र — (गूलर) ॐ अत्रात् परितुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिपवत् क्षत्रं पयः। सोमं प्रजापतिः अत्रेतेन मर्त्यमिन्द्राय विपान Ω शुक्रमन्त्रसऽइन्द्रव्योन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु ॥ ॐ शुक्राय स्वाहा ॥ इदं शुक्राय, न मम।
शनि मन्त्र — (शमी की समिधा) ॐ शत्रो देवीरधिष्ठयऽआपो भवन्तु पीतये। शंख्योरभिषवन्तु नः। ॐ शनैश्चराय स्वाहा। इदं शनैश्चराय, इदं न मम ॥
राहु मन्त्र — (दूब) ॐ कयानपिचत्र आभुवदतो सदा वृधः सखा। कया शचिच्छया वृता ॥ ॐ राहुवे स्वाहा ॥ इदं राहुवे इदं न मम ॥
केतु मन्त्र — (कुशा से) ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशमे। समुपद्भिर्वा यथाः। ॐ केतवे स्वाहा ॥ इदं केतवे, इदं न मम ॥

ग्रहों के गुण, वर्ण, स्वभाव, तत्त्व, रंग, उच्च, नीच, राशि

| नाम ग्रह | स्व-ग्रह राशि | मूल चिह्न | गुण | चरादि | वर्ण जाति | रंग | उच्च राशि | नीच राशि | पुरुष स्त्री | तत्त्व | कारक संबंध | स्व-भाव | प्रकृति | धातु | गम | शरीरंग | दिशा | दृष्टि विंश | भाग्योदय काल | |
|------------|---------------|-----------|--------|-------|-----------|-----------|-----------|----------|--------------|--------|------------|-----------|---------|------|----------|---------|-----------|-------------|--------------|----------|
| सूर्य Sun | सिंह | मिह | सत्त्व | स्थिर | क्षत्रिय | रक्त वर्ण | मेघ | तुला | पुरुष | अग्नि | आत्मा मन | पिता | क्रूर | पितृ | सोना | निवृत्त | शिः नेत्र | पूर्व | १ | २२ से २४ |
| चंद्र Moon | कर्क | वृष | सत्त्व | चंचल | वैश्य | श्वेत | वृष | वृश्चि. | स्त्री | जल | मान | माता | क्रूर | पितृ | चांदी | क्षार | गर्भ उर | दक्षिण | १ | २४ से २६ |
| मंगल Mars | मेघ, वृश्चि | मेघ | तम | चर | क्षत्रिय | लाल | मेघ | मेघ | पुरुष | अग्नि | बल | भाई | क्रूर | पितृ | ताम्र | कटु | दक्षिण | १ | २८ से ३२ | |
| बुध Merc | मिथुन, कन्या | कन्या | रज | स्थिर | वैश्य | हरा | कन्या | कन्या | पुरुष | पृथ्वी | वाणी | वधु/मित्र | क्रूर | पितृ | क्रांत्य | मिश्र | उत्तर | १ | ३२ से ३६ | |
| गुरु Jup. | धनु, मीन | धनु | सत्त्व | स्थिर | ब्राह्मण | पीला | कन्या | मेघ | पुरुष | आकाश | विद्या | संतान | शुभ | पितृ | सोना | मधुर | उत्तर | १ | ३६ से ४० | |
| शुक्र Ven. | वृष, तुला | तुला | रज | चर | वैश्य | सफेद | कन्या | मेघ | पुरुष | जल | काम | स्त्री | शुभ | पितृ | चांदी | अम्ल | उत्तर | १ | ४० से ४४ | |
| शनि Sat. | मकर, कुम्भ | कुम्भ | तम | स्थिर | शूद्र | नीला | तुला | वृष | पुरुष | वायु | संधर्ष | भृत्य | क्रूर | पितृ | लोहा | कषाय | दक्षिण | १ | ४४ से ४८ | |
| राहु Rahu | कन्या | कर्क | तम | चर | अत्यंत | धूम्र | वृष | वृश्चि. | पुरुष | छाया | दुःख | शत्रु | क्रूर | पितृ | लोहा | कषाय | दक्षिण | १ | ४८ से ५० | |
| केतु Ketu | मीन | मकर | तम | चर | शूद्र | धूम्र | वृष | वृश्चि. | पुरुष | छाया | काट | बाधा | क्रूर | पितृ | लोहा | कषाय | उत्तर | १ | ४८ से ५० | |

राशियों के गुण-स्वभाव तत्त्व, शुभ रत्नादि चक्र

| राशि | स्वा. ग्रह | अंग्रेजी नाम | वर्ण | जाति | कूरादि | चरादि | तत्त्व | गुण | जीवादि | समादि | दिशा | शुभ रत्न | बल समय | शरीरंग | दीर्घादि | नरादि | प्रकृति | गुण | पृष्ठोदय आदि |
|---------|------------|--------------|---------|----------|--------|-------|--------|-----|--------|-------|--------|----------|--------|------------|----------|-------|---------|-------|--------------|
| मेष | शुक्र | Aries | लाल | क्षत्रिय | क्रूर | चर | अग्नि | रज | धातु | विषम | पूर्व | मृगा | रात्रि | शिः | हृस्व | पशु | पितृ | उष्ण | पृष्ठोदय |
| वृष | शुक्र | Taurus | श्वेत | वैश्य | क्रूर | स्थिर | पृथ्वी | तम | मूल | सम | दक्षिण | होरा | रात्रि | नेत्र | हृस्व | पशु | वात | शान्त | पृष्ठोदय |
| मिथुन | बुध | Gemini | हरा | क्षत्रिय | क्रूर | चर | वायु | सत | जीव | विषम | पश्चिम | पत्रा | रात्रि | भुजाएं | सम | नर | वात | चंचल | शान्त |
| कर्क | बुध | Cancer | श्वेत | क्षत्रिय | क्रूर | स्थिर | जल | रज | धातु | सम | उत्तर | मोती | रात्रि | वक्षः | सम | जल | कफ | शान्त | पृष्ठोदय |
| सिंह | शुक्र | Leo | लाल | क्षत्रिय | क्रूर | स्थिर | अग्नि | तम | मूल | विषम | पूर्व | माणक | दिन | मेरु, रक्त | दीर्घ | पशु | पितृ | उष्ण | पृष्ठोदय |
| कन्या | शुक्र | Virgo | मिश्रित | वैश्य | क्रूर | स्थिर | पृथ्वी | सत | जीव | विषम | दक्षिण | पत्रा | दिन | पेट, नाभि | दीर्घ | नर | वात | शान्त | पृष्ठोदय |
| तुला | शुक्र | Libra | नीला | क्षत्रिय | क्रूर | चर | वायु | रज | धातु | विषम | उत्तर | होरा | दिन | गुलाब | दीर्घ | नर | वात | उष्ण | पृष्ठोदय |
| वृश्चिक | शुक्र | Scorpio | ताम्र | क्षत्रिय | क्रूर | स्थिर | जल | तम | मूल | सम | दक्षिण | मृगा | रात्रि | जंघा | दीर्घ | नर | वात | शान्त | पृष्ठोदय |
| धनु | शुक्र | Sagittarius | पीला | क्षत्रिय | क्रूर | स्थिर | अग्नि | सत | जीव | विषम | पूर्व | नौलम | रात्रि | भूत | सम | जल | पितृ | उष्ण | पृष्ठोदय |
| मकर | शनि | Capricorn | धूरा | वैश्य | क्रूर | चर | पृथ्वी | रज | धातु | सम | दक्षिण | नौलम | रात्रि | जंघा | सम | जल | वात | शान्त | पृष्ठोदय |
| कुम्भ | शनि | Aquarius | काला | क्षत्रिय | क्रूर | स्थिर | वायु | तम | मूल | विषम | पश्चिम | नौलम | दिन | पिंडली | लघु | जल | त्रिदोष | उष्ण | पृष्ठोदय |
| मीन | शनि | Pisces | पीला | क्षत्रिय | क्रूर | स्थिर | जल | सतो | जीव | सम | उत्तर | पुखराज | दिन | पौव दोनों | लघु | जल | कफ | शान्त | उष्ण |

चर, शीर्षोदयादि राशियों का महत्त्व—उपरोक्त राशियों के गुण, स्वभाव, तत्त्वादि का फलित ज्योतिष में विशेष महत्त्व होता है। संक्षेप में, चर का अर्थ है चलित अर्थात् जिसमें कार्य जल्दी हो। यात्रा करें, तो शीघ्र वापिस आ जावे। स्थिर लग्न राशि में कार्य करने से स्थायी प्रभाव होता है। मकान, दुकान, व्यवसायादि में प्रवेश करें, तो बहुत वर्षों तक रहे। द्वि-स्वभाव राशि में मिला जुला प्रभाव होता है। अर्थात् पहिला आधा भाग स्थिर प्रभाव दिखाता है, अन्तिम आधा भाग 'चर' का प्रभाव दिखाता है। इसी भाँति धातु का अर्थ है, सोना, चाँदी, लोहा, भूमि, सप्राती धानादि पदार्थ। 'मूल' का अर्थ है, फल, वृक्ष, अनाजादि भोग्य पदार्थ। 'जीव' का अर्थ प्राणी—स्त्री, पुत्र, पौत्र, भाई आदि। उदाहरणार्थ—मान लीजिए, सोन्य राशि मीन में यदि कोई सोन्य ग्रह (शुक्र) बैठा है, तो प्रश्नकर्ता को स्त्री, संतानादि का सुख लाभ होगा (क्योंकि मीन राशि जीन सम्वन्धी राशि है) और यदि कोई अशुभ या क्रूर ग्रह स्थित हो, तो स्त्री, संतानादि सुख सम्वन्धी हानि होगी। ऐसा कहना चाहिए। इसी भाँति, राशियों की दिशा वताने का तात्पर्य यह है कि जिस राशि में कारक ग्रह बैठे हो, उस राशि की दिशा में भाग्योदय होता है। उदाहरण के लिए किसी की जन्म कुण्डली में लग्नेश एवं नवमेश ग्रह वृष राशि में हो, तो जातक का भाग्योदय जन्म से दक्षिण दिशा में होगा—ऐसा कहना चाहिए। जैसे—यदि कन्या लग्न हो, तो वृष लग्नेश, दशमेश होगा। द्वितीयेन व नवमेश शुक्र, बुध (लग्नेश) सहित नवम् (भाग्य) स्थान पर इकट्ठे हों, तो वृष राशि (दक्षिण) में भाग्योदय होगा।

अनिष्ट वार्हों के उपायों सम्बन्धी विशेष विवरण

ज्योतिष शास्त्र में अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिए अनेक प्रकार के उपाय बतलाए गए हैं। यथा सुनिश्चित संख्या में मन्त्र जाप, यथासामर्थ्य दान, हवन, जड़ी-बूटी धारण, ग्रह औषधि स्नान, व्रत-जप-तप करना, उचित नग एवं विधिपूर्वक ग्रह यन्त्र को धारण करना इत्यादि शास्त्रोक्त उपायों को अपना करके मनुष्य ग्रह जनित कष्टों का समाधान करके प्रतिकूल परिस्थितियों को भी स्वयं के अनुकूल एवं समृद्ध बना सकते हैं।

सूर्य-क्रूर ग्रह से दृष्ट, युक्त अथवा नीच राशिस्थ (तुला) हो या १, २, ४, ५, ७, ८, ९ या १२वें भावस्थ सूर्य अशुभ माना जाता है। जन्म कुण्डली अथवा वर्ष कुण्डली में सूर्य अशुभकारी हो, तो निम्नलिखित किसी एक मन्त्र का ७ हजार से लेकर सवा लाख की संख्या में जाप करना चाहिए। जप का आरम्भ शुक्ल पक्षीय रविवार या सूर्य पक्षी अथवा रवि योग या रविपुष्य योग में करना चाहिए। पाठारम्भ करने से पूर्व लाल पुष्प, अक्षत, नैवेद्य व गंगाजल लेकर पाठ का संकल्प, ध्यान व आवाहन-नादिकें करें। जप-पाठ के लिए रुद्राक्ष की माला सर्वोत्तम है। उसके अभाव में चन्दन या तुलसी की माला का प्रयोग भी कर सकते हैं। विधिपूर्वक सूर्य उपासना से पदोन्नति, आत्मशक्ति, तेज बल, राजप्रतिष्ठा एवं आरोग्य की प्राप्ति होती है। प्रतिदिन पाठोपरान्त सूर्य देव को ताम्र वर्तन में शुद्ध जल, लाल चन्दन (या पुष्प) डालकर अर्घ्य देना चाहिए तदुपरान्त गायत्री मन्त्र करने का विधान है। सुनिश्चित संख्या में पाठ (जप) की पूर्ति हो जाने पर दशमांश संख्या में हवन कर लेना चाहिए।

पुराणोक्त सूर्य नमस्कार मन्त्र—

जपकुसुम सकाश काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमोऽरि सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दियाकरम्॥

वेदोक्त सूर्यमन्त्र—

ॐ आक्वोने रजसा वर्तमानो निवेशयन्ममृतं मर्त्यं च।

हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि परयन्॥ (जप संख्या ७०००)

तन्त्रोक्त बीजमन्त्र—ॐ हां हीं ह्रीं साः सूयाय नमः (जप संख्या ७०००)

सूर्यार्घ्य मन्त्र—

एहि सूर्य ! सहस्रांशो तेजो राशे जगत्पते। अनुकम्प्य ! मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥

सूर्यार्घ्य का लघु मन्त्र—“ॐ घृणिः सूयाय नमः”॥

सूर्य गायत्री मन्त्र जाप, विधिपूर्वक रविवार का व्रत, सूर्यमणि (मणिक्व) धारण करना औषधि स्नान (मनः शिला, इलायची छोटी, देव दारू, केशर, खस, केनेरादि लाल पुष्प, तथा विधिवत् निर्मित सूर्ययन्त्र धारण करना तथा सूर्य देव से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना शुभ होता है।

सूर्य दान योग्य वस्तुएँ—गेहूँ, गुड़, लाल वस्त्र, ची, लाल वर्ण, सबत्सा गाय, माणक, ताम्र वर्तन नारियल सहित लाल फल, ब्राह्मण भोजन एवं च सुनिश्चित पाठोपरान्त दशमांश हवन करना शुभ रहता है।

चन्द्रमा—शुभ एवं क्रूर ग्रह से दृष्ट युत एवं नीच राशि (वृश्चिक), अथवा ४, ६, ८, १२वें भावों में स्थित चन्द्रमा अशुभ माना जाता है।

अशुभ चन्द्र की शान्ति के लिए निम्नलिखित किसी एक मन्त्र की ११ हजार की संख्या में जप करना, तदुपरान्त दशमांश संख्या में हवन करना शुभ रहता है। जप का आरम्भ पूर्णमासी या शुक्ल पक्ष के सोमवार को किसी शुभ मुहूर्त में करना चाहिए।

तन्त्रोक्त चन्द्र मन्त्र—ॐ श्रीं श्रीं श्रीं साः चन्द्रमसे नमः।

पुराणोक्त चन्द्र मन्त्र—हीं दधि शख तुषाराम क्षीरोदार्णव सम्भवम्।

नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुट भूषणम्॥

चन्द्र अर्घ्य मन्त्र—ॐ सोम सोमाय नमः॥

चन्द्रमा अशुभ हो, तो पारमसिक विकार, नेत्र कष्ट, धन हानि, रक्त दोष, स्त्री कष्ट आदि अशुभ फल घटित होते हैं। चन्द्रमा की शुभता के लिए उपरोक्त मन्त्र-जाप के अतिरिक्त चांदी की अंगूठी में

चन्द्रकान्त मणि या श्वेत सुव्चा मोती धारण करना, विधिवत्, सोमवार एवं पूर्णमासी का व्रत करना, चन्द्र मन्त्र मुद्रित करवा कर चांदी का गोल सिक्का (Coin) गले में धारण करना, घर में श्वेत शंख रखना, औषधि एवं जड़ी-बूटी (पंचाण्य, श्वेत वन्दन आदि), विधिपूर्वक चन्द्र यन्त्र धारण करना, शिवोपासना करना कल्याणकारी रहता है। चन्द्र शुभता बढ़ाने के लिए दान योग्य पदार्थ चावल, सफेद चन्दन, शंख कर्पूर, दही, दूध घी, चीनी या मिश्री, क्षीर, श्वेत वस्त्र, सफेद चन्दन, चाँदी या काँसे का पात्र, चाँदी के बर्तन, लोहे की बर्तनी, बलाचित्त चन्द्रमा मन्त्र, बुद्धि, रक्त, स्त्री एवं माता, धन-सम्पदादि सुखों में वृद्धिकारक होता है।

मंगल ग्रह—१, २, ६, ५, ७, ८, ९, एवं १२वें भावों में स्थित मंगल अथवा शनि आदि शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त, या अपनी नीचराशि (कर्क) अशुभ कारक होता है। जन्म कुण्डली या वर्ष कुण्डली में मंगल अशुभ एवं वाधाकारक हो, तो निम्न मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का कम से कम १० हजार की संख्या में शुभ मुहूर्त, मंगलवार को लाल पुष्प, लाल चन्दन, अक्षत (चावल), गंगाजल लेकर संकल्प पूर्वक पाठारम्भ करें। सुनिश्चित संख्या में पाठोपरान्त पाठ का दशमांश संख्या में हवन करना चाहिए।

तन्त्रोक्त भीम मन्त्र—ॐ क्रां क्रीं क्रौं साः भीमाय नमः।

पुराणोक्त भीम मन्त्र—हीं धरणी गर्भसम्भूतं विद्युत् कान्ति समप्रभम्।

कुमार-शक्ति हस्त तें मंगल प्रणामार्थम्॥

भीम गायत्री मन्त्र—ॐ अंगारकाय विद्महे शक्तिं हस्ताय धीमहि तन्नो भीमः प्रचोदयात् उपरोक्त मन्त्र जाप के अतिरिक्त अनिष्टकर मंगल की शान्ति के लिए मंगलद्वार का व्रत रखना, श्री हनुमान उपासना, मंगल स्तोत्र पढ़ना, लाल वर्ण की गाय को चारा डालना, मूँगा पहनना, औषधि स्नान, मांस, मछली, शराब आदि से परहेज रखना, विधिपूर्वक बना भीम यन्त्र धारण करना, उद्यान के दिन ब्राह्मण भोजन कराना शुभ होता है।

भौमशान्ति हेतु दान योग्य वस्तुएँ—गेहूँ, मसर की दाल, श्री, गुड़, सुवर्ण, कनेर के पुष्प, लाल वस्त्र, लाल चन्दन, केशर, नारियल, सेब आदि लाल फल, मूँगा, सोना, ताम्र वर्तन, गुड़ से धनें मीठे चावल या मीठी चापातियाँ, ब्राह्मण भोजन आदि करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है। मंगल ग्रह पराक्रम, माहत्स, भूमि, भाई, पुत्र, रक्त-बलादि का भी कारक है। यदि अशुभ हो तो रक्त दोष, भ्रातृ कष्ट, आकस्मिक दुर्घटना, वृथा विवाद करवाता है।

बुध ग्रह—कुण्डली में ४, ६, ८, १२वें भावों में स्थित अथवा शुभ ग्रह द्वारा दृष्ट या युक्त बुध अशुभ फलदायक होता है। बुध शुभ हो, तो वाणी, बुद्धि, विद्या, संतान, व्यापार आदि में लाभकारक होता है। अशुभ बुध बुद्धि में विभ्रम, लज्जा रोग, वाणी विकार, सन्तान कष्ट रहता है। बुध की शुभता बढ़ाने के लिए निम्नलिखित उपाय करने चाहिए।

तन्त्रोक्त बुध मन्त्र—ॐ वां वीं व्रीं साः बुधाय नमः। (जप संख्या ९०००)

पुराणोक्त बुध मन्त्र—हीं प्रियंगु कालिका श्याम रूपेणाप्रतिमं बुधम्।

सौम्य सौम्यगुणोपेतं तं बुध प्रणमार्थम्॥

उपरोक्त मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का कम से कम ९००० की संख्या में जप करना, बुधवार का विधिपूर्वक व्रत रखना, औषधि स्नान, हरे रंग का नग-पन्ना (Emerald) सोने की अंगूठी में धारण करना, विधिवत् तैयार किया गया बुध यन्त्र रखना, हरी वस्तुओं का प्रयोग करना, श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ तथा श्री विष्णु उपासना करना, चोपायों को हरा चागा डालना, बुध को कन्या पूजन के उपरान्त हरी वस्तुओं (वस्त्रादि) का दान करना इत्यादि बुध ग्रह जनित अशुभ फल को शान्त करता है।

बुध के दान की वस्तुएँ—मूँगी साबुत, चीनी, छोटी इलायचियाँ, षडरसों से युक्त भोजन, हरी सब्जियाँ, पन्ना नग, कांस्य पात्र, हरे पुष्प, हरे फल, हाथी दाँत, हरा गर्म अथवा रेशमी वस्त्र, ब्राह्मण भोजन दक्षिणा सहित दान करना कल्याणप्रद रहता है।

गुरू (बृहस्पति)—कुण्डली में ४, ६, ८, १२वें भावों में ही स्थित हो, अथवा नीच राशित (मकर) हो, या शत्रु या अशुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त ग्रह जातक की अशुभ प्रभाव प्रदान करता है। अशुभ गुरू जातक की विद्या में असफलता अथवा विवाह सुख में अड़चनें, पुत्र-सन्तान एवं स्त्री कष्ट, भ्रातृ विरोध, शरीर कष्ट, बुद्धि में विकार आदि अशुभ फल प्रकट करता है।

गुरू में शुभता लाने के लिए निम्नलिखित किसी एक मन्त्र का ११,००० की संख्या में पाठ करना अथवा किसी योग्य ब्राह्मण से करवाना तथा पाठोपरान्त दशांश संख्या में हवन करना कल्याणकारी रहेगा।

तन्त्रोक्त गुरू मन्त्र—ॐ ग्रां प्रीं ग्रीं सः गुरवे नमः (जप संख्या १९०००)

पुराणोक्त गुरू मन्त्र गत पृष्ठों (गुरू गोचर फल) में देखें।

गुरू गायत्री मन्त्र—ॐ अगिरो जाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरूः प्रचोदयात्॥

संस्कृतपूर्वक मन्त्र जाप के अतिरिक्त गुरू सम्बन्धी वस्तुओं का दान, सुवर्ण या चांदी की अँगूठी में पुखराज पहनना, विधिवत् निर्मित गुरू यन्त्र धारण, औषधि स्नान करना, गुरूवार का व्रत रखना, पीली वस्तुओं का प्रयोग, पीले वर्ण की गीतों की सेवा करना व गाय दान, पीपल वृक्ष की प्रतिष्ठा, ब्राह्मणों को क्षीर सहित भोजन खिलाना, दक्षिणा एवं धार्मिक ग्रन्थों का दान, गायत्री जप इत्यादि करना शुभ है।

गुरू की दान योग्य वस्तुएँ—पीले चावल, चने की दाल, हल्दी, शहद, पीला वस्त्र, पपीता, आम, केले आदि पीले फल, सवत्सा गाय, पीला कम्बल, धर्म ग्रन्थ, बेसन के लड्डू, ताम्र एवं कांस्य पात्र, शक्कर, रामायण आदि धार्मिक ग्रंथ केशर इत्यादि वस्तुओं का दान शुभ रहता है।

शुक ग्रह—जन्म कुण्डली में शुक ६, ८ या १२वें भाव में अथवा नीच राशि (कन्या) या शत्रु ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो अशुभ फल प्रदायक होता है।

शुक ग्रह स्त्री, धन-सम्पदा, ऐश्वर्य, वीर्य-भोग एवं वाहनादि सुख-साधनों का कारक माना जाता है। इस ग्रह की शुभता बढ़ाने के लिए निम्नलिखित मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का कम से कम १६००० की संख्या में जप करना तथा फिर दशांश हवन करना शुभ कारक माना जाता है।

तन्त्रोक्त शुक मन्त्र—ॐ दां दीं दौं सः शुक्राय नमः

शुक गायत्री मन्त्र—ॐ भृगुजाय विद्महे दिव्य देहाय धीमहि तन्नो शुकः प्रचोदयात्॥

सुनिश्चित संख्या में मन्त्र जाप के अतिरिक्त शुक सम्बन्धी वस्तुओं का दान तथा स्वयं प्रयोग, हीरा (Diamond) पहनना, शुक यन्त्र धारण करना, शुक-औषधि स्नान, गोदान, श्वेत एवं क्रीमवर्ण की वस्तुओं का प्रयोग, श्वेत चन्दन का तिलक, श्री दुर्गा पूजा, श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ करना तथा पाँच शुकवार पाँच कन्याओं का पूजन करके उन्हें श्वेत वस्तुओं की धैर्य देने से ग्रह शान्ति होती है।

शुक दान की वस्तुएँ—चाँदी, चावल, मिश्री, दूध एवं दूध से निर्मित शीर, बर्फी आदि, श्वेत चन्दन, श्वेत गाय, श्वेत पुष्प, श्वेत वस्त्र, श्वेत फल एवं सुगन्धित पदार्थों आदि का दान करने से शुक की शुभता में वृद्धि होती है।

शनि ग्रह—किसी जातक की जन्म कुण्डली में जब शनि १, २, ४, ५, ७, ८, ९, १० अथवा १२वें स्थानों में हो, अथवा शत्रु या नीच (मेघ) राशित हो अथवा सूर्य, मंगल आदि क्रूर ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो शनि अशुभ फलदायक होता है। अशुभ एवं अरिष्टकर शनि धन एवं आय के साधनों में कमी, शरीर कष्ट, मानसिक तनाव, बनते कामों में बार-बार अड़चनें पैदा होती रहती है। शनि कृत अरिष्ट निवारण हेतु निम्नलिखित मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र का २३ हजार जप तथा जप उपरान्त दशांश संख्या में हवन करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है।

तन्त्रोक्त शनि मन्त्र—ॐ प्रां प्रीं प्रीं सः शनये नमः (जप संख्या २३०००)

वेदोक्त शनि मन्त्र—ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंख्यो रभिरस्र वन्तु नः॥

विनियोगः—अस्य मन्त्रस्य अर्धवर्ण ऋषिः,

गायत्री छन्दः शनि देवता-शनि प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

पुराणोक्त शनि मन्त्र—ह्रीं नीलांजन सभा भासं रवि पुत्रं यमाग्रजम्।

छायाभार्तण्ड सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥

विधिपूर्वक मन्त्र जाप के अतिरिक्त शनि सम्बन्धी वस्तुओं का दान, सिकके अथवा पंचधातु की अँगूठी में नीलम धारण करना, शनिवार का व्रत रखना, विधिवत् निर्मित शनि यन्त्र रखना, लोहे की कटोरी में तेल डालकर छाया पात्र करना, औषधि स्नान, अन्य विद्यालय या कुष्ठाश्रम में अनाज (उड़द सहित) भोजन खिलाया, मछलियों को गेहूँ एवं उड़द के आटे की गोलिएं डालना, शिव स्तोत्र एवं शनि स्तोत्र का पाठ एवं शनि से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है।

शनि के दान योग्य वस्तुएँ—उड़द, काले तिल, काले चने, सरसों का तेल, काली गाय, काला वस्त्र, लोहे का बर्तन, काले जूते, भैंस, कुलथी, कस्तूरी, नीलम, नारियल, काले एवं नीले पुष्प, गरीब वृद्ध व्यक्ति को भोजन करना शुभ होता है। शनि का दान सायंकाल को दान प्रशस्त माना जाता है।

राहु—जिस कुण्डली में १, २, ४, ५, ७, ८, ९, १० या १२वें भाव में स्थित हो अथवा शत्रु या नीच राशि में या शत्रु ग्रह युक्त, दृष्ट हो तो ऐसे जातक को शरीर कष्ट, तनाव, धन सम्बन्धी उलझनें, बुद्धि विभ्रम, कलह-क्लेश, वृथा भ्रमण आदि पेशानियों का सामना करना पड़ता है। राहु जन्मि अरिष्ट फल निवारण हेतु निम्नलिखित किसी एक मन्त्र का १८ हजार की संख्या में जप करना चाहिए।

तन्त्रोक्त राहु मन्त्र—ॐ भ्रां भ्रीं भ्रीं सः राहवे नमः॥

राहुगायत्री मन्त्र—ॐ शिरो रूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहु प्रचोदयात्॥

सुनिश्चित मन्त्र जाप के अतिरिक्त राहु से सम्बन्धित वस्तुओं का दान, शनिवार का व्रत, विधिपूर्वक निर्मित राहु यन्त्र धारण करना, राहु औषधि स्नान, गोमेद नग पहनना, शिव स्तोत्र एवं राहु स्तोत्र का पाठ करना, चलते पानी में नारियल बहाना, श्री दुर्गा पूजा करना, अणाहज एवं कुष्ठाश्रम में अनाज, फल, आदि।

राहु दान योग्य वस्तुएँ—सप्तधात्र्य (सतनाजा), गोमेद, सौसा, काला घाड़ा, तेल, काले पुष्प, नीला वस्त्र, उड़द, खडग (चाकू इत्यादि), कम्बल, बिल पत्र, मोसमी फल कस्तूरी आदि। राहु का दान रात्रि कालीन करना प्रशस्त माना जाता है।

केतु—कुण्डली में १, २, ४, ५, ७, ८, एवं १२वें भाव में हो, अथवा अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो या नीच राशित हो तो जातक / जातिका को शरीर कष्ट, आपसी कलह, व्यवसाय में हानि, घरेलू उलझनों आदि का सामना रहता है। केतु कृत अरिष्ट फल निवारण हेतु निम्नलिखित किसी एक मन्त्र का १७ हजार की संख्या में जप करना लाभदायक रहता है—

तन्त्रोक्त केतु मन्त्र—ॐ सां खीं खीं सः केतवे नमः।

केतु गायत्री मन्त्र—ॐ पद्म पुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतु प्रचोदयात्॥

सुनिश्चित मन्त्र जाप के अतिरिक्त केतु से सम्बन्धित वस्तुओं का दान, दुर्गा व गणेश जी की उपासना, कुत्तों को दूध-चपाती डालना, गर्म वस्त्र (कम्बलादि) का दान, केतु औषधि स्नान, अन्य विद्यालय या कुष्ठ आश्रम में अनाज, दवाईयों, वस्त्रादि का दान, पक्षियों को सतनाजा डालना तथा केतु यन्त्र धारण करना कल्याणकारी रहता है।

केतु-दान योग्य वस्तुएँ—लहसुनिया, लोहा, बकरा, नारियल, तिल, सप्तधात्र्य, धूम (धुएँ जैसे) वर्ण का वस्त्र, कस्तूरी, लोह, चाकू, कपिला गाय, दक्षिण सहित। केतु का दान रात्रिकालीन प्रशस्त माना जाता है।

नोट—अधिक जानकारी के लिए हमारी 'शिवमन्त्रावली' पुस्तक का अध्ययन करें।

व्यापारिक वस्तुओं में मन्दा-तेजी का दैनिक विवरण-सन् 2005 ई.

वायदा व्यापारियों के लिए आवश्यक निर्देश-व्यापारिक वस्तुओं के उतार-चढ़ाव के अध्ययन के बाद ही वस्तुओं का क्रय-विक्रय करना सफल व्यापार की कुंजी है। आगे गोचर ग्रहों, नक्षत्रों के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं (जिन्सों) के दैनिक उतार-चढ़ाव व तेजी-मन्दी की विशेष लाईनों एवं तूफानी तेजी आदि का विवरण लिख रहे हैं। ध्यान रहे, हाजर एवं वायदा बाजार पर राजनीतिक, सामाजिक, प्राकृतिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव भी अवश्य रहता है। इसके अतिरिक्त कुशल व्यापारी को अपनी वर्तमान ग्रहदशा तथा आर्थिक सामर्थ्य को ध्यान में रखते हुए ही व्यापार करना चाहिए। जन्मकुण्डली/वर्ष कुण्डली में हानिप्रद या अनिष्ट ग्रह से सम्बन्धित वस्तु का व्यापार न करें। अनुकूल ग्रह दशा जातक को व्यवसाय में विपुल धन लाभ तथा प्रतिकूल ग्रहदशा अकस्मात् धन हानि करवा सकती है।

गत् संवत् 2061 में हमारे द्वारा निर्दिष्ट ग्रह स्थिति एवं तेजी-मन्दी के चांसों से सोना, चाँदी, गूड़, सोयाबीन, तेल, लोहे, स्टील के अनेक व्यापारी लाभान्वित हुए। ज्योतिष एवं आर्थिक दृष्टि से किसी विशेष जिन्स की स्पेशल दैनिक रिपोर्ट मंगवाने के लिए प्रति जिन्स की मासिक रिपोर्ट 450 रु., 2 महीने की 850 रु. होगी। पूरी फीस अग्रिम भेजें।

—प. विवेक शर्मा, एम. ए. एल. बी., अड्डा होशियारपुर, जालन्धर। फोन—2457959 (O)

जनवरी-1 जन. को यूरेनस शतभिषा के द्वितीय चरण में आएगा। तिल, तेल, सोयाबीन, मैथानल में तेजी बनेगी। 4 जन. को शुक्र धनु राशि में सूर्य के साथ योग करेगा। शेरों विशेषकर साप्तेयार के शेरों में, सोना, चाँदी, ताँबा आदि धातु, सूत, रेशमी व ऊनी धागों में तेजी बनेगी। चीनी, सूत, कपास या चाँदी में यद्यपि प्रारम्भ में मन्दी बनेगी परन्तु ता. 5 को बुध भी धनु राशि में सूर्य, शुक्र के साथ योग करके लगभग सभी धातुओं एवं जिन्सों में तेजी को बढ़ावा देगा। अतएव इस आने वाली तेजी के लिए पहले स्टॉक कर रहें।

10 जन. को यद्यपि सोमवती अमावस रूई, चाँदी में थोड़ी मन्दीकारक रहेगी। परन्तु मंगल ज्येष्ठा तथा सूर्य उ.षा. नक्षत्र में आने से सरसों, उड़द, मूँग, चावल, चने, गेहूँ, गूड़, चीनी, लाल शक्कर, कपास, तेल में तेजी बनेगी। चाँदी, सूत, रूई में घटाबढ़ी के बाद तेजी बन जाएगी।

11 जन. को मकरस्थ चन्द्र के समय मंगलवार को चन्द्रदर्शन होगा। गूड़, सरसों, मूँगफली, अलसी, अरण्डी, घी, शेरों में तेजी रहेगी। जबकि रूई, सोना, चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

13 जन. को सूर्य मकर राशि में नैपच्यून के साथ योग करेगा। इन पर गुरु की दृष्टि भी है। घी, तेल, अलसी, गूड़, शक्कर, चीनी, रूई में तेजी रहे। गेहूँ आदि अनाज, बारदाना में मन्दी रहे। इसी दिन शनि वक्रा अवस्था में मिथुन राशि में प्रवेश कर रहा है। अलसी, एरण्ड, खाद्य-तेलों, सूत, रूई, मूँगफली, शेरों में विशेष तेजी बनेगी। सोने-चाँदी में भी काफी घटाबढ़ी होगी।

15 जन. को बुध एवं शुक्र पू.षा. नक्षत्र में आने से मूँग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों, सोना, चाँदी में मन्दी बनेगी। खल, बिनीले में तेजी बने। 21 जन. को राहु अश्वि. (1) तथा केतु चित्रा (3) में आने से गूड़, लाख, कांसी, सरसों, सोने, ताँबे, लोहे में तेजी, रूई में मन्दी बने। 23 जन. को सूर्य श्रवण में आने से गेहूँ, जौ, चावल, रूई, सूत, सन, सोना, चाँदी, गूड़, चीनी, अलसी, सुपारी, लौंग, पीपल में तेजी बने। 24 जन. को बुध उ.षा. में जाने तथा 25 को पूर्व में अस्त होने से रूई में घटाबढ़ी, सोना पहले कुछ मन्दा फिर तेज, दालों, चने, तेल, सोयाबीन में भी घटाबढ़ी रहे। 26 जन. को बुध मकर में सूर्य के साथ मेल करेगा, शुक्र उ.षा. में जाएगा। सोने, चाँदी, अलसी, एरण्ड में तेजी बनेगी। बीच-बीच में मन्दी के झटके भी लगेंगे। घटाबढ़ी

में गुरुत मुनाफा लें। 28 जन. को शुक्र मकर राशि में सूर्य, बुध, नैप. के साथ योग करेगा। शेरों, अफीम, गूड़, खाण्ड, घी, गेहूँ, चना, सरसों, सोयाबीन, गूड़ में अच्छी तेजी बनेगी। रूई, चाँदी में भी घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। 29 जन. को मंगल धनु में आकर वक्रा शनि के साथ समसप्तक योग बनाएगा। गूड़, चीनी, घी, तेल, तिलहन, सोयाबीन, सोना, चाँदी, चने, मूँग, शक्कर तथा शेर बाजार में अच्छी तेजी बनेगी।

फरवरी-1 फर. को बुध श्रवण में आने से गूड़, चीनी, अलसी, चना, चावल में तेजी बनेगी। 12 फर. को गुरु वक्रा (कन्या राशिस्थ) होने से बाजार के रुख में एकदम परिवर्तन होगा। गूड़, तिल, तेल, रूई, कपास, चना, चावल, घी में मन्दी का वातावरण बनेगा। सोना, चाँदी आदि धातुओं तथा ऊनी वस्त्रों में तेजी बनेगी।

5 फर. को सूर्य धनिष्ठा में तथा शुक्र श्रवण में आएगा। सोना, चाँदी, मोती, लाल-चन्दन, रूई, कपास, गेहूँ, चावल, सीसा, स्टील, लोहे, जबकि गेहूँ, जौ, चने में मन्दी बनेगी। 8 फर. को प्लूटो धनु राशि में मंगल के साथ योग करके शनि के समसप्तक योग बनाएगा। शेरों, तेल, कच्चे तेल, मैथानल, गूड़, चने, सोयाबीन, सोना, चाँदी में अच्छी तेजी बनेगी। भौमवती अमावस भी तेजीकारक है। 19 फर. को बुध धनिष्ठा में आने से सोना, चाँदी, धान्य में मन्दी, रूई, सन, सूत में घटाबढ़ी, चावल, चीनी में तेजी बनेगी। 10 फर. गुरुवार को कुम्भस्थ चन्द्रमा कालीन चन्द्रदर्शन होगा। गूड़, चीनी में मन्दी, चाँदी, रूई में पहले मन्दी फिर तेजी, रूई, कपास, रेशमी व ऊनी कपड़ों, घी, तेल, तिलहन में तेजी बनेगी।

12 फर. को सूर्य कुम्भ राशि में प्रवेश करेगा। शुक्र भी पूर्व में अस्त हो रहा है। रूई, चाँदी, कपास, चीनी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। अतएव मन्दा बनते ही आने वाली तेजी में लाभ लें। सोना, ताँबा, पीतल, जिस्त, हॉग, कैसर, सूरजमुखी, सोयाबीन, सरसों, अलसी, एरण्डी, खाद्य तेलों में अच्छी तेजी बनेगी। शनिवारी संक्रान्ति भी तेजीकारक है। सौरशुक्रवारे रविसंक्रमश्चैत्र दुर्भिक्षमायाति च सर्वधान्यम्। पृथ्वीसरोगानुपतेः प्रजासुभवेमहायुद्धभयतदानीम्॥ 13 फर. को बुध भी कुम्भ राशि में आकर इन जिन्सों में तेजी को बढ़ावा देगा।

16 फर. को शुक्र धनिष्ठा में आने से चावल, मूँग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, सोना, चाँदी,

कपास, ग्वार में तेजी बनेगी। 17 फर. को बुध शतभिषा में आने से सोना-चाँदी में घटाबढ़ी रहेगी। पहले मन्दी, फिर तेजी बने। 19 फर. को सूर्य शतभिषा में आने से सोना, चाँदी, सत, सन, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, हींग, जायफल, लाख, छुहारा, सोंठ, हल्दी, गुड़ में तेजी बनेगी।

21 फर. को शुक्र कुम्भ राशि में सूर्य-बुध एवं यूरेनस के साथ मेल करेगा। शेरों, रूई, चाँदी, गुड़, चीनी, गेहूँ, चना, जौ, मूँग, ज्वार, बाजरा तथा अन्य सफेद वस्तुओं में मन्दा बनकर अगले ही दिन तेजी का रश्मि बन जाएगा। अताएव मन्दे से निकलकर तेजी के सौदे करें।

24 फर. को बुध पू. भा. में आने से सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा तथा अनाजों में मन्दी तथा रूई में घटाबढ़ी रहे। 27 फर. को शुक्र शतभिषा में आने से गेहूँ, शेरों, गुड़, चीनी, चावल, घी, सरसों, रूई, सोना, चाँदी में तेजी होगी।

मार्च-1 मार्च को बुध मीन राशि में प्रवेश करेगा। गुरु की शुभ दृष्टि मन्दीकाक तथा मंगल व शनि की बुध पर दृष्टियाँ तेजीकाक हैं। बाजार के प्रारम्भिक रुख को देखकर आगे चलें। बुध भी पश्चिम से उदय होगा। शेरों, रूई, गुड़, चीनी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। सोने, चाँदी में पहले तेजी, फिर मन्दी बनेगी। 3 मार्च को बुध उ. भा. में आने से चाँदी में घटाबढ़ी, रूई, चीनी, चावल, गेहूँ के भावों में समता रहे। 4 मार्च को सूर्य पू. भा. में आने से सोना, चाँदी, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तेल, गुड़, चीनी, गुगल, पीपलामूल, रूई में तेजी बनेगी।

6 मार्च को गुरु वक्री अवस्था में हस्त में प्रवेश करेगा। तेल, सोयाबीन में तेजी रहे, रूई, गुड़, चीनी, शक्कर, अरण्डी, अलसी, सरसों, घी, तेल, सोना, चाँदी, चने, हल्दी में मन्दी बने।

7 मार्च को मंगल उ. भा. में तथा वक्री शनि पुनर्वसु के दूसरे चरण में प्रवेश करेगा। रूई में विशेष तेजी, सोने, तेल, सोयाबीन, धान्य, घी, सरसों, उड़द में भी तेजी बनेगी। 9 मार्च को शुक्र पू. भा. में आने से रूई, तेल, पेट्रोल, कच्चे तेल में तेजी बने। 11 मार्च, शुक्रवार को चन्द्रदर्शन मीनस्थ चन्द्रमा कालीन होगा। सोना, चाँदी, चावल, चना, उड़द में तेजी बने। 12 मार्च को मंगल मकर में यूरेनस के साथ योग करेगा। बुध भी रेवती में प्रवेश करेगा। केसर, मजीठ, लाल चन्दन, लाल मिर्च, गुड़ आदि लाल वस्तुओं में तेजी जबकि रूई, सोना, चाँदी, ताँबा, गुड़, चीनी, घी, तेल, सरसों, तिल, अलसी एवं ऊन में मन्दी बने।

14 मार्च को सूर्य मीन राशि में बुध के साथ योग करेगा। इन पर गुरु की सप्तम तथा शनि की दशम दृष्टि भी है। तिल, तेल, तिलहन, चाँदी, रूई, सोने, गुड़, शक्कर, चीनी, सरसों, सोयाबीन में मामूली तेजी बनकर एक-दो दिन में पुनः मन्दी का वातावरण बनेगा।

17 मार्च को शुक्र मीन राशि में सूर्य, बुध के साथ योग करेगा। चाँदी, अनाज, सरसों, शेरों, बिनौला, अलसी, एरण्डी, गुड़, रूई में पहले मन्दी फिर तेजी बनेगी। इसी दिन सूर्य धी. भा. में आएगा। चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तेल तेज होंगे। बाजार के रुख को देखते हुए काम करें।

20 मार्च को बुध वक्री तथा शुक्र उ. भा. में आने से शेरों, खाण्ड, बिनौला, तिल, तेल, घी, गुड़, शक्कर, कपूर, सोने, चाँदी में तेजी बनेगी। 22 मार्च को शनि मार्गी होगा। बुध भी पश्चिम में अस्त होगा। रूई, तिल, सरसों, हींग, मिर्च, सोने में तेजी परन्तु चाँदी, शेरार मार्किट में मन्दी रहेगी।

24 मार्च को राहु मीन में तथा केतु कन्या में प्रवेश करेगा। तिलहन, सरसों, सोना, चाँदी में मन्दी बने। गुड़, चीनी, सोयाबीन में तेजी बने। 26 मार्च को मंगल श्रवण में आने से जौ, चना,

तिल, अफीम, सोना, चाँदी में तेजी बनेगी। रूई में घटाबढ़ी रहे। 27 मार्च को वक्री बुध उ. भा. में आने से चाँदी में घटाबढ़ी, रूई, गुड़, खाण्ड, चावल, अनाज के भाव सामान्य रहेंगे।

31 मार्च को सूर्य और शुक्र रेवती में आने से अलसी, सरसों, एरण्ड, मूँगफली, लहसुन, मोती, चने, चावल, तेज होंगे, रूई, कपास, चाँदी, चावल, चन्दन, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी बनेगी।

अप्रैल-1 मासारम्भ से ही मीन राशि में सूर्य, बुध, शुक्र, राहु का चारग्रही योग बना हुआ है। इस पर शनि तथा गुरु की विशेष दृष्टि पड़ रही है। फलस्वरूप गेहूँ, चना, सरसों, अलसी, मूँगफली, तिल, तेल में तेजी, चाँदी, गुड़, चीनी, शक्कर में मन्दी का वातावरण रहे। 4 अप्रै. को वक्री गुरु हस्त (3) में आने से रूई, गुड़, चीनी, शक्कर, घी, तेल, सरसों व रसदार वस्तुओं में मन्दीकाक होगा। 5 अप्रै. को शनि पुनर्वसु (3) में आने से तथा बुध पूर्व से उदित होने से रूई, सरसों, खल, बिनौले, गेहूँ, चने, छोटी इलायची, सोयाबीन, सोना, चाँदी में तीन दिनों के भीतर तेजी के योग बनेंगे।

10 अप्रैल रविवार को चन्द्रदर्शन मेष राशिस्थ चन्द्रमाकालीन होगा। रूई में पहले मन्दा, फिर तेजी, घी, तेल, तिल, अलसी, सरसों, खाण्ड, गुड़ में तेजी बनेगी। 11 अप्रै. को शुक्र अस्त अवस्था में अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में आने से गेहूँ, जौ, ज्वार, चावल, बाजरा आदि सर्व प्रकार के अनाज तथा रूई, चाँदी के भावों में तेजी के योग बनेंगे। अलसी, सरसों आदि तेलों में घटाबढ़ी होगी।

दैत्यगुरु यदा मेषे सर्वधान्य महर्घता।

12 अप्रै. को बुध मार्गी होने से गेहूँ, चने, धान्य आदि अनाजों में तेजी बनेगी। खल, बिनौला में घटाबढ़ी परन्तु शेरों में मन्दी बनेगी।

13 अप्रै. को सूर्य मेष राशि में शुक्र के साथ मेल करेगा। शुक्र पहले से ही अस्तंगत है। इन पर मंगल की दृष्टि भी है। वैशाख सक्रान्ति 30 मुहूर्ति बुधवार को है। गेहूँ, धान्यादि अनाज, उड़द, अरहर, मूँग, चना, जौ, मटर, खल-बिनौला आदि के भावों में अस्थिरता के बावजूद तेजी का रश्मि रहे, स्टील, ताँबा, लोहा, पीतल, सोना, चाँदी में धी. ता. 13 से 16 के मध्य तेजी का माहौल करेगा।

(ता. 18 से 20 अप्रै. तक वायदा एवं थोक मार्किट में विशेष परिवर्तन नहीं होंगे।)

21-अप्रै. को शुक्र भरणी में आने से तिल, तेल, सरसों, अलसी, घी, उड़द आदि में मन्दी, गेहूँ, चना, मूँग, मोठ, ज्वार में घटाबढ़ी तथा रूई, पटसन, चाँदी में तेजी रहेगी।

22 अप्रै. को मंगल कुम्भ राशि में प्रवेश कर गुरु की दृष्टि से ओझल होगा। गेहूँ, धान्य, उड़द आदि अनाजों, गुड़, चीनी, खल, बिनौला, सोना, शेरों में तेजी, रूई व चाँदी में घटाबढ़ी रहेगी। 26 अप्रै. को शुक्र पश्चिम से उदय होने से सोना, चाँदी, तिलहन, धान्य, शेरों में तेजी परन्तु घी, शक्कर, गुड़ में मन्दी का रश्मि रहेगा। 27 अप्रै. को सूर्य भरणी तथा बुध रेवती में आने से 2-3 दिन के भीतर केसर, मजीठ, लाल चन्दन, लाल मिर्च आदि लाल वस्तुओं, सोना, चना, चावल, अलसी में तेजी बने जबकि गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों, घी, चाँदी में प्रारम्भ में तेजी बनकर पुनः मन्दी बनेगी। अतः व्यापारी तुरन्त मुनाफा लें।

मई-2 मई की प्रातः को मंगल शतभिषा में आने से गेहूँ, चने, अरहर, लाल मिर्च, जूट-

पटसन, सोना, चाँदी रूई में पहले मन्दी बनकर पुनः कुछ तेजी बने। इसी दिन शुक्र कृतिका तथा वक्री गुरु हस्त (2) में आने से चावल, होंग, तिल, सरसों, रूई में घटाबढ़ी एवं मन्दी का रुख बने।

5 मई को शुक्र वृष राशि में प्रवेश करेगा। इस पर मंगल की दृष्टि भी रहेगी। रूई, तेल, कपास, सोयाबीन में मन्दी का रुझान परन्तु सोना, चाँदी, शेरों में घटाबढ़ी के बाद अच्छी तेजी बनेगी।

8 मई को बुध अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में सूर्य के साथ सम्बन्ध करेगा। रूई, कपास, चाँदी में घटाबढ़ी, सोना, दूध-पाउडर, चारा व चौपायों में तेजी, गुड़, घी, चने में मन्दी रहे। रविवारी अमावस अनाज, सोने के दामों में तेजीकार रहेगी। 9 मई, सोमवार को चन्द्रदर्शन वृष राशिस्थ चन्द्रमा कालीन होगा। मूँग, मोठ, चने, रूई में तेजी, सोने-चाँदी में मन्दी बनेगी। 11 मई को सूर्य कृतिका में आने से गेहूँ, घी, रूई, सोना, चाँदी, अलसी, एरण्ड, जौ, चना, मूँग, मोठ, चावल, राई, सरसों में तेजी बनेगी। 13 मई को शुक्र रोहिणी में आने से घी, तेल, गुड़, अलसी, सोना, चाँदी, एरण्ड, सरसों, मूँगफली, चीनी, छुहारा, सुपारी, नारियल, ऊन में मन्दी बने।

14 मई को सूर्य वृष राशि में शुक्र के साथ मेल करेगा, इन पर मंगल की विशेष चतुर्थ दृष्टि रहेगी। ज्येष्ठ संक्रान्ति 30 मुहूर्ति शनिवार को है। सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रूई, सूत, सुपारी, नारियल, तिल, तेल, सरसों, शेरों में तेजी, जौ, चना, गेहूँ, अरहर, मूँग, चावल में कुछ मन्दी बने।

16 मई को बुध भरणी में आने से गेहूँ, चावल आदि अनाजों में 8 दिनों के भीतर तेजी बने। 20 मई को मंगल पू. भा. में तथा नैपच्यून वक्री होने से तिल, तेल, एरण्ड, अलसी, मूँगफली, खल, बिनौला, सोयाबीन, रूई, सूत, कपास, नारियल, सुपारी, सोना, चाँदी में तेजी बनेगी। 23 मई को बुध कृतिका में आने से अनाज के भाव तेज, रूई में घटाबढ़ी के बाद तेजी परन्तु चाँदी में मन्दी रहेगी। 24 मई को शुक्र मृगशिरा में आने से गेहूँ, चना, ज्वार, मूँग, अलसी में मन्दी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी बनेगी। 25 मई को सूर्य रोहिणी में तथा बुध भी वृष राशि में सूर्य, शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल की दृष्टि तेजीकारक तथा गुरु की दृष्टि मन्दीकारक है। वायदा बाजार में काफी घटाबढ़ी रहेगी। चाँदी, रूई में काफी घटाबढ़ी रहे। गेहूँ, जौ, चावल, मटर, रूई, कपास, सूत, अफीम, तिल, तेल, एरण्ड, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, सुपारी, मिर्च, राई में तेजी बने।

26 मई को शनि कर्क राशि में प्रविष्ट होकर गुरु पर विशेष दृष्टि रखेगा। जिससे सोना, चाँदी, लोहा, लकड़ी, हल्दी, केसर, स्टील, तेल, मैथिल तथा पेट्रोलियम पदार्थों में तेजी होगी। 29 मई को शुक्र मिथुन में आने से एरण्ड, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार में मन्दी, अलसी, गुड़, घी में अच्छी घटाबढ़ी, गेहूँ, चना, जौ, चावल, कपास, रूई में तेजी बने। 30 मई को बुध रोहिणी में आने से तिल, तेल, सरसों, रूई, कपास, सूत, सोना, चाँदी, चावल, गुड़, खाण्ड में तेजी रूई में पहले तेजी फिर मन्दी, राई, सन्, ऊनी एवं रेशमी वस्त्रों में मन्दी बने।

जून-3 जून को मंगल मीन राशि में प्रवेश करेगा। इस पर गुरु की दृष्टि रहेगी। चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी, सोना, रूई, तृण, काष्ठ, लकड़ी में तेजी बने। 4 जून को शुक्र आर्द्रा में आने से गेहूँ, चना, ज्वार में मन्दी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी बनेगी। 5 जून को बुध मृगशिरा

नक्षत्र में आण्णा तथा गुरु मार्गी होगा। रूई में पहले मन्दी फिर तेजी, चाँदी में घटाबढ़ी होकर मन्दी, गेहूँ, तिल, गुड़ में मन्दी, सरसों, चावल, एरण्ड में तेजी बनेगी। 6 जून को सोमवती अमावस भी रूई, सूत, चाँदी, कपास तथा शेष बाजार के लिए मन्दीकारक रहेगी।

8 जून को सूर्य मृगशिरा में, मंगल उ. भा. में तथा बुध मिथुन राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। रूई, सूत, रेशम, सन्, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चाँदी, उड़द, मूँग, मोठ, चने, बाजरा, अलसी तथा शेरों में अच्छी तेजी का चास है।

11 जून को बुध आर्द्रा नक्षत्र में आकर गेहूँ, तिल, उड़द, जौ, चना, मूँग, मोठ में मन्दी रहे। 14 जून, मंगलवार को सूर्य मिथुन राशि में बुध एवं शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल की दृष्टि भी रहेगी। सूत, कपास, रूई, सरसों, लोहे, तिल, तेल, गुड़, खल, बिनौला, शक्कर, चीनी, घी, मूँग, उड़द, गेहूँ, चना, चाँदी, चावल, फलों, शेरों में तेजी बनेगी। इसी दिन बुध भी पश्चिम से उदय होने से रूई तथा शेरों में घटाबढ़ी के बाद अगले दिन मन्दी भी सम्भव है। व्यापारी बाजार के रुख को देखते हुए आगे बढ़ें।

15 जून को शुक्र पुनर्वसु में आने से धान्य, चावल, खल, बिनौला, तेल, सोना, चाँदी, रूई, कपास, सूत में मन्दी बने। 18 जून को बुध पुनर्वसु में आने से चाँदी, रूई, कपास, सूत, सन में अच्छी मन्दी बने। 21 जून को सूर्य आर्द्रा में आने तथा यूरेनस वक्री होने से रूई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, मोती, गेहूँ, चावल, चने, जौ, चाँदी तेज, सोने में घटाबढ़ी रहेगी।

23 जून को शुक्र कर्क राशि में शनि के साथ मेल करेगा। रूई में पहले अच्छी मन्दी, फिर तेजी, अलसी, एरण्ड, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी तथा चाँदी, गेहूँ, जौ, चना, मटर, अरहर में मन्दी बने। तेल कम्पनियों से सम्बन्धित शेरों में तेजी बनेगी।

24 जून को बुध कर्क राशि में शुक्र एवं शनि के साथ मेल करेगा। शनि भी पुष्य नक्षत्र में प्रवेश करेगा। गुड़, दूध, दुग्ध पाउडर, घी, तेल, शक्कर, मूँगफली, सरसों, सोने में तेजी बनेगी। चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी, रूई में मन्दी बने। 26 जून को बुध तथा शुक्र पुष्य नक्षत्र में आने से रूई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी, सोना, चाँदी, लाख, चमड़ा, कपूर, पारा, हाँग, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी बने, रूई, सूत, सन, रेशम, ऊनी धागों में तेजी बनेगी। 27 जून को मंगल रेवती में आने से गेहूँ, चना, मूँग, मोठ, जौ, ज्वार, बाजरा सोने में मन्दी, चाँदी में अच्छी तेजी, रूई में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। (मासान्त तक वायदा बाजार में मन्दी का वातावरण रहेगा।)

जुलाई-4 जुला. तक घटाबढ़ी के रियेक्शन रहेंगे। मन्दे में खरीद, तेजी में बेचकर तुरन्त मुनाफा लेते रहें। 5 जुला. को सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र में आने तथा शनि पश्चिम में अस्त होने से रूई, सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों, लाख, देवदारू, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, हरड़, सुपारी, नारियल, केसर, मजीठ, नील, सोंठ, गुगुल आदि करियाना बाजार तथा शेरों में तेजी रहेगी।

6 जुला. को बुध आश्लेषा में आने से तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूँग, मूँगफली में तेजी बने।

7 जुला. गुरुवार को कर्कस्थ चन्द्रमा कालीन चन्द्रदर्शन होगा। शुक्र भी आश्लेषा में आने से चावल, गुड़, चीनी में मन्दी, रूई में घटाबढ़ी के बाद तेजी, चाँदी, घी, तेल, कपास, रेशमी व

ऊनी धागों में तेजी बनेगी। 9 जुला. को गुरु हस्त (3) में आने से भी रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अरण्डी, अलसी, सरसों, घी, तेल, सोना, चाँदी, मोती, गेहूँ, चना, हल्दी में मन्दी बनेगी।
(9 से 15 जुला. तक मन्दे का ही वातावरण रहे, परन्तु बीच-बीच में अचानक तेजी के चाँस अवश्य बनेंगे, तेजी दिखते ही तुरन्त निकाल लें, पुनः मन्दा बनेगा।)

16 जुला. को सूर्य कर्क राशि में बुध, शुक्र तथा शनि के साथ मेल करेगा। शेरयों, रूई, सूत, बादाम, सुपारी, फल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, चाँदी, सोना तैज, गेहूँ, चना, जौ, मटर, अरहर, उड़द, मूँग में मन्दी बने।

18 जुला. को शुक्र सिंह राशि में तथा मंगल मेष राशि में आकर कर्कस्थ सूर्य, बुध, शनि पर दृष्टि रखेगा। शेरयों, सोना, ताँबा, जौ, चना, गेहूँ, लाल चन्दन, मजीठ, लाल मिर्च, लाल रंग की वस्तुएँ, ऊन, गुड़ में अच्छी तेजी, रूई में पहले मन्दी फिर तेजी, चाँदी में मन्दी बने। 19 जुला. को सूर्य पुष्य में आने से तिल, तेल, सरसों, खाण्ड, चावल, गेहूँ, जौ, ज्वार, बाजरा, सुपारी, सोठ, गुगुल, मोम, हॉग, हल्दी, लाख, सन, ऊनी वस्त्र, सिक्का, सोना, चाँदी में तेजी बनेगी।

21 जुला. को शनि पुष्य (2) में आने से अनाज, रूई, अलसी, सूत, सन में तेजी रहे। 23 जुला. को बुध वक्री होगा। शेरयों, खाण्ड, बिनीला, तेल, तिल, घी, गुड़, शक्कर, कपूर, चाँदी में तेजी, गेहूँ, जौ, चने, रूई में मन्दी बनेगी। ता. 27 तक तेजी के रुख को ही ध्यान में रखते हुए सौदे करें।

28 जुला. को राहु रेव (2), केतु हस्त (4) में आने से तेल, तिलहन में मन्दा बने। 29 जुला. को शुक्र पू. फा. में आने से गेहूँ, जौ, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूँग, चना में मन्दी बने।

अगस्त-2 अग. को सूर्य आश्लेषा में आने से सोना, चाँदी, रूई, बिनीला, गेहूँ, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च, मजीठ, नील में 1-2 दिन में तेजी बनेगी। 5 अग. को गुरु हस्त (4) में आने से रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अरण्डी, अलसी, सरसों, घी, तेल, सोना, चाँदी, चना, हल्दी में मन्दी बने। 9 अग. को शुक्र उ. फा. में आने से गेहूँ, जौ, मटर, चने, रूई में तेजी सोना-चाँदी में घटाबढ़ी चले। 10 अग. को वक्री बुध पुष्य में तथा शनि पूर्व से उदित होने से सोना, चाँदी, स्टील, लोहे, पीतल तथा अनाज, उड़ददि में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी। 12 अग. को शुक्र कन्या राशि में गुरु के साथ मेल करेगा तथा इन पर शनि की दृष्टि रहेगी। चाँदी में घटाबढ़ी होकर तेजी, गेहूँ, गुड़, खाण्ड, ऊनी, रेशमी वस्त्रों, चावल में तेजी बनेगी।

16 अग. को सूर्य सिंह राशि में प्रवेश करेगा, बुध भी मार्गी होगा। चाँदी, सोना, रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों आदि लाल रंग की वस्तुओं में तेजी, शेरयों, चावल में मन्दी बने।

20 अग. को शुक्र हस्त में आने से रूई, चावल में मन्दी, सोने-चाँदी में तेजी, खाण्ड, गुड़, शक्कर में घटाबढ़ी चले। 21 अग. को बुध आश्लेषा में आने से तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूँग, मूँगफली में तेजी बनेगी। 25 अग. को गुरु चित्रा में आने से शेरयों, पाट, सूत, सन, चने में तेजी, रूई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी, चावल, चाँदी में भी मन्दी रहे।

30 अग. को सूर्य पू. फा. में आने से जीरा, सोना, गुड़, सोयाबीन, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूँ, ज्वार, चावल, रूई में तेजी रहे। चावल में घटाबढ़ी रहे। 31 अग. को शुक्र चित्रा में आने से सोना, चाँदी, शेरय बाजार में घटाबढ़ी के बाद भावों में तेजी होगी।

सितम्बर-1 सित. से बुध सिंह में सूर्य के साथ मेल करेगा। सोना, चाँदी, सूत, रूई व ऊनी वस्त्रों में तेजी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, शेरयों, कपूर में मन्दी बने। 3 सित. को शनिवारी अमावस भी रूई में घटाबढ़ी के बाद तेजी तथा चावल, चाँदी, अनाज में तेजी लागेगी। ता. 4 को बुध पूर्व में अस्त होने से गेहूँ, चावल, सोने में तेजी, रूई में घटाबढ़ी रहेगी। 5 सित., सोमवार को कन्या राशिस्थ चन्द्रमा कालीन चन्द्रदर्शन होगा। मूँग, मोठ, चने, रूई, खल, बिनीला में तेजी, सोने-चाँदी में घटा बड़ी होगी। अन्य बहुमूल्य धातुओं में तेजी होगी।

6 सित. को शुक्र तुला राशि में प्रवेश करेगा। इस पर मंगल की दृष्टि होने से बाजार में तेजी का वातावरण बनेगा। बाजार के प्रारम्भिक रुख को देखते हुए ही आगे बढ़ें। रूई, चाँदी, शेरयों में घटाबढ़ी के बाद तेजी, सोने, गुड़, खाण्ड, बिनीले, लाल मिर्च, इमली में तेजी बनेगी।

8 सित. को बुध पू. फा. में आने से गुड़, खाण्ड, गेहूँ आदि अनाज मन्दे होंगे। 11 सित. को मंगल कृतिका में आने तथा गुरु चित्रा (2) में आने से 10 दिन में गेहूँ, मूँग, मोठ, चावल, राई, मसूर, तिल, तेल, सरसों, घी, चाँदी, सूत में तेजी, रूई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

12 सित. को शुक्र स्वाती में आने से गेहूँ, मक्का, चना, जौ में मन्दी, चीनी, चावल, गुड़ में तेजी बनेगी। 13 सित. को सूर्य उ. फा. में आने से रूई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चाँदी, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल, बाजरा, मक्की के भावों में तेजी बनेगी। 15 सित. को बुध उ. फा. में आने से उड़द, मूँग, मोठ, मसूर, अरहर में कुछ तेजी, रूई, चाँदी, शेरयों में मन्दी रहे।

16 सित., शुक्रवार को सूर्य कन्या राशि में गुरु के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की विशेष दृष्टि रहेगी। आश्विन संक्रांति 15 मुहूर्ति शुक्रवार को होने से गेहूँ, चावल, चने, खाद्य तेलों में तेजी का रुझान करेगा। तिल, तेल, मजीठ, नारियल, गुड़, रूई, सोना, चाँदी में तेजी बने। चाँदी, शेरयों में भी घटाबढ़ी अधिक रहेगी। (ता. 16 से 21 सित. तक बाजार में मन्दे-तेजी के रियेक्शन आते रहेंगे, तुरन्त छोटे-छोटे सौदे निपटाएं।)

22 सित. को बुध हस्त में आने से बाजरा, जौ, मूँग, सोयाबीन में मन्दी बनेगी। 23 सित. को शुक्र विशाखा में आने से रूई, सूत, सन, धान्य में मन्दी बनेगी। 26 सित. को सूर्य हस्त में आने से गेहूँ, जौ, ज्वार, गुड़, खाण्ड, कपास, रूई, सूत, जूट, लकड़ी, नमक, हरड़, हॉग, धनिया, हल्दी, चने दालचीनी गर्म मसाले में तेजी बनेगी।

28 सित. को गुरु तुला राशि में शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल की दृष्टि यद्यपि तेजीकारक है। गुरु, तुला राशि में घी, तेल, तिल, अलसी, सरसों में मन्दी करता है। परन्तु यहाँ मन्दी न बनकर 5 दिन के भीतर इनमें तेजी बन सकती है। सोने, चाँदी, नारियल, रूई, मजीठ, सुपारी में भी तेजी बनेगी।

29 सित. को राहु रेव (1) में तेल, तिलहन में मन्दा करेगा। 30 सित. को बुध चित्रा में आने से रूई, चाँदी, शेरयों में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

अक्टूबर-1 अक्टू. को मंगल वक्री होने से 1-2 दिन में ही गुड़, अलसी, सरसों, सोना, चाँदी, सोयाबीन, पीतल, ताँबा, अनाज, हल्दी, लाल मिर्च में तेजी बनेगी।

2 अक्टू. से शुक्र वृश्चिक राशि में आएगा। इस पर वक्री मंगल की दृष्टि रहेगी। रूई, शेरयों, चाँदी, अफीम, बादाम गिरी में घटाबढ़ी के बाद तेजी, गुड़, जौ, उड़द, मूँग, मोठ, बाजरा, अलसी सरसों, सोयाबीन, सूरजमुखी में भी तेजी का रुझान बनेगा।

घटनाएँ बढ़ेंगी। महंगाई बढ़े, कहीं विचित्र रोग एवं दुर्भिक्ष का भय रहेगा। ता. 16 को मार्गशीर्ष संक्रांति 30 मुहूर्ति बुधवार की है। छोटी इलायची, जायफल, सुपारी, गेहूँ, धान्य, नारियल, ऊनी वस्त्र, ताँबा आदि लाल वर्ण की वस्तुएँ तेज होंगी। ता. 19 को सूर्य अनु. में जाएगा। इसी दिन बुध परिचम में अस्त हो रहा है जिससे गेहूँ, धान्य, किशमिश, चने, ऊन एवं सुवर्ण, चाँदी, पीतल आदि सर्व प्रकार की धातुएँ तेज भाव होंगी। ता. 21 को वक्रो मंगल भरणी में आने से गेहूँ, जौ, चने, चावल, खली, मूँगफली, गर्म मसाले, चारा, सोना, चाँदी, लोह आदि धातुएँ तेज होंगी। ता. 22 से शनि कर्क राशि में वक्री होने से सर्व प्रकार अनाज, उड़द, मक्की, धान्य व लोहादि धातुएँ तेजी का रूख करेंगी। ता. 26 को वक्री बुध अनु. में आने से सोना, चाँदी व रूई में घटाबढ़ी के बाद कुछ मन्दी हो। परन्तु यह मन्दी अस्थायी होगी। ता. 29 को गुरु स्वा. (3) में आने से रूई, कपास व चाँदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी रहे। ता. 30 को बुध पूर्वोदित होना कपास, रूई, चाँदी एवं चावल में तेजीकारक रहेगा।

दिवाळी-ता. 1 से राहु उषा (4) में और केतु हस्त (2) में प्रविष्ट होने से सर्व प्रकार अनाज, किशमिश, गर्म एवं ऊनी वस्त्र तथा ऊन के भाव तेज होंगे। ता. 2 से सूर्य ज्येष्ठा नक्षत्र में आने से भी गेहूँ, चावल, अलसी, सरसों, एरण्डी, हॉग, गुगुल, सोयाबीन, गुड़, चीनी, सोना व चाँदी में तेजी का रूख होगा। ता. 3 से शुक्र मकर में आकर शनि को सप्तम दृष्टि से देखेगा। गेहूँ, जौ, चने, चावल, उड़द, धृत, गुड़, चीनी आदि में तेजी होगी। रूई व चाँदी में घटा-बढ़ी होकर बाद में तेजी होगी। ता. 4 से बुध बृश्चिक में मार्गी होगा। जिससे एरण्ड, खल-बिनौला, अलसी, सोयाबीन, गुड़, शक्कर, मूँगफली में तेजी होगी। ता. 9/10 को बुध अनुषा में आने से अनाज के भावों में विशेष परिवर्तन न होवे, किन्तु रूई, कपास, सोना व चाँदी में मन्दी का रूझान होगा। ता. 10 से मंगल मेष राशि में मार्गी होने से गेहूँ, मक्की, चने, अलसी, तोरिया, ताँबा, सोना, जूट, पटसन, पीतल एवं चाँदी के भावों में घटाबढ़ी एवं अनिश्चितता रहेगी। ता. 12 से 14 दिसं. के मध्य कारियाना के थोक एवं वायदा बाजार में विशेष परिवर्तन नहीं होंगे। ऐसे योग हैं। ता. 15 से सूर्य धनु राशि में आकर शनि के साथ षडाष्टक योग रहेगा। रूई, कपास, सन-सूत, तिल-तैल, अलसी, सोना-चाँदी में तेजी होगी। गेहूँ, अनाज आदि की मार्कोट मन्दी का रूझान रहेगा। ता. 16 से गुरु स्वाती के चतुर्थ चरण में प्रवेश करने से तैल, सरसों, अलसी, एरण्डी, तैल-मूँगफली में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी। 18-19 को तेजी के ही योग हैं। 19 की प्रातः को सरसों, तैल-सूरजमुखी, सोयाबीन, गरी-खोपा, तारपीन, अलसी आदि सर्व प्रकार के खाद्य तैल तेजी में खुलेंगे। यह तेजी की चमक 3 दिन तक छाई रहेगी। ता. 20 को शनि पुष्य (4) में आने से अलसी, रूई, सन, सूत, पटसन, खल-बिनौले, चौपाय व पशुचारा तेज होंगे। ता. 24 से शुक्र मकर राशि में वक्री होगा। जिससे अनेक व्यापारिक वस्तुओं की लाईन बदलने की सम्भावना होगी। खाद्य तैल, मूँगफली, किशमिश, घी, किशमिश, चीनी, चावल, रूई, चाँदी व सुवर्ण के भावों में वृद्धि होगी। ता. 28 से सूर्य पूषा नक्षत्र में आने से गेहूँ, धान्य, चने, गुगुल, गुड़, खली, सरसों तैल, अलसी, नारियल, सोयाबिन, सूरजमुखी, मूँगफली एवं मूँगफली के तेलों में तेजी के योग होंगे। ता. 30 से बुध भी मूला नक्षत्र एवं धनु राशि में सूर्य से मेल करेगा। अनाज, रूई, सोना व चाँदी में कुछ घटाबढ़ी के बाद तीन में तेजी होगी।

3 अक्टू. को सोमवती अमावस यद्यपि सफेद वस्तुओं चावल, रूई, चाँदी में घटाबढ़ी रहेगी। परन्तु हस्त नक्षत्र कालीन सूर्यग्रहण होने से तिल, तेल, चने में अच्छी तेजी बनेगी। 4 अक्टू. को बुध तुला में गुरु के साथ मेल करेगा। मंगल की दृष्टि भी है। रूई, गुड़, खाण्ड, सोना, लोहा, पीतल, अफीम में तेजी, चाँदी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूँगफली में मन्दी बनेगी। परन्तु हमारे विचारानुसार यहाँ मन्दी न बनकर अचानक तेजी की लाईन बन सकती है। सावधानीपूर्वक चले। 5 अक्टू. से शुक्र अनु. में तथा तुला राशिस्थ चन्द्रमा कालीन चन्द्रदर्शन होगा। अलसी, एरण्डी में तेजी, गुड़, खाण्ड, चावल, नमक में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी। 6 अक्टू. को बुध परिचम से उदय तथा गुरु परिचम में अस्त होगा। रूई, शेरों में मन्दी, चाँदी में तेजी होगी। 9 अक्टू. को बुध स्वाती में आने से रूई, शेरों में मन्दी बने। 10 अक्टू. को सूर्य चित्रा में आने से रूई, सूत, सोना, चाँदी, मोती, गुड़, खाण्ड, अरहर, गेहूँ, चना, तिल, नारियल, सन, केसर, कपूर, बादाम आदि में मामूली में तेजी बनेगी। 13 अक्टू. को गुरु चित्रा (4) में आने से चाँदी, अनाज, रूई में घटाबढ़ी होगी।

17 अक्टू. को सूर्य तुला राशि में बुध एवं गुरु के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल की दृष्टि भी रहेगी। रूई, तिल, चाँदी, तेल में मामूली फिर तेजी होगी। गेहूँ, जौ, चना, अलसी, सोना, ताँबा, लाल-चन्दन, मजीठ, श्रीफल, सुपारी में तेजी बनेगी।

18 अक्टू. को बुध विशाखा में आने से रूई, कपास आदि में घटाबढ़ी होगी। 21 अक्टू. को वक्री मंगल भरणी (4) में आने से सोना, चाँदी, रूई, चावल, बाजरा, गेहूँ, सरसों, गुड़ में तेजी होगी। 23 अक्टू. को सूर्य स्वाती में आने से रूई, सूत, सन, रेशम, सोना, चाँदी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हॉग, गुगुल में तेजी बनेगी।

25 अक्टू. से बुध बृश्चिक राशि में शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल की दृष्टि है। घी, तेल, सरसों, रूई, चाँदी, शेरों में तेजी बने। सोने में विशेष तेजी नहीं होगी। 28 अक्टू. को बुध अनु. में तथा गुरु स्वाती में आने से सूत, सन, रूई, सोना, चाँदी, तिलहन, तैल, सोयाबीन में घटाबढ़ी होगी। 30 अक्टू. से शुक्र धनु में आने से शेरों, किशमिशादि मेवे, जवाहरात आदि चाँदी, सोना, ताँबा में तेजी, रूई, सूत, कपास, चावल, खाण्ड में भी घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

नवम्बर-ता. 3 नव., गुरुवार को बृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा कालीन चन्द्रदर्शन होगा। रूई, कपास, रेशमी व ऊनी कपड़े, घी, तैल, सोयाबीन, चाँदी में तेजी बने, गुड़, चीनी, चने में कुछ मन्दी बने। ता. 6 नव. से सूर्य विशाखा में आने से जौ, चावल, गेहूँ, मसूर, गुड़, खाण्ड, रूई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड, अफीम, अलसी, चाँदी में तेजी बनेगी। (ता. 6 से 11 नव. तक बाजार घटाबढ़ी के बावजूद बाद में तेजी होगी।)

12 नव. को बुध ज्येष्ठा तथा शुक्र पूषा में आने से घी, गुड़, खाण्ड, चावल में तेजी, मूँग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों, नमक, सोयाबीन में उता-चढ़ाव के बाद तेजी होगी। 13 नव. को गुरु स्वा. (2) में तथा ता. 14 से बुध बृश्चिक में वक्री हो जाने से चीनी, गुड़, शक्कर, हल्दी, लकड़ी, बिनौले तेज भाव होंगे, परन्तु सरसों, अलसी व रूई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी होगी। ता. 15 मंगलवार को पूर्णिमा का क्षय होने से गेहूँ, चावल व लोह आदि धातुएँ तेज भाव होंगी।

कार्तिक शुक्ल में तेरह दिन का पक्ष होने से देश में कहीं उपद्रव, तोड़-फोड़ एवं हिंसा की

चमत्कारिक मन्त्र-तन्त्र एवं यन्त्र

'मन्त्र' वह दिव्य शक्ति है, जिसके द्वारा दैवी शक्तियों का अनुग्रह, उपयुक्त साधना द्वारा सुगमता से प्राप्त किया जा सकता है। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति के लिए कर्तव्य को प्रेरणा देने वाली शक्ति साधना के भी मन्त्र कहते हैं।

मन्त्र सिद्धि एवं साधना के लिए दृढ़, संकल्प शक्ति एवं श्रद्धा भावना का होना आवश्यक है। जैसा कि 'भावचूड़ामणि' में लिखा गया है—

बहुजापात् तथा होमात् कायक्लेशादिविस्तरेः । न भवेत् विना देवो यन्त्रमन्त्राः फलाद्रताः ॥

अर्थात् चाहे कितना ही अधिक जप, होम तथा शरीर-कष्टादि किया जाए, परन्तु भाव के बिना देवता, मन्त्र और यन्त्र आदि फलप्रद नहीं होते।

प्राचीनार्वाच्यों ने मन्त्र-तन्त्रादि के अनुष्ठान एवं सिद्धि के लिए कुछ विशेष नियमों को पालन करने के भी निर्देश दिए हैं। जैसे—गोपनीयता, मन व शरीर की शुद्धि, शुभ स्थान, सात्विक भोजन, शुभासन, विनियोग, मन्त्र, देवता, दिशा एवं शुभ-मुहूर्त्तादि का ज्ञान होना आवश्यक बताया गया है। जिनका पालन करके मन्त्रानुष्ठान शीघ्र व सुलभ हो जाती है। इनकी विस्तृत व्याख्या हमारी दिसम्बर, २००५ में प्रकाशित होने वाली पुस्तक 'शिव मन्त्रावली' में दी गई है।

मन्त्र एवं यन्त्रों के अनुष्ठान एवं सिद्धि के लिए सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, सूर्य-चन्द्र क्रांतिनाम्य का काल, श्रीमहाशिवरात्रि काल, दीपावली, अक्षया तृतीया, सायन एवं नरयण संक्रान्ति पुण्यकाल, होलाष्टक, रवि-गुरु-पुष्यादि योग, नवरात्रों में, अमृत सिद्धि योगों, भौमवासरी अमावस आदि पर्वों को विशेष प्रशस्त माना गया है।

—श्री दुर्गा सप्तशती के कुछ सिद्ध मन्त्र—

श्री दुर्गासप्तशती के ७०० श्लोक, सभी मन्त्र स्वरूप हैं। जो धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष चारों क्षेत्रों में सिद्धि एवं सफलता प्रदान करते वाले हैं, जो व्यक्ति जिस भावना एवं कामना से श्रद्धा एवं विधिपूर्वक मन्त्र का जाप एवं अनुष्ठान करता है तदनुसार ही उसे फल की प्राप्ति होती है। आगे हम कुछ कांक्ष्य मन्त्र लिख रहे हैं, जिनका विधिपूर्वक अनुष्ठान करने से मनोवोछित फल की प्राप्ति होगी। श्री दुर्गा मन्त्र जाप की सरल एवं बोधगम्य विधि ज्ञात करने के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित श्री दुर्गा सप्तशती का संशोधित संस्करण मंगला कर पढ़ें। प्रत्येक मन्त्र का सवा लाख की संख्या में विधिवत् पाठ करके दशमांश के तिल, क्षीर, घृतादि द्वारा हवन, उसका दशांश, तर्पण, मार्जन एवं कन्या पूजन करने से मनोवोछित फल अवश्य प्राप्त होता है।

(१) समस्त कार्यों में सिद्धि के लिए—

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।

नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥ अध्याय ११, श्लोक ९ ॥

(२) सब प्रकार के अरिष्ट की शान्ति के लिए—

ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी ।

दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥९॥ अंगला स्तोत्र ॥

(३) क्लिष्ट रोग की शान्ति हेतु—

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलान् अभीष्टान् ॥

त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता हि आश्रयतो प्रयान्ति ॥

यन्त्र-मन्त्र साधना हेतु विशेष मुहूर्त्त (काल)

सायन संक्रान्ति पुण्यकाल—प्रथम पृष्ठों पर देखें

क्रान्तिसाम्य काल २००५-०६ ई.

यहाँ सूर्य-चन्द्र का सूक्ष्म क्रांतिनाम्य काल दिया जा रहा है। विवाहादि मुहूर्त्तों में इसी सूक्ष्म क्रांतिनाम्य के काल को वर्जित किया गया है। इस समय विवाह के लिए अशुभ परन्तु यंत्र-मंत्र-तंत्र अनुष्ठान के लिए श्रेष्ठ समय होता है।

| प्रारम्भ काल | | समाप्ति काल | | प्रारम्भ काल | | समाप्ति काल | |
|--------------|---------|-------------|---------|-----------------|---------|-------------|---------|
| तारीख | घं. मि. | तारीख | घं. मि. | तारीख | घं. मि. | तारीख | घं. मि. |
| 7 जन. | 4-50 | 7 जन. | 10-31 | 14 अक्तू. | 21-47 | 15 अक्तू. | 1-29 |
| 19 जन. | 9-21 | 19 जन. | 15-18 | 27 अक्तू. | 22-14 | 28 अक्तू. | 2-54 |
| 2 फर. | 8-02 | 2 फर. | 12-38 | 9 नव. | 18-20 | 9 नव. | 22-41 |
| 14 फर. | 4-35 | 14 फर. | 8-47 | 22 नव. | 15-50 | 22 नव. | 21-43 |
| 27 फर. | 23-24 | 28 फर. | 3-30 | 5 दिसं. | 20-34 | 6 दिसं. | 2-13 |
| 12 मार्च | 0-35 | 12 मार्च | 4-14 | 19 दिसं. | 1-06 | 19 दिसं. | 8-16 |
| 25 मार्च | 14-11 | 25 मार्च | 18-11 | 28 दिसं. | 7-51 | 28 दिसं. | 13-59 |
| 6 अप्रै. | 21-40 | 7 अप्रै. | 1-20 | (सन् २००६ ई.) | | | |
| 20 अप्रै. | 6-32 | 20 अप्रै. | 11-04 | 9 जन. | 15-54 | 9 जन. | 22-05 |
| 2 मई | 17-16 | 2 मई | 21-24 | 23 जन. | 18-30 | 23 जन. | 23-39 |
| 16 मई | 1-01 | 16 मई | 6-41 | 4 फर. | 16-11 | 4 फर. | 20-39 |
| 28 मई | 18-19 | 28 मई | 23-37 | 18 फर. | 11-52 | 18 फर. | 16-23 |
| 11 जून | 5-10 | 11 जून | 12-26 | 2 मार्च | 14-39 | 2 मार्च | 18-10 |
| 24 जून | 9-13 | 24 जून | 15-14 | 16 मार्च | 0-09 | 16 मार्च | 4-21 |
| 2 जुला. | 19-37 | 3 जुला. | 2-42 | 28 मार्च | 15-21 | 28 मार्च | 18-40 |
| 17 जुला. | 2-00 | 17 जुला. | 7-22 | सूर्यग्रहण | | | |
| 29 जुला. | 1-05 | 29 जुला. | 6-21 | | | | |
| 12 अग. | 2-29 | 12 अग. | 7-03 | 3 अक्तू. | 13-06 | 2 अक्तू. | 18-58 |
| 23 अग. | 23-15 | 24 अग. | 3-09 | चन्द्रग्रहण | | | |
| 6 सितं. | 17-51 | 6 सितं. | 22-00 | | | | |
| 18 सितं. | 22-45 | 19 सितं. | 2-10 | | | | |
| 2 अक्तू. | 7-33 | 2 अक्तू. | 11-44 | 17 अक्तू. | 17-04 | 17 अक्तू. | 18-03 |

मुकद्दमे में विजय प्राप्ति यन्त्र

इस यंत्र को चांदी के पत्रे अथवा भोजपत्र पर रविपुष्य, गुरुपुष्य, सायन-संक्रान्ति, हस्त, मूला नक्षत्र कालीन अथवा दीपावली, ग्रहण के दिन सू.उ. के पश्चात् तथा सूर्यास्त से पूर्व खुदवाकर प्रतिष्ठित कर प्रतिदिन पूजन करें, तो कोर्ट-कटहरी आदि विषयों में विजय प्राप्त होने की प्रबल सम्भावना होती है। यन्त्र को अपनी जेब में रखें—

पूजन मन्त्र— “ॐ नीली-नीली-महानीली (शत्रु पत्र/जज का नाम) जीभि तालू सर्व खिली, सहरी खिलो तत्क्षणय स्वाहा ॥”

पुत्र प्राप्ति यन्त्र

जिस स्त्री की कोई सन्तान न हो, उसे रविवार के दिन सर्पाक्षी के फूलों के पत्तों से युक्त डाली लाकर एक वर्ण की गाय के दूध में कुंवारी कन्या के हाथ से पिसवा कर एक कर लें। ऋतुमति होने पर चौथे से छठे दिन तक प्रतिदिन एक-एक तोला की मात्रा में इसका सेवन करें। सेवन से पूर्व निम्न मन्त्र को १०८ बार जाप करें—

ॐ नमो भगवते देवाय ॥ ॐ क्लीं देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते । देहि में तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥

तदनन्तर इस मन्त्र के साथ ही भोजपत्र पर अष्टगन्ध से यह यन्त्र लिखकर तावीज में भरकर गले या कमर में बांधने से बांझ स्त्री के भी पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है।

यदि यन्त्र न इस्तेमाल करना चाहें, तो उपर्युक्त मन्त्र का सवा लाख जाप करने के पश्चात् दशांश हवन, तर्पण, ब्राह्मण-भोजन यथाविधि करना चाहिए।

मन्त्र पाठ करने से पूर्व संकल्प, विनियोग, व्यास आदि 'सन्तान गोपाल स्तोत्र' नामक पुस्तक से अवश्य कर लें।

गर्भ रक्षा हेतु यन्त्र

विधि—जिस स्त्री के गर्भ धारण में असुविधा हो रही है अथवा गर्भ की बार-बार हानि होती हो। उस स्त्री की बाँह में अथवा कमर में यह यन्त्र बाँध देने से गर्भ स्थिर हो जाता है। इस यन्त्र को भोजपत्र पर रविवार के दिन मूला नक्षत्र में अनार की कलम से लिखकर किसी तावीज में रखकर बाँधना चाहिए।

| | | | | |
|-------|-------|-------|-------|-------|
| ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ |
| ॐ | ॐ | ॐ | ॐ | ॐ |
| ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं |
| ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं |

टोने-टोटके का दोष निवारण हेतु शावर मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु को। अपर कोष। बिगड़ कोष। प्रह्लाद राख। पाताल राख। पाँव दे बीज जन्मा देवा कालिका। मस्तक राखे महादेव। जो कोई इस पिण्डप्राण को छेदे-छेदे। देव-देवता। भूत-प्रेत। डाकिनी-शाकिनी। कंठमाला, तिजारी। एक पहर। दोपहर। साँझ सवरे को किये कराये को स्वाहा पड़े। इसकी रक्षा नरसिंह जी करें।

इस मन्त्र का जप दीवाली, ग्रहणकाल, सायन संक्रान्ति पुण्यकाल, क्रान्तिसायन काल में करने से मंत्र सिद्ध हो जाएगा। मंत्र का जाप करते हुए रोगी को २१ बार झाड़ा करें तथा सिर से पाँव तक धागा नापकर इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए २१ गाँठ लगाकर और गुगुल की धूनी देकर रोगी के कण्ठ में पहना दें। इस प्रकार उपाय करने से किया किराये का सभी दोष समाप्त होकर उल्टे टोना करवाने वाले की हानि होती है।

लक्ष्मी प्रदायक—श्री कनकधारा मन्त्र

प्राण प्रतिष्ठा युक्त कनकधारा यन्त्र को स्थापित करके नित्य निम्न कनकधारा मंत्र की स्फुटक माला से एक या तीन माला का पाठ करने से लक्ष्मी देवी प्रसन्न होती है तथा आर्थिक प्राप्ति होती है।

‘ॐ वं श्री वं एं ह्रीं क्लीं कनकधारायै स्वाहा ॥’

कनकधारा मन्त्र का एक लाख जप पूरा करें तथा यदि सम्भव हो तो पं० पन्ना लाल कृत ‘श्री दुर्गा सप्तशती’ (भा. टी.) में से कनकधारा स्तोत्र का पाठ भी अवश्य करें। जिन साधकों के पास ‘श्री-यन्त्र’ है, उन्हें भी कनकधारा यंत्र अवश्य रखना चाहिए। दोनों यन्त्रों में परस्पर सामञ्जस्य होने से फल शत गुणा अधिक बढ़ जाता है।

धनप्रदायक सिद्ध बीसा यन्त्र

गुरुपुष्य योग अथवा शुक्ल पक्ष के गुरुवार के दिन शुभ मुहूर्त में भोजपत्र पर अष्टगन्ध की स्याही से सोने की निब अथवा चमेली की कलम से लिखकर मन्त्रोपचार पूजन कर रुद्राक्ष अथवा स्मटिक की माला से २१ हजार नवार्ण मन्त्रों द्वारा अभिमन्त्रित कर स्वर्ण, चांदी आदि के यन्त्र में भरकर धारण करने से धन, धान्य व सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

| | | | | |
|-------|---|---|---|---|
| ३ | ॐ | ४ | ६ | ७ |
| १ | ८ | ५ | २ | ९ |
| ह्रीं | ८ | ५ | २ | ९ |

अभीष्ट वर प्राप्ति के लिए

जिन कन्या के विवाह-कार्य में बार-बार विघ्न-वाधाएं पड़ती हों, उसको गुरु-पुष्य, रवि पुष्य, अक्षया तीज, श्रावण मास में, दीपावली, वसन्त अथवा नवरात्रों में निम्नलिखित मन्त्र का आरम्भ करके यथेष्ट संख्या में ५१ हजार अथवा सवा लाख की संख्या में नियमित रूप में,

शिव-पार्वती अथवा माता के मन्दिर में धूप, दीप जलाकर पीले एवं लाल पुष्प चढ़ाकर सुनिश्चित समय में नियमित रूप से संकल्पपूर्वक एवं विधिवत् जप करना चाहिए। इससे देवी की कृपा से अवश्य कामना सिद्ध होती है—

ॐ कात्यायनि महामाये महायोगिनी अधोऽश्वरी ।

नन्दगोपसुते देवि ! यतिं मे कुरु ते नमः ॥

इसके साथ प्रति सोमवार का व्रत तथा पार्वती मंगल स्तोत्र का पाठ भी किया जाए, तो मनोवांछित फल की प्राप्ति शीघ्र होती है। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक शास्त्रोक्त प्रयोग प्रसंगवश मिलते हैं, जिनका जातिका की ग्रहदशा का अवलोकन करके करना चाहिए।

धन-सम्पदा हेतु श्री अन्नपूर्णा देवी का मन्त्र

धन-धान्य और समृद्धि के लिए अन्नपूर्णा देवी के निम्न मन्त्रों में से किसी एक का जप करके साधक जन लाभान्वित हो सकते हैं। फाल्गुन शुक्ल अष्टमी अथवा अन्य शुभ मुहूर्त में मन्त्र-जाप प्रारम्भ करें—

ध्यान मन्त्र— 'तत् स्वर्णनिभा शशांक मुकुटा रत्नप्रभा भासुरा,

नानावस्त्र विराजिता त्रिनयना भूमीरमाभ्याम् युता ।'

दर्वाहाटक भाजनं च दधती रम्योच्चपोनस्तनी,

नित्यं तं शिवमकलय्य मुदिता ध्यायेन्नपूर्णेश्वरी ॥

जप मन्त्र— ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णायै स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति प्रसन्नपरिजातेश्वर्य अन्नपूर्णै स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रीं नमो भगवति माहेश्वरि प्रसन्न वरदे अन्नपूर्णै स्वाहा ॥

ॐ ह्रीं श्रीं नमो भगवति माहेश्वरि प्रसन्न वरदे अन्नपूर्णै स्वाहा ॥

बिक्री बढ़ाने हेतु मन्त्र

मन्त्र— भंवर वीर तू चेला मेरा, खोल दुकान कहा का मेरा ।

उठे जो डण्डी बिके जो माल, बंवर वीर की सौं नहि जाय ॥

बिक्री बढ़ाने के लिए इस मन्त्र का प्रयोग किया जा सकता है। रविवार के दिन प्रातः स्नान करके एक हाथ में काले उड़द लें। १०८ बार मंत्र का जाप करें। मंत्र-जाप के बाद उड़द के दोनों को दुकान में चारों ओर बिखेर दें।

“घर से रुठकर गये हुए को बुलाने का मन्त्र”

“ॐ नमो आली कालिका, काकुडी का, अमुखा/अमुखी आकर्षय-आकर्षय बड़े देग आकर्षय, जिण वाटे जाई सोई वाट खीलू, ॐ श्रीं हीं आकर्षय-आकर्षय स्वाहा ॥”

पताशे या शक्कर से इस मन्त्र की दस हजार आहुति देने पर अभीष्ट पुरुष या पशु आकर्षित होकर (यदि जीवत है) तो घर लौट आता है।

अकाल मृत्युनिवारक-महामृत्युञ्जय मन्त्र

(मृत्युतुल्य कठिन रोगों में तथा आयुदृष्टिकारक अचूक मन्त्र)

“ॐ हौं जूं सः। ॐ भूर्भुवः स्वः। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बध्नात मृत्योर्मुक्षीय मांमृतात। ॐ स्वः भुवः भूः ॐ। सः जूं हौं ॐ।

अर्थ—हम परमपिता त्र्यम्बक (भगवान् शिव) की आराधना करते हैं। वह परमसुखदायक एवं पुष्टिवर्धक है। जैसे—तरबूज आदि फल (एक जाने पर स्वयं ही) बेल से छूट जाता है, वैसे ही (पूर्ण आयु भोग कर) मैं मृत्युमय जीवन से (बिना कष्ट भोगे) छूट जाऊँ, परन्तु अमृतमय जीवन से मत छूटूँ।

संक्षिप्त विधि—यह सम्प्रदुयुक्त मन्त्र है। ॐकार का प्रतीक शिवालङ्ग है; उसी के ऊपर अविच्छिन्न—अनवत जलधारा के प्रवाहवत् अपनी दृष्टि स्थिर करते हुए विश्वासपूर्वक मृत्युञ्जय-महामन्त्र का जाप करता रहे तो ध्यानावस्था प्रत्यक्ष खड़ी हो जाती है और एक विलक्षण आनन्द की अनुभूति होती है।

किसी शुभ मुहूर्त में शुद्ध शान्तचित्त, संयमपूर्वक, देवालय (विशेषकर शिव मन्दिर), गंगादि तीर्थ स्थान, जलाशय, पीपल वृक्ष के पास अथवा अपने निवास स्थान में स्वच्छ एकान्त स्थान पर, संकल्पपूर्वक निश्चित विषय संख्या (एक तीनादि) में नियमित रूप में श्रद्धापूर्वक पाठ करने से अवश्य लाभ मिलता है। जप संख्या में उलट-फेर या कमी বেশी करने से विक्षिप्ता का भय रहता है। जपसंख्या पूर्ण हो जाने पर जपसंख्या का दशमांश हवन, हवन का दशांश तर्पण एवं तर्पण का दशांश मार्जन एवं यथेष्ट दानादि सहित ब्राह्मण भोजन करवाना चाहिए ॥ तथा पाठोपरान्त शिव कवच पढ़ना चाहिए।

श्री महामृत्युञ्जय मंत्र के जप से अकाल मृत्यु का निवारण, दीर्घायु व आरोग्य की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त जन्म कुण्डली में ग्रह-नक्षत्र दोष, नाड़ी दोष, मंगलीक दोष, शत्रुषडाटक,

विधुर एवं वैधव्यादि दोषों के निवारण हेतु तथा अतिशय क्लिष्ट व असाध्य रोगों और मृत्युतुल्य शारीरिक एवं मानसिक रोगों में उपायस्वरूप अचूक एवं सिद्ध मन्त्र माना गया है ॥

महामृत्युञ्जय यन्त्र

इस यन्त्र को दो विभिन्न भोजपत्रों पर अनार की कलम तथा रक्त चंदन से लिखकर एक को धारण करने से विपक्षी के कुचक्र शांत हो जाते हैं। यदि विपक्षी का स्तम्भन करना हो तब दूसरे यन्त्र को किसी शिला के नीचे दबा दें।



महामृत्युञ्जय यन्त्र

श्री बगुलामुखी देवी का मन्त्र

('शत्रुविजयी मन्त्र')

श्री बगला महाविद्या की उपासना गुरु के सान्निध्य में रहकर सतर्कता, इन्द्रियनिग्रहपूर्वक सफलता की प्राप्ति होने तक प्रयत्नपूर्वक करते रहना चाहिए।

आपका विरोधी अथवा शत्रु आपको अन्यायपूर्वक तंग कर रहा हो अथवा राजकीय रुकावटों के कारण उपयुक्त प्रमोशन न मिल पा रहा हो अथवा व्यवसाय में गुल शत्रु हानि पहुँचाने का यत्न करते हों अथवा आपको अनावश्यक रूपेण, झगड़े आदि में फँसाया जा रहा हो तो निम्न श्री बगुलामुखी मन्त्र विशेष सहायक सिद्ध होता है।

साधक को गुरु से बगला मन्त्र का उपदेश ग्रहण कर ब्रह्मचर्यपूर्वक देवीमन्दिर में, पर्वतशिखर पर, शिवालये में, गुरु के समीप या जैसी सुविधा हो पीताचार से बगलामहामन्त्र का पुरश्चरण करना चाहिए। महाविद्या बगुलामुखी का ३६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है—

“ॐ ह्रीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाघं मुखं पदं।

स्तम्भ्य जिह्वां कौल्य बुद्धि विनाशाय ह्रीं ॐ स्वाहा॥”

मन्त्र के जपादि के विषय में बगलापटल (सिद्धेश्वर तन्त्र) में विशेष विधान बताए हैं, जो इस प्रकार हैं—

पीताम्बरधरो भूत्वा पूर्वांशभिमुखः स्थितः। लक्ष्मके जपेन्मन्त्रं हरिदाग्रस्थिभ्रालया॥

ब्रह्मचर्यरतो नित्यं प्रयतो ध्यानतत्परः। प्रियङ्गु कुसुमेनापि पीतपुष्पैश्च होमयेत्॥

बगला के जप में पीले रंग का विशेष महत्व है। जपकर्ता को पीला वस्त्र पहनकर हल्दी की गाँठ की माला से जप करना चाहिए। देवी की पूजा और होम में पीले पुष्पों, प्रियङ्गु, कनेर, गेंदा आदि के पुष्पों का प्रयोग करना चाहिए। शुचिभूत हो पीले कपड़े पहनकर साधक पूर्वाभिमुख बैठकर ही जप करें। उसे ब्रह्मचर्य का पालन अनिवार्यतः करना चाहिए। जप के पूर्व पूर्वाभिमुख आसन पर बैठकर आसनशुद्धि, भूशुद्धि, भूतशुद्धि, अङ्गन्यास, करन्यास आदि करना चाहिए। जप संख्या एक लाख बतलाई गई है। विशेष बात यह बताई है कि प्रतिदिन जप के अन्त में दशांश होम पीले पुष्पों से अवश्य करना चाहिए।

महाविद्या बगुलामुखी का ध्यान निम्नलिखित है, जो जप से पूर्व करणीय है—

सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं,

हेमाभाङ्गलक्षिं शशाङ्कमुकुटां सच्चम्पकश्रग्गुताम्।

हस्तैर्दुर्दाराशशवजरसनाः सविभ्रतीं भूषणैः,

व्यात्ताङ्गीं वगलामुखीं त्रिजगतां संस्तुभिर्नी चिन्तयेत्॥

—“विद्या लाभ के लिए गुडुच्यादि प्रयोग”—

किसी शुभ मुहूर्त में गुरुचि, अपामार्ग, बायविडिंग, शंखिनी, ब्राह्मी, वच, सोठ और शतावरी—इन सबकी बराबर-बराबर लेकर उसका चूर्ण करें, तदनन्तर गोघृत में मिलाकर उसकी आठ-आठ आने भर की 44 गोतियां बनाकर रख लें और—

‘ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं हयग्रीवाय नमो मां विद्यां देहि देहि बुद्धिं वर्य्य वर्य्य हुं फट् स्वाहा॥’ इस मन्त्र को प्रतिदिन 100 बार पढ़कर, मन में विद्या-बुद्धि की प्राप्ति और वृद्धि का विश्वास करके एक गोली खा लें।

कुछ उपयोगी टोटके

(i) किये कराये का दोष दूर करने के लिए धूप, गंधक, गुगल, लाख, लोबान, हाथी दांत, साँप की केंचुल, व्यक्ति के मस्तक के बाल लेकर—इन सबको मिलाकर किये-कराये वाले रोगी के पास जलावें और इनका धुआं दें तो किये-कराये का दोष दूर हो जाएगा।

पुत्र-प्राप्ति हेतु कुछ तन्त्र प्रयोग

- (i) विधिपूर्वक प्राप्त अपामार्ग पौधे की जड़ को भस्म बनाकर दूध के साथ पति-पत्नी दोनों एक महीने तक पीएं, तो सन्तान लाभ होता है।
- (ii) धुंधची (गुंजा) (लाल रंग की) शुभ मुहूर्त में जड़ से उखाड़कर विधिपूर्वक उसकी जड़ की तावीज में रखकर कमर में बाँधकर रखने वाली स्त्री को पुत्र की प्राप्ति होती है।
- (iii) नींबू के पुराने पेड़ की जड़ को दूध में पीसकर घी में मिलाकर पीने से स्त्री दीर्घजीवी पुत्र पैदा करती है।
- (iv) नाग-कैसर का चूर्ण सवत्सा नवीन गौ के दूध के साथ सात दिनों तक लेने से तथा घी-दूध का पीस्टिक भोजन करने से भी स्त्री का बन्धत्व दोष मिट जाता है।

परमसुख प्राप्ति के लिए—गायत्री महामन्त्र

लौकिक एवं पारलौकिक सुख प्राप्ति के लिए गायत्री मन्त्र जप और गायत्री साधना एक महायोग है। गात्री का अनुष्ठान और पुरश्चरण सर्व सिद्धि दाता कहा जाता है। सन्ध्या वन्दन के साथ नित्य गायत्री मन्त्र जप एवं उपासना करने से जीवन निष्पाप, सुखी, सम्यन् और पुष्ट होता है। गायत्री गुरुमन्त्र के नाम से प्रसिद्ध है। मन्त्रराज गायत्री की महिमा अकथनीय है। विधि-विधान के अनुसार गायत्री पाठ करके साधारण मनुष्य भी अपने क्लिष्ट समस्याओं का समाधान कर सकता है।

गायत्री मन्त्र की साधना से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष-चारों सुलभ हो जाते हैं। मन, बुद्धि-विद्या एवं ज्ञान के विकास के लिए गायत्री मन्त्र-जप अत्यन्त लाभदायक होता है।

गायत्री-मन्त्र

“ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥”

अर्थ—हम सत् चित् आनन्द स्वरूप, सृष्टिकर्ता स्वप्रकाशित परमात्मा के उस वर्णीय दिव्य तेज का ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धियों को सत्कर्मों की ओर प्रेरित करें॥ अर्थपूर्वक गायत्री मन्त्र के जप से मन, बुद्धि एवं हृदय परिष्कृत एवं पवित्र होकर सत्कर्मों की ओर प्रवृत्त होती है।

विधि—नित्य स्नानादि के उपरांत शुद्ध होकर पूर्वाभिमुख होकर प्रातःकाल श्री गायत्री देवी के चित्र (अथवा) मूर्ति के आगे धूप, दीप, अक्षत, पुष्प, जलपूरित शुद्ध जलादि द्वारा पूजा करके आचमन करके अपने सामर्थ्यानुसार निश्चित संख्या (१, ३, ५, ७ माला इत्यादि) में नियमित रूप से करने से विद्या, बुद्धि एवं अन्तःकरण में श्रेष्ठपद की प्राप्ति होती है। गायत्री मन्त्र जप के बाद आठ मुद्राएँ गायत्री कवच तथा गायत्री तर्पण करने का विधान है॥

द्वादश राशियों का मासिक एवं वार्षिक राशिफल-सन् 2005 ई.

आगे बारह राशियों का मासिक एवं वार्षिक फल ग्रहों की गोचर स्थितानुसार लिख रहे हैं। अपने जीवन सम्बन्धी और अधिक जानकारी एवं महत्वपूर्ण विषयों-विद्या, व्यवसाय, विवाह, सन्तान विदेश गमनादि प्रश्नों सम्बन्धी विशेष फलादेश तथा यदि आप किसी समस्या से ग्रस्त हैं, तो शास्त्र सम्मत विशेष उपाय जानने के लिए शुद्ध एवं बड़ी जन्मपत्री का होना आवश्यक है। हमारे कार्यालय से शुद्ध एवं विस्तृत जन्मपत्री बनवाने के लिए जातक/जातिका का नाम, जन्म समय, वर्ष, स्थान (Place & Time of Birth), माता-पिता एवं व्यवसाय आदि का विवरण तथा अग्रिम रूप में पूरी फीस भेजें। बड़ी विस्तृत जन्मपत्री हस्तलिखित फलादेश सहित की फीस 501 रु० से 1100 रुपये। मध्यम जन्मपत्री 351 रु०, वर्षफल फीस 275 रु०। विदेश में उत्पन्न जातक की फीस 31 पाँड अथवा 40 डालर होगी। डाक व्यय अतिरिक्त होगा, फीस M.O. या ड्राफ्ट द्वारा अग्रिम भेजनी अनिवार्य है।

—पं. पन्ना लाल ज्योतिषी, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर-8

वर्षफल मेष राशि सन् 2005 ई.

मेघ राशि पर वर्षारम्भ से 12 जनवरी तक शनि की दृष्टि होगी तथा शनि की दृष्ट्या का प्रभाव रहेगा। वर्षारम्भ से 24 मार्च तक राहु भी इसी राशि पर संचार करेगा। राशि स्वामी मंगल भी अष्टम में होगा। जिसके फलस्वरूप मासारम्भ में स्वास्थ्य में खराबी, घरेलू उलझनें तथा बने कामों में अड़चनें रहेंगी। धन का अपव्यय एवं गुप्त चिन्ताएँ भी रहेंगी। 12 मार्च से मंगल उच्च राशि (मकर) में आकर मेघ पर स्वर्गही दृष्टि करेगा तथा 25 मार्च से इस राशि पर से राहु की स्थिति भी हट जाने से बिगड़े कामों में सुधार होगा। स्वास्थ्य में भी बेहतर होगी। ता. 14 अप्रैल से सार्व 14 मई तक सूर्य के इस राशि पर उच्चस्थिति में संचार करने से उच्चप्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध बढ़ेंगे। मान-सम्मान में वृद्धि होगी।

26 मई से शनि कर्क में प्रविष्ट होने से मेघ राशि पर शनि की पुनः नीच दृष्टि पड़ेगी। शनि की दृष्ट्या का प्रभाव होगा। फलस्वरूप वर्ष के उत्तारार्ध भाग में घरेलू कलह-बलेश, गुप्त चिन्ताएँ, धन का अधिक खर्च एवं विघ्न बाधाओं का सामना रहे। व्यवसाय में दौड़-धूप एवं संघर्ष अधिक रहेगा। 18 जुला. से मेघ पर मंगल का संचार होगा तथा 28 सितं. से इस राशि पर गुरु की दृष्टि पड़ने से शुभ फल भी घटित होगा। 11 अक्टू. से संघर्ष अधिक रहेगा।

जनवरी—मासारम्भ में आर्थिक उलझनों एवं तनाव के कारण चिन्ता व पेशानियाँ रहेंगी। स्वास्थ्य में विकार एवं कार्यों में अड़चनें पैदा होंगी। उत्तरार्ध में कुछ सुधार की सम्भावनाएँ होंगी।

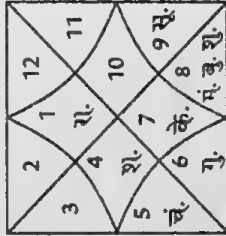
फरवरी—मन में उत्साह एवं गृह में कोई खुराी प्राप्त होगी। आय के साधनों में वृद्धि तथा खर्च भी बढ़ेंगे। ता. 12 के बाद कोई गुप्त चिन्ता होगी। आकस्मिक खर्च भी बढ़ेंगे।

मार्च—अत्यधिक संघर्ष करने पर भी विशेष लाभ नहीं हो पाएगा। व्यवसाय में उलझनें होंगी। ता. 12 के बाद मंगल परिवर्तन होने से धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे।

अप्रैल—राशि पर मंगल की स्वर्गही दृष्टि पड़ने से धन लाभ व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। पदोन्नति एवं श्रेष्ठ जनों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे। शुक्र के कारण मनोरंजन/विलास आदि कार्यों पर खर्च भी बढ़ेंगे।

मई—मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, पदोन्नति या धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। ता. 26 के बाद विरोधियों के कारण पेशानी एवं आकस्मिक खर्च बढ़ेंगे। विवाद आदि का भी भय होगा।

जून—मंगल 12वें होने से मानसिक तनाव एवं शरीर कष्ट, आकस्मिक खर्च अधिक होंगे। बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। शनि उपासना करना शुभ रहेगी।



जुलाई—मंगल व राहु द्वादश भाव में होने से मासारम्भ में विघ्न/बाधाएँ, दौड़-धूप एवं खर्च अधिक रहेंगे। ता. 18 के बाद हालात में कुछ सुधार होगा।

अगस्त—मंगल की शुभ स्थिति होने से बिगड़ते कामों में सुधार होगा। गृह में कोई शुभ कार्य होगा। श्रेष्ठ लोगों के साथ सम्बन्ध बनेंगे। धर्म-कर्म की ओर रूचि बनेगी।

सितम्बर—मंगल व शनि दोनों ग्रहों का प्रभाव होने से इस राशि पर मिश्रित प्रभाव होंगे। यद्यपि निर्वाह योग्य आय के साधन बने रहेंगे, परन्तु संघर्ष व खर्च भी अधिक रहेंगे।

अक्टूबर—मासारम्भ ता. 2 से राशिस्वामी मंगल वक्री हो जाने से आर्थिक व परिवारिक उलझनें बढ़ेंगी। परन्तु गुरु की दृष्टि होने से गुजारे योग्य धन लाभ मिलता रहेगा।

नवम्बर—परिवार में किसी मंगल कार्य पर खर्च होंगे। आय के साधनों में वृद्धि होगी। भूमि, वाहन आदि सुख साधनों पर व्यय होगा।

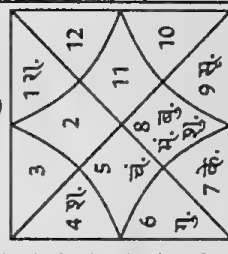
दिसम्बर—धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। किसी प्रिय बन्धु से मुलाकात हो, स्त्री व सन्तान की ओर से खुशी का समाचार प्राप्त होगा। धर्म/कर्म की ओर रूचि बढ़ेगी। मेघ राशि पर अशुभ ग्रहों के उपाय हेतु हमारे कार्यालय से प्रकाशित राशिफल 2005 ई. का क्रय करें ॥ —पं. पन्ना लाल ज्योतिषी।

वर्षफल वृष राशि सन् 2005 ई.

वर्षारम्भ में इस राशि पर मंगल, शुक्र, बुध एवं गुरु—इन चारों ग्रहों की दृष्टि पड़ रही है। जिससे अत्यन्त कठिनाईयों एवं संघर्ष के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बने रहेंगे। 5 जन. से 28 जन. तक राशि स्वामी शुक्र अष्टम भाव में होने से बनेत कामों में विलास्य एवं अड़चनें रहेंगी। 13 जन. से 25 मई तक शनि साढ़ेसति का प्रभाव रहेगा। 17 मार्च से 10 अप्रै. के मध्य शुक्र उच्च राशिस्थ (मीन) में होने से धन लाभ व उन्नति के आसार बनेंगे। 22 अप्रैल से 2 जून के मध्य इस राशि पर मंगल की विशेष दृष्टि होने से मानसिक तनाव, उत्तेजा व क्रोधाधिक रहेगा।

खर्च भी अधिक रहेंगे। 11 अप्रै. से 4 मई के मध्य द्वादश भाव में शुक्र-राहु का योग होने से वृथा दौड़-धूप एवं तनाव अधिक रहेंगे। 5 मई से शुक्र के इसी राशि में संचार करने से मान-सम्मान, धन लाभ एवं पदोन्नति होने के अवसर प्राप्त होंगे।

12 अग. से राशि स्वामी शुक्र के नीच राशि में संचार करने से मानसिक तनाव एवं विद्या के सम्बन्ध में विघ्न-बाधाओं का सामना रहे। आर्थिक पेशानियाँ भी रहें। भाई-बन्धुओं एवं पारिवारिक सदस्यों से



वर्ष प्रवेश कुण्डली

| | | |
|-------------|-------|-------|
| 5 | 4 श. | 2 |
| चं. | 3 | 1 रा. |
| 6 | | 12 |
| 7 | गु. | 9 |
| के. | 8 सु. | 11 |
| मं. बु. शु. | 10 | पै. |

की भावना अधिक रहेगी। 26 मई से 7 जून तक बुध द्वादश में होने से दौड़-धूप अधिक तथा धन के खर्च भी अधिक होंगे। 18 जून से 23 जून के मध्य बुध इस राशि पर शुभ स्थिति में होने से बिगड़े कामों में कुछ सुधार होगा। धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। इसी अवधि में इस राशि पर 15 जुलाई तक सूर्य की स्थिति तथा मंगल की दृष्टि पड़ने से किसी नजदीकी बन्धु से कलह पैदा होने का भय होगा। मन में तनाव व उत्तेजना भी अधिक रहेगी। 23 जुला. से बुध वक्रो होने से, जुलाई-अगस्त में अधिक उलझनों का सामना रहेगा। 28 सितं. से वर्णान्त तक गुरु की विशेष (नवम) दृष्टि रहेगी। व्यवसाय में अत्यन्त कठिनाईयों के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे।

जनवरी—दौड़धूप अधिक रहेगी। आराम कम व संघर्ष अधिक रहेगा। नौकरी एवं व्यवसाय में विघ्न उत्पन्न होंगे। परिवार सम्बन्धी समस्याएं उत्पन्न होंगी। ता. 13 के बाद लाटरी, सट्टे आदि से अचानक धन लाभ के योग होंगे।

फरवरी—इस राशि पर शनि का संचार और मंगल की दृष्टि होने से परिवारिक एवं आर्थिक स्थिति अनिश्चित रहेगी। गुजारे लायक धन की प्राप्ति होगी। मासों में कोई गुप्त परेशानी रहे।

मार्च—परिश्रम व दौड़-धूप अधिक रहेगी। फिर भी निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। व्यवसाय में उतार-चढ़ाव व अल्प परेशानियाँ रहेगी। स्थान परिवर्तन भी होने के योग हैं।

अप्रैल—मासोत्थ भय में मिश्रित फल प्राप्त होंगे। उद्यम द्वारा आय के साधनों में वृद्धि, उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क होंगे। मासान्त में आकास्मिक खर्चों में वृद्धि के कारण परेशानियाँ बढ़ेंगी।

मई—मासारम्भ में राशि स्वामी बुध नीच राशि में है, जिससे धन सम्बन्धी कुछ परेशानी उत्पन्न हो। समय व्यर्थ के कामों में व्यतीत होगा। मासान्त में उदर में विकार एवं आँखों में कष्ट का भय है।

जून—ता. 8 से बुध इसी राशि में संचार करेगा। व्यवसाय में लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। प्रिय व्यक्ति से मुलाकात होगी। पदेनति और धन लाभ के योग हैं। स्त्री व संतान सुख प्राप्त होगा।

जुलाई—मासारम्भ में इस राशि पर मंगल की दृष्टि पड़ने से धन हानि एवं बनते कामों में अड़चने पैदा होंगी। खर्च अधिक होंगे। ता. 18 के बाद लाभ व उन्नति के अवसर होंगे।

अगस्त—व्यवसाय में आंशिक लाभ एवं विलासिता कार्यों पर खर्च होगा। क्रोध से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ने के संकेत हैं। ता. 19 के बाद आर्थिक उलझनों के कारण परेशानियाँ बढ़ेंगी।

सितम्बर—तनाव व उलझनों के बावजूद धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। ता. 17 से बुध उच्च राशि में आने से किन्हीं शुभ काम पर खर्च। सोची योजनाओं में आंशिक सफलता मिले। कोई शुभ समाचार मिले।

अक्टूबर—मासारम्भ से ही बुध-गुरु की दृष्टि होने से यह मास शुभ फलदायी रहेगा। कोई बिगड़ा काम बनेगा। गृह में कोई मंगल कार्य आयोजित होगा।

नवम्बर—कठिनाईयों के बावजूद गुजारे योग्य धन के साधन मिलते रहेंगे। यात्रा की योजना बनेगी। अचानक खर्च भी बढ़ेंगे। घरेलू एवं व्यवसायिक उलझनें बढ़ेंगी।

दिसम्बर—विघ्न-बाधाओं के बावजूद निर्वाह योग्य धन प्राप्ति होती रहेगी। किसी निकट सहयोगी की सहायता से कोई बिगड़ा हुआ कार्य बनेगा, खर्च भी अधिक होंगे। धर्म-कर्म में रूचि बढ़ेगी।

राशि सम्बन्धी अधिक जानकारी व उपायों हेतु हमारे कार्यालय से प्रकाशित वृहद् राशिफल पढ़ें।

कलह-क्लेश रहे। स्वास्थ्य भी ठीक न रहे। 12 अक्तू. से शुक्र की इस राशि पर स्वर्गही दृष्टि होने से मान प्रतिष्ठा में वृद्धि तथा कुछ बिगड़े काम बनेंगे। श्रावण में शिव उपासना करना लाभदायक होगा।

जनवरी—मासारम्भ में शुक्र की स्वर्गही दृष्टि होने से कठिन परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बने रहेंगे। ता. 5 से शुक्र अष्टम में आने से शरीर कष्ट एवं उलझने बढ़ेंगी।

फरवरी—मासारम्भ में शुक्र भाग्य अष्टम में होने से भाग्योन्नि एवं धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। गृह में कोई मंगल कार्य होगा। मनोरंजन एवं ऐश्वर्यादि वस्तुओं पर व्यय अधिक रहेगा।

मार्च—संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बाद ही धन लाभ एवं पदेनति के योग हैं। ता. 17 के बाद शुक्र उच्चस्थ होने से मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि तथा श्रेष्ठजनों से सम्पर्क बढ़ेंगे।

अप्रैल—पूर्वार्द्ध भाग शुभ रहेगा। कोई रूका हुआ काम बनेगा। उत्तरार्ध में संघर्ष करने पर भी विशेष लाभ नहीं हो पाएगा। अनावश्यक खर्च अधिक रहेंगे।

मई—इस राशि पर शुक्र की स्थिति होने से यह सप्ताह शुभ रहेगा। भाग्य से धन प्राप्ति और मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे।

जून—आय के साधनों में वृद्धि होगी। कोई नवीन कार्य योजना बनेगी। कार्य-व्यवसाय सम्बन्धी भाग-दौड़ अधिक रहेगी। मासान्त में परिवारिक कलह से अशान्ति हो।

जुलाई—धन एवं विद्या में उन्नति होगी। विलासिता कार्यों पर धन का व्यय होगा। स्त्री एवं संतान की ओर से प्रसन्नता प्राप्त हो। अत्यन्त कठिनाई से निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। गृहस्थ जीवन में तनाव रहेगा।

अ. स.—कारोबार मध्यम रहेगा। अत्यन्त कठिनाईयों के बाद धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे। ता. 12 से शुक्र नीच राशिस्थ होने से पेट विकार एवं शरीर कष्ट होने की सम्भावना।

सितम्बर—आर्थिक उलझनों के कारण मन परेशान रहे। सोची योजनाओं में विघ्न-बाधाओं का सामना रहे। यात्रा में चोट/दि का भय रहेगा। कठिन परिस्थितियों के बावजूद धन प्राप्ति के कुछ साधन बने रहेंगे।

अक्टूबर—ता. 2 से इस राशि पर शुक्र की स्वर्गही दृष्टि पड़ेगी। जिससे यह सप्ताह व्यवसाय की दृष्टि से शुभ रहेगा। भाग्य से धन प्राप्ति और मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन प्राप्ति के अवसर मिलेंगे।

नवम्बर—पूर्वार्द्ध में मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। अत्यधिक संघर्ष के बाद धन लाभ अल्प रहेगा। खर्चों की अधिकता होगी। ता. 26 से रूके हुए कार्यों में सुधार होगा।

दिसम्बर—स्वास्थ्य कुछ नर्म रहे। स्वभाव में तेजी रहेगी। व्यर्थ की भाग-दौड़ अधिक होगी। विरोधी हानि पहुँचाने का प्रयास करेगा। कठिनाईयों के बावजूद निर्वाह योग्य धन प्राप्ति होती रहेगी।

2005 में इस राशि सम्बन्धी विशेष उपायों के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित वृहद् राशिफल का अध्ययन करें।

वर्षफल मिथुन राशि सन् 2005 ई.

वर्षरम्भ में मिथुन राशि पर सूर्य एवं मंगल की दृष्टियाँ पड़ रही हैं। 13 जन. से 25 मई तक शनि इसी राशि में संचार करेगा। शनि सादेसति का प्रभाव वर्षभर रहेगा। वर्षरम्भ में क्लिष्ट समस्याओं का सामना रहेगा। जिससे घरेलू एवं आर्थिक उलझनें अधिक रहेगी। बनते कामों में अड़चने होंगी। 5 जन. से 25

जन. के मध्य राशिस्वामी बुध की दृष्टि रहने से कठिनाईयों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बने रहेंगे। 25 मई तक शनि की स्थिति होने से बनते कामों में अड़चने पैदा होंगी। मानसिक तनाव व क्रोध

इस राशि पर शनि की सादेसति का प्रभाव वर्षभर रहेगा। वर्षारम्भ से 12 जन. तक तथा 26 मई से वर्षान्त तक शनि का संचार इसी राशि पर रहेगा। शनि सादेसति के प्रभावस्वरूप वर्ष में संघर्ष अधिक रहेगा तथा लाभ कम होगा।

29 जन. से 21 अप्रैल के मध्य इस राशि पर मंगल की भी नीच दृष्टि रहेगी। फलस्वरूप कार्य-व्यवसाय में अनेक आर्थिक कठिनाईयों का सामना रहेगा। मानसिक तनाव तथा घरेलू उलझनों का भी सामना रहेगा। किसी के साथ कलह-क्लेश एवं विवाद से बचें। दुर्घटना में चोटालि लगने का भय रहेगा। शत्रु द्वारा धन हानि की भी सम्भावना है। 25 अप्रैल के बाद व्यवसाय में अकस्मात् धन लाभ के भी योग हैं। जुलाई-अगस्त में अत्यन्त परिश्रम करने पर ही निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। जुलाई से मंगल की नीच दृष्टि पुनः इस राशि पर पड़ने से दुर्घटना या शत्रु द्वारा चोट आदि लगने का भय रहेगा। सावधानी बरतें। स्त्रियों को अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना होगा।

विद्यार्थी एवं स्त्री वर्ग के लिए 26 मई के पश्चात् विशेष संघर्षपूर्ण रहने के संकेत हैं।

जनवरी—मासारम्भ में शनि इस राशि पर होने से संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़े। आय कम व खर्च अधिक हो। व्यवसाय में विघ्न तथा घरेलू उलझनों के कारण मन चिन्तित रहे। शरीर कष्ट हो।

फरवरी—मासारम्भ में इस राशि पर मंगल की अशुभ दृष्टि पड़ने से व्यवसाय में विघ्न-बाधाएँ तथा आय में कमी होगी। शत्रु हानि पहुँचाने के प्रयास करेंगे। खर्च भी अधिक होगा।

मार्च—व्यवसाय में संघर्ष व भागदौड़ अधिक होगी। व्यर्थ की चिन्ता और बनते कार्यों में व्यतीत होगा। होने के योग हैं। अधिकांश समय मनोरंजन आदि कार्यों में व्यतीत होगा।

अप्रैल—बिगड़े कार्यों में कुछ सुधार होगा। धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। परिवारिक सुख में वृद्धि होगी। किसी शुभ कार्य पर धन खर्च होगा। परन्तु शनि के कारण तनाव रहेगा।

मई—मासारम्भ में सोची हुई योजनाओं में आंशिक सफलता मिलेगी। परन्तु अधिकांश समय शुभ कार्यों में व्यतीत होगा। ता. 13-14 को किसी प्रिय बन्धु से व्यर्थ का तनाव उत्पन्न हो। खर्च भी अधिक बढ़ेगा।

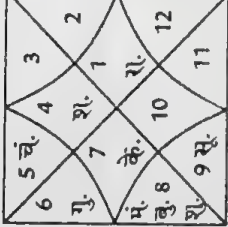
जून—शनि-सादेसति के कारण शरीर कष्ट और खर्च की अधिकता रहे। आराम के साधनों पर व्यय होगा। कार्य व्यवसाय में परेशानी रहे और निकट बन्धुओं से कलह-क्लेश का भय होगा।

जुलाई—मिश्रित फल प्राप्त होगा। नौकरी व व्यापार में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु परिवारिक कारणों से लाभ कम होगा। ता. 26-27 को भाई-बन्धु से तनाव और उलझनें बढ़ेंगी।

अगस्त—अत्यधिक परिश्रम के बाद धन लाभ और सुख साधनों में वृद्धि होगी। धन का दुरुपयोग भी होगा। व्यर्थ की भाग-दौड़ और धार्मिक कार्यों पर अधिक खर्च होगा।

सितम्बर—विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन प्राप्ति के अवसर मिलेंगे। व्यवसाय में व्यर्थ की परेशानियाँ और क्रोध की अधिकता से स्वास्थ्य विकार होगा। ता. 26-27 को धन सम्बन्धी विशेष चिन्ता रहेगी।

अक्टूबर—मासारम्भ में मंगल की दृष्टि होने से परिवारिक परेशानी और कलह होने के योग हैं। समय एवं धन का खर्च व्यर्थ के कार्यों में होगा।

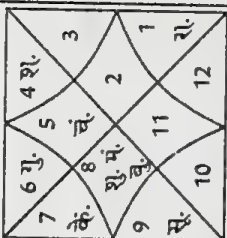


नवम्बर—व्यवसाय अथवा नौकरी में स्थिति मध्यम रहेगी। अधिकारी वर्ग में मन-मुटाव और व्यर्थ का तनाव रहेगा। असमंजस की स्थिति होने से अशान्ति का माहौल होगा।

दिसम्बर—मिश्रित फल प्राप्त होंगे। 10 दिस. तक मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझनों के कारण चिन्ताएं अधिक रहेंगी। बनते कार्यों में रुकावटें पैदा होंगी। ता. 12 के बाद बिगड़े कार्यों में सुधार होगा।

वर्षफल सिंहरा राशि सन् 2005 ई.

इस राशि को वर्षारम्भ से 12 जन. तक सादेसति तथा 13 जन. से 25 मई तक शनि की दृष्टि रहेगी। फिर 26 मई के पश्चात् वर्षान्त तक शनि की सादेसति का प्रभाव रहेगा। जिसके प्रभावस्वरूप शरीर कष्ट, कलह-क्लेश, आर्थिक परेशानियाँ, आय कम व खर्च इत्यादि उलझनें पैदा होंगी। 12 फर. से 13 मार्च तक सूर्य की दृष्टि तथा 12 मार्च से 2 जून के मध्य इस राशि पर मंगल की विशेष दृष्टि रहेगी। 13 अप्रैल से 13 मई के मध्य राशि स्वामी सूर्य उच्च राशि में संचार करेगा। अतएव इस अवधि में उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ मेलजोल बढ़ेगा। पदोन्नति एवं धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। गृह में कोई मंगल कार्य होगा। किसी नए कार्य की योजना बनेगी। 26 मई के बाद स्वभाव में तेजी एवं क्रोध की भावना बढ़ेगी। अत्यधिक क्रोध एवं उतेजना से बचें। जून-जुलाई में व्यर्थ की दौड़-धूप एवं अपव्यय बढ़ेंगे। 16 अग. से 15 सित. के मध्य राशि स्वामी सूर्य के इसी राशि में संचार करने से मानप्रतिष्ठा में वृद्धि तथा कुछ बिगड़े काम बनेंगे। धन लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। 17 अक्टू. से 15 नव. के मध्य सूर्य नीच राशि (तुला) में होने से बनते कार्यों में अड़चनें पैदा होंगी। किसी प्रिय व्यक्ति से मन-मुटाव पैदा हो। 16 नव. के पश्चात् बिगड़े कार्यों में सुधार, भूमि, वाहन, स्त्री आदि सुखों की प्राप्ति होगी। महिलाओं के लिए 26 मई के पश्चात् की अवधि संघर्षपूर्ण होगी उन्हें श्री दुर्गा सप्तशती का विधिपूर्वक पाठ करना कल्याणकारी रहेगा। अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना होगा।



जनवरी—कार्य-व्यवसाय में संघर्ष व कठिनाईयों का सामना रहे। आराम कम व भाग-दौड़ अधिक रहे। व्यवसाय एवं घरेलू उलझनों के कारण मन अशान्त रहे तथा खर्च भी अधिक रहे।

फरवरी—इस राशि पर शनि की दृष्टि के कारण व्यवसाय में भागदौड़ अधिक रहे। चिन्ताओं में वृद्धि तथा फिजूल खर्च बढ़ेगी। किसी निकट बन्धु से मनमुटाव पैदा होने का भय होगा।

मार्च—आर्थिक संकट के योग हैं फिर भी प्रयत्न करते रहें। यात्रा में व्यर्थ चिन्ता अथवा धन सम्बन्धी चिन्ता हो। 12 मार्च से इस राशि पर मंगल की शुभ दृष्टि होने से धन लाभ प्राप्ति के योग हैं।

अप्रैल—मासारम्भ से ही शनि की तृतीय दृष्टि होने से स्वभाव में तेजी एवं क्रोध अधिक रहेगा। बनते कार्यों में विघ्न-बाधाएँ पड़ेंगी। अपने भी परायों जैसे व्यवहार करेंगे।

मई—पूर्वार्द्ध भाग का फल शुभ रहेगा। किसी मित्र की सहायता से रुका हुआ कार्य बनेगा। परिवारिक सुख में वृद्धि होगी। उत्तरार्द्ध भाग में संघर्ष करने पर भी पर्याप्त धन लाभ नहीं हो पाएगा।

जून—इस राशि पर शनि की सादेसति का अशुभ प्रभाव चल रहा है जिससे घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। आय कम व खर्च अधिक होगा। स्वभाव में तेजी एवं उतेजना से बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे।

जुलाई—इस मास व्यवसाय में अत्यन्त कठिन हालात का सामना रहेगा। कार्यक्षेत्र में भाग-दौड़ अधिक होने पर भी आय अल्प रहेगी। ता. 10 के पश्चात् परिवार में परेशानियाँ बढ़ेंगी।

अगस्त—मासारम्भ में आय कम और खर्च अधिक होगा। व्यर्थ की भागदौड़ और फिजूल खर्च बढ़ेंगी। धन की हानि एवं स्वास्थ्य नर्म होगा। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे।

सिताम्बर—व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहेगी। व्यवस्ताएं बढ़ेंगी। किसी विदेशी सम्बन्धी से मुलाकात होगी। व्यर्थ की भाग-दौड़ अधिक और धन लाभ में विघ्न होंगे। परिवारिक चिन्ता रहेगी।
अक्तूबर—धन लाभ व पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। स्त्री सुख एवं परिवार में कोई मंगल कार्य आयोजित होगा। वाहनादि सुख साधनों पर व्यय हो। किसी उच्चाधिकारी से सम्पर्क पैदा होगा।

नवम्बर—सप्ताहारम्भ में कार्य व्यवस्ताएं अधिक रहेंगी। गुजारे योग्य धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त रहेंगे। 15 नव. तक राशि स्वामी सूर्य नीच राशि में होने से बनते कामों में अड़चनें पड़ेंगी।

दिसम्बर—सोची हुई योजनाओं में आर्थिक सफलता मिलेगी परन्तु धन का खर्च विलास-मनोरंजन आदि कार्य पर अधिक होगा। उत्तरार्ध में अधिकांश समय वृथा कार्यों में व्यतीत होगा।

फलादेश एवं उपायों सम्बन्धी अधिक जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित राशिफल का अवलोकन करें। **प्रकाशक**—जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर।

वर्षफल कल्याण राशि सन् 2005 ई.

ग्रहगोचर—इस राशि पर गुरु का संचार 27 सित. तक रहेगा। वर्षारम्भ

से 12 जन. तक एवं तदुपरान्त 26 मई से वर्षान्त तक शनि की विशेष दृष्टि इस राशि पर पड़ेगी। वृत्तीय स्थान पर मंगल, बुध व शुक्र का सम्बन्ध शुभ है। फलस्वरूप अत्यन्त संघर्षपूर्ण एवं कठिन परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। परन्तु मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझनें बनी रहेंगी। 14 मार्च से 12 अप्रैल के मध्य सूर्य की तथा 22 अप्रैल से 17 जुलाई के बीच मंगल की विशेष दृष्टि पड़ने से क्रोध एवं उत्तेजना अधिक रहेगी। चोटानिदानों का भय, किसी बन्धु से वृथा तकरार का भय है। कलह-बेहेश से बचें। 25 मई से 23 जून के मध्य राशि स्वामी

बुध की स्थिति अच्छी होने से धन लाभ एवं उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। 24 जून से 16 सित. के मध्य

दौड़-धूप अधिक रहेगी। धन का खर्च अधिक रहेगा। स्वास्थ्य भी ठीक न रहेगा। शनि की दृष्टि के कारण मानसिक एवं गुप्त चिन्ताएँ भी रहेंगी। 17 सित. से 24 अक्टू. के मध्य बुध की स्थिति अच्छी होने से बिगड़े कामों में कुछ सुधार होगा। 14 नव. से बुध वक्री होने से संघर्षपूर्ण परिस्थितियों एवं चुनौतियों का सामना रहेगा। इस राशि की महिलाओं एवं विद्यार्थियों के लिए 25 मार्च के बाद की समयवधि विशेष संघर्ष व कठिनाईयों से भरी होगी।

जनवरी—मासारम्भ में शनि की दृष्टि पड़ने से अत्यधिक परिश्रम के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बन पाएँगे। परन्तु खर्च भी बढ़-चढ़ कर रहेंगे। उत्तरार्ध भाग में दौड़-धूप अधिक व परेशानियाँ बढ़ेंगी।

फरवरी—पूर्वार्द्ध भाग में विघ्न-बाधाओं के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। गृह में कोई मंगल कार्य होगा। इस राशि पर गुरु वक्री होने के कारण घरेलू उलझनें व तनाव बढ़ेंगा।

मार्च—सप्ताहारम्भ से बुध की स्वर्गही दृष्टि होने से व्यवसाय से धन की प्राप्ति होगी। विदेश से पत्राचार व धन लाभ के योग हैं। विद्या में सफलता मिले। प्रिय बन्धु मित्र से मुलाकात होगी।

अप्रैल—गुरु की स्थिति के कारण गृह में मांगलिक एवं धार्मिक कार्य सम्पन्न होंगे। नए-नए मित्रों से मिल-मिलाप होगा। पदोन्नति, धन और सौभाग्य में वृद्धि होगी। धर्म-कर्म की ओर रुचि बढ़ेगी।

मई—राशि स्वामी बुध सप्तम स्थान में राहु युक्त होने से बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। परिवार के बारे में चिन्ता होगी और मानसिक तनाव रहेगा। किसी व्यक्ति से अनबन के योग हैं।

जून—सप्ताह के पूर्वार्द्ध भाग में कारोबार मध्यम एवं धन लाभ साधारण रहेगा। रोजगार के लिए

दौड़-धूप अधिक हो। ता. 13 के बाद किसी प्रियजन की सहायता से कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी।
जुलाई—मासारम्भ में इस राशि पर शनि व मंगल की दृष्टियाँ पड़ रही हैं, जिसे इस सप्ताह में व्यवसाय के क्षेत्र में संघर्ष अधिक रहेगा। आय कम व खर्च अधिक होगा। दुर्घटना से चोट आदि लगने का भय है।

अगस्त—इस मास मिला-जुला फल प्राप्त होगा। व्यवसाय में उन्नति व लाभ के अवसर प्राप्त होंगे।
सितम्बर—अत्यधिक परिश्रम करने पर भी आय कम रहे, खर्च भी बढ़-चढ़ कर रहेंगे। किसी निकट बन्धु से धोखा मिलने के योग हैं। सावधानी बरतें।

अक्तूबर—उत्साह और सौभाग्य में वृद्धि होगी। धनागमन के साधनों में बढ़ोत्तरी और शुभ कार्यों पर खर्च होगा। ता. 19 से व्यर्थ की दौड़-धूप रहेगी। उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे।

नवम्बर—आशाओं में सफलता और राजपक्ष से मान-सम्मान में वृद्धि होगी। नए कार्यों की योजना बनेगी, परन्तु केतु की स्थिति कारण कठिनाईयें रहेंगी।

दिसम्बर—विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे। व्यवसाय में उन्नति के साथ-साथ व्यर्थ की परेशानी रहेगी। अधिकांश समय एवं धन वृथा कामों में व्यतीत होगा।

नोट—अधिक जानकारी के लिए अपना जन्म समय, तारीख, मास, स्थान आदि का विवरण भेजकर वर्षफल बनवाएँ।

वर्षफल कुल्पा राशि सन् 2005 ई.

वर्षारम्भ से 24 मार्च तक इस राशि पर केतु का संचार रहेगा। यद्यपि

राशि स्वामी शुक्र दूसरे भाव में मंगल, बुध के साथ योगकारक है। अतएव

वर्षारम्भ से लगभग तीन महीनों तक अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाईयों से निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। विशेष धन लाभ प्राप्ति में विघ्न/बाधाएँ

रहेंगी। 18 मार्च के बाद शुक्र उच्चराशि (मीन) में संचार करने से आय के स्रोतों में सुधार होगा। अप्रैल-मई में पदोन्नति अथवा धन लाभ के अवसर

प्राप्त होंगे। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। सवारी आदि सुख-साधनों पर व्यय होने के योग हैं। जून-जुलाई में दौड़-धूप अधिक

होगी। खर्च की मात्रा बढ़ेगी। 12 अग. से 5 सित. के मध्य शुक्र नीच राशि में रहने से आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। स्वास्थ्य भी ठीक न रहे। यात्रा होने के भी संकेत हैं। 16 सित.

से 1 अक्टू. के मध्य शुक्र के इसी राशि में संचार करने से धन लाभ, शुभ यात्रा, प्रियबन्धुओं से मिलान आदि शुभ फल प्राप्त होंगे। अक्टू.-नव. में कारोबार में अस्थिरता के हालात रहने के संकेत हैं। दिसम्बर

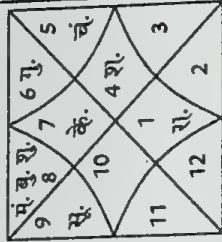
में आर्थिक परेशानियों के कारण मन चिन्तित व तनावग्रस्त रहेगा। विद्यार्थियों के लिए मार्च तक संघर्षपूर्ण हालात रहेंगे।

महिलाओं के लिए—25 मार्च तक की समय अवधि विशेष संघर्ष व चुनौतियों से परिपूर्ण रहेंगी। आर्थिक परेशानियाँ भी रहेंगी।

जनवरी—मासारम्भ में केतु का संचार होने से विघ्न/बाधाओं एवं संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। मन में उचाटता एवं उलझनें रहेंगी। किसी बन्धु से धोखा मिलने के भी संकेत हैं।

फरवरी—इस मास में अत्यधिक भाग-दौड़ करने पर भी विशेष धन लाभ नहीं हो पाएगा। स्वास्थ्य भी ठीक न रहे। वनते कार्यों में अड़चनें पैदा होंगी। मासान्त में धन लाभ के योग हैं।

मार्च—किसी धार्मिक कार्य पर धन का खर्च होगा। अधिकांश समय मनोरंजन में व्यतीत होगा।



25 मार्च के बाद धन लाभ और सुख के साधनों में वृद्धि होगी परन्तु विशेष परिश्रम से कार्यों में सिद्धि होगी।

अप्रैल—मासारम्भ में राशिस्वामी शुक्र उच्चराशि (मीन) में संचार कर रहा है। जिससे उत्साह और सौभाग्य में वृद्धि होगी। ता. 13 के बाद सूर्य की नीच दृष्टि होने से स्वास्थ्य में विकार और बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी।

मई—सकावटों के बावजूद पराक्रम में वृद्धि एवं आय के साधन बढ़ेंगे। व्यवसायिक व्यस्तताएं बढ़ेंगी। माता-पिता का विशेष सहयोग लाभकारी होगा। धार्मिक कार्य करने में प्रवृत्ति होगी। शुभ कार्यों पर व्यय होगा।

जून—परिश्रम व दौड़-धूप अधिक करने पर भी निर्वाह योग्य धन ही प्राप्त होगा। व्यवसाय व कारोबार में उतार-चढ़ाव व पेशानियां उत्पन्न हों। मासान्त में कुछ विगड़े कार्यों में सुधार और धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे।

जुलाई—मासारम्भ में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़े। आय कम व खर्च अधिक हो। व्यवसाय में विघ्न तथा घरेलू उलझनों के कारण मन चिन्तित रहे। शरीर कष्ट हो। व्यर्थ की भागदौड़ अधिक रहे।

अगस्त—उलझनों के बावजूद धन लाभ एवं उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। सोची योजनाओं में आंशिक लाभ प्राप्त होगा। वाहन आदि सुख-साधनों में वृद्धि होगी।

सितम्बर—शुक्र शुभ स्थिति होने से परिस्थितियों में सुधार होगा। कुछ विगड़े कार्य बनेंगे। स्वास्थ्य में सुधार और धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे।

अक्टूबर—धन एवं विद्या में उन्नति होगी। विलासिता कार्यों पर धन का व्यय होगा। स्त्री एवं संतान की ओर से प्रसन्नता प्राप्त हो। मासान्त में अत्यन्त कठिनाई से निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी।

नवम्बर—किसी नए कार्य की योजना बनेगी। निराशा की भावना को त्याग कर कार्य करना शुभ रहेगा। व्यवसाय में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। उच्च प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क बढ़ेंगे।

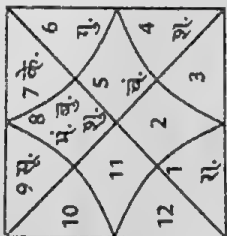
दिसम्बर—ता. 16-17 को कारोबार मध्यम एवं धन लाभ साधारण रहें। किसी प्रियजन की सहायता से कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। अधिकांश समय व धन मनोरंजन आदि कार्यों पर व्यय होगा।

नोट—अधिक विस्तृत फल के लिए 275/- रुपये भेजकर वर्षफल बनवाएं।

वर्षफल बुद्धिचक्र राशि सन् 2005 ई.

वर्षारम्भ में इस राशि पर राशि स्वामी मंगल का बुध, शुक्र के साथ

सम्बन्ध बना हुआ है। जिससे कठिन एवं संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। 29 जन. से 11 मार्च तक मंगल द्वितीय स्थान में होने से परिवार में मनमुटाव एवं अशांति रहेंगी। 12 मार्च से 21 अप्रै. के मध्य मंगल उच्च राशि में संचार होने से पराक्रम एवं उत्साह में वृद्धि रहेगी। भाग्य एवं आय के साधनों में भी वृद्धि होगी। उच्च प्रतिष्ठित लोगों से लाभ होगा। 14 मई से 13 जून के मध्य सूर्य की विशेष दृष्टि पड़ेगी, जिससे स्वभाव में क्रोध व उत्तेजना अधिक रहेगी। धन का खर्च भी अधिक रहेगा। 14 जून से 16 जुला. के मध्य निकट भाई-बन्धुओं से विवाद या गृह कलह होने की सम्भावना है। सद्व्यवहार बनाए रखें। 18 जुला. से वर्षान्त तक राशि स्वामी मंगल की इस राशि पर स्वगृही दृष्टि रहेगी जिससे संघर्ष के बावजूद निर्वाह योग्य आमदन के साधन बनते रहेंगे। खर्च की मात्रा भी बढ़ेगी। मंगल 2 अक्तू. को वक्री होकर 10 दिसं. को भागी होगा।



वर्ष प्रवेश कुण्डली

इस समयावधि में खर्च अधिक तथा नए कार्यों में निवेश होगा। परन्तु शत्रुओं से विशेष सावधानी बरतें। इस राशि की महिलाओं को क्रोध एवं उत्तेजना से बचना चाहिए अन्यथा स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

जनवरी—संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। मन परेशान रहेगा। व्यवसाय में परिवर्तन का विचार बने। आय कम और धन का अपव्यय होगा।

फरवरी—मासारम्भ वृथा प्रयत्न और फिजुलखर्ची बढ़ेगी। किसी निकटस्थ व्यक्ति द्वारा थोड़ा मिलने की सम्भावना होगी। अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में धन लाभ मध्यम होगा। व्यय भी बढ़ा-चढ़ा रहेगा।

मार्च—मासारम्भ में बिगड़े कामों में कुछ सुधार और उन्नति होने के योग हैं। व्यर्थ की भाग-दौड़ एवं खर्च की अधिकता रहेगी। विधवा-बाधाओं के बावजूद धन प्राप्ति के साधनों में वृद्धि होगी।

अप्रैल—आमदन व धन लाभ के साधन बढ़ेंगे। संतान की तरफ से शुभ समाचार प्राप्त होगा। नवीन कार्य-सम्बन्धी योजना बनेगी। किसी प्रिय बन्धु से मुलाकात होगी।

मई—परिवारिक व आर्थिक स्थिति अनिश्चित रहेगी। गुजारे योग्य धन की प्राप्ति होगी। निकट बन्धु से अनबन होगी। समाज में मान-प्रतिष्ठा होते हुए भी सामाजिक कार्यों में विघ्न रहेंगे।

जून—मासारम्भ में परिश्रम और दौड़धूप अधिक रहेगी। सरकारी विभाग में काम पेंडिंग रहेंगे। नौकरी अथवा व्यापार में कोई समस्या खड़ी होगी। शरीर कष्ट व गुप्त रोग होने के योग हैं।

जुलाई—व्यवसायिक क्षेत्र में व्यवस्तारें वनी रहेंगी। रक्का हुआ धन मिलेगा। विरोधियों पर विजय होगी। विदेश सम्बन्धी कार्यों में सफलता मिलेगी।

अगस्त—आय की स्थिति में सुधार होगा। निर्वाह योग्य आमदन के साधन बनेंगे। अचानक कोई शुभ समाचार प्राप्त होगा। विलासिता कार्यों पर धन का व्यय होगा।

सितम्बर—इस मास में ग्रह-स्थिति शुभ रहेगी जिससे बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। धन लाभ व प्रगति के मार्ग प्रशस्त होंगे। किसी श्रेष्ठ व्यक्ति से सम्पर्क होगा। मान-सम्मान में वृद्धि होगी।

अक्टूबर—राशि स्वामी मंगल की स्वगृही दृष्टि होने से धन सम्बन्धी कार्यों में अच्छा फल प्राप्त होगा। दौड़-धूप अधिक रहेगी। विदेशी मित्रों से मेल-जोल और धन लाभ होगा।

नवम्बर—पूर्वार्द्ध भाग में कारोबार मध्यम एवं धन लाभ साधारण रहेगा। रोजगार के लिए दौड़धूप अधिक हो। मंगल की स्वगृही दृष्टि पड़ रही है। व्यापार-नौकरी में उन्नति के साधन बढ़ेंगे।

दिसम्बर—पूर्वार्द्ध भाग में शुक्र वक्री होने से उत्साह और सौभाग्य में वृद्धि होगी। धन-लाभ की प्राप्ति होगी। शुभ कार्य पर खर्च होगा। उत्तरार्द्ध भाग में कुछ विशेष मानसिक परेशानी का भी सामना करना पड़ेगा।

इस राशि के जातकों को अरिष्ट निवारण हेतु श्री हनुमान उपासना करना कल्याणकारी रहेगा।

वर्षफल बुद्धिचक्र राशि सन् 2005 ई.

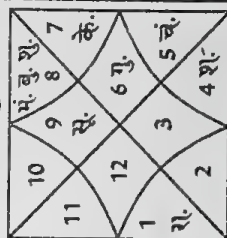
वर्षारम्भ से 13 जन. तक इस राशि पर भाग्येश सूर्य का संचार रहने से

संघर्ष के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। 13 जन. से 25 मई तक इस राशि पर शनि की विशेष दृष्टि रहने से घरेलू परेशानियों एवं

कारोबारी उलझनों का सामना रहेगा। राशिस्वामी गुरु दशम भाव में शत्रु राशिस्थ होने से व्यवसाय में दौड़धूप अधिक तथा आय भी कम रहेगी। 14

जून तक राशिस्वामी गुरु वक्री अवस्था में संचार करने से आर्थिक दृष्टि से विशेष शुभ नहीं है। 26 मई के बाद शनि की दृष्टि हट जाने से बिगड़े

कामों में सुधार तथा गुजारे योग्य आय के साधन बनेंगे। परन्तु शनि की दैट्या के प्रभावस्वरूप तनाव भी रहेगा। 28 सितं. से राशिस्वामी गुरु लाभ



वर्ष प्रवेश कुण्डली

| | | |
|----|-------|--------|
| 11 | 9 सु. | 8 |
| 12 | 10 | म. बु. |
| 1 | 7 | शु. |
| र. | 4 | के. |
| 2 | 3 | श. |
| | 5 | चं. |

व्यवसाय में विशेष परिश्रम करने पर भी समुचित धन लाभ नहीं हो पाएगा। यद्यपि 12 मार्च से 21 अप्रैल के मध्य इस राशि पर मंगल उच्च राशित्थ होने से अकस्मात् धन लाभ होने के अवसर प्राप्त होंगे। गुरु की दृष्टि के प्रभावस्वरूप शुभ कार्यों पर खर्च भी अधिक रहेगा। 28 सित. के बाद अकस्मात् धन लाभ व भाग्योन्नति के योग हैं। कुछ लक्ष्य हुए कार्यों में सफलता मिलेगी। इस राशि की स्त्रियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध भाग कैरियर एवं गृहस्थ जीवन के लिए चुनौतियों से भरा रहेगा। विद्यार्थियों के लिए भी उत्तरार्द्ध भाग कैरियर की दृष्टि से सफलता प्रदान करने वाला होगा।

जनवरी—इस मास आकस्मिक धन लाभ होगा। कार्य व्यवसाय में स्थिति कुछ अनुकूल होगी। भाई-बन्धुओं का सहयोग प्राप्त होगा। भूमि व वाहनान्दि का लाभ होगा। संतान सम्बन्धी विता रहेगी।

फरवरी—विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन लाभ व वृद्धि होगी। संतान सम्बन्धी विता रहेगी। कारोबार में व्यस्तता बढ़ेगी। व्यवसाय में कुछ परिवर्तन का विचार बन सके। अन्य बन्धु में मुलाकात होगी।

मार्च—पूर्वार्द्ध भाग का फल शुभ रहेगा। किन्हीं मित्र व सहायता से रुका हुआ कार्य वनेगा। उत्तरार्द्ध में संवर्ध करने पर भी पर्याप्त धन लाभ नहीं हो पाएगा।

अप्रैल—इस मास मिश्रित फल प्राप्त होंगे। पराक्रम व उद्यम द्वारा आय के साधनों में वृद्धि होगी। उच्चप्रतिष्ठित व्यक्तियों के सम्पर्क बनेंगे। सुख-साधन में वृद्धि होगी।

मई—यत किए गए प्रयासों में भाग्योन्नति और श्रेष्ठ व्यक्तियों से सम्पर्क लाभकारी होगा। भूमि सुख एवं वाहन प्राप्ति भी सम्भव होगी, परन्तु नौकरी में अफसरो व तनाव हो सकता है।

जून—पूर्वार्द्ध भाग में विघ्न/बाधाओं के बावजूद निराला आय आय के साधन बनते रहेंगे। गृह में कोई मंगल कार्य होगा। उत्तरार्द्ध में घरेलू उलझनें व कलह के कारण तनाव होगा।

जुलाई—मासारम्भ में गुरु की दृष्टि के फलस्वरूप परिवारिक वातावरण में खुशहाली होगी। स्त्री व संतान की तरफ से शुभ समाचार प्राप्त होगा।

अगस्त—उलझनों के बावजूद धन लाभ एवं उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। सोची योजनाओं में आंशिक लाभ प्राप्त होगा। प्रयास करने पर धन प्राप्ति के साधन बनेंगे।

सितम्बर—विलासिता के कार्यों पर धन का व्यय होगा। आर्थिक कार्य में व्यवधान के योग हैं। विशेष परिश्रम करने पर ही लाभ होगा।

अक्टूबर—कार्य व्यवसाय में स्थिति कुछ अनुकूल होगी। भाई-बन्धुओं का सहयोग प्राप्त होगा। किन्हीं शुभ कार्य पर खर्च होगा। उत्तरार्द्ध में अडचनों के कारण परेशानियां बढ़ेंगी।

नवम्बर—व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहेगी। स्त्री व परिवार से सुखद समाचार मिलेगा। विदेश सम्बन्धी कार्य किन्हीं विशिष्ट व्यक्ति के सहयोग से बन जाएंगे। पुरस्कार करने पर लाभ होगा।

दिसम्बर—संवर्ध के बावजूद धन लाभ के साधन बनते रहेंगे। किसी मित्र की सहायता से कोई रुका हुआ कार्य वनेगा। परिवार में खुशी का अवसर वनेगा। शुभ कार्य पर खर्च होगा।

वर्षफल मन्त्र राशि सन् 2005 ई.

वर्ष के आरम्भ से राशि स्वामी शनि छटे भाव में, तदुपरान्त 13 जन. से 25 मई तक वक्रनी होकर पंचम भाव में संचार करेगा। वर्षारम्भ से 28 जन. तक इस राशि पर मंगल की भी विशेष दृष्टि रहेगी, जिससे प्रारम्भिक मास अत्यन्त संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में गुजरेगा, व्यवसाय के क्षेत्र में भी विघ्न-बाधाएं रहेंगी। 12 फर. से 13 मार्च के मध्य सूर्य का संचार तथा 22 अप्रैल से 2 जून के बीच मंगल

स्थान में संचार करने से अकस्मात् धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। इस राशि की स्त्रियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध भाग विशेष संघर्षपूर्ण एवं कठिन परिस्थितियों से भरा होगा। उत्तरार्द्ध भाग में परिवारिक खुशियों की उपलब्धि होगी।

जनवरी—मासारम्भ में इस राशि पर सूर्य का संचार होगा। स्वामी आदि सुख के साधन मिलने के योग हैं। गृह कार्यों पर धन का व्यय होगा। किसी श्रेष्ठ व्यक्ति के सहयोग से बिगड़े कार्य बनेंगे।

फरवरी—आय कम और खर्च अधिक होगा। स्त्री व संतान सम्बन्धी चिन्ता रहेगी। ता. 10-11 को अत्यधिक कठिनाई से निर्वाह योग्य धन प्राप्त होगा। अचानक उन्नति व लाभ के अवसर भी प्राप्त होंगे।

मार्च—पूर्वार्द्ध भाग में बनते कार्यों में बाधाएं उत्पन्न होंगी। उत्तरार्द्ध में प्रयास करने पर बिगड़े कार्य बनेंगे। व्यवसाय में आंशिक लाभ होने के योग हैं। घरेलू उलझनें बढ़ेंगी।

अप्रैल—पूर्वार्द्ध भाग में आय कम, परन्तु खर्च अधिक रहेगा। उत्तरार्द्ध भाग में भाग्येश सूर्य उच्चराशि में आने से बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। धन लाभ व पदोन्नति के योग हैं।

मई—इस मास धर्म-कर्म में रुचि बढ़ेगी। राज दरबार में जाने से मान-सम्मान बढ़ेगा। व्यवसाय/नौकरी में उन्नति के साधन बनेंगे। घर की सुख शान्ति में मित्रों द्वारा विघ्न पड़ेगा। थोड़ी सी उत्तेजना से काम बिगड़ सकता है।

जून—शनि की दैव्या के कारण शरीर कष्ट, मानसिक तनाव व स्वास्थ्य हानि के योग हैं। लाभ कम व खर्च अधिक होगा। विभिन्न उलझनों का सामना रहेगा। मासान्त में कोई बिगड़ा कार्य बनने के योग हैं।

जुलाई—व्यवसाय में आंशिक सफलता एवं विलासिता कार्यों पर धन खर्च होगा। क्रोध एवं उत्तेजना से कोई बुरा हुआ कार्य बिगड़ने के योग हैं। ता. 26, 27 को आर्थिक उलझनें पैदा होंगी परन्तु परिवारिक सहयोग प्राप्त होगा।

अगस्त—आर्थिक हालात आगे से बेहतर होंगे। कार्यक्षेत्र में व्याप्तताएं बनी रहेंगी। मन्त्र में मान-इज्जत बढ़ेगी। विदेशों से सम्बन्धित कार्यों में कुछ सफलता प्राप्त होने की सम्भावनाएं हैं। मासान्त में शुभ समाचार और अप्रत्याशित लाभ भी होंगे।

सितम्बर—शनि की दैव्या होने से व्यवसाय में अनिश्चितता बनी रहेगी। आय कम और व्यय अधिक रहेगा। ता. 2, 3 को परिश्रम करने पर भी धन प्राप्ति आशा अनुरूप नहीं होगी। ता. 4, 5 को परिवार में तनाव व वैचारिक मतभेद होंगे।

अक्टूबर—मासारम्भ में आय कम और खर्च अधिक होगा। व्यर्थ की भाग-दौड़ और फिजूलखर्ची बढ़ेगी। धन की हानि एवं स्वास्थ्य नर्म होगा। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। संतान सम्बन्धी कष्ट एवं चिन्ता बढ़ेगी।

नवम्बर—व्यवसाय व कारोबार में अनिश्चितता बनी रहेगी। आय से व्यय अधिक होगा। स्वास्थ्य में विकार उत्पन्न हो। ता. 18, 19 को प्रयास करने पर धन लाभ के अवसर पहले से बेहतर होंगे।

दिसम्बर—संवर्धपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। अकस्मात् धन लाभ भी होगा। व्यर्थ की भाग-दौड़ और फिजूलखर्ची होगी। विलासिता कार्यों पर व्यय होगा। कार्यों में बाधाएं उत्पन्न होंगी।

वर्षफल मन्त्र राशि सन् 2005 ई.

मकर राशि पर वर्षारम्भ से 12 जन. तक तथा उसके बाद 26 मई से वर्ष के अन्त तक राशि स्वामी शनि की स्वगृही दृष्टि रहेगी। इस राशि पर गुरु की नीच दृष्टि 27 सितं. तक रहेगी, जिससे वर्ष का पूर्वार्द्ध भाग विशेष संघर्षपूर्ण एवं कठिन परिस्थितियों में से गुजरेगा। 13 जन. से 25 मई तक कार्य/

वर्ष प्रवेश कुण्डली

| | | | | |
|-----|-------|-------|------------|-------|
| 1 | 12 | 11 | 10 | पै.प. |
| रा. | यूरेस | 8 | सू. | |
| 2 | च. | 5 | मं. बु. श. | |
| 3 | 4 श. | 6 गु. | 7 के. | |

कुम्भ राशि पर संचार करेगा। जिससे इस समयवाधि में जातक को क्रोध एवं तनाव अधिक रहे। धन का अपव्यय भी अधिक रहेगा। घरेलू व व्यवसायिक उलझने बढ़ेंगी। 16 अग. से 15 सित. के मध्य इस राशि पर सूर्य की दृष्टि होने से परिवारिक परेशानियाँ रहेंगी। 28 सित. से वर्षांत तक इस राशि पर गुरु की शुभ दृष्टि पड़ने से बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। महिलाएं—वर्ष का पूर्वार्द्ध भाग विशेष संघर्षपूर्ण एवं कठिन समस्याओं से युक्त रहेगा। 28 सित. के बाद परिवारिक खुशियों में वृद्धि होगी।

कुम्भ राशि के विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध भाग चुनौतियों से भरा रहेगा।

जनवरी—मासारम्भ में आय कम और खर्च अधिक होगा। व्यर्थ की भाग-दौड़ और फिजूलखर्ची बढ़ेगी। धन की हानि एवं स्वास्थ्य नर्म तथा बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे।

फरवरी—राशि स्वामी शनि अभी वक्रो है जिससे शुभ कार्यों में अड़चने रहेंगी। उत्साह की भी कमी रहेगी। आय भी कम तथा खर्च अधिक रहेंगे। घरेलू उलझने बढ़ेंगी।

मार्च—धन एवं विद्या में उन्नति होगी। विलासिता कार्यों पर धन का व्यय होगा। स्त्री एवं संतान की ओर से प्रसन्नता प्राप्त हो। मासान्त में कठिनाई से निर्वह योग्य धन की प्राप्ति होगी।

अप्रैल—व्यवसाय व कारोबार में अनिश्चितता बनी रहेगी। आय से व्यय अधिक होगा। स्वास्थ्य में विकार उत्पन्न हो। प्रयास करने पर धन लाभ के अवसर पहले से बेहतर होंगे।

मई—आशाओं में सफलता प्राप्त होगी। कुछ रके हुए कार्यों में सिद्धि प्राप्त होगी। घर में कोई मंगल कार्य होगा व किसी श्रेष्ठ व्यक्ति से सम्बन्ध बनेगा। आय के साधनों में वृद्धि होगी।

जून—घरेलू परेशानियों के कारण मन व्यथित रहेगा। व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहेगी। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। वाहनादि चलाते समय सावधानी बतें।

जुलाई—अत्यधिक परिश्रम के बाद धन लाभ और सुख साधनों में वृद्धि होगी। व्यर्थ की भाग-दौड़ और धार्मिक कार्यों पर खर्च होगा। वाद-विवाद से बचें।

अगस्त—पूर्वार्द्ध में मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझने बढ़ेंगी। अत्यधिक संघर्ष के बाद धन लाभ अल्प रहेगा। उत्तरार्द्ध में रके हुए कार्यों में सुधार, आय कम-खर्च अधिक होगा।

सितम्बर—अत्यधिक भाग-दौड़ और परिश्रम करने से धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। अचानक किसी मंगल कार्य पर व्यय होगा। मान-सम्मान में वृद्धि और व्यय होगा। रके कार्यों में प्रगति होगी।

अक्टूबर—अत्यधिक परिश्रम के बावजूद निर्वह योग्य धन की प्राप्ति होगी। अकस्मात् धन लाभ होगा परन्तु खर्च भी बढ़-चढ़ कर होगा। मासान्त में कुछ अप्रत्याशित लाभ भी होंगे।

नवम्बर—परिश्रम से कोई विशेष रक्का हुआ कार्य बनेगा। आय व्यय समान रहेगा। धर्म-कर्म में रुचि बढ़ेगी। प्रिय बन्धु से मुलाकात होगी। स्त्री एवं संतान की तरफ से शुभ सूचना मिलेगी।

दिसम्बर—मासारम्भ में शनि वक्रो होने से आय कम और खर्च अधिक होगा। व्यर्थ की भाग-दौड़ और फिजूलखर्ची बढ़ेगी। धन की हानि एवं स्वास्थ्य नर्म होगा। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे।

अधिक विस्तृत फलादेश के लिए जन्म-तारीख आदि का विवरण भेज कर बड़ा वर्षफल बनवाई।

वर्षफल मीन राशि सन् 2005 ई.

वर्षारम्भ से इस राशि पर गुरु की सतम स्वगृही शुभ दृष्टि पड़ रही है जिससे प्रारम्भ में धर्म-कर्म की ओर रुचि बढ़ेगी। धार्मिक एवं परोपकारी कार्यों पर खर्च अधिक रहेगा। किन्हीं श्रेष्ठ लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। ता. 29 जन. से 11 मार्च के बीच इस राशि पर मंगल की चतुर्व दृष्टि पड़ने से व्यवसाय

वर्ष प्रवेश कुण्डली

| | | | | |
|-----|----|-----|------------|-------|
| रा. | 1 | 11 | 10 | पै.प. |
| 2 | 12 | 9 | सू. | |
| 3 | 6 | गु. | मं. बु. श. | |
| 4 | च. | 5 | 7 के. | |

में दौड़धूप अधिक रहेगी। धन का अपव्यय तथा क्रोध की भावना अधिक रहेगी। 12 से 21 मार्च के मध्य भाग्येश मंगल उच्चराशि में प्रवेश होकर धन स्थान को स्वगृही दृष्टि से देखेगा, जिससे आय के साधनों में वृद्धि होगी। कुछ बिगड़े काम बनेंगे। उत्साह व पराक्रम में वृद्धि होगी। गुरु के कारण शुभ कार्यों पर खर्च भी होंगे। 14 मार्च से 12 अप्रैल के मध्य इस राशि पर सूर्य का संचार सूर्य का संचार होने से स्वभाव में क्रोध व उत्तेजना बढ़ेगी। स्वास्थ्य में खराबी एवं वृथा खर्च भी बढ़ेंगे। ता. 25 मार्च से वर्षांत तक इस राशि पर राहु का संचार होने से बनते कार्यों में अड़चने पैदा होंगी, यद्यपि 27 सित. तक गुरु की दृष्टि रहने से निर्वह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

महिलाएं व विद्यार्थी वर्ग—महिलाओं के लिए वर्ष के प्रारम्भिक तीन महीनों में शुभ एवं लाभदायक काल रहेगा। तदुपरान्त संघर्ष व कठिनाईयों से भरा रहेगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी विकार होने के संकेत हैं। सावधानी बतें।

जनवरी—मासारम्भ में इस राशि पर राशिस्वामी गुरु की शुभ दृष्टि पड़ रही है, जिससे यह मास शुभ फलदायक रहेगा। पदेनति व धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। कुछ अप्रैर कार्य पूर्ण होंगे।

फरवरी—मासारम्भ में कुछ बिगड़े कार्य बनेंगे। धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। पदेनति व मान-सम्मान में वृद्धि होगी। मासान्त में दौड़-धूप तथा फिजूलखर्ची बढ़ेगी।

मार्च—निर्वह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। परन्तु इस राशि पर मंगल की अशुभ दृष्टि पड़ने से परिस्थितियाँ संघर्षपूर्ण रहेगी। आराम कम व दौड़-धूप अधिक रहेगी।

अप्रैल—विशेष परिश्रम और भाग-दौड़ के उपरान्त सफलता के योग होंगे। मासान्त में कोई शुभ समाचार के मिलने योग हैं। वैशाख संक्रान्ति को वैशाख महात्य का पाठ व यथाशक्ति दान करना शुभ होगा। उत्तरार्ध भाग में शुभ फल घटित होंगे।

मई—राशि पर गुरु की स्वगृही दृष्टि के कारण शुभ कार्यों पर व्यय होगा। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। धर्म-कर्म में रुचि रहेगी। आय व सुख-साधनों में वृद्धि होगी।

जून—संघर्ष के बावजूद धन लाभ के साधन बनते रहेंगे। भूमि, जायदाद एवं वाहनादि पर खर्च अधिक होगा। स्त्री-सुख एवं परिवार में खुशी का वातावरण बनेगा। मासान्त में बनते कार्यों में अड़चने पैदा होंगी।

जुलाई—कारोबार में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। अत्यन्त कठिनाई से निर्वह योग्य धन प्राप्ति होगी। परन्तु खर्चों की अधिकता से मन परेशान रहेगा। शरीर कुछ अस्वस्थ रहे।

अगस्त—इस राशि पर गुरु एवं मंगल की दृष्टि होने से यह सप्ताह शुभ रहेगा। भाग्य से धन प्राप्ति और मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। विज्ञां बाधाओं के बावजूद धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे।

सितम्बर—मासारम्भ में धन लाभ व सुख के साधनों में वृद्धि होगी। प्रिय बन्धु से मुलाकात और सम्बन्धियों से सहयोग प्राप्त होगा। बिगड़े कार्य बनेंगे।

अक्टूबर—पूर्वार्द्ध भाग में व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहे। सवारी का सुख मिले। उत्तरार्द्ध भाग में घरेलू उलझने के कारण मन परेशान रहे। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे।

नवम्बर—आय कम और खर्च अधिक होगा। व्यर्थ की भाग-दौड़ और फिजूलखर्ची बढ़ेगी। धन की हानि एवं स्वास्थ्य नर्म होगा। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे।

दिसम्बर—इस राशि पर राहु के संचार के कारण मानसिक अस्थिरता रहेगी। परन्तु कार्य व्यवसाय में सुधार होगा। अवांछित व्यक्तियों के कारण कार्यों में परेशानी होगी। ता. 20 के पश्चात् बौद्धिक कार्यों में प्रगति होगी।

वि. संवत् २०६२ में सम्वत्सर, राजा, मन्त्री आदि का फल

ॐ स्वस्ति श्री गणेशाय नमः। अचिन्त्याव्यक्तस्वरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः। आदौ गणपतिं नमस्कृत्य प्रणम्य च पूर्वजानहम्। चन्द्रमिश्रं तत्पुत्रं रामजी दत्तस्य सूनं विश्वविख्यातं पण्डित देवी दयालुं स्व प्रपितामहम्। स्मरन् भक्त्या लोकहितार्थं सुख सम्पत्तिं हेतवे। विलम्ब नामक विक्रमी नव सम्वत्सरे शुभे त्रिशत्योत्तर शत वर्षाणि (१३०) वर्ष प्रवेशे पं. पन्नालाल अहं प्रपौत्र पण्डित देवी दयालु मशहूर आलम ज्योतिषी, कुर्वे पंचांग दिवाकरम्॥

सृष्टि संवत् १९५५, ५८, ५९, १०६ के अन्तर्गत श्री विक्रमी संवत् २०६२ कलि (कल्कि) संवत् ५१०६ श्री कृष्ण संवत् ५२४९, सत्वि संवत् ५०८१, श्री बुद्ध संवत् २६२८/२९ श्री महावीर निर्वाण संवत् २५३०/३१, शक संवत् १९२६-२७, हिजरी सन् १४२५-२६, इंग्लिश सन् २००५/०६ ई०, खालसा सम्वत् ३०७, नानकशाही सम्वत् ५३७, सृष्टि संवत् के अन्तर्गत सतयुग प्रमाण १७२८०००, त्रैतायुग १२९६०००, द्वापर युग प्रमाण ८६४००० एवं कलियुग का प्रमाण ४३२००० वर्षों का होता है।

बार्हस्पत्यमान से विष्णु विंशति का ३२वाँ नया विलम्ब नामक सम्वत्सर २०६२ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, ९ अप्रैल, सन् 2005 ई., शनिवार से प्रारम्भ होगा। संकल्पान्ति कार्यों में इसी का प्रयोग रहेगा।

विलम्ब नामक नव सम्वत्सर का फल—

विलम्बितवत्सरे भूपाः परस्पर विदोधिन्ः। प्रजापीडा तु अनर्थत्वं तथापि सुखिनोजनाः॥

नारद संहितानुसार भी

विलम्ब नामक सम्वत्सर के आने पर प्रशासकों में परस्पर विरोध एवं टकराव पैदा होते रहते हैं। सामान्य वर्ग के लोगों को मानसिक, शारीरिक व आर्थिक दुखों, कष्टों एवं परेशानियों का सामना रहेगा। विशेष वर्ग के लोगों में सुख-सामनों की वृद्धि होगी। समाज में न्याय व उन्नति के अधिकांश कार्यों में अड़चने एवं विलम्ब होंगे।

नारद संहिता के अनुसार विलम्ब नाम का सम्वत्सर आने पर प्रशासकों में परस्पर विग्रह एवं वैमनस्य रहता है। वर्षा प्रचुरता में होती है। सामान्य प्रजा रोग, शोक, महंगाई एवं आतंक आदि कारणों से पीड़ित एवं आतंकित रहती है। तथापि इन विपरीत आपदाओं के होने पर भी कुछ लोगों को ऐश्वर्य, लाभ एवं उन्नति के अवसर प्राप्त होते रहेंगे।

(१) वर्ष के राजा शनि का फल—

शनैश्चरे भूमिपतौ सकृज्जलं प्रभूत रोगैः परिपीड्यते जनः।
युद्धं नृपाणां गद तस्कराद्यैः भ्रमन्ति लोकाः क्षुधिताश्च देशान्॥

—अर्थात् वर्ष का राजा शनि हो, तो उस वर्ष अनुयोगी वर्षा के कारण लोग विविध प्रकार के क्लिष्ट रोगों से पीड़ित रहें। प्रशासकों एवं प्रमुख लीडरों के बीच वैमनस्य, विरोध एवं टकराव की स्थिति रहे। चोरी, ठगी, तस्करी, लूटमार एवं बेईमानी की वारदातें अधिक होंगी। कहीं दुर्भिक्ष, आतंक तथा कहीं बाढ़ादि आपदाओं के कारण लोग रोग, शोक, भूख-कष्टों आदि से व्याकुल होकर अन्य प्रदेशों में जाने के लिए विवश हों।

(२) वर्ष का मन्त्री बुध का फल—

शशि सुते शुभ मन्त्रि समागते स्यपतिना रमते मदनक्रियाम्।
बहुधनं बहुवारि समन्वितं यव-मसूर-चणान्न महर्घताम्॥

—वर्ष का मन्त्री बुध हो तो अधिकांश लोग विशेषतया द्रव्यों अपने पतियों के संग भोग-विलासादि विषयों में अधिक आसक्त रहेंगी। धन का प्रसार अधिक हो। वर्षा भी प्रचुर मात्रा में हो, जौ, चने, मसूर, तेल, गेहूँ, धान्यादि तथा पैट्रोलियम वस्तुओं के भाव तेज होंगे। शिल्प-कला सम्बन्धी, खाद्यान्न एवं भोग्य वस्तुओं से सम्बन्धित व्यापारी तथा बुद्धिजीवी लोग व्यवसाय द्वारा विशेष लाभान्वित होंगे। गर्मी-खुरकी एवं त्वचा सम्बन्धी रोग अधिक होंगे॥

(३) सरस्येश शनि का फल—

रविसुते यदि धान्यपतौनृपतिभिः परिपीडित विग्रहाः।

गदभयं तुषधान्य हरं सदा दुरित वादविवादयुत नराः॥

—जिस वर्ष ग्रीष्मकालीन फसलों का स्वामी (सरस्येश) शनि हो, तो उस वर्ष सामान्य लोग सरकारी तन्त्रों के विचित्र नियमों के कारण दुःखी एवं पीड़ित रहें। क्लिष्ट रोगों का भय भी हो। जौ, गेहूँ, मक्का आदि की फसलें खराब हों। अधिकांश लोग वृथा वाद-विवाद और वृथा झगड़ों में संलिप्त रहें।

(४) धान्येश गुरु का फल—

गुरौ धान्यपतौ याते यवगोधूमशालयः। पच्यन्ते सर्वदेशेषु यज्वानो ब्राह्मणादयः॥

—वर्ष में धान्यपति गुरु हो, तो ग्रीष्मकालीन फसलें—गेहूँ, जौ, बाजरा, धान्य आदि की कृषि अच्छी होगी। ब्राह्मण आदि विद्वान् एवं धर्म परायण लोग यजन-याजन आदि धार्मिक कृत्यों में प्रवृत्त होंगे।

(५) मेघेश मंगल का फल—

अवनिजे जलदस्यपतौ भुविभ्रुति विचार विहीन धरामराः।

क्वचिदपि प्रचुरं जलमल्पकं क्वचिदपि प्रशमं बहुतापदम्॥

अर्थात् मेघेश (वर्षा का स्वामी) मंगल हो, तो ब्राह्मणादि उच्च वर्ण के लोग अपने धर्म-कर्म से च्युत अर्थात् शास्त्र मर्यादा के कर्तव्यों से च्युत होंगे। कहीं वर्षा बहुत कम और कहीं बहुत

अधिक होगी। कहीं भूखलन एवं बाढ़ादि तथा कहीं पेय पानी की कमी के कारण दुर्भिक्ष आदि का भय होगा।

(६) रसेश चन्द्र का फल—

यदि विधौरसपे भुविमानवो नव नवांयुवती बुभुजे प्रियाम्।

जलगधरा बहुवासिधि घायका रसवती धन-धान्यवती मही॥

—रसों का स्वामी चन्द्र होने पर युवक युवतियों के नए-नए रूपों से आकर्षित होकर विलासमय-जीवन यापन करने लगते हैं। बादल वर्षा बहुत अधिक करें। ईख, गुड़, चीनी, दूध, तैलादि रसदार वस्तुओं का उत्पादन अधिक मात्रा में हो। पृथ्वी पर गेहूँ, धान्यादि अनाज एवं लोगों में धन-सम्पदा का प्रसार बढ़ेगा।

(७) नीरसेश शनि का फल—

अयः पिण्डादि लोहानां कृष्णवस्त्रादि वस्तुनाम्। अर्घ्यद्विः प्रजायेत मन्दे नीरसनायके॥

—नीरसेश (धातुओं का स्वामी) शनि होने से स्टील-लोहा एवं लौह निर्मित कलपुर्जे, कच्चा लोहा एवं काले वर्ण की वस्तुएँ जैसे—कोयला, लोहा-स्टील आदि धातुएँ, पेट्रोल, ऊनी व गर्म वस्त्रों के भावों में तेजी हो।

(८) फलों के स्वामी मंगल का फल—

फलपतिर्यदि भूतनयो भवेत्तु पुष्प फलान्वित पादापाः।

गदभयान्वित देश जनस्तदा नृपतयो बहु विग्रहकारकाः॥

—अर्थात् फलों का स्वामी मंगल हो, तो वृक्षों पर फल-फूल, वनस्पतियों, औषधियों की पैदावार कम हो। लोगों में अनेक प्रकार के (नानाविध) क्लिष्ट रोगों से कष्ट एवं भय हों। देशाध्यक्षों (प्रशासकों) में परस्पर विग्रह, टकराव एवं युद्ध का भय रहे।

(९) धनेश शुक्र का फल—

द्रविणपो भृगुजो द्रविणैर्युताः समधना सकला ननु मानवाः।

समसुखा क्रय-विक्रय जीविनो नृपतयो जनपालन पत्पराः॥

—शुक्र धनेश (कोशपति) हो तो सामान्य लोग भी सरकारी क्षेत्रों द्वारा लाभान्वित होने में सफल होते हैं। अर्थात् सरकारी नीतियों से निम्न वर्ग के लोग भी लाभ प्राप्त करने में सफल होते हैं। क्रय-विक्रय करने वाले व्यापारी लोग लाभ व उन्नति में समान रूप से सुख ऐश्वर्य एवं लाभ के भागी होंगे। प्रशासक वर्ग लोक हितकारी योजनाओं एवं कार्यों में तत्पर होंगे।

(१०) दुर्गेश (सेनापति) मंगल का फल—

अवनिजो गदनायकतां गतो विविध दुःख वियोग समन्विताः।

जनपदेषु जनाः क्रय-विक्रये मय विशेषतया न फलं क्वचित्॥

—दुर्गेश (सेना का स्वामी) मंगल होने पर सामान्य लोग (रोग, महंगाई, आवश्यक वस्तुओं

की कमी, महंगाई, असुरक्षा एवं कठोर सरकारी नियमों आदि) अनेक प्रकार के दुखों से परेशान रहें। क्रय-विक्रय में लगे व्यापारी लोग (पेचीदा सरकारी नीतियों के कारण) व्यापार में विशेष रूप से लाभान्वित न हो पाएँगे।

★ रोहिणी का वास—रोहिणी का वास 'तट' पर है। फल—“तटे वृष्टि सुशोभना”—अर्थात् तट पर रोहिणी का वास हो, तो उस वर्ष उत्तम (अच्छी) वर्षा होने के योग बनते हैं। फलस्वरूप धान्य, चावल, गेहूँ, चने, गन्ना, वृक्ष, घास एवं अन्य पौधों की पैदावार अच्छी होगी।

★ समय—अर्थात् सम्यत् का वास इस वर्ष भी “शोभी” के घर पर होने से वर्षा विपुल मात्रा में होगी। “रजके वृष्टिरुत्तमा” कुएँ, तालाब, नदी-नाले, बागडि़यों, दरिया आदि जल से आपूरित होंगे। धान्य, चने, चावल, ईख, गेहूँ, मक्की, हरी सब्जियाँ, वृक्षों व फलों की पैदावार अच्छी होगी। लोगों में सुख व ऐश्वर्य के साधन बढ़ेंगे।

★ सम्यत् का वाहन महिष (भैंसा) होगा इसका प्रभावस्वरूप वर्ष में विषम (असमान) वर्षा होती है—अर्थात् कहीं अतिवर्षा से बाढ़, भूखलन, फसलों को हानि, तो कहीं वर्षा की कमी से पेयजल की कमी, दुर्भिक्ष, अकाल आदि प्राकृतिक प्रकोपों का भय हो। सर्व-साधारण जनोपयोगी वस्तुओं की कमी एवं मूल्य वृद्धि हो। राजनीतिक क्षेत्रों में भी परस्पर विरोध एवं टकराव अधिक रहें।

★ चतुर्थेयों में संवत् नाम का मेघ होगा। संवत्ख्योर्नदिः इस मेघ के प्रभावस्वरूप लोगों में सात्विक धर्म-कार्यों की कमी रहे। लोग काम वासनाओं में अधिक आसक्त रहें। वर्षा प्रचुर मात्रा में हो। पूर्वी हवाएँ अधिक चलें।

★ नवमेघों में वायु नाम का मेघ रहेगा। इसका फल शुभ नहीं कहा गया। उपयोगी वर्षा की कमी रहे। अधिकांश धान्यों का नाश हो।

★ द्वादश नागों में 'हेममाली' नाम का नाग होगा। इसका फल शुभ माना गया है—“समस्त धान्य सम्पूर्ण प्रभूत जल वृष्टितः”—अर्थात् हेममाली नामक नाग होने से सम्यत् में वर्षा विपुल मात्रा में होने से शीतकालीन फसलें धान्य, चावल, मक्की, ज्वार, बाजरा, मूंग, मोठ, ईख, जूट, कपास, पटसन आदि की उपज अच्छी होगी।

शनि की दृष्टि—वि. सम्यत् २०६२ के प्रारम्भ (९ अप्रैल, २००५ ई.) से २५ मई, ०५ ई. तक शनि मिथुन राशि में ही संचार करेगा। तदुपरान्त २६ मई से वर्षान्त तक कर्क राशि में संचार करेगा।

मिथुन राशि में संचारकालीन शनि की क्रूर दृष्टि सिंह, धनु एवं मीन राशियों पर रहेगी। फलस्वरूप शनि की क्रूर दृष्टि का प्रभाव पूर्व तथा उत्तर दिशाओं पर और सिंह, धनु व मीन राशियों के व्यक्तियों तथा उनके प्रभाव क्षेत्र में पड़ने वाले देशों पर विशेष रूप से रहेगा।

२६ मई के पश्चात् शनि की विशेष दृष्टि क्रमशः कन्या, मकर एवं मेष राशियों पर पड़ने से पूर्व (मेघ) के अतिरिक्त दक्षिण दिशा पर पड़ने वाले भूभागों व प्रदेशों पर विशेष अधिक प्रभाव रहेगा। इसी भानि मेष, कन्या व मकर राशियों से सम्बन्धित व्यक्तियों के जीवन पर भी विशेष अधिक

आर्द्रा लग्न प्रवेश के समय मंगलवार को चतुर्दशी तिथि तथा मूला नक्षत्र होने से धान्य महंगे होंगे, राजा (किसी प्रधाननेता) की शस्त्राघात से मृत्यु होगी। पुरुषों को कई प्रकार के भय हों, रोग वृद्धि तथा दुर्बलापन रहे।

चंद्रक्रांते निर्भ्रतिभेयदादार्द्राविसंयुता। भयनानाभिघिंपुंसांकृशत्वेरोग वृद्धिदा॥

ब्रह्मकालीन योग में आर्द्रा प्रवेश होने से जल तथा धान्य आदि उत्पादन मध्यम स्तरीय ही रहेगा।

ब्रह्माभिधानयोगेचेन्जलिनीशः शिवर्क्षगः। जलंचसकलंघान्यंमध्यमंतर्हिजायते॥
आर्द्रा प्रवेश वृष लग्न में होने से पश्चिम में काल, पूर्व में राजविग्रह, उत्तर में आधी उपज और दक्षिण में काल पड़े।—वृषेपि पश्चिमेकालः पूर्वस्यांराजविग्रहः। उदरधात्यार्द्रनिष्यत्ति-दक्षिणस्यांविकालतः॥ मध्यरात्रि (आधी रात) में आर्द्रा प्रवेश होने से लोगों में भोग-विलास अधिक रहे,—भोगप्रदत्ते खलुमधुमयरात्रेः।

—आर्षमान द्वारा रक्षा फल विचार—

आर्षमान को वर्ष में राष्ट्र की रक्षा के चार दुर्गों (किले) एवं सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है।
(१) प्रथम आर्ष—गतवर्ष की पौष अमावस्या का मूला नक्षत्र के स्पर्श से माना जाता है। मूला नक्षत्र का स्पर्श का अभाव है।

(२) द्वितीय आर्ष—वैशाख शुक्ल तृतीया को रोहिणी नक्षत्र २६% है।

(३) तृतीय आर्ष—श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र २५% है।

(४) चतुर्थ आर्ष—कार्तिक पूर्णिमा को कृतिका नक्षत्र २५% है।

फल—इस वर्ष रक्षा के प्रथम दुर्ग का अभाव तथा शेष तीनों दुर्ग भी अल्प बली है। फलस्वरूप सुरक्षा, समृद्धि एवं राजनैतिक दृष्टि से यह वर्ष विशेष उलझन एवं असमंजसपूर्ण रहेगा। अन्तरीष्ट्रीय, आर्थिक एवं रक्षा के क्षेत्र में प्रगति में बाधाएं रहेंगी। कहीं भयंकर विस्फोट एवं युद्धादि से अशान्ति का वातावरण बने। कहीं राजनैतिक षड्यन्त्र, हत्याकाण्ड हों, तूफान, भूकम्प, दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक प्रकोपों से भारी जन-धन हानि हो।

—वर्षादि के विश्वामान—

वर्षादि विश्वा का कुल मान २० विश्वे होते हैं। जिस पदार्थ (विषय) के विश्वा १ से २० अंकों के मध्य जितने अधिक (२० अथवा उसके समीपस्थ) होंगे, उस वस्तु के उत्पादन की मात्रा उतनी अधिक होगी। जैसे आगे सं. २०६२ में धान्य के विश्वे १३ लिखे हैं, इसका तात्पर्य यह हुआ कि आगामी वर्ष धान्य का उत्पादन मध्यम से कुछ अधिक होगा।

वर्षा १७, धान्य १३, तृण ९, शीत १५, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ५, तृषा ५, निद्रा ९, आलस्य ५, उद्यम ५, शान्ति १५, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९, निष्यत्ति १३, उत्साह ११, उग्रता १७, पाप १५, पुण्य १, व्याधि १५, व्याधिनाश ११, आचार ९, अनाचार १३, मृत्यु ९, जन्म १७, उपद्रव ५, स्वास्थ्य ९, चोरभय १५, चोरनाश ७, अग्नि ३, अग्निशान्त ५, उद्भिज ९, जरायुज ३, अंडज ११, स्वेदज ५, टिड्डी १७, तोता ५, मूषक ५, सोना १५, तांबा १३, स्वचक्र ११, पराचक्र १३, वृष्टि १५, अनावृष्टि ५॥

प्राभाव रहेगा। शनि की क्रूर दृष्टि के प्रभावस्वरूप पूर्व व दक्षिणी प्रान्तों एवं गोलार्ध में किन्हीं देशों में राजनीतिक उथल-पुथल, परिवर्तन, आतंक एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होंगी। भारत के भी दक्षिण-पूर्वी दिशाओं में राजनीतिक अस्थिरता, दुर्भिक्ष, बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों का भय रहेगा।

===== वर्षा आदि चार स्तम्भों का फल =====

(१) जल स्तम्भ—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र का सम्पर्क यात्र ३७ प्रतिशत है। फलस्वरूप आगामी वर्ष भी खण्ड वर्षा के योग हैं अर्थात् कहीं अधिक एवं कहीं उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी। कहीं पेयजल की समस्याएं उत्पन्न होंगी, भूमिगत जलस्तर में भी गिरावट बनेगी। कहीं बाढ़ एवं कहीं सूखे, दुर्भिक्ष की परिस्थितियां बनेंगी।

(२) तृणस्तम्भ—वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र का सम्पर्क २१ प्रतिशत है। फलस्वरूप तिनके, बांस, घास, पुष्पों, वनस्पतियों, जड़ी-बूटियों के उत्पादन में कमी रहेगी। पशुओं के लिए चारे का अभाव रहे। फलस्वरूप गौं, भैंस आदि चौपाय पशुओं द्वारा दुग्ध-उत्पादन में भी कमी रहे।

(३) वायु-स्तम्भ—ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र का सम्पर्क १२.४% है। फलस्वरूप देश के कुछ प्रान्तों में भयंकर तूफान तथा वायु वेग से भयंकर जन-धन हानि तथा खड़ी फसलों को नुकसान पहुंचेगा।

(४) अन्न स्तम्भ—आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र का सम्पर्क १८% है। फलस्वरूप हाड़ी-सौणी की फसलों की अच्छी पैदावार होने से किसानों को विशेष लाभ होगा। गेहूँ, गन्ने, चावल तथा दालवना का उत्पादन विशेष होगा।

संवत् के शुभाशुभ विचार में इन स्तम्भों का विशेष विचार किया जाता है।

आर्द्रा कुण्डली से वर्षा-कृषि आदि विचार—संवत् २०६२

वि. संवत् २०६२ में सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में ज्येष्ठ शुक्ल

चतुर्दशी तिथि, मंगलवार ५/४/६३ घट्यादि अर्थात् २१ जून की रात्रि ३ बजकर २० मिनट पर मूला नक्षत्र तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा कालीन वृष लग्न में प्रविष्ट होगा।

फल—आर्द्रा प्रवेश लग्न (वृष) पृथिवी तत्व राशि में हुआ है। लग्नेश शुक्र धन भाव में सूर्य, बुध के साथ शुभ है। मंगल की इन पर विशेष चतुर्थ दृष्टि भी है। खण्ड वर्षा के योग बनेंगे। मंगल-राहु योग भी अनाज के उत्पादन में अवरोधक रहेगा। लग्न भाव पर गुरु की शत्रु दृष्टि पड़ने से भी अनुकूल वर्षा की कमी के कारण दुर्भिक्ष, सूखा, अकाल हो तथा कहीं तूफान, बाढ़ादि के कारण जन-धन की हानि होगी। जलस्तम्भ भी ३७% है। फलस्वरूप खण्ड एवं विषम वर्षा के योग हैं।

| | | |
|-----------|---|--------|
| रा. | १ | रा. |
| बु. ३ सू. | २ | १२ मं. |
| ४ श. | ५ | ११ |
| ६ गु. के | ८ | १० |
| | ७ | चं. |

- ना 'विलम्ब' नामक सम्बन्ध होने से भारत का राजनीतिक एवं सामाजिक वातावरण अशांत, विशुद्ध व अनिश्चित रहेगा। राजनेताओं में परस्पर विरोध, टकराव एवं विग्रह पैदा होंगे। सामान्य वर्ग के लोग आर्थिक, मानसिक एवं क्लिष्ट व पेचीदा रोगों और कष्टों के कारण परेशान रहें।
- राजा शनि तथा मन्त्री बुध व धनेश शुक्रादि के प्रभावस्वरूप सामान्य लोगों और राजनेताओं के टकराव एवं असंतोष की भावना व्याप्त हो। लोगों में भोग-विलास की प्रवृत्तियाँ, स्वार्थपरा और व्यापारिक बुद्धि बढ़ेगी। भ्रष्टाचार, जनसंख्या, चोरी, ठगी, बेईमानी एवं लूटमार की वारदातें बढ़ेंगी।
- भारत के उत्तरी क्षेत्रों में कहीं छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन), उपद्रव, जनांदोलन, जल एवं विद्युत संकट आदि उत्पन्न होगा। कहीं असमय वर्षा के कारण दुर्भिक्ष, कृषि की हानि अथवा बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों से जन व धन हानि होने के संकेत हैं। कहीं पंजाब, हरियाणा, उड़ीसा, बिहार, उ. प्र. आदि में कहीं दुर्भिक्ष, सूखे/खाद्यान्नों एवं पेयजल में कमी आदि का भय होगा।
- वामपंथी दलों की वैशाखियों पर टिकी सत्तारूढ़ यू.पी.ए. सरकार लड़खड़ाती हुई प्रस्तुत वर्ष की अवधि कठिनाता से किसी भान्ति पूरी कर लेगी। सरकारी तन्त्र में अस्थिरता के कारण लोगों में असंतोष एवं संशय के भाव रहेंगे। डॉ. मनमोहन सिंह की अधिक शक्ति वामपंथी दलों की मांगों को पूरा करने में ही लगी रहेगी।
- पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र, तमिलनाडू, बिहार आदि प्रदेशों में नेतृत्व परिवर्तन की प्रबल सम्भावना है।
- २९ जन. से ११ मार्च तक शनि-मंगल के समसप्तक योग के कारण अनाज व उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि से लोगों में असन्तोष, कहीं उच्च पद रिक्त व सत्ता परिवर्तन के योग बनेंगे।
- अश्विन मास में (३ व १७ अक्टू. को) सूर्य एवं चंद्रग्रहण घटित होना तथा खपर योग होने से केन्द्रिय सरकार के लिए अग्नि परीक्षा एवं कठिन चुनौतियों से भरी अवधि होगी।
- २ नव. से १५ नव. के मध्य कार्तिक शुक्ल पक्ष तेरह दिन का होने से भारत एवं विश्व में कहीं रेल या हवाई दुर्घटना से अथवा भूस्खलन आदि प्राकृतिक प्रकोपों से भारी जानी-माली के नुकसान का भय है।
- नीरसेश शनि के कारण कोयला, लोहा, लकड़ी, पेट्रोलियम पदार्थ तथा अन्य उपभोग्य वस्तुओं की कीमतों में आशातीत वृद्धि होने से सामान्य प्रजा में क्षोभ एवं असंतोष की भावनाएँ बढ़ेंगी।
- भारत और पाकिस्तान के बीच दोस्ती और शान्ति वार्ताओं के नए आयाम स्थापित होंगे। काश्मीर समस्या को लेकर दोनों देशों के बीच गतिरोध बना रहेगा।

ज्योतिष शास्त्र मानव जीवन के भूत, भविष्य एवं वर्तमान काल की साकार कहानी है। मनुष्य के संचित, प्रारब्ध एवं क्रियमाण (वर्तमान) कर्मों एवं उनके शुभाशुभत्व का ज्ञान ज्योतिष शास्त्र के द्वारा ही सम्भव है। मनुष्य के भूत-भविष्य सम्बन्धी शुभाशुभ घटनाएँ, सुख-दुःख, सफलता-असफलता, लाभ-हानि, मान-अपमान, भाग्योदय के कालादि का ज्ञान भी इसी शास्त्र द्वारा किया जा सकता है। जातक के जन्म समय सौर-मण्डल एवं जन्मकुण्डली में जिस प्रकार के ग्रहों की स्थिति होती है, उन्हीं के अनुरूप मनुष्य (जीव) का ब्राह्म एवं अन्त्यान्तरिक जीवन प्रभावित होता रहता है—

ग्रहाधीन जगत्सर्व ग्रहाधीना नरावराः। सृष्टि रक्षण-संहाराः सर्व चापि ग्रहानुगाः। बृह.
प्रकृति के त्रिगुणात्मक गुणों की भान्ति ग्रहों में भी सत्त्व, रज एवं तमादि गुणों की न्यूनाधिकता होती है। गुरु, चन्द्रादि सत्त्वगुणी ग्रहों के प्रभाव से जातक के हृदय में करुणा,

दया, परोपकारिता, उदारता, सत्यनिष्ठता आदि धार्मिक रूचियों की बहुलता होती है। जबकि शनि, मंगल, राहु, केतु आदि पाप ग्रहों के प्रभाव से प्राणी में तामसिक प्रवृत्तियों की अभिवृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त, मनुष्य के अन्तःकरण की सूक्ष्म प्रवृत्तियों के अनुसार भी ग्रह अपना शुभाशुभ फल प्रदान करते हैं। जो व्यक्ति मन, वचन व कर्म से किसी की हिसा नहीं करता है, धर्म मर्यादानुसार धन का अर्जन करता है। दानपूर्वक शास्त्र नियमों का पालन करता है—ऐसे व्यक्ति पर ग्रह कुछ अनिष्ट नहीं करते। अर्थात् अपना अनुग्रह बनाए रखते हैं—'अहिसकस्य दान्तस्य धर्माजितं धनस्य च। सदा नियमस्थस्य, सदा सानुग्रहाः॥'

सभी ग्रह मनुष्य को अपने शुभ-अशुभ कर्मों के अनुसार अच्छा या बुरा फल प्रदान करते हैं। इस प्रकार ज्योतिष ग्रह-नक्षत्रों सम्बन्धी कुछ विशेष शास्त्रीय सिद्धान्त देता है जिनके द्वारा हम अपने पूर्व एवं इस लोक के कर्मों के प्रतिफल को जानकर अपने जीवन को

उच्चतर स्थिति की ओर ले जा सकते हैं।

ईश्वर की अपार कृपा से उत्तरी भारत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित एवं सर्वप्राचीन प्रकाशन "पंचांगदिवाकर", "मुफ़ीद आलम जन्नी" (वर्द्ध-हिन्दी-पंजाबी) एवं तिथि पत्रिका (पंजाबी भाषा) को प्रकाशित होते हुए प्रस्तुत संवत् २०६२ (२००५-०६ ई.) में गौरवशाली ५३० वर्ष हो जाएंगे। इस पंचांग समूह के प्रवर्तक एवं संस्थापक हमारे पूज्य पितामह विश्व विख्यात मशहूर आलम पण्डित देवी दयालु जी (लाहौर) से लेकर आज तक की दीर्घावधि में हमारे प्रकाशनों को जो राष्ट्रीय एवं विश्वव्यापी स्तर पर ख्याति एवं प्रशंसा प्राप्त हुई—वह सुविज्ञ पाठकगणों से छिपी नहीं है। उत्तरी भारत में शताब्दि से भी अधिक वर्षों पर्यन्त ज्योतिष के क्षेत्र में हमारी पंचांग, जन्त्री एवं अन्य प्रकाशनों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। हमारे प्रकाशनों की निरन्तर अग्रसर ख्याति को देखकर कुछ दुष्ट प्रकृति के घन लोलुप एवं लालची प्रकाशक हमारे टाईटल से मिलता जुलता टाईटल—नाम रखकर विषय-सामग्री को तोड़-मरोड़ कर छापते हैं। इस प्रकार लोगों को गुमराह व धोखा देने की कुचेष्टा करते रहे हैं। सुविज्ञ पाठकों को सूचित किया जाता है कि वह असली व प्रामाणिक पंचांगदिवाकर, तिथि पत्रिका, मुफ़ीद आलम जन्नी तथा हमारी नव प्रकाशित 'अर्द्धशताब्दि पंचांग' (संवत् २००१ से २०६० तक) खरीदते समय प्रथम पृष्ठ पर गणितकर्ता पं. पन्ना लाल ज्योतिषी एम. ए., पं. विवेक शर्मा व पंकज शर्मा, जालन्धर के नाम अवश्य पढ़ लिया करें।

गतवर्षीय पंचांगदिवाकर में चामत्कारिक भविष्यवाणियाँ

ईश्वर की कृपा से हमारी गत वर्षों की पंचांगों एवं जन्त्रियों से उल्लिखित अनेकशः भविष्यवाणियाँ ठीक निकलती आ रही हैं। उदाहरणस्वरूप जैसे—भारत का स्वतन्त्र होना, (सं. १९४७ ई.) बंगलादेश के रूप में पाकिस्तान का विभाजन, कांग्रेस (ई) की पराजय, पुनः सत्ता में आना, ईरान-ईराक युद्ध (२०३९), पूर्व प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी की आकस्मिक मृत्यु (संवत् २०४१), पूर्व प्रधानमन्त्री राजीव गांधी की आकस्मिक मृत्यु (संवत् २०४८), संन १९९८ में मोर्चा सरकार (गुजराल सरकार) का पतन (२०५५) तथा लोकसभा चुनावों में भाजपा का सफल होकर सत्तारूढ़ होना आदि आगे संवत् २०५६ से २०६० तक की कुछ प्रमुख भविष्यवाणियाँ ही उद्धृत हैं, जो ईश्वर कृपावश चामत्कारिक रूप से सत्य एवं निकली हैं। उदाहरणार्थ—

"जेहाद के नाम पर जम्मू-कश्मीर में भारत के विरुद्ध प्रशिक्षित सैनिक एवं आतंकवादी भेजना" तथा जम्मू-कश्मीर के सीमावर्ती भागों में पाकिस्तानी सेना द्वारा गोलाबारी करना संवत् २०५६, पृष्ठ ४९, का. II. तथा हरियाणा में श्रीबंसी लाल की सरकार के बर्खास्त

होना एवं दिल्ली प्रान्तीय विधानसभा चुनावों में भाजपा सरकार का गिरना और कांग्रेस सरकार का आना पृष्ठ ५ कालम I.

संवत् २०५७ के पंचांग में—पाकिस्तान में शरीफ सरकार का तख्ता पलट तथा मार्शल लों या आपात् स्थिति का लगना एवं शासन परिवर्तन, छत्रमंग, उपद्रव, राजनीतिक टकराव व हिंसक घटनाएँ होना (पृष्ठ ५१—कालम I व II)

सं. २०५८ के पंचांग दिवाकर पृष्ठ ५६ (कालम II) पर जगत लग्न में कालसर्प योग के कारण मिथुन से धनु राशि वाले देशों में विस्फोटक घटनाएँ घटित होंगी जैसा कि अमरीका में दुखद त्रासदी घटी। २०५९ में पृष्ठ ५६ (कालम I) में पढ़ें—“अफ़गानिस्तान में नया राजनैतिक युग उभर कर सामने आएगा तथा तालिबान अमरीकी युद्ध शक्ति के सामने अधिक देर तक टिक नहीं पाएँगे।” पृष्ठ ६० (कालम I) पर पंजाब के शीर्षक के अन्तर्गत स्पष्ट पढ़ें—“आगामी विधानसभा चुनावों में सत्तारूढ़ बादल सरकार को काफ़ी कम सीटें मिलना तथा कांग्रेस पार्टी का मुख्य पार्टी के रूप में उभरकर आना।” फर. २००३ में खपपर योग होने से अमेरिका व ईराक युद्ध होना पृष्ठ ५८-५९।

संवत् २०६० के भाद्रभास में पौष मंगलवार होने के फलस्वरूप उ. प्र., म. प्र., कश्मीर आदि प्रदेशों में छत्रमंग (सत्ता-परिवर्तन) एवं हिंसक घटनाएँ अधिक होना (पृष्ठ ६५ का. I, II) जैसा कि उत्तर प्रदेश एवं कश्मीर घाटी में हुआ। ईराक में सत्ता परिवर्तन के योग के बारे में स्पष्टतः पढ़ें पृष्ठ ६३ कालम II पर।

सन्वत् २०६१ की पंचांग दिवाकर में स्पष्टतः पढ़ें—“कि वर्ष के प्रारम्भिक महीनों में भारत के राजनैतिक क्षेत्रों में विशेष उतार-चढ़ाव देखने को मिलेंगे।” पृष्ठ (६१, ६३ का. I), छत्र-मंग (सत्ता-परिवर्तन पृष्ठ ६३, ६६ का. II) राजनीतिक उथल-पुथल के बाद नए राजनैतिक गठजोड़ उभर कर आना (पृष्ठ ६५ का. II) व कांग्रेस पार्टी के अन्तर्गत लिखे गए—आगामी लोकसभा चुनावों में श्रीमती सोनिया गाँधी तथा कांग्रेस पार्टी के सदस्य भाजपा की अपेक्षा अधिक सीटों पर काययाब होकर निकलेंगी। प्रधानमन्त्री बनने की सम्भावना भी होगी। पृष्ठ ६८ का. I “चुनावों में कुछ प्रदेशों में भाजपा की प्रतिष्ठा को गहरी ठेस पहुँचेगी। उन्हें आशा के विपरीत कम सीटें मिलेंगी।” पृष्ठ ६७ कालम I, राजस्थान के संदर्भ में पृष्ठ ६८ का. II पर पढ़ें। विधानसभा के चुनावों में कांग्रेस को हार का सामना रहेगा। (पृष्ठ ६८ का. II)

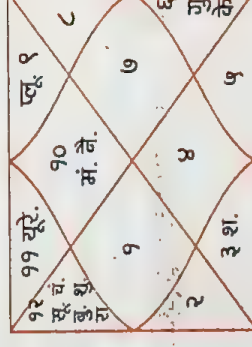
“पंजाब लोकसभा चुनावों में कांग्रेस की हार होना—पृष्ठ ६८ का. I” पंजाब, राजस्थान, हरियाणा आदि प्रदेशों में उपयोगी वर्षा की कमी रहना.....सोना, तौबा, लोहा, पैट्रोलियम आदि उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में विशेष तेजी होना (पृष्ठ ६३ का. I) इत्यादि अनेक भविष्यवाणियाँ अपनी सत्यता की प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। इस सम्बन्ध में जिन पाठकों के बधाई के पत्र प्राप्त हुए हैं—उनके प्रति हम आभार प्रकट करते हुए अनुग्रहीत हैं।

सम्वत् २०६२ में ग्रहों की आकाशी कौसिल और भविष्यफल

संवत् २०६२ में ग्रहों की आकाशी कौसिल (ग्रह-परिषद्) के दश अधिकारों में से छः अधिकार क्रूर ग्रहों को तथा चार अधिकार शुभ ग्रहों को प्राप्त हुए हैं। राजा, सस्य (कृषि) और धातुओं के महत्वपूर्ण अधिकार शनि को प्राप्त हुए हैं। जबकि वर्षा, फल और सेना के अधिकार क्रूर ग्रह मंगल को प्राप्त हुए हैं। मन्त्री का पद बुध को, धान्यपति गुरु, रसों का स्वामी चन्द्र हुआ है तथा कोश (धन) का स्वामी स्त्री ग्रह शुक्र को प्राप्त हुआ है। ग्रहों के प्रस्तुत अधिकार-विभाजन के फलस्वरूप भारत एवं विश्व का सामाजिक एवं राजनीतिक वातावरण अशान्त, विक्षुब्ध व अनिश्चित रहेगा। राजा, शनि, मन्त्री बुध एवं विलम्ब नामक सम्वत् के प्रभावस्वरूप विभिन्न देशों के अध्यक्ष गुप्त रूप में कुटिल नीतियों का प्रयोग करेंगे। देश में भी प्रमुख पार्टी लीडरों के मध्य विरोध एवं टकराव के हालात होंगे। सामान्य प्रजा को आर्थिक कष्टों एवं परेशानियों का सामना रहे। बुध एवं शुक्र के प्रभाव के कारण लोगों में व्यापारिक बुद्धि तथा स्वार्थ एवं भोग-विलास की प्रवृत्तियों में वृद्धि होगी। विशेष वर्ग के लोगों में सुख-साधनों एवं स्वार्थपरता की वृद्धि होगी। चोरी, ठगी, बेईमानी एवं लूटमार की वारदातें बढ़ेंगी। अधिकांश लोग कष्टों के कारण अन्य देशों में जाने के लिए प्रयत्नशील रहें। भ्रमेश मंगल के कारण देश में उपयोगी वर्षा की कमी होगी। कहीं बाढ़, भूस्खलन आदि प्राकृतिक प्रकोपों से जन-धन की हानि की आशंका रहेगी तथा कहीं कम एवं खण्ड वर्षा के कारण अकाल, कृषि योग्य जल में कमी, पेयजल एवं विद्युत् उत्पादन में कमी रहेगी। धनेश शुक्र के कारण विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ सर्व साधारण लोगों तक नहीं पहुँच पाएगी। अधिकांश लोग नई-नई उपभोग्य वस्तुओं एवं सुख सुविधाओं को पाने के लिए दौड़-धूप में लगेंगे। धर्म, राजनीति, परिवारिक सम्बन्धों आदि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रदर्शन एवं दिखावे की प्रकृति बढ़ेगी। नीरसेश शनि एवं फलेश मंगल के कारण सज्जियों, दालों एवं अन्य अनाजादि की कृषि के उत्पादन अपेक्षाकृत कम होंगे, जिससे दैनिक उपभोग्य वस्तुओं तथा कोयला, लोहा, सोना, तेल, पेट्रोल, डीजल आदि पदार्थों की कीमतों में जबरदस्त तेजी होने से सामान्य लोग परेशान होंगे। उदर, रवास, त्वचा, हृदय, मधुमेह एवं मानसिक रोगों में वृद्धि होगी।

नववर्ष प्रवेश एवं जगत् लग्न कुण्डली अनुसार भविष्यफल

नववर्ष प्रवेश कुं. ४९/३५ ई.



जगत् लग्न कुण्डली ४९/०८ ई.



वि. संवत् २०६२ में नववर्ष का प्रवेश ८ अप्रैल शुक्रवार की अर्धरात्रि के बाद २ बजकर ०२ मिनट पर रेवती नक्षत्र कालीन, मकर लग्न में प्रविष्ट हो रहा है। ध्यान रहे, भारत की प्रभाव राशि भी मकर ही है। लग्नभाव में सेनापति मंगल राशि का होकर चतुर्थ स्थान को स्वगृही दृष्टि से देख रहा है। वर्ष का राजा शनि छठे भाव में पड़कर केन्द्रस्थ मंगल के साथ बड़ाष्टक योग बना रहा है। इन ग्रहों के प्रभावस्वरूप विश्व के बहुत से पश्चिमी एवं एशियाई देशों में आश्चर्यजनक विस्फोटक एवं आतंकवादी घटनाएँ घटित होंगी। भारत, पाकिस्तान के साथ-साथ अफगानिस्तान, चिचेनिया, रूस, नेपाल, सीरिया, अमरीका, ईराक आदि देशों में भी कट्टर आतंकवाद की अग्नि का धूआँ फैलने लगेगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से विश्व के प्रमुख देशों के मध्य बाह्य तौर पर नए-नए शान्ति प्रस्ताव लाए जाएँगे, परन्तु आन्तरिक तौर पर अधिकांश देश अत्याधुनिक संहारक हथियारों की दौड़ में अपना वर्चस्व बनाने में प्रयत्नशील रहेंगे। भारत के उत्तरी क्षेत्रों में कहीं छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन), गठजोड़ एवं समीकरण बनेंगे। भारत के उत्तरी क्षेत्रों में कहीं छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन), उपद्रव, जनोदोलन, जल एवं विद्युत् संकट आदि उत्पन्न होने का भय होगा। मध्यभारत में कहीं असमय वर्षा के कारण दुर्भिक्ष, कृषि की हानि अथवा बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोपों से जन व धन हानि होने के संकेत हैं। धान्य, अनाज आदि का व्यापार करने वाले व्यापारी विशेष लाभान्वित होंगे।

जगत् लग्न (वर्षेश) का वर्ष प्रवेश १३, अप्रैल, सन् २००५ ई. मृगशिर नक्षत्र कालीन, बुधवार को रात्रि १२ बजकर ९ मिनट पर धनु लग्न में होगा। लग्नाधिपति गुरु संसद एवं (अधिकारी वर्षा) के भाव में केतु के साथ पड़ा है। सूर्य पंचम भाव में उच्चराशिस्थ होने पर भी षष्ठेश शुक्र के साथ होकर मंगल की केन्द्रिय (चतुर्थ) दृष्टि में है। ग्रह स्थिति के अनुसार विश्व का राजनीतिक एवं सामाजिक वातावरण विक्षुब्ध, तनावपूर्ण एवं अशान्त रहेगा। सेनापति मंगल पर गुरु की शुभ दृष्टि पड़ने से विश्व के प्रमुख देश यद्यपि विश्व-शान्ति के

लिए प्रयत्नशील रहेंगे। जगत् लान कुण्डली में बुध-राहु, गुरु-केतु एवं सूर्य-शुक्र परस्पर विरुद्ध ग्रह-योगों के कारण अमेरिका, रूस, चीन, फ्रांस, जर्मनी, चीन, भारत-पाक आदि प्रमुख देश अत्याधुनिक हथियार एवं अपनी परमाणु शक्ति बढ़ाने की कोशिश करेंगे। विश्व-राजनीति में कुछ नए समीकरण उभर कर आएँगे। बुध-राहु के योग पर शनि की विशेष दृष्टि होने से कुछ मुस्लिम राष्ट्र इस्लामी जेहाद के नाम पर नए समीकरण (गठ-जोड़) बनाने के प्रयास करेंगे तथा भारत, नेपाल जैसे शान्तिप्रिय देशों में आतंक फैलाने की फिराक में रहेंगे। मेघ, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ व मीन राशि वाले देश एवं नगर विशेष प्रभावित रहेंगे ॥ विश्व के अधिकांश प्रमुख देश विकासशील देशों के प्रति पक्षपातपूर्ण दोगली नीति का पालन करेंगे। मकर लग्न में वर्ष प्रवेश होने से उत्तरी भागों में उत्पात, उपद्रव, राजनीतिक संकट एवं छत्रभंग (राज्य परिवर्तन) होने के योग होंगे—

मकरे च महोत्पातमुत्तरस्यां नृपक्षयः।

सन् २००५ ई. में ग्रह-गोचर एवं विश्व के हालात

सम्बत् के प्रारम्भ में ही नवप्रवेश कुण्डली में तृतीय भाव में चतुर्थ एवं पंचग्रही योग बना हुआ है, जिससे कुछ देशों में राजनीतिक टकराव, उपद्रव, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित होने के योग हैं—

एक राशौ यदा चत्वारः पंचखेचराः। प्लावयन्ति महीं सर्वा रुधिरं जलेन वा॥

ईराक, फिलीस्तीन, इजरायल, रूस, विच्चेन, नेपाल, बंगलादेश, अफगानिस्तान, पाकिस्तान आदि देशों में कहीं साम्प्रदायिकता एवं अलगवाद को लेकर विस्फोटजनक घटनाएँ घटित होंगी।

चान्द चैत्रमास (मार्च-अप्रैल) में पाँच शनिवार एवं पाँच रविवार होने से पाक, अफगानिस्तान, बंगलादेश, ईराक आदि देशों में विशेषकर पूर्वी एशियाई देशों में अस्थिरता, छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन), अग्निकाण्ड आदि विस्फोटक घटनाएँ होंगी—

शनिवारा यदा पंचपाताले कम्पते फणीः। ईशान देश भंगश्च वह्नि दाहो महर्घता ॥

२५ मार्च से १२ अप्रैल के मध्य सूर्य-राहु का योग तथा चान्द ज्येष्ठ (२४ मई से २२ जून) में पाँच मंगलवार पड़ने से उपरोक्त देशों में कहीं युद्ध भय, सत्ता परिवर्तन, उपद्रव, आतंक, अग्निकाण्ड एवं हिंसक घटनाएँ घटित होंगी—

यत्र मासे महीसूने जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथिवी छत्र भंगस्तदा भवेत् ॥

३ जून से १७ जुलाई के मध्य मंगल-राहु का योग होने से पश्चिमी देशों तथा ईराक, अफगानिस्तान, बंगलादेश, भारत आदि मुस्लिम देशों में कहीं उपद्रव, अग्निकाण्ड, जनसंहार, युद्ध, दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक दुर्घटनाएँ होंगी, कहीं राजनीतिक टकराव, छत्रभंग आदि घटित होंगे—

चांद भाद्रपद मास (२० अग. से १८ सितंबर के मध्य) पाँच शनिवार और पाँच रविवार होने से प. अमरीका, मैक्सीको, जापान, कोरिया, रूस, चीन, भारत, पाक, अफगानिस्तान, बंगलादेश आदि देशों में कहीं बाढ़, भूकम्प, दुर्भिक्ष, यान-दुर्घटना, अग्निकाण्ड, उपद्रव, भूस्खलन आदि प्राकृतिक प्रकोपों से जन व धन हानि होने की आशंकाएँ होंगी।

१७ सितम्बर से कन्या राशि पर चारग्रही योग बनने से पाक, अफगानिस्तान, बंगलादेश आदि मुस्लिम राष्ट्रों के लिए अशुभ रहेंगे। कुछ देशों में आन्तरिक विद्रोह तथा कट्टरवादी उपद्रवियों द्वारा अग्निकाण्ड एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित करने की चेष्टा करेंगे।

१८ जुला. से ४ फर. (०६) की अवधि में शनि-मंगल के मध्य चतुर्थ-दशम दृष्टि होना तथा भाद्रपद (२० अग.) से कार्तिक मास (१ नवम्बर) के मध्य खप्पर योग तथा पौष से चान्द फाल्गुन मासों (१६ दिसं. से १४ मार्च ०६) के मध्य पुनः खप्पर योगों का बनना विश्व शान्ति के लिए चुनौतियाँ उपस्थित करेंगे। विश्व के किसी मूर्ख नेता के अपदस्थ या आकस्मिक निधन होने के संकेत हैं।

-विश्व के कुछ अन्य देश-

अमेरिका—इसकी प्रभाव राशि मिथुन है। इस पर शनि साढ़ेसति का प्रभाव अभी वर्षभर रहेगा। गतवर्ष इसी कालम में पढ़ें कि “ईराक पर हमले के कारण बुश सरकार की प्रतिष्ठा को भारी ठेस पहुँचेगी।” इत्यादि भविष्योक्ति पृष्ठ ६४-६५ पर स्पष्ट तौर पर पढ़ें ॥ गतवर्ष की भान्ति आगामी वर्ष भी अमरीकी फौज को प्रछन्न-छापामार युद्ध के कारण काफी नुकसान उठाना पड़ेगा। नए बुनावों में जार्ज बुश को अपनी नीतियों के कारण, विरोध का सामना करना पड़ेगा तथा उसकी प्रतिष्ठा को गहरा धक्का पहुँचेगा। बुनावों में बुश प्रशासन की पराजय होगी। नई कैरी सरकार भी आतंकवाद को मुख्य मुद्दा बनाकर फिलीस्तीन, सूडान, ईरान, अफगानिस्तान आदि मुस्लिम देशों के ऊपर अपनी नीतियों के द्वारा इन देशों में तथा विश्व-शान्ति में तनाव उत्पन्न करने का राजनैतिक खेल खेलता रहेगा। भारत और पाकिस्तान के सम्बन्ध में अपनी दोगली कूटनीति की प्रक्रिया जारी रखेगा।

पाकिस्तान—इसकी प्रभाव राशि कन्या है। जगत् ल. कुण्डली में गुरु-केतु का संचार होने से यद्यपि भारत के साथ कई मुद्दों पर समझौते एवं सन्धियाँ होंगी तथा आर्थिक एवं व्यापार के क्षेत्र में कुछ बढ़ोत्तरी होगी परन्तु गुप्त रूप से आतंकवादी संगठनों को अपनी सहायता जारी रखेगा। जम्मू-काश्मीर एवं भारत में विच्छेदक एवं विस्फोटक गतिविधियों का क्रम यथापूर्व जारी रहेगा। पाकिस्तान के प्रशासकों द्वारा कश्मीर को मुख्य मुद्दा बनाने से पारस्परिक सम्बन्ध सामान्य नहीं हो पाएँगे। अमरीका तथा अन्य यूरोपीय देशों से आर्थिक एवं अत्याधुनिक हथियारों की सहायता प्राप्त करता रहेगा। पाक के बिलोचिस्तान, सिन्ध आदि प्रान्तों में उपद्रव, अग्निकाण्ड, विस्फोट आदि हिंसक घटनाएँ घटित होती रहेंगी। यद्यपि भारत के साथ दोस्ती एवं शान्तिवार्ताओं के नए आयाम जुड़ेंगे।



सम्वत् २०६२ में ग्रहों की स्थिति और भारतवर्ष



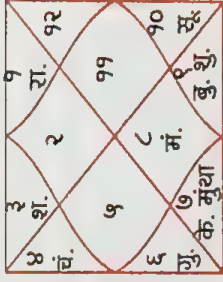
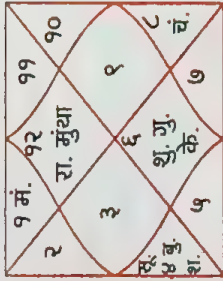
कुण्डली स्वतन्त्र भारत
15 अग. 1947 ई.

स्वतंत्र भारत ५८वां वर्ष
15 अग. 2004 ई.

स्वतंत्र भारत 59वां वर्ष
15 अग. 2005 ई.

गणतन्त्र दि. ५६वां वर्ष
26-01-2005 ई.

गणतन्त्र दि. 57वां वर्ष
26 जन., 2006 ई.



२६ जनवरी, २००५ ई. को भारतवर्ष अपने ५६वें गणतन्त्र दिवस की कुण्डली अनुसार वृष लग्न में प्रवेश करेगा। (ध्यान रहे, ५६वें वर्ष की कुण्डली का प्रवेश मेष लग्न के अन्तिम अंश (२९) तथा वृष के प्रारम्भिक अंश होने से सन्धि लग्न भी कहा जा सकता है।) वृष लग्न भारतीय गणतन्त्र के जन्म लग्न (मीन) का तृतीय भाव उदित हुआ है। वर्ष कुण्डली में वर्षश (शुक्र) अष्टम भाव में बुध के साथ पड़ा है, उस पर शनि की प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि पड़ रही है। अष्टमस्थ बुध-शुक्र पर गुरु की भी गुप्त शत्रु दृष्टि पड़ रही है। पंचम भावस्थ गुरु की सूर्य पर शुभ दृष्टि है, परन्तु वर्ष लग्नेश एवं मुंदेश शुक्र पर अशुभ दृष्टि पड़ रही है। ग्रह स्थिति के अनुसार सत्तारूढ़ केन्द्रिय सरकार को राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में गम्भीर चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। पंचमस्थ गुरु के कारण केन्द्रिय एवं राज्य सरकारें सामान्य लोगों के हित के लिए बहुत सी जन-उपयोगी योजनाएँ तैयार करेगी, परन्तु पंचमस्थ गुरु पर शनि की शत्रु दृष्टि पड़ना तथा बुध अष्टम में होने से विभिन्न योजनाएँ क्रियान्वित करने में विपक्षी दल तथा कुछ सहयोगी दल ही विघ्न पैदा करेंगे। छठे भाव में केतु युक्त मृधा का होने से भारत में गुप्त शत्रुओं की घुसपैठ बढ़ेगी तथा पाकिस्तान, चीन, बंगलादेश आदि पड़ोसी देश भारत की सीमाओं पर विघ्नहंसक गतिविधियाँ जारी रखेंगे। द्वितीय भाव में शनि का सप्तमस्थ मंगल के साथ बडाष्टक योग होने से आर्थिक क्षेत्र में अपेक्षित परिणाम नहीं प्राप्त होंगे।

१५ अग. २००४ ई. की स्वतन्त्र भारत की ५८वें वर्ष की कुण्डली में बृश्चिक लग्न उदित है। चतुर्थ भावस्थ मृधा पर मंगल, गुरु ग्रहों के मिश्रित प्रभाव रहेंगे, परन्तु अष्टम भाव में मुंदेश शनि एवं शुक्र का होने से समाज एवं सरकार के बहुत से जनोपयोगी कार्यक्रमों में विघ्न/बाधाएँ एवं विलम्ब उत्पन्न होंगे। अत्यधिक महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, पेयजल एवं बिजली-आपूर्ति में कमी, विभिन्न प्रकार के टैक्सों में वृद्धि, दैनिक उपयोग्य वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि, आतंकवादी गतिविधियाँ एवं राजनीतिक अस्थिरताओं के कारण

सामान्य लोगों में वर्तमान सरकार के प्रति भी गहन असंतोष व विक्षोभ पैदा होगा। कुछ राज्यों जैसे-असम, कश्मीर, उ. प्रदेश, आन्ध्र आदि प्रदेशों में कहीं हिंसक व विस्फोटक घटनाओं का क्रम रहेगा।

सन् २००५ ई. में गोचर ग्रहों अनुसार भारत का घटनाक्रम

वर्ष के प्रारम्भ में ही चान्द्र पौष मास एवं माघ मास (२७ दिसं. से २४ फर. ०५) में पौष मंगलवार पड़ने से यह अवधि देश के किसी विशिष्ट नेता के लिए अशुभ होगी। कश्मीर, असम आदि कुछ राज्यों में हिंसक व आतंकवादी घटनाएँ घटित होंगी। कहीं छत्र-भंग (सत्ता परिवर्तन) भी होने के संकेत हैं-

यत्र मासे महीसूनो जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदाभवेत्॥

१३ जन. को वक्री शनि पुनः मिथुन राशि में प्रविष्ट होगा, उस पर मंगल की आठवीं दृष्टि रहेगी। जिससे जन. के बाद फरवरी से अप्रैल के महीनों के मध्य देश के उत्तर-पश्चिम भागों (जैसे-जम्मू-कश्मीर, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तर-प्रदेश आदि) में हिंसक घटनाएँ घटित होंगी-कहीं दुर्भिक्ष, अनाज में कमी, सूखा आदि का भय होगा-

मिथुने च यदा सौरि वक्रभूतो, दुर्भिक्षं तत्र रोषम्।

पश्चिम देशे दारुणं युद्धं नृपाणां च महदभयम्॥

२९ जनवरी से ११ मार्च के मध्य शनि-मंगल के बीच सम-सप्तक योग होना, तदुपरान्त २१ अप्रैल तक बडाष्टक योग पड़ना तथा चैत्र मास (२६ मार्च से २४ अप्रैल तक) पौष शनिवार एवं पौष रविवार होने से कहीं दुर्भिक्ष, सूखा, उपद्रव, अग्निकाण्ड, जातीय दंगे व राजनैतिक टकराव होंगे। अनाज व उपभोग्य वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि के कारण लोगों में असंतोष फैलेगा-

शनिवारा यदा पंचजायते रवि पंचकम्। महार्घ जायते धान्यं रोग शोकाकुला पृथिवी॥

कहीं उच्च पद रिक्त होगा अथवा छत्र-भंग (सत्ता परिवर्तन) के योग बनेंगे।

गुरु-शुक्र का समसप्तक-१८ मार्च से १० अप्रैल तक सप्तक योग तथा १२ अग. से ५ सित. के मध्य एक राशिस्थ योग होने से उत्तर-प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, गुजरात, असम, आन्ध्र प्रदेश आदि प्रदेशों में जनदोलन, उपद्रव, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित होंगी। कहीं कानून व्यवस्था एवं शान्ति भंग होती दिखाई देगी। कहीं बाढ़ तो कहीं दुर्भिक्ष आदि के कारण अकाल जैसी स्थिति बनेगी।

फरवरी-मार्च में शनि-मंगल के मध्य सम-सप्तक योग तथा १८ जुला. से ४ फर. ०६ के मध्य पारस्परिक दृष्टि सम्बन्ध होने से भारत की केन्द्रिय यू.पी.ए. सरकार एवं कहीं राज्य सरकारों में अस्थिरता के बादल मंडराएँगे-

यदा सौरि भौमे-सुरराज मन्त्री, भार्गवश्च यदैकराशौ-समसप्तके वा। अयोध्या मध्यदेश, लंकापुरे, पूर्वस्यां सुधाभयं शस्त्रं करोति ॥

ज्येष्ठ मास (मई-जून) में पुनः पाँच मंगलवार होना तथा ३ जून से १७ जुला. के मध्य मंगल-राहु का योग होने से इस अवधि में कही उपद्रव, हिंसक घटनाएँ, विद्रुत् एवं पेय जल की कमी, महंगाई, छत्र-भंग (सत्ता-परिवर्तन), राजनेताओं में परस्पर विग्रह एवं टकराव के हालात पैदा होंगे-

मंगल-राहु च यदैक राशि स्थितौ। परस्पर नृपे युद्धं रुधिरैः पूरिता मही ॥

ज्येष्ठ, श्रावण, माघ मास की संक्रांतियाँ शनिवार को तथा आषाढ़, भाद्रपद व चैत्र मास की संक्रांतियाँ मंगलवार को पड़ रही हैं। फलस्वरूप इन कालावधियों में सामाजिक अयवस्था, धान्य, अनाज, खल-बिनौले, घृत, तैल आदि वनस्पतियाँ, सोना-चाँदी व उपभोग्य वस्तुएँ तेज भाव होंगी। लोगों में दुखजन्य घटनाएँ अधिक घटित होंगी-

भौमस्यवारे यदि संक्रमश्चकरोति पृथ्व्यामशुखं महर्घता।

क्षारं रसवै घृत तैल संयुतं कर्पूरस्यैव महर्घता च ॥

महंगाई एवं आवश्यक वस्तुओं में कमी के कारण लोगों में रोग, शोक एवं परेशानियाँ बढ़ेंगी।

खपर योग-चान्द्र भाद्रपद से कार्तिक (२० अग. से १५ नव.) तक की अवधि में, क्रमशः पाँच शनिवार, ५ रविवार और ५ मंगलवार होने से खपर योग बनता है, जिसके प्रभावस्वरूप इस अवधि में सत्तारूढ़ यू.पी.ए. सरकार को गम्भीर संकटों का सामना हो सकता है। विपक्ष एवं केन्द्रिय सरकार के बीच कहीं राजनीतिक गतिरोध एवं टकराव की सम्भावना होगी। इसी बीच चान्द्र आश्विन मास (३ अक्टू. और १७ अक्टू.) में क्रमशः कंकण सूर्यग्रहण एवं ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण घटित होने से सत्तारूढ़ यू.पी.ए. केन्द्रिय सरकार के अक्तूबर का महीना विशेष अग्नि परीक्षा का समय होगा। सीमाओं पर आतंकवादी एवं विस्फोटक घटनाओं का भय रहेगा। किसी राज्य में सत्ता परिवर्तन होने के भी संकेत हैं। इसी मास कन्या राशि पर चारग्रही योग बनने राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में विशेष परिवर्तन देखने को मिलेंगे।

तेरह दिन का पक्ष-आगे २ नवम्बर से १५ नव. के मध्य, कार्तिक शुक्ल पक्ष तेरह दिन का होने से कुछ राज्यों जैसे-कश्मीर, असम, आन्ध्र प्रदेश आदि में हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित होंगी। भारत एवं विश्व में कहीं रेल या हवाई दुर्घटना से जानी-माली नुकसान हो सकता है। पाक के साथ शान्तिवार्ताओं के बावजूद, सम्बन्धों में कड़वड़ाहट रहेगी। सीमावर्ती क्षेत्रों पर आतंकवादियों के साथ सैनिक मुठभेड़ एवं हिंसक घटनाएँ होंगी। देश का राजनैतिक व सामाजिक वातावरण भी अशान्त होगा-

अनेक युग साहसयां दैव योगात्प्रजायते।

त्रयादेश दिने पक्षः तदा संहरते जगत् ॥

मार्गशीर्ष मास (१६ नव. से १५ दिस. तक) में पाँच गुरुवार होने से देश के पश्चिमी क्षेत्रों में आतंकवादी कार्यवाहियों द्वारा हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित होंगी-

यत्र मासे पंचवाराः जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्ग युद्धं च जायते ॥

दैनिक जनोपयोगी वस्तुओं की कीमतों में अत्यधिक तेजी से लोगों में विक्रोम की भावना रहेगी। पौष मास से फाल्गुण मास तक (१६ दिस. से १४ मार्च ०६ के मध्य) क्रमशः ५ शनिवार, ५ रविवार और ५ मंगलवार पड़ने से पुनः खपर नामक योग का निर्माण हो रहा है, जिससे भारत के राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक हालात पुनः अस्थिर होंगे।

सत्तारूढ़ यू.पी.ए. केन्द्रिय सरकार और विपक्षी नेताओं की खींचतानी के बावजूद भारतवर्ष आर्थिक क्षेत्रों एवं वैज्ञानिक अनुसन्धानों तथा विदेश नीति के सम्बन्ध में विशेष उन्नति करेगा। भारत के राजनीतिक सम्बन्ध ब्रिटेन, अमरीका, जर्मनी, कनेडा, फ्रांस, फिलिस्तीन, इसरायल, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नेपाल, श्रीलंका आदि देशों के साथ बेहतर होंगे। संयुक्त राष्ट्र संघ (यू.एन.ओ.) में स्थायी सदस्यता प्राप्त करने में अन्ततः सफलता प्राप्त कर लेगा।

भारत के कुछ मुख्य प्रान्त

पंजाब-इसकी प्रभावराशि मीन और प्रसिद्ध नाम राशि कन्या है। गतवर्ष की पंचांग के पृष्ठ ६८ पर पंजाब के सन्दर्भ में ही स्पष्ट रूप से पढ़ें-"लोकसभा के चुनावों में पंजाब-कांग्रेस को हार का सामना करना पड़ेगा।" यह भविष्यवाणी भी ईश्वर कृपा अक्षरशः सत्य प्रमाणित हुई है। नव्य गणतन्त्र दि. की कुण्डली में इसकी राशियों पर शुभाशुभ दोनों प्रकार के ग्रहों के प्रभाव पड़ रहे हैं। जिसके फलस्वरूप इस प्रदेश के अधिकांश क्षेत्रों में विद्रुत् एवं पेयजल की कमी, उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक तेजी (महंगाई), जनसंख्या वृद्धि, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, सड़क एवं परिवहन, कानून-व्यवस्था सम्बन्धी समस्या, लघु एवं मध्यम स्तरीय उद्योगों की समस्याएँ गम्भीर रूप धारण करेंगी। राज्य सरकार एवं विपक्ष के मध्य भी टकराव रहेगा। उपरोक्त ज्वलन्त समस्याओं के बावजूद राज्य में तकनीकी व साइंस शिक्षा, विकास, दूरसंचार, परिवहन, कम्प्यूटर टेक्नोलॉजी आदि क्षेत्रों में विशेष उन्नति होगी। राज्य के मुख्यमंत्री के लिए भी समय अशुभ रहेगा।

हिमाचल प्रदेश—इसकी प्रभाव राशि मीन है। ५६वें गणतन्त्र दिवस की कुण्डली में इसकी प्रभाव राशि लाभ स्थान में है तथा उस पर गुरु की स्वगृही दृष्टि पड़ रही है। ग्रह स्थिति के अनुसार राज्य सरकार राज्य की उन्नति के लिए बहुमुखी उपयोगी योजनाएँ बनाएगी। जैसे—पर्यटन-परिवहन, कृषि-विद्युत्, कृषि, जल, पेयजल, चिकित्सा, दूर-संचार, इंजीनियरिंग, में सुधार, जड़ी-बूटी, सेब आदि फल एवं वन उद्योग, चिकित्सा, दूर-संचार, इंजीनियरिंग, पर्यटन, कम्प्यूटर एवं तकनीकी क्षेत्रों में विकास के लिए विशेष प्रयास किए जाएंगे। पर्यटन, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, महंगाई, आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति आदि क्षेत्रों में सुधार के लिए सरकार विशेष पग उठाएगी। परन्तु विकास योजनाओं का समुचित लाभ सामान्य लोगों को नहीं मिल पाएगा। भाद्रपद मास से खप्पर योग होने प्रदेश के पश्चिमोत्तर-पूर्वी भागों में प्राकृतिक प्रकोपों के कारण जन व धन-सम्पदा की हानि होने की आशंका होगी।

जम्मू-कश्मीर—५६वें वर्ष की गणतन्त्र दिवस की कुण्डली में इसकी प्रभाव राशि (तुला) छट्टे स्थान में आई है। उस पर मृगश्रा एवं केतु का योग बना हुआ है तथा राशि स्वामी शुक्र अष्टम भाव में है। जिससे भारत और पाकिस्तान दोनों देशों की राजनीति का मुख्य धुविकरण कश्मीर ही बना रहेगा। दोनों देशों के मध्य शान्तिवार्ताओं का कोई ठोस परिणाम नहीं निकलेगा। विदेशी आतंकवादी संगठन शान्तिवार्ताओं को विफल बनाने के लिए घाटी में विस्फोटक कार्यवाहियों का क्रम जारी रखेंगे। सरकार प्रान्त की उन्नति के लिए अनेक योजनाएँ क्रियान्वित करेंगी, परन्तु सामान्य लोगों तक उनका विशेष लाभ नहीं मिल पाएगा। काश्मीरी पण्डितों एवं अन्य पीड़ितों के प्रति प्रान्तीय सरकार उपेक्षा का व्यवहार रखेगी। उत्तरार्ध भाग में असामायिक वर्षा, ओलावृष्टि, भूस्खलन आदि प्राकृतिक प्रकोपों से जन व धन हानि होने के संकेत हैं। काश्मीर समस्या को लेकर भारत और पाक के बीच गतिरोध यथावत् बने रहेंगे।

राजस्थान—इसकी प्रभाव राशि कर्क है। गणतन्त्र दिवस कुं. में इसकी राशि पर गुरु की शुभ मित्र दृष्टि पड़ रही है। जबकि मंगल की भी मैत्री दृष्टि पड़ रही है। फलस्वरूप आगामी वर्ष राज्य सरकार के लिए सड़क-परिवहन, पेय-जलापूर्ति की समस्या, महंगाई, बेरोजगारी, विद्युत् सप्लाई, कृषि एवं लघु उद्योगों के स्तर को सुधारने के लिए राज्य सरकार विशेष कदम उठाएगी। यद्यपि सर्वसाधारण लोगों को आशानुकूल लाभ नहीं मिल पाएँगे। जिसके कारण लोगों में असंतोष एवं विक्षोभ की भावना रहेगी।

हरियाणा—इसकी प्रभाव राशि मिथुन है। गणतन्त्र दि. कुण्डली में इसकी राशि पर शनि स्थित होने से आगामी वर्ष प्रान्तीय सरकार के लिए चुनौतियों से भरा वर्ष होगा। विपक्षी पार्टियाँ राज्य के विकास कार्यों में अवरोध पैदा करने के प्रयास करेंगी। बेरोजगारी, महंगाई, विद्युत्, समस्या, कृषि एवं पेयजल की समस्या भ्रष्टाचार एवं उपभोग वस्तुओं की कीमतों

एवं टैक्सों में अत्यधिक वृद्धि आदि समस्याओं के कारण चौटाला सरकार की लोकप्रियता को गहरी ठेस पहुँचेगी। सरकार लघु एवं मध्यम स्तरीय उद्योगों के विकास हेतु भी विशेष ध्यान देगी, जिनका लाभ विशिष्ट वर्ग तक ही पहुँचेगा।

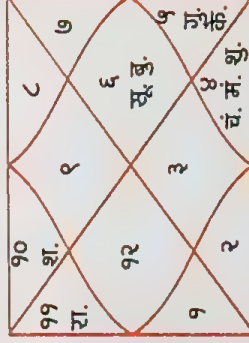
दिल्ली—गणतन्त्र दिवस की कुण्डली में इसकी राशि (मकर) भाग्य स्थान में है। उसमें सूर्य की स्थिति भी है तथा उस पर गुरु की विशेष शुभ दृष्टि पड़ रही है। फलस्वरूप राज्य में सड़क, परिवहन, विद्युत्, पेय-जल, मैडिकल शिक्षा, कम्प्यूटर्ज, तकनीकी शिक्षा, पर्यटन आदि सम्बन्धी अनेक विकासकारी योजनाएँ बनाई जाएँगी, परन्तु उनका लाभ सामान्य लोगों तक नहीं पहुँच पाएगा। बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, महंगाई, विद्युत् एवं पेयजल में कमी इत्यादि समस्याओं के कारण सर्व-साधारण व्यक्ति परेशान एवं दुःखी होंगे।

कांग्रेस गठित यू० पी० ए० सरकार का भविष्यफल

कुंडली वर्तमान प्रधानमन्त्री

डॉ. मनमोहन सिंह

26 सितं. 1932 ई. 2:00 PM



यू. पी. ए. सरकार द्वारा

शपथकालीन कुंडली

22 मई, 2004 ई. 17.42 PM



नई कांग्रेस गठबन्धन यू. पी. ए. सरकार ने 22 मई 2004 ई. शनिवार को आदर्श नक्षत्र एवं शूल योग कालीन सायं 5 बजेकर 42 मिनट पर तुला लग्न में शपथ ग्रहण की है। शपथ कालीन घर लग्न है। लग्न भाव में केतु का होना तथा उस पर भाग्येश एवं व्यथेश बुध की दृष्टि भी पड़ रही है, जिसके फलस्वरूप नवनिर्वाचित डॉ. मनमोहन की गठबन्धन सरकार को अत्यन्त अस्थिरताओं के दौर में से गुजरना पड़ेगा। शपथकाल से लगभग तीन वर्ष की अवधि पर्यन्त अर्थात् 7 फरवरी सन् 2007 ई. तक डॉ. मनमोहन को राहु मध्ये बुध की अन्तर्दशा तक की अवधि तक तो यू. पी. ए. सरकार चलने के प्रबल योग हैं। इस काल के दौरान गोचर ग्रहों के प्रभावस्वरूप कांग्रेस गठबन्धन सरकार जैक वामपंथी दलों की वैशाखियों पर ही टिकी हुई है, विपक्ष तथा वामपंथी दल सरकार की कार्यनीतियों में अनेक बार बाधाएँ पहुँचाने के प्रयास करेंगे। शपथ ग्रहण काल में भद्रा एवं शूल आदि अशुभ

योगों का होना, इसके अतिरिक्त आर्द्रा (राहु का) नक्षत्र, चर लग्न तथा लग्न में केतु, सप्तम में राहु आदि अशुभ ग्रहों के होने से सत्कारुद्ध सरकार को अपने शासन काल में अत्यन्त कठिन समस्याओं एवं चुनौतियों का सामना रहेगा। सरकारी तन्त्र में अस्थिरता के कारण लोगों में असंतोष एवं संशय के भाव रहेंगे।

नव निर्वाचित प्रधानमन्त्री डॉ. मनमोहन सिंह के यथोपलब्ध विवरण के अनुसार उनका जन्म 26 सितम्बर, 1932 ई. को कस्बा जेहलम (पाक.) के एक गाँव में धनु लग्न एवं सिंह के नवांश में हुआ। लग्नेश गुरु भाग्यस्थान में पड़कर लग्नभाव को स्वगृही दृष्टि से तथा पंचम भाव को मित्र दृष्टि से देख रहा है। फलस्वरूप डॉ. मनमोहन सिंह तीव्र बुद्धिमान, उच्चशिक्षित, प्रसिद्ध, भाग्यशाली, उदार-हृदय, गम्भीर विचारक, प्राध्यापक एवं प्रोफेसर, बैंकिंग एवं फाइनेंस आदि कार्यों में कुशल, परीपकारी, उच्च-प्रतिष्ठित एवं अपने कार्य क्षेत्र में विद्वान् बनता है। गुरु पाप ग्रह युक्त है तथा जन्मकालीन आश्लेषा (गण्डमूल) नक्षत्र होने से मातृ सुख में कमी तथा जीवन की प्रारम्भिक अवस्था अत्यन्त संघर्षपूर्ण रही। कार्येश एवं केन्द्रेण बुध दशम भाव में स्वोच्च राशि में भाग्येश सूर्य के साथ होने से भद्र नामक पंचमहापुरुष योग बना है। इसको बुधादित्य योग भी कहा जाता है। दोनों योगों के फलस्वरूप जातक अत्यन्त बुद्धिमान, प्रसिद्ध, लोकप्रिय, उच्च-शिक्षित, सौम्य प्रकृति, गम्भीरवाणी, मन्त्रित्व आदि उच्च पद प्राप्त करने वाला होता है। डॉ. सिंह की कुण्डली में बुध नवांश कुण्डली में भी उच्चस्थ होने से वर्गात्तम स्थिति में तथा सूर्य भी उच्चस्थ हुआ है, फलस्वरूप डॉ. सिंह केन्द्रिय भन्त्री मण्डल में सर्वोच्च स्थान पाने में सफल हुए हैं। ध्यान रहे, स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्री — बहादुर शास्त्री की कुण्डली में भी यही योग विद्यमान था। शपथकालीन डॉ. मनमोहन मध्ये शनि की अन्तर्दशा लगी हुई थी (कुण्डली में शनि भी स्वराशिगत होकर स्वोच्च दृष्ट से लाभ स्थान को देख रहा है।) आजकल राहु मध्ये बुध की अन्तर्दशा चल रही है, जोकि 7 फरवरी 2007 ई. तक रहेगी। ग्रह दशानुसार इस कालावधि तक तो डॉ. मनमोहन का प्रधानमन्त्री पद पर बने रहने के प्रबल योग पाए जाते हैं। विदेशी सम्बन्धों में बेहतरी के बारे में मनमोहन सरकार को विशेष सफलता मिलेगी। पाकिस्तान के साथ दोस्ती एवं शान्तिवार्ताओं के नए आयाम खुलेंगे। उपरोक्त भविष्यवाणियाँ गोचर ग्रहों के अनुशीलन के आधार पर अपनी अल्पमत्त्यनुसार लिपिबद्ध की गई हैं। वास्तव में सर्वोत्तम भविष्य नेता एवं सर्वज्ञ तो स्वयं विधाता (ईश्वर) ही हैं—

फलानि ग्रहसंयोग सूचयन्ति। को वक्तः तारतम्यस्य वेदसं विना॥

लिपिबद्धम्:

भाद्र शुक्ल एकाः, शुक्रवार,

दिनांक २४ सित., २००४ ई.

निवेदकः

पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी (पंचांगदिवाकर कर्ता)

गुराफल विचार - सन् 1426 हिजरी

सन् 2005 ईसवी में मुहर्म्म की प्रथम तारीख एवं हिजरी सन् 1426, 11 फरवरी शुक्रवार सन् 2005 ई. को प्रथम (यकम) मुहर्म्म का प्रारम्भ होने से नवीम वर्ष हिजरी सन् 1426 का आगाज (प्रारम्भ) माना जाएगा। तदुपरात यवन मतानुसार नए साल का राजा (बादशाह) शुक्र (जोहरा) होगा। नई वर्ष कुण्डली में पड़े ग्रहों के अनुसार आयन्दा साल गतवर्ष की अपेक्षा शुभ रहेगा। लेकिन वर्ष कुण्डली में शनि-मंगल की आपसी दृष्टि और दसवें गृह में राहु होने से वर्तमान सत्तारूढ़ मुस्लिम राष्ट्रों को जबरदस्त राजनीतिक (स्थायी), सामाजिक व आर्थिक चुनौतियों का सामना रहेगा। पाकिस्तान सहित अनेक मुस्लिम राष्ट्रों के नेता निजी स्वार्थपूर्ति और अपनी खुशहाली के लिए प्रयासरत रहेंगे। समाज में ऐश-इशरात, सुख-साधन एवं विलासमय प्रवृत्तियाँ बढ़ेंगी। यद्यपि कुछ मुस्लिम देशों में भी स्त्रियों की स्वतन्त्रता बढ़ेगी। वर्ष कुण्डली के सातवें भाव में सू., बु., शुक्र व नैपच्यून-चारग्रही योग होने से पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि मुस्लिम देश भारत सहित पड़ोसी देशों के साथ बाढ़ा तौर पर शान्ति प्रस्तावों को क्रियान्वित करने की कोशिशों में लगेंगे।

| | | | | |
|-----|-----|-----|-----|-----|
| शु. | 5 | श. | 3 | 2 |
| 6 | 4 | 1 | रा. | |
| 7 | के. | ने. | 10 | 12 |
| 8 | मं. | सू. | बु. | 11 |
| | पू. | शु. | चं. | यू. |

वि: संवत् 2062 में लाभ-हानि चक्र

(विशोत्तरी मतानुसारेण)

आगामी वर्ष में आपको जिस राशि का लाभ-हानि का विवरण ज्ञात करना हो, तो आप निम्नलिखित अपनी राशि के नीचे लिखे लाभ-हानि के अंकों को जमा कर दें, फिर कुल जमा अंक में से 1 कम करके जोड़ को 8 से भाग दें। भाग करने के पश्चात् यदि 1 बचे तो आगामी वर्ष में धन लाभ अच्छा रहेगा। मनोवांछित योजनाएँ सफल होंगी। मनोरंजक कार्यों की ओर रुचि बढ़ेगी। यदि शेष 2 बचे तो, धन लाभ मध्यम पर शुभ कार्यों पर खर्च अधिक होगा। यदि शेष 3 बचे तो लाभ कम, खर्च (अपव्यय) अधिक रहेगा। वर्ष भाग-दौड़ अधिक रहेगी और घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। यदि शेष 4 बचे तो, मानसिक तनाव, शरीर कष्ट और रोगादि पर खर्च हो, आर्थिक समस्याएँ उत्पन्न हों। यदि शेष 5 बचे तो लाभ कम तथा फिजूलखर्ची अधिक रहेगी। बनते कार्यों में विघ्न पड़ेगा। यदि शेष 6 बचे तो, भाग्योन्नि और धन लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। कोई बिगड़ा कार्य बनेगा। यदि शेष 7 बचे तो, व्यापार, लाटरी, सट्टे आदि द्वारा अकस्मात् धन लाभ होगा। जमीन-जायदाद आदि कार्यों पर खर्च होगा। आय के साधनों में भी वृद्धि होगी। यदि 8 अर्थात् 0 बचे, तो उस वर्ष लाभ कम व खर्च अधिक रहेगा, मानसिक परेशानियाँ भी बढ़ने के संकेत हैं।

| राशि | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | बृश्चि. | धनु | मकर | कुंभ | मीन |
|------|-----|-----|-------|------|------|-------|------|---------|-----|-----|------|-----|
| लाभ | ८ | २ | ८ | २ | ५ | ८ | २ | ८ | ५ | ९४ | ९४ | ५ |
| हानि | ५ | ९४ | ९९ | ८ | ५ | ९९ | ९४ | ५ | ९९ | ९९ | ९९ | ९९ |

सूर्यादि ग्रहों का राशि प्रवेश, वक्री-मार्गी एवं उदयास्ता घण्टे-मिन्टों में (सन् 2005-06 ई.)

| सूर्य राशि प्रवेश | | बुध राशि प्रवेश | | शुक्र राशि प्रवेश | | ग्रहों का वक्री-मार्गी | | नैपच्यून | | शुक्र | | शनि | | | | | |
|-------------------------|---------|---------------------------------|---------|-------------------|---------|-----------------------------------|-------------------------------|---------------------------------|-------|---------------------------------|--------------------------|-------|--|--|--|--|--|
| ता. मास राशि | घं. मि. | ता. मास राशि | घं. मि. | ता. मास राशि | घं. मि. | मंगल | (संवतारम्भ में मार्गी) | (संवतारम्भ में मार्गी) | शनि | शुक्र | शनि | | | | | | |
| 14 जन. मकर | 5/42 | 1 सितं. सिंह | 13/22 | 13 जन. (06) धनु | 18/50 | 1 अक्तू. वक्री | 27/40 | 19 मई वक्री | 29/05 | 24 अप्रै. परिचमोदयः 5/12 | 5 जुला. परिचमोदस्त 15/27 | | | | | | |
| 12 फर. कुम्भ | 18/42 | 17 सितं. कन्या | 14/37 | 3 फर. मार्गी | 14/52 | 10 दिशं. मार्गी | 9/30 | 26 अक्तू. मार्गी | 28/50 | 11 जन. (06) परिचमोदस्त 3/48 | 10 अग. पूर्वोदय 25/43 | | | | | | |
| 14 मार्च मीन | 15/37 | 4 अक्तू. तुला | 25/40 | 25 फर. मकर | 6/16 | बुध (संवतारम्भ में वक्री) | 27/40 | 26 अक्तू. मार्गी | 28/50 | 2005 ई. में ग्रहों के विशेष योग | | | | | | | |
| 13 अप्रै. मेष | 24/09 | 25 अक्तू. वृश्चिक | 17/11 | 31 मार्च कुम्भ | 10/40 | | | | | | | | | | | | |
| 14 मई वृष | 21/04 | 14 नवं. वक्री | 11/10 | शनि राशि प्रवेश | | यूरेनस (संवतारम्भ में वक्री) | 27/40 | 26 अक्तू. मार्गी | 28/50 | | | | | | | | |
| 14 जून मिथुन | 27/40 | 4 दिशं. मार्गी | 7/58 | 26 मई कर्क | 7/26 | | | | | | | | | | | | |
| 16 जुला. कर्क | 14/34 | 30 दिशं. धनु | 25/46 | 22 नवं. वक्री | 14/27 | शनि राशि प्रवेश | | प्लूटो (संवतारम्भ में वक्री) | 28/50 | | | | | | | | |
| 16 अग. सिंह | 22/57 | 19 जन. (06) मकर | 9/46 | 22 नवं. वक्री | 14/27 | राहु (संवतारम्भ में मीन में) | 26/06 | | | | | | | | | | |
| 16 सितं. कन्या | 22/51 | 5 फर. कुम्भ | 21/53 | 22 नवं. वक्री | 14/27 | | गुरु (संवतारम्भ में वक्री) | 28/50 | | | | | | | | | |
| 17 अक्तू. तुला | 10/47 | 24 फर. मीन | 21/34 | 22 नवं. वक्री | 14/27 | केतु (संवतारम्भ में कन्या में) | | | | | | 26/06 | | | | | |
| 16 नवं. वृश्चि. | 10/32 | 2 मार्च वक्री | 26/06 | 22 नवं. वक्री | 14/27 | केतु (संवतारम्भ में कन्या में) | | | | | | 26/06 | | | | | |
| 15 दिशं. धनु | 25/09 | 9 मार्च व कुम्भे | 13/04 | 22 नवं. वक्री | 14/27 | केतु (संवतारम्भ में कन्या में) | | | | | | 26/06 | | | | | |
| 14 जन. (06) मकर | 11/55 | 25 मार्च मार्गी | 19/18 | 22 नवं. वक्री | 14/27 | केतु (संवतारम्भ में कन्या में) | | | | | | 26/06 | | | | | |
| 12 फर. कुम्भ | 24/55 | गुरु राशि प्रवेश | | 22 नवं. वक्री | 14/27 | केतु (संवतारम्भ में कन्या में) | | | | | | 26/06 | | | | | |
| 14 मार्च मीन | 21/49 | (संवतारम्भ में कन्या में वक्री) | | 22 नवं. वक्री | 14/27 | केतु (संवतारम्भ में कन्या में) | | | | | | 26/06 | | | | | |
| मंगल राशि प्रवेश | | 5 जून मार्गी | 12/58 | 22 नवं. वक्री | 14/27 | केतु (संवतारम्भ में कन्या में) | | | | | | 26/06 | | | | | |
| (संवतारम्भ में मकर में) | | 28 सितं. तुला | 5/35 | 22 नवं. वक्री | 14/27 | केतु (संवतारम्भ में कन्या में) | | | | | | 26/06 | | | | | |
| 22 अप्रै. कुम्भ | 23/42 | 4 मार्च (06) वक्री | 23/32 | 22 नवं. वक्री | 14/27 | केतु (संवतारम्भ में कन्या में) | | | | | | 26/06 | | | | | |
| 3 जून मीन | 16/26 | शुक्र राशि प्रवेश | | 22 नवं. वक्री | 14/27 | केतु (संवतारम्भ में कन्या में) | | | | | | 26/06 | | | | | |
| 18 जुला. मेष | 9/13 | (संवतारम्भ में मीन में) | | 22 नवं. वक्री | 14/27 | केतु (संवतारम्भ में कन्या में) | | | | | | 26/06 | | | | | |
| 1 अक्तू. वक्री | 27/40 | 11 अप्रै. मेष | 4/27 | 22 नवं. वक्री | 14/27 | केतु (संवतारम्भ में कन्या में) | | | | | | 26/06 | | | | | |
| 10 दिशं. मार्गी | 9/30 | 5 मई वृष | 11/23 | 22 नवं. वक्री | 14/27 | केतु (संवतारम्भ में कन्या में) | | | | | | 26/06 | | | | | |
| 5 फर. (06) वृष | 10/58 | 29 मई मिथुन | 21/45 | 22 नवं. वक्री | 14/27 | केतु (संवतारम्भ में कन्या में) | | | | | | 26/06 | | | | | |
| बुध राशि प्रवेश | | 23 जून कर्क | 11/35 | 22 नवं. वक्री | 14/27 | केतु (संवतारम्भ में कन्या में) | | | | | | 26/06 | | | | | |
| (संवतारम्भ में मीन में) | | 18 जुला. सिंह | 5/41 | 22 नवं. वक्री | 14/27 | केतु (संवतारम्भ में कन्या में) | | | | | | 26/06 | | | | | |
| 8 मई मेष | 15/15 | 12 अग. कन्या | 6/08 | 22 नवं. वक्री | 14/27 | केतु (संवतारम्भ में कन्या में) | | | | | | 26/06 | | | | | |
| 25 मई वृष | 18/11 | 6 सितं. तुला | 16/37 | 22 नवं. वक्री | 14/27 | केतु (संवतारम्भ में कन्या में) | | | | | | 26/06 | | | | | |
| 8 जून मिथुन | 15/51 | 2 अक्तू. वृश्चि. | 20/18 | 22 नवं. वक्री | 14/27 | केतु (संवतारम्भ में कन्या में) | | | | | | 26/06 | | | | | |
| 24 जून कर्क | 10/16 | 30 अक्तू. धनु | 13/35 | 22 नवं. वक्री | 14/27 | केतु (संवतारम्भ में कन्या में) | | | | | | 26/06 | | | | | |
| 23 जुला. वक्री | 8/32 | 3 दिशं. मकर | 17/37 | 22 नवं. वक्री | 14/27 | केतु (संवतारम्भ में कन्या में) | | | | | | 26/06 | | | | | |
| 16 अग. मार्गी | 9/18 | 24 दिशं. वक्री | 15/09 | 22 नवं. वक्री | 14/27 | केतु (संवतारम्भ में कन्या में) | | | | | | 26/06 | | | | | |

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

| 2005 ई. नक्षत्र | चरण | 2005 ई. नक्षत्र | चरण | 2005-06 ई. नक्षत्र | चरण |
|----------------------------|-------|-------------------------------|-------|---------------------------|-----|
| 31 मार्च रेव (1) | 10/53 | 19 जुला पुष्य (1) | 26/26 | 9 नवं. विशा (2) | |
| 3 अप्रै. रेव (2) | | 23 जुला पुष्य (2) | | 13 नवं. विशा (3) | |
| 7 अप्रै. रेव (3) | 5/13 | 26 जुला पुष्य (3) | | 16 नवं. विशा 4 बुध. 10/32 | |
| 10 अप्रै. रेव (4) | | 30 जुला पुष्य (4) | | 19 नवं. अनु. (1) 17/54 | |
| 13 अप्रै. अधि 1 मेष 24/09 | | 2 अग. आश्ले (1) | 25/20 | 22 नवं. अनु. (2) | |
| 17 अप्रै. अधि (2) | | 6 अग. आश्ले (2) | | 26 नवं. अनु. (3) | |
| 20 अप्रै. अधि (3) | | 9 अग. आश्ले (3) | | 29 नवं. अनु. (4) | |
| 24 अप्रै. अधि (4) | | 13 अग. आश्ले (4) | | 2 दिसं. ज्ये. (1) 22/09 | |
| 27 अप्रै. भर. (1) 16/04 | | 16 अग. मघा 1 सिंह 22/57 | | 6 दिसं. ज्ये. (2) | |
| 1 मई भर. (2) | | 20 अग. मघा (2) | | 9 दिसं. ज्ये. (3) | |
| 4 मई भर. (3) | | 23 अग. मघा (3) | | 12 दिसं. ज्ये. (4) | |
| 7 मई भर. (4) | | 27 अग. मघा (4) | | 15 दिसं. मूला 1धनु 25/09 | |
| 11 मई कृति (1) 10/12 | | 30 अग. पू.फा. (1) 18/58 | | 19 दिसं. मूला (2) | |
| 14 मई कृति 2 वृष 21/04 | | 3 सितं. पू.फा. (2) 5/37 | | 22 दिसं. मूला (3) | |
| 18 मई कृति (3) | | 6 सितं. पू.फा. (3) | | 25 दिसं. मूला (4) | |
| 21 मई कृति (4) | | 10 सितं. पू.फा. (4) | | 28 दिसं. पू.षा (1) 27/24 | |
| 25 मई रोहि (1) | 6/27 | 13 सितं. उ.फा. (1) 12/46 | | 1 जन. पू.षा. (2) | |
| 28 मई रोहि (2) | | 16 सितं. उ.फा. 2 कन्या 22/51 | | 4 जन. पू.षा. (3) | |
| 1 जून्. रोहि (3) | | 20 सितं. उ.फा. (3) | | 7 जन. पू.षा. (4) | |
| 4 जून्. रोहि (4) | | 23 सितं. उ.फा. (4) | | 11 जन. उ.षा. (1) 5/21 | |
| 8 जून्. मृग (1) | 4/18 | 27 सितं. हस्त (1) | 4/17 | 14 जन. उ.षा 2 मक. 11/55 | |
| 11 जून्. मृग (2) | | 30 सितं. हस्त (2) | | 17 जन. उ.षा (3) | |
| 14 जून्. मृग 3 मिथु. 27/40 | | 3 अक्तू. हस्त (3) | | 20 जन. उ.षा (4) | |
| 18 जून्. मृग (4) | | 7 अक्तू. हस्त (4) | | 24 जन. श्रव. (1) 7/44 | |
| 21 जून्. आर्द्रा (1) 27/20 | | 10 अक्तू. चित्रा (1) 17/10 | | 27 जन. श्रव. (2) | |
| 25 जून्. आर्द्रा (2) | | 14 अक्तू. चित्रा (2) | | 30 जन. श्रव. (3) | |
| 29 जून्. आर्द्रा (3) | | 17 अक्तू. चित्रा 3 जुला 10/47 | | 3 फर. श्रव. (4) | |
| 2 जुला. आर्द्रा (4) | | 20 अक्तू. चित्रा (4) | | 6 फर. धनि (1) 10/48 | |
| 5 जुला. पुनं (1) 26/55 | | 23 अक्तू. स्वा. (1) 27/45 | | 9 फर. धनि. (2) | |
| 9 जुला. पुनं (2) | | 27 अक्तू. स्वा. (2) | | 12 फर. धनि 3 कुंभ 24/55 | |
| 13 जुला. पुनं (3) | | 30 अक्तू. स्वा. (3) | | 16 फर. धनि (4) | |
| 16 जुला. पुनं 4 कर्क 14/34 | | 3 नवं. स्वा. (4) | | | |

मंगल नक्षत्र प्रवेश

| | |
|----------------------------|--|
| 4 अप्रै. श्रव (3) | |
| 9 अप्रै. श्रव (4) | |
| 13 अप्रै. धनि (1) 19/18 | |
| 18 अप्रै. धनि (2) | |
| 22 अप्रै. धनि 3 कुंभ 23/42 | |
| 27 अप्रै. धनि (4) | |
| 1 मई शत (1) 28/11 | |
| 6 मई शत (2) | |
| 11 मई शत (3) | |
| 15 मई शत (4) | |
| 20 मई पू.षा. 1 15/36 | |
| 25 मई पू.षा. (2) | |
| 29 मई पू.षा. (3) | |
| 3 जून्. पूषा 4 मीन 16/26 | |
| 8 जून्. उ.षा. 1 10/05 | |
| 13 जून्. उ.षा. (2) | |
| 17 जून्. उ.षा. (3) | |
| 22 जून्. उ.षा. (4) | |
| 27 जून्. रेव (1) 19/22 | |

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

| | |
|---------------------------|--|
| 19 फर. शत (1) 15/25 | |
| 22 फर. शत. (2) | |
| 26 फर. शत. (3) | |
| 1 मार्च शत. (4) | |
| 4 मार्च पू.षा. (1) 21/41 | |
| 8 मार्च पू.षा. (2) | |
| 11 मार्च पू.षा. (3) | |
| 14 मार्च पूषा 4 मीन 21/50 | |
| 18 मार्च उ.षा (1) 6/10 | |
| 21 मार्च उ.षा. (2) | |
| 24 मार्च उ.षा. (3) | |
| 28 मार्च उ.षा. (4) | |
| 31 मार्च रेव. (1) 16/49 | |

मंगल नक्षत्र प्रवेश

| | |
|------------------------|--|
| 2 जुला. रेव (2) | |
| 7 जुला. रेव (3) | |
| 12 जुला. रेव (4) | |
| 18 जुला. अधि (1) 9/13 | |
| 23 जुला. अधि (2) | |
| 29 जुला. अधि (3) | |
| 4 अग. अधि (4) | |
| 10 अग. भर (1) 12/51 | |
| 16 अग. भर (2) | |
| 24 अग. भर (3) | |
| 1 सितं. भर (4) | |
| 11 सितं. कृति. 1 27/43 | |
| 1 अक्तू. वक्री 27/40 | |
| 21 अक्तू. भर (4) 16/20 | |
| 1 नवं. भर (3) 4/30 | |
| 10 नवं. भर (2) | |
| 21 नवं. भर (1) 17/35 | |
| 10 दिसं. मार्गी 9/30 | |
| 30 दिसं. भर (2) 5/57 | |
| 11 जन. भर (3) 5/40 | |
| 20 जन. भर (4) 15/13 | |
| 28 जन. कृति. 1 21/16 | |
| 5 फर. कृति 2 वृष 10/58 | |
| 12 फर. कृति (3) | |
| 19 फर. कृति (4) | |
| 25 फर. रोहि (4) 23/44 | |
| 4 मार्च रोहि (2) | |
| 10 मार्च रोहि (3) | |
| 17 मार्च रोहि (4) | |
| 22 मार्च मृग (1) 20/01 | |
| 28 मार्च मृग (2) 19/03 | |

बुध नक्षत्र प्रवेश

| | |
|----------------------------|--|
| 5 अप्रै. व उभा (2) | |
| 12 अप्रै. मार्गी 13/19 | |
| 19 अप्रै. उ.षा. (3) | |
| 24 अप्रै. उ.षा. (4) | |
| 27 अप्रै. रेव (1) 24/15 | |
| 30 अप्रै. रेव (2) | |
| 3 मई रेव (3) | |
| 6 मई रेव (4) | |
| 8 मई अधि 1 मेष 15/15 | |
| 10 मई अधि (2) | |
| 13 मई अधि (3) | |
| 14 मई अधि (4) | |
| 16 मई भर (1) 23/02 | |
| 18 मई भर (2) | |
| 20 मई भर (3) | |
| 22 मई भर (4) | |
| 23 मई कृति (1) 26/27 | |
| 25 मई कृति 2 वृष 18/11 | |
| 27 मई कृति (3) | |
| 28 मई कृति (4) | |
| 30 मई रोहि (1) 12/17 | |
| 31 मई रोहि (2) | |
| 2 जून्. रोहि (3) | |
| 3 जून्. रोहि (4) | |
| 5 जून्. मृग (1) 14/23 | |
| 6 जून्. मृग (2) | |
| 8 जून्. मृग 3 मिथुन 15/51 | |
| 10 जून्. मृग (4) | |
| 11 जून्. आर्द्रा (1) 19/28 | |
| 13 जून्. आर्द्रा (2) | |
| 15 जून्. आर्द्रा (3) | |
| 16 जून्. आर्द्रा (4) | |
| 18 जून्. पुनं (1) 14/52 | |
| 20 जून्. पुनं (2) | |

बुध नक्षत्र प्रवेश

| | |
|-----------------------------|--|
| 22 जून्. पुनं (3) | |
| 24 जून्. पुनं 4 कर्क 10/16 | |
| 26 जून्. पुष्य (1) 13/23 | |
| 28 जून्. पुष्य (2) | |
| 1 जुला. पुष्य (3) | |
| 3 जुला. पुष्य (4) | |
| 6 जुला. आश्ले (1) 17/36 | |
| 9 जुला. आश्ले (2) | |
| 14 जुला. आश्ले (3) | |
| 23 जुला. वक्री 8/32 | |
| 1 अग. आश्ले (2) | |
| 5 अग. आश्ले (1) 19/26 | |
| 10 अग. पुष्य (4) 13/10 | |
| 16 अग. मार्गी 9/18 | |
| 21 अग. श्ले (1) 20/10 | |
| 25 अग. आश्ले (2) | |
| 28 अग. आश्ले (3) | |
| 30 अग. आश्ले (4) | |
| 1 सितं. मघा 1 सिंह 13/22 | |
| 3 सितं. मघा (2) | |
| 5 सितं. मघा (3) | |
| 6 सितं. मघा (4) | |
| 8 सितं. पूषा (1) 19/55 | |
| 10 सितं. पूषा (2) | |
| 12 सितं. पूषा (3) | |
| 13 सितं. पूषा (4) | |
| 15 सितं. उ.फा (1) 19/43 | |
| 17 सितं. उ.फा 2 कन्या 14/37 | |
| 19 सितं. उ.फा (3) | |
| 21 सितं. उ.फा (4) | |
| 22 सितं. हस्त (1) 27/05 | |
| 24 सितं. हस्त (2) | |
| 26 सितं. हस्त (3) | |
| 28 सितं. हस्त (4) | |

| बुध नक्षत्र प्रवेश | बुध नक्षत्र प्रवेश | गुरु नक्षत्र प्रवेश | शुक्र नक्षत्र प्रवेश | शुक्र नक्षत्र प्रवेश | राहु नक्षत्र प्रवेश |
|----------------------------|---------------------------|----------------------------|---------------------------|-----------------------------|---------------------------|
| 2005 ई. नक्षत्र | 2006 ई. नक्षत्र | 2005-06 ई. नक्षत्र | 2005 ई. नक्षत्र | 2005 ई. नक्षत्र | 2005-06 ई. नक्षत्र |
| चरण | चरण | चरण | चरण | चरण | चरण |
| 30 सितं. चित्रा (1) 22/43 | 2 जन. मूला (2) | 4 अप्रै. व हस्त (3) 4/52 | 21 मई रोहि (4) | 31 अग. चित्रा (1) 23/50 | 26 जन. पूषा. (3) |
| 2 अक्. चित्रा (2) | 4 जन. मूला (3) | 2 मई व हस्त (2) 14/12 | 24 मई मृग (1) 11/08 | 3 सितं. चित्रा (2) | 3 फर. मार्गि 14/52 |
| 4 अक्. चित्रा 3 जुला 25/40 | 6 जन. मूला (4) | 5 जून मार्गि 12/58 | 27 मई मृग (2) | 6 सितं. चित्रा 3 जुला 16/37 | 11 फर. पूषा. (4) 17/26 |
| 7 अक्. चित्रा (4) | 8 जन. पूषा (1) 21/11 | 9 जुला. हस्त (3) 13/01 | 29 मई मृग 3 मिथु 21/45 | 9 सितं. चित्रा (4) | 19 फर. उ. भा. (1) 15/31 |
| 9 अक्. स्वा. (1) 8/11 | 10 जन. पूषा (2) | 5 अग. हस्त (4) 12/18 | 1 जून मृग (4) | 12 सितं. स्वा. (1) 10/12 | 25 फर. उषा 2 मक. 6/16 |
| 11 अक्. स्वा. (2) | 13 जन. पूषा (3) | 11 सितं. चित्रा (1) 12/27 | 4 जून आर्द्रा (1) 8/32 | 15 सितं. स्वा. (2) | 1 मार्च उ. भा. (3) |
| 13 अक्. स्वा. (3) | 15 जन. पूषा (4) | 28 सितं. चित्रा (2) 24/15 | 6 जून आर्द्रा (2) | 18 सितं. स्वा. (3) | 6 मार्च उ. भा. (4) |
| 15 अक्. स्वा. (4) | 17 जन. उषा. (1) 8/20 | 13 अक्. चित्रा 3 जुला 5/35 | 9 जून आर्द्रा (3) | 20 सितं. स्वा. (4) | 10 मार्च श्रव (1) 9/00 |
| 18 अक्. चित्रा (1) 8/55 | 19 जन. उषा 2 मक. 9/46 | 28 अक्. चित्रा (4) 19/01 | 12 जून आर्द्रा (4) | 23 सितं. विशा (1) 24/24 | 14 मार्च श्रव (2) |
| 20 अक्. चित्रा (2) | 21 जुन. उषा (3) | 13 नव. स्वा. (2) 13/37 | 15 जून पुन (1) 6/33 | 26 सितं. विशा. (2) | 17 मार्च श्रव (3) |
| 23 अक्. चित्रा. (3) | 23 जन. उषा (4) | 29 नव. स्वा. (3) 13/25 | 17 जून पुन (2) | 30 सितं. विशा. (3) | 21 मार्च श्रव (4) |
| 25 अक्. चित्रा 4 बुध 17/11 | 25 जन. श्रवण (1) 10/40 | 16 दिसं. स्वा. (4) 16/59 | 20 जून पुन (3) | 2 अक्. विशा 4 बुध 20/18 | 24 मार्च धनि (1) 19/15 |
| 28 अक्. अनु (1) 8/14 | 27 जन. श्रवण (2) | 5 जन. चित्रा (1) 6/45 | 23 जून पुन 4 कर्क 11/35 | 5 अक्. अनु. (1) 19/42 | 28 मार्च धनि (2) |
| 30 अक्. अनु. (2) | 29 जन. श्रवण (3) | 31 जन. चित्रा. (2) 15/50 | 26 जून पुष्य (1) 5/22 | 8 अक्. अनु. (2) | 31 मार्च धनि 3 कुंभ 10/40 |
| 3 नव. अनु. (3) | 31 जन. श्रवण (4) | 4 मार्च वक्रा 23/32 | 28 जून पुष्य (2) | 11 अक्. अनु. (3) | |
| 6 नव. अनु. (4) | 1 फर. धनि (1) 28/00 | शुक्र नक्षत्र प्रवेश | | 14 अक्. अनु. (4) | |
| 12 नव. ज्ये. (1) 7/50 | 3 फर. धनि (2) | 31 मार्च रेव (1) 10/29 | 4 जुला. पुष्य (3) | 17 अक्. ज्ये. (1) 22/28 | |
| 14 नव. वक्रा 11/10 | 5 फर. धनि 3 कुंभ 21/53 | 3 अप्रै. रेव (2) | 4 जुला. पुष्य (4) | 20 अक्. ज्ये. (2) | |
| 16 नव. अनु. (4) 11/16 | 7 फर. धनि (4) | 5 अप्रै. रेव (3) | 7 जुला. श्ले. (1) 5/02 | 24 अक्. ज्ये. (3) | |
| 20 नव. अनु. (3) | 9 फर. शत (1) 15/01 | 8 अप्रै. रेव (4) | 9 जुला. आश्ले (2) | 27 अक्. ज्ये. (4) | |
| 23 नव. अनु. (2) | 11 फर. शत. (2) | 11 अप्रै. अधि 1 मेष 4/27 | 12 जुला. श्ले. (3) | 30 अक्. मूला 1 धनु 13/35 | |
| 26 नव. अनु. (1) 6/15 | 13 फर. शत. (3) | 13 अप्रै. अधि (2) | 15 जुला. श्ले. (4) | 2 नव. मूला (2) | |
| 28 नव. अनु. (4) 27/00 | 15 फर. शत. (4) | 16 अप्रै. अधि (3) | 18 जुला. मघा 1 सिंह 5/41 | 6 नव. मूला (3) | |
| 4 दिसं. मार्गि 7/58 | 17 फर. पूषा. (1) 7/42 | 19 अप्रै. अधि (4) | 20 जुला. मघा (2) | 9 नव. मूला (4) | |
| 9 दिसं. अनु. (1) 27/34 | 19 फर. पूषा. (2) | 21 अप्रै. मर. (1) 23/04 | 23 जुला. मघा (3) | 12 नव. पूषा. (1) 26/50 | |
| 13 दिसं. अनु. (2) | 21 फर. पूषा. (3) | 24 अप्रै. मर. (2) | 26 जुला. मघा (4) | 16 नव. पूषा. (2) | |
| 16 दिसं. अनु. (3) | 21 फर. पूषा. (3) | 27 अप्रै. मर. (3) | 29 जुला. पू. फा. (1) 7/38 | 20 नव. पूषा. (3) | |
| 19 दिसं. अनु. (4) | 24 फर. पूषा 4 मीन 21/34 | 29 अप्रै. मर. (4) | 31 जुला. पू. फा. (2) | 24 नव. पूषा. (4) | |
| 21 दिसं. ज्ये. (1) 18/07 | 2 मार्च वक्रा 26/06 | 2 मार्च कृति (1) 18/27 | 3 अग. पू. फा. (3) | 28 नव. उषा. (1) 22/02 | |
| 24 दिसं. ज्ये. (2) | 9 मार्च पूषा 3 कुंभ 13/04 | 5 मई कृति 2 वृष 11/23 | 9 अग. पू. फा. (4) | 3 दिसं. उषा 2 मक. 17/37 | |
| 26 दिसं. ज्ये. (3) | 12 मार्च पू. भा. (2) | 8 मई कृति (3) | 12 अग. उ. फा. (1) 11/01 | 9 दिसं. उषा. (3) | |
| 28 दिसं. ज्ये. (4) | 16 मार्च पू. भा. 1 16/52 | 10 मई कृति (4) | 14 अग. उ. फा. (3) | 17 दिसं. उ. भा. (4) | |
| 30 दिसं. मूला 1 धनु 25/46 | 21 मार्च शत (4) 22/06 | 13 मई रोहि (1) 14/27 | 17 अग. उ. फा. (4) | 24 दिसं. वक्रा 15/09 | |
| | 25 मार्च मार्गि 19/18 | 16 मई रोहि (2) | 20 अग. हस्त (1) 16/16 | 30 दिसं. व उषा (3) 25/54 | |
| | 29 मार्च पूषा. (1) 20/28 | 18 मई रोहि (3) | 23 अग. हस्त (2) | 7 जन. व उषा (2) 27/07 | |
| | | | 26 अग. हस्त (3) | 13 जन. उषा 1 धनु 18/50 | |
| | | | 29 अग. हस्त (4) | 19 जन. पूषा (4) 8/46 | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |

- * शनि की गुरु पर 3री दृष्टि = वर्षारम्भ से 12 जनवरी तक
 * मंगल की शनि पर 8वीं दृष्टि = 13 जन. से 28 जन. तक
 * शनि की शुक्र पर समसप्तक दृष्टि = 13 जन. से 27 जन. तक
 * गुरु की सूर्य पर पंचम दृष्टि = 13 जन. से 11 फर. तक
 * शनि-मंगल में समसप्तक दृष्टि = 29 जन. से 11 मार्च तक
 * गुरु की मंगल पर पंचम दृष्टि = 12 मार्च से 21 अप्रैल तक
 * मंगल की राहु पर चतुर्थ दृष्टि = 12 मार्च से 24 मार्च तक
 * गुरु की सूर्य पर सातवीं दृष्टि = 14 मार्च से 12 अप्रैल तक
 * गुरु-शुक्र मध्ये समसप्तक दृष्टि = 18 मार्च से 10 अप्रैल तक
 * मंगल की शुक्र पर चतुर्थ दृष्टि = 11 अप्रैल से 22 अप्रैल तक
 * मंगल की सूर्य पर चतुर्थ दृष्टि = 13 अप्रैल से 22 अप्रैल तक
 * गुरु की शुक्र पर नवम दृष्टि = 5 मई से 29 मई तक
 * मंगल की शुक्र पर चतुर्थ दृष्टि = 5 मई से 28 मई तक
 * मंगल की सूर्य पर चतुर्थ दृष्टि = 14 मई से 2 जून तक
 * शनि की केतु पर तृतीय दृष्टि = 26 मई से 29 मार्च (2006) तक
 * मंगल की शुक्र पर चतुर्थ दृष्टि = 3 जून से 22 जून तक
 * मंगल की सूर्य पर चतुर्थ दृष्टि = 15 जून से 15 जुला. तक
 * मंगल की सूर्य पर चतुर्थ दृष्टि = 18 जुला. से 15 अग. तक
 * मंगल-शनि के मध्य (4-10) दृष्टि = 18 जुला. से 4 फर. (06) तक
 * मंगल-शुक्र मध्ये समसप्तक दृष्टि = 6 सितं. से 2 अक्तू. तक
 * मंगल-गुरु मध्ये समसप्तक दृष्टि = 28 सितं. से 4 फर. (06) तक
 * शुक्र-शनि मध्ये समसप्तक दृष्टि = 3 दिसं. से 13 जन. (06) तक
 * सूर्य-शनि मध्ये समसप्तक दृष्टि = 14 जन. से 12 फर. (06) तक
 * बुध-शनि मध्ये समसप्तक दृष्टि = 20 जन. से 5 फर. (06) तक

षडाष्टक योग-

- * शनि-मंगल में षडाष्टक = 1 जन. से 28 जनवरी तक
 * शनि-सूर्य में षडाष्टक = 1 जन. से 13 जनवरी तक
 * सूर्य-शनि षडाष्टक = 14 जन. से 11 फरवरी तक
 * मंगल-शनि में षडाष्टक = 12 मार्च से 21 अप्रैल तक
 * मंगल-शनि में षडाष्टक = 26 मई से 2 जून तक
 * चारग्रही योग = (सू., बु., शु. रा.) 1 अप्रैल से 10 अप्रैल तक
 * तीनग्रही योग (कर्क) = (बु., शु., श.) 21 जून से 17 जुलाई तक
 * चारग्रही योग (कन्या में) = (सू., बु., गु., के.) 17 सितं. से 27 सितं. तक
 * कालसर्प योग = 29 जून से 13 जुलाई तक
 * कालसर्प योग = 27 जुलाई से 9 अगस्त तक

ग्रहों की अंशात्मक युतियाँ २०६२ संवत्

- 14 जन. = बुध, शुक्र (धनु)
 14 फर. = सूर्य, बुध (कुम्भ)
 29 मार्च = बुध, शुक्र (मीने)
 31 मार्च = सूर्य, शुक्र (मीने)
 12 अप्रै. = सूर्य, राहु (मीने)
 6 मई = बुध, राहु (मीने)
 3 जून = सूर्य, बुध (वृष)
 26 जून = शुक्र, शनि (कर्क)
 26 जून = बुध, शुक्र (कर्क)
 26 जून = बुध, शनि (कर्क)
 28 जून = बुध, शुक्र (कर्क)
 9 जुला. = मंगल, राहु (मीने)
 9 जुला. = बुध, शुक्र (कर्क)
 23 जुला. = सूर्य, शनि (कर्क)
 6 अग. = सूर्य, बुध (कर्क)
 19 अग. = गुरु, केतु (कन्या)
 30 अग. = शुक्र, केतु (कन्या)
 2 सितं. = गुरु, शुक्र (कन्या)
 18 सितं. = सूर्य, बुध (कन्या)
 28 सितं. = बुध, केतु (कन्या)
 6 अक्तू. = सूर्य, केतु (कन्या)
 6 अक्तू. = बुध, गुरु (तुला)
 22 अक्तू. = सूर्य, गुरु (तुला)
 24 नव. = सूर्य, बुध (वृश्चिक)
 14 जन. (06) = सूर्य, शुक्र (मकर)
 17 जन. = बुध, शुक्र (धनु)
 26 जन. = सूर्य, बुध (मकर)
 12 मार्च = सूर्य, बुध (कुम्भ)
 25 मार्च = सूर्य, राहु (मीने)

पंचकों के सम्बन्ध में वृथा भ्रमित न हों

कुम्भ व मीनस्थ चन्द्रमा कालीन पड़ने वाले नक्षत्र—धनि. (अन्तिम २ चरण), शत, पू. भा, उ. भा. एवं रेवती—पाँच नक्षत्र पंचक कहलाते हैं। इन नक्षत्रों के समय शव को जलाना, खाट, पलंग, शय्या, चटाई, कुर्सी आदि का बुनना, मकान, दुकान आदि की छत डालना, स्तम्भारोपित करना, दक्षिण दिशा की यात्रा, घास, लकड़ी को तोड़ना तथा इतका संग्रह करना आदि कृत्यों को करने का निषेध माना गया है—

प्रेतच्वालन शय्यकावितनने स्तम्भोच्छ्रयं याय्यादि यानम्।

काष्ठ तुणोच्चयं परिहरे कुम्भ द्वयस्थे विधी ॥ मुहूर्तं भातेण्ड ॥

अन्येऽपि—प्रेतस्यदाहं यम दिग्गमं त्यजेत् शय्या वितानं गृहगोपनादि च ॥

मु. चिन्तामणि पीयूष ॥

पंचक नक्षत्रों में किए गए कृत्यों का फल भी पाँच गुणा माना गया है—

पंचके पंचगुणितं त्रिगुणं च त्रिपुच्छरे ।

यमले द्विगुणं सर्वं हानीष्ट व्याधिक भवेत् ॥ ज्यो. तत्त्व प्रकाश

अर्थात् पंचक नक्षत्रों में धन आदि की हानि, लाभ, व्याधि आदि अनिष्ट की अथवा लड़का-लड़की की संख्या की संभावना पाँचगुणा, त्रिपुच्छर में तीन गुणा तथा द्विपुच्छर में दो गुणा हो जाती है।

ध्यान रहे, पंचक नक्षत्रों का विचार मात्र उपरोक्त विशेष कृत्यों के लिए ही किया जाता है। विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृह-प्रवेश, वधु-प्रवेश, उपनयन, विर्पणि आदि मुहूर्तों में तो पंचक नक्षत्रों का प्रयोग शुभ माना है।

रक्षा बन्धन, भैया दूज, महालक्ष्मी पूजन, नवरात्र पूजन, जप-व्रतानुष्ठान आदि पर्वों में तथा भूमि, मकान, स्कूटर, कार आदि वस्तुओं के क्रय-विक्रय के सम्बन्ध में पंचकों का विचार नहीं किया जाता। ध्यान रहे, विवाह, मुण्डन, गृह-प्रवेश, उपनयन, विर्पणि (व्यवसाय), वधु-प्रवेश आदि मुहूर्तों में पंचक नक्षत्रों की शुभ एवं ग्राह्य माना जाता है। बृहद् ज्योतिषानुसार तो धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपद व रेवती नक्षत्र सभी कार्यों में सिद्धिप्रदायक एवं शुभ माने जाते हैं जबकि पू. भाद्रपद एवं शतभिषा नक्षत्र साधारण रूप से कार्य सिद्धि कारक माने गए हैं—

रोहिण्यश्वि मृगाः पुण्यो हस्तचित्रोत्तरा त्रयम्।

.....धनिष्ठा च पुनर्वसु... सर्वकार्येषु सिद्धिदा।

पूर्वात्रयं...शतताराभिमतेषु कृत्यं साधारणं स्मृतम् ॥ व. ज्योतिषार ॥

इस प्रकार पंचक नक्षत्रों को उपरोक्त वर्णित पाँचों कार्यों के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में प्रशस्त मानना ही शास्त्र सम्मत होगा।

सर्गदिव्या वार्ता-पर्वी वार्ता शास्त्रीय विचार्य

श्री दुर्गाष्टमी (भवान्युत्पत्ति) (17 अप्रैल, रविवार)

चैत्र शुक्ल अष्टमी तिथि को श्रीदुर्गा भवानी का प्रादुर्भाव हुआ माना जाता है। शास्त्रकारों ने श्री दुर्गाष्टमी पर्व में नवमी युता अष्टमी को ग्रहण करने की आज्ञा दी है—

चैत्र शुक्लाष्टम्यां भवान्या उत्पत्तिः। तत्र नवमी युता ग्राह्या ॥ —धर्मसिन्धु ॥

अन्येऽपि— अष्टम्या नवमी विद्धा कर्त्तव्या फलाकाक्षिभिः।

सदुर्गा (९) वा सनन्दा वा कर्त्तव्या दशमी सदा ॥ ज्योतिर्निबन्ध ॥

सम्बत् २०६२ में १६ अप्रैल, शनि और १७ अप्रैल रविवार, दोनों दिन अष्टमी का समावेश हो रहा है, परन्तु १६ अप्रैल को सप्तमी विद्ध अष्टमी होने से वह व्रत, पूजादि के लिए ग्राह्य नहीं होगी—“वर्जनीया प्रयत्नेन सप्तमीसंयुताष्टमी” अग्नि पुराण ॥

१७ अप्रैल रविवार को अष्टमी सूर्योदय काल में विद्यमान है तथा नवमी युक्त होने के कारण रविवार (१७ अप्रैल) को ही श्री दुर्गाष्टमी का पर्व मनाना उचित होगा।

श्रीराम नवमी (18 अप्रैल, सोमवार)

श्रीभगवान् राम का जन्म (अवतार) चैत्र शुक्ल नवमी तिथि पुनर्वसु नक्षत्र मध्याह्न काल में हुआ था। शास्त्र वचनानुसार यदि दो दिन मध्याह्न हो या न हो तो भी परली ग्रहण करें। अष्टमी विद्धा नवमी का निषेध कहा गया है। अष्टमी युक्ता तो मध्याह्न एवं पुनर्वसु नक्षत्र युता भी छोड़ देनी चाहिए—

दिन द्वये मध्याह्न व्याप्तावव्याप्तौ वा परा ॥ अष्टमी विद्धाया निषेधात् ॥.....धर्म सिन्धु
ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार भी अष्टमी युक्ता नवमी का त्याग करके दशमी युक्त नवमी को ग्रहण करने की आज्ञा दी है—

नवमी चाष्टमी विद्धा त्याज्या रामपरायणैः।

उपोषणं नवम्यां तु दशम्यामेव पारणम् ॥ ब्रह्मवैवर्त पु.

संवत् २०६२ में नवमी तिथि का समावेश 17 अप्रैल एवं 18 अप्रैल दोनों दिनों में विद्यमान है, परन्तु 17 अप्रैल को नवमी अष्टमी संयुक्ता होने के कारण व्रतोपासना हेतु त्याज्य मानी जाएगी, 18 अप्रैल, सोमवार को नवमी दशमी युक्ता होने से व्रतोपासना आदि हेतु ग्राह्य होगी ॥

श्री परशुराम जयन्ती

श्रीपरशुराम का जन्म वैशाख शुक्ल तृतीया तिथि में रात्रि के प्रथम प्रहर में हुआ था—
इयमेव तृतीया परशुराम जयन्ती। इयं रात्रि प्रथम याम व्यापिनी ग्राह्या—धर्मसिन्धु ॥
प्रस्तुत वर्ष वैशाख शुक्ल तृतीया को रात्रि का प्रथम प्रहर 10 मई, मंगलवार की रात को 9

वज्रकर 16 मिनट से रात्रि का प्रथम प्रहर शुरू होगा, उस समय रोहिणी नक्षत्र और भी प्रशस्त होगा। व्रत के दिन प्रातः स्नानान्तर “मम ब्रह्मत्व प्राप्ति कामनया श्री परशुराम पूजनमहं करिष्ये ॥” यह संकल्प करके सूर्यास्त तक मौन रखें और सायंकाल को स्नानादि से शुद्ध होकर श्रीपरशुराम का पूजन करें तथा चन्द्रोदय होने पर अर्घ्य देने के पश्चात् एवं भोजनादि करने के पश्चात् रात्रिभर श्रीराम मन्त्र का जाप करें ॥

अक्षया तृतीया व्रत

वैशाख शुक्ल तृतीया तिथि को अक्षय तृतीया का व्रत, पर्व होता है। इस दिन दिए हुए दान और किए हुए स्नान, होम, जप आदि सभी कर्मों का फल अनन्तगुणा होता है। यह मध्याह्न व्यापिनी ग्राह्य होती है। यदि बुधवार को हो तो और भी महापुण्यप्रदा मानी जाती है।

वैशाख शुक्ल तृतीया एषा तु मध्याह्न-व्यापिनी ग्राह्या।

इयं रोहिणी वा सुगशिरे बुध योगे महापुण्या ॥ धर्मसिन्धु ॥

प्रस्तुत वर्ष अक्षय तृतीया २७/३३ (17/17 घं. मि.) तक, मध्याह्न-व्यापिनी, ता. 11 मई, बुधवार को होने से महापुण्य प्रदायिनी होगी। यद्यपि रोहिणी नक्षत्र का अभाव है, फिर भी बुधवार के योग से विशेष पुण्यप्रदा रहेगी।

रक्षा बन्धन (19 अग, शुक्रवार)

रक्षा बन्धन का पवित्र कार्य भद्रा शूय (रहित) अपराह्न काल में करने का शास्त्र विधान है—
भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा श्रावणी नृपतिं हन्ति ग्रामं हन्ति च फाल्गुनीति ॥
परन्तु आवश्यक परिस्थितिवश यदि भद्रा काल में ही रक्षा बन्धन आदि शुभ कार्य करना पड़े, तो शास्त्रकारों ने भद्रा मुख काल को छोड़ कर भद्रा पुच्छकाल में रक्षा बन्धनादि शुभ कार्य करने की आज्ञा दी है। भविष्य पुराणानुसार भद्रा के पुच्छकाल में किए गए कृत्य में सिद्धि एवं विजय प्राप्त होती है, जबकि भद्रा मुख में कार्य का नाश होता है—

“मुच्छे जगवहाः, मुखे कार्य विनाशाय.....”

विक्रमी संवत् २०६२ में रक्षा बन्धन का पर्व १९ अगस्त, शुक्रवार को पड़ता है तथा भद्रा दुपहर 1 बजकर 19 मिनट तक व्याप्त रहेगी। यदि सम्भव हो तो 1 बजकर 19 मिनट के बाद ही अपराह्न काल में रक्षाबन्धन का शुभ कार्य करना प्रशस्त होगा, परन्तु यदि परिस्थितिवश पहले आवश्यक हो तो प्रातः 9 बजकर 48 मिनट से 10 घं. 47 मिं. तक-भद्रा पुच्छ काल में यह शुभ-कार्य किया जा सकता है तथा प्रातः 10:48 से लेकर दुपहर 12 बजकर 29 मिनट तक-भद्रा मुखकाल का (रक्षा बन्धन आदि कृत्य में) त्याग करें। प्रातः 9:48 से 10:47 तक की अवधि का समय अपेक्षाकृत शुभ एवं ग्राह्य रहेगा।

अपराह्नकाल दुपहर 1:49 से सायं 4:25 तक व्याप्त रहेगा।

रक्षा सूत्र (राखी) बान्धते समय निम्नलिखित मन्त्र पढ़ना चाहिए—

येन बद्धो बली राजा दानवैश्चो महाबलः। तेन त्वामनुबध्नासि रक्षे मा चल मा चल ।



श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत

सिद्धान्त रूप में भगवान श्री कृष्ण का जन्म भाद्रपद कृष्ण अष्टमी, बुधवार, रोहिणी नक्षत्र में, अर्ध रात्रि के समय वृष के चन्द्रमा कालीन हुआ माना जाता है। श्रीमद्भागवत, भविष्य, आर्नि आदि पुराणों में अधरात्रि-व्यापिनी अष्टमी, रोहिणी नक्षत्र एवं वृष राशिस्थ चन्द्रमा के मत को ही मान्यता दी है। भविष्य पुराण अनुसार—

“मासि भाद्रपदे अष्टम्यां कृष्ण पक्षेऽर्द्धरात्रके, वृष राशि स्थिते चन्द्रे नक्षत्रे रोहिणी युते।”
सिद्धान्त ग्रन्थ धर्म सिन्धु में भी पूर्व विद्धा (सप्तमी युता) अर्ध रात्रि कालीन भाद्र. अष्टमी को ग्रहण करने की आज्ञा दी है—

“कृष्ण जन्माष्टमीऽयं निशीथ व्यापिनी ग्राह्या। पूर्व दिन एव निशीथ योगे पूर्वा ॥ धर्मसिन्धु स्मार्त धर्मावलम्बी (जिसके अन्तर्गत प्रायः सभी धर्म परायेण गृहस्थी लोग आ जाते हैं) चन्द्रोदय व्यापिनी अर्द्धकालीन रहने वाली अष्टमी को भगवान कृष्ण जन्माष्टमी के व्रत, पूजन आदि के लिए श्रेष्ठ एवं ग्राह्य मानते हैं। धर्मसिन्धु अनुसार—

“स्मार्तानां गृहिणी पूर्वा पोष्या, वसिष्ठि निष्काम-वनस्थ विधवाभिः वैष्णवैश्च परे वो पोष्या।”
ऋषि व्यास, नारद आदि ऋषियों के मतानुसार सप्तमी युक्त अष्टमी ही व्रत, पूजन आदि हेतु ग्रहण करनी चाहिए—

कार्या विद्धाऽपि सप्तम्या रोहिणी सहिताष्टमी। तत्रोपवासं कुर्वीत तिथिमान्ते पारणाम् ॥ नारदः
वैष्णव विशेष सम्प्रदाय से जुड़े लोग उदय कालिक एवं नवमी संयुक्त कृष्ण जन्माष्टमी को मान्यता देते हैं। तिथिनिर्णय अनुसार—

“वैष्णवान्तु अर्धरात्रि व्यापिनीमापि रोहिणी युतामापि सप्तमी विद्धां पण्डित्य नवमी युतैव ग्राह्या ॥”
सम्बत २०६२ में २६ अगस्त, शुक्रवार को भाद्र. कृष्ण सप्तमी प्रातः केवल ८ बजकर ३२ मिनट तक है, तदुपरान्त अष्टमी अधरात्रि को व्याप्त होकर आगामी दिन २७ अग., शनिवार को प्रातः ९.१५ तक विद्यमान है।

शुक्रवार (२६ अग.) को अधरात्रि में अष्टमी के अतिरिक्त रात्रि ९.४० बजे के बाद रोहिणी नक्षत्र और वृष का चन्द्रमा भी रहेगा। इस प्रकार २६ अगस्त, शुक्रवार को श्री कृष्ण जन्माष्टमी के व्रत, उँठ नमो भगवते वासुदेवाय मन्त्र का जप, उपासना, अध्यय आदि का विशेष महालय रहेगा।

२७ अग. शनिवार को अधरात्रि को यद्यपि अष्टमी तिथि, एवं रोहिणी नक्षत्र का अभाव रहेगा। तथापि वैष्णव सम्प्रदाय से सम्बन्धित श्रद्धालु लोग नवमी विद्धा उदयकालिक अष्टमी को ग्रहण करेंगे।

दूर्वाष्टमी व्रत— भाद्र शुक्ल अष्टमी को सन्तान सुख एवं वंश वृद्धि की कामना से यह व्रत किया जाता है। धर्मसिन्धु अनुसार—

दूर्वाष्टमी व्रतं पुण्यं यः करोतीह मानवः। न तस्य क्षयमानोति सन्तानं साधनैरूपम्।
नन्दते वद्धते नित्यं यथा दूर्वा तथा कुलम् ॥ भाद्रशुक्लाष्टमी दूर्वाष्टमी सा च पूर्वा ग्राह्या ॥
परन्तु जिस किसी वर्ष में भाद्र शुक्लाष्टमी के समय कन्या का सूर्य (आश्विन मास) आ जाए अथवा अगस्त्य तारा का उदय हो जाए तो उस स्थिति में भाद्र शुक्ल अष्टमी की अपेक्षा भाद्र

कृष्णाष्टमी में इस व्रत का पालन करना चाहिए। यह पूर्वा विद्धा लेना चाहिए—

इदं दूर्वा पूजनं व्रतं कन्याऽर्केऽगस्त्योदये च वर्ज्यम्। धर्मसिन्धु
भाद्र शुक्लाष्टम्यां अगस्त्योदये भाविनी सति पूर्व कृष्णाष्टम्यामेव कुर्यात् = हेमाद्रि।
प्रस्तुत संवत्, २०६२ में यद्यपि भाद्र शुक्लाष्टमा ११ सितंबर को पड़ती है, परन्तु अगस्त्योदय ३ सितंबर को हो जाने से दूर्वाष्टमी का व्रतदि, उससे पूर्ववर्ती भाद्रकृष्ण की सप्तमी विद्धा अष्टमी अर्थात् २६ अगस्त, शुक्रवार को करना शुभ एवं शास्त्र सम्मत होगा।

“भीष्मपंचक व्रत”

सामान्यतः यह व्रत कार्तिक शुक्ल एकादशी से लेकर पूर्णिमा तक पाँच दिनों का व्रत/पर्व कहा जाता है। यदि किसी स्थिति में कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक की अवधि में किसी तिथि का क्षय हो जाने से एकाः से पूर्णिमा तक, दिनों की संख्या चार रह जाए तो उस स्थिति में दशमी विद्धा एकादशी से इस व्रत का प्रारम्भ करके पूर्णिमा तक पाँच दिनों तक भीष्म पंचको के व्रत-नियमादि का पालन करना चाहिए—

“एकादश्यादि दिन पंचके भीष्मपंचक व्रतमुक्तम्। तच्चा शुद्धैकादश्यामारभ्य चतुर्दश्याविजौदयिक-पौर्णमास्यां समापनीयम्। यदि शुद्धैकादश्यामारभ्यै क्षयवशेन पौर्णमास्यां पंचदिनात्मक व्रत समादि न घटते तदा विद्धैकादश्यामारभ्यः ॥” —धर्मसिन्धु
प्रस्तुत वर्ष सं० २०६२ में कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा का क्षय हो जाने से भीष्म पंचक (शुद्ध का० एकादशी से प्रारम्भ करने पर) की संख्या कवल चार दिन रह जाती है, इस स्थिति में दशमी विद्धा एकादशी, अर्थात् ११ नवंबर से भीष्मपंचक प्रारंभ करने से उनकी संख्या पाँच होगी। अतएव भीष्मपंचक ११ से १५ नवंबर तक ही शास्त्रसम्मत होगा।

तुलसी विवाह—

कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि से लेकर पूर्णिमा तक की तिथियों में विवाह नक्षत्र कालीन करने विधान हैं—
एकादश्यादि पूर्णिमान्ते यत्र क्वापि दिने कार्तिकशुक्लान्तर्गत विवाहनक्षत्रेषु वा....धर्मसिन्धु।
कुछ लोग कार्तिक शुक्ल एकादशी को यह पर्व करना शुभ मानते हैं—कार्तिक शुक्लैकादश्यां क्वचिदुक्तः—धर्म सिन्धु परन्तु कार्तिक की द्वादशी तिथि और रेवती नक्षत्र दोनों का संयोग हो, तो विशेष शुभ एवं प्रशस्त माना जाता है और जो द्वादशी एवं रेवती दोनों का योग रात्रि में न हो, तो दिन में ही द्वादशी एवं रेवती काल में करें—

“तत्रापि द्वादश्या रेवत्यन्तप्रादयो रात्रि प्रथमभागे प्रशस्तः, तदभावे रात्रौ रेवती नक्षत्र मात्र योगेऽपि ॥ द्वादशीस्वत्योरूपयोगे रात्रावभावे दिवैव द्वादशी मध्ये कार्यइति कौस्तुभे ॥” धर्मसिन्धु
वि. संवत् २०६२ में कार्तिक शुक्ल द्वादशी, १३ नवम्बर, रविवार की प्रातः १० बजकर २६ मिनट तक है, जबकि रेवती नक्षत्र अधरात्रि २ बजकर १ मिनट तक व्याप्त है। प्रातः १० बजकर २५ मिनट तक द्वादशी एवं रेवती नक्षत्र, दोनों का योग होने से, इस समय तक की अवधि श्रेष्ठ रहेगी। रात्रिकाल में द्वादशी तिथि का अभाव होने पर भी केवल रेवती नक्षत्र एवं त्रयोदशी तिथि काल में भी यह पवित्र कार्य किया जा सकता है।

विशेष—कार्तिक मास में तुलसी विवाह अर्थात् तुलसी माता का विधिपूर्वक विवाह करने से जातक/जातिका के विवाह सम्बन्धी बाधाएँ दूर हो जाती हैं, ऐसे माना जाता है।

'करवाचौथ' (20 अक्टूबर, 2005 ई.) को मुख्य नगरों का चन्द्रोदयकाल

भारतीय स्त्रियों के लिए 'करवाचौथ' का व्रत अखण्ड सुहाग को देने वाला माना जाता है। विवाहित स्त्रियाँ इस दिन अपने पति की दीर्घ आयु एवं स्वास्थ्य की मंगलकामना करके भागवान रजनीश (चन्द्रमा) को अर्घ्य अर्पित कर व्रत को पूर्ण करती हैं। क्योंकि 'पंचांगदिव्यकार' के पाठक सम्पूर्ण भारत में हैं। तथा ग्रहस्पष्ट तथा पक्ष वाले पृष्ठों पर केवल जालन्धर के चन्द्रोदयास्त दिए रहते हैं। 'पंचांगदिव्यकार' के पाठकों के लिए भारत के प्रमुख नगरों के करवाचौथ (20 अक्टूबर, 2005 ई.) के दिन का चन्द्रोदय दे रहे हैं। ध्यान रहे, यह समय पूर्ण चन्द्रमा के विषय का है अर्थात् चन्द्रोदय के 2-3 मिनट बाद पूर्ण चन्द्रमा होने पर ही अर्घ्य देना चाहिए।

| नगर | चन्द्रोदय घं. मि. | नगर | चन्द्रोदय घं. मि. | नगर | चन्द्रोदय घं. मि. |
|------------------|-------------------|-------------------|-------------------|--------------------|-------------------|
| अमृतसर | 19-43 | चण्डीगढ़ | 19-37 | फिरोजपुर | 19-44 |
| अम्बाला | 19-39 | चम्बा (हि.प्र.) | 19-34 | फाजिल्का | 19-50 |
| अर्को (हि.प्र.) | 19-35 | चेन्नई | 20-05 | फरीदाबाद | 19-42 |
| अहमदाबाद | 20-16 | जम्मू | 19-38 | बटाला | 19-39 |
| आगरा | 19-43 | जयपुर | 19-52 | देगलौर | 20-16 |
| इलाहाबाद | 19-30 | जालन्धर | 19-43 | विलासपुर (हि.प्र.) | 19-36 |
| इटावा (उ.प्र.) | 19-39 | जीन्द (ह.) | 19-44 | भटिण्डा | 19-46 |
| इन्दौर | 20-04 | जोधपुर | 19-42 | मण्डी (हि.प्र.) | 19-32 |
| उज्जैन | 20-04 | दार्जिलिंग | 19-30 | मलेरकोटला | 19-41 |
| उधमपुर (का.) | 19-37 | देहरादून | 19-41 | मुम्बई | 20-23 |
| उना (हि.प्र.) | 19-38 | धर्मशाला | 19-35 | भेट | 19-38 |
| कठुआ (का.) | 19-38 | धुरी (पं.) | 19-43 | मोगा | 19-42 |
| कपूरथला (पं.) | 19-41 | नगपुर | 19-56 | मुक्तसर | 19-48 |
| करतापुर | 19-41 | नाभा | 19-42 | मोहाली | 19-36 |
| कलकत्ता | 19-10 | नारनौल | 19-47 | रामपुरवृहत्तर | 19-33 |
| कांगड़ा | 19-35 | नालागढ़ (हि.प्र.) | 19-36 | रिवाड़ी (ह.) | 19-45 |
| कालका (ह.) | 19-35 | नाहन (हि.प्र.) | 19-35 | रोपड़ (पं.) | 19-37 |
| किफ्तवाड़ (का.) | 19-34 | नैनीताल | 19-31 | रोहतक | 19-42 |
| कुराली (पं.) | 19-37 | पंचकूला | 19-36 | लखनऊ | 19-31 |
| कुरुक्षेत्र | 19-39 | पटना | 19-16 | लुधियाना | 19-40 |
| कुरुलू | 19-32 | पटियाला | 19-40 | शिमला | 19-35 |
| कैथल | 19-40 | पटानकोट | 19-37 | श्रीनगर | 19-36 |
| कोटखाई (हि.प्र.) | 19-33 | पिहोवा | 19-40 | संगरूर | 19-42 |
| खन्ना | 19-38 | पानीपत | 19-41 | सहारनपुर | 19-36 |
| गाजियाबाद | 19-39 | पालमपुर | 19-34 | सोलेन (हि.प्र.) | 19-34 |
| गुडगाँव | 19-44 | पुंछ (का.) | 19-34 | हमीरपुर (हि.प्र.) | 19-34 |
| गुरदासपुर | 19-38 | फगवाड़ा | 19-40 | हरिद्वार | 19-33 |
| गुवाहाटी | 18-48 | फरीदकोट | 19-44 | हैदराबाद | 20-03 |
| | | | | होशियारपुर | 19-38 |

श्रीमहालक्ष्मी पूजन (दीपावली)

(1 नवम्बर, 2005 ई., मंगलवार) (दीपावली में ग्राह्य विशेष प्रशस्त पुण्यकाल)

श्रीमहालक्ष्मी पूजन एवं दीपावली का महापर्व कार्तिक कृष्ण पक्ष की अमावस में प्रदोष काल एवं अर्धरात्रि व्यापिनी हो, तो विशेष रूप से शुभ होती है।

कार्तिकेय्यासिते पक्षे लक्ष्मीर्निद्रां विमुञ्चति।

स च दीपावली प्रोक्ताः सर्वकल्याणरूपिणि—ज्योतिर्निवन्ध

कार्तिके प्रदोषे तु विशेषेण अमावस्या निशवर्धक।

तस्यां सम्पूज्येत् देवीं भोगमोक्ष प्रदायिनीम्॥ भविष्य पु.



प्रस्तुत वर्ष 1 नवम्बर, 2005 ई. मंगलवार को दीपावली स्वाती नक्षत्र, प्रीति योग कालीन प्रदोष एवं अर्धरात्रि व्यापिनी अमावस्या युक्त होने से विशेषतः प्रशस्त एवं शलाघ्य रहेगी। मंगलवार की दीवाली मन्त्र-जाप, सिद्धि एवं तान्त्रिक प्रयोगों के लिए विशेष रूप से ग्राह्य मानी जाती है। दीपावली में स्वाती नक्षत्र, अमावस तिथि, प्रदोष काल, निशीथ काल एवं महानिशीथकाल विशेष महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं।

प्रदोषकाल—स्थानिक सूर्यास्त से अर्थात् सायं 5 बजकर, 36 मिनट से रात्रि 8 बजकर 14 मिनट तक रहेगा। इसमें भी स्थिर लग्न (वृष) सायं 6.23 से रात 8.17 तक रहेगा तथा लाभ की चौघड़िया सायं 7.15 से 8.54 बजे तक तथा गुरु की होरा 7.47 से 8.47 तक होगी।

इस प्रकार सायं 7.47 से रात 8.47 बजे तक का समय श्री गणेश, महालक्ष्मी पूजन, पंचदेव नवग्रह, कुबेर आदि पूजन, यही खातों (बसना) का पूजन, मन्त्र-जाप, पाठ, दीपदान, ब्राह्मण भोजन, अनाज, वस्त्र, मिष्ठान, धनादि का दान, व्यवसायिक व अन्य सांसारिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ रहेगा।

निशीथ काल—रात्रि 8 बजकर 14 मिनट से लेकर रात्रि 10.52 तक निशीथ काल रहेगा। इस काल के दौरान मंगल एवं सूर्य को होराएँ होंगी। अधिकांशतः मिथुन लग्न व्याप्त रहेगा। इस अवधि के मध्य भी श्रीमहालक्ष्मी पूजन, कुबेर पूजा, काम्य अनुष्ठान, मन्त्र-जाप, यथाशक्ति वस्त्र, अनाज, फलों आदि का दान करना चाहिए।

महानिशीथ काल—रात्रि 10.52 बजे से लेकर अर्द्ध-रात्रि 1 बजकर, 30 मिनट तक की अवधि में महानिशीथ काल मन्त्रोपासना, विशेषकर अनुष्ठान, ध्यान, समाधि, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र मिश्रित आदि क्रियाओं के लिए विशेष प्रशस्त रहेगा। इस बीच में रात्रि 10.33 बजे से रात 12 बजकर, 12 मिनट तक क्रमशः शुभ तदुपान रात्रि 1.52 तक अमृत की चौघड़िया रहेगी। रात्रि 12.54 से रात 3.15 तक की अवधि में स्थिर लग्न (मिह) तथा रात 12.47 से 1.47 के बीच चन्द्रमा की शुभ होरा रहेगी। यह समयावधि मन्त्र-अनुष्ठान, जाप, ध्यान आदि कृत्यों के लिए श्रेष्ठ रहेगी।

ज्ञातव्य रहे कि मंगलवासरी दीपावली सप्ता-वर्ग के लिए शुभ नहीं मानी जाती। शासक वर्ग एवं राजनेताओं के लिए इसका फल शुभ नहीं रहेगा। राजनेताओं में परस्पर टकराव, विरोध हो, कहीं हिंसक घटनाएँ, जनदोलन एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित हों। कार्तिक पक्ष के ही शुक्ल पक्ष तेरह दिन का होने का फल भी शुभ नहीं होगा। उपभाष्य वस्तुओं की कीमतों में अत्यधिक मूल्य-वृद्धि के कारण लोगों में असन्तोष की भावना रहे। अनाज भी महंगा हो, व्यापारी वर्ग को अपेक्षाकृत लाभ कम मिले, विशिष्ट वर्ग के कृपकों को समुचित लाभ प्राप्त हो—

“मंगलवारी पड़े दिवाली, हँसे किसान रोवे व्यापारी”

नव सम्बत्सर का फल और माहात्म्य

भारत की गौरवमयी सभ्यता एवं संस्कृति में सम्बत्सर का विशेष महत्त्व है। हिन्दुओं के प्रायः सभी शुभ संस्कारों (विवाह-मुण्डनादि) एवं मन्त्र-जपादि अनुष्ठानों में संकल्पादि के समय सम्बत् के नाम का प्रयोग प्रमुखता से लिया जाता है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवीन सम्बत् का प्रारम्भ होता है। सत्ययुग का आरम्भ भी इसी दिन हुआ माना जाता है तथा ब्रह्मा जी ने सृष्टि का आरम्भ भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को किया था। "चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा संसर्ज प्रथमेऽहनि शुक्ल पक्षे समग्रे तु तदा सूर्योदये सति॥ (ब्रह्मपुराण)।" सम्बत्तः इसी कारण इसे स्वयं सिद्ध मुहूर्त माना जाता है। इस दिन किए गए जप-दानादि शुभ कर्मों के प्रभाव से वर्ष भर धन-सम्पदा एवं सुख-शान्ति बनी रहती है।

नव सम्बत्सर के आगमन पर प्रातः तैलाम्बंग, नित्य कर्मों से निपटकर आसन, पाद, अर्घ्य, वस्त्र, यज्ञोपवीत, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप-दीप, ताम्बूल, नैवेद्य, फल, आदि से सम्बत्सर पूजन एवं फल श्रवणादि, नवरात्र घट-स्थापन, मिट्टी के पात्र में रखी रेत-मिट्टी में जौं-गेहूँ आदि के बीज बोना, ओंकार सहित श्री गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, शिव एवं श्री दुर्गा-इन पंचदेवों तथा नवग्रहों की स्वयं अथवा किसी सुयोग्य ब्राह्मणों द्वारा पूजाार्चना करवा कर उन्हें क्षीर सहित सात्विक भोजन करवाकर उनका 'पंचांगदिव्यकर', सहित यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, फल एवं धानादि देकर सत्कार करना चाहिए।

पूजन के समय भगवान् ब्रह्मा एवं विष्णु की मूर्तियों के समक्ष पुष्पाक्षत, नैवेद्य, अर्घ्य गंगा जल आदि लेकर निम्न मन्त्र पढ़ें—

ॐ ब्रह्मणे नमः से ब्रह्मा जी का आवाहन तथा बहुरूपाय विष्णवे परमात्मने नमः परमात्म-विष्णुमावाहयामि स्थापयामि च। इस प्रकार अन्य देवताओं की भी (यथा समय) प्रार्थना मन्त्र पढ़ें—

“भगवंतस्त्वत्प्रसादेन वर्षं क्षेममिहास्तु मे। संवत्सरोपसर्गा मे विलयं यान्त्वशेषतः।”

ॐ सम्बत्सराय नमः; चैत्राय नमः; वसन्ताय नमः। आदि नाम-मन्त्रों से पूजन करके विद्वान् ब्राह्मण का अर्चन करें। तथा क्षीर सहित भोजन करवाकर यथाशक्ति वस्त्र, फलों आदि का दान करें। संवत्सर की मूर्ति बनाकर उसकी “चैत्राय नमः; वसन्ताय नमः” आदि से भी पूजा करनी चाहिए।

तदुपरान्त स्वास्ती वाचन, शान्ति पाठ आदि मांगलिक मन्त्रों का पाठ करने के पश्चात् सूर्य देव को ताम्र बर्तन से मन्त्र-पूर्वक तीन बार अर्घ्य देकर गायत्री मन्त्र का जाप करना चाहिए। तत्पश्चात् दिवाकर पंचांग में किसी ब्राह्मण के श्री मुख से सम्बत्त का नाम, सम्बत्त का वास, सवारी राजा, मन्त्री आदि का फल श्रवण करना चाहिए चैत्र, प्रतिपदा से लेकर नवमी तक भगवान्-विष्णु, शिव एवं श्री दुर्गा के समक्ष नित्य ज्योति जलाकर श्रद्धानुसार श्री दुर्गासप्तशती का जप पाठ करने का विधान है।

चैत्र प्रतिपदा से नवमी तक प्रतिदिन प्रातः कटु नीम की कोमल पत्तियाँ व पुष्पों का चूर्ण बनाकर, उसमें काली मिर्च, हींग, सेंधा नमक, ईमली, अजवायन, जीरा तथा शक्कर या चीनी बराबर मात्रा में मिलाकर घूर्ण बनाकर भगवान् को भोग लगाकर ग्रहण करने से वर्षभर आरोग्यता बनी रहती है तथा रक्त विकार, त्वचा, कुष्ठ आदि रोगों का भय नहीं रहता॥

संवत् २०६२ में त्रयोदशी (१३) दिनात्मक पक्ष का फल

विक्रमी संवत् २०६२ में तिथियों की प्रत्यक्षगणित की गणना के कारण कार्तिक शुक्ल पक्ष (२ नवंबर से १५ नवंबर, २००५ ई.) के मध्य तेरह दिन का पक्ष आ रहा है। इसका फल अशुभ माना गया है।

सामान्यतः सूर्य और चन्द्रमा की स्पष्ट गणित प्रक्रिया के कारण भारतीय पंचांगों में कृष्ण अथवा शुक्ल पक्षों के अन्तर्गत प्रतिवर्ष पक्ष के दिन १४, १५ अथवा १६ दिन आ जाते हैं— अर्थात् पक्ष में कोई तिथि क्षय हो जाने की स्थिति में १४ दिन, तिथि वृद्धि होने पर १६ दिन तथा तिथि क्षय या वृद्धि न होने की स्थिति में १५ दिन ही होते हैं। कई बार चन्द्र और सूर्य की स्पष्ट गणित प्रक्रिया के कारण किसी पक्ष में दो बार तिथि का क्षय हो जाने से १३ दिन का पक्ष भी आ जाता है। इसको विश्वघघ्न पक्ष भी कहते हैं। महाभारत में भी तेरह दिन के पक्ष के अशुभत्व के सम्बन्ध में वर्णन मिलता है। अन्य शास्त्रकारों ने भी त्रयोदश दिनात्मक पक्ष के अशुभत्व के विषय में अनेकत्र प्रमाण मिलते हैं, यथा—

अनेक युग साहस्र्यां दैवयोगात् प्रजायते। त्रयोदश दिने पक्षः तदा संहरते जगत्॥

अर्थात् कई एक युगों में प्रजा का नाश करने के निमित्त तेरह दिन का पक्ष आता है, अर्थात् जिस पक्ष में तेरह दिन हों, वह पक्ष लोगों में दिल्ष्ट रोग उत्पादक, महँगाई, विग्रह, उपद्रव एवं हिंसा आदि अशुभ फलकारक होता है। समाज में सर्वत्र अशान्ति का वातावरण फैलता है। अन्यत्र भी इसके सम्बन्ध में अशुभ फल कहे गए हैं—

यदा च जायते पक्षत्रयोदश दिनात्मकः।

भवेल्लोक क्षयो-घोरो रूपमुण्डमाला युतामही।

त्रयोदश दिनः पक्षस्तदा संहरते जगत्।

अपि वर्ष सहस्रेण कालयोगः प्रकीर्तितः॥

इस त्रयोदश दिनात्मक पक्ष के पभावस्वरूप भारत की राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ अस्थिर होंगी। राजनीतिक पार्टियों के मध्य विग्रह, टकराव एवं बिखराव पैदा होंगे। कहीं तोड़-फोड़, हिंसा, विस्फोटक घटनाएँ एवं छत्रभंग की आशंका होगी। कहीं भूस्खलन, दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक प्रकोप घटित होंगे। दैनिक उपभोग्य की वस्तुओं में जबरदस्त तेजी होने के योग्य बनेंगे। तेरह दिन के पक्ष में शास्त्र में विवाह, मुण्डन, गृह प्रवेश, उपनयन आदि शुभ कार्यों का निषेध माना गया है। ज्योतिर्निबन्धानुसार—

उपनयनं परिणयनं त्वेशमारम्भादि कर्माणि।

यात्रा द्क्षिणपक्षे कुर्यात् न जिजीविषु पुरुषः॥

इसी कारण शास्त्र वचनानुसार संवत् २०६२ के अन्तर्गत कार्तिक शुक्ल पक्ष तेरह दिन का होने से विवाह, मुण्डन, गृह-प्रवेश, विपणि आदि शुभ मुहूर्त नहीं लगाए गए हैं।

सन 2005 ई. (ता. 9 से 24 अप्रैल तक)

सूर्य उत्तरायणे, उत्तरगोल, बसन्त-ग्रीष्म ऋतु,

| सन् २००५ ई. (ता. ९ से २४ अप्रैल तक) | | | | भा. स्टैं. टा. जालस्थर | | | |
|---|--|--|--|------------------------|--------|-------|-----------------------------|
| सूर्य उत्तरायणे, उत्तर गोल, बसन्त - ग्रीष्म ऋतु | | | | दै. | सू. अ. | स. क. | ख. वि. स. वि. घ. मि. घ. मि. |
| ग्रह लोपदर्शन - प्रातः मंगल, बुध पूर्व में दृश्य, सायं शनि या म्यांत्तरवृत्त तथा गुरु पूर्व में दृश्य, शुक्र भी ता. २४ अप्रे. से उदित होगा। | | | | ११ २५ | २० | २३ | ६ ११ १८ ४९ |
| चैत्र नवरात्र प्रा., विलम्ब नीमा संवत्सर प्रारम्भ, पंचक समाप्त A चन्द्रदर्शन म. १५, शुक्र अश्वि. १ मेष में ५५/४५, गंडमूल गणगौरी तीज, मतस्य जयंती, शिवशक्ति पूजा, रवि उल्लासल १ म. भद्रा १७/१३ से ४८/१३ तक, बुध भागी १८/००. स. सि. योगः सूर्य अश्वि. १ मेष में ४५/०८, वैशाख संक्रांति ३० म. मंगल B स्कन्द षष्ठी B धनि १ में ३३/००, लक्ष्मी ५, शुक्रोदय पश्चिमे २४ अप्रैल | | | | ११ २६ | १९ | १५ | ६ ०९ १८ ४९ |
| भद्रा २०/२३ से ३५/२१ तक | | | | ११ २७ | १८ | ०८ | ६ ०८ १८ ५० |
| श्रीदुर्गाष्टमी, भवायुत्पत्ति, ये. चिंतपूर्णी-कांगडा, बाहूपोर्ट-जम्मु श्री रामनवमी, नवरात्रे समाप्त, गण्डमूल भद्रा २५/१३ से प्रा., सूर्य सायन वृष में २९/०८, ग्रीष्म ऋतु प्रारंभ भद्रा २३/२० तक, कामदा एकादशी व्रतम् प्रदोष व्रत, शुक्र भागी में ४४/४८, शक वैशाख प्रा., अमास्यास्त श्रीमहावीर जयंती, मंगल कुम्भ में ४४/२५, अनांग १३ भद्रा २६/१८ से ५५/१३ तक | | | | ११ २८ | १६ | ५९ | ६ ०७ १८ ५१ |
| चैत्र पूर्णिमा, वैशाख स्नान प्रारंभ, श्री हनुमान जयंती C | | | | ११ २९ | १५ | ४७ | ६ ०६ १८ ५१ |
| भद्रा २९/२३ से ३५/२१ तक | | | | ०१ ०० | १४ | ३३ | ६ ०५ १८ ५२ |
| श्रीदुर्गाष्टमी, भवायुत्पत्ति, ये. चिंतपूर्णी-कांगडा, बाहूपोर्ट-जम्मु श्री रामनवमी, नवरात्रे समाप्त, गण्डमूल भद्रा २५/१३ से प्रा., सूर्य सायन वृष में २९/०८, ग्रीष्म ऋतु प्रारंभ भद्रा २३/२० तक, कामदा एकादशी व्रतम् प्रदोष व्रत, शुक्र भागी में ४४/४८, शक वैशाख प्रा., अमास्यास्त श्रीमहावीर जयंती, मंगल कुम्भ में ४४/२५, अनांग १३ भद्रा २६/१८ से ५५/१३ तक | | | | ०१ ०१ | १३ | १७ | ६ ०४ १८ ५३ |
| चैत्र पूर्णिमा, वैशाख स्नान प्रारंभ, श्री हनुमान जयंती C | | | | ०१ ०२ | ११ | ५८ | ६ ०३ १८ ५४ |
| भद्रा २९/२३ से ३५/२१ तक | | | | ०१ ०३ | १० | ३५ | ६ ०१ १८ ५४ |
| श्रीदुर्गाष्टमी, भवायुत्पत्ति, ये. चिंतपूर्णी-कांगडा, बाहूपोर्ट-जम्मु श्री रामनवमी, नवरात्रे समाप्त, गण्डमूल भद्रा २५/१३ से प्रा., सूर्य सायन वृष में २९/०८, ग्रीष्म ऋतु प्रारंभ भद्रा २३/२० तक, कामदा एकादशी व्रतम् प्रदोष व्रत, शुक्र भागी में ४४/४८, शक वैशाख प्रा., अमास्यास्त श्रीमहावीर जयंती, मंगल कुम्भ में ४४/२५, अनांग १३ भद्रा २६/१८ से ५५/१३ तक | | | | ०१ ०४ | ०९ | १२ | ६ ०० १८ ५६ |
| चैत्र पूर्णिमा, वैशाख स्नान प्रारंभ, श्री हनुमान जयंती C | | | | ०१ ०५ | ०७ | ४७ | ५ ५९ १८ ५७ |
| भद्रा २९/२३ से ३५/२१ तक | | | | ०१ ०६ | ०६ | १८ | ५ ५८ १८ ५८ |
| श्रीदुर्गाष्टमी, भवायुत्पत्ति, ये. चिंतपूर्णी-कांगडा, बाहूपोर्ट-जम्मु श्री रामनवमी, नवरात्रे समाप्त, गण्डमूल भद्रा २५/१३ से प्रा., सूर्य सायन वृष में २९/०८, ग्रीष्म ऋतु प्रारंभ भद्रा २३/२० तक, कामदा एकादशी व्रतम् प्रदोष व्रत, शुक्र भागी में ४४/४८, शक वैशाख प्रा., अमास्यास्त श्रीमहावीर जयंती, मंगल कुम्भ में ४४/२५, अनांग १३ भद्रा २६/१८ से ५५/१३ तक | | | | ०१ ०७ | ०४ | ४९ | ५ ५७ १८ ५९ |
| चैत्र पूर्णिमा, वैशाख स्नान प्रारंभ, श्री हनुमान जयंती C | | | | ०१ ०८ | ०३ | १७ | ५ ५६ १८ ५९ |
| भद्रा २९/२३ से ३५/२१ तक | | | | ०१ ०९ | ०१ | ४३ | ५ ५५ १८ ५९ |
| श्रीदुर्गाष्टमी, भवायुत्पत्ति, ये. चिंतपूर्णी-कांगडा, बाहूपोर्ट-जम्मु श्री रामनवमी, नवरात्रे समाप्त, गण्डमूल भद्रा २५/१३ से प्रा., सूर्य सायन वृष में २९/०८, ग्रीष्म ऋतु प्रारंभ भद्रा २३/२० तक, कामदा एकादशी व्रतम् प्रदोष व्रत, शुक्र भागी में ४४/४८, शक वैशाख प्रा., अमास्यास्त श्रीमहावीर जयंती, मंगल कुम्भ में ४४/२५, अनांग १३ भद्रा २६/१८ से ५५/१३ तक | | | | ०१ १० | ०० | ०८ | ५ ५४ १९ ०० |

३३/४३ १५ २० ३० ४५ ५५ ६५ ७५ ८५ ९५ १०५ ११५ १२५ १३५ १४५ १५५ १६५ १७५ १८५ १९५ २०५ २१५ २२५ २३५ २४५ २५५ २६५ २७५ २८५ २९५ ३०५ ३१५ ३२५ ३३५ ३४५ ३५५ ३६५ ३७५ ३८५ ३९५ ४०५ ४१५ ४२५ ४३५ ४४५ ४५५ ४६५ ४७५ ४८५ ४९५ ५०५ ५१५ ५२५ ५३५ ५४५ ५५५ ५६५ ५७५ ५८५ ५९५ ६०५ ६१५ ६२५ ६३५ ६४५ ६५५ ६६५ ६७५ ६८५ ६९५ ७०५ ७१५ ७२५ ७३५ ७४५ ७५५ ७६५ ७७५ ७८५ ७९५ ८०५ ८१५ ८२५ ८३५ ८४५ ८५५ ८६५ ८७५ ८८५ ८९५ ९०५ ९१५ ९२५ ९३५ ९४५ ९५५ ९६५ ९७५ ९८५ ९९५ १००५

रवौ पर्णिमायां ग्रह स्याट प्रातः ५/३० वजे, २४ अप्रैल

| कुं. अष्टमि, प्रातः 5.30 | | | | | कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30 | | | | |
|--------------------------|-------------|-----|------------|---------|----------------------------|-------------|-----|------------|---------|
| सू. | चं. मं. बु. | गु. | श. रा. के. | बु. रा. | सू. | चं. मं. बु. | गु. | श. रा. के. | बु. रा. |
| ०३ | ०३ | ०७ | १८ | १८ | २ | १ | १२ | ११ | ५ |
| ०१ | २४ | १४ | २८ | ४६ | ३ | १ | १२ | २७ | २८ |
| ०१ | ५४ | १२ | २० | ५९ | ४ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ५८ | ७१ | ४३ | ७ | ७४ | ५ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ४० | ५ | ३२ | ११ | ४९ | ६ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ७ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ८ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ९ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | १० | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ११ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | १२ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | १३ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | १४ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | १५ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | १६ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | १७ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | १८ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | १९ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | २० | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | २१ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | २२ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | २३ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | २४ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | २५ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | २६ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | २७ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | २८ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | २९ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ३० | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ३१ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ३२ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ३३ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ३४ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ३५ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ३६ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ३७ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ३८ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ३९ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ४० | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ४१ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ४२ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ४३ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ४४ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ४५ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ४६ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ४७ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ४८ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ४९ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ५० | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ५१ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ५२ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ५३ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ५४ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ५५ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ५६ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ५७ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ५८ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ५९ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ६० | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ६१ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ६२ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ६३ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ६४ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ६५ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ६६ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ६७ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ६८ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ६९ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ७० | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ७१ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ७२ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ७३ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ७४ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ७५ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ७६ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ७७ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ७८ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ७९ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ८० | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ८१ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ८२ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ८३ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ८४ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ८५ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ८६ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ८७ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ८८ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ८९ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ९० | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ९१ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ९२ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ९३ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ९४ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ९५ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ९६ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ९७ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ९८ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | ९९ | १ | १२ | २८ | २८ |
| ११ | १ | २ | ३ | ४ | १०० | १ | १२ | २८ | २८ |

विशेष वर्ग के

आगामा वर्ष साधारण लोगों का सरकार नाताया क कारण आस्थिरता के कारण परेशान रहें। लोगों में भोग-विलास व प्रदुषण फैलने से अनाज की आपूर्ति कम हो जायेगी।
वैमनस्य रहे। अधिकांश लोग रोग, शोक, बेईयानी, महंगाई एवं आर्थिक अस्थिरता के कारण पशु-चार, दूध आदि के भावों में घटा-बढ़ी के बादशाह बर्दी के बादावाला लोकात्मक कार्य करने को लाभप्रद मानते हैं।
३० मुहुर्त्त बुधवार को है। जिससे गेहूं उड़द, धान्य, अरहर, मूंग, चने, खल्ल, बिनीले, पशु-चार, दूध आदि के भावों में घटा-बढ़ी के बादशाह बर्दी के बादावाला लोकात्मक कार्य करने को लाभप्रद मानते हैं।
धान्य आदि में तेजीकारक होगा। राशिफल--वैशाख संक्रांति मेघ, वृष, कर्क, सिंह, तुला, बृश्चिक, मकर व मीन राशि वालों को लाभदायी होगी।
की प्रातः सूर्योदय से होगा। चैत्र मास में ५ शनिवार एवं ५ रविवार होने से किस्र्व में कहली उपद्रव, आंतकवादी व हिंसा की घटनाएँ होंगी।
में असतोष व्यक्त हो। आकाश लक्षण--पक्ष के पूर्वार्द्ध भाग में हि.प्र., हरियाणा, पंजाब, ज. का. के उत्तरी क्षेत्रों में तेज़ हवाओं के साथ

चैत्र शुक्ल पक्षफल-

प्रतिपदा से बार्हस्पत्यमानानुसार "विलम्ब" नाम का नया सम्बत्सर २०६२ प्रारम्भ होगा। अतः वर्ष के अन्त तक संस्था-संकल्पदि शुभ कार्यों में इसी नाम का प्रयोग रहेगा। सम्बत् का राजा शनि तथा मन्त्री बुध है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण-मुख द्वारा नवसम्बत्सर का नाम, वास-संवारी आदि का फल-श्रवण, पूजन, कलाश स्थापन करवा कर उस पर देवी की मूर्ति स्थापित करें। तदनन्तर श्री दुर्गा-सप्तशती का पाठ करने का विधान है। प्रतिपदा से नवमी तक पाठ/पूजा के समय प्रतिदिन घृत का दीपक भी जलाना चाहिए। सम्बत्सर राजा-मन्त्री आदि के प्रभावस्वरूप साधारणों की वृद्धि होगी। प्रशासकों व राजनीतिज्ञों के मध्य विरोध एवं अनुरोध की प्रवृत्ति बढ़े। व्यापारिक रुख-ता. 13 अप्रैल को मेघ संक्रांति तेजेगी। ता. 22 से कुम्भ राशि का मंगल भी सर्व प्रकार के अनाज, दाल, सब्जी, फल, पौधा, लकड़ी, धातु, इत्यादि का मूल्य बढ़ेगा। 14 अप्रैल आयक रहेगी। मेघ संक्रांति के स्नानदान आदि का पुण्यकाल 14 अप्रैल का भाग्यशायक वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि होने से सामान्य लोगों के लिए खर्च वर्षा के योग्य है।

सन 2005 ई. (ता. 9 से 23 मई तक)

सूर्य उत्तरायणे, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु

[illegible]

मोटे घाया-स्मृतियों में विशिष्ट तन्त्रत्रय एवं चन्द्रदिशों के संसार आगामी पृष्ठों पर देखें।

वर्तमान अक्षांश ग्रेड स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे 16 मई

चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, २३ मई

| सू. | चं. मं. | उ. | गु. | श. | रा. | के. | कुं. अष्टमी प्रातः 5.30 | सू. चं. मं. | उ. | गु. | श. | रा. | के. | कुं. पूर्णिमाचां प्रातः 5.30 |
|-----|---------|----|-----|----|-----|-----|-------------------------|-------------|----|-----|----|-----|-----|------------------------------|
| १ | ३ | १० | ५ | १ | २ | ११ | १ | ५ | ५ | ५ | २ | ११ | ५ | १ |
| २ | ७ | १६ | १२ | १५ | १३ | २१ | २ | २४ | २७ | १५ | २१ | २४ | २६ | २ |
| ३ | १३ | २४ | ०३ | ३६ | ३३ | ०३ | ३ | ४१ | ४४ | १५ | ४१ | ४२ | ५२ | ४ |
| ४ | ०० | २० | ५२ | ५० | ४५ | १६ | ५ | ५३ | ५४ | ५१ | ५२ | ५४ | ५४ | ५ |
| ५ | ७७ | ४३ | ४० | ३ | ५ | ३ | ५१ | ४३ | ४४ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ५१ |
| ६ | २३ | ११ | १२ | २० | ११ | ११ | ५१ | ५३ | ५४ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५१ |
| ७ | २५ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ५१ | ५३ | ५४ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५१ |
| ८ | २५ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ५१ | ५३ | ५४ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५१ |
| ९ | २५ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ५१ | ५३ | ५४ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५१ |
| १० | २५ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ५१ | ५३ | ५४ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५१ |
| ११ | २५ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ५१ | ५३ | ५४ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५१ |
| १२ | २५ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ५१ | ५३ | ५४ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५१ |
| १३ | २५ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ५१ | ५३ | ५४ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५१ |
| १४ | २५ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ५१ | ५३ | ५४ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५१ |
| १५ | २५ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ५१ | ५३ | ५४ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५१ |
| १६ | २५ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ५१ | ५३ | ५४ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५१ |
| १७ | २५ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ५१ | ५३ | ५४ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५१ |
| १८ | २५ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ५१ | ५३ | ५४ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५१ |
| १९ | २५ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ५१ | ५३ | ५४ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५१ |
| २० | २५ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ५१ | ५३ | ५४ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५१ |
| २१ | २५ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ५१ | ५३ | ५४ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५१ |
| २२ | २५ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ५१ | ५३ | ५४ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५१ |
| २३ | २५ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ५१ | ५३ | ५४ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५१ |
| २४ | २५ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ५१ | ५३ | ५४ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५१ |
| २५ | २५ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ५१ | ५३ | ५४ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५१ |
| २६ | २५ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | | | | | | | | | |

करने से ऋण, रोग एवं शत्रुओं का भय नहीं रहता। ता. 20 को मोहिनी एकादशी, 21 मई को शनि प्रदोष, 22 मई को नृसिंह चादश एव 23 मई का बुद्ध पूर्णिमा को व्रत और भगवान् श्रीवाष्णु का पूजाचन करने से मनोवांछित फलों की प्राप्ति होती है। लोक भविष्य-ज्येष्ठ सक्रान्ति (14 मई) शनिवार को 30 मुहूर्त हैं। सूर्य-शुक्र के योग पर मंगल की दृष्टि होगी। राजनीतिक पार्टियों के बीच विराध एवं करने से मनोवांछित फलों की प्राप्ति होती है। लोक भविष्य-ज्येष्ठ सक्रान्ति (14 मई) शनिवार को 30 मुहूर्त हैं। सूर्य-शुक्र के योग पर मंगल की दृष्टि होगी। राजनीतिक पार्टियों के बीच विराध एवं करना से मनोवांछित फलों की प्राप्ति होती है। लोक भविष्य-ज्येष्ठ सक्रान्ति (14 मई) शनिवार को 30 मुहूर्त हैं। सूर्य-शुक्र के योग पर मंगल की दृष्टि होगी। राजनीतिक पार्टियों के बीच विराध एवं टकराव पैदा होगा। किसी प्रधानमन्त्री का पद रिक्त हो अथवा कैबिनेट मन्त्रीपडल में विरोध परिवर्तन हों—सौरश्चवारे रविसंकर्मरथे दुर्भिक्षामयाति च सर्वधान्यम्। पृथ्वीसरोगानपतेः प्रजासुभगेन्महायुद्धभयं तदानीम्॥ लोगों में रोग व शोक की वृद्धि तथा युद्धभय हो। बाजार का रुख—गेहूँ, उड़द, चने, काली मिर्च, खाद्य तेल, सोना, चांदी, कच्चा लोहा आदि धातुएँ भी तेज भाव होंगी। ज्येष्ठ संक्रां. का फल मेघ, वर्षा, कर्म, कन्या, तुला, बृश्चिक, कुम्भ राशि वाले जातकों को लाभदायक रहेगा। आकाश लक्षण—इस पक्ष में गर्मी का प्रकोप बढ़ जाएगा, पशुधन में कहीं तेज़ गर्म हवाओं के साथ बौछारें भी पड़ेगी।

शक्नुन—वै. शु. 3 को बैदा-बादी हो, तो अनाज का स्टॉक करने से चार मास बाद डेढ़ गुणा लाभ होगा।

सन 2005 ई. (ता. 24 मई से 6 जून तक)

सूर्य उत्तरायणी, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु

| दे. | सू. | सं. | च. | सूँदय | सूयत |
|------|-----|-----|-----|---------|---------|
| रा. | अ. | क. | वि. | घं. नि. | घं. नि. |
| १ ०९ | ०० | ०५ | ५ | ३३११९ | २० |
| १ ०९ | ५७ | ४२ | ५ | ३०११९ | २० |
| १ १० | ५५ | १७ | ५ | ३०११९ | २१ |
| १ ११ | ५२ | ५२ | ५ | २९११९ | २२ |
| १ १२ | ५० | २६ | ५ | २९११९ | २३ |
| १ १३ | ४७ | ५९ | ५ | २९११९ | २३ |
| १ १४ | ४५ | २९ | ५ | २९११९ | २४ |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १ १५ | ४३ | ०१ | ५ | २८११९ | २४ |
| १ १६ | ४० | ३१ | ५ | २८११९ | २४ |
| १ १७ | ३८ | ०० | ५ | २८११९ | २५ |
| १ १८ | ३५ | २९ | ५ | २७११९ | २५ |
| १ १९ | ३२ | ५८ | ५ | २७११९ | २६ |
| १ २० | ३० | २५ | ५ | २७११९ | २७ |
| १ २१ | २७ | ५३ | ५ | २७११९ | २७ |

ॐ पूजा, व्रत (अमावस पक्षे, राज.), स्नानदान, स. सि. योगः

चन्द्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे, 6 जून

| से. | चं. मं. | उ. गु. | श. रा. | के. | कुं. अष्टमी, श्रातः 5.30 | कुं. अमावस्या, श्रातः 5.30 |
|-----|---------|--------|--------|-----|--------------------------|----------------------------|
| १ | १०१० | १ | ५ | ५ | शु. ३ | ३ |
| १४ | ०८२६ | ०९ | १५ | ०० | २ | २ |
| ४५ | २०५० | २३ | ०३ | २३ | सू. कु. | सू. चं. |
| ३४ | ०७३१ | १३ | ३६ | ५२ | ५ | कु. |
| ५७ | ८३८ | ४२ | २९ | १ | ९ | ९९ |
| ३२ | १ | ३९ | ४४ | ३ | चं. मं. | ९९ |
| २ | १ | ३ | ४४ | ३ | ९ | ९० |
| २ | १ | ३ | ४४ | ३ | ९ | ९ |

उद्येष्ठ कण्ठ पक्षफल-

इस पक्ष में अपरा एकादशी एवं भद्रकाली एका. (2 जून) का व्रत रखने से अज्ञानतावश किए हुए अनेक पापों से मुक्ति मिलती है। 16 जून को सोमवती अमावस के दिन हस्तिार, प्रयाग, कुरूक्षेत्र आदि तीर्थ पर स्नान-दान करना अत्यन्त पुण्यकारक माना जाता है। इसी दिन वैधव्य दोष की शान्ति हेतु स्त्रियों को वटसावित्री का व्रत रखना कल्याणकारी होता है। व्रतारम्भ करने से पूर्व स्त्री शुभासन पर पूर्वाभिमुख बैठकर यह संकल्प करे—“वैधव्यादि सकलदोष परिहारार्थं ब्रह्मसावित्री-प्रीत्यर्थं च सावित्री) रखवाया जा सकता है।

त्यापाद-रुख-पक्षारभ्य से बुध पूर्व में अस्त हुआ है। चावल, दालें, छोटी इलायची, खल-बनौले, रूई, कपास, चांदी आदि तेज होंगी। इसी दिन शुक्र मृगशिरा में गेहूँ, चने, ज्वार में मन्दी परशु-चीनी, शक्कर में तेजीकारक होगा। ता. 25 को सूर्य रोहिणी में आने से अन्य करियाना वस्तुओं के साथ अण्डा, अलसी में भी तेजी होगी। चाँदी में मन्दी का रुख होगा। ता. 27 को शनि कर्क में आकर गुरु पर दृष्टि रखेगा। जिससे सोना, चाँदी, लकड़ी, लोहा, हल्दी, केशर, कच्चा लोहा, तैल, शेरों, मैथायल व पैटो-कैमीकलज वस्तुओं में तेजी होगी। ज्येष्ठ मास में पाँच मंगलवार होने से कहीं उपद्रव, अनिकाण्ड व हिंसक घटनाएँ व छत्रभंग होने के संकेत हैं। किसी प्रमुख नेता के अपदस्थ या निधन होने के योग हैं।

आकाश लक्षण-इस पक्ष में गर्मी एवं तेज गर्म हवाओं का प्रकोप बढ़ेगा। कहीं कृषि व जन हानि के भी योग हैं।

नोट—घण्टा-मिनटों में तिथि, नक्षत्र, योग एवं चन्द्रादि ग्रहों के संचार आगामी पक्षों पर देखें।

सन् २००५ ई. (ता. ६ अग. से १९ अगस्त तक)

सूर्य दक्षिणायने, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु

| दिनांक | प्रवेश | घटी पल | हस्त | चक्र | राशि | हस्त | चक्र | राशि | हस्त | चक्र | राशि | हस्त | चक्र | राशि | हस्त | चक्र | राशि | हस्त | चक्र |
|---------|--------|--------|------|------|--------|------|------|---------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|---------|-------|
| ३३/३/३ | १ | शनि | १२ | ५८ | रत्ने. | ३ | ९३ | वरी | ५१ | ०५ | ब | १२ | ५८ | १५ | ३० | ६ | २२ | सिं. | ३/१३ |
| ३३/३/३ | २ | रवि | १८ | ५३ | मघा | १० | ३५ | परि | ५३ | १३ | कौ | १८ | ५३ | १६ | १७ | ७ | २३ | सिंह | |
| ३३/३/४ | ३ | चंद्र | २४ | २३ | पूर्वा | १७ | ३३ | शिव | ५४ | ५५ | ग | २४ | २३ | १७ | २ | ८ | २४ | कं. | ३४/१३ |
| ३३/३/५ | ४ | मंग | २९ | १३ | जुला | २३ | ५५ | सिद्ध | ५६ | ०० | वि | २९ | १३ | १८ | ३ | ९ | २५ | कन्या | |
| ३३/३/६ | ५ | बुध | ३२ | ५५ | हस्त | २९ | १८ | साध्य | ५६ | ०८ | ब | १ | ०४ | १९ | ४ | १० | २६ | कन्या | |
| ३३/३/७ | ६ | गुरु | ३५ | १५ | चित्ता | ३३ | १८ | शुभ | ५५ | ०३ | कौ | ४ | ०५ | २० | ५ | ११ | २७ | तु. | १/२८ |
| ३३/३/८ | ७ | शुक्र | ३५ | ५८ | स्वा. | ३५ | ४३ | शुक्ल | ५२ | ३८ | ग | ५ | ३७ | २१ | ६ | १२ | २८ | बृ. | २१/१८ |
| ३३/३/९ | ८ | शनि | ३४ | ४५ | विशा | ३६ | १५ | ब्रह्मा | ४८ | ४० | वि | ५ | २२ | २२ | ७ | १३ | २९ | वृश्चिक | |
| ३३/३/१० | ९ | रवि | ३५ | ३५ | अनु | ३४ | ५५ | ऐन्द्र | ४३ | १० | या | ३ | १० | २३ | ८ | १४ | ३० | धनु | |
| ३३/३/११ | १० | चंद्र | २६ | ३३ | ज्ये. | ३१ | ४० | वैष्ण | ३६ | ०८ | ग | २६ | ३३ | २४ | ९ | १५ | ३१ | ध. | ३१/४० |
| ३३/३/१२ | ११ | मंग | १९ | ५० | मूला | २६ | ४८ | विष्क | २७ | ४५ | वि | १९ | ५० | २५ | १० | १६ | भा. | | |
| ३३/३/१३ | १२ | बुध | ११ | ५० | पूषा | २० | ३८ | प्रीति | १८ | २० | बा | ११ | ५० | २६ | ११ | १७ | २ | म. | ३३/५५ |
| ३३/३/१४ | १३ | गुरु | २ | ४८ | उषा | १३ | ३० | आर्ष | ८ | ०५ | तै | २ | ४८ | २७ | १२ | १८ | ३ | मकर | |
| ३३/३/१५ | १४ | गुरु | ५३ | १३ | | ० | ० | लोफे | ५७ | २८ | | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ०० | |

३० स पतिवा एकादशी वत बध मार्गी १/१८ शनि पय्य (३) में १४/३५

शनी अष्टम्यां गृह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे. १३ अगस्त

शक्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, १९ अगस्त

[illegible]

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------------------------|------|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| कुं. पूर्णिमा, प्रतः 5.30 | ४ श. | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ | ९६ | ९७ | ९८ | ९९ | १०० |
|---------------------------|------|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|

| | | | | | | |
|------------------------|-----|---|---|---|----|----|
| कं. पणिमा, प्रातः 5.30 | के. | श | ग | ल | मं | लं |
|------------------------|-----|---|---|---|----|----|

श्रावण शयल पक्षफल—इस पक्ष में सिंधारा तीज (४ अग.)

के दिन सुहागिन स्त्रियाँ अपने पीहर लौटकर, हाथों में मेहंदी रवाकर झुले झूलती हुई श्रावण के मलहार गीत गाती हैं। नाग पंचमी (10 अग.) को अपने गृह द्वार का दोनों ओर गोबर के सर्प बनाकर उनका दूध, दुर्वा, कुशा, गन्ध, अक्षत, पुष्प, लड्डूओं आदि से पूज करने से घर में सर्पों का भय नहीं रहता। "ॐ कुरुकुन्ये हुं फट् स्यात्वाह" मंत्र के जप से भी सर्प विष का भय नहीं होता। श्री. शुक्ल प्रतिपदा से अष्टमी (13 अग.) पर्यन्त माता छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी) और चामुण्डा देवी (कांगड़ा) पर भव्य एवं पावन है। यह पर्व दुपैहर 1/19 के बाद-भद्रा उपरान्त प्रशस्त होगा। इसी दिन राखस में गोचर ग्रहों में कालसरप योग बना हुआ है, जिससे राजनीतिक संघर्ष, सत्ता-परिवर्तन, उपद्रव-तोड़-फोड़ एवं हिंसक घटनाएँ अधिक रहेंगे। विशेषकर गेहूँ, धान्य, धृत, तेल, चावल, मक्की, खल-बिनौले, नीम, उखर, जई, सरसों, चने, मूंग, सब्जियों की कीमतें बढ़ेंगी।

[illegible]

वि. संवत् २०६२, कार्तिक कृष्ण पक्ष

शाक: १९२७

तारीखें

चंद्र राशि

प्रवेश

घटी पल

मेघ

कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रा.

सं. २००५ ई. (ता. १८ अक्टू. से २ नवंबर तक)

भा. सं. दा.

जालंधर

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद-हेमन्त ऋतु
ग्रह लोपदर्शन-गुरु अदृश्य है। सायं बुध व शुक्र परिवर्तन में दृश्य होंगे। प्रातः मंगल परिवर्तन में तथा शनि गायत्रीवृत्तासन में होगा।

कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रा., बुध विशाखा में ५/४८, कार्तिक में **A**
भा. ४८/४५ से **A** श्रीतुलसीदल सहित भगवान् विष्णु पूजा करें
भा. १७/५० तक, ऋतु करक चतुर्थी (कलश चौथ), श्रीगणेश-गौरी पूजा #
चक्रो मंगल भरणी ४ में २४/१५ # चंद्रोदय रात्रि लगभग ७/४४ पर

भा. २२/३८ से ५५/०३ तक, स्कन्द यष्टी, सूर्य स्वाती में ५/२४ **B**
B शाक: कार्तिक प्रा., सूर्य सायन वृश्चिक में १३/१२, हेमन्त ऋतु प्रा.
व्रत अहोई अष्टमी, राधाष्टमी, बुध वृश्चिक में २६/१५, +
गण्डमूलादि विचार, नैपचून मार्ग ५५/२०

भा. २२/३८ से ४५/०३ तक + शनि आश्ले. में ३६/१०
रमा एकादशी व्रत, बुध अनु. १ में ३/४७, गुरु स्वाती में ५/०/२८
गोवत्स द्वादशी **C** धनवन्तरी जयंती, स. सि. योग:
भा. ५८/४३ से, प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी, शुक्र धनु में १७/०५ **C**
भा. २९/२८ तक, नरक चौदश, श्री हनुमान जयंती, यम दीपदान
भौमवासी अमावस, श्रीमहालक्ष्मी पूजन, दीपावली, कुबेर **D**
ता. अमावस ६/५५ तक, का. शु. प्रतिपदा, गोवर्धन पूजा अनकूट, **E**

भा. २९/२८ तक, नरक चौदश, श्री हनुमान जयंती, यम दीपदान
भौमवासी अमावस, श्रीमहालक्ष्मी पूजन, दीपावली, कुबेर **D**
ता. अमावस ६/५५ तक, का. शु. प्रतिपदा, गोवर्धन पूजा अनकूट, **E**

E बली एवं विश्वकर्मा पूजा **D** पूजा, श्री महावीर निर्वाण

इस पक्ष में करक चतुर्थी अर्थात् कलश चौथ (२० अक्टू.) का व्रत सुहागिन स्त्रियां पति की मंगल कामना एवं आयु वृद्धि के लिए करती हैं। व्रती को चाहिए कि उस दिन प्रातः स्नानादि नित्यकर्म करके

“मम सुखसौभाग्य पुत्रपौत्रादिसुस्थिर श्रीप्राप्तये करक चतुर्थी व्रतमहं करिष्ये।” यह संकल्प करे तथा सायं श्रीगणेश जी एवं गौरी की कथा सुनकर चन्द्रमा को अर्घ्य देने के पश्चात् भोजन करती हैं।

अहोई अष्टमी (२५ अक्टू.) का व्रत, पूजन भी स्नान व पति की रक्षा हेतु किया जाता है। ३० अक्टू. त्रयोदशी को धनवन्तरी का जन्मोत्सव व औषधदान तथा नवीन बर्तन का क्रय किया जाता है। १ नवंबर को श्रीमहालक्ष्मी का पूजन व दीपमाला का शुभ पर्व है। इस

नवंबर को समय एवं विधि पढ़ें। लोक-भविष्य-कार्तिक मास में पंच मंगलवार होने से देश में अनिकण्ड व हिंसक घटनाएं अधिक होंगी। सतारूद्र शासक वर्ग के लिए यह अवधि अशुभ होगी। कहीं छत्रभंग (या सत्ता-परिवर्तन) की स्थिति बनेगी। “यत्रमासे महीसूनी जायन्ते पंचवासराः। रवतेन पूरिता पथिनी छत्रभंगस्तदा॥” विषय में भी कहीं हवाई दुर्घटनाएं तथा आतंकवाद एवं युद्ध-मोदी घटनाएं अधिक घटित होंगी। बाजार का रुख-२३ अक्टू. को सूर्य स्वाती में आने से रूई, सूत, सन, रेशम, सोना, चांदी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, होंग, गुग्गल में तेजी बनेगी। २५ अक्टू. को बुध वृश्चिक राशि में शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल की दृष्टि भी है। घी, तेल, सरसों, रूई, चांदी, शेरों में तेजी बने। १ नवंबर को भौमवती अमावस लगभग सभी कारियाना वस्तुओं में तेजी लाएगी। यह दिन देवी सिद्धि एवं तांत्रिक प्रयोगों के लिए विशेष प्रशस्त माना जाता है। आकाश लक्षण-२३ अक्टू. के बाद उत्तर भारत में कहीं बदल चाल रहे। परन्तु वर्षा का अभाव रहे। कहीं खण्ड वृष्टि हो। तापमान में धीरे-धीरे हो कमी आएगी।

विशेष-२० अक्टूबर को जालंधर के अतिरिक्त भारत के अन्य नगरों का चन्द्रोदय जानने के लिए देखें पृष्ठ संख्या ६७।

नोट-घण्टा-मिनटों में तिथि, नक्षत्र, योग एवं चन्द्रादि ग्रहों के संचार आगामी पृष्ठों पर देखें।

भा. अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, २५ अक्तूबर

भा. अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, २५ अक्तूबर

भा. अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, २५ अक्तूबर

भा. अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, २५ अक्तूबर

भा. अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, २५ अक्तूबर

भा. अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, २५ अक्तूबर

सन् 2005-06 ई. (ता. 31 दिसं. से 14 जन. 06 तक)

भा. स्टैं. टा. जालन्धर

| सूर्य उत्तरायणे, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु | | | | | | | | | |
|--|------------|---------|-------|-----|-----|------------|--------|--------|----------|
| वि. संवत् २०६२, पौष शुक्ल पक्ष | शक्रः १९२७ | तारीखें | | | | चंद्र राशि | प्रवेश | घटी पल | सूर्योदय |
| दिनांक | शनि | रवि | चंद्र | मंग | बुध | शुक्र | मकर | ०० | ०० |
| २५/०८ | ५५ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ |
| २५/१० | ५५ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ |
| २५/११ | ५५ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ |
| २५/१३ | ५५ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ |
| २५/१५ | ५५ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ |
| २५/१७ | ५५ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ |
| २५/१९ | ५५ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ |
| २५/२० | ५५ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ |
| २५/२१ | ५५ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ |
| २५/२३ | ५५ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ |
| २५/२५ | ५५ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ |
| २५/२८ | ५५ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ |
| २५/३० | ५५ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ |
| २५/३३ | ५५ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ |

ग्रह लोपदर्शन—प्रातः शनि पश्चिम में, गुरु-बुध पूर्व में दृश्य। १४ जन. से बुध पूर्व में ही अस्त होगा। सायं शुक्र पश्चिम में, १० जन. से शुक्र भी पश्चिम में अस्त, मंगल पूर्व में दृश्य।

प्रतिपदा तिथि का क्षय ०००

चन्द्रदर्शन ४५ मुहूर्ति, जनवरी सं. २००६ ई. प्रा., स. सि. योगः

जिल्हेज १ (मुस्लिम), स. सि. योगः

भद्रा ५/०३ से ३१/१३ तक, पंचकार्तिकः ८/२२ घं. मि.

बुध पूर्व में अस्त ११/४५ घं. मि.

गुरु विशाखा १ में ६/४५ घं. मि., गुरु गोविन्द सिंह जयं. (नानकशाही)

भद्रा १४/१० से ४२/३१ तक, गुरु गोविन्द सिंह जयं. प्राचीन परम्पराया

पंचक समाप्त १३/५३ घं. मि., गंडमूलादि, श्री दुर्गाष्टमी

बुध पूर्णा १ में ३४/१०, गण्डमूलादि १३/४५ तक, स. सि. योगः

भद्रा ३८/१९ से प्रारम्भ

भद्रा ८/२५ तक, पुत्रदा एकादशी व्रत, शुक्र पश्चिम में अस्त २७/४८

प्रदोष व्रत, सूर्य उषा में ५/२१ घं. मि., स. सि. योगः

श्रावणी विवेकानन्द जयन्ती B लोहड़ी पर्व, व्रत श्रीसत्यनारायण

भ. १५/२० से ४७/२७ तक, वक्ती शुक्र धनु में २८/१८ (१८/५०) B

पौष पूर्णिमा, सूर्य मकर में ११/०३, माघ संक्रांति, ४५ मुह. C

चौत—घण्टा-मिनटों में तिथि, नक्षत्र, योग एवं चन्द्रादि ग्रहों के संचार आगामी पृष्ठों पर देखें।

शनी अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, ७ जन. ०६ ई.

शनी पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, १४ जनवरी

शनी अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, ७ जन. ०६ ई.

शनी पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, १४ जनवरी

शनी अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, ७ जन. ०६ ई.

शनी पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, १४ जनवरी

शनी अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, ७ जन. ०६ ई.

शनी पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, १४ जनवरी

शनी अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, ७ जन. ०६ ई.

शनी पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, १४ जनवरी

शनी अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, ७ जन. ०६ ई.

शनी पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, १४ जनवरी

शनी अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, ७ जन. ०६ ई.

शनी पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, १४ जनवरी

शनी अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, ७ जन. ०६ ई.

पौष शुक्ल पक्ष—

इस पक्ष में माघ संक्रान्ति से एक दिन पूर्व लोहड़ी पर्व (१३ जन.)

सारे पंजाब, हि. प्र., दिल्ली, हरियाणा व जम्मू आदि में लकड़ियों,

समिधा, रेवड़ियों, तिल सहित अग्नि प्रदीप काके अग्नि पूजा के रूप में

मनाया जाता है। मकर संक्रान्ति (१४ जन.) को स्नानादि उपरान्त

तिलों से हवन, तिलयुक्त वस्तुओं का दान व भगवान् विष्णु व

सूर्यदेव की उपासना का विधान है। इस दिन तीर्थों पर स्नानादनादि का

भी विशेष माहात्म्य होता है। स्नान के लिए हरिद्वार, काशी और प्रयाग

उत्तम माने गये हैं। वहाँ न जा सके तो गृह में ही श्रद्धापूर्वक स्नान करें,

वहाँ उनका स्मरण करें अथवा "गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

वही उनका स्मरण करे।

पौष पूर्णिमा (१४ जन.) से हरिद्वार,

पुत्र संतान की प्राप्ति होती है। पौष पूर्णिमा (१४ जन.) से हरिद्वार,

पुत्र संतान की प्राप्ति होती है। पौष पूर्णिमा (१४ जन.) से हरिद्वार,

पुत्र संतान की प्राप्ति होती है। पौष पूर्णिमा (१४ जन.) से हरिद्वार,

पुत्र संतान की प्राप्ति होती है। पौष पूर्णिमा (१४ जन.) से हरिद्वार,

वि. संवत् २०६२, माघ शुक्ल पक्ष

शाक: १९२७

चंद्र राशि

प्रवेश

घटी पल

सन् २००६ ई. (ता. ३० जन. से १३ फर. तक)

| दिनांक घटी/पल | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | राशि | चंद्र | रा |
|------------------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|----|
|------------------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|----|

वि. संवत् 2062, मई मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2005 ई.

| मास पक्ष | दिनांक | समाप्ति काल | समाप्ति काल | समाप्ति काल | चन्द्र-राशि प्रवेश | भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) | जन्म सूक्त | दिल्ली सूक्त | चण्डीगढ़ सूक्त | सूर्योदय सूक्त | सूर्यास्त सूक्त | मुम्बई सूक्त |
|----------|----------|-------------|-------------|-------------|--------------------|---|------------|--------------|----------------|----------------|-----------------|--------------|
| 1 | 8 रवि | 22 48 | अव | 22 32 | शुभ | मकर | 15 58 | शुभ | 15 58 | शुभ | 15 58 | शुभ |
| 2 | 9 चंद्र | 20 44 | घनि | 21 14 | शुक्ल | कुं. 9/52 | 13 09 | शुक्ल | 13 09 | शुक्ल | 13 09 | शुक्ल |
| 3 | 10 मंग | 18 53 | शत | 20 08 | ब्रह्म | कुम्भ | 10 29 | ब्रह्म | 10 29 | ब्रह्म | 10 29 | ब्रह्म |
| 4 | 11 बुध | 17 17 | पू.भा. | 19 18 | ऐंद्र | मी. 13/29 | 8 02 | ऐंद्र | 8 02 | ऐंद्र | 8 02 | ऐंद्र |
| 5 | 12 गुरु | 15 59 | उ.भा. | 18 46 | वैष्ण | मीन | 5 48 | वैष्ण | 5 48 | वैष्ण | 5 48 | वैष्ण |
| 6 | 13 शुक्र | 15 01 | रेव | 18 34 | प्रीति | जे. 18/34 | 26 07 | प्रीति | 26 07 | प्रीति | 26 07 | प्रीति |
| 7 | 14 शनि | 14 25 | अश्वि | 18 44 | आयु | मेघ | 24 45 | आयु | 24 45 | मेघ | 24 45 | मेघ |
| 8 | 30 रवि | 14 15 | भर | 19 21 | सौभा | वृ. 25/34 | 23 44 | सौभा | 23 44 | वृ. 25/34 | 23 44 | वृ. 25/34 |
| 9 | 1 चंद्र | 14 34 | कृति | 20 25 | शोभ | वृष | 23 06 | शोभ | 23 06 | वृष | 23 06 | वृष |
| 10 | 2 मंग | 15 22 | रोहि | 21 59 | अति | वृष | 22 52 | अति | 22 52 | वृष | 22 52 | वृष |
| 11 | 3 बुध | 16 40 | मृग | 24 01 | सुक | मि. 10/56 | 23 00 | सुक | 23 00 | मि. 10/56 | 23 00 | मि. 10/56 |
| 12 | 4 गुरु | 18 26 | आर्द्रा | 26 29 | घृति | क. 22/33 | 23 29 | घृति | 23 29 | क. 22/33 | 23 29 | क. 22/33 |
| 13 | 5 शुक्र | 20 34 | पूर्वा | 29 16 | शूल | कर्क | 24 14 | शूल | 24 14 | कर्क | 24 14 | कर्क |
| 14 | 6 शनि | 22 55 | पूर्व | पू.दिन | गंड | कर्क | 25 08 | गंड | 25 08 | कर्क | 25 08 | कर्क |
| 15 | 7 रवि | 25 18 | पुष्य | 8 12 | वृद्धि | सिं. | 26 03 | वृद्धि | 26 03 | सिं. | 26 03 | सिं. |
| 16 | 8 चंद्र | 27 30 | श्ले. | 11 06 | ध्रुव | सिं. | 26 49 | ध्रुव | 26 49 | सिं. | 26 49 | सिं. |
| 17 | 9 मंग | 29 17 | मघा | 13 44 | व्या. | कं. 22/22 | 27 16 | व्या. | 27 16 | कं. 22/22 | 27 16 | कं. 22/22 |
| 18 | 10 बुध | पू. दि. | पू.भा. | 15 55 | हर्ष | कन्या | 27 17 | हर्ष | 27 17 | कन्या | 27 17 | कन्या |
| 19 | 11 गुरु | 6 30 | उ.फा. | 17 27 | वज्र | कन्या | 26 46 | वज्र | 26 46 | कन्या | 26 46 | कन्या |
| 20 | 12 शनि | 6 59 | हस्त | 18 17 | सिद्धि | तुला | 25 39 | सिद्धि | 25 39 | तुला | 25 39 | तुला |
| 21 | 13 रवि | 6 43 | चित्रा | 18 22 | व्य. | वृ. 6/25 | 23 57 | व्य. | 23 57 | वृ. 6/25 | 23 57 | वृ. 6/25 |
| 22 | 14 शनि | 5 43 | स्वा. | 17 45 | वरी | ०० | 21 41 | वरी | 21 41 | ०० | 21 41 | ०० |
| 23 | 15 चंद्र | 28 03 | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० |
| 24 | 1 मंग | 25 48 | विशा | 16 32 | परि | ०० | 18 55 | परि | 18 55 | ०० | 18 55 | ०० |
| 25 | 2 बुध | 23 08 | अनु. | 14 49 | शिव | बृश्चिक | 15 47 | शिव | 15 47 | बृश्चिक | 15 47 | बृश्चिक |
| 26 | 3 गुरु | 20 12 | ज्ये. | 12 45 | सिद्ध | घ. 12/45 | 12 22 | सिद्ध | 12 22 | घ. 12/45 | 12 22 | घ. 12/45 |
| 27 | 4 शुक्र | 17 08 | मूला | 10 31 | साय | धनु | 8 48 | साय | 8 48 | धनु | 8 48 | धनु |
| 28 | 5 शनि | 14 05 | पूषा. | 8 16 | शुक्ल | म. 13/43 | 25 42 | शुक्ल | 25 42 | म. 13/43 | 25 42 | म. 13/43 |
| 29 | 6 रवि | 11 11 | उ.भा. | 6 07 | ब्रह्म | मकर | 22 22 | ब्रह्म | 22 22 | मकर | 22 22 | मकर |
| 30 | 7 चंद्र | 00 00 | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० |
| 31 | 8 मंग | 8 33 | घनि | 26 40 | ऐंद्र | कुं. 15/24 | 19 18 | ऐंद्र | 19 18 | कुं. 15/24 | 19 18 | कुं. 15/24 |
| | 9 बुध | 6 17 | शत | 25 31 | वैष्ण | कुम्भ | 16 33 | वैष्ण | 16 33 | कुम्भ | 16 33 | कुम्भ |
| | 10 शनि | 28 25 | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० |
| | 11 रवि | 26 59 | पू.भा. | 24 48 | विष्ण | मी. 18/56 | 14 09 | विष्ण | 14 09 | मी. 18/56 | 14 09 | मी. 18/56 |

A दोपहर 2/40 से, वकी स्फुटो बृश्चिक में 25/25, B सूर्य सायन मिथुन में 28/17 C वैशाख स्नान समाप्त, बुद्ध जयंती, बुध कृति. में 26/27 D (जालंधर में चन्द्रोदय रात्रि 10/32 पर)

वि. संवत् २०६२.

卷之五

समाप्त का विज्ञापन पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) राज 2005 ई.

| वि. संवत् 2062, जुलाई | | | | | | | | | | मास का तिथ्यादि पचास घण्टा-मिनटों में (भा. स्ट. टा.) | | | | | | | | | | |
|---|----------|-------------------|---------|-------------------|--------|-------------------|-----------|-------------------|---|--|--------|-------------------|--------|-------------------|--------|-------------------|--------|-------------------|----------|-------------------|
| क्र.सं. | दिनांक | समाधि काल घं. मि. | दिनांक | समाधि काल घं. मि. | दिनांक | समाधि काल घं. मि. | दिनांक | समाधि काल घं. मि. | दिनांक | समाधि काल घं. मि. | दिनांक | समाधि काल घं. मि. | दिनांक | समाधि काल घं. मि. | दिनांक | समाधि काल घं. मि. | दिनांक | समाधि काल घं. मि. | दिनांक | समाधि काल घं. मि. |
| भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश | | | | | | | | | | घण्टा मिनटों में (भा. स्ट. टा.) | | | | | | | | | | |
| 1 | 10 शुक्र | 10 54 | अश्वि | 6 45 | सुक्र | 14 48 | मेष | वृ. 14/17 | भद्रा 10/54 तक, जुलाई मास प्रारम्भ | 5/31 | 19/38 | 5/31 | 19/19 | 5/28 | 19/25 | 6/09 | 19/16 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 2 | 11 शनि | 11 27 | भर | 7 55 | धृति | 14 20 | वृष | वृ. 14/17 | योगिनी एकादशी व्रत | 5/31 | 19/38 | 5/31 | 19/19 | 5/28 | 19/25 | 6/09 | 19/16 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 3 | 12 रवि | 12 28 | कृति | 9 31 | शूल | 14 12 | मि. 24/37 | मि. 24/37 | प्रदोष व्रत | 5/32 | 19/38 | 5/32 | 19/19 | 5/28 | 19/25 | 6/10 | 19/16 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 4 | 13 चंद्र | 13 51 | रोहि | 11 31 | गंड | 14 22 | मि. 24/37 | मि. 24/37 | भद्रा 13/51 से 26/43 तक, | 5/32 | 19/38 | 5/32 | 19/19 | 5/28 | 19/25 | 6/10 | 19/16 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 5 | 14 मंग | 15 34 | मृग | 13 49 | वृद्धि | 14 46 | मि. 24/37 | मि. 24/37 | सूर्य पुनर्वसु में 26/55, शनि पश्चिम में अस्त 15/27 | 5/32 | 19/38 | 5/32 | 19/19 | 5/29 | 19/25 | 6/10 | 19/16 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 6 | 30 बुध | 17 33 | आर्द्रा | 16 23 | ध्रुव | 15 23 | मि. 24/37 | मि. 24/37 | अमावस, बुध आश्लेषा में 17/36 | 5/33 | 19/38 | 5/33 | 19/18 | 5/30 | 19/25 | 6/11 | 19/16 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 7 | 1 गुरु | 19 45 | पूर्व | 19 10 | व्या. | 16 11 | क. 12/27 | क. 12/27 | आषाढ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, शुक्र आश्लेषा में 5/02, | 5/33 | 19/38 | 5/34 | 19/18 | 5/31 | 19/24 | 6/11 | 19/16 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 8 | 2 शुक्र | 22 08 | पुष्य | 22 07 | हर्ष | 17 07 | कर्क | कर्क | श्री रथयात्रा (पुरी) | 5/34 | 19/38 | 5/34 | 19/18 | 5/31 | 19/24 | 6/12 | 19/16 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 9 | 3 शनि | 24 36 | आश्ले | 25 09 | वज्र | 18 08 | सिं. | सिं. 25/09 | गुरु हस्त (3) में 13/01, गण्डमूल विचार | 5/34 | 19/37 | 5/34 | 19/18 | 5/31 | 19/24 | 6/12 | 19/16 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 10 | 4 रवि | 27 01 | मघा | 28 09 | सिद्धि | 19 08 | सिंह | सिंह | भद्रा 13/49 से 27/01 तक, गण्डमूल 28/09 तक, | 5/35 | 19/37 | 5/35 | 19/18 | 5/32 | 19/24 | 6/12 | 19/16 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 11 | 5 चंद्र | 29 16 | पूर्वा | पू. फा. | व्य. | 20 02 | सिंह | सिंह | रक्तव्रत, बुध आश्लेषा में 17/36 | 5/36 | 19/37 | 5/35 | 19/18 | 5/32 | 19/23 | 6/13 | 19/16 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 12 | 6 मंग | पू. दि. | पू. फा. | 6 58 | वरी | 20 43 | कं. 13/37 | कं. 13/37 | रक्तव्रत, बुध आश्लेषा में 17/36 | 5/36 | 19/37 | 5/36 | 19/18 | 5/33 | 19/23 | 6/13 | 19/16 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 13 | 6 बुध | 7 08 | उ. फा. | 9 24 | परि | 21 00 | कन्या | कन्या | विषयव्रत सप्तमी | 5/37 | 19/36 | 5/36 | 19/17 | 5/33 | 19/23 | 6/13 | 19/15 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 14 | 7 गुरु | 8 26 | हस्त | 11 17 | शिव | 20 48 | तु. 23/58 | तु. 23/58 | भद्रा 8/26 से 20/44 तक, | 5/37 | 19/36 | 5/37 | 19/17 | 5/34 | 19/23 | 6/14 | 19/15 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 15 | 8 शुक्र | 9 02 | चित्रा | 12 28 | सिद्ध | 19 59 | तुला | तुला | सूर्य कर्क राशि में 14/34, श्रावण संक्रां. 45 मुहूर्त, पुष्यकाल प्रातः 8/10 से, | 5/38 | 19/36 | 5/37 | 19/17 | 5/34 | 19/22 | 6/14 | 19/15 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 16 | 9 शनि | 8 49 | स्वा. | 12 50 | साध्य | 18 31 | तुला | तुला | भद्रा 18/49 से, देवशयनी एकादशी (स्मात्तो के लिए) | 5/38 | 19/36 | 5/38 | 19/16 | 5/35 | 19/22 | 6/14 | 19/15 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 17 | 10 रवि | 7 45 | विशा. | 12 21 | शुभ | 16 21 | वृ. 6/33 | वृ. 6/33 | भ. 5/52 तक, देवशयनी एकादशी व्रत (विष्णव), शुक्र सिंह में 5/41, A | 5/39 | 19/35 | 5/38 | 19/16 | 5/35 | 19/22 | 6/14 | 19/15 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 18 | 11 चंद्र | 5 52 | अनु. | 11 05 | शुक्ल | 13 32 | बृश्चिक | बृश्चिक | द्वारशी तिथि का दाय | 5/39 | 19/35 | 5/38 | 19/16 | 5/36 | 19/21 | 6/15 | 19/14 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 19 | 12 चंद्र | 27 15 | उ. फा. | 9 24 | परि | 21 00 | कन्या | कन्या | भोम प्रदोष व्रत, सूर्य पुष्य में 26/26 | 5/40 | 19/35 | 5/39 | 19/15 | 5/36 | 19/21 | 6/15 | 19/14 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 20 | 13 मंग | 24 02 | ज्ये. | 9 07 | ब्रह्म | 10 10 | ध. 9/07 | ध. 9/07 | भद्रा 20/23 से, | 5/40 | 19/35 | 5/40 | 19/15 | 5/37 | 19/21 | 6/15 | 19/14 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 21 | 14 बुध | 20 23 | मूला | 6 35 | ऐंद्र | 6 20 | धनु | धनु | भ. 6/27 तक, आषाढी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा, कोकिला B | 5/41 | 19/34 | 5/41 | 19/14 | 5/38 | 19/20 | 6/16 | 19/14 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 22 | 15 गुरु | 16 30 | उ. फा. | 24 35 | विष्क | 21 52 | म. 8/54 | म. 8/54 | श्रावण कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, सूर्य सायन सिंह में 23/11, | 5/42 | 19/34 | 5/41 | 19/14 | 5/38 | 19/20 | 6/16 | 19/14 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 23 | 2 शनि | 8 45 | घनि. | 18 39 | आयु | 13 23 | कुं. 8/02 | कुं. 8/02 | भद्रा 19/00 से 29/15 तक, पंचक प्रारम्भ 8/02, बुध वक्री 8/32, | 5/42 | 19/33 | 5/42 | 19/13 | 5/39 | 19/19 | 6/16 | 19/13 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 24 | 3 शनि | 29 15 | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | तृतीया तिथि का दाय | 5/43 | 19/32 | 5/42 | 19/13 | 5/40 | 19/19 | 6/17 | 19/13 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 25 | 4 रवि | 26 13 | शत | 16 11 | सौभा | 9 31 | कुम्भ | कुम्भ | श्री गणेश चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय रात्रि 9/53 पर) | 5/44 | 19/32 | 5/43 | 19/12 | 5/40 | 19/18 | 6/17 | 19/12 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 26 | 5 चंद्र | 23 46 | पू. भा. | 14 16 | शोभा | 6 03 | मी. 8/44 | मी. 8/44 | नागपंचमी (मठस्थले) | 5/45 | 19/31 | 5/43 | 19/12 | 5/41 | 19/18 | 6/17 | 19/12 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 27 | 6 मंग | 22 02 | उ. भा. | 13 01 | सुक्र | 24 45 | मीन | मीन | भद्रा 22/02 से, | 5/45 | 19/30 | 5/44 | 19/11 | 5/42 | 19/17 | 6/18 | 19/12 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 28 | 7 बुध | 21 02 | रेव | 12 29 | धृति | 22 59 | मे. 12/29 | मे. 12/29 | भद्रा 9/32 तक, पंचक समाप्त 12/29, गण्डमूल विचार | 5/46 | 19/30 | 5/44 | 19/11 | 5/42 | 19/17 | 6/18 | 19/12 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 29 | 8 गुरु | 20 47 | अश्वि | 12 42 | शूल | 21 49 | मेष | मेष | राहु रेवती (2), केतु हस्त (4) में 22/45, गण्डमूल 12/42 तक | 5/47 | 19/29 | 5/44 | 19/10 | 5/43 | 19/17 | 6/18 | 19/11 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 30 | 9 शुक्र | 21 13 | भर | 13 36 | गंड | 21 11 | वृ. 19/56 | वृ. 19/56 | शुक्र पू. फा. (1) में 7/38, बुधास्त पश्चिम 17/32 घं. मि. | 5/47 | 19/27 | 5/45 | 19/09 | 5/43 | 19/16 | 6/19 | 19/11 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 31 | 10 शनि | 22 15 | कृति | 15 07 | वृद्धि | 21 01 | वृष | वृष | भद्रा 9/44 से 22/15 तक | 5/48 | 19/27 | 5/46 | 19/09 | 5/44 | 19/15 | 6/19 | 19/10 | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |
| 32 | 11 रवि | 23 46 | रोहि | 17 09 | ध्रुव | 21 15 | वृष | वृष | तामिका एकादशी व्रत | | | | | | | | | सूर्यादय | सूर्यादय | सूर्यादय |

A चातुर्मास्य व्रतनियमादि प्रारंभ, मंगल मेष में 9/13 B व्रत, शिवशयनोत्सव, शनि पुष्य (2) में 9/30, चातुर्मास्य व्रत नियमादि प्रारम्भ

31 11 राव 23 46 राह 17 09 बुध 21 13 हृ
A चातुर्मास्य व्रतनियमादि प्रारंभ, मंगल मेष में 9/13 B व्रत, शिवशयनोत्सव, शनि पुष्य (2) में 9/30, चातुर्मास्य व्रत नियमादि प्रारम्भ

[illegible]

A (चन्द्रदर्शिन निषेध) (चन्द्रास्त घं. 20 मिं. 34 पर) सेवत्सरी पर्व (जैन) **B** गुरु चित्रा (2) में 24/15, राधाष्टमी **C** व्रत, प्रौष्ठदी पूर्णिमा का श्राद्ध 10/50 के बाद, मेला सोडल (जालंधर), बुध कन्या में 14/37 **D** आश्विन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ **E** श्रवण द्वादशी व्रत **F** दक्षिण गोल प्रारम्भ, **G** हस्त (3) में 20/07 **H** उप, बुध चित्रा में 22/43

मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2005 ई.

वि. संवत् 2062, अक्टूबर

iv. सपरा 2002,

| मास पक्ष | दिनांक | समाधि काल | समाधि काल | समाधि काल | समाधि काल | चंद्र-राशि प्रवेश | भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश | जम्मू | दिल्ली | चण्डीगढ़ | मुम्बई | | | | | | | |
|----------|--------|-----------|-----------|-----------|-----------|-------------------|---|------------|---|---|-----------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|
| दि. | दि. | च. मि. | च. मि. | च. मि. | च. मि. | च. मि. | च. मि. | सूर्योदय | सूर्यास्त | सूर्योदय | सूर्यास्त | | | | | | | |
| 1 | 13 | शनि | 12:42 | पू.फा. | 25 | 24 | शुभ | 16:36 | सिंह | अ. 12/42 से 25/38 तक, शस्त्र, विष, दुर्घटनादि से मृत का श्राद्ध, A | 6/28 | 18/12 | 6/18 | 18/03 | 6:20 | 18/04 | 6/34 | 18/23 |
| 2 | 14 | रवि | 14:33 | उ.फा. | 27 | 35 | शुक्ल | 16:58 | कं. 7:58 | शुक्र वृश्चिक में 20/18, चतुर्दशी का श्राद्ध द्यौः 14/33 तक, गांधी जयं. | 6/28 | 18/10 | 6/19 | 18/02 | 6:20 | 18/03 | 6/34 | 18/22 |
| 3 | 30 | चंद्र | 15:58 | हस्त | 29 | 22 | ब्रह्म | 17:00 | कन्या | सोमवती अमावस, सर्वापि श्राद्ध, स्नानदानादि, सूर्यग्रहण (देखें पृष्ठ नं 11) | 6/29 | 18/09 | 6/19 | 18/00 | 6:21 | 18/01 | 6/34 | 18/21 |
| 4 | 1 | मंग | 16:56 | वित्रा | पू. दि. | पू. दि. | ऐंद्र | 16:42 | तु. 18/05 | शरद नवरात्र प्रारंभ, आश्विन शुक्ल पक्ष प्रा., घटस्थापन, दुर्गा पूजन, B | 6/30 | 18/08 | 6/20 | 17/59 | 6:22 | 18/00 | 6/34 | 18/21 |
| 5 | 2 | बुध | 17:27 | वित्रा | 6:41 | वैष् | तुला | 16:02 | बु. 25/57 | चन्द्रदर्शन, 15 मुहूर्ति, शुक्र अनु. में 19/42, | 6/30 | 18/07 | 6/20 | 17/58 | 6:22 | 17/59 | 6/34 | 18/20 |
| 6 | 3 | गुरु | 17:31 | स्वा. | 7:34 | विष्क | 15:01 | वैष् | अ. 29/20 से, बुध पश्चिम से उदय 6/15, गुरु पश्चिम में अस्त 10/45 | भद्रा 29/20 से, बुध पश्चिम से उदय 6/15, गुरु पश्चिम में अस्त 10/45 | 6/31 | 18/06 | 6/21 | 17/57 | 6:23 | 17/58 | 6/35 | 18/19 |
| 7 | 4 | शुक्र | 17:08 | विशा | 8:01 | प्रीति | 13:39 | वृश्चिक | भद्रा 17/08 तक, | गुरु अस्त | 6/31 | 18/05 | 6/21 | 17/56 | 6:24 | 17/56 | 6/35 | 18/19 |
| 8 | 5 | शनि | 16:19 | अनु. | 8:02 | आयु | 11:56 | वृश्चिक | उपाङ्ग ललिता व्रत, गण्डमूल 8/02 उप. | 6 अंकू. | 6/32 | 18/04 | 6/22 | 17/55 | 6:24 | 17/55 | 6/35 | 18/18 |
| 9 | 6 | रवि | 15:05 | ज्ये. | 7:37 | सौभा | 9:53 | वृश्चिक | बुध स्वाती में 8/11, | 00 | 6/33 | 18/03 | 6/22 | 17/54 | 6:25 | 17/54 | 6/35 | 18/17 |
| 10 | 7 | चंद्र | 13:27 | मूला | 6:50 | शोभ | 7:31 | घनु | अ. 13/27 से 24/28 तक, सूर्य चित्रा में 17/10, श्रीसरस्वती आवाहन C | 00 | 6/33 | 18/01 | 6/23 | 17/52 | 6:25 | 17/53 | 6/35 | 18/16 |
| 11 | 8 | मंग | 11:29 | पूषा | 29:41 | अति | 28:52 | 00 | श्री दुर्गाष्टमी, महाष्टमी; शस्त्रादि पूजा | 00 | 6/34 | 18/00 | 6/23 | 17/51 | 6:26 | 17/52 | 6/36 | 18/15 |
| 12 | 9 | बुध | 9:13 | श्रव. | 26:29 | घृति | 22:49 | मकर | महानवमी, नवरात्र समाप्त, विजयादशमी (दशहरा), सरस्वती D | 00 | 6/35 | 17:59 | 6/24 | 17/50 | 6:27 | 17/51 | 6/36 | 18/14 |
| 13 | 10 | गुरु | 6:42 | धनि. | 24:35 | शूल | 19:31 | कुं. 13/33 | भद्रा 17/22 से 28/01 तक, पंचक प्रारम्भ 13/33, गुरु चित्रा (4) E | 00 | 6/36 | 17:57 | 6/25 | 17/49 | 6:27 | 17/49 | 6/36 | 18/14 |
| 14 | 11 | शुक्र | 28:01 | 00 | 00 | 00 | 00 | कुम्भ | एकादशी तिथि का शय | 00 | 6/37 | 17:55 | 6/25 | 17/48 | 6:28 | 17/48 | 6/37 | 18/13 |
| 15 | 12 | शनि | 22:34 | पू.भा. | 20:38 | वृद्धि | 12:45 | मी. 15/07 | पापाङ्कुशा एकादशी व्रत वैष्णव | 00 | 6/38 | 17:54 | 6/26 | 17/47 | 6:28 | 17/47 | 6/37 | 18/12 |
| 16 | 13 | रवि | 20:01 | उ.भा. | 18:48 | पूष | 9:26 | मीन | शनि प्रदोष व्रत | 00 | 6/38 | 17:53 | 6/26 | 17/46 | 6:29 | 17/46 | 6/37 | 18/11 |
| 17 | 14 | चंद्र | 17:44 | रेव | 17:14 | हर्ष | 27:25 | मे. 17/14 | भद्रा 20/01 से, कोजागर व्रत, व्रत शरद पूर्णिमा, F | 00 | 6/39 | 17:52 | 6/27 | 17/45 | 6:30 | 17/45 | 6/38 | 18/10 |
| 18 | 1 | मंग | 15:51 | अश्वि | 16:04 | वज्र | 24:55 | मेघ | अ. 6/53 तक, सूर्य तुला में 10/47, कार्तिक संक्रान्ति, शरद पूर्णिमा F | 00 | 6/40 | 17:51 | 6/28 | 17/44 | 6/31 | 17/44 | 6/38 | 18/09 |
| 19 | 2 | बुध | 14:29 | भर | 15:25 | सिद्धि | 22:52 | वृ. 21/21 | कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, बुध विशा में 8/55, | 00 | 6/41 | 17:50 | 6/28 | 17/43 | 6/32 | 17/43 | 6/38 | 18/08 |
| 20 | 3 | गुरु | 13:45 | कृति | 15:23 | व्य. | 21:19 | वृष | अ. 26/07 से, | 00 | 6/41 | 17:49 | 6/29 | 17/42 | 6/32 | 17/42 | 6/39 | 18/07 |
| 21 | 4 | शुक्र | 13:42 | रोह. | 16:01 | वरी | 20:20 | मिथुन | व्रत करवा चौथ (करक चतुर्थी) खेदेय जालं. में रात्रि लग्नमण 7/43 पर G | 00 | 6/42 | 17:48 | 6/30 | 17/41 | 6/33 | 17/41 | 6/39 | 18/06 |
| 22 | 5 | शनि | 14:22 | मृग | 17:21 | परि | 19:54 | मिथुन | वक्री मंगल भरणी (4) में 16/20, | 00 | 6/43 | 17:47 | 6/30 | 17/40 | 6/34 | 17/40 | 6/39 | 18/06 |
| 23 | 6 | रवि | 15:43 | आर्द्रा | 19:19 | शिव | 19:58 | मिथुन | अ. 15/43 से 28/41 तक, सूर्य स्वाती 27/45, स्कन्द षष्ठी, सूर्य H | 00 | 6/43 | 17:46 | 6/31 | 17/39 | 6/34 | 17/39 | 6/40 | 18/05 |
| 24 | 7 | चंद्र | 17:39 | पुन | 21:50 | सिद्ध | 20:27 | क. 15/10 | अ. 15/43 से 28/41 तक, सूर्य स्वाती 27/45, स्कन्द षष्ठी, सूर्य H | 00 | 6/44 | 17:45 | 6/32 | 17/38 | 6/35 | 17/38 | 6/40 | 18/05 |
| 25 | 8 | मंग | 19:59 | पुष्य | 27:42 | साध्य | 20:13 | कर्क | व्रत अहोई अष्टमी, बुध वृश्चिक में 17/11, रघाष्टमी, शनि आश्ले. में 21/09 | 00 | 6/45 | 17:44 | 6/32 | 17/37 | 6/36 | 17/37 | 6/41 | 18/04 |
| 26 | 9 | बुध | 22:31 | आर्द्रा | 24:42 | शुभ | 22:07 | सिं. | गण्डमूल विचार, नैपज्यूल मार्गी 28/50 | 00 | 6/46 | 17:42 | 6/33 | 17/36 | 6/37 | 17/35 | 6/41 | 18/04 |
| 27 | 10 | गुरु | 25:00 | मघा | 30:38 | शुक्ल | 23:00 | सिंह | भद्रा 11/46 से 25/00 तक, | 00 | 6/47 | 17:41 | 6/34 | 17/35 | 6/38 | 17/34 | 6/41 | 18/03 |
| 28 | 11 | शुक्र | 27:13 | पू.फा. | पू. दि. | वह | 23:41 | सिंह | रमा एकादशी व्रत, बुध अनु. में 8/14, गुरु स्वाती में 26/54, | 00 | 6/48 | 17:39 | 6/35 | 17/34 | 6/39 | 17/33 | 6/42 | 18/03 |
| 29 | 12 | शनि | 29:00 | पू.फा. | पू.फा. | पू. दि. | 24:02 | कं. 15/50 | गोवत्स द्वादशी | 00 | 6/49 | 17:38 | 6/36 | 17/33 | 6/40 | 17/32 | 6/42 | 18/03 |
| 30 | 13 | रवि | 30:14 | उ.फा. | पू.फा. | पू. दि. | 24:00 | कन्या | भद्रा 30/14 से, प्रदोष व्रत, घन त्रयोदशी, शुक्र घनु में 13/35, J | 00 | 6/50 | 17:38 | 6/36 | 17/33 | 6/40 | 17/32 | 6/42 | 18/03 |
| 31 | 14 | चंद्र | पूरा दिन | हस्त | 13:03 | विष्क | 23:30 | तु. 25/39 | अ. 18/33 तक, श्री हनुमान जयंती, नरक चौदश, दीपदानं | 00 | 6/51 | 17:38 | 6/37 | 17/33 | 6/41 | 17/31 | 6/43 | 18/02 |

A मंगल वक्री 27/40 **B** बुध तुला में 25/40, अग्रसेन जयंती, मातामह (नामा) का श्राद्ध **C** पूजन (पूले पूजा च) **D** विसर्जन, अपराजिता पूजन, बलिदान दिवस **E** में 19/01, पापाङ्कुशा एका. व्रत स्म. (गृहस्थियों के लिए) **F** स्नातनानादि, प्रस्तोदय खण्डग्रहण, पंचक समाप्त 17/14, शुक्र ज्ये. में 22/28, ऋषि वाल्मीकि जयं., कार्तिक स्नान प्रा., **G** श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, भ. 13/45 तक **H** सायन वृश्चिक में 13/12, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ **J** यमाय दीपदान, धनवन्तरी जयन्ती

99

A मंगल वक्री 27/40 **B** बुध तुला में 25/40, अश्लेषे जयंती, मातामह (नामा) का श्राद्ध **C** पूजन (चूले पूजा च) **D** विसर्जन, अपराजिता पूजन, बलिदान दिवस **E** में 19/01, पापाङ्कुशा एका. व्रत समा. (गृहस्थियों के लिए) **F** स्नानानदि, प्रस्तोदय खण्डग्रहास चन्द्रग्रहण, पंचक समाप्त 17/14, शुक्र ज्ये. में 22/28, ऋषि वाल्मीकि जयं., कार्तिक स्नान प्रा., **G** श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, भ. 13/45 तक **H** सायन वृश्चिक में 13/12, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ **J** यमाय दीपदान, धनवन्तरी जयन्ती

'वि. संवत् 2062, नवम्बर

मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2005 ई.

| क्र.सं. | दिनांक | समाप्ति काल घं. मि. | समाप्ति काल घं. मि. | समाप्ति काल घं. मि. | चंद्र-राशि प्रवेश घं. मि. | भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) | जन्म सूर्योदय घं. मि. | दिल्ली सूर्योदय घं. मि. | चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि. | मुम्बई सूर्योदय घं. मि. |
|---------|-----------|---------------------------|---------------------------|---------------------------|---------------------------------|--|-----------------------------|-------------------------------|---------------------------------|-------------------------------|
| 1 | 14 मंग | 6:52 | चित्रा | 14:06 | तुला | भौमवती अमावस, महालक्ष्मी पूजन, दीपावली, कुबेर पूजा, महावीर जयान्त | 6:51 | 6:38 | 6:41 | 6:43 |
| 2 | 30 बुध | 6:55 | स्वा | 14:35 | तुला | अमावस स्नानदानादौ, कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रारंभ, अब्जकूट-गोवर्धन A | 6:52 | 6:39 | 6:42 | 6:44 |
| 3 | 2 गुरु | 29:26 | विशा | 14:34 | ०० | प्रतिपदा का शय | 17:35 | 17:32 | 17:34 | 17:30 |
| 4 | 3 शुक्र | 28:05 | अनु. | 14:07 | बृश्चिक | चंद्रदर्शन, 30 गुरु, भाद्र (भाई) दूज, यम द्वितीया, विश्वकर्मा जयंती, B | 17:33 | 6:39 | 6:43 | 6:44 |
| 5 | 4 शनि | 26:26 | ज्ये. | 13:19 | घ. 13/19 | ईद-उल-फ़ितर | 6:54 | 6:40 | 6:45 | 6:45 |
| 6 | 5 रवि | 24:35 | मूला | 12:16 | घनु | भद्रा 15/16 से 26/26 तक, दूर्वा गणपति व्रत, गण्डमूल | 6:54 | 6:41 | 6:45 | 6:45 |
| 7 | 6 चंद्र | 22:35 | पूषा. | 11:02 | म. 16/43 | सूर्य विशाखा में 11/49, गण्डमूल 12/16 तक, ज्ञान पंचमी | 17:30 | 6:42 | 6:45 | 17:26 |
| 8 | 7 मंग | 20:30 | उ.षा. | 9:42 | मकर | सूर्य षष्ठी | 6:56 | 6:42 | 6:46 | 17:26 |
| 9 | 8 बुध | 18:24 | अश्व. | 8:18 | कुं. 19/36 | भद्रा 20/30 से, | 6:57 | 6:43 | 6:47 | 17:25 |
| 10 | 9 गुरु | 16:17 | घनि. | 6:54 | कुम्भ | अश्विन नवमी, कुम्भाण्ड नवमी, आरोग्य व्रत | 6:59 | 6:44 | 6:49 | 17:24 |
| 11 | 10 शुक्र | 14:14 | पू.भा. | 28:13 | मी. 22/32 | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० |
| 12 | 11 शनि | 12:16 | उ.भा. | 27:02 | मीन | भद्रा 25/15 से, भीष्मपंचक प्रारंभ | 7:00 | 6:45 | 6:50 | 17:23 |
| 13 | 12 रवि | 10:26 | रेव | 26:01 | मे. 26/01 | भद्रा 12/16 तक, बुध ज्ये. में 7/50, देवगोविनी एकादशी, शुक्र C | 7:01 | 6:46 | 6:51 | 17:22 |
| 14 | 13 चंद्र | 8:48 | अश्वि | 25:15 | सिद्धि | पंचक समा. 26/01, तुलसी विवाह, प्रदोष व्रत, गुरु स्वा. (2) में 13/37 | 7:02 | 6:46 | 6:51 | 17:22 |
| 15 | 14/15 मंग | 7:27 | भर | 24:49 | व्य. 8:59 | वैकुण्ठ चौदश, बुध वक्री 11/10, बाल विवस | 7:03 | 6:47 | 6:52 | 17:21 |
| 16 | 15 मंग | 30:28 | ०० | ०० | ०० | भ. 7/27 से 18/58 तक, कार्तिक पूर्णिमा, गुरु नानक जयंती, D | 7:04 | 6:48 | 6:53 | 17:21 |
| 17 | 2 गुरु | 29:56 | रोह. | 24:48 | वृष | पूर्णिमा का शय | 7:05 | 6:49 | 6:54 | 17:20 |
| 18 | 3 शुक्र | 30:32 | मृग. | 26:21 | मि. 13/45 | सूर्य बृश्चिक में 10/32, मार्गशीर्ष संक्रांति, 30 गुरु, पुण्यकाल E | 7:06 | 6:50 | 6:55 | 17:20 |
| 19 | 4 शनि | पू. दि. | आर्द्रा | 28:01 | मिथुन | भद्रा 18/14 से 30/32 तक, सौभाग्य सुन्दरी व्रत | 7:07 | 6:51 | 6:56 | 17:19 |
| 20 | 4 रवि | 7:45 | पूर्न | 30:14 | क. 23/38 | श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (चंद्रोदय रात्रि घं. 20 मि. 03 पर), सूर्य अनु. में F | 7:08 | 6:51 | 6:56 | 17:19 |
| 21 | 5 चंद्र | 9:33 | पुष्य | पू. दि. | कर्क | वक्री मंगल भर (1) में 17/35, | 7:09 | 6:52 | 6:57 | 17:19 |
| 22 | 6 मंग | 11:49 | पुष्य | 8:55 | कर्क | भद्रा 11/49 से 25/06 तक, शनि वक्री 14/27, सूर्य सायन धनु में 10/45, | 7:10 | 6:53 | 6:58 | 17:18 |
| 23 | 7 बुध | 14:23 | आश्ले | 11:53 | सिंह | काल भैरवाष्टमी, गण्डमूलादि | 7:11 | 6:54 | 6:59 | 17:18 |
| 24 | 8 गुरु | 16:59 | मघा | 14:56 | क. 24/26 | गण्डमूल 14/56 तक | 7:12 | 6:54 | 6:59 | 17:18 |
| 25 | 9 शुक्र | 19:22 | पू.षा. | 17:47 | क. 24/26 | भद्रा 8/15 से 21/18 तक, वक्री बुध अनु. (1) में 6/15 | 7:13 | 6:55 | 6:59 | 17:18 |
| 26 | 10 शनि | 21:18 | उ.षा. | 20:13 | कन्या | उत्पन्ना एकादशी व्रत | 7:14 | 6:56 | 6:59 | 17:17 |
| 27 | 11 रवि | 22:35 | हस्त | 22:03 | कन्या | भद्रा 22/57 से, भीम प्रदोष व्रत, गुरु स्वा. (3) में 13/25 | 7:15 | 6:57 | 6:59 | 17:17 |
| 28 | 12 चंद्र | 23:09 | चित्रा | 23:10 | तु. 10/42 | भद्रा 10/30 तक, बुध पूर्व से उदय 26/43, | 7:16 | 6:58 | 6:59 | 17:17 |
| 29 | 13 मंग | 22:57 | स्वा. | 23:34 | तुला | शुक्र उ.षा. में 22/02, वक्री बुध विशा. (4) में 27/00, | 7:17 | 6:59 | 6:59 | 17:17 |
| 30 | 14 बुध | 22:02 | विशा. | 23:16 | वृ. 17/24 | भद्रा 22/57 से, भीम प्रदोष व्रत, गुरु स्वा. (3) में 13/25 | 7:18 | 7:00 | 7:00 | 17:17 |

A पूजा, विरवकर्मा व बली पूजा B गुरु उदय पूर्व 6/15 C पूषा में 26/50, चातुर्मास्य व्रत नियमादि समाप्त, D भीष्मपंचक समाप्त, कार्तिक स्नान समाप्त, मेला पुष्कर व रामतीर्थ, यूनस मार्ग 29/42
E संक्रांति प्रातः सूर्योदय से, वक्री बुध अनु (4) में 11/16 F 17/54, बुध पश्चिम में अस्त

वि. संवत् 2062, दिसम्बर मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2005 ई.

| वि. संवत् 2062, 1451 | मास पक्ष | दिनांक | समाप्ति काल घं. मि. | हस्त | समाप्ति काल घं. मि. | चंद्र-राशि प्रवेश घं. मि. | भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-चक्र प्रवेश घण्टा मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) | जम्बू सूर्योदय घं. मि. | सूर्योदय घं. मि. | दिल्ली सूर्योदय घं. मि. | चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि. | मुम्बई सूर्योदय घं. मि. | |
|----------------------|----------|--------------|---------------------|--------------|---------------------|---------------------------|--|------------------------|------------------|-------------------------|---------------------------|-------------------------|------------------|
| | 1 | 30 गुरु | 20 31 अनु. | 22 22 सुक | 23 59 वृश्चिक | | अमावस (पितृकर्क, स्नानदानादि), राहु उ.भा. (4) केतु हस्त (2) में 17/22 | 7/19 | 17/20 | 7/00 | 17/20 | 7/16 | 6/59 17/56 |
| | 2 | मा.शु शुक्र | 18 31 ज्ये. | 21 01 घृति | 21 06 घ. 21/01 | | सार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, सूर्य ज्ये. में 22/09, गण्डमूलादि चन्द्रदर्शन, 30 मुहूर्., शुक्र मकर में 17/37, गण्डमूल 19/21 तक | 7/19 | 17/20 | 7/01 | 17/20 | 7/07 | 17/16 7/00 17/56 |
| | 3 | 2 शनि | 16 10 मूला | 19 21 शूल | 17 57 घनु | | भद्रा 24/22 से, बुध मार्ग 7/58 | 7/20 | 17/20 | 7/02 | 17/20 | 7/08 | 17/16 7/01 17/56 |
| | 4 | 3 रवि | 13 39 पूषा. | 17 31 गंड | 14 40 म. 23/02 | | भद्रा 11/04 तक, ज्यौटो धनु में 17/08 | 7/21 | 17/20 | 7/02 | 17/20 | 7/09 | 17/16 7/01 17/56 |
| | 5 | 4 चंद्र | 11 04 उषा. | 15 39 वृद्धि | 11 21 मकर | | पंचक प्रारम्भ 25/02, स्कन्द षष्ठी, चम्पा षष्ठी | 7/22 | 17/20 | 7/03 | 17/20 | 7/10 | 17/16 7/02 17/57 |
| | 6 | 5 मंग | 8 33 श्रव | 13 52 ध्रुव | 8 05 कुं. 25/02 | | षष्ठी तिथि का शय 00 | 7/23 | 17/20 | 7/04 | 17/20 | 7/11 | 17/16 7/03 17/57 |
| | 7 | 6 मंग | 30 12 00 | 00 00 हर्ष | 25 59 कुम्भ | | भद्रा 28/04 से, मित्र सप्तमी | 7/23 | 17/20 | 7/05 | 17/20 | 7/11 | 17/17 7/03 17/57 |
| | 8 | 7 बुध | 28 04 घनि | 12 16 वज्र | 23 14 मी. 28/03 | | भद्रा 15/09 तक, श्री दुर्गाष्टमी | 7/24 | 17/20 | 7/06 | 17/20 | 7/12 | 17/17 7/04 17/57 |
| | 9 | 8 गुरु | 26 13 शत | 10 54 सिद्धि | 20 43 मीन | | बुध अनु. में 27/34 | 7/25 | 17/20 | 7/07 | 17/21 | 7/13 | 17/17 7/05 17/58 |
| | 10 | 9 शुक्र | 24 39 पू.भा. | 9 49 व्या. | 18 26 मीन | | मंगल मार्ग 9/30, | 7/26 | 17/21 | 7/07 | 17/21 | 7/13 | 17/17 7/05 17/58 |
| | 11 | 10 शनि | 23 22 उ.भा. | 9 00 वरी | 16 22 मे. 8/30 | | भ. 11/03 से 22/24 तक, पंचक समाप्त 8/30, गीता जयन्ती, A | 7/27 | 17/21 | 7/08 | 17/21 | 7/14 | 17/17 7/06 17/58 |
| | 12 | 11 रवि | 22 24 रेव | 8 30 परि | 14 33 मेघ | | गण्डमूल 8/16 तक, अरुणद्विदशी | 7/28 | 17/21 | 7/09 | 17/21 | 7/15 | 17/17 7/07 17/59 |
| | 13 | 12 चंद्र | 21 43 अश्वि | 8 16 शिव | 12 59 वृ. 14/24 | | भौम प्रदोष व्रत, अनंग त्रयोदशी व्रत, | 7/28 | 17/21 | 7/09 | 17/21 | 7/16 | 17/18 7/07 17/59 |
| | 14 | 13 मंग | 21 21 भर | 8 20 सिद्धि | 11 40 वृष | | भद्रा 21/21 से प्रा., पिशाचमौचन श्राद्ध | 7/29 | 17/22 | 7/10 | 17/22 | 7/16 | 17/18 7/08 17/59 |
| | 15 | 14 बुध | 21 21 कृति | 8 44 साध्य | 10 39 मि. 22/02 | | भ. 9/34 तक, सूर्य धनु में 25/09, पौष संक्रान्ति, पुण्यकाल B | 7/30 | 17/22 | 7/11 | 17/22 | 7/17 | 17/18 7/08 17/59 |
| | 16 | 15 गुरु | 21 46 रोह | 9 30 शुभ | 9 58 मिथुन | | पौष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गुरु स्वा. (4) में 16/59, | 7/30 | 17/22 | 7/12 | 17/22 | 7/17 | 17/19 7/09 18/00 |
| | 17 | प्रति. शुक्र | 22 37 मृग | 10 40 शुक्ल | 9 38 मिथुन | | भद्रा 12/53 से 25/48 तक, | 7/31 | 17/23 | 7/12 | 17/23 | 7/18 | 17/19 7/09 18/00 |
| | 18 | 2 शनि | 23 58 आर्द्रा | 12 18 बह | 9 41 क. 7/50 | | श्री जणेश चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय रात्रि 8/47 पर) | 7/31 | 17/23 | 7/13 | 17/23 | 7/19 | 17/20 7/10 18/01 |
| | 19 | 3 रवि | 25 48 पुन्य | 14 24 ऐंद्र | 10 05 कर्क | | वक्री शनि पुष्य (4) में 8/45, गण्डमूल विचार | 7/32 | 17/23 | 7/13 | 17/23 | 7/19 | 17/20 7/10 18/01 |
| | 20 | 4 चंद्र | 28 04 शुभ | 16 57 विष्क | 11 41 सिं. 19/51 | | बुध ज्ये. में 18/07, सूर्य सायन मकर में 24/05, सा. उत्तरायण C | 7/32 | 17/23 | 7/14 | 17/24 | 7/20 | 17/20 7/11 18/02 |
| | 21 | 5 मंग | 30 39 आश्ले | 19 51 प्रति | 12 39 सिंह | | भद्रा 9/21 से 22/39 तक, | 7/33 | 17/24 | 7/14 | 17/24 | 7/20 | 17/21 7/11 18/02 |
| | 22 | 6 बुध | पू. दि. मघा | 22 56 प्रीति | 12 39 सिंह | | शुक्र वक्री 15/09, रुक्मिणि अष्टमी | 7/33 | 17/24 | 7/15 | 17/25 | 7/21 | 17/21 7/12 18/03 |
| | 23 | 7 गुरु | 9 21 पू.फा. | 26 01 आयु | 13 30 क. 8/45 | | भद्रा 28/10 से, किसकिंस दिवस | 7/34 | 17/25 | 7/15 | 17/26 | 7/21 | 17/22 7/12 18/03 |
| | 24 | 8 शनि | 11 56 उ.फा. | 28 49 सौभा | 14 03 कन्या | | भद्रा 16/34 तक, पार्श्वनाथ जयंती | 7/34 | 17/26 | 7/16 | 17/27 | 7/22 | 17/23 7/13 18/04 |
| | 25 | 9 रवि | 14 10 हस्त | 31 08 शोभ | 14 09 तु. 20/01 | | सफला एकादशी व्रत | 7/35 | 17/26 | 7/16 | 17/27 | 7/22 | 17/23 7/13 18/04 |
| | 26 | 10 चंद्र | 15 45 चित्रा | पू. दि. अति | 13 40 तुला | | सूर्य पू.भा. में 27/24, प्रदोष व्रतम् | 7/35 | 17/27 | 7/16 | 17/27 | 7/22 | 17/24 7/14 18/05 |
| | 27 | 11 मंग | 16 34 चित्रा | 8 43 सुक | 12 31 वृ. 27/32 | | भद्रा 13/54 से 24/44 तक, गण्डमूल विचार | 7/36 | 17/27 | 7/17 | 17/28 | 7/23 | 17/24 7/14 18/05 |
| | 28 | 12 बुध | 16 30 स्वा. | 9 30 घृति | 10 42 वृश्चिक | | 00 | 7/36 | 17/28 | 7/17 | 17/29 | 7/23 | 17/25 7/14 18/06 |
| | 29 | 13 गुरु | 13 54 अनु. | 8 36 शूल | 8 15 घ. 31/04 | | 00 | 7/36 | 17/29 | 7/17 | 17/29 | 7/24 | 17/26 7/15 18/06 |
| | 30 | 14 शनि | 11 33 ज्ये. | 31 04 गंड | 29 15 00 | | बुध मूला (1) धनु में 25/46, गण्डमूल 29/01 तक, अमावस (पितृकर्क) | 7/37 | 17/30 | 7/18 | 17/30 | 7/24 | 17/26 7/15 18/07 |
| | 31 | 15 गुरु | 8 43 पूषा. | 26 38 ध्रुव | 22 04 घनु | | शनिवारी पौष अमावस, स्नानदानादि, पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, | 7/37 | 17/31 | 7/18 | 17/31 | 7/25 | 17/27 7/15 18/07 |
| | 32 | 16 शनि | 29 34 00 | 00 00 00 | 00 00 | | प्रतिपदा का शय 00 | 7/37 | 17/31 | 7/18 | 17/31 | 7/25 | 17/27 7/15 18/07 |

A मोक्षदा एकादशी व्रत, गण्डमूल B अगले दिन 7/33 तक, व्रत पूर्णिमा, दत्तात्रेय जयन्ती, त्रिपुरारैव जयन्ती C प्रारम्भ, शिशिर ऋतु प्रारम्भ

| क्र.सं. | वर्ग | समाप्ति काल घं. मि. | प्रारंभ काल घं. मि. | समाप्ति काल घं. मि. | चंद्र-राशि प्रवेश घं. मि. | भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिन्टों में (भा. स्टै. टा.) | जन्म सूर्योदय घं. मि. | दिल्ली सूर्योदय घं. मि. | चाण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि. | मुम्बई सूर्योदय घं. मि. | |
|---------|------|---------------------------|---------------------------|---------------------------|---------------------------------|--|--|-------------------------------|----------------------------------|-------------------------------|------|
| 1 | 2 | रवि | 26 17 | उ.षा. | 24 06 | व्या. | जनवरी, सन् 2006 ई. प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, 45 मूह, स. सि. योगः | 7/37 | 7/18 | 7/25 | 7/16 |
| 2 | 3 | चंद्र | 23 03 | श्रव | 21 34 | हर्ष | ता. 1 जिल्लेज (मु.) प्रारम्भ ; स. सि. योगः | 7/37 | 7/19 | 7/32 | 7/16 |
| 3 | 4 | मंग | 20 00 | घनि | 19 14 | लिटि | भद्रा 9/32 से 20/00 तक, पंचक प्रारम्भ 8/22, | 7/37 | 7/19 | 7/32 | 7/16 |
| 4 | 5 | बुध | 17 17 | शत | 17 13 | व्य. | बुध पूर्व में अस्त 11/45, | 7/38 | 7/19 | 7/32 | 7/17 |
| 5 | 6 | गुरु | 14 59 | पू.भा. | 15 37 | वरी | गुरु विशा. (1) में 6/45, गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती (ना. शा.) | 7/38 | 7/19 | 7/33 | 7/17 |
| 6 | 7 | शुक्र | 13 10 | उ.भा. | 14 30 | परि | भद्रा 13/10 से 24/31 तक, गुरु गोविन्द सिंह जयं. (प्राचीन परम्परा अनुसार) | 7/38 | 7/19 | 7/33 | 7/17 |
| 7 | 8 | शनि | 11 52 | रेव | 13 53 | शिव | पंचक समाप्त 13/53, गण्डमूलादि | 7/38 | 7/19 | 7/33 | 7/17 |
| 8 | 9 | रवि | 11 05 | अश्वि | 13 45 | सिद्ध | बुध पू.षा. में 21/11, गण्डमूलादि | 7/38 | 7/19 | 7/33 | 7/17 |
| 9 | 10 | चंद्र | 10 46 | भर | 14 05 | साध्य | भद्रा 22/50 से, | 7/39 | 7/19 | 7/38 | 7/18 |
| 10 | 11 | मंग | 10 53 | कृति | 14 51 | शुभ | भद्रा 10/53 तक, शुक्र पश्चिम में अस्त 27/48, पुनरा एकादशी व्रत, | 7/39 | 7/20 | 7/39 | 7/18 |
| 11 | 12 | बुध | 11 26 | रोह. | 16 00 | शुक्ल | प्रदोष व्रत, सूर्य उ.षा. में 5/21, | 7/38 | 7/19 | 7/37 | 7/18 |
| 12 | 13 | गुरु | 12 21 | मृग | 17 31 | बह | स्वामी विवेकानन्द जयन्ती | 7/38 | 7/19 | 7/37 | 7/18 |
| 13 | 14 | शुक्र | 13 39 | आर्द्रा | 19 24 | ऐंद्र | भ. 13/39 से 26/29 तक, वकी शुक्र धनु में 18/50, लोहड़ी पर्व, A | 7/38 | 7/19 | 7/40 | 7/18 |
| 14 | 15 | शनि | 15 19 | पुन | 21 37 | वैद्य | पौष पूर्णिमा स्नानदानादि, सूर्य मकर में 11/55, माघ संक्रान्ति, B | 7/38 | 7/19 | 7/41 | 7/18 |
| 15 | 16 | रवि | 17 21 | पुष्य | 24 11 | विष्णु | माघ कृष्ण पक्षारम्भ, स. सि. योगः एवं रवि पुष्य योगः | 7/38 | 7/19 | 7/42 | 7/18 |
| 16 | 17 | चंद्र | 19 42 | आश्ले | 24 03 | सिं. | गण्डमूलादि विचार | 7/37 | 7/19 | 7/43 | 7/18 |
| 17 | 18 | मंग | 22 19 | मघा | 30 07 | आशु | भ. 9/01 से 22/19 तक, शुक्र पूर्व से उदय 8/25, बुध उ.षा. में C | 7/37 | 7/19 | 7/44 | 7/18 |
| 18 | 19 | बुध | 25 03 | पू.षा. | पू. दि. | सौभा | श्री गणेश (संकष्ट) चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय घं. 9 मि. 26) | 7/37 | 7/19 | 7/45 | 7/18 |
| 19 | 20 | गुरु | 27 43 | पू.षा. | 9 16 | शोभा | बुध मकर में 9/46, वकी शुक्र पू.षा. (4) में 8/46, | 7/36 | 7/18 | 7/46 | 7/18 |
| 20 | 21 | शनि | 30 08 | उ.षा. | 12 18 | अति | भद्रा 30/08 से प्रारम्भ, सूर्य सायन कुम्भ में 10/45, | 7/36 | 7/18 | 7/47 | 7/18 |
| 21 | 22 | रवि | 17 21 | पुष्य | 24 11 | विष्णु | भद्रा 19/06 तक, | 7/35 | 7/17 | 7/48 | 7/18 |
| 22 | 23 | चंद्र | 19 42 | आश्ले | 24 03 | सिं. | स्वामी विवेकानन्द जयंती (मत्तान्तरे) | 7/35 | 7/17 | 7/49 | 7/18 |
| 23 | 24 | मंग | 22 19 | मघा | 30 07 | आशु | नेताजी जयन्ती, | 7/35 | 7/17 | 7/50 | 7/18 |
| 24 | 25 | बुध | 25 03 | पू.षा. | पू. दि. | सौभा | भ. 21/22 से, सूर्य श्रवण में 7/44, | 7/35 | 7/17 | 7/50 | 7/18 |
| 25 | 26 | गुरु | 27 43 | पू.षा. | 9 16 | शोभा | भद्रा 9/06 तक, बुध श्रवण में 10/40, षट्दिला एका. स्मार्त | 7/35 | 7/17 | 7/51 | 7/18 |
| 26 | 27 | शनि | 30 08 | उ.षा. | 12 18 | अति | षट्दिला एकादशी व्रत वैष्णव, गणतन्त्र दिवस भारत, गण्डमूलादि | 7/34 | 7/16 | 7/52 | 7/18 |
| 27 | 28 | रवि | 17 21 | पुष्य | 24 11 | विष्णु | भद्रा 19/06 तक, | 7/34 | 7/16 | 7/52 | 7/18 |
| 28 | 29 | चंद्र | 19 42 | आश्ले | 24 03 | सिं. | स्वामी विवेकानन्द जयंती (मत्तान्तरे) | 7/33 | 7/16 | 7/53 | 7/18 |
| 29 | 30 | मंग | 22 19 | मघा | 30 07 | आशु | नेताजी जयन्ती, | 7/33 | 7/16 | 7/53 | 7/18 |
| 30 | 31 | बुध | 25 03 | पू.षा. | पू. दि. | सौभा | भ. 21/22 से, सूर्य श्रवण में 7/44, | 7/32 | 7/15 | 7/53 | 7/18 |
| 31 | 32 | गुरु | 27 43 | पू.षा. | 9 16 | शोभा | भद्रा 9/06 तक, बुध श्रवण में 10/40, षट्दिला एका. स्मार्त | 7/32 | 7/15 | 7/53 | 7/18 |
| 32 | 33 | शनि | 30 08 | उ.षा. | 12 18 | अति | षट्दिला एकादशी व्रत वैष्णव, गणतन्त्र दिवस भारत, गण्डमूलादि | 7/32 | 7/15 | 7/54 | 7/18 |
| 33 | 34 | रवि | 17 21 | पुष्य | 24 11 | विष्णु | भद्रा 19/06 तक, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 34 | 35 | चंद्र | 19 42 | आश्ले | 24 03 | सिं. | स्वामी विवेकानन्द जयंती (मत्तान्तरे) | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 35 | 36 | मंग | 22 19 | मघा | 30 07 | आशु | नेताजी जयन्ती, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 36 | 37 | बुध | 25 03 | पू.षा. | पू. दि. | सौभा | भ. 21/22 से, सूर्य श्रवण में 7/44, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 37 | 38 | गुरु | 27 43 | पू.षा. | 9 16 | शोभा | भद्रा 9/06 तक, बुध श्रवण में 10/40, षट्दिला एका. स्मार्त | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 38 | 39 | शनि | 30 08 | उ.षा. | 12 18 | अति | षट्दिला एकादशी व्रत वैष्णव, गणतन्त्र दिवस भारत, गण्डमूलादि | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 39 | 40 | रवि | 17 21 | पुष्य | 24 11 | विष्णु | भद्रा 19/06 तक, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 40 | 41 | चंद्र | 19 42 | आश्ले | 24 03 | सिं. | स्वामी विवेकानन्द जयंती (मत्तान्तरे) | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 41 | 42 | मंग | 22 19 | मघा | 30 07 | आशु | नेताजी जयन्ती, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 42 | 43 | बुध | 25 03 | पू.षा. | पू. दि. | सौभा | भ. 21/22 से, सूर्य श्रवण में 7/44, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 43 | 44 | गुरु | 27 43 | पू.षा. | 9 16 | शोभा | भद्रा 9/06 तक, बुध श्रवण में 10/40, षट्दिला एका. स्मार्त | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 44 | 45 | शनि | 30 08 | उ.षा. | 12 18 | अति | षट्दिला एकादशी व्रत वैष्णव, गणतन्त्र दिवस भारत, गण्डमूलादि | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 45 | 46 | रवि | 17 21 | पुष्य | 24 11 | विष्णु | भद्रा 19/06 तक, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 46 | 47 | चंद्र | 19 42 | आश्ले | 24 03 | सिं. | स्वामी विवेकानन्द जयंती (मत्तान्तरे) | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 47 | 48 | मंग | 22 19 | मघा | 30 07 | आशु | नेताजी जयन्ती, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 48 | 49 | बुध | 25 03 | पू.षा. | पू. दि. | सौभा | भ. 21/22 से, सूर्य श्रवण में 7/44, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 49 | 50 | गुरु | 27 43 | पू.षा. | 9 16 | शोभा | भद्रा 9/06 तक, बुध श्रवण में 10/40, षट्दिला एका. स्मार्त | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 50 | 51 | शनि | 30 08 | उ.षा. | 12 18 | अति | षट्दिला एकादशी व्रत वैष्णव, गणतन्त्र दिवस भारत, गण्डमूलादि | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 51 | 52 | रवि | 17 21 | पुष्य | 24 11 | विष्णु | भद्रा 19/06 तक, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 52 | 53 | चंद्र | 19 42 | आश्ले | 24 03 | सिं. | स्वामी विवेकानन्द जयंती (मत्तान्तरे) | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 53 | 54 | मंग | 22 19 | मघा | 30 07 | आशु | नेताजी जयन्ती, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 54 | 55 | बुध | 25 03 | पू.षा. | पू. दि. | सौभा | भ. 21/22 से, सूर्य श्रवण में 7/44, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 55 | 56 | गुरु | 27 43 | पू.षा. | 9 16 | शोभा | भद्रा 9/06 तक, बुध श्रवण में 10/40, षट्दिला एका. स्मार्त | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 56 | 57 | शनि | 30 08 | उ.षा. | 12 18 | अति | षट्दिला एकादशी व्रत वैष्णव, गणतन्त्र दिवस भारत, गण्डमूलादि | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 57 | 58 | रवि | 17 21 | पुष्य | 24 11 | विष्णु | भद्रा 19/06 तक, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 58 | 59 | चंद्र | 19 42 | आश्ले | 24 03 | सिं. | स्वामी विवेकानन्द जयंती (मत्तान्तरे) | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 59 | 60 | मंग | 22 19 | मघा | 30 07 | आशु | नेताजी जयन्ती, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 60 | 61 | बुध | 25 03 | पू.षा. | पू. दि. | सौभा | भ. 21/22 से, सूर्य श्रवण में 7/44, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 61 | 62 | गुरु | 27 43 | पू.षा. | 9 16 | शोभा | भद्रा 9/06 तक, बुध श्रवण में 10/40, षट्दिला एका. स्मार्त | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 62 | 63 | शनि | 30 08 | उ.षा. | 12 18 | अति | षट्दिला एकादशी व्रत वैष्णव, गणतन्त्र दिवस भारत, गण्डमूलादि | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 63 | 64 | रवि | 17 21 | पुष्य | 24 11 | विष्णु | भद्रा 19/06 तक, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 64 | 65 | चंद्र | 19 42 | आश्ले | 24 03 | सिं. | स्वामी विवेकानन्द जयंती (मत्तान्तरे) | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 65 | 66 | मंग | 22 19 | मघा | 30 07 | आशु | नेताजी जयन्ती, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 66 | 67 | बुध | 25 03 | पू.षा. | पू. दि. | सौभा | भ. 21/22 से, सूर्य श्रवण में 7/44, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 67 | 68 | गुरु | 27 43 | पू.षा. | 9 16 | शोभा | भद्रा 9/06 तक, बुध श्रवण में 10/40, षट्दिला एका. स्मार्त | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 68 | 69 | शनि | 30 08 | उ.षा. | 12 18 | अति | षट्दिला एकादशी व्रत वैष्णव, गणतन्त्र दिवस भारत, गण्डमूलादि | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 69 | 70 | रवि | 17 21 | पुष्य | 24 11 | विष्णु | भद्रा 19/06 तक, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 70 | 71 | चंद्र | 19 42 | आश्ले | 24 03 | सिं. | स्वामी विवेकानन्द जयंती (मत्तान्तरे) | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 71 | 72 | मंग | 22 19 | मघा | 30 07 | आशु | नेताजी जयन्ती, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 72 | 73 | बुध | 25 03 | पू.षा. | पू. दि. | सौभा | भ. 21/22 से, सूर्य श्रवण में 7/44, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 73 | 74 | गुरु | 27 43 | पू.षा. | 9 16 | शोभा | भद्रा 9/06 तक, बुध श्रवण में 10/40, षट्दिला एका. स्मार्त | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 74 | 75 | शनि | 30 08 | उ.षा. | 12 18 | अति | षट्दिला एकादशी व्रत वैष्णव, गणतन्त्र दिवस भारत, गण्डमूलादि | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 75 | 76 | रवि | 17 21 | पुष्य | 24 11 | विष्णु | भद्रा 19/06 तक, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 76 | 77 | चंद्र | 19 42 | आश्ले | 24 03 | सिं. | स्वामी विवेकानन्द जयंती (मत्तान्तरे) | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 77 | 78 | मंग | 22 19 | मघा | 30 07 | आशु | नेताजी जयन्ती, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 78 | 79 | बुध | 25 03 | पू.षा. | पू. दि. | सौभा | भ. 21/22 से, सूर्य श्रवण में 7/44, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 79 | 80 | गुरु | 27 43 | पू.षा. | 9 16 | शोभा | भद्रा 9/06 तक, बुध श्रवण में 10/40, षट्दिला एका. स्मार्त | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 80 | 81 | शनि | 30 08 | उ.षा. | 12 18 | अति | षट्दिला एकादशी व्रत वैष्णव, गणतन्त्र दिवस भारत, गण्डमूलादि | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 81 | 82 | रवि | 17 21 | पुष्य | 24 11 | विष्णु | भद्रा 19/06 तक, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 82 | 83 | चंद्र | 19 42 | आश्ले | 24 03 | सिं. | स्वामी विवेकानन्द जयंती (मत्तान्तरे) | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 83 | 84 | मंग | 22 19 | मघा | 30 07 | आशु | नेताजी जयन्ती, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 84 | 85 | बुध | 25 03 | पू.षा. | पू. दि. | सौभा | भ. 21/22 से, सूर्य श्रवण में 7/44, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 85 | 86 | गुरु | 27 43 | पू.षा. | 9 16 | शोभा | भद्रा 9/06 तक, बुध श्रवण में 10/40, षट्दिला एका. स्मार्त | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 86 | 87 | शनि | 30 08 | उ.षा. | 12 18 | अति | षट्दिला एकादशी व्रत वैष्णव, गणतन्त्र दिवस भारत, गण्डमूलादि | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 87 | 88 | रवि | 17 21 | पुष्य | 24 11 | विष्णु | भद्रा 19/06 तक, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 88 | 89 | चंद्र | 19 42 | आश्ले | 24 03 | सिं. | स्वामी विवेकानन्द जयंती (मत्तान्तरे) | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 89 | 90 | मंग | 22 19 | मघा | 30 07 | आशु | नेताजी जयन्ती, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 90 | 91 | बुध | 25 03 | पू.षा. | पू. दि. | सौभा | भ. 21/22 से, सूर्य श्रवण में 7/44, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 91 | 92 | गुरु | 27 43 | पू.षा. | 9 16 | शोभा | भद्रा 9/06 तक, बुध श्रवण में 10/40, षट्दिला एका. स्मार्त | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 92 | 93 | शनि | 30 08 | उ.षा. | 12 18 | अति | षट्दिला एकादशी व्रत वैष्णव, गणतन्त्र दिवस भारत, गण्डमूलादि | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 93 | 94 | रवि | 17 21 | पुष्य | 24 11 | विष्णु | भद्रा 19/06 तक, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 94 | 95 | चंद्र | 19 42 | आश्ले | 24 03 | सिं. | स्वामी विवेकानन्द जयंती (मत्तान्तरे) | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 95 | 96 | मंग | 22 19 | मघा | 30 07 | आशु | नेताजी जयन्ती, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 96 | 97 | बुध | 25 03 | पू.षा. | पू. दि. | सौभा | भ. 21/22 से, सूर्य श्रवण में 7/44, | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7/18 |
| 97 | 98 | गुरु | 27 43 | पू.षा. | 9 16 | शोभा | भद्रा 9/06 तक, बुध श्रवण में 10/40, षट्दिला एका. स्मार्त | 7/31 | 7/15 | 7/55 | 7 |

मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2006 ई.

वि. संवत् 2062, फरवरी

| क्र.सं. | दिनांक | समाप्ति काल घं. मि. | समाप्ति काल घं. मि. | समाप्ति काल घं. मि. | समाप्ति काल घं. मि. | चंद्र-राशि प्रवेश घं. मि. | भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) | जन्म सूर्योदय घं. मि. | दिल्ली सूर्योदय घं. मि. | चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि. | मुम्बई सूर्योदय घं. मि. |
|---------|----------|---------------------|---------------------|---------------------|---------------------|---------------------------|---|-----------------------|-------------------------|---------------------------|-------------------------|
| 1 | 3 बुध | 8 58 | पू.भा. | 23 49 | परि 30 45 | मी. 18/23 | म. 19/28 से 29/57 तक, जौरी वृत्तीय व्रत, तिल चतुर्थी, वरद-कुम्भ चतुर्थी, 00 | 7/30 | 7/13 | 7/17/56 | 7/17/54 |
| 2 | 4 बुध | 29 57 | 00 00 | 00 00 | 00 00 | 00 | चतुर्थी तिथि का क्षय 00 | 7/29 | 7/13 | 7/17/57 | 7/17/55 |
| 3 | 5 गुरु | 27 27 | उ.भा. | 21 53 | सिद्ध 27 31 | मीन | बसन्त पंचमी, श्री पंचमी, सरस्वती जयंती, राहु उभा (3), केतु हस्त A | 7/29 | 7/12 | 7/17/58 | 7/17/56 |
| 4 | 6 शुक्र | 25 34 | रेव | 20 32 | साध्य 24 46 | मे. 20/32 | पंचक समाप्त 20/32, शुक्र मार्ग 14/52, | 7/28 | 7/12 | 7/17/59 | 7/17/57 |
| 5 | 7 शनि | 24 21 | अश्वि | 19 50 | शुभ 22 33 | मेघ | भद्रा 24/21 से, पुत्र सप्तमी व्रत, रथ सप्तमी, आरोग्य-अचला B | 7/28 | 7/11 | 7/18/00 | 7/17/58 |
| 6 | 8 रवि | 23 49 | भर | 19 47 | शुक्ल 20 52 | वृ. 25/53 | म. 12/05 तक, मंगल वृष में 10/58, बुध कुम्भ में 21/53, भीष्माष्टमी | 7/27 | 7/10 | 7/18/00 | 7/17/59 |
| 7 | 9 चंद्र | 23 55 | कृति | 20 23 | बह 19 41 | वृष | सूर्य धनि. में 10/48, | 7/26 | 7/10 | 7/18/01 | 7/17/59 |
| 8 | 10 मंग | 24 37 | रोह | 21 34 | ऐंद्र 18 59 | वृष | भद्रा 13/14 से 25/50 तक, जया एकादशी व्रत, स. सि. योग: | 7/25 | 7/09 | 7/18/02 | 7/17/59 |
| 9 | 11 बुध | 25 50 | मृग | 23 15 | वेष्ट 18 41 | मि. 10/21 | बुध शत. में 15/01, भीष्म-द्वादशी | 7/24 | 7/08 | 7/18/02 | 7/17/58 |
| 10 | 12 गुरु | 27 29 | आर्द्रा | 25 22 | चिक्क 18 43 | मिथुन | प्रदोष व्रत, मेला जैसलमेर (राजस्थान) प्रारम्भ, स. सि. योग: | 7/23 | 7/08 | 7/18/03 | 7/17/58 |
| 11 | 13 शुक्र | 29 29 | पूर्णि | 27 49 | प्रीति 19 03 | क. 21/10 | म. 7/46 से 21/01 तक, सूर्य कुम्भ में 24/55, फाल्गुन संक्रान्ति, C | 7/22 | 7/06 | 7/18/05 | 7/17/58 |
| 12 | 14 शनि | 7 46 | आश्ले | पू. दि. 30 32 | आयु 19 37 | कर्क | माघ पूर्णिमा, स्नानदान, गुरु रविदास जयंती, बुध पश्चिम से उदय D | 7/21 | 7/05 | 7/18/06 | 7/17/58 |
| 13 | 15 चंद्र | 10 15 | आश्ले | 9 27 | शोभ 21 14 | सिं. 9/27 | फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल 12/31 तक | 7/20 | 7/04 | 7/18/07 | 7/17/58 |
| 14 | 1 मंग | 12 53 | मघा | 12 31 | अति 22 12 | सिंह | भद्रा 28/51 से प्रारम्भ | 7/19 | 7/03 | 7/18/08 | 7/17/58 |
| 15 | 2 बुध | 15 33 | पू.फा. | 15 37 | सुक 23 09 | कं. 22/23 | भद्रा 18/09 तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत (बन्धोदय रात्रि घं. 9 मिं. 08) | 7/18 | 7/03 | 7/18/09 | 7/17/58 |
| 16 | 3 गुरु | 18 09 | उ.फा. | 18 38 | वृति 24 01 | कन्या | बुध पूषा (1) में 7/42 | 7/17 | 7/02 | 7/18/10 | 7/17/58 |
| 17 | 4 शुक्र | 20 31 | हस्त | 21 27 | शूल 24 42 | कन्या | सूर्य सायन मीन में 24/56, बसन्त ऋतु प्रारम्भ | 7/16 | 7/01 | 7/18/10 | 7/17/58 |
| 18 | 5 शनि | 22 30 | चित्रा | 23 54 | गंड 25 05 | तु. 10/44 | भद्रा 23/57 से, सूर्य शत. में 15/25, शुक्र उषा. में 15/31, | 7/15 | 7/00 | 7/18/11 | 7/17/58 |
| 19 | 6 रवि | 23 57 | स्वा. | 25 49 | वृद्धि 25 03 | तुला | भद्रा 12/20 तक, | 7/14 | 7/00 | 7/18/11 | 7/17/58 |
| 20 | 7 चंद्र | 24 42 | विशा. | 27 05 | ध्रुव 24 29 | वृ. 20/50 | स्वाती दयानन्द सरस्वती जयंती, जानकी जयंती | 7/13 | 6/59 | 7/18/12 | 7/17/58 |
| 21 | 8 मंग | 24 41 | अनु. | 27 34 | व्या. 23 19 | वृश्चिक | भद्रा 11/02 से 22/13 तक, | 7/12 | 6/58 | 7/18/12 | 7/17/58 |
| 22 | 9 बुध | 23 51 | ज्ये. | 27 16 | हर्ष 21 31 | घ. 27/16 | बुध मीन में 21/34, विजया एकादशी व्रत | 7/11 | 6/56 | 7/18/13 | 7/17/58 |
| 23 | 10 गुरु | 22 13 | मूला | 26 12 | वज्र 19 05 | धनु | मंगल रोहि. में 23/44, शुक्र मकर में 6/16, | 7/10 | 6/55 | 7/18/13 | 7/17/58 |
| 24 | 11 शुक्र | 19 51 | पू.षा. | 24 26 | सिद्धि 16 04 | म. 29/54 | भद्रा 13/31 से 23/40 तक, श्री महाशिवरात्रि व्रत | 7/09 | 6/54 | 7/18/14 | 7/17/58 |
| 25 | 12 शनि | 16 55 | उ.षा. | 22 07 | व्य. 12 33 | मकर | सोमवती फाल्गुन अमावस, स्नानदानादि, पंचकारम्भ 5/54 | 7/07 | 6/53 | 7/18/15 | 7/17/58 |
| 26 | 13 रवि | 13 31 | म्रग | 19 23 | परी 8 38 | कुं. 29/54 | अमावस का क्षय 00 | 7/06 | 6/52 | 7/18/16 | 7/17/58 |
| 27 | 14 चंद्र | 9 49 | धनि | 16 24 | शिव 24 08 | कुम्भ | फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, | 7/04 | 6/51 | 7/18/17 | 7/17/58 |
| 28 | 1 मंग | 26 18 | शत | 13 23 | सिद्ध 19 50 | मी. 29/11 | भद्रा 13/31 से 23/40 तक, श्री महाशिवरात्रि व्रत | 7/04 | 6/51 | 7/18/17 | 7/17/58 |

वि. संवत् २०६२, मार्च

मास का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् २००६ ई.

| भास पक्ष | पक्ष | समाधि काल घं. मि. | हस्त | समाधि काल घं. मि. | हस्त | समाधि काल घं. मि. | चंद्र-राशि प्रवेश घं. मि. | भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा मिट्टों में (भा. स्टे. टा.) | जन्म सूर्योदय घं. मि. | सूर्योदय घं. मि. | दिल्ली सूर्योदय घं. मि. | चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि. | मुम्बई सूर्योदय घं. मि. |
|-------------|------|-------------------------|---------|-------------------------|--------------|-------------------------|---------------------------------|--|-----------------------------|---------------------|-------------------------------|---------------------------------|-------------------------------|
| 1 | 2 | 22 48 | पू.भा. | 10 29 | साध्य | 15 41 | मीन | मार्च मास प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, 45 युद्ध, श्रीरामकृष्ण परमहंस जयंती | 7/03 | 18/22 | 6/50 | 18/17 | 7/02 |
| 2 | 3 | 19 43 | उ.भा. | 7 53 | शुभ | 11 49 | मे. 29/46 | म. 30/26 से, पंचक समा. 29/46, बुध वक्री 26/06, जं.मू. 7/53 बाद | 7/02 | 18/23 | 6/49 | 18/18 | 7/02 |
| 00 | 00 | 00 00 | रेव | 29 46 | 00 | 00 00 | 00 | 00 | 00 | 00 | 00 | 00 | 00 |
| 3 | 4 | 17 09 | अश्वि | 28 13 | शुक्ल पौष | 8 21 | मेघ | भद्रा 17/09 तक, गण्डमूलादि, स. सि. योग: | 7/01 | 18/24 | 6/48 | 18/18 | 7/01 |
| 4 | 5 | 15 15 | भर. | 27 23 | 28 23 | 28 23 | मेघ | सूर्य पू.भा. में 21/41, गुरु वक्री 23/32 | 7/00 | 18/25 | 6/47 | 18/19 | 7/00 |
| 5 | 6 | 14 05 | कृति | 27 17 | 26 59 | 26 59 | मेघ | बुध पश्चिम में अस्त 27/36 | 6/58 | 18/26 | 6/46 | 18/20 | 6/49 |
| 6 | 7 | 13 41 | रोह. | 27 57 | 25 12 | 25 12 | च. 9/17 | भद्रा 13/41 से 25/52 तक, स. सि. योग: | 6/57 | 18/27 | 6/45 | 18/20 | 6/59 |
| 7 | 8 | 14 03 | मृग | 29 19 | 24 01 | 24 01 | वृष | होलाष्टक प्रारम्भ, अन्नपूर्णा अष्टमी | 6/55 | 18/28 | 6/44 | 18/21 | 6/58 |
| 8 | 9 | 15 07 | आर्द्रा | पू. दि. | 23 24 | 23 24 | मि. 16/33 | | 6/54 | 18/29 | 6/43 | 18/22 | 6/57 |
| 9 | 10 | 16 47 | आर्द्रा | 7 18 | 23 18 | 23 18 | मिथुन | भद्रा 29/51 से, वक्री बुध कुम्भ में 13/04, स. सि. योग: | 6/53 | 18/30 | 6/42 | 18/22 | 6/56 |
| 10 | 11 | 18 54 | पुन | 9 46 | शोभ | 24 15 | कर्क | भद्रा 18/54 तक, शुक्र श्रवण में 9/00, आमलकी एकादशी व्रत | 6/52 | 18/31 | 6/41 | 18/23 | 6/55 |
| 11 | 12 | 21 19 | पुष्य | 12 35 | अति | 25 06 | कर्क | गोविन्द द्वादशी, गण्डमूल 12/35 उप. | 6/50 | 18/32 | 6/40 | 18/23 | 6/54 |
| 12 | 13 | 23 55 | आश्ले | 15 36 | सुक | 26 04 | सिंह | प्रदोष व्रत, गण्डमूल अति | 6/49 | 18/32 | 6/38 | 18/24 | 6/53 |
| 13 | 14 | 26 33 | मघा | 18 42 | घृति | 27 03 | सिंह | भद्रा 26/33 से प्रारम्भ, महेश्वर व्रत | 6/48 | 18/33 | 6/37 | 18/24 | 6/53 |
| 14 | 15 | 29 06 | पू.फा. | 21 45 | शूल | 27 59 | कं. 28/30 | म. 15/50 तक, फाल्गुन पूर्णिमा स्वादि, होली पर्य, सूर्य मीन में A | 6/47 | 18/33 | 6/36 | 18/25 | 6/52 |
| 15 | 16 | 7 29 | हस्त | 27 20 | कन्या | 28 47 | कन्या | चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, धुलण्डी, होला मेला (आनन्दपुर व पाँडोटा), B | 6/45 | 18/33 | 6/35 | 18/25 | 6/51 |
| 16 | 17 | 9 36 | चित्रा | 29 42 | कन्या | 29 23 | कन्या | बसन्तोत्सव | 6/44 | 18/34 | 6/34 | 18/26 | 6/51 |
| 17 | 18 | 11 20 | स्वा. | पू. दि. | 29 44 | तु. 16/34 | तु. 16/34 | भद्रा 22/28 से, सूर्य उ.भा. में 30/10, सन्त तुकाराम जयन्ती | 6/43 | 18/34 | 6/33 | 18/26 | 6/50 |
| 18 | 19 | 12 38 | स्वा. | 7 39 | वृ. 26/47 | 29 45 | तुला | भद्रा 11/20 तक, श्री गणेश चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय घं. 9 मिं. 53 पर) | 6/42 | 18/35 | 6/31 | 18/27 | 6/49 |
| 19 | 20 | 13 25 | विशा. | 9 06 | वृ. 26/47 | 29 24 | वृ. 26/47 | बुध पूर्व से उदय 15/47 | 6/41 | 18/36 | 6/30 | 18/28 | 6/48 |
| 20 | 21 | 13 36 | अशु. | 10 00 | वृषिक | 28 36 | वृषिक | श्री रंग 5, मेला नवरात्री (मेरठ), सूर्य सायन मेघ में 23/56, C | 6/40 | 18/36 | 6/29 | 18/28 | 6/47 |
| 21 | 22 | 13 09 | ज्ये. | 10 17 | वृ. 26/47 | 27 20 | वृषिक | म. 13/36 से 25-23 तक, वक्री बुध शत (4) में 22/06, गण्डमूल D | 6/39 | 18/37 | 6/28 | 18/29 | 6/46 |
| 22 | 23 | 12 04 | मूला | 9 57 | घ. 10/17 | 25 33 | घ. 10/17 | मंगल मृग में 20/01, गण्डमूलादि, शक चैत्र सं. 1928 प्रारम्भ | 6/38 | 18/38 | 6/27 | 18/29 | 6/45 |
| 23 | 24 | 10 21 | पू.भा. | 8 59 | घ. 10/17 | 23 15 | घ. 10/17 | श्रीशीतलाष्टमी व्रत, गण्डमूल 9/57 तक | 6/36 | 18/38 | 6/26 | 18/30 | 6/44 |
| 24 | 25 | 8 04 | उ.भा. | 7 27 | म. 14/39 | 20 29 | म. 14/39 | भद्रा 21/13 से, शुक्र घनि. में 19/15 | 6/35 | 18/39 | 6/25 | 18/30 | 6/43 |
| 25 | 26 | 29 17 | श्रव | 29 26 | मकर | 17 17 | मकर | भद्रा 8/04 तक, बुध मार्गी 19/18, पापमोचनी एका. व्रत समा. | 6/34 | 18/40 | 6/24 | 18/31 | 6/42 |
| 26 | 27 | 26 08 | घनि | 27 03 | 00 | 00 00 | 00 | एकादशी का क्षय | 6/33 | 18/41 | 6/23 | 18/31 | 6/41 |
| 27 | 28 | 22 44 | शत | 24 24 | कुं. 16/17 | 13 42 | कुं. 16/17 | पंचक प्रारम्भ 16/17, पापमोचनी एका. व्रत वैष्णव, वारुणी योग E | 6/32 | 18/41 | 6/22 | 18/32 | 6/40 |
| 28 | 29 | 19 13 | पू.भा. | 21 41 | साध्य | 9 52 | कुम्भ | भद्रा 22/44 से, प्रदोष व्रत, वारुणी योग सू. उ. से 22/44 तक | 6/30 | 18/42 | 6/20 | 18/32 | 6/39 |
| 29 | 30 | 15 47 | उ.भा. | 19 02 | शुभ | 29 52 | मी. 16/22 | भद्रा 8/59 तक, मेला पृथ्दक पिहोवातीर्थ (हरियाणा) | 6/28 | 18/42 | 6/19 | 18/33 | 6/40 |
| | | | | | शुल | 25 50 | मी. 16/22 | भद्रा 8/59 तक, मेला पृथ्दक पिहोवातीर्थ (हरियाणा) | 6/28 | 18/42 | 6/19 | 18/33 | 6/40 |
| | | | | | ब्रह्म | 21 53 | मीन | चैत्र अमावस, अक्षय्य सूर्यग्रहण, बुध पू.भा. में 20/28, वि. संवत् 2062 F | 6/28 | 18/42 | 6/19 | 18/33 | 6/40 |

A 21/49, चैत्र संक्रान्ति, पुण्यकाल संक्रां. दुर्पै. 15/25 से प्रारम्भ, होलिका दहन (सायं भद्रा के बाद) चैतन्य महाप्रभु जयन्ती B बसन्तोत्सव प्रारम्भ C महाविषुव दिवस, उत्तराणोल प्रांरंभ

D 10/00 के बाद E 27/03 से सू. उ. तक F पूर्ण, प्लूटो वक्री 18/09

A 21/49 चैत्र संक्रान्ति पण्यकाल संक्रां दुपै 15/25 से प्रारम्भ होलिका दहन (सायं भद्रा के बाद) चैतन्य महाप्रभु जयन्ती **B** बसन्तोत्सव प्रारम्भ **C** महाविषुव दिवस, उत्तरगोल प्रारंभ

D 10/00 के बाद E 27/03 से स. उ. तक F पूर्ण, प्लेटो वक्की 18/09

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल घण्टा-मिनटों में (भा.सं.टा.) वि.संवत् 2062 (सन् 2005-06 ई.)

आगे लिखे चन्द्र प्रवेश का समय घण्टों-मिनटों में भा.सं.टा. अनुसार दिया जा रहा है। रात्रि बारह (12) बजे के बाद के समय को आगामी तारीख के रूप में दर्शाया गया है, अर्थात् भारतीय लेखे समय सारणी के अनुसार रात्रि बारह बजे को (0) घण्टा से संकेत देकर, आगामी दिवस की तारीख का आरम्भ किया गया है। आगामी पृष्ठों पर दिया गया चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का आरम्भ काल है, न कि समाप्तिकाल॥ इस सारणी के प्रयोग से किसी जातक के जन्म समय (घण्टा-मिनटों में) के आधार पर शीघ्र ही जातक का जन्म नक्षत्र एवं उसका चरण आदि सुगमता से जान सकते हैं। प्राचीन परिपाटी के अनुसार घड़ी/पलों, भयात-भयों की प्रक्रिया से निकालने के जन्म समय (घण्टा-मिनटों में) के आधार पर शीघ्र ही जातक का जन्म नक्षत्र एवं उसका चरण आदि सुगमता से जान सकते हैं। प्राचीन तो 16 अप्रैल की रात्रि 21-16 से आरम्भ होगा, द्वितीय चरण 17 अप्रैल को प्रातः 4 बजे, तृतीय 10-43 से तथा चौथा चरण सायं 17-27 बजे शुरू होगा। इसी आधार पर दशा अन्तरदशा का भोग्य काल जान सकते हैं। अधिक जानकारी हेतु हमारे कार्यालय से प्रकाशित ज्योतिष तन्त्र फलित (द्वितीय भाग) का अध्ययन करें। ध्यान रहे, जहाँ तारीख वाले कालम में दो तारीखें लिखी गई हैं, वहाँ उस नक्षत्र का आरम्भिक चरण पहली तारीख में और शेष चरण दूसरी तारीख में आरम्भ हुआ समझें॥ धन्यवाद।

| चन्द्र नक्षत्र चरण | | 1 | 2 | 3 | 4 | चन्द्र नक्षत्र चरण | | 1 | 2 | 3 | 4 | चन्द्र नक्षत्र चरण | | 1 | 2 | 3 | 4 |
|--------------------|----------|---------|---------|---------|---------|--------------------|----------|---------|---------|---------|---------|--------------------|----------|---------|---------|---------|---------|
| अप्रै. 2005 | नक्षत्र | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | मई 2005 | नक्षत्र | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | जून 2005 | नक्षत्र | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. |
| मा 31/1 अप्रै. | मूला | 22 55 | 4 36 | 10 18 | 15 59 | 1 मई | श्रवण | 0 01 | 5 39 | 11 16 | 16 54 | 1 जून | उ.भा. | 0 48 | 6 44 | 12 39 | 18 35 |
| 1-2 अप्रै. | पूषा | 21 40 | 3 13 | 8 57 | 14 35 | 1-2 | धनिष्ठा | 22 32 | 4 13 | 9 52 | 15 34 | 2 जून | रेवती | 0 31 | 6 33 | 12 36 | 18 38 |
| 2-3 | उषा | 20 13 | 1 49 | 7 25 | 13 01 | 2-3 | शत. | 21 14 | 2 57 | 8 41 | 14 25 | 3 जून | अश्वि. | 0 41 | 6 50 | 12 58 | 19 07 |
| 3-4 | श्रवण | 18 37 | 0 12 | 5 47 | 11 21 | 3-4 | पू.भा. | 20 08 | 1 56 | 7 43 | 13 29 | 4 जून | भरणी | 1 16 | 7 31 | 13 46 | 20 00 |
| 4-5 | धनिष्ठा | 16 56 | 22 31 | 4 05 | 9 40 | 4-5 | उ.भा. | 19 18 | 1 10 | 7 02 | 12 54 | 5 जून | कृत्तिका | 2 15 | 8 33 | 14 54 | 21 16 |
| 5-6 | शतभिषा | 15 15 | 20 52 | 2 08 | 8 05 | 5-6 | रेवती | 18 46 | 0 43 | 6 40 | 12 37 | 6 जून | रोहिणी | 3 37 | 10 03 | 16 29 | 22 55 |
| 6-7 | पूषा | 13 41 | 19 20 | 1 00 | 6 37 | 6-7 | अश्वि. | 18 34 | 0 36 | 6 38 | 12 41 | 7-8 | मृगशिरा | 5 21 | 11 51 | 18 21 | 0 54 |
| 7-8 | उषा | 12 18 | 18 02 | 23 45 | 5 29 | 7-8 | भरणी | 18 44 | 0 53 | 7 02 | 13 12 | 8-9 | आर्द्रा | 7 27 | 14 04 | 20 40 | 3 17 |
| 8-9 | रेवती | 11 13 | 17 03 | 22 53 | 4 43 | 8-9 | कृत्तिका | 19 21 | 1 34 | 7 52 | 14 08 | 9-10 | पुनर्वसु | 9 54 | 16 35 | 23 15 | 5 56 |
| 9-10 | अश्वि | 10 33 | 16 31 | 22 28 | 4 25 | 9-10 | रोहिणी | 20 25 | 2 49 | 9 12 | 15 36 | 10-11 | पुष्य | 12 39 | 19 23 | 2 07 | 8 51 |
| 10-11 | भरणी | 10 23 | 16 30 | 22 36 | 4 42 | 10-11 | मृग. | 21 59 | 4 27 | 10 56 | 17 28 | 11-12 | अश्ले. | 15 35 | 22 20 | 5 06 | 11 51 |
| 11-12 | कृत्तिका | 10 49 | 17 01 | 23 19 | 5 36 | 12 मई | आर्द्रा | 0 01 | 6 38 | 13 15 | 19 52 | 12-13 | मघा | 18 36 | 1 19 | 8 03 | 14 46 |
| 12-13 | रोहिणी | 11 52 | 18 17 | 0 42 | 7 07 | 13 मई | पुन. | 2 29 | 9 11 | 15 53 | 22 33 | 13-14 | पू.भा. | 21 29 | 4 08 | 10 46 | 17 24 |
| 13-14 | मृग | 13 31 | 20 04 | 2 34 | 9 10 | 14-15 | पुष्य | 5 16 | 12 00 | 18 44 | 1 28 | 15 जून | उ.भा. | 0 03 | 6 37 | 13 07 | 19 37 |
| 14-15 | पुन. | 15 44 | 22 24 | 5 03 | 11 43 | 15-16 | मघा | 8 12 | 14 56 | 21 39 | 4 22 | 16 जून | हस्त | 2 05 | 8 25 | 14 46 | 21 06 |
| 15-16 | आर्द्रा | 18 23 | 1 06 | 7 50 | 14 32 | 16-17 | पू.भा. | 11 06 | 17 45 | 0 25 | 7 05 | 17 जून | चित्रा | 3 26 | 9 36 | 15 48 | 21 54 |
| 16-17 | पुष्य | 21 16 | 4 00 | 10 43 | 20 13 | 17-18 | उषा | 13 44 | 20 17 | 2 49 | 9 22 | 18 जून | स्वाती | 3 59 | 9 55 | 15 50 | 21 46 |
| 18 अप्रैल | अश्ले. | 0 10 | 6 51 | 13 32 | 20 37 | 18-19 | हस्त | 17 27 | 23 40 | 5 52 | 12 05 | 19 जून | विशा. | 3 42 | 9 28 | 15 12 | 20 58 |
| 19 अप्रैल | मघा | 2 54 | 9 29 | 16 04 | 22 40 | 19-20 | चित्रा | 18 17 | 0 18 | 6 25 | 12 24 | 20 जून | अनु. | 2 38 | 8 12 | 13 46 | 19 19 |
| 20-21 | पू.भा. | 5 15 | 11 43 | 18 10 | 0 37 | 20-21 | स्वा. | 18 22 | 0 13 | 6 04 | 11 54 | 21 जून | ज्ये. | 0 53 | 6 19 | 11 45 | 17 10 |
| 21-22 | उषा | 7 05 | 13 27 | 19 44 | 2 02 | 21-22 | विशा. | 17 45 | 23 28 | 5 10 | 10 53 | 22-23 | मूला | 22 36 | 3 57 | 9 17 | 14 38 |
| 22-23 | हस्त | 8 20 | 14 29 | 20 38 | 2 48 | 22-23 | अनु. | 16 32 | 22 06 | 3 41 | 9 15 | 23-24 | पू.भा. | 17 10 | 22 27 | 3 46 | 9 04 |
| 23-24 | चित्रा | 8 57 | 14 59 | 21 02 | 3 00 | 23-24 | ज्ये. | 14 49 | 20 18 | 1 47 | 7 16 | 24-25 | श्रवण | 14 22 | 19 43 | 1 04 | 6 25 |
| 24-25 | स्वा. | 8 59 | 14 52 | 20 44 | 2 37 | 24-25 | मूला | 12 45 | 18 11 | 23 38 | 5 04 | 25-26 | धनि. | 11 46 | 17 10 | 22 36 | 4 03 |
| 25-26 | विशा. | 8 30 | 14 16 | 18 56 | 0 38 | 25-26 | पूषा | 10 31 | 15 57 | 21 24 | 2 50 | 26-27 | शत. | 9 32 | 15 06 | 20 39 | 2 13 |
| 26-27 | अनु. | 7 34 | 13 15 | 17 35 | 23 13 | 26-27 | उषा | 8 16 | 13 43 | 19 11 | 0 39 | 27-28 | पू.भा. | 7 47 | 13 28 | 18 19 | 0 11 |
| 27 अप्रैल | ज्ये. | 6 19 | 11 57 | 17 02 | 21 38 | 27-28 | श्रव. | 6 07 | 11 39 | 17 10 | 22 42 | 28-29 | उ.भा. | 6 36 | 12 28 | 18 04 | 0 05 |
| 28 अप्रैल | मूला | 4 50 | 10 26 | 16 02 | 20 01 | 28 मई | धनि. | 4 13 | 9 49 | 15 24 | 21 02 | 29-30 | रेवती | 6 02 | 12 03 | 18 04 | 0 35 |
| 29 अप्रैल | पूषा | 3 14 | 8 50 | 14 25 | 20 11 | 29 मई | शत. | 2 40 | 8 23 | 14 05 | 19 48 | 30/1 जुला. | अश्वि | 6 06 | 12 16 | 18 25 | 0 35 |
| 30 अप्रैल | उ.भा. | 1 36 | 7 12 | 12 49 | 18 25 | 30 मई | पू.भा. | 1 31 | 7 19 | 13 08 | 18 56 | | | | | | |

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

| चन्द्र नक्षत्र चरण | | 1 | 2 | 3 | 4 | चन्द्र नक्षत्र चरण | | 1 | 2 | 3 | 4 |
|--------------------|----------|---------|---------|---------|---------|--------------------|----------|---------|---------|---------|---------|
| जुलाई 2005 ई. | नक्षत्र | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | अगस्त 2005 ई. | नक्षत्र | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. |
| 1-2 | भरणी | 6 45 | 12 16 | 18 25 | 0 35 | 31 जुलाई | मृगशिर | 17 09 | 23 44 | 6 19 | 12 58 |
| 2-3 | कृतिका | 7 55 | 14 17 | 20 41 | 3 06 | 1-2 | आर्द्रा | 19 34 | 2 15 | 8 55 | 15 36 |
| 3-4 | रोहिणी | 9 31 | 16 01 | 22 31 | 5 01 | 2-3 | पूर्व | 22 16 | 4 59 | 11 42 | 18 24 |
| 4-5 | मृगशिर | 11 31 | 18 04 | 0 37 | 7 14 | 4 जुलाई | पुष्य | 1 08 | 7 53 | 14 37 | 21 22 |
| 5-6 | आर्द्रा | 13 49 | 20 27 | 3 06 | 9 44 | 5-6 | अश्ले. | 4 07 | 10 52 | 17 37 | 0 22 |
| 6-7 | पूर्व | 16 23 | 23 05 | 5 46 | 12 27 | 6-7 | मघा | 7 07 | 13 52 | 20 36 | 3 21 |
| 7-8 | पुष्य | 19 10 | 1 54 | 8 39 | 15 23 | 7-8 | पूर्वा. | 10 05 | 16 47 | 23 29 | 6 11 |
| 8-9 | अश्ले. | 22 07 | 4 53 | 11 38 | 18 24 | 8-9 | उ.फा. | 12 53 | 19 33 | 2 10 | 8 48 |
| 10 जुलाई | मघा | 1 09 | 7 54 | 14 39 | 21 24 | 9-10 | हस्त | 15 26 | 21 59 | 4 31 | 11 03 |
| 11-12 | पूर्वा. | 4 09 | 10 51 | 17 34 | 0 16 | 10-11 | चित्रा | 17 36 | 0 03 | 6 29 | 12 49 |
| 12-13 | उ.फा. | 6 58 | 13 37 | 20 12 | 2 48 | 11-12 | स्वाती | 19 13 | 1 28 | 7 42 | 13 57 |
| 13-14 | हस्त | 9 24 | 15 52 | 22 21 | 4 49 | 12-13 | विशाखा | 20 11 | 2 16 | 8 21 | 14 26 |
| 14-15 | चित्रा | 11 17 | 17 38 | 23 58 | 6 12 | 13-14 | अनुराधा | 20 25 | 2 17 | 8 09 | 14 01 |
| 15-16 | स्वाती | 12 28 | 18 34 | 0 39 | 6 45 | 14-15 | ज्येष्ठा | 19 53 | 1 34 | 7 41 | 12 55 |
| 16-17 | विशाखा | 12 50 | 18 44 | 0 38 | 6 33 | 15-16 | मूला | 18 36 | 0 07 | 5 38 | 11 09 |
| 17-18 | अनुराधा | 12 21 | 18 02 | 23 43 | 5 24 | 16-17 | पूर्वा. | 16 40 | 22 03 | 3 26 | 8 49 |
| 18-19 | ज्येष्ठा | 11 05 | 16 36 | 22 06 | 3 37 | 17-18 | उ.फा. | 14 12 | 19 31 | 0 47 | 6 05 |
| 19-20 | मूला | 9 07 | 14 29 | 19 51 | 1 13 | 18-19 | श्रवण | 11 22 | 16 36 | 21 51 | 3 05 |
| 20 जुलाई | पूर्वा. | 6 35 | 11 51 | 17 08 | 22 24 | 19-20 | धनिष्ठा | 8 20 | 13 35 | 18 49 | 0 04 |
| 21 जुलाई | उ.फा. | 3 40 | 8 54 | 14 07 | 19 21 | 20 जुलाई | शत | 5 19 | 10 37 | 15 54 | 21 12 |
| 22 जुलाई | श्रवण | 0 35 | 5 49 | 11 02 | 16 16 | 21 जुलाई | पूर्वा. | 2 30 | 7 52 | 13 16 | 18 37 |
| 22-23 | धनिष्ठा | 21 30 | 2 45 | 8 02 | 13 22 | 22 जुलाई | उ.फा. | 0 03 | 5 34 | 11 06 | 16 37 |
| 23-24 | शत | 18 39 | 0 02 | 5 25 | 10 48 | 22-23 | रेवती | 22 08 | 3 49 | 9 30 | 15 11 |
| 24-25 | पूर्वा | 16 11 | 21 42 | 3 14 | 8 44 | 23-24 | अश्वि. | 20 52 | 2 45 | 8 37 | 14 29 |
| 25-26 | उ.फा. | 14 16 | 19 57 | 1 39 | 7 20 | 24-25 | भरणी | 20 22 | 2 26 | 8 30 | 14 34 |
| 26-27 | रेवती | 13 01 | 18 53 | 0 45 | 6 37 | 25-26 | कृतिका | 20 36 | 2 50 | 9 07 | 15 24 |
| 27-28 | अश्वि. | 12 29 | 18 32 | 0 36 | 6 39 | 26-27 | रोहिणी | 21 40 | 4 06 | 10 31 | 16 57 |
| 28-29 | भरणी | 12 42 | 18 55 | 1 09 | 7 23 | 27-28 | मृगशिर | 23 23 | 5 56 | 12 27 | 19 05 |
| 29-30 | कृतिका | 13 36 | 19 56 | 2 20 | 8 44 | 29 जुलाई | आर्द्रा. | 1 39 | 8 19 | 14 58 | 21 38 |
| 30-31 | रोहिणी | 15 07 | 6 30 | 21 37 | 4 28 | 30-31 | पूर्व | 4 18 | 11 02 | 17 45 | 0 28 |

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

| चन्द्र नक्षत्र चरण | | 1 | 2 | 3 | 4 | चन्द्र नक्षत्र चरण | | 1 | 2 | 3 | 4 | चन्द्र नक्षत्र चरण | | 1 | 2 | 3 | 4 |
|--------------------|----------|---------|---------|---------|---------|--------------------|------------------|---------|---------|---------|---------|--------------------|----------------|---------|---------|---------|---------|
| अवतूर 2005 ई. | नक्षत्र | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | नक्षत्र | नक्षत्र | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | नक्षत्र | नक्षत्र | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. |
| 30 सिं०/अक्षु. | पू.फा. | 22 51 | 5 29 | 12 07 | 18 46 | चित्रा | 31 अक्षु०/नक्षु. | 13 03 | 19 21 | 1 39 | 7 52 | अनुराधा | 30 नक्षु०/सिं० | 23 16 | 5 03 | 10 49 | 16 36 |
| 2 अक्षु. | उ.फा. | 1 24 | 7 59 | 14 30 | 21 03 | स्वाती | 1-2 | 14 06 | 20 13 | 2 20 | 8 28 | ज्येष्ठा | 1-2 | 22 22 | 4 02 | 9 42 | 15 21 |
| 3 अक्षु. | हस्त | 3 35 | 10 02 | 16 28 | 22 55 | विशाखा | 2-3 | 14 35 | 20 35 | 2 36 | 8 39 | मूला | 2-3 | 21 01 | 2 36 | 8 11 | 13 46 |
| 4-5 | चित्रा | 5 22 | 11 43 | 18 05 | 0 24 | अनुराधा | 3-4 | 14 34 | 20 27 | 2 21 | 8 14 | पू.षा. | 3-4 | 19 21 | 0 54 | 6 26 | 11 59 |
| 5-6 | स्वाती | 6 41 | 12 54 | 19 07 | 1 20 | ज्येष्ठा | 4-5 | 14 07 | 19 55 | 1 43 | 7 31 | उ.षा. | 4-5 | 17 31 | 23 02 | 4 35 | 10 07 |
| 6-7 | विशाखा | 7 34 | 13 42 | 19 49 | 1 57 | मूला | 5-6 | 13 19 | 19 03 | 0 47 | 6 32 | श्रव | 5-6 | 15 39 | 21 12 | 2 46 | 8 19 |
| 7-8 | अनुराधा | 8 01 | 14 01 | 20 01 | 2 02 | पू.षा. | 6-7 | 12 16 | 17 58 | 23 39 | 5 21 | धनिष्ठा | 6-7 | 13 52 | 19 28 | 1 02 | 6 40 |
| 8-9 | ज्येष्ठा | 8 02 | 13 56 | 19 49 | 1 43 | उ.षा. | 7-8 | 11 02 | 16 43 | 22 22 | 4 02 | शत | 7-8 | 12 16 | 17 55 | 23 35 | 5 14 |
| 9-10 | मूला | 7 37 | 13 25 | 19 14 | 1 02 | श्रवण | 8-9 | 9 42 | 15 21 | 21 00 | 2 39 | पू.षा. | 8-9 | 10 54 | 16 38 | 22 21 | 4 03 |
| 10-अक्षु. | पू.षा. | 6 50 | 12 33 | 18 15 | 23 58 | धनिष्ठा | 9-10 | 8 18 | 13 57 | 19 36 | 1 15 | उ.षा. | 9-10 | 9 49 | 15 37 | 21 24 | 3 12 |
| 11-अक्षु. | उ.षा. | 5 41 | 11 20 | 16 57 | 22 35 | शत | 10 नक्षु. | 6 54 | 12 33 | 18 13 | 23 52 | रेवती | 10-11 | 9 00 | 14 53 | 20 45 | 2 37 |
| 12-अक्षु. | श्रवण | 4 13 | 9 47 | 15 21 | 20 55 | पू.षा. | 11 नक्षु. | 5 31 | 11 11 | 16 52 | 22 32 | अश्विनी | 11-12 | 8 30 | 14 27 | 20 23 | 2 20 |
| 13 अक्षु. | धनिष्ठा | 2 29 | 8 01 | 13 33 | 19 04 | उ.षा. | 12 नक्षु. | 4 13 | 8 55 | 13 38 | 18 20 | भरणी | 12-13 | 8 16 | 14 17 | 20 18 | 2 19 |
| 14 अक्षु. | शत | 0 35 | 6 05 | 11 36 | 17 06 | रेवती | 13 नक्षु. | 23 02 | 5 47 | 12 31 | 19 16 | कृत्तिका | 13-14 | 8 20 | 14 24 | 20 31 | 2 38 |
| 14-15 | पू.षा. | 22 36 | 4 06 | 9 37 | 15 07 | अश्विनी | 14 नक्षु. | 2 01 | 7 50 | 13 38 | 19 27 | रोहिणी | 14-15 | 8 44 | 14 56 | 21 07 | 3 18 |
| 15-16 | उ.षा. | 20 38 | 2 11 | 7 43 | 13 16 | भरणी | 15 नक्षु. | 1 15 | 7 09 | 13 02 | 18 55 | मृग | 15-16 | 9 30 | 15 48 | 22 02 | 4 21 |
| 16-17 | रेवती | 18 48 | 0 25 | 6 01 | 11 38 | कृत्तिका | 16 नक्षु. | 0 49 | 6 46 | 12 47 | 18 48 | आर्द्रा | 16-17 | 10 40 | 17 04 | 23 29 | 5 54 |
| 17-18 | अश्वि. | 17 14 | 22 57 | 4 39 | 10 21 | रोहिणी | 17 नक्षु. | 0 48 | 6 56 | 13 03 | 19 11 | पुष्य | 17-18 | 12 18 | 18 50 | 1 20 | 7 50 |
| 18-19 | भरणी | 16 04 | 21 54 | 3 45 | 9 35 | मृग | 18 नक्षु. | 1 18 | 7 32 | 13 45 | 20 03 | अश्लेषा | 18-19 | 14 24 | 21 02 | 3 40 | 10 19 |
| 19-20 | कृत्तिका | 15 25 | 21 21 | 3 22 | 9 22 | आर्द्रा | 19 नक्षु. | 2 21 | 8 46 | 15 11 | 21 36 | मघा | 19-20 | 16 57 | 23 41 | 6 24 | 13 08 |
| 20-21 | रोहिणी | 15 23 | 21 32 | 3 42 | 9 52 | पुन | 20 नक्षु. | 4 01 | 10 34 | 17 06 | 23 38 | पू.षा. | 20-21 | 19 51 | 2 37 | 9 24 | 16 10 |
| 21-22 | मृग | 16 01 | 22 17 | 4 36 | 10 59 | पुष्य | 21-22 | 6 14 | 12 54 | 19 35 | 2 15 | उ.फा. | 21-22 | 22 56 | 5 42 | 12 29 | 19 15 |
| 22-23 | आर्द्रा | 17 21 | 23 50 | 6 20 | 12 49 | अश्लेषा | 22-23 | 8 55 | 15 39 | 22 24 | 5 09 | हस्त | 22-23 | 2 01 | 8 45 | 15 26 | 22 08 |
| 23-24 | पुन | 19 19 | 1 57 | 8 34 | 15 10 | मघा | 23-24 | 11 53 | 18 39 | 1 25 | 8 10 | चित्रा | 23-24 | 4 49 | 11 24 | 17 59 | 0 33 |
| 24-25 | पुष्य | 21 50 | 4 33 | 11 16 | 17 59 | पू.षा. | 24-25 | 14 56 | 21 39 | 4 21 | 11 04 | स्वाती | 24-25 | 7 08 | 13 34 | 20 01 | 2 22 |
| 26 अक्षु. | अश्लेषा | 0 42 | 7 27 | 14 12 | 20 57 | उ.फा. | 25-26 | 17 47 | 0 26 | 7 02 | 13 39 | विशाखा | 25-26 | 8 43 | 14 55 | 21 06 | 3 18 |
| 27 अक्षु. | मघा | 3 42 | 10 26 | 17 10 | 23 54 | हस्त | 26-27 | 20 13 | 2 41 | 9 08 | 15 35 | अनुराधा | 26-27 | 9 30 | 15 29 | 21 29 | 3 32 |
| 28-29 | पू.षा. | 6 38 | 13 17 | 19 57 | 2 36 | चित्रा | 27-28 | 22 03 | 4 22 | 10 42 | 16 58 | ज्येष्ठा | 27-28 | 9 27 | 15 14 | 21 02 | 2 49 |
| 29-30 | उ.फा. | 9 15 | 15 50 | 22 21 | 4 53 | स्वाती | 28-29 | 23 10 | 5 16 | 11 22 | 17 28 | मूला | 28-29 | 8 36 | 14 13 | 19 50 | 1 27 |
| 30-31 | हस्त | 11 26 | 17 50 | 0 15 | 6 39 | विशाखा | 29-30 | 23 34 | 5 30 | 11 26 | 17 24 | पू.षा. | 29-30 | 7 04 | 12 33 | 18 03 | 23 32 |
| | | | | | | | | | | | | | | 5 01 | 10 25 | 15 50 | 21 14 |

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

| चन्द्र नक्षत्र चरण | | 1 | 2 | 3 | 4 | चन्द्र नक्षत्र चरण | | 1 | 2 | 3 | 4 |
|--------------------|----------|---------|---------|---------|---------|--------------------|----------|---------|---------|---------|---------|
| जनवरी 2006 ई. | नक्षत्र | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | फरवरी 2006 ई. | नक्षत्र | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. |
| | | | | | | | | | | | |
| 1 जन. | उ. भा. | 2 38 | 8 00 | 13 22 | 18 44 | 1 फर. | पू. भा. | 2 14 | 7 38 | 13 00 | 18 23 |
| 2 जन. | श्रवण | 0 06 | 5 28 | 10 50 | 16 12 | 1-2 | उ. भा. | 23 49 | 5 20 | 10 51 | 16 22 |
| 2-3 | धनिष्ठा | 21 34 | 2 59 | 8 22 | 13 48 | 2-3 | रेवती | 21 53 | 3 33 | 9 13 | 14 52 |
| 3-4 | शत | 19 14 | 0 44 | 6 13 | 11 43 | 3-4 | अश्विनी | 20 32 | 2 22 | 8 11 | 14 01 |
| 4-5 | पू. भा. | 17 13 | 22 49 | 4 25 | 09 58 | 4-5 | भरणी | 19 50 | 1 49 | 7 48 | 13 48 |
| 5-6 | उ. भा. | 15 37 | 21 20 | 3 04 | 8 47 | 5-6 | कृतिका | 19 47 | 1 53 | 8 04 | 14 14 |
| 6-7 | रेवती | 14 30 | 20 21 | 2 11 | 8 02 | 6-7 | रोहिणी | 20 23 | 2 41 | 8 59 | 15 16 |
| 7-8 | अश्विनी | 13 53 | 19 51 | 1 49 | 7 47 | 7-8 | मृग | 21 34 | 3 58 | 10 21 | 16 48 |
| 8-9 | भरणी | 13 45 | 19 50 | 1 55 | 8 00 | 8-9 | आर्द्रा | 23 15 | 5 47 | 12 18 | 18 50 |
| 9-10 | कृतिका | 14 05 | 20 14 | 2 28 | 8 40 | 10 फर. | पुनर्व | 1 22 | 7 59 | 14 35 | 21 10 |
| 10-11 | रोहिणी | 14 51 | 21 08 | 3 26 | 9 43 | 11 फर. | पुष्य | 3 49 | 10 30 | 17 10 | 23 51 |
| 11-12 | मृग | 16 00 | 22 23 | 4 43 | 11 07 | 12-13 | अश्लेषा | 6 32 | 13 16 | 19 59 | 2 43 |
| 12-13 | आर्द्रा | 17 31 | 23 59 | 6 28 | 12 56 | 13-14 | मघा | 9 27 | 16 13 | 22 59 | 5 45 |
| 13-14 | पुनर्व | 19 24 | 1 57 | 8 30 | 15 02 | 14-15 | पू. भा. | 12 31 | 19 17 | 2 04 | 8 50 |
| 14-15 | पुष्य | 21 37 | 4 15 | 10 54 | 17 32 | 15-16 | उ. भा. | 15 37 | 22 23 | 5 08 | 11 53 |
| 16 जन. | अश्लेषा | 0 11 | 6 54 | 13 37 | 20 20 | 16-17 | हस्त | 18 38 | 1 20 | 8 03 | 14 45 |
| 17 जन. | मघा | 3 03 | 9 49 | 16 35 | 23 21 | 17-18 | चित्रा | 21 27 | 4 04 | 10 44 | 17 18 |
| 18-19 | पू. भा. | 6 07 | 12 54 | 19 42 | 2 29 | 18-19 | स्वाती | 23 54 | 6 23 | 12 51 | 19 20 |
| 19-20 | उ. भा. | 9 16 | 16 02 | 22 47 | 5 33 | 20 फर. | विशाखा | 1 49 | 8 08 | 14 29 | 20 50 |
| 20-21 | हस्त | 12 18 | 18 59 | 1 39 | 8 20 | 21 फर. | अनुराधा | 3 05 | 9 12 | 15 20 | 21 27 |
| 21-22 | चित्रा | 15 00 | 21 35 | 4 10 | 10 39 | 22 फर. | ज्येष्ठा | 3 34 | 9 30 | 15 25 | 21 21 |
| 22-23 | स्वाती | 17 10 | 23 32 | 5 53 | 12 15 | 23 फर. | मूला | 3 16 | 9 00 | 14 44 | 20 28 |
| 23-24 | विशा. | 18 37 | 0 48 | 6 58 | 13 09 | 24 फर. | पू. भा. | 2 12 | 7 46 | 13 19 | 18 53 |
| 24-25 | अनुराधा | 19 13 | 1 09 | 7 05 | 13 01 | 25 फर. | उ. भा. | 0 26 | 5 54 | 11 17 | 16 43 |
| 25-26 | ज्येष्ठा | 18 57 | 0 41 | 6 24 | 12 08 | 26 फर. | श्रवण | 22 07 | 3 26 | 8 45 | 14 04 |
| 26-27 | मूला | 17 52 | 23 25 | 4 58 | 10 31 | 27 फर. | धनिष्ठा | 19 23 | 0 38 | 5 54 | 11 09 |
| 27-28 | पू. भा. | 16 04 | 21 28 | 2 53 | 8 17 | 28-1 मा. | शत | 16 24 | 21 39 | 2 53 | 8 08 |
| 28-29 | उ. भा. | 13 41 | 19 01 | 0 19 | 5 38 | | पू. भा. | 13 23 | 18 40 | 23 55 | 5 11 |
| 29-30 | श्रव | 10 55 | 16 11 | 21 26 | 2 42 | | | | | | |
| 30 जन. | धनि | 7 58 | 13 14 | 18 28 | 23 45 | | | | | | |
| 31 जन. | शत | 5 01 | 10 19 | 15 38 | 20 56 | | | | | | |

प्रातः साढ़े पाँच (5/30 घं. मिं.) से किसी अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करें

यदि आपको प्रातः साढ़े पाँच बजे के ग्रह स्पष्ट के अतिरिक्त किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों, तो नीचे लिखी तालिका (Table) का प्रयोग करके अभीष्ट समय के ग्रह स्पष्ट प्राप्त कर सकते हैं—मान लीजिए, आपको 5 अप्रैल, 2005 ई. की दोपहर एक (1) बजे का सूर्य स्पष्ट करना है। आगामी पृष्ठों में 5 अप्रैल के सामने सूर्य स्पष्ट 11-21-22-36 राशि-अंशादि लिखे गए हैं। जो कि प्रातः साढ़े पाँच बजे के हैं। हमें दोपहर 1 अर्थात् 13 बजे के सूर्य स्पष्ट चाहिए। तब (13) से साढ़े पाँच का अन्तर 7 घंटे 30 मिनट हुआ। इस प्रकार अब 7 घंटे 30 मिनट की गति 5 अप्रैल में जोड़ दें, तो हमें दोपहर 1 बजे का स्पष्ट प्राप्त हो जाएगा। (6) अप्रैल से 5 अप्रैल का सूर्य स्पष्ट घटा देने से हमें सूर्य की दैनिक गति (59'.05") प्राप्त हुई। इस दैनिक गति द्वारा नीचे लिखी तालिका में 7 घंटे की गति (17.12) कला तथा 30 मिनट की गति (1.14) कला प्राप्त हुई। इस प्रकार साढ़े सात घण्टे की गति (18'.26) कलादि को 5 अप्रैल के सूर्य स्पष्ट में जमा कर देने पर हमें 5 अप्रैल की दुप. एक बजे का सूर्य स्पष्ट (11.21.41.02) प्राप्त हो जाएगा॥ ग्रहस्पष्ट करने की अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी पुस्तक ज्योतिषी तत्त्व (गणित खण्ड) का अध्ययन करें॥

यहाँ की दैनिक गति के अनुसार प्रति घण्टा मिनटादि की तालिका

| दैनिक गति (24 घं.) | गति (30 मिं.) | गति (1 घं.) | गति (2 घं.) | गति (3 घं.) | गति (4 घं.) | गति (5 घं.) | गति (6 घं.) | गति (7 घं.) | गति (8 घं.) | गति (9 घं.) |
|--------------------|---------------|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|
| कला | क. वि. | क. वि. | क. वि. | क. वि. | क. वि. | क. वि. | क. वि. | क. वि. | क. वि. | क. वि. |
| 3' | 0.04 | 0.07 | 0.15 | 0.22 | 0.30 | 0.37 | 0.45 | 0.52 | 1.00 | 1.07 |
| 5' | 0.06 | 0.12 | 0.25 | 0.37 | 0.50 | 1.02 | 1.11 | 1.27 | 1.40 | 1.52 |
| 7' | 0.09 | 0.17 | 0.35 | 0.52 | 1.10 | 1.27 | 1.45 | 2.02 | 2.20 | 2.37 |
| 9' | 0.11 | 0.22 | 0.45 | 1.07 | 1.30 | 1.52 | 2.15 | 2.37 | 3.00 | 3.22 |
| 11' | 0.14 | 0.27 | 0.55 | 1.22 | 1.50 | 2.17 | 2.45 | 3.12 | 3.40 | 4.07 |
| 13' | 0.16 | 0.32 | 1.05 | 1.37 | 2.10 | 2.42 | 3.15 | 3.47 | 4.20 | 4.52 |
| 15' | 0.19 | 0.37 | 1.15 | 1.52 | 2.30 | 3.07 | 3.45 | 4.22 | 5.00 | 5.37 |
| 17' | 0.21 | 0.42 | 1.25 | 2.07 | 2.50 | 3.32 | 4.15 | 4.57 | 5.40 | 6.22 |
| 19' | 0.24 | 0.47 | 1.35 | 2.22 | 3.10 | 3.57 | 4.45 | 5.32 | 6.20 | 7.07 |
| 21' | 0.26 | 0.52 | 1.45 | 2.37 | 3.30 | 4.22 | 5.15 | 6.07 | 7.00 | 7.52 |
| 23' | 0.29 | 0.57 | 1.55 | 2.52 | 3.50 | 4.47 | 5.45 | 6.42 | 7.40 | 8.37 |
| 25' | 0.31 | 1.02 | 2.05 | 3.07 | 4.10 | 5.12 | 6.15 | 7.17 | 8.20 | 9.22 |
| 27' | 0.34 | 1.07 | 2.15 | 3.22 | 4.30 | 5.37 | 6.45 | 7.52 | 9.00 | 10.07 |
| 29' | 0.36 | 1.12 | 2.25 | 3.37 | 4.50 | 6.02 | 7.15 | 8.27 | 9.40 | 10.52 |
| 31' | 0.39 | 1.17 | 2.35 | 3.52 | 5.10 | 6.27 | 7.45 | 9.02 | 10.20 | 11.37 |
| 33' | 0.41 | 1.22 | 2.45 | 4.07 | 5.30 | 6.52 | 8.15 | 9.37 | 11.00 | 12.22 |
| 35' | 0.44 | 1.27 | 2.55 | 4.22 | 5.50 | 7.17 | 8.45 | 10.12 | 11.40 | 13.07 |
| 37' | 0.46 | 1.32 | 3.05 | 4.37 | 6.10 | 7.42 | 9.15 | 10.47 | 12.20 | 13.52 |
| 39' | 0.49 | 1.37 | 3.15 | 4.52 | 6.30 | 8.07 | 9.45 | 11.22 | 13.00 | 14.37 |
| 41' | 0.51 | 1.42 | 3.25 | 5.07 | 6.50 | 8.32 | 10.15 | 11.57 | 13.40 | 15.22 |
| 43' | 0.54 | 1.47 | 3.35 | 5.22 | 7.10 | 8.57 | 10.45 | 12.32 | 14.20 | 16.07 |
| 45' | 0.56 | 1.52 | 3.45 | 5.37 | 7.30 | 9.22 | 11.15 | 13.07 | 15.00 | 16.52 |
| 47' | 0.59 | 1.57 | 3.55 | 5.52 | 7.50 | 9.47 | 11.45 | 13.42 | 15.40 | 17.37 |
| 49' | 1.01 | 2.02 | 4.05 | 6.07 | 8.10 | 10.12 | 12.15 | 14.17 | 16.20 | 18.22 |
| 51' | 1.04 | 2.07 | 4.15 | 6.22 | 8.30 | 10.37 | 12.45 | 14.52 | 17.00 | 19.07 |
| 53' | 1.06 | 2.12 | 4.25 | 6.37 | 8.50 | 11.02 | 13.15 | 15.27 | 17.40 | 19.52 |
| 55' | 1.09 | 2.17 | 4.35 | 6.52 | 9.10 | 11.27 | 13.45 | 16.02 | 18.20 | 20.37 |
| 57' | 1.11 | 2.22 | 4.45 | 7.07 | 9.30 | 11.52 | 14.15 | 16.37 | 19.00 | 21.22 |
| 58' | 1.12 | 2.25 | 4.50 | 7.15 | 9.40 | 12.05 | 14.30 | 16.55 | 19.20 | 21.45 |
| 59' | 1.14 | 2.27 | 4.55 | 7.27 | 9.50 | 12.17 | 14.45 | 17.12 | 19.40 | 22.07 |
| 60' | 1.15 | 2.30 | 5.00 | 7.30 | 10.00 | 12.30 | 15.00 | 17.30 | 20.00 | 22.30 |

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिनट बजे (भा.सं.टा.) वि. संवत् 2062 (सन् 2005-06 ई.)

(1 अप्रै. से 4 मई तक) 1 अप्रैल, 2005 ई. को अयनांश 23°/55'/42" 1 मई, 2005 ई. को अयनांश 23°/55'/46"

| (1 अप्रै. से 4 मई तक) 1 अप्रैल, 2005 ई. का अथवा राशि 25° 35' 42" | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|--|--------|-------------|--------|---------------|--------|-------------|--------|-------------|--------|-------------|--------|---------------|--------|------------|--------|-------------|--------|------------|--------|------------|--------|-----------------------|---------|-----------|----------|----|
| ता. | अप्रै. | सूर्य (Sun) | | चन्द्र (Moon) | | मंगल (Mars) | | बुध (Merc.) | | गुरु (Jup.) | | शुक्र (Venus) | | शनि (Sat.) | | राहु (Rahu) | | सू. क्रां. | | चं. क्रां. | | जालन्धर (भा. सं. टा.) | | चंद्रास्त | चंद्रोदय | |
| | | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | सू. क्रां. | अं. क. | चं. क्रां. | अं. क. | घं. मि. | घं. मि. | | | |
| 1 | 1 | 11 17 25 | 59 | 08 03 50 | 51 | 09 14 12 | 29 | 11 13 10 | 26 | 5 20 22 | 57 | 11 17 39 | 02 | 2 26 33 | 21 | 11 29 37 | 50 | +4 30 | -28 12 | 0 46 | 10 32 | 1 | 10 32 | 1 | 1 | |
| 2 | 2 | 11 18 25 | 11 | 08 17 57 | 27 | 09 14 55 | 59 | 11 12 21 | 29 | 5 20 15 | 14 | 11 18 53 | 32 | 2 26 34 | 29 | 11 29 34 | 39 | +4 53 | -28 04 | 1 49 | 11 38 | 2 | 11 38 | 2 | 2 | |
| 3 | 3 | 11 19 24 | 21 | 09 02 11 | 24 | 09 15 39 | 29 | 11 11 34 | 49 | 5 20 07 | 31 | 11 20 08 | 00 | 2 26 35 | 44 | 11 29 31 | 28 | +5 16 | -26 06 | 2 45 | 12 46 | 3 | 12 46 | 3 | 3 | |
| 4 | 4 | 11 20 23 | 29 | 09 16 30 | 13 | 09 16 23 | 00 | 11 10 51 | 15 | 5 19 59 | 47 | 11 21 22 | 28 | 2 26 37 | 06 | 11 29 28 | 17 | +5 39 | -22 28 | 3 33 | 13 57 | 4 | 13 57 | 4 | 4 | |
| 5 | 5 | 11 21 22 | 36 | 10 00 50 | 43 | 09 17 06 | 32 | 11 10 11 | 25 | 5 19 52 | 03 | 11 22 36 | 55 | 2 26 38 | 35 | 11 29 25 | 07 | +6 02 | -17 29 | 4 14 | 15 06 | 5 | 15 06 | 5 | 5 | |
| 6 | 6 | 11 22 21 | 41 | 10 15 09 | 05 | 09 17 50 | 04 | 11 09 35 | 52 | 5 19 44 | 20 | 11 23 51 | 22 | 2 26 40 | 08 | 11 29 21 | 56 | +6 24 | -11 33 | 4 49 | 16 14 | 6 | 16 14 | 6 | 6 | |
| 7 | 7 | 11 23 20 | 43 | 10 29 20 | 56 | 09 18 33 | 36 | 11 09 05 | 02 | 5 19 36 | 37 | 11 25 05 | 47 | 2 26 41 | 50 | 11 29 18 | 45 | +6 47 | -05 04 | 5 21 | 17 20 | 7 | 17 20 | 7 | 7 | |
| 8 | 8 | 11 24 19 | 44 | 11 13 22 | 03 | 09 19 17 | 09 | 11 08 39 | 14 | 5 19 28 | 55 | 11 26 20 | 11 | 2 26 43 | 36 | 11 29 15 | 34 | +7 10 | +01 36 | 5 51 | 18 23 | 8 | 18 23 | 8 | 8 | |
| 9 | 9 | 11 25 18 | 43 | 11 27 08 | 33 | 09 20 00 | 42 | 11 08 18 | 40 | 5 19 21 | 15 | 11 27 34 | 34 | 2 26 45 | 30 | 11 29 12 | 24 | +7 32 | +08 04 | 6 21 | 19 27 | 9 | 19 27 | 9 | 9 | |
| 10 | 10 | 11 26 17 | 40 | 00 10 37 | 42 | 09 20 44 | 15 | 11 08 03 | 28 | 5 19 13 | 36 | 11 28 48 | 56 | 2 26 47 | 31 | 11 29 09 | 13 | +7 54 | +14 03 | 6 53 | 20 30 | 10 | 20 30 | 10 | 10 | |
| 11 | 11 | 11 27 16 | 35 | 00 23 47 | 53 | 09 21 27 | 49 | 11 07 53 | 40 | 5 19 05 | 59 | 00 00 03 | 17 | 2 26 49 | 37 | 11 29 06 | 02 | +8 17 | +19 16 | 7 26 | 21 33 | 11 | 21 33 | 11 | 11 | |
| 12 | 12 | 11 28 15 | 28 | 01 06 38 | 56 | 09 22 11 | 22 | 11 07 49 | 18 | 5 18 58 | 25 | 0 01 17 | 37 | 2 26 51 | 50 | 11 29 02 | 51 | +8 38 | +23 26 | 8 06 | 22 35 | 12 | 22 35 | 12 | 12 | |
| 13 | 13 | 11 29 14 | 19 | 01 19 11 | 58 | 09 22 54 | 56 | 11 07 50 | 13 | 5 18 50 | 53 | 0 02 31 | 56 | 2 26 54 | 10 | 11 28 59 | 40 | +9 01 | +26 25 | 8 47 | 23 34 | 13 | 23 34 | 13 | 13 | |
| 14 | 14 | 00 00 13 | 07 | 02 01 29 | 26 | 09 23 38 | 30 | 11 07 56 | 21 | 5 18 43 | 25 | 0 03 46 | 13 | 2 26 56 | 34 | 11 28 56 | 30 | +9 22 | +28 03 | 9 34 | --- | 14 | --- | 14 | 14 | |
| 15 | 15 | 00 01 11 | 54 | 02 13 34 | 40 | 09 24 22 | 05 | 11 08 07 | 33 | 5 18 35 | 59 | 0 05 00 | 30 | 2 26 59 | 05 | 11 28 53 | 19 | +9 44 | +28 19 | 10 27 | 0 30 | 15 | 0 30 | 15 | 15 | |
| 16 | 16 | 00 02 10 | 37 | 02 25 31 | 41 | 09 25 05 | 38 | 11 08 23 | 40 | 5 18 28 | 38 | 0 06 14 | 45 | 2 27 01 | 43 | 11 28 50 | 08 | +10 05 | +27 15 | 11 21 | 1 25 | 16 | 1 25 | 16 | 16 | |
| 17 | 17 | 00 03 09 | 18 | 03 07 24 | 54 | 09 25 49 | 12 | 11 08 44 | 30 | 5 18 21 | 20 | 0 07 28 | 59 | 2 27 04 | 27 | 11 28 46 | 57 | +10 27 | +24 57 | 12 16 | 2 08 | 17 | 2 08 | 17 | 17 | |
| 18 | 18 | 00 04 07 | 59 | 03 19 18 | 59 | 09 26 32 | 44 | 11 09 09 | 51 | 5 18 14 | 08 | 0 08 43 | 12 | 2 27 07 | 16 | 11 28 43 | 46 | +10 47 | +21 35 | 13 14 | 2 44 | 18 | 2 44 | 18 | 18 | |
| 19 | 19 | 00 05 06 | 36 | 04 01 18 | 31 | 09 27 16 | 19 | 11 09 39 | 35 | 5 18 06 | 58 | 0 09 57 | 23 | 2 27 10 | 11 | 11 28 40 | 35 | +11 09 | +17 18 | 14 12 | 3 18 | 19 | 3 18 | 19 | 19 | |
| 20 | 20 | 00 06 05 | 10 | 04 13 27 | 45 | 09 27 59 | 53 | 11 10 13 | 25 | 5 17 59 | 53 | 0 11 11 | 33 | 2 27 13 | 12 | 11 28 37 | 24 | +11 29 | +12 17 | 15 10 | 3 46 | 20 | 3 46 | 20 | 20 | |
| 21 | 21 | 00 07 03 | 43 | 04 25 50 | 27 | 09 28 43 | 26 | 11 10 51 | 17 | 5 17 52 | 55 | 0 12 25 | 43 | 2 27 16 | 20 | 11 28 34 | 13 | +11 49 | +06 42 | 16 07 | 4 13 | 21 | 4 13 | 21 | 21 | |
| 22 | 22 | 00 08 02 | 14 | 05 08 29 | 31 | 09 29 26 | 59 | 11 11 32 | 54 | 5 17 46 | 01 | 0 13 39 | 49 | 2 27 19 | 33 | 11 28 31 | 02 | +12 09 | +00 44 | 17 06 | 4 40 | 22 | 4 40 | 22 | 22 | |
| 23 | 23 | 00 09 00 | 43 | 05 21 26 | 48 | 10 00 10 | 33 | 11 12 18 | 11 | 5 17 39 | 13 | 0 14 53 | 55 | 2 27 22 | 52 | 11 28 27 | 51 | +12 30 | -05 25 | 18 07 | 5 07 | 23 | 5 07 | 23 | 23 | |
| 24 | 24 | 00 09 59 | 10 | 06 04 42 | 58 | 10 00 54 | 05 | 11 13 06 | 54 | 5 17 32 | 31 | 0 16 08 | 01 | 2 27 26 | 16 | 11 28 24 | 40 | +12 50 | -11 29 | 19 11 | 5 38 | 24 | 5 38 | 24 | 24 | |
| 25 | 25 | 00 10 57 | 35 | 06 18 17 | 19 | 10 01 37 | 39 | 11 13 58 | 54 | 5 17 25 | 54 | 0 17 22 | 05 | 2 27 29 | 46 | 11 28 21 | 29 | +13 10 | -17 10 | 20 18 | 6 10 | 25 | 6 10 | 25 | 25 | |
| 26 | 26 | 00 11 55 | 59 | 07 02 07 | 45 | 10 02 21 | 12 | 11 14 54 | 06 | 5 17 19 | 24 | 0 18 36 | 09 | 2 27 33 | 21 | 11 28 18 | 18 | +13 29 | -22 05 | 21 28 | 6 49 | 26 | 6 49 | 26 | 26 | |
| 27 | 27 | 00 12 54 | 20 | 07 16 11 | 10 | 10 03 04 | 44 | 11 15 52 | 19 | 5 17 13 | 01 | 0 19 50 | 13 | 2 27 37 | 02 | 11 28 15 | 07 | +13 49 | -25 48 | 22 37 | 7 35 | 27 | 7 35 | 27 | 27 | |
| 28 | 28 | 00 13 52 | 40 | 08 00 23 | 42 | 10 03 48 | 17 | 11 16 53 | 29 | 5 17 06 | 43 | 0 21 04 | 12 | 2 27 40 | 47 | 11 28 11 | 56 | +14 07 | -27 56 | 23 43 | 8 29 | 28 | 8 29 | 28 | 28 | |
| 29 | 29 | 00 14 50 | 58 | 08 14 41 | 09 | 10 04 31 | 48 | 11 17 57 | 24 | 5 17 00 | 33 | 0 22 18 | 12 | 2 27 44 | 40 | 11 28 08 | 45 | +14 26 | -28 15 | --- | 9 32 | 29 | --- | 9 32 | 29 | 29 |
| 30 | 30 | 00 15 49 | 15 | 08 28 59 | 33 | 10 05 15 | 21 | 11 19 04 | 00 | 5 16 54 | 31 | 0 23 32 | 12 | 2 27 48 | 37 | 11 28 05 | 34 | +14 44 | -26 40 | 0 09 | 10 41 | 30 | 10 41 | 30 | 30 | |
| मई | मई | 0 16 47 | 32 | 9 13 15 | 30 | 10 05 58 | 53 | 11 20 13 | 15 | 5 16 48 | 37 | 0 24 46 | 10 | 2 27 52 | 39 | 11 28 02 | 23 | +15 02 | -23 24 | 1 50 | 11 51 | मई | 1 50 | 11 51 | मई | मई |
| 2 | 2 | 0 17 45 | 44 | 9 27 26 | 14 | 10 06 42 | 22 | 11 21 24 | 59 | 5 16 42 | 48 | 0 26 00 | 08 | 2 27 56 | 47 | 11 27 59 | 13 | +15 20 | -18 45 | 2 12 | 13 00 | 2 | 2 12 | 13 00 | 2 | 2 |
| 3 | 3 | 0 18 43 | 56 | 10 11 29 | 42 | 10 07 25 | 52 | 11 22 39 | 11 | 5 16 37 | 09 | 0 27 14 | 05 | 2 28 01 | 00 | 11 27 56 | 02 | +15 38 | -13 07 | 2 48 | 14 07 | 3 | 2 48 | 14 07 | 3 | 3 |
| 4 | 4 | 0 19 42 | 07 | 10 25 24 | 22 | 10 08 09 | 22 | 11 23 55 | 42 | 5 16 31 | 37 | 0 28 27 | 59 | 2 28 05 | 18 | 11 27 52 | 51 | +15 56 | -06 53 | 3 20 | 15 13 | 4 | 3 20 | 15 13 | 4 | 4 |

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिनट (5 मई से 10 जून 2005 ई. तक)

5 मई, 2005 ई. को अयनांश 23°/54'51"

| ता. मई | सूर्य (Sun) | | चन्द्र (Moon) | | मंगल (Mars) | | बुध (Merc.) | | गुरु (Jup.) | | शुक्र (Venus) | | शनि (Sat.) | | राहु (Rahu) | | सू. क्रां. | | चं. क्रां. | | जालंधर (भा. सैं. दा.) | | ५०५ मि |
|--------|-------------|--------|---------------|--------|-------------|--------|-------------|--------|-------------|--------|---------------|--------|------------|--------|-------------|--------|------------|--------|------------|--------|-----------------------|-----------|--------|
| | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | सू. क्रां. | अं. क. | चं. क्रां. | अं. क. | चंद्रोदय | चंद्रास्त | |
| 5 | 0 20 40 | 17 | 11 09 08 | 59 | 10 08 52 | 50 | 11 25 14 | 34 | 5 16 26 | 14 | 0 29 41 | 53 | 2 28 09 | 41 | 11 27 49 | 40 | +16 14 | -00 24 | +3 49 | -16 14 | 3 49 | 16 14 | 5 |
| 6 | 0 21 38 | 25 | 11 22 42 | 25 | 10 09 36 | 16 | 11 26 35 | 40 | 5 16 21 | 00 | 1 00 55 | 47 | 2 28 14 | 09 | 11 27 46 | 29 | +16 31 | +06 01 | +4 19 | -17 17 | 4 19 | 17 17 | 6 |
| 7 | 0 22 36 | 31 | 0 06 03 | 38 | 10 10 19 | 42 | 11 27 58 | 59 | 5 16 15 | 54 | 1 02 09 | 41 | 2 28 18 | 42 | 11 27 43 | 18 | +16 48 | +12 05 | +4 49 | -18 19 | 4 49 | 18 19 | 7 |
| 8 | 0 23 34 | 36 | 0 19 11 | 41 | 10 11 03 | 07 | 11 29 24 | 29 | 5 16 10 | 56 | 1 03 23 | 32 | 2 28 23 | 20 | 11 27 40 | 07 | +17 04 | +17 31 | +5 21 | -19 23 | 5 21 | 19 23 | 8 |
| 9 | 0 24 32 | 39 | 1 02 05 | 55 | 10 11 46 | 30 | 0 00 52 | 06 | 5 16 06 | 08 | 1 04 37 | 23 | 2 28 28 | 03 | 11 27 36 | 56 | +17 20 | +22 03 | +5 56 | -20 26 | 5 56 | 20 26 | 9 |
| 10 | 0 25 30 | 41 | 1 14 46 | 06 | 10 12 29 | 52 | 0 02 21 | 50 | 5 16 01 | 30 | 1 05 51 | 11 | 2 28 32 | 51 | 11 27 33 | 45 | +17 36 | +25 28 | +6 37 | -21 27 | 6 37 | 21 27 | 10 |
| 11 | 0 26 28 | 40 | 1 27 12 | 39 | 10 13 13 | 11 | 0 03 53 | 40 | 5 15 56 | 59 | 1 07 05 | 00 | 2 28 37 | 44 | 11 27 30 | 34 | +17 52 | +27 35 | +7 19 | -22 25 | 7 19 | 22 25 | 11 |
| 12 | 0 27 26 | 39 | 2 09 26 | 49 | 10 13 56 | 31 | 0 05 27 | 35 | 5 15 52 | 40 | 1 08 18 | 48 | 2 28 42 | 41 | 11 27 27 | 23 | +18 07 | +28 19 | +8 13 | -23 16 | 8 13 | 23 16 | 12 |
| 13 | 0 28 24 | 35 | 2 21 30 | 41 | 10 14 39 | 47 | 0 07 43 | 35 | 5 15 48 | 29 | 1 09 32 | 34 | 2 28 47 | 43 | 11 27 24 | 12 | +18 22 | +27 41 | +9 08 | --- | 9 08 | --- | 13 |
| 14 | 0 29 22 | 30 | 3 03 27 | 07 | 10 15 23 | 02 | 0 08 41 | 35 | 5 15 44 | 29 | 1 10 46 | 19 | 2 28 52 | 49 | 11 27 21 | 02 | +18 37 | +25 46 | +10 05 | -02 14 | 10 05 | 02 14 | 14 |
| 15 | 1 00 20 | 23 | 3 15 19 | 49 | 10 16 06 | 15 | 0 10 21 | 42 | 5 15 40 | 37 | 1 12 00 | 04 | 2 28 58 | 01 | 11 27 17 | 51 | +18 51 | +22 44 | +11 03 | -03 15 | 11 03 | 03 15 | 15 |
| 16 | 1 01 18 | 14 | 3 27 13 | 00 | 10 16 49 | 27 | 0 12 03 | 52 | 5 15 36 | 57 | 1 13 13 | 45 | 2 29 03 | 16 | 11 27 14 | 40 | +19 05 | +18 46 | +12 00 | -14 16 | 12 00 | 14 16 | 16 |
| 17 | 1 02 16 | 04 | 4 09 11 | 23 | 10 17 32 | 38 | 0 13 48 | 04 | 5 15 33 | 27 | 1 14 27 | 27 | 2 29 08 | 35 | 11 27 11 | 29 | +19 19 | +14 02 | +13 54 | -14 17 | 13 54 | 14 17 | 17 |
| 18 | 1 03 13 | 51 | 4 21 19 | 47 | 10 18 15 | 44 | 0 15 34 | 22 | 5 15 30 | 05 | 1 15 41 | 09 | 2 29 14 | 00 | 11 27 08 | 18 | +19 32 | +08 42 | +12 57 | -15 18 | 12 57 | 15 18 | 18 |
| 19 | 1 04 11 | 38 | 5 03 42 | 56 | 10 18 58 | 50 | 0 17 22 | 42 | 5 15 26 | 55 | 1 16 54 | 46 | 2 29 19 | 27 | 11 27 05 | 07 | +19 45 | +02 56 | +14 51 | -24 19 | 14 51 | 24 19 | 19 |
| 20 | 1 05 09 | 22 | 5 16 25 | 02 | 10 19 41 | 55 | 0 19 13 | 08 | 5 15 23 | 56 | 1 18 08 | 25 | 2 29 25 | 00 | 11 27 01 | 56 | +19 58 | -03 06 | +15 50 | -30 20 | 15 50 | 30 20 | 20 |
| 21 | 1 06 07 | 05 | 5 29 29 | 25 | 10 20 24 | 56 | 0 21 05 | 35 | 5 15 21 | 06 | 1 19 22 | 03 | 2 29 30 | 35 | 11 26 58 | 45 | +20 10 | -09 11 | +16 53 | -33 21 | 16 53 | 33 21 | 21 |
| 22 | 1 07 04 | 47 | 6 12 57 | 52 | 10 21 07 | 56 | 0 23 00 | 04 | 5 15 18 | 28 | 1 20 35 | 37 | 2 29 36 | 15 | 11 26 55 | 34 | +20 22 | -15 02 | +17 59 | -40 22 | 17 59 | 40 22 | 22 |
| 23 | 1 08 02 | 26 | 6 26 50 | 13 | 10 21 50 | 55 | 0 24 56 | 34 | 5 15 15 | 59 | 1 21 49 | 12 | 2 29 42 | 00 | 11 26 52 | 24 | +20 34 | -20 19 | +19 05 | -42 23 | 19 05 | 42 23 | 23 |
| 24 | 1 09 00 | 05 | 7 11 04 | 00 | 10 22 33 | 49 | 0 26 55 | 03 | 5 15 13 | 41 | 1 23 02 | 44 | 2 29 47 | 47 | 11 26 49 | 13 | +20 45 | -24 35 | +20 16 | -52 24 | 20 16 | 52 24 | 24 |
| 25 | 1 09 57 | 42 | 7 25 34 | 32 | 10 23 16 | 43 | 0 28 55 | 28 | 5 15 11 | 34 | 1 24 16 | 17 | 2 29 53 | 39 | 11 26 46 | 02 | +20 56 | -27 21 | +21 27 | -61 25 | 21 27 | 61 25 | 25 |
| 26 | 1 10 55 | 19 | 8 10 15 | 10 | 10 23 59 | 33 | 1 00 57 | 44 | 5 15 09 | 37 | 1 25 29 | 50 | 2 29 59 | 33 | 11 26 42 | 51 | +21 07 | -28 16 | +22 30 | -71 26 | 22 30 | 71 26 | 26 |
| 27 | 1 11 52 | 54 | 8 24 58 | 29 | 10 24 42 | 23 | 1 03 01 | 44 | 5 15 07 | 51 | 1 26 43 | 20 | 3 00 05 | 32 | 11 26 39 | 40 | +21 17 | -27 11 | +23 25 | -83 27 | 23 25 | 83 27 | 27 |
| 28 | 1 12 50 | 28 | 9 09 37 | 19 | 10 25 25 | 08 | 1 05 07 | 27 | 5 15 06 | 15 | 1 27 56 | 49 | 3 00 11 | 35 | 11 26 36 | 29 | +21 27 | -24 15 | --- | -94 28 | --- | 94 28 | 28 |
| 29 | 1 13 48 | 01 | 9 24 05 | 50 | 10 26 07 | 51 | 1 07 14 | 39 | 5 15 04 | 50 | 1 29 10 | 16 | 3 00 17 | 41 | 11 26 33 | 18 | +21 36 | -19 49 | +01 10 | -10 51 | 0 10 | 10 51 | 29 |
| 30 | 1 14 45 | 34 | 10 08 20 | 07 | 10 26 50 | 31 | 1 09 23 | 13 | 5 15 03 | 36 | 2 00 23 | 43 | 3 00 23 | 52 | 11 26 30 | 07 | +21 46 | -14 19 | +04 12 | -12 00 | 0 49 | 12 00 | 30 |
| 31 | 1 15 43 | 06 | 10 22 18 | 16 | 10 27 33 | 10 | 1 11 32 | 57 | 5 15 02 | 33 | 2 01 37 | 09 | 3 00 30 | 05 | 11 26 26 | 56 | +21 54 | -08 12 | +13 04 | -13 04 | 1 22 | 13 04 | 31 |
| जून | 1 16 40 | 36 | 11 05 59 | 56 | 10 28 15 | 42 | 1 13 43 | 40 | 5 15 01 | 39 | 2 02 50 | 35 | 3 00 36 | 22 | 11 26 23 | 45 | +22 02 | -01 47 | +15 21 | -14 10 | 1 52 | 14 10 | जून |
| 2 | 1 17 38 | 07 | 11 19 25 | 58 | 10 28 58 | 13 | 1 15 55 | 07 | 5 15 00 | 59 | 2 04 04 | 01 | 3 00 42 | 41 | 11 26 20 | 34 | +22 10 | +04 35 | +22 15 | -15 09 | 2 22 | 15 09 | 2 |
| 3 | 1 18 35 | 36 | 0 02 37 | 39 | 10 29 40 | 42 | 1 18 07 | 00 | 5 15 00 | 28 | 2 05 17 | 25 | 3 00 49 | 04 | 11 26 17 | 23 | +22 18 | +10 38 | +25 16 | -12 3 | 2 51 | 16 12 | 3 |
| 4 | 1 19 33 | 05 | 0 15 36 | 21 | 11 00 23 | 05 | 1 20 19 | 08 | 5 15 00 | 08 | 2 06 30 | 46 | 3 00 55 | 32 | 11 26 14 | 12 | +22 25 | +16 09 | +3 21 | -17 15 | 3 21 | 17 15 | 4 |
| 5 | 1 20 30 | 32 | 0 28 23 | 15 | 11 01 05 | 24 | 1 22 31 | 11 | 5 14 59 | 59 | 2 07 44 | 08 | 3 01 02 | 02 | 11 26 11 | 01 | +22 32 | +20 52 | +3 56 | -18 16 | 3 56 | 18 16 | 5 |
| 6 | 1 21 28 | 00 | 1 10 59 | 10 | 11 01 47 | 40 | 1 24 42 | 54 | 5 15 00 | 01 | 2 08 57 | 29 | 3 01 08 | 34 | 11 26 07 | 50 | +22 38 | +24 33 | +4 34 | -19 16 | 4 34 | 19 16 | 6 |
| 7 | 1 22 25 | 25 | 1 23 24 | 46 | 11 02 29 | 52 | 1 26 54 | 00 | 5 15 00 | 14 | 2 10 10 | 50 | 3 01 15 | 11 | 11 26 04 | 40 | +22 44 | +27 02 | +5 18 | -20 17 | 5 18 | 20 17 | 7 |
| 8 | 1 23 22 | 51 | 2 05 40 | 38 | 11 03 11 | 59 | 1 29 04 | 13 | 5 15 00 | 37 | 2 11 24 | 08 | 3 01 21 | 50 | 11 26 01 | 29 | +22 50 | +28 09 | +6 07 | -21 08 | 6 07 | 21 08 | 8 |
| 9 | 1 24 20 | 15 | 2 17 47 | 40 | 11 03 54 | 04 | 2 01 13 | 20 | 5 15 01 | 12 | 2 12 37 | 26 | 3 01 28 | 31 | 11 25 58 | 18 | +22 55 | +27 54 | +7 01 | -21 56 | 7 01 | 21 56 | 9 |
| 10 | 1 25 17 | 38 | 2 29 47 | 08 | 11 04 36 | 03 | 2 03 21 | 07 | 5 15 01 | 57 | 2 13 50 | 43 | 3 01 35 | 15 | 11 25 55 | 07 | -23 00 | +26 21 | +7 56 | -22 37 | 7 56 | 22 37 | 10 |

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिनट (11 जून से 17 जुला. तक)

1 जुलाई, 2005 ई. को अयनांश 23°55'57"

| दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिनट (11 जून से 17 जुला. तक) | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|-------------|-------------|---------------|------------|-------------|------------|-------------|-------------|-------------|--------|---------------|--------|------------|--------|-------------|--------|----------|--------|----------|--------|----------------------|----------|-----|
| ता. | सूर्य (Sun) | | चन्द्र (Moon) | | मंगल (Mars) | | बुध (Merc.) | | गुरु (Jup.) | | शुक्र (Venus) | | शनि (Sat.) | | राहु (Rahu) | | सू. कां. | | चं. कां. | | जलद्वय (आ. र्ह. दा.) | | दि० |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| जून | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | घं. मिं. | चं. मिं. | दि० |
| 11 | 1 26 15 01 | 3 11 41 00 | 11 05 17 58 | 2 05 27 23 | 5 15 02 54 | 2 15 03 59 | 3 01 42 02 | 11 25 51 56 | -23 04 | +23 37 | 8 53 | 23 12 | 11 | | | | | | | | | | |
| 12 | 1 27 12 22 | 3 23 31 59 | 11 05 59 46 | 2 07 31 55 | 5 15 04 00 | 2 16 17 13 | 3 01 48 51 | 11 25 48 46 | -23 08 | +19 55 | 9 51 | 23 44 | 12 | | | | | | | | | | |
| 13 | 1 28 09 43 | 4 05 23 34 | 11 06 41 32 | 2 09 34 38 | 5 15 05 17 | 2 17 30 27 | 3 01 55 44 | 11 25 45 35 | -23 12 | +15 25 | 10 48 | -- | 13 | | | | | | | | | | |
| 14 | 1 29 07 03 | 4 17 19 56 | 11 07 23 12 | 2 11 35 24 | 5 15 06 46 | 2 18 43 39 | 3 02 02 39 | 11 25 42 24 | -23 15 | +10 19 | 11 42 | 0 12 | 14 | | | | | | | | | | |
| 15 | 2 00 04 21 | 4 29 25 50 | 11 08 04 46 | 2 13 34 04 | 5 15 08 24 | 2 19 56 50 | 3 02 09 36 | 11 25 39 13 | -23 18 | +04 46 | 12 38 | 0 39 | 15 | | | | | | | | | | |
| 16 | 2 01 01 39 | 5 11 46 20 | 11 08 46 16 | 2 15 30 37 | 5 15 10 14 | 2 21 10 00 | 3 02 16 36 | 11 25 36 02 | -23 20 | -01 04 | 13 35 | 1 05 | 16 | | | | | | | | | | |
| 17 | 2 01 58 56 | 5 24 26 26 | 11 09 27 41 | 2 17 24 57 | 5 15 12 14 | 2 22 23 08 | 3 02 23 38 | 11 25 32 51 | -23 22 | -07 01 | 14 34 | 1 33 | 17 | | | | | | | | | | |
| 18 | 2 02 56 12 | 6 07 30 37 | 11 10 09 01 | 2 19 17 03 | 5 15 14 24 | 2 23 36 15 | 3 02 30 43 | 11 25 29 40 | -23 24 | -12 52 | 15 36 | 2 02 | 18 | | | | | | | | | | |
| 19 | 2 03 53 28 | 6 21 02 02 | 11 10 50 15 | 2 21 06 51 | 5 15 16 45 | 2 24 49 21 | 3 02 37 49 | 11 25 26 29 | -23 25 | -18 20 | 16 42 | 2 35 | 19 | | | | | | | | | | |
| 20 | 2 04 50 42 | 7 05 01 54 | 11 11 31 23 | 2 22 54 20 | 5 15 19 15 | 2 26 02 24 | 3 02 44 57 | 11 25 23 18 | -23 26 | -23 00 | 17 55 | 3 15 | 20 | | | | | | | | | | |
| 21 | 2 05 47 56 | 7 19 28 30 | 11 12 12 26 | 2 24 39 31 | 5 15 21 56 | 2 27 15 27 | 3 02 52 09 | 11 25 20 07 | -23 26 | -26 25 | 19 04 | 4 03 | 21 | | | | | | | | | | |
| 22 | 2 06 45 10 | 8 04 16 59 | 11 12 53 24 | 2 26 22 20 | 5 15 24 47 | 2 28 28 29 | 3 02 59 22 | 11 25 16 56 | -23 26 | -28 06 | 20 15 | 5 01 | 22 | | | | | | | | | | |
| 23 | 2 07 42 23 | 8 19 19 26 | 11 13 34 15 | 2 27 02 48 | 5 15 27 48 | 2 29 41 29 | 3 03 06 37 | 11 25 13 45 | -23 25 | -27 45 | 21 13 | 6 09 | 23 | | | | | | | | | | |
| 24 | 2 08 39 36 | 9 04 26 02 | 11 14 15 01 | 2 29 40 54 | 5 15 30 59 | 3 00 54 28 | 3 03 13 53 | 11 25 10 35 | -23 24 | -25 21 | 22 05 | 7 22 | 24 | | | | | | | | | | |
| 25 | 2 09 36 48 | 9 19 26 43 | 11 14 55 41 | 3 01 16 39 | 5 15 34 20 | 3 02 07 26 | 3 03 21 12 | 11 25 07 24 | -23 23 | -21 13 | 22 47 | 8 37 | 25 | | | | | | | | | | |
| 26 | 2 10 34 01 | 10 04 13 00 | 11 15 36 15 | 3 02 50 00 | 5 15 37 51 | 3 03 20 23 | 3 03 28 32 | 11 25 04 13 | -23 21 | -15 49 | 23 22 | 9 48 | 26 | | | | | | | | | | |
| 27 | 2 11 31 14 | 10 18 39 03 | 11 16 16 42 | 3 04 20 56 | 5 15 41 32 | 3 04 33 18 | 3 03 35 54 | 11 25 01 02 | -23 19 | -09 39 | 23 54 | 10 56 | 27 | | | | | | | | | | |
| 28 | 2 12 28 26 | 11 02 42 04 | 11 16 57 01 | 3 05 49 28 | 5 15 45 21 | 3 05 46 11 | 3 03 43 17 | 11 24 57 51 | -23 17 | -03 09 | -- | 12 01 | 28 | | | | | | | | | | |
| 29 | 2 13 25 39 | 11 16 21 56 | 11 17 37 15 | 3 07 15 34 | 5 15 49 22 | 3 01 59 04 | 3 03 50 43 | 11 24 54 40 | -23 14 | +03 20 | 0 25 | 13 03 | 29 | | | | | | | | | | |
| 30 | 2 14 22 51 | 11 29 40 19 | 11 18 17 21 | 3 08 39 12 | 5 15 53 30 | 3 08 11 56 | 3 03 58 10 | 11 24 51 29 | -23 10 | +09 30 | 0 53 | 14 04 | 30 | | | | | | | | | | |
| जुला | 2 15 20 04 | 0 12 40 00 | 11 18 57 20 | 3 10 00 20 | 5 15 57 49 | 3 09 24 47 | 3 04 05 38 | 11 24 48 18 | +23 07 | +15 07 | 1 24 | 15 06 | जुला | | | | | | | | | | |
| 2 | 2 16 17 16 | 0 25 24 01 | 11 19 37 11 | 3 11 18 56 | 5 16 02 18 | 3 10 37 37 | 3 04 13 08 | 11 24 45 08 | +23 03 | +19 59 | 1 57 | 16 08 | 2 | | | | | | | | | | |
| 3 | 2 17 14 29 | 1 07 55 12 | 11 20 16 54 | 3 12 34 57 | 5 16 06 56 | 3 11 50 25 | 3 04 20 40 | 11 24 41 57 | +22 58 | +23 51 | 2 33 | 17 09 | 3 | | | | | | | | | | |
| 4 | 2 18 11 42 | 1 20 15 57 | 11 20 56 29 | 3 13 48 20 | 5 16 11 44 | 3 13 03 12 | 3 04 28 13 | 11 24 38 46 | +22 53 | +26 35 | 3 14 | 18 09 | 4 | | | | | | | | | | |
| 5 | 2 19 08 55 | 2 02 28 13 | 11 21 35 54 | 3 14 58 59 | 5 16 16 39 | 3 14 15 57 | 3 04 35 46 | 11 24 35 35 | +22 48 | +28 00 | 4 02 | 19 04 | 5 | | | | | | | | | | |
| 6 | 2 20 06 09 | 2 14 33 23 | 11 22 15 12 | 3 16 06 52 | 5 16 21 45 | 3 15 28 42 | 3 04 43 52 | 11 24 32 24 | +22 42 | +28 04 | 4 53 | 19 55 | 6 | | | | | | | | | | |
| 7 | 2 21 03 22 | 2 26 32 39 | 11 22 54 21 | 3 17 11 56 | 5 16 27 00 | 3 16 41 25 | 3 04 50 57 | 11 24 29 13 | +22 36 | +26 49 | 5 49 | 20 38 | 7 | | | | | | | | | | |
| 8 | 2 22 00 36 | 3 08 27 13 | 11 23 33 20 | 3 18 14 03 | 5 16 32 24 | 3 17 54 06 | 3 04 58 35 | 11 24 26 02 | +22 29 | +24 21 | 6 46 | 21 15 | 8 | | | | | | | | | | |
| 9 | 2 22 57 49 | 3 20 18 33 | 11 24 12 11 | 3 19 13 08 | 5 16 37 55 | 3 19 06 45 | 3 05 06 12 | 11 24 22 51 | +22 22 | +20 51 | 7 43 | 21 47 | 9 | | | | | | | | | | |
| 10 | 2 23 55 03 | 4 02 08 35 | 11 24 50 52 | 3 20 09 05 | 5 16 43 27 | 3 20 19 24 | 3 05 13 51 | 11 24 19 40 | +22 15 | +16 32 | 8 40 | 22 16 | 10 | | | | | | | | | | |
| 11 | 2 24 52 16 | 4 14 00 01 | 11 25 29 23 | 3 21 01 48 | 5 16 49 27 | 3 21 32 00 | 3 05 21 31 | 11 24 16 29 | +22 07 | +11 35 | 9 35 | 22 43 | 11 | | | | | | | | | | |
| 12 | 2 25 49 29 | 4 25 56 11 | 11 26 07 45 | 3 21 51 10 | 5 16 55 26 | 3 22 44 36 | 3 05 29 12 | 11 24 13 18 | +21 59 | +06 11 | 10 31 | 23 08 | 12 | | | | | | | | | | |
| 13 | 2 26 46 43 | 5 08 01 07 | 11 26 45 56 | 3 22 37 02 | 5 17 01 33 | 3 23 57 09 | 3 05 36 53 | 11 24 10 07 | +21 51 | +00 29 | 11 27 | 23 34 | 13 | | | | | | | | | | |
| 14 | 2 27 43 56 | 5 20 19 31 | 11 27 23 56 | 3 23 19 17 | 5 17 07 49 | 3 25 09 41 | 3 05 44 36 | 11 24 06 56 | +21 42 | -05 20 | 12 22 | -- | 14 | | | | | | | | | | |
| 15 | 2 28 41 09 | 6 02 56 22 | 11 28 01 47 | 3 23 57 46 | 5 17 14 12 | 3 26 22 10 | 3 05 52 18 | 11 24 03 45 | +21 33 | -11 06 | 13 20 | 0 01 | 15 | | | | | | | | | | |
| 16 | 2 29 38 24 | 6 15 56 28 | 11 28 39 27 | 3 24 32 19 | 5 17 20 45 | 3 27 34 38 | 3 06 00 01 | 11 24 00 34 | +21 23 | -16 35 | 14 24 | 0 31 | 16 | | | | | | | | | | |
| 17 | 3 00 35 37 | 6 29 23 54 | 11 29 16 56 | 3 25 02 48 | 5 17 27 24 | 3 28 47 03 | 3 06 07 44 | 11 23 57 23 | +21 13 | -21 27 | 15 31 | 1 06 | 17 | | | | | | | | | | |

| ता. | सूर्य (Sun) | | चन्द्र (Moon) | | मंगल (Mars) | | बुध (Merc.) | | गुरु (Jup.) | | शुक्र (Venus) | | शनि (Sat.) | | राहु (Rahu) | | सू. क्रो. | | चं. क्रो. | | चंद्रोदय | | चंद्रास्त | | ५०' ६०" |
|-------|-------------|-------------|---------------|------------|-------------|------------|-------------|-------------|-------------|--------|---------------|--------|------------|--------|-------------|--------|-----------|--------|-----------|--------|----------|----------|-----------|----------|---------|
| | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | अं. क. | अं. क. | अं. क. | अं. क. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | |
| जुला. | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 18 | 3 01 32 51 | 7 13 20 57 | 11 29 54 15 | 3 25 29 04 | 5 17 34 12 | 3 29 59 27 | 3 06 15 28 | 11 23 54 12 | +21 03 | -25 18 | 16 41 | 1 48 | 18 | | | | | | | | | | | | |
| 19 | 3 02 30 05 | 7 27 47 25 | 0 00 31 22 | 3 25 50 59 | 5 17 41 09 | 4 01 11 49 | 3 06 23 13 | 11 23 51 01 | +20 52 | -27 42 | 17 51 | 2 40 | 19 | | | | | | | | | | | | |
| 20 | 3 03 27 19 | 8 12 39 32 | 0 01 08 19 | 3 26 08 23 | 5 17 48 13 | 4 02 24 09 | 3 06 30 58 | 11 23 47 50 | +20 41 | -28 12 | 18 56 | 3 43 | 20 | | | | | | | | | | | | |
| 21 | 3 04 24 34 | 8 27 50 03 | 0 01 45 01 | 3 26 21 07 | 5 17 55 24 | 4 03 36 26 | 3 06 38 42 | 11 23 44 39 | +20 30 | -26 37 | 19 51 | 4 53 | 21 | | | | | | | | | | | | |
| 22 | 3 05 21 49 | 9 13 08 36 | 0 02 21 34 | 3 26 29 04 | 5 18 02 43 | 4 04 48 42 | 3 06 46 27 | 11 23 41 28 | +20 18 | -23 04 | 20 38 | 6 09 | 22 | | | | | | | | | | | | |
| 23 | 3 06 19 04 | 9 28 23 53 | 0 02 57 54 | 3 26 32 09 | 5 18 10 10 | 4 06 00 56 | 3 06 54 13 | 11 23 38 17 | +20 06 | -17 56 | 21 19 | 7 25 | 23 | | | | | | | | | | | | |
| 24 | 3 07 16 21 | 10 13 25 19 | 0 03 34 02 | 3 26 30 16 | 5 18 17 44 | 4 07 13 08 | 3 07 01 56 | 11 23 35 06 | +19 54 | -11 47 | 21 53 | 8 37 | 24 | | | | | | | | | | | | |
| 25 | 3 08 13 38 | 10 28 05 00 | 0 04 09 58 | 3 26 23 24 | 5 18 25 26 | 4 08 25 17 | 3 07 09 42 | 11 23 31 55 | +19 41 | -05 06 | 22 24 | 9 47 | 25 | | | | | | | | | | | | |
| 26 | 3 09 10 56 | 11 12 18 30 | 0 04 45 39 | 3 26 11 32 | 5 18 33 13 | 4 09 37 24 | 3 07 17 26 | 11 23 28 44 | +19 28 | +01 38 | 22 54 | 10 53 | 26 | | | | | | | | | | | | |
| 27 | 3 10 08 15 | 11 26 04 39 | 0 05 21 34 | 3 25 54 46 | 5 18 41 09 | 4 10 49 30 | 3 07 25 11 | 11 23 25 33 | +19 14 | +08 06 | 23 57 | 11 57 | 27 | | | | | | | | | | | | |
| 28 | 3 11 05 35 | 0 09 24 53 | 0 05 56 22 | 3 25 33 09 | 5 18 49 13 | 4 12 01 35 | 3 07 32 56 | 11 23 22 22 | +19 01 | +14 00 | 23 57 | 13 00 | 28 | | | | | | | | | | | | |
| 29 | 3 12 02 56 | 0 22 22 14 | 0 06 31 23 | 3 25 06 55 | 5 18 57 23 | 4 13 13 36 | 3 07 40 41 | 11 23 19 11 | +18 47 | +19 07 | -- | 14 03 | 29 | | | | | | | | | | | | |
| 30 | 3 13 00 18 | 1 05 00 29 | 0 07 06 08 | 3 24 36 19 | 5 19 05 40 | 4 14 25 35 | 3 07 48 25 | 11 23 16 00 | +18 32 | +23 15 | 0 34 | 15 04 | 30 | | | | | | | | | | | | |
| 31 | 3 13 57 40 | 1 17 23 37 | 0 07 40 39 | 3 24 01 43 | 5 19 14 05 | 4 15 37 33 | 3 07 56 09 | 11 23 12 49 | +18 16 | +26 14 | 1 13 | 16 04 | 31 | | | | | | | | | | | | |
| अग | 3 14 55 05 | 1 29 35 13 | 0 08 14 54 | 3 23 23 33 | 5 19 22 35 | 4 16 49 29 | 3 08 03 53 | 11 23 09 38 | +18 03 | +27 55 | 1 58 | 17 01 | अग | | | | | | | | | | | | |
| 2 | 3 15 52 30 | 2 11 38 30 | 0 08 48 52 | 3 22 42 19 | 5 19 31 12 | 4 18 01 22 | 3 08 11 36 | 11 23 06 27 | +17 48 | +28 16 | 2 48 | 17 50 | 2 | | | | | | | | | | | | |
| 3 | 3 16 49 56 | 2 23 35 56 | 0 09 22 35 | 3 21 58 41 | 5 19 39 56 | 4 19 13 14 | 3 08 19 17 | 11 23 03 16 | +17 32 | +27 17 | 3 43 | 18 37 | 3 | | | | | | | | | | | | |
| 4 | 3 17 47 23 | 3 05 29 34 | 0 09 56 01 | 3 21 13 20 | 5 19 48 47 | 4 20 25 03 | 3 08 26 59 | 11 23 00 05 | +17 16 | +25 04 | 4 40 | 19 16 | 4 | | | | | | | | | | | | |
| 5 | 3 18 44 52 | 3 17 21 05 | 0 10 29 10 | 3 20 27 02 | 5 19 57 44 | 4 21 36 50 | 3 08 34 40 | 11 22 56 54 | +17 00 | +21 46 | 5 38 | 19 50 | 5 | | | | | | | | | | | | |
| 6 | 3 19 42 21 | 3 29 12 01 | 0 11 02 01 | 3 19 40 36 | 5 20 06 48 | 4 22 48 35 | 3 08 42 21 | 11 22 53 43 | +16 44 | +17 35 | 6 34 | 20 19 | 6 | | | | | | | | | | | | |
| 7 | 3 20 39 51 | 4 11 03 59 | 0 11 34 34 | 3 18 54 53 | 5 20 15 57 | 4 24 00 16 | 3 08 49 59 | 11 22 50 32 | +16 27 | +12 44 | 7 31 | 20 46 | 7 | | | | | | | | | | | | |
| 8 | 3 21 37 22 | 4 22 58 57 | 0 12 06 49 | 3 18 10 49 | 5 20 25 13 | 4 25 11 56 | 3 08 57 38 | 11 22 47 21 | +16 10 | +07 24 | 8 25 | 21 12 | 8 | | | | | | | | | | | | |
| 9 | 3 22 34 54 | 5 04 59 22 | 0 12 38 45 | 3 17 29 12 | 5 20 34 35 | 4 26 23 33 | 3 09 05 15 | 11 22 44 10 | +15 53 | +01 44 | 9 20 | 21 37 | 9 | | | | | | | | | | | | |
| 10 | 3 23 32 27 | 5 17 08 17 | 0 13 10 22 | 3 16 50 54 | 5 20 44 03 | 4 27 35 07 | 3 09 12 52 | 11 22 40 59 | +15 36 | -04 03 | 10 15 | 22 03 | 10 | | | | | | | | | | | | |
| 11 | 3 24 30 02 | 5 29 29 22 | 0 13 41 40 | 3 16 16 42 | 5 20 53 37 | 4 28 46 39 | 3 09 20 27 | 11 22 37 48 | +15 18 | -09 47 | 11 12 | 22 31 | 11 | | | | | | | | | | | | |
| 12 | 3 25 27 36 | 6 12 06 42 | 0 14 12 38 | 3 15 47 17 | 5 21 03 16 | 4 29 58 08 | 3 09 28 01 | 11 22 34 37 | +15 00 | -15 16 | 12 12 | 22 03 | 12 | | | | | | | | | | | | |
| 13 | 3 26 25 11 | 6 25 04 30 | 0 14 43 16 | 3 15 23 19 | 5 21 13 01 | 5 01 09 34 | 3 09 35 34 | 11 22 31 26 | +14 42 | -20 13 | 13 17 | 22 31 | 13 | | | | | | | | | | | | |
| 14 | 3 27 22 48 | 7 08 26 36 | 0 15 13 33 | 3 15 05 20 | 5 21 22 52 | 5 02 20 57 | 3 09 43 05 | 11 22 28 15 | +14 24 | -24 19 | 14 23 | 23 03 | 14 | | | | | | | | | | | | |
| 15 | 3 28 20 25 | 7 22 15 41 | 0 15 43 29 | 3 14 53 50 | 5 21 32 48 | 5 03 32 18 | 3 09 50 35 | 11 22 25 04 | +14 05 | -27 11 | 15 31 | 23 41 | 15 | | | | | | | | | | | | |
| 16 | 3 29 18 03 | 8 06 32 30 | 0 16 13 04 | 3 14 49 10 | 5 21 42 50 | 5 04 43 34 | 3 09 58 05 | 11 22 21 53 | +13 46 | -28 23 | 16 36 | -- | 16 | | | | | | | | | | | | |
| 17 | 4 00 15 43 | 8 21 14 54 | 0 16 42 17 | 3 14 51 38 | 5 21 52 57 | 5 05 54 48 | 3 10 05 32 | 11 22 18 43 | +13 27 | -27 39 | 17 36 | 0 28 | 17 | | | | | | | | | | | | |
| 18 | 4 01 13 23 | 9 06 17 29 | 0 17 11 08 | 3 15 01 25 | 5 22 03 19 | 5 07 05 58 | 3 10 12 58 | 11 22 15 32 | +13 08 | -24 55 | 18 27 | 1 24 | 18 | | | | | | | | | | | | |
| 19 | 4 02 11 05 | 9 21 31 38 | 0 17 39 36 | 3 15 18 40 | 5 22 13 26 | 5 08 17 06 | 3 10 20 22 | 11 22 12 21 | +12 49 | -20 24 | 19 10 | 2 30 | 19 | | | | | | | | | | | | |
| 20 | 4 03 08 48 | 10 06 46 56 | 0 18 07 41 | 3 15 45 24 | 5 22 23 48 | 5 09 28 09 | 3 10 27 44 | 11 22 09 10 | +12 29 | -14 33 | 19 47 | 3 44 | 20 | | | | | | | | | | | | |
| 21 | 4 04 06 32 | 10 21 52 40 | 0 18 35 22 | 3 16 15 38 | 5 22 34 16 | 5 10 39 09 | 3 10 35 05 | 11 22 05 59 | +12 09 | -07 53 | 20 20 | 5 00 | 21 | | | | | | | | | | | | |
| 22 | 4 05 04 18 | 11 06 39 48 | 0 19 02 39 | 3 16 55 18 | 5 22 44 48 | 5 11 50 07 | 3 10 42 24 | 11 22 02 48 | +11 49 | -00 54 | 20 51 | 6 15 | 22 | | | | | | | | | | | | |
| 23 | 4 06 02 05 | 11 21 02 14 | 0 19 29 31 | 3 17 42 14 | 5 22 55 25 | 5 13 01 00 | 3 10 49 41 | 11 21 59 38 | +11 29 | +05 56 | 21 24 | 7 27 | 23 | | | | | | | | | | | | |

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिनट (24 अग. से 30 सितं. तक)

1 सितंबर, 2005 ई. को अयनांश 23°/56' 07"

| ता. | सूर्य (Sun) | चन्द्र (Moon) | मंगल (Mars) | बुध (Merc.) | गुरु (Jup.) | शुक्र (Venus) | शनि (Sat.) | राहु (Rahu) | सू. क्रां. | चं. क्रां. | जालन्धर (आ. सै. दा.) | पु. नि. |
|------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|------------|------------|----------------------|-----------|
| आ. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | सू. क्रां. | चं. क्रां. | चंद्रोदय | चंद्रास्त |
| 24 | 4 06 59 55 | 0 04 57 03 | 0 19 55 57 | 3 18 36 16 | 5 23 06 06 | 5 14 11 51 | 3 10 56 56 | 11 21 56 27 | +11 09 | +12 17 | 21 56 | 10 48 |
| 25 | 4 07 57 45 | 0 18 24 13 | 0 20 21 57 | 3 19 37 11 | 5 23 16 53 | 5 15 22 38 | 3 11 04 10 | 11 21 53 16 | +10 48 | +17 51 | 22 31 | 11 53 |
| 26 | 4 08 55 38 | 1 01 25 56 | 0 20 47 30 | 3 20 44 40 | 5 23 27 44 | 5 16 33 23 | 3 11 11 21 | 11 21 50 05 | +10 27 | +22 24 | 23 10 | 12 57 |
| 27 | 4 09 53 32 | 1 14 05 42 | 0 21 12 35 | 3 21 58 23 | 5 23 49 40 | 5 17 44 03 | 3 11 18 30 | 11 21 46 54 | +10 06 | +25 45 | 23 53 | 13 57 |
| 28 | 4 10 51 29 | 1 26 27 46 | 0 21 37 12 | 3 23 17 59 | 5 23 49 40 | 5 18 54 41 | 3 11 25 38 | 11 21 43 43 | +9 45 | +27 48 | -- | 14 56 |
| 29 | 4 11 49 27 | 2 08 36 24 | 0 22 01 20 | 3 24 43 03 | 5 24 00 44 | 5 20 05 15 | 3 11 32 43 | 11 21 40 33 | +9 24 | +28 29 | 0 43 | 15 49 |
| 30 | 4 12 47 26 | 2 20 35 44 | 0 22 24 57 | 3 26 13 06 | 5 24 11 52 | 5 21 15 45 | 3 11 39 44 | 11 21 37 22 | +9 03 | +27 47 | 1 37 | 16 35 |
| 31 | 4 13 45 28 | 3 02 29 22 | 0 22 48 03 | 3 27 47 45 | 5 24 23 05 | 5 22 26 12 | 3 11 46 45 | 11 21 34 11 | +8 41 | +25 50 | 2 33 | 17 14 |
| सितं | 4 14 43 31 | 3 14 20 28 | 0 23 10 39 | 3 29 26 25 | 5 24 34 22 | 5 23 36 35 | 3 11 53 43 | 11 21 31 00 | +8 19 | +22 45 | 3 30 | 17 52 |
| 2 | 4 15 41 37 | 3 26 11 38 | 0 23 32 42 | 4 01 08 44 | 5 24 45 43 | 5 24 46 55 | 3 12 00 38 | 11 21 27 49 | +7 58 | +18 45 | 4 29 | 18 23 |
| 3 | 4 16 39 44 | 4 08 04 59 | 0 23 54 12 | 4 02 54 05 | 5 24 57 08 | 5 25 57 11 | 3 12 07 31 | 11 21 24 38 | +7 36 | +14 00 | 5 26 | 18 50 |
| 4 | 4 17 37 52 | 4 20 02 22 | 0 24 15 09 | 4 04 42 03 | 5 25 08 37 | 5 27 07 23 | 3 12 14 20 | 11 21 21 28 | +7 14 | +08 42 | 6 20 | 19 15 |
| 5 | 4 18 36 03 | 5 02 05 31 | 0 24 35 32 | 4 06 32 10 | 5 25 20 10 | 5 28 17 30 | 3 12 21 08 | 11 21 18 17 | +6 51 | +03 03 | 7 17 | 19 10 |
| 6 | 4 19 34 15 | 5 14 16 06 | 0 24 55 19 | 4 08 24 00 | 5 25 31 46 | 5 29 27 34 | 3 12 27 52 | 11 21 15 06 | +6 29 | -02 47 | 8 09 | 20 06 |
| 7 | 4 20 32 28 | 5 26 36 08 | 0 25 14 31 | 4 10 17 07 | 5 25 43 26 | 6 00 37 34 | 3 12 34 34 | 11 21 11 55 | +6 07 | -08 35 | 9 07 | 20 34 |
| 8 | 4 21 30 43 | 6 09 07 47 | 0 25 33 07 | 4 12 11 12 | 5 25 55 10 | 6 01 47 29 | 3 12 41 12 | 11 21 08 44 | +5 44 | -14 09 | 10 07 | 21 05 |
| 9 | 4 22 29 01 | 6 21 53 38 | 0 25 51 05 | 4 14 05 53 | 5 26 06 57 | 6 02 57 20 | 3 12 47 48 | 11 21 05 33 | +5 22 | -19 14 | 11 09 | 21 40 |
| 10 | 4 23 27 19 | 7 04 56 18 | 0 26 08 26 | 4 16 00 53 | 5 26 18 47 | 6 04 07 06 | 3 12 54 20 | 11 21 02 23 | +4 59 | -23 32 | 12 13 | 22 22 |
| 11 | 4 24 25 38 | 7 18 18 20 | 0 26 25 08 | 4 17 55 56 | 5 26 30 40 | 6 05 16 47 | 3 13 00 49 | 11 20 59 12 | +4 36 | -26 41 | 13 20 | 23 13 |
| 12 | 4 25 24 00 | 8 02 01 38 | 0 26 41 11 | 4 19 50 52 | 5 26 42 37 | 6 06 26 24 | 3 13 07 15 | 11 20 56 01 | +4 13 | -28 22 | 14 25 | -- |
| 13 | 4 26 22 23 | 8 16 06 54 | 0 26 56 35 | 4 21 45 28 | 5 26 54 37 | 6 07 35 55 | 3 13 13 28 | 11 20 52 50 | +3 50 | -28 17 | 15 25 | 0 14 |
| 14 | 4 27 20 47 | 9 00 32 57 | 0 27 11 18 | 4 23 39 35 | 5 27 06 40 | 6 08 45 22 | 3 13 19 38 | 11 20 49 39 | +3 27 | -26 18 | 16 17 | 1 20 |
| 15 | 4 28 19 13 | 9 15 16 27 | 0 27 25 20 | 4 25 33 04 | 5 27 18 46 | 6 09 54 42 | 3 13 26 23 | 11 20 46 28 | +3 04 | -22 31 | 17 03 | 2 34 |
| 16 | 4 29 17 41 | 10 00 11 34 | 0 27 38 40 | 4 27 25 51 | 5 27 30 54 | 6 11 03 57 | 3 13 32 26 | 11 20 43 18 | +2 41 | -17 15 | 17 43 | 3 48 |
| 17 | 5 00 16 10 | 10 15 10 39 | 0 27 51 18 | 4 29 17 50 | 5 27 43 06 | 6 12 13 07 | 3 13 38 35 | 11 20 40 07 | +2 18 | -10 55 | 18 16 | 5 01 |
| 18 | 5 01 14 42 | 11 00 05 07 | 0 28 03 12 | 5 01 08 58 | 5 27 55 20 | 6 13 22 11 | 3 13 43 41 | 11 20 36 56 | +1 55 | -04 00 | 18 49 | 6 10 |
| 19 | 5 02 13 15 | 11 14 46 45 | 0 28 14 22 | 5 02 59 13 | 5 28 07 37 | 6 14 31 10 | 3 13 50 43 | 11 20 33 45 | +1 32 | +03 02 | 19 20 | 7 20 |
| 20 | 5 03 11 50 | 11 29 08 54 | 0 28 24 48 | 5 04 48 31 | 5 28 19 57 | 6 15 40 02 | 3 13 56 41 | 11 20 30 34 | +1 08 | +09 46 | 19 52 | 8 26 |
| 21 | 5 04 10 27 | 0 13 07 15 | 0 28 34 27 | 5 06 36 53 | 5 28 32 19 | 6 16 48 49 | 3 14 02 35 | 11 20 27 23 | +0 45 | +15 51 | 20 26 | 9 32 |
| 22 | 5 05 09 07 | 0 26 39 59 | 0 28 43 19 | 5 08 24 17 | 5 28 44 43 | 6 17 57 30 | 3 14 08 26 | 11 20 24 13 | +0 22 | +20 57 | 21 05 | 10 40 |
| 23 | 5 06 07 48 | 1 09 47 30 | 0 28 51 24 | 5 10 10 42 | 5 28 57 11 | 6 19 06 05 | 3 14 14 13 | 11 20 21 02 | -0 02 | +24 52 | 21 47 | 11 43 |
| 24 | 5 07 06 32 | 1 22 32 05 | 0 28 58 39 | 5 11 56 09 | 5 29 09 40 | 6 20 14 33 | 3 14 19 56 | 11 20 17 51 | -0 25 | +27 25 | 22 35 | 12 44 |
| 25 | 5 08 05 18 | 2 04 57 13 | 0 29 05 06 | 5 13 40 39 | 5 29 22 12 | 6 21 22 56 | 3 14 25 35 | 11 20 14 40 | -0 48 | +28 32 | 23 27 | 13 40 |
| 26 | 5 09 04 07 | 2 17 07 07 | 0 29 10 41 | 5 15 24 10 | 5 29 34 45 | 6 22 31 11 | 3 14 31 09 | 11 20 11 29 | -1 12 | +28 14 | -- | 14 32 |
| 27 | 5 10 02 57 | 2 29 06 15 | 0 29 15 27 | 5 17 06 45 | 5 29 47 21 | 6 23 39 21 | 3 14 36 40 | 11 20 08 18 | -1 35 | +26 36 | 0 23 | 15 15 |
| 28 | 5 11 01 50 | 3 10 59 08 | 0 29 19 21 | 5 18 48 23 | 5 29 59 57 | 6 24 47 24 | 3 14 42 06 | 11 20 05 08 | -1 58 | +23 49 | 1 20 | 15 53 |
| 29 | 5 12 00 45 | 3 22 49 55 | 0 29 22 23 | 5 20 29 08 | 6 00 12 39 | 6 25 55 19 | 3 14 47 28 | 11 20 01 57 | -2 22 | +20 02 | 2 20 | 16 24 |
| 30 | 5 12 59 42 | 4 04 42 22 | 0 29 24 33 | 5 22 08 58 | 6 00 25 21 | 6 27 03 09 | 3 14 52 45 | 11 19 58 46 | -2 45 | +15 27 | 3 17 | 16 53 |

1 अक्तू., 2005 ई. को अयनांश 23°/56'14"

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिनट (1 अक्तू. से 5 नव. तक)

| दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घट 30 मिट (1 अक्तू. से 5 मघ. तक) | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|-------------|-------------|---------------|------------|-------------|------------|-------------|-------------|-------------|--------|---------------|--------|------------|--------|-------------|--------|-----------|-----------|-----------|---------|------------------------|---------|
| ता. | सूर्य (Sun) | | चन्द्र (Moon) | | मंगल (Mars) | | बुध (Merc.) | | गुरु (Jup.) | | शुक्र (Venus) | | शनि (Sat.) | | राहु (Rahu) | | सू. क्रो. | | चं. क्रो. | | जालन्धर (आ. स्टै. वा.) | |
| | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | अं. क. | सू. क्रो. | अं. क. | चं. मि. | घं. मि. | चक्रोदय |
| अक्तू. | 5 13 58 41 | 4 16 39 40 | 0 29 25 49 | 5 23 47 56 | 6 00 38 05 | 6 28 10 51 | 3 14 57 59 | 11 19 55 35 | -3 08 | +10 16 | 4 14 | 17 20 | अक्तू. | 1 | | | | | | | | |
| 2 | 5 14 57 43 | 4 28 44 32 | 0 29 26 11 | 5 25 26 01 | 6 00 50 50 | 6 29 18 25 | 3 15 03 07 | 11 19 52 24 | -3 32 | +04 39 | 5 09 | 17 15 | 2 | | | | | | | | | |
| 3 | 5 15 56 47 | 5 10 58 57 | 0 29 25 39 | 5 27 03 16 | 6 01 03 37 | 7 00 25 53 | 3 15 08 11 | 11 19 49 13 | -3 55 | -01 13 | 6 05 | 18 10 | 3 | | | | | | | | | |
| 4 | 5 16 55 53 | 5 23 24 28 | 0 29 24 14 | 5 28 39 41 | 6 01 16 26 | 7 01 33 11 | 3 15 13 10 | 11 19 46 03 | -4 18 | -07 07 | 7 02 | 18 37 | 4 | | | | | | | | | |
| 5 | 5 17 55 00 | 6 06 02 12 | 0 29 21 54 | 6 00 15 17 | 6 01 29 16 | 7 02 40 12 | 3 15 18 05 | 11 19 42 52 | -4 41 | -12 51 | 7 59 | 19 07 | 5 | | | | | | | | | |
| 6 | 5 18 54 10 | 6 18 52 54 | 0 29 18 41 | 6 01 50 05 | 6 01 42 08 | 7 03 47 25 | 3 15 22 54 | 11 19 39 41 | -5 04 | -18 09 | 9 03 | 19 41 | 6 | | | | | | | | | |
| 7 | 5 19 53 22 | 7 01 57 07 | 0 29 14 33 | 6 03 24 05 | 6 01 55 01 | 7 04 54 19 | 3 15 27 38 | 11 19 36 30 | -5 27 | -22 41 | 10 08 | 20 21 | 7 | | | | | | | | | |
| 8 | 5 20 52 35 | 7 15 15 13 | 0 29 09 31 | 6 04 57 18 | 6 02 07 54 | 7 06 01 03 | 3 15 32 18 | 11 19 33 19 | -5 50 | -26 08 | 11 14 | 21 09 | 8 | | | | | | | | | |
| 9 | 5 21 51 50 | 7 28 47 27 | 0 29 03 36 | 6 06 29 46 | 6 02 20 50 | 7 07 07 39 | 3 15 36 53 | 11 19 30 08 | -6 13 | -28 10 | 12 18 | 22 06 | 9 | | | | | | | | | |
| 10 | 5 22 51 07 | 8 12 33 47 | 0 28 56 48 | 6 08 01 29 | 6 02 33 46 | 7 08 14 05 | 3 15 41 23 | 11 19 26 58 | -6 36 | -28 31 | 13 21 | 23 10 | 10 | | | | | | | | | |
| 11 | 5 23 50 26 | 8 26 33 43 | 0 28 49 08 | 6 09 32 26 | 6 02 46 44 | 7 09 20 21 | 3 15 45 48 | 11 19 23 47 | -6 59 | -27 04 | 14 13 | -- | 11 | | | | | | | | | |
| 12 | 5 24 49 47 | 9 10 46 06 | 0 28 40 35 | 6 11 02 37 | 6 02 59 41 | 7 10 26 26 | 3 15 50 06 | 11 19 20 36 | -7 21 | -23 53 | 15 00 | 0 20 | 12 | | | | | | | | | |
| 13 | 5 25 49 09 | 9 25 08 47 | 0 28 31 11 | 6 12 32 04 | 6 03 12 41 | 7 11 32 21 | 3 15 54 21 | 11 19 17 25 | -7 43 | -19 12 | 15 39 | 1 31 | 13 | | | | | | | | | |
| 14 | 5 26 48 33 | 10 09 38 34 | 0 28 20 57 | 6 14 00 46 | 6 03 25 41 | 7 12 38 04 | 3 15 58 30 | 11 19 14 14 | -8 06 | -13 22 | 16 14 | 2 43 | 14 | | | | | | | | | |
| 15 | 5 27 47 59 | 10 24 11 02 | 0 28 09 54 | 6 15 28 42 | 6 03 38 41 | 7 13 43 36 | 3 16 02 33 | 11 19 11 03 | -8 28 | -06 48 | 16 46 | 3 52 | 15 | | | | | | | | | |
| 16 | 5 28 47 26 | 11 08 41 02 | 0 27 58 02 | 6 16 55 53 | 6 03 51 42 | 7 14 48 56 | 3 16 06 31 | 11 19 07 53 | -8 50 | +00 06 | 17 15 | 4 57 | 16 | | | | | | | | | |
| 17 | 5 29 46 56 | 11 23 02 58 | 0 27 45 23 | 6 18 22 17 | 6 04 04 44 | 7 15 54 04 | 3 16 10 24 | 11 19 04 42 | -9 12 | +06 57 | 17 48 | 6 05 | 17 | | | | | | | | | |
| 18 | 6 00 46 27 | 0 07 11 34 | 0 27 31 57 | 6 19 47 53 | 6 04 17 47 | 7 16 58 59 | 3 16 14 11 | 11 19 01 31 | -9 34 | +13 21 | 18 21 | 7 12 | 18 | | | | | | | | | |
| 19 | 6 01 46 01 | 0 21 02 30 | 0 27 17 47 | 6 21 12 40 | 6 04 30 49 | 7 18 03 41 | 3 16 17 53 | 11 18 58 20 | -9 56 | +18 57 | 18 57 | 8 21 | 19 | | | | | | | | | |
| 20 | 6 02 45 37 | 1 04 32 49 | 0 27 02 52 | 6 22 36 36 | 6 04 43 53 | 7 19 08 10 | 3 16 21 29 | 11 18 55 09 | -10 18 | +23 27 | 19 40 | 9 27 | 20 | | | | | | | | | |
| 21 | 6 03 45 15 | 1 17 41 23 | 0 26 47 16 | 6 23 59 40 | 6 04 56 56 | 7 20 12 26 | 3 16 26 00 | 11 18 51 59 | -10 39 | +26 36 | 20 26 | 10 31 | 21 | | | | | | | | | |
| 22 | 6 04 44 55 | 2 00 28 39 | 0 26 30 58 | 6 25 21 47 | 6 05 09 59 | 7 21 16 26 | 3 16 28 24 | 11 18 48 48 | -11 00 | +28 17 | 21 17 | 11 30 | 22 | | | | | | | | | |
| 23 | 6 05 44 37 | 2 12 56 45 | 0 26 14 03 | 6 26 42 56 | 6 05 23 03 | 7 22 20 13 | 3 16 31 43 | 11 18 45 37 | -11 22 | +28 29 | 22 13 | 12 24 | 23 | | | | | | | | | |
| 24 | 6 06 44 21 | 2 25 08 53 | 0 25 56 31 | 6 28 03 04 | 6 05 36 07 | 7 23 23 45 | 3 16 34 56 | 11 18 42 26 | -11 43 | +27 16 | 23 12 | 13 10 | 24 | | | | | | | | | |
| 25 | 6 07 44 08 | 3 07 09 13 | 0 25 38 24 | 6 29 22 05 | 6 05 49 11 | 7 24 27 02 | 3 16 38 03 | 11 18 39 15 | -12 03 | +24 49 | -- | -- | 25 | | | | | | | | | |
| 26 | 6 08 43 57 | 3 19 02 24 | 0 25 19 46 | 7 00 39 55 | 6 06 02 15 | 7 25 29 43 | 3 16 41 05 | 11 18 36 05 | -12 24 | +21 19 | 0 10 | 14 24 | 26 | | | | | | | | | |
| 27 | 6 09 43 48 | 4 00 53 12 | 0 25 00 38 | 7 01 56 27 | 6 06 15 19 | 7 26 32 48 | 3 16 44 00 | 11 18 32 54 | -12 44 | +16 59 | 1 07 | 14 54 | 27 | | | | | | | | | |
| 28 | 6 10 43 42 | 4 12 46 28 | 0 24 41 01 | 7 03 11 35 | 6 06 28 22 | 7 27 35 14 | 3 16 46 48 | 11 18 29 43 | -13 05 | +11 59 | 2 03 | 15 17 | 28 | | | | | | | | | |
| 29 | 6 11 43 37 | 4 24 46 36 | 0 24 21 02 | 7 04 25 13 | 6 06 41 25 | 7 28 37 24 | 3 16 49 31 | 11 18 26 32 | -13 25 | +06 30 | 2 58 | 15 45 | 29 | | | | | | | | | |
| 30 | 6 12 43 35 | 5 06 57 30 | 0 24 00 41 | 7 05 37 10 | 6 06 54 28 | 7 29 39 16 | 3 16 52 08 | 11 18 23 21 | -13 44 | +00 43 | 3 54 | 16 12 | 30 | | | | | | | | | |
| 31 | 6 13 43 35 | 5 19 22 19 | 0 23 40 02 | 7 06 47 16 | 6 07 07 30 | 8 00 40 50 | 3 16 54 38 | 11 18 20 11 | -14 04 | -05 14 | 4 50 | 16 39 | 31 | | | | | | | | | |
| नव. | 6 14 43 36 | 6 02 03 09 | 0 23 19 08 | 7 07 55 21 | 6 07 20 32 | 8 01 42 04 | 3 16 57 03 | 11 18 17 00 | -14 23 | -11 05 | 5 49 | 17 08 | नव. | | | | | | | | | |
| 2 | 6 15 43 40 | 6 15 00 58 | 0 22 58 02 | 7 09 01 10 | 6 07 33 34 | 8 02 42 57 | 3 16 59 21 | 11 18 13 49 | -14 43 | -16 36 | 6 51 | 17 41 | 2 | | | | | | | | | |
| 3 | 6 16 43 46 | 6 28 15 38 | 0 22 36 47 | 7 10 04 28 | 6 07 46 34 | 8 03 43 30 | 3 17 01 32 | 11 18 10 38 | -15 01 | -21 28 | 7 56 | 18 20 | 3 | | | | | | | | | |
| 4 | 6 17 43 53 | 7 11 45 50 | 0 22 15 26 | 7 11 04 58 | 6 07 59 34 | 8 04 43 41 | 3 17 03 38 | 11 18 07 27 | -15 20 | -25 19 | 9 02 | 19 06 | 4 | | | | | | | | | |
| 5 | 6 18 44 02 | 7 25 29 19 | 0 21 54 04 | 7 12 02 20 | 6 08 12 33 | 8 05 43 29 | 3 17 05 37 | 11 18 04 16 | -15 39 | -27 46 | 10 10 | 20 01 | 5 | | | | | | | | | |

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिनट (6 नव. से 12 दिसं. तक)

1 दिसंबर, 2005 ई. को अयनांश 23°/56'18"

| ता. | नव. | सूर्य (Sun) | | चन्द्र (Moon) | | मंगल (Mars) | | बुध (Merc.) | | गुरु (Jup.) | | शुक्र (Venus) | | शनि (Sat.) | | राहु (Rahu) | | सू. क्रां. | | चं. क्रां. | | जलद्वार (भा. द्वा.) | | दि. |
|------|------|-------------|--------|---------------|--------|-------------|--------|-------------|--------|-------------|--------|---------------|--------|------------|--------|-------------|--------|------------|--------|------------|--------|---------------------|----------|------|
| | | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | सू. क्रां. | अं. क. | चं. क्रां. | अं. क. | चंद्रोदय | चंद्रोदय | |
| 6 | 6 | 19 44 | 13 | 8 09 | 23 22 | 0 21 32 | 41 | 7 12 56 | 11 | 6 08 25 | 30 | 8 06 42 | 53 | 3 17 07 | 28 | 11 18 01 | 06 | -15 57 | -28 31 | 11 12 | 21 03 | 11 12 | 21 03 | 6 |
| 7 | 7 | 20 44 | 25 | 8 23 25 | 02 | 0 21 11 | 24 | 7 13 46 | 07 | 6 08 38 | 27 | 8 07 41 | 54 | 3 17 09 | 14 | 11 17 57 | 55 | -16 15 | -27 28 | 12 08 | 22 12 | 12 08 | 22 12 | 7 |
| 8 | 8 | 21 44 | 39 | 9 07 31 | 36 | 0 20 50 | 15 | 7 14 31 | 38 | 6 08 51 | 23 | 8 08 40 | 28 | 3 17 10 | 53 | 11 17 54 | 44 | -16 32 | -24 39 | 12 56 | 23 23 | 12 56 | 23 23 | 8 |
| 9 | 9 | 22 44 | 54 | 9 21 40 | 44 | 0 20 29 | 16 | 7 15 12 | 15 | 6 09 04 | 18 | 8 09 38 | 36 | 3 17 12 | 26 | 11 17 51 | 33 | -16 49 | -20 21 | 13 37 | -- | 13 37 | -- | 9 |
| 10 | 10 | 23 45 | 11 | 10 05 50 | 29 | 0 20 08 | 30 | 7 15 47 | 21 | 6 09 17 | 10 | 8 10 36 | 15 | 3 17 13 | 50 | 11 17 48 | 22 | -17 07 | -14 54 | 14 13 | 0 33 | 14 13 | 0 33 | 10 |
| 11 | 11 | 24 45 | 29 | 10 19 59 | 12 | 0 19 48 | 02 | 7 16 16 | 21 | 6 09 30 | 01 | 8 11 33 | 25 | 3 17 15 | 10 | 11 17 45 | 11 | -17 23 | -08 49 | 14 45 | 1 41 | 14 45 | 1 41 | 11 |
| 12 | 12 | 25 45 | 48 | 11 04 05 | 11 | 0 19 27 | 53 | 7 16 38 | 33 | 6 09 42 | 52 | 8 12 30 | 05 | 3 17 16 | 23 | 11 17 42 | 01 | -17 40 | -02 03 | 15 15 | 2 47 | 15 15 | 2 47 | 12 |
| 13 | 13 | 26 46 | 09 | 11 18 06 | 29 | 0 19 08 | 06 | 7 16 53 | 15 | 6 09 55 | 40 | 8 13 26 | 14 | 3 17 17 | 30 | 11 17 38 | 50 | -17 56 | +04 39 | 15 45 | 3 52 | 15 45 | 3 52 | 13 |
| 14 | 14 | 27 46 | 31 | 0 02 00 | 46 | 0 18 48 | 43 | 7 16 59 | 43 | 6 10 08 | 27 | 8 14 21 | 50 | 3 17 18 | 29 | 11 17 35 | 39 | -18 12 | +11 05 | 16 17 | 4 57 | 16 17 | 4 57 | 14 |
| 15 | 15 | 28 46 | 55 | 0 15 45 | 24 | 0 18 29 | 47 | 7 16 57 | 16 | 6 10 21 | 12 | 8 15 16 | 52 | 3 17 19 | 22 | 11 17 32 | 28 | -18 27 | +16 54 | 16 52 | 6 00 | 16 52 | 6 00 | 15 |
| 16 | 16 | 29 47 | 20 | 0 29 17 | 36 | 0 18 11 | 21 | 7 16 45 | 17 | 6 10 33 | 56 | 8 16 11 | 18 | 3 17 20 | 09 | 11 17 29 | 17 | -18 42 | +21 48 | 17 31 | 7 08 | 17 31 | 7 08 | 16 |
| 17 | 17 | 30 47 | 48 | 1 12 34 | 56 | 0 17 53 | 25 | 7 16 23 | 14 | 6 10 46 | 38 | 8 17 05 | 08 | 3 17 20 | 48 | 11 17 26 | 07 | -18 57 | +25 29 | 18 16 | 8 13 | 18 16 | 8 13 | 17 |
| 18 | 18 | 31 48 | 16 | 1 25 35 | 37 | 0 17 36 | 02 | 7 15 50 | 49 | 6 10 59 | 17 | 8 17 58 | 19 | 3 17 21 | 21 | 11 17 22 | 56 | -19 12 | +27 44 | 19 07 | 9 16 | 19 07 | 9 16 | 18 |
| 19 | 19 | 32 48 | 46 | 2 08 19 | 02 | 0 17 19 | 15 | 7 15 07 | 57 | 6 11 11 | 54 | 8 18 50 | 51 | 3 17 21 | 47 | 11 17 19 | 45 | -19 26 | +28 28 | 20 01 | 10 13 | 20 01 | 10 13 | 19 |
| 20 | 20 | 33 49 | 18 | 2 20 45 | 48 | 0 17 03 | 05 | 7 14 15 | 00 | 6 11 24 | 30 | 8 19 42 | 42 | 3 17 22 | 06 | 11 17 16 | 34 | -19 40 | +27 44 | 21 00 | 11 04 | 21 00 | 11 04 | 20 |
| 21 | 21 | 34 49 | 52 | 3 02 57 | 49 | 0 16 47 | 33 | 7 13 12 | 44 | 6 11 37 | 04 | 8 20 36 | 51 | 3 17 22 | 18 | 11 17 13 | 23 | -19 53 | +25 40 | 21 58 | 11 46 | 21 58 | 11 46 | 21 |
| 22 | 22 | 35 50 | 27 | 3 14 58 | 10 | 0 16 32 | 40 | 7 12 02 | 23 | 6 11 49 | 34 | 8 21 24 | 08 | 3 17 22 | 22 | 11 17 10 | 13 | -20 06 | +22 43 | 22 56 | 12 24 | 22 56 | 12 24 | 22 |
| 23 | 23 | 36 51 | 04 | 3 26 50 | 55 | 0 16 18 | 30 | 7 10 45 | 47 | 6 12 02 | 03 | 8 22 13 | 52 | 3 17 22 | 21 | 11 17 07 | 02 | -20 19 | +18 44 | 23 52 | 12 55 | 23 52 | 12 55 | 23 |
| 24 | 24 | 37 51 | 43 | 4 08 40 | 47 | 0 16 05 | 03 | 7 09 25 | 10 | 6 12 14 | 30 | 8 23 02 | 42 | 3 17 22 | 14 | 11 17 03 | 51 | -20 31 | +13 54 | -- | 13 23 | -- | 13 23 | 24 |
| 25 | 25 | 38 52 | 24 | 4 20 32 | 57 | 0 15 52 | 19 | 7 08 03 | 06 | 6 12 26 | 54 | 8 23 50 | 42 | 3 17 21 | 59 | 11 17 00 | 40 | -20 43 | +08 23 | 0 47 | 13 49 | 0 47 | 13 49 | 25 |
| 26 | 26 | 39 53 | 06 | 5 02 32 | 44 | 0 15 40 | 21 | 7 06 42 | 21 | 6 12 39 | 15 | 8 24 37 | 51 | 3 17 21 | 38 | 11 16 57 | 29 | -20 55 | +02 24 | 1 42 | 14 14 | 1 42 | 14 14 | 26 |
| 27 | 27 | 40 53 | 49 | 5 14 45 | 14 | 0 15 29 | 10 | 7 05 25 | 39 | 6 12 51 | 34 | 8 25 24 | 05 | 3 17 21 | 10 | 11 16 54 | 19 | -21 06 | -03 52 | 2 37 | 14 39 | 2 37 | 14 39 | 27 |
| 28 | 28 | 41 54 | 34 | 5 27 14 | 55 | 0 15 18 | 46 | 7 04 15 | 24 | 6 13 03 | 50 | 8 26 09 | 23 | 3 17 20 | 35 | 11 16 51 | 08 | -21 17 | -10 13 | 3 34 | 15 07 | 3 34 | 15 07 | 28 |
| 29 | 29 | 42 55 | 21 | 6 10 05 | 19 | 0 15 09 | 09 | 7 03 13 | 40 | 6 13 16 | 03 | 8 26 53 | 43 | 3 17 19 | 53 | 11 16 47 | 57 | -21 27 | -16 15 | 4 35 | 15 38 | 4 35 | 15 38 | 29 |
| 30 | 30 | 43 56 | 09 | 6 23 18 | 20 | 0 15 00 | 20 | 7 02 21 | 59 | 6 13 28 | 13 | 8 27 37 | 03 | 3 17 19 | 05 | 11 16 44 | 46 | -21 37 | -21 24 | 5 38 | 16 14 | 5 38 | 16 14 | 30 |
| दिस. | दिस. | 44 56 | 59 | 7 06 54 | 02 | 0 14 52 | 20 | 7 01 41 | 17 | 6 13 40 | 19 | 8 28 19 | 18 | 3 17 18 | 09 | 11 16 41 | 35 | -21 47 | -25 22 | 6 45 | 16 58 | 6 45 | 16 58 | दिस. |
| 1 | 1 | 45 57 | 49 | 7 20 50 | 16 | 0 14 45 | 11 | 7 01 12 | 07 | 6 13 52 | 23 | 8 29 00 | 27 | 3 17 17 | 08 | 11 16 38 | 25 | -21 56 | -27 35 | 7 54 | 17 51 | 7 54 | 17 51 | 2 |
| 2 | 2 | 46 58 | 41 | 8 05 02 | 51 | 0 14 38 | 51 | 7 00 54 | 27 | 6 14 04 | 24 | 8 29 40 | 27 | 3 17 16 | 00 | 11 16 35 | 14 | -22 05 | -27 50 | 9 01 | 18 53 | 9 01 | 18 53 | 3 |
| 3 | 3 | 47 59 | 33 | 8 19 26 | 03 | 0 14 33 | 21 | 7 00 47 | 59 | 6 14 16 | 20 | 9 00 19 | 15 | 3 17 14 | 44 | 11 16 32 | 03 | -22 13 | -26 09 | 10 01 | 20 02 | 10 01 | 20 02 | 4 |
| 4 | 4 | 48 59 | 27 | 9 03 53 | 34 | 0 14 28 | 41 | 7 00 52 | 08 | 6 14 28 | 14 | 9 00 56 | 48 | 3 17 13 | 22 | 11 16 28 | 52 | -22 21 | -22 46 | 10 53 | 21 14 | 10 53 | 21 14 | 5 |
| 5 | 5 | 49 59 | 22 | 9 18 19 | 33 | 0 14 24 | 52 | 7 01 06 | 09 | 6 14 40 | 04 | 9 01 33 | 02 | 3 17 11 | 53 | 11 16 25 | 41 | -22 29 | -18 06 | 11 37 | 22 24 | 11 37 | 22 24 | 6 |
| 6 | 6 | 50 59 | 17 | 10 02 39 | 23 | 0 14 21 | 52 | 7 01 29 | 10 | 6 14 51 | 50 | 9 02 07 | 54 | 3 17 10 | 20 | 11 16 22 | 31 | -22 36 | -12 35 | 12 15 | 23 32 | 12 15 | 23 32 | 7 |
| 7 | 7 | 51 59 | 13 | 10 16 50 | 06 | 0 14 19 | 41 | 7 02 00 | 21 | 6 15 03 | 32 | 9 02 40 | 50 | 3 17 08 | 38 | 11 16 19 | 20 | -22 42 | -06 40 | 12 47 | -- | 12 47 | -- | 8 |
| 8 | 8 | 52 59 | 09 | 11 00 50 | 17 | 0 14 18 | 20 | 7 02 38 | 50 | 6 15 15 | 10 | 9 03 13 | 16 | 3 17 06 | 50 | 11 16 16 | 09 | -22 48 | -00 31 | 13 17 | 0 39 | 13 17 | 0 39 | 9 |
| 9 | 9 | 53 59 | 07 | 11 14 39 | 42 | 0 14 17 | 48 | 7 03 23 | 50 | 6 15 26 | 45 | 9 03 43 | 41 | 3 17 04 | 56 | 11 16 12 | 59 | -22 54 | +05 32 | 13 47 | 1 44 | 13 47 | 1 44 | 10 |
| 10 | 10 | 54 59 | 05 | 11 28 18 | 38 | 0 14 18 | 05 | 7 04 14 | 35 | 6 15 38 | 15 | 9 04 12 | 29 | 3 17 02 | 57 | 11 16 09 | 48 | -22 59 | +11 15 | 14 18 | 2 46 | 14 18 | 2 46 | 11 |
| 11 | 11 | 55 59 | 03 | 0 11 47 | 29 | 0 14 19 | 08 | 7 05 10 | 22 | 6 15 49 | 42 | 9 04 39 | 36 | 3 17 00 | 51 | 11 16 06 | 37 | -23 04 | +16 25 | 14 50 | 3 49 | 14 50 | 3 49 | 12 |

| ता. | सूर्य (Sun) | चन्द्र (Moon) | मंगल (Mars) | बुध (Merc.) | गुरु (Jup.) | शुक्र (Venus) | शनि (Sat.) | राहु (Rahu) | सू. क्र. | चं. क्र. | जलेश्वर (आ. रं. वा.) | |
|-----|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------|----------|----------------------|----------|
| | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | अं. क. | चं. क्र. | चंद्रोदय | चंद्रस्त |
| 13 | 7 27 08 02 | 0 25 06 16 | 0 14 20 58 | 7 06 10 36 | 6 16 01 04 | 9 05 04 59 | 3 16 58 37 | 11 16 03 26 | -23 08 | +20 55 | 15 27 | 4 54 |
| 14 | 7 28 09 02 | 1 08 14 38 | 0 14 23 35 | 7 07 14 41 | 6 16 12 22 | 9 05 28 35 | 3 16 56 21 | 11 16 00 15 | -23 12 | +24 23 | 16 08 | 6 00 |
| 15 | 7 29 10 02 | 1 21 11 47 | 0 14 26 56 | 7 08 22 07 | 6 16 23 35 | 9 05 50 17 | 3 16 53 54 | 11 15 57 05 | -23 16 | +26 45 | 16 56 | 7 04 |
| 16 | 8 00 11 03 | 2 03 56 49 | 0 14 31 02 | 7 09 32 32 | 6 16 34 45 | 9 06 10 04 | 3 16 49 24 | 11 15 53 54 | -23 19 | +27 52 | 17 50 | 8 03 |
| 17 | 8 01 12 05 | 2 26 29 06 | 0 14 35 53 | 7 10 45 30 | 6 16 45 49 | 9 06 27 51 | 3 16 48 48 | 11 15 50 43 | -23 21 | +27 40 | 18 48 | 8 55 |
| 18 | 8 02 13 07 | 2 28 48 43 | 0 14 41 26 | 7 12 00 43 | 6 16 56 50 | 9 06 43 35 | 3 16 46 07 | 11 15 47 32 | -23 23 | +26 12 | 19 46 | 9 41 |
| 19 | 8 03 14 11 | 3 10 56 32 | 0 14 47 42 | 7 13 17 53 | 6 17 07 44 | 9 06 57 11 | 3 16 43 17 | 11 15 44 21 | -23 25 | +23 33 | 20 45 | 10 20 |
| 20 | 8 04 15 15 | 3 22 54 27 | 0 14 54 39 | 7 14 36 46 | 6 17 18 34 | 9 07 08 37 | 3 16 40 23 | 11 15 41 11 | -23 25 | +19 57 | 21 42 | 10 53 |
| 21 | 8 05 16 19 | 4 04 45 31 | 0 15 02 18 | 7 15 57 09 | 6 17 29 20 | 9 07 17 48 | 3 16 37 25 | 11 15 38 00 | -23 26 | +15 30 | 22 37 | 11 22 |
| 22 | 8 06 17 25 | 4 16 33 38 | 0 15 10 37 | 7 17 18 51 | 6 17 39 59 | 9 07 24 42 | 3 16 34 21 | 11 15 34 49 | -23 26 | +10 18 | 23 31 | 11 49 |
| 23 | 8 07 18 31 | 4 28 23 35 | 0 15 19 36 | 7 18 41 42 | 6 17 50 35 | 9 07 29 16 | 3 16 31 11 | 11 15 31 38 | -23 26 | +04 36 | -- | 12 14 |
| 24 | 8 08 19 38 | 5 10 20 39 | 0 15 29 13 | 7 20 05 35 | 6 18 01 05 | 9 07 31 26 | 3 16 27 56 | 11 15 28 27 | -23 25 | -01 22 | 0 25 | 12 39 |
| 25 | 8 09 20 45 | 5 22 30 26 | 0 15 39 29 | 7 21 30 23 | 6 18 11 30 | 9 07 31 11 | 3 16 24 36 | 11 15 25 17 | -23 24 | -07 35 | 1 21 | 13 04 |
| 26 | 8 10 21 53 | 6 04 58 24 | 0 15 50 21 | 7 22 55 58 | 6 18 21 48 | 9 07 28 28 | 3 16 21 09 | 11 15 22 06 | -23 22 | -13 42 | 2 18 | 13 33 |
| 27 | 8 11 23 02 | 6 17 49 20 | 0 16 01 51 | 7 24 22 19 | 6 18 32 02 | 9 07 23 17 | 3 16 17 39 | 11 15 18 55 | -23 20 | -19 12 | 3 19 | 14 07 |
| 28 | 8 12 24 11 | 7 01 06 46 | 0 16 13 57 | 7 25 49 20 | 6 18 42 09 | 9 07 15 38 | 3 16 14 04 | 11 15 15 44 | -23 17 | -23 46 | 4 24 | 14 47 |
| 29 | 8 13 25 21 | 7 14 52 07 | 0 16 26 38 | 7 27 16 57 | 6 18 52 12 | 9 07 05 29 | 3 16 10 25 | 11 15 12 33 | -23 14 | -25 49 | 5 34 | 15 35 |
| 30 | 8 14 26 31 | 7 29 04 03 | 0 16 39 54 | 7 28 45 07 | 6 19 02 07 | 9 06 52 50 | 3 16 06 38 | 11 15 09 23 | -23 11 | -26 55 | 6 43 | 16 33 |
| 31 | 8 15 27 41 | 8 13 38 11 | 0 16 53 44 | 8 00 13 50 | 6 19 11 57 | 9 06 37 45 | 3 16 02 49 | 11 15 06 12 | -23 06 | -27 55 | 7 48 | 17 41 |
| जन. | 8 16 28 52 | 8 28 27 17 | 0 17 08 09 | 8 01 43 01 | 6 19 21 41 | 9 06 20 14 | 3 15 58 56 | 11 15 03 01 | -23 02 | -26 23 | 8 43 | 18 54 |
| 2 | 8 17 30 02 | 9 13 22 26 | 0 17 23 04 | 8 03 12 39 | 6 19 31 18 | 9 06 00 20 | 3 15 54 57 | 11 14 59 50 | -22 57 | -22 42 | 9 32 | 20 07 |
| 3 | 8 18 31 13 | 9 28 14 34 | 0 17 38 32 | 8 04 42 44 | 6 19 40 49 | 9 05 38 11 | 3 15 50 55 | 11 14 56 39 | -22 51 | -17 33 | 10 12 | 21 20 |
| 4 | 8 19 32 23 | 10 12 55 59 | 0 17 54 31 | 8 06 13 16 | 6 19 50 14 | 9 05 13 47 | 3 15 46 49 | 11 14 53 29 | -22 46 | -11 26 | 10 48 | 22 29 |
| 5 | 8 20 33 33 | 10 27 21 23 | 0 18 11 01 | 8 07 44 13 | 6 19 59 32 | 9 04 47 19 | 3 15 42 40 | 11 14 50 18 | -22 39 | -04 48 | 11 20 | 23 36 |
| 6 | 8 21 34 42 | 11 11 28 10 | 0 18 28 00 | 8 09 15 33 | 6 20 08 43 | 9 04 18 54 | 3 15 38 25 | 11 14 47 07 | -22 32 | +01 55 | 11 51 | -- |
| 7 | 8 22 35 51 | 11 25 15 57 | 0 18 45 28 | 8 10 47 19 | 6 20 17 48 | 9 03 48 40 | 3 15 34 09 | 11 14 43 56 | -22 25 | +08 24 | 12 21 | 0 40 |
| 8 | 8 23 37 00 | 0 08 45 53 | 0 19 03 24 | 8 12 19 29 | 6 20 26 46 | 9 03 16 49 | 3 15 29 48 | 11 14 40 45 | -22 17 | +14 22 | 12 52 | 1 14 |
| 9 | 8 24 38 08 | 0 21 59 52 | 0 19 21 46 | 8 13 52 03 | 6 20 35 36 | 9 02 43 31 | 3 15 25 23 | 11 14 37 35 | -22 09 | +19 33 | 13 27 | 2 48 |
| 10 | 8 25 39 16 | 1 04 59 59 | 0 19 40 37 | 8 15 25 03 | 6 20 44 20 | 9 02 09 01 | 3 15 20 57 | 11 14 34 24 | -22 01 | +23 43 | 14 07 | 3 51 |
| 11 | 8 26 40 23 | 1 17 47 58 | 0 19 59 52 | 8 16 58 29 | 6 20 52 56 | 9 01 33 31 | 3 15 16 27 | 11 14 31 13 | -21 52 | +26 39 | 14 52 | 4 55 |
| 12 | 8 27 41 30 | 2 00 25 10 | 0 20 19 33 | 8 18 32 21 | 6 21 01 26 | 9 00 57 17 | 3 15 11 56 | 11 14 28 02 | -21 42 | +28 11 | 15 43 | 5 55 |
| 13 | 8 28 42 36 | 2 12 52 20 | 0 20 39 38 | 8 20 06 38 | 6 21 09 47 | 9 00 20 33 | 3 15 07 20 | 11 14 24 51 | -21 32 | +28 16 | 16 38 | 6 49 |
| 14 | 8 29 43 42 | 2 25 10 02 | 0 21 00 07 | 8 21 41 24 | 6 21 18 02 | 8 29 43 36 | 3 15 02 43 | 11 14 21 41 | -21 22 | +26 56 | 17 37 | 7 36 |
| 15 | 9 00 44 48 | 3 07 18 48 | 0 21 20 59 | 8 23 16 39 | 6 21 26 09 | 8 29 06 41 | 3 14 58 03 | 11 14 18 30 | -21 11 | +24 21 | 18 36 | 8 17 |
| 16 | 9 01 45 53 | 3 19 19 25 | 0 21 42 14 | 8 24 52 22 | 6 21 34 09 | 8 28 30 04 | 3 14 53 21 | 11 14 15 19 | -21 00 | +20 44 | 19 34 | 8 52 |
| 17 | 9 02 46 58 | 4 01 13 14 | 0 22 03 51 | 8 26 28 36 | 6 21 42 00 | 8 27 54 00 | 3 14 48 37 | 11 14 12 08 | -20 49 | +16 18 | 20 31 | 9 23 |
| 18 | 9 03 48 02 | 4 13 02 19 | 0 22 25 48 | 8 28 05 19 | 6 21 49 43 | 8 27 18 44 | 3 14 43 50 | 11 14 08 57 | -20 37 | +11 17 | 21 24 | 9 50 |

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिनट [10 जन, 06 से 23 फर, 06 तक] 1 फर. (2006 ई.) को अयनांश 23°/56'/31"

| ता. | सूर्य (Sun) | चन्द्र (Moon) | मंगल (Mars) | बुध (Merc.) | गुरु (Jup.) | शुक्र (Venus) | शनि (Sat.) | राहु (Rahu) | सू. क्रां. | चं. क्रां. | ज्योतिष (भा. दै. म.) | |
|-----|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|------------|------------|----------------------|----------|
| | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | सू. क्रां. | चं. क्रां. | चंद्रोदय | चंद्रस्त |
| 19 | 9 04 49 06 | 4 24 49 35 | 0 22 48 07 | 8 29 42 35 | 6 21 57 19 | 8 26 44 31 | 3 14 39 02 | 11 14 05 47 | -20 25 | +5 53 | 22 19 | 10 15 |
| 20 | 9 05 50 10 | 5 06 38 46 | 0 23 10 46 | 9 01 20 25 | 6 22 04 47 | 8 26 11 35 | 3 14 34 13 | 11 14 02 36 | -20 12 | +0 16 | 23 13 | 10 40 |
| 21 | 9 06 51 13 | 5 18 34 18 | 0 23 33 46 | 9 02 58 47 | 6 22 12 06 | 8 25 40 08 | 3 14 29 24 | 11 13 59 25 | -19 59 | -5 26 | -- | 11 05 |
| 22 | 9 07 52 16 | 6 00 41 18 | 0 23 57 05 | 9 04 37 44 | 6 22 19 17 | 8 25 10 21 | 3 14 24 31 | 11 13 56 14 | -19 46 | -11 01 | 0 10 | 11 30 |
| 23 | 9 08 53 18 | 6 13 05 10 | 0 24 20 42 | 9 06 17 17 | 6 22 26 20 | 8 24 42 25 | 3 14 19 39 | 11 13 53 03 | -19 32 | -16 18 | 1 07 | 12 02 |
| 24 | 9 09 54 20 | 6 25 51 03 | 0 24 44 39 | 9 07 57 26 | 6 22 33 14 | 8 24 16 28 | 3 14 14 45 | 11 13 49 53 | -19 18 | -21 03 | 2 09 | 12 37 |
| 25 | 9 10 55 21 | 7 09 03 26 | 0 25 08 54 | 9 09 38 12 | 6 22 40 00 | 8 23 52 38 | 3 14 09 50 | 11 13 46 42 | -19 03 | -24 55 | 3 14 | 13 20 |
| 26 | 9 11 56 22 | 7 22 45 17 | 0 25 33 26 | 9 11 19 34 | 6 22 46 36 | 8 23 31 01 | 3 14 04 54 | 11 13 43 31 | -18 48 | -27 32 | 4 21 | 14 09 |
| 27 | 9 12 57 23 | 8 06 56 59 | 0 25 58 16 | 9 13 01 34 | 6 22 53 05 | 8 23 11 45 | 3 13 59 58 | 11 13 40 20 | -18 33 | -28 30 | 5 27 | 15 15 |
| 28 | 9 13 58 22 | 8 21 35 47 | 0 26 23 23 | 9 14 44 13 | 6 22 59 23 | 8 22 54 50 | 3 13 55 05 | 11 13 37 09 | -18 18 | -27 31 | 6 28 | 16 26 |
| 29 | 9 14 59 21 | 9 06 35 28 | 0 26 48 47 | 9 16 27 28 | 6 23 05 33 | 8 22 40 21 | 3 13 50 07 | 11 13 33 59 | -18 02 | -24 33 | 7 22 | 17 42 |
| 30 | 9 16 00 19 | 9 21 46 50 | 0 27 14 27 | 9 18 11 22 | 6 23 11 34 | 8 22 28 20 | 3 13 45 12 | 11 13 30 48 | -17 45 | -19 52 | 8 06 | 18 57 |
| 31 | 9 17 01 16 | 10 06 59 17 | 0 27 40 23 | 9 19 55 52 | 6 23 17 25 | 8 22 18 47 | 3 13 40 17 | 11 13 27 37 | -17 29 | -13 53 | 8 45 | 20 10 |
| फर. | 9 18 02 12 | 10 22 02 37 | 0 28 06 35 | 9 21 40 58 | 6 23 23 07 | 8 22 11 44 | 3 13 35 23 | 11 13 24 26 | -17 12 | -7 07 | 9 19 | 21 19 |
| 2 | 9 19 03 07 | 11 06 48 38 | 0 28 33 01 | 9 23 26 38 | 6 23 28 40 | 8 22 07 08 | 3 13 30 29 | 11 13 21 15 | -16 55 | -0 06 | 9 50 | 22 27 |
| 3 | 9 20 04 00 | 11 21 12 15 | 0 28 59 43 | 9 25 12 49 | 6 23 34 03 | 8 22 04 59 | 3 13 25 36 | 11 13 18 05 | -16 38 | +6 45 | 10 21 | 23 33 |
| 4 | 9 21 04 52 | 0 05 11 18 | 0 29 26 39 | 9 26 59 29 | 6 23 39 16 | 8 22 05 15 | 3 13 20 44 | 11 13 14 54 | -16 20 | +13 05 | 10 53 | -- |
| 5 | 9 22 05 44 | 0 18 46 07 | 0 29 53 48 | 9 28 46 36 | 6 23 44 20 | 8 22 07 54 | 3 13 15 53 | 11 13 11 43 | -16 02 | +18 36 | 11 28 | 0 10 |
| 6 | 9 23 06 32 | 1 01 58 44 | 1 00 21 11 | 10 00 34 02 | 6 23 49 13 | 8 22 12 56 | 3 13 11 04 | 11 13 08 32 | -15 44 | +23 05 | 12 07 | 1 46 |
| 7 | 9 24 07 20 | 1 14 51 59 | 1 00 48 46 | 10 02 21 43 | 6 23 53 56 | 8 22 20 13 | 3 13 06 15 | 11 13 05 21 | -15 25 | +26 18 | 12 50 | 2 49 |
| 8 | 9 25 08 06 | 1 27 29 05 | 1 01 16 35 | 10 04 09 33 | 6 23 58 30 | 8 22 29 47 | 3 13 01 29 | 11 13 02 11 | -15 06 | +28 08 | 13 39 | 3 50 |
| 9 | 9 26 08 51 | 2 09 53 00 | 1 01 44 36 | 10 05 57 22 | 6 24 02 54 | 8 22 41 32 | 3 12 56 47 | 11 12 59 00 | -14 47 | +28 31 | 14 30 | 4 46 |
| 10 | 9 27 09 34 | 2 22 06 21 | 1 02 12 48 | 10 07 45 00 | 6 24 07 08 | 8 22 55 27 | 3 12 52 05 | 11 12 55 49 | -14 28 | +27 29 | 15 30 | 5 35 |
| 11 | 9 28 10 16 | 3 04 11 19 | 1 02 41 12 | 10 09 32 14 | 6 24 11 11 | 8 23 11 25 | 3 12 47 24 | 11 12 52 38 | -14 08 | +25 10 | 16 30 | 6 18 |
| 12 | 9 29 10 56 | 3 16 09 45 | 1 03 09 48 | 10 11 18 51 | 6 24 15 04 | 8 23 29 25 | 3 12 42 47 | 11 12 49 27 | -13 49 | +21 46 | 17 27 | 6 54 |
| 13 | 10 00 11 35 | 3 28 03 14 | 1 03 38 35 | 10 13 04 34 | 6 24 18 47 | 8 23 49 22 | 3 12 38 12 | 11 12 46 17 | -13 29 | +17 30 | 18 24 | 7 26 |
| 14 | 10 01 12 12 | 4 09 53 21 | 1 04 07 32 | 10 14 49 03 | 6 24 22 20 | 8 24 11 13 | 3 12 33 39 | 11 12 43 06 | -13 09 | +12 35 | 19 20 | 7 53 |
| 15 | 10 02 12 49 | 4 21 41 56 | 1 04 36 39 | 10 16 31 56 | 6 24 25 41 | 8 24 34 54 | 3 12 29 09 | 11 12 39 55 | -12 48 | +7 14 | 20 12 | 8 19 |
| 16 | 10 03 13 23 | 5 03 31 05 | 1 05 05 57 | 10 18 12 48 | 6 24 28 53 | 8 25 00 20 | 3 12 24 43 | 11 12 36 44 | -12 27 | +1 37 | 21 06 | 8 44 |
| 17 | 10 04 13 57 | 5 15 23 31 | 1 05 35 25 | 10 19 51 10 | 6 24 31 53 | 8 25 07 29 | 3 12 20 19 | 11 12 33 33 | -12 07 | -04 05 | 22 00 | 9 08 |
| 18 | 10 05 14 28 | 5 27 22 28 | 1 06 05 02 | 10 21 26 22 | 6 24 34 43 | 8 25 56 16 | 3 12 15 59 | 11 12 30 23 | -11 45 | -09 42 | 22 57 | 9 34 |
| 19 | 10 06 15 00 | 6 09 31 47 | 1 06 34 49 | 10 22 58 20 | 6 24 37 22 | 8 26 26 38 | 3 12 11 42 | 11 12 27 12 | -11 24 | -15 02 | 23 58 | 10 02 |
| 20 | 10 07 15 29 | 6 21 55 41 | 1 07 04 45 | 10 24 25 57 | 6 24 39 52 | 8 26 58 31 | 3 12 07 29 | 11 12 24 00 | -11 03 | -19 53 | -- | 10 34 |
| 21 | 10 08 15 59 | 7 04 38 35 | 1 07 34 50 | 10 25 48 45 | 6 24 42 09 | 8 27 31 52 | 3 12 03 21 | 11 12 20 50 | -10 41 | -23 57 | 1 00 | 11 12 |
| 22 | 10 09 16 24 | 7 17 44 38 | 1 08 05 04 | 10 27 06 04 | 6 24 44 16 | 8 28 06 37 | 3 11 59 12 | 11 12 17 39 | -10 20 | -26 57 | 2 04 | 11 59 |
| 23 | 10 10 16 50 | 8 01 17 08 | 1 08 35 27 | 10 28 17 18 | 6 24 46 11 | 8 28 42 42 | 3 11 55 10 | 11 12 14 29 | -9 58 | -28 30 | 3 09 | 12 55 |

| ता. | सूर्य (Sun) | | चन्द्र (Moon) | | मंगल (Mars) | | बुध (Merc.) | | गुरु (Jup.) | | शुक्र (Venus) | | शनि (Sat.) | | राहु (Rahu) | | सू. क्रां. | | च. क्रां. | | जालन्धर (आ. सँ. का.) | |
|-------|-------------|-------------|---------------|-------------|-------------|------------|-------------|-------------|-------------|--------|---------------|--------|------------|--------|-------------|--------|------------|-----------|-----------|--------|----------------------|-------------|
| | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | सू. क्रां. | च. क्रां. | रा. अं. | क. वि. | चन्द्राक्षर | चन्द्राक्षर |
| फर. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | सू. क्रां. | च. क्रां. | रा. अं. | क. वि. | चन्द्राक्षर | चन्द्राक्षर |
| 24 | 10 11 17 14 | 8 15 17 45 | 1 09 05 59 | 10 29 21 46 | 6 24 47 55 | 8 29 20 05 | 3 11 51 13 | 11 12 11 18 | -9 36 | -28 19 | 4 11 14 00 | 24 | | | | | | | | | | |
| 25 | 10 12 17 37 | 8 29 45 39 | 1 09 36 39 | 11 00 18 50 | 6 24 49 28 | 8 29 58 43 | 3 11 47 18 | 11 12 08 07 | -9 14 | -26 14 | 5 03 15 12 | 25 | | | | | | | | | | |
| 26 | 10 13 17 59 | 9 14 37 05 | 1 10 07 26 | 11 01 07 54 | 6 24 50 50 | 9 00 38 30 | 3 11 43 27 | 11 12 04 57 | -8 51 | -22 19 | 5 51 16 28 | 26 | | | | | | | | | | |
| 27 | 10 14 18 18 | 9 29 45 06 | 1 10 38 23 | 11 01 48 29 | 6 24 52 00 | 9 01 19 26 | 3 11 39 42 | 11 12 01 46 | -8 29 | -16 52 | 6 35 17 42 | 27 | | | | | | | | | | |
| 28 | 10 15 18 36 | 10 15 00 22 | 1 11 09 27 | 11 02 20 09 | 6 24 53 00 | 9 02 01 28 | 3 11 36 01 | 11 11 58 35 | -8 06 | -10 19 | 7 11 18 55 | 28 | | | | | | | | | | |
| मार्च | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | रा. अं. | क. वि. | सू. क्रां. | च. क्रां. | रा. अं. | क. वि. | चन्द्राक्षर | चन्द्राक्षर |
| 1 | 10 16 18 52 | 11 00 12 37 | 1 11 40 40 | 11 02 42 32 | 6 24 53 48 | 9 02 44 31 | 3 11 32 25 | 11 11 55 24 | -7 43 | -03 11 | 7 45 20 06 | मार्च | | | | | | | | | | |
| 2 | 10 17 19 07 | 11 15 12 05 | 1 12 11 59 | 11 02 55 26 | 6 24 54 25 | 9 03 28 35 | 3 11 28 53 | 11 11 52 13 | -7 21 | +04 01 | 8 19 21 15 | 2 | | | | | | | | | | |
| 3 | 10 18 19 20 | 11 29 51 15 | 1 12 43 26 | 11 02 58 48 | 6 24 54 50 | 9 04 13 36 | 3 11 25 27 | 11 11 49 03 | -6 58 | +10 51 | 8 50 22 24 | 3 | | | | | | | | | | |
| 4 | 10 19 19 30 | 0 14 05 19 | 1 13 15 01 | 11 02 52 41 | 6 24 55 04 | 9 04 59 32 | 3 11 22 05 | 11 11 45 52 | -6 35 | +16 56 | 9 24 23 32 | 4 | | | | | | | | | | |
| 5 | 10 20 19 39 | 0 27 52 26 | 1 13 46 42 | 11 02 37 25 | 6 24 55 07 | 9 05 46 21 | 3 11 18 49 | 11 11 42 41 | -6 12 | +21 58 | 9 59 -- -- | 5 | | | | | | | | | | |
| 6 | 10 21 19 45 | 1 11 13 14 | 1 14 18 30 | 11 02 13 23 | 6 24 54 58 | 9 06 34 01 | 3 11 15 39 | 11 11 39 30 | -5 48 | +25 11 | 10 45 0 42 | 6 | | | | | | | | | | |
| 7 | 10 22 19 50 | 1 24 10 02 | 1 14 50 24 | 11 01 41 15 | 6 24 54 38 | 9 07 22 30 | 3 11 12 33 | 11 11 36 19 | -5 25 | +27 56 | 11 33 1 43 | 7 | | | | | | | | | | |
| 8 | 10 23 19 52 | 2 06 46 14 | 1 15 22 24 | 11 01 01 49 | 6 24 54 07 | 9 08 11 45 | 3 11 09 31 | 11 11 33 09 | -5 02 | +28 12 | 12 26 2 41 | 8 | | | | | | | | | | |
| 9 | 10 24 19 52 | 2 19 05 43 | 1 15 54 31 | 11 00 16 04 | 6 24 53 25 | 9 09 01 47 | 3 11 06 36 | 11 11 29 58 | -4 38 | +27 59 | 13 24 3 33 | 9 | | | | | | | | | | |
| 10 | 10 25 19 50 | 3 01 12 24 | 1 16 26 44 | 10 29 25 12 | 6 24 52 31 | 9 09 52 32 | 3 11 03 47 | 11 11 26 47 | -4 15 | +25 57 | 14 22 4 18 | 10 | | | | | | | | | | |
| 11 | 10 26 19 46 | 3 13 10 01 | 1 16 59 02 | 10 28 30 25 | 6 24 51 26 | 9 10 43 59 | 3 11 01 03 | 11 11 23 36 | -3 51 | +22 47 | 15 21 4 56 | 11 | | | | | | | | | | |
| 12 | 10 27 19 39 | 3 25 01 53 | 1 17 31 26 | 10 27 33 04 | 6 24 50 10 | 9 11 36 08 | 3 10 58 25 | 11 11 20 26 | -3 28 | +18 43 | 16 18 5 28 | 12 | | | | | | | | | | |
| 13 | 10 28 19 31 | 4 06 50 55 | 1 18 03 56 | 10 26 34 29 | 6 24 48 43 | 9 12 28 53 | 3 10 55 53 | 11 11 17 15 | -3 04 | +13 56 | 17 11 5 57 | 13 | | | | | | | | | | |
| 14 | 10 29 19 21 | 4 18 39 39 | 1 18 36 30 | 10 25 36 00 | 6 24 47 05 | 9 13 22 18 | 3 10 53 26 | 11 11 14 04 | -2 40 | +08 39 | 18 08 6 23 | 14 | | | | | | | | | | |
| 15 | 11 00 19 08 | 5 00 30 19 | 1 19 09 10 | 10 24 38 50 | 6 24 45 16 | 9 14 16 18 | 3 10 51 05 | 11 11 10 53 | -2 17 | +03 03 | 19 01 6 48 | 15 | | | | | | | | | | |
| 16 | 11 01 18 54 | 5 12 24 59 | 1 19 41 55 | 10 23 44 09 | 6 24 43 14 | 9 15 10 54 | 3 10 48 50 | 11 11 07 43 | -1 53 | -02 42 | 19 57 7 42 | 16 | | | | | | | | | | |
| 17 | 11 02 18 38 | 5 24 25 42 | 1 20 14 44 | 10 22 52 56 | 6 24 41 03 | 9 16 06 03 | 3 10 46 41 | 11 11 04 32 | -1 29 | -8 23 | 20 53 7 38 | 17 | | | | | | | | | | |
| 18 | 11 03 18 20 | 6 06 34 33 | 1 20 47 39 | 10 22 06 01 | 6 24 38 41 | 9 17 01 44 | 3 10 44 39 | 11 11 01 21 | -1 06 | -13 51 | 21 51 8 04 | 18 | | | | | | | | | | |
| 19 | 11 04 18 00 | 6 18 53 55 | 1 21 20 38 | 10 21 24 05 | 6 24 36 08 | 9 17 57 58 | 3 10 42 43 | 11 10 58 10 | -0 42 | -18 50 | 22 52 8 36 | 19 | | | | | | | | | | |
| 20 | 11 05 17 38 | 7 01 26 20 | 1 21 53 42 | 10 20 47 37 | 6 24 33 24 | 9 18 54 41 | 3 10 40 53 | 11 10 54 59 | -0 18 | -23 06 | 23 54 9 41 | 20 | | | | | | | | | | |
| 21 | 11 06 17 14 | 7 14 14 31 | 1 22 26 50 | 10 20 16 57 | 6 24 30 29 | 9 19 51 53 | 3 10 39 06 | 11 10 51 49 | +0 06 | -26 22 | -- -- 9 54 | 21 | | | | | | | | | | |
| 22 | 11 07 16 49 | 7 27 21 08 | 1 23 00 03 | 10 19 52 20 | 6 24 27 24 | 9 20 49 33 | 3 10 37 08 | 11 10 48 38 | +0 29 | -28 18 | 0 58 10 45 | 22 | | | | | | | | | | |
| 23 | 11 08 16 22 | 8 10 48 31 | 1 23 33 21 | 10 19 33 51 | 6 24 24 08 | 9 21 47 41 | 3 10 35 57 | 11 10 45 27 | +0 53 | -28 38 | 1 59 11 45 | 23 | | | | | | | | | | |
| 24 | 11 09 15 53 | 8 24 38 09 | 1 24 06 44 | 10 19 21 31 | 6 24 20 42 | 9 22 46 14 | 3 10 34 33 | 11 10 42 16 | +1 17 | -27 14 | 2 56 12 52 | 24 | | | | | | | | | | |
| 25 | 11 10 15 23 | 9 08 50 13 | 1 24 40 09 | 10 19 15 11 | 6 24 17 05 | 9 23 45 11 | 3 10 33 13 | 11 10 39 05 | +1 40 | -24 05 | 3 46 14 04 | 25 | | | | | | | | | | |
| 26 | 11 11 14 51 | 9 23 22 55 | 1 25 13 40 | 10 19 14 46 | 6 24 13 18 | 9 24 44 33 | 3 10 32 01 | 11 10 35 55 | +2 04 | -19 20 | 4 28 15 17 | 26 | | | | | | | | | | |
| 27 | 11 12 14 17 | 10 08 12 17 | 1 25 47 15 | 10 19 20 04 | 6 24 09 21 | 9 25 44 19 | 3 10 30 53 | 11 10 32 44 | +2 27 | -13 21 | 5 04 16 28 | 27 | | | | | | | | | | |
| 28 | 11 13 13 41 | 10 23 12 04 | 1 26 20 54 | 10 19 30 50 | 6 24 05 14 | 9 26 44 26 | 3 10 29 54 | 11 10 29 33 | +2 51 | -06 32 | 5 38 17 39 | 28 | | | | | | | | | | |
| 29 | 11 14 13 03 | 11 08 14 19 | 1 26 54 37 | 10 19 46 52 | 6 24 00 58 | 9 27 44 53 | 3 10 29 01 | 11 10 26 22 | +3 14 | +00 41 | 6 14 18 48 | 29 | | | | | | | | | | |
| 30 | 11 15 12 23 | 11 23 10 25 | 1 27 28 24 | 10 20 07 54 | 6 23 56 31 | 9 28 45 42 | 3 10 28 14 | 11 10 23 12 | +3 38 | +07 48 | 6 45 19 58 | 30 | | | | | | | | | | |
| 31 | 11 16 11 42 | 0 07 52 15 | 1 28 02 15 | 10 20 33 41 | 6 23 52 10 | 9 29 46 50 | 3 10 27 34 | 11 10 20 01 | +4 01 | +14 24 | 7 21 21 07 | 31 | | | | | | | | | | |

यूरेनस, नैपच्यून एवं प्लूटों ग्रहों का निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे भा. स्ट. टा. वि. २०६२ (2005-06 ई.)

| ता. | यूरेनस | नैपच्यून | प्लूटो | ता. | यूरेनस | नैपच्यून | प्लूटो | ता. | यूरेनस | नैपच्यून | प्लूटो | ता. | यूरेनस | नैपच्यून | प्लूटो |
|------|----------------|------------|------------|-------|----------------|------------|------------|-------|----------------|------------|------------|-----|----------------|------------|------------|
| अंश. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. | रा. अं. क. | जुला. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. | रा. अं. क. | अंकु. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. | रा. अं. क. | जं. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. | रा. अं. क. |
| १ | १० १४ ४४ २९ | ९ २३ ०२ | ८ ०० ३५ | १ | १० १६ ४३ ४९ | ९ २३ १४ | ७ २८ ४७ | १ | १० १३ ४३ ३६ | ९ २३ ०४ | ७ २८ ०७ | १ | १० १३ ४६ ५० | ९ २३ ०२ | ८ ०० ५९ |
| ४ | १० १४ ५३ २८ | ९ २३ ०६ | ८ ०० ३४ | ४ | १० १६ ४१ २९ | ९ २३ १० | ७ २८ ४३ | ४ | १० १३ ३७ ५० | ९ २३ ०१ | ७ २८ १० | ४ | १० १३ ५३ ३६ | ९ २३ ०८ | ८ ०१ ०५ |
| ७ | १० १५ ०२ २३ | ९ २३ ११ | ८ ०० ३३ | ७ | १० १६ ३८ २८ | ९ २३ ०६ | ७ २८ ३८ | ७ | १० १३ ३२ २१ | ९ २० ५९ | ७ २८ १४ | ७ | १० १४ ०० ४४ | ९ २३ १४ | ८ ०१ १२ |
| १० | १० १५ १० ४२ | ९ २३ १५ | ८ ०० ३२ | १० | १० १६ ३५ १२ | ९ २३ ०२ | ७ २८ ३४ | १० | १० १३ २७ १० | ९ २० ५८ | ७ २८ १७ | १० | १० १४ ०८ ११ | ९ २३ २० | ८ ०१ १८ |
| १३ | १० १५ १८ ५४ | ९ २३ १८ | ८ ०० ३० | १३ | १० १६ ३२ ३३ | ९ २३ ०४ | ७ २८ ३० | १३ | १० १३ २२ १८ | ९ २० ५६ | ७ २८ २२ | १३ | १० १४ १५ ५७ | ९ २३ २७ | ८ ०१ २४ |
| १६ | १० १५ २६ ५४ | ९ २३ २२ | ८ ०० २८ | १६ | १० १६ २७ ३३ | ९ २३ ०४ | ७ २८ २६ | १६ | १० १३ १७ ४७ | ९ २० ५५ | ७ २८ २५ | १६ | १० १४ २४ ०२ | ९ २३ ३३ | ८ ०१ ३० |
| १९ | १० १५ ३४ ३७ | ९ २३ २५ | ८ ०० २६ | १९ | १० १६ २३ ११ | ९ २३ ०४ | ७ २८ २२ | १९ | १० १३ १३ ३७ | ९ २० ५४ | ७ २८ २९ | १९ | १० १४ ३२ २१ | ९ २३ ४० | ८ ०१ ३६ |
| २२ | १० १५ ४१ ५४ | ९ २३ २८ | ८ ०० २४ | २२ | १० १६ १८ ३० | ९ २३ ०४ | ७ २८ १९ | २२ | १० १३ ०९ ४८ | ९ २० ५३ | ७ २८ ३३ | २२ | १० १४ ४० ५७ | ९ २३ ४६ | ८ ०१ ४२ |
| २५ | १० १५ ४९ ०० | ९ २३ ३० | ८ ०० २१ | २५ | १० १६ १३ ३० | ९ २३ ०४ | ७ २८ १६ | २५ | १० १३ ०६ २४ | ९ २० ५३ | ७ २८ ३८ | २५ | १० १४ ४९ ४९ | ९ २३ ५३ | ८ ०१ ४८ |
| २८ | १० १५ ५५ ४२ | ९ २३ ३३ | ८ ०० १८ | २८ | १० १६ ०८ ११ | ९ २३ ३५ | ७ २८ १२ | २८ | १० १३ ०३ २२ | ९ २० ५३ | ७ २८ ४३ | २८ | १० १४ ५८ ५४ | ९ २३ ०० | ८ ०१ ५३ |
| ३१ | १० १६ ०२ ०० | ९ २३ ३५ | ८ ०० १५ | ३१ | १० १६ ०२ ३६ | ९ २३ ३० | ७ २८ ०९ | ३१ | १० १३ ०० ४६ | ९ २० ५३ | ७ २८ ४८ | ३१ | १० १५ ०८ ११ | ९ २३ ०६ | ८ ०१ ५८ |
| ३४ | १० १६ ०८ ०६ | ९ २३ ३६ | ८ ०० १२ | ३४ | १० १६ ०० ४१ | ९ २३ २९ | ७ २८ ०८ | ३४ | १० १३ ०० ०० | ९ २० ५३ | ७ २८ ५० | ३४ | १० १५ ११ २० | ९ २३ ०९ | ८ ०२ ०० |
| ३७ | १० १६ १३ ४२ | ९ २३ ३८ | ८ ०० ०९ | ३७ | १० १५ ५४ ४४ | ९ २३ २४ | ७ २८ ०६ | ३७ | १० १२ ५७ ५९ | ९ २० ५४ | ७ २८ ५५ | ३७ | १० १५ २० ५३ | ९ २३ १६ | ८ ०२ ०५ |
| ४० | १० १६ १९ ०० | ९ २३ ४० | ८ ०० ०६ | ४० | १० १५ ४८ ३३ | ९ २३ १९ | ७ २८ ०३ | ४० | १० १२ ५६ २३ | ९ २० ५५ | ७ २९ ०१ | ४० | १० १५ ३० ३५ | ९ २३ २२ | ८ ०२ ०९ |
| ४३ | १० १६ २३ ४८ | ९ २३ ४० | ७ २९ ५७ | ४३ | १० १५ ४२ १० | ९ २३ १४ | ७ २८ ०१ | ४३ | १० १२ ५४ ३२ | ९ २० ५६ | ७ २९ ०६ | ४३ | १० १५ ४० २७ | ९ २३ २९ | ८ ०२ १४ |
| ४६ | १० १६ २८ १८ | ९ २३ ४० | ७ २९ ५३ | ४६ | १० १५ ३५ ३६ | ९ २३ ०९ | ७ २८ ५९ | ४६ | १० १२ ५४ १८ | ९ २० ५८ | ७ २९ १२ | ४६ | १० १५ ५० २५ | ९ २३ ३६ | ८ ०२ १८ |
| ४९ | १० १६ ३२ २४ | ९ २३ ४० | ७ २९ ५३ | ४९ | १० १५ २८ ५१ | ९ २३ ०४ | ७ २८ ५९ | ४९ | १० १२ ५४ ३१ | ९ २० ५८ | ७ २९ १८ | ४९ | १० १६ ०० ३० | ९ २३ ४३ | ८ ०२ २२ |
| ५२ | १० १६ ३६ ०६ | ९ २३ ४० | ७ २९ ५३ | ५२ | १० १५ २१ ५८ | ९ २३ ५९ | ७ २८ ५९ | ५२ | १० १२ ५४ ३१ | ९ २० ५८ | ७ २९ २४ | ५२ | १० १६ १० ४१ | ९ २३ ५० | ८ ०२ २६ |
| ५५ | १० १६ ३९ १८ | ९ २३ ४० | ७ २९ ५३ | ५५ | १० १५ १४ ५९ | ९ २३ ५५ | ७ २८ ५५ | ५५ | १० १२ ५५ १२ | ९ २० ५८ | ७ २९ ३१ | ५५ | १० १६ २० ५५ | ९ २३ ५६ | ८ ०२ ३० |
| ५८ | १० १६ ४२ ०६ | ९ २३ ३९ | ७ २९ ५० | ५८ | १० १५ ०७ ५५ | ९ २३ ५० | ७ २८ ५४ | ५८ | १० १२ ५६ २० | ९ २० ५७ | ७ २९ ३७ | ५८ | १० १६ ३१ १३ | ९ २३ ०३ | ८ ०२ ३२ |
| ६१ | १० १६ ४४ ३० | ९ २३ ३८ | ७ २९ ३५ | ६१ | १० १५ ०० ४६ | ९ २३ ४५ | ७ २८ ५४ | ६१ | १० १२ ५७ ५६ | ९ २० ५७ | ७ २९ ४३ | ६१ | १० १६ ४१ ३२ | ९ २३ ०९ | ८ ०२ ३५ |
| ६४ | १० १६ ४७ ०४ | ९ २३ ३७ | ७ २९ २९ | ६४ | १० १४ ५३ ३५ | ९ २३ ४१ | ७ २८ ५३ | ६४ | १० १३ ०० ०० | ९ २० ५७ | ७ २९ ४९ | ६४ | १० १६ ४४ ५९ | ९ २३ १२ | ८ ०२ ३६ |
| ६७ | १० १६ ४९ ०४ | ९ २३ ३७ | ७ २९ २५ | ६७ | १० १४ ४३ ५९ | ९ २३ ३५ | ७ २८ ५३ | ६७ | १० १३ ०२ ३१ | ९ २० ५७ | ७ २९ ५७ | ६७ | १० १६ ५५ १८ | ९ २३ १८ | ८ ०२ ३९ |
| ७० | १० १६ ४९ २४ | ९ २३ ३३ | ७ २९ २० | ७० | १० १४ ३५ ४९ | ९ २३ ३१ | ७ २८ ५४ | ७० | १० १३ ०५ ३० | ९ २० ५७ | ८ ०० ०३ | ७० | १० १७ ०५ ३८ | ९ २३ २४ | ८ ०२ ४१ |
| ७३ | १० १६ ४९ ५३ | ९ २३ ३१ | ७ २९ १५ | ७३ | १० १४ २९ ४३ | ९ २३ २७ | ७ २८ ५५ | ७३ | १० १३ ०८ ५५ | ९ २० ५७ | ८ ०० १० | ७३ | १० १७ १५ ५४ | ९ २३ ३० | ८ ०२ ४३ |
| ७६ | १० १६ ४९ ५७ | ९ २३ २९ | ७ २९ १० | ७६ | १० १४ २२ ४० | ९ २३ २३ | ७ २८ ५५ | ७६ | १० १३ १२ ४७ | ९ २० ५७ | ८ ०० १७ | ७६ | १० १७ २६ ०८ | ९ २३ ३६ | ८ ०२ ४५ |
| ७९ | १० १६ ४९ ३५ | ९ २३ २६ | ७ २९ ०६ | ७९ | १० १४ १५ ४४ | ९ २३ १९ | ७ २८ ५५ | ७९ | १० १३ १७ ०४ | ९ २० ५७ | ८ ०० २४ | ७९ | १० १७ ३६ १६ | ९ २३ ४२ | ८ ०२ ४७ |
| ८२ | १० १६ ४८ ४६ | ९ २३ २४ | ७ २९ ०१ | ८२ | १० १४ ०८ ५७ | ९ २३ १५ | ७ २८ ५८ | ८२ | १० १३ २१ ४७ | ९ २० ५७ | ८ ०० ३० | ८२ | १० १७ ४६ २० | ९ २३ ४८ | ८ ०२ ४८ |
| ८५ | १० १६ ४८ ४६ | ९ २३ २० | ७ २८ ५६ | ८५ | १० १४ ०२ १९ | ९ २३ १२ | ७ २८ ०० | ८५ | १० १३ २६ ५५ | ९ २० ५७ | ८ ०० ४४ | ८५ | १० १७ ५६ १६ | ९ २३ ५३ | ८ ०२ ४८ |
| ८८ | १० १६ ४८ ४६ | ९ २३ १७ | ७ २८ ५२ | ८८ | १० १४ ३५ ५३ | ९ २३ ०९ | ७ २८ ०५ | ८८ | १० १३ ३० २६ | ९ २० ५७ | ८ ०० ५० | ८८ | १० १८ ०६ ०५ | ९ २३ ०४ | ८ ०२ ४९ |
| ९१ | १० १६ ४८ ४६ | ९ २३ १४ | ७ २८ ५२ | ९१ | १० १४ ३५ ५३ | ९ २३ ०६ | ७ २८ ०५ | ९१ | १० १३ ३३ ३८ | ९ २० ५७ | ८ ०० ५७ | ९१ | १० १८ १५ ४५ | ९ २३ ०९ | ८ ०२ ४९ |
| ९४ | १० १६ ४८ ४६ | ९ २३ ११ | ७ २८ ५२ | ९४ | १० १४ ३५ ५३ | ९ २३ ०३ | ७ २८ ०५ | ९४ | १० १३ ३६ ३८ | ९ २० ५७ | ८ ०० ५७ | ९४ | १० १८ २५ १६ | ९ २३ १४ | ८ ०२ ४९ |
| ९७ | १० १६ ४८ ४६ | ९ २३ ०८ | ७ २८ ५२ | ९७ | १० १४ ३५ ५३ | ९ २३ ०० | ७ २८ ०५ | ९७ | १० १३ ३९ ३७ | ९ २० ५७ | ८ ०० ५७ | ९७ | १० १८ ३५ १६ | ९ २३ १९ | ८ ०२ ४९ |
| १०० | १० १६ ४८ ४६ | ९ २३ ०५ | ७ २८ ५२ | १०० | १० १४ ३५ ५३ | ९ २३ ०० | ७ २८ ०५ | १०० | १० १३ ४२ ३७ | ९ २० ५७ | ८ ०० ५७ | १०० | १० १८ ४५ १६ | ९ २३ २४ | ८ ०२ ४९ |

शुद्ध एवं शुभ विवाह मुहूर्त वि. संवत् २०६२ (सं. २००५-०६ ई.)

समय शुद्धि विचार-

- * शुक्रास्त-12 फरवरी (05 ई.) से 23 अप्रैल (05 ई.) तक शुक्रास्त रहेगा। 24 अप्रैल की प्रातः को पश्चिम में उदित होगा। ता. 25 से 27 अप्रै. के मध्य शुक्र बाल्यत्व दोष रहेगा।
- * श्राद्ध पक्ष-18 सितम्बर से 3 अक्टू. तक की अवधि में श्राद्ध रहेंगे।
- * गुरु अस्त-6 अक्टू. से 2 नव. तक गुरु पश्चिम में अस्त रहेगा। गुरु अस्त से तीन दिन पूर्व गुरु वार्धक्य तथा तीन दिन पश्चात् गुरु बाल्यत्व दोष रहेगा।
- * ग्रहण शूल-3 अक्टू. सोमवार की सायं को कंकण सूर्यग्रहण हस्त नक्षत्र में घटित होगा। जबकि द्वितीय खण्डग्रह (ग्रस्तोदित) चन्द्रग्रहण अश्विनी नक्षत्र कालीन लगेगा। ग्रहण से एक दिन पूर्व और तीन दिन पश्चात् शुभ कार्यों को करने का निषेध माना जाता है। कंकण ग्रहण कालीन नक्षत्र केवल एक मास तक तथा ग्रस्तोदित खण्ड वाला नक्षत्र 2 मास तक वर्जित माना जाता है।
- * त्रयोदश (13) दिन का पक्ष-कार्तिक शुक्ल पक्ष (2 नव. से 15 नव. तक) तेरह दिन का पक्ष होने के कारण शास्त्रानुसार विवाह आदि शुभ कार्यों के लिए त्याज्य माना जाएगा।
- * कार्तिक शुक्ल पक्ष में दो तिथियों का क्षय होने से 'विश्वघस्त्र' या 'त्रयोदश दिनात्मक' पक्ष कहा जाता है। मुहूर्त शास्त्रों में तेरह दिन के पक्ष को विवाह, मुण्डन, गृह-प्रवेश, उपनयन आदि शुभ कृत्यों के लिए त्याज्य लिखा है। 'ज्योतिर्विबन्ध' अनुसार -

उपनयन परिणयन वैशाखाब्दिकर्माणि। यात्रा दक्षिणपक्षे कुर्यान् जिजीविषुः पुरुषः॥

★ वैशाख मासे ★ (अप्रैल-मई) सन् २००५ ई.

| पक्ष | तिथि | वार | ता. अंगेजी | प्रविष्टे | नक्षत्र | चंद्रराशि | लतादि दशगुण-दोष |
|-------------|------|--------|------------|-----------|---------|-----------|------------------------------|
| वैशा. कृष्ण | ६ | शुक्र | 29 अप्रै. | १७ वैशा. | उषा. | धनु. | S बु. S सा. S श. S अ. S इ. S |
| वैशा. कृष्ण | ७ | शनि | 30 अप्रै. | १८ वैशा. | उषा. | मकर | S बु. S सा. S श. S अ. S इ. S |
| वैशा. कृष्ण | ८ | रवि | 1 मई | १९ वैशा. | श्रवण | मकर | S बु. S सा. S श. S अ. S इ. S |
| वैशा. कृष्ण | ९ | चन्द्र | 2 मई | २० वैशा. | घनिष्ठा | कुम्भ | S बु. S सा. S श. S अ. S इ. S |
| वैशा. कृष्ण | १० | बुध | 3 मई | २१ वैशा. | उ. भा. | मीन | S बु. S सा. S श. S अ. S इ. S |
| वैशा. कृष्ण | ११ | गुरु | 4 मई | २२ वैशा. | उ. भा. | मीन | S बु. S सा. S श. S अ. S इ. S |
| वैशा. शुक्ल | १२ | शनि | 5 मई | २३ वैशा. | रोहिणी | वृष | S बु. S सा. S श. S अ. S इ. S |
| वैशा. शुक्ल | १३ | रवि | 6 मई | २४ वैशा. | रोहिणी | वृष | S बु. S सा. S श. S अ. S इ. S |
| वैशा. शुक्ल | १४ | बुध | 7 मई | २५ वैशा. | मृग. | वृष | S बु. S सा. S श. S अ. S इ. S |
| वैशा. शुक्ल | १५ | गुरु | 8 मई | २६ वैशा. | मृग. | वृष | S बु. S सा. S श. S अ. S इ. S |
| वैशा. शुक्ल | १६ | शनि | 9 मई | २७ वैशा. | मृग. | वृष | S बु. S सा. S श. S अ. S इ. S |
| वैशा. शुक्ल | १७ | रवि | 10 मई | २८ वैशा. | मृग. | वृष | S बु. S सा. S श. S अ. S इ. S |
| वैशा. शुक्ल | १८ | बुध | 11 मई | २९ वैशा. | मृग. | वृष | S बु. S सा. S श. S अ. S इ. S |

★ ज्येष्ठ मासे ★ (मई-जून)

| पक्ष | तिथि | वार | ता. अंगेजी | प्रविष्टे | नक्षत्र | चंद्रराशि | लतादि दशगुण-दोष |
|----------------|------|--------|------------|-----------|---------|-----------|------------------------------|
| ज्येष्ठ. कृष्ण | १ | शुक्र | 12 मई | १ ज्ये. | उषा. | धनु. | S बु. S सा. S श. S अ. S इ. S |
| ज्येष्ठ. कृष्ण | २ | शनि | 13 मई | २ ज्ये. | उषा. | मकर | S बु. S सा. S श. S अ. S इ. S |
| ज्येष्ठ. कृष्ण | ३ | रवि | 14 मई | ३ ज्ये. | श्रवण | मकर | S बु. S सा. S श. S अ. S इ. S |
| ज्येष्ठ. कृष्ण | ४ | चन्द्र | 15 मई | ४ ज्ये. | घनिष्ठा | कुम्भ | S बु. S सा. S श. S अ. S इ. S |
| ज्येष्ठ. कृष्ण | ५ | बुध | 16 मई | ५ ज्ये. | उ. भा. | मीन | S बु. S सा. S श. S अ. S इ. S |
| ज्येष्ठ. कृष्ण | ६ | गुरु | 17 मई | ६ ज्ये. | उ. भा. | मीन | S बु. S सा. S श. S अ. S इ. S |
| ज्येष्ठ. कृष्ण | ७ | शनि | 18 मई | ७ ज्ये. | रोहिणी | वृष | S बु. S सा. S श. S अ. S इ. S |
| ज्येष्ठ. कृष्ण | ८ | रवि | 19 मई | ८ ज्ये. | रोहिणी | वृष | S बु. S सा. S श. S अ. S इ. S |
| ज्येष्ठ. कृष्ण | ९ | बुध | 20 मई | ९ ज्ये. | मृग. | वृष | S बु. S सा. S श. S अ. S इ. S |
| ज्येष्ठ. कृष्ण | १० | गुरु | 21 मई | १० ज्ये. | मृग. | वृष | S बु. S सा. S श. S अ. S इ. S |
| ज्येष्ठ. कृष्ण | ११ | शनि | 22 मई | ११ ज्ये. | मृग. | वृष | S बु. S सा. S श. S अ. S इ. S |
| ज्येष्ठ. कृष्ण | १२ | रवि | 23 मई | १२ ज्ये. | मृग. | वृष | S बु. S सा. S श. S अ. S इ. S |

- * श्रीष्म पंचक-11 नव. से 15 नव. तक श्रीष्म पंचक रहेंगे।
- * शुक्रास्तोदय सन् 2006 ई.-11 जन. (06 ई.) को अर्धरात्रि के बाद पश्चिम में अस्त होगा तथा 17 जन. (06 ई.) की प्रातः से पूर्व दिशा में उदित होगा।
- * होलाष्टक-7 मार्च से 14 मार्च (06 ई.) तक होलाष्टक होंगे। इन दिनों में भी शुभ कृत्यों का आरम्भ नहीं किया जाता।
- * नीचे विवाह मुहूर्तों में लता (१), पात (२), युति (३), वेध (४), जामित्र (५), मृत्युबाण (६), एकांगल (७), उपग्रह (८), क्रान्ति साम्य (९), दग्धा तिथि (१०)-इस क्रमानुसार दस गुण दोषों की गणना की गई है। सीधी रेखा (1) दोषाभाव अर्थात् गुण की सूचक है जबकि आड़ी रेखा (5) दोष की सूचक है। मुहूर्तों में क्रूर ग्रह की युति, वेध, मृत्युबाण, क्रान्तिसाम्य, भद्रादि दोषों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। परन्तु जहाँ पर इन दोषों के शास्त्र सम्मत परिहार मिल जाते हैं, वहाँ सम्बद्ध ग्रह की पूजा दानादि के पश्चात् विवाह मुहूर्त को शुभ एवं ग्राह्य मान लिया गया है।
- * सूक्ष्म क्रान्ति-साम्य गणित प्रक्रिया का आश्रय लिया गया है।
- * विवाह मुहूर्तों में लग्न विवरण में १ को मेष, २ को वृष, ३ को मिथुन, ४ को ऊर्क, ५ को सिंह, ६ को कन्या, ७ को तुला, ८ को वृश्चिक, ९ को धनु, १० को मकर, ११ को कुम्भ तथा १२ की संख्या को मीन लग्न राशि जानें।
- * नोट-आगे मकर लग्न पर गुरु की विशेष दृष्टि पड़ने के कारण शुभ एवं ग्राह्य माना गया है।

★ दि. ल. = दिन लग्न--रा. ल. = रात्रि लग्न

शुद्ध विवाह लग्न, ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (घण्टा/मिनटों में)

| |
|---|
| रा. ल. १० (रा. 1/36 उपा., चंद्र-शनि का दान व पूजा) मकर लग्न गुरु दृष्ट्या शुभ, दग्धाति. |
| लग्न गोधूलि, रात्रि लग्न ८ (वृश्चिके शुक्र षष्ठे पूज्य दान व) आवश्यक |
| दि. ल. २ (शु. दा.), गोधू., रा. ल. ८ (वृश्चिके शुक्र षष्ठे पूज्य दा. व) आवश्यक |
| दिन लग्न २, गोधूलि, क्रान्तिसाम्य दोषः सायं 17/16 से 21/24 तक |
| रात्रि लग्न १० (षष्ठे शनि दान व पूजा), पादेन गुरु वेधाभावः |
| दिवस लग्न २ (वृषे शुक्र का दान), पादेन गुरु वेधाभावः |
| रात्रि लग्न १० (मकर लग्न षष्ठ, शनि का दान व पूजा) |
| दि. ल. २ (वृषे चन्द्र दान, गोधूलि, रात्रौ लग्न ८ (वं. शु. दान पूजा व-आवश्यक) |
| रात्रि लग्न १० (मकरे शनि षष्ठ पूज्य, दान व) |
| दि. ल. २ (वं. दा.), गोधूलि, रात्रि लग्न ८ (शुक्र व चंद्र का दान) चंद्रदृष्ट्या परिहारः |

रात्रि लग्न १ (मेष लग्न गुरु दान)

रा. ल. १० (शनि षष्ठ पू व दा.), १ (वं. दा. व पू.) मकर लग्न गुरु दृष्ट्या शुभ, (मेषे षष्ठ रात्रिः)

रा. ल. १० (शनि षष्ठे पूज्य व दान), गुरु दृष्ट्या शुभ, १ (मेषे चन्द्र दान)

| पक्ष | तिथि | वार | ता. अंगेजी | प्रतिष्ठे | नक्षत्र | चंद्रराशि | लतादि दशगुण-दोष | शुद्ध विवाह लग्न, ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (घंटा-मिनटों में) |
|-------------|---------|-------|------------|-----------|---------|-----------|-----------------------|---|
| वैशा. शुक्ल | पूर्णि. | चंद्र | 23 मई | १० ज्ये. | अबु. | वृश्चि. | ।।।।। 5बु.। 5परि। 5।। | रात्रि लग्न १० (चंद्र-शनि का दान व पूजा), १ (चंद्र दान) मेषे चन्द्राष्टम परिहारः |
| ज्ये. कृष्ण | ४/५ | शुक्र | 27 मई | १४ ज्ये. | उ.षा. | घन/मक. | ।।।।। 5श. 5श.।। 55 5 | दि. ल. ३ (चं. दा. लग्न प्रातः 8/15 उप.), ७ (बु. दा.), गोधू., रा. ल. १ (श. दा.), रात्रि तिथिदोषऽभाव |
| ज्ये. कृष्ण | ५/६ | शनि | 28 मई | १५ ज्ये. | श्रवण | मकर | ।।।।। 5वृ.। 55 1 | दि. ल. ७ (बुध दान), गो., रा. ल. १ (शु., श. दा.) क्रान्तिरात्र्य दोष 18/19 से 23/37 तक |
| ज्ये. कृष्ण | ६/७ | रवि | 29 मई | १६ ज्ये. | धनि. | मक/कुंभ | ।।।।। 5रें। 5। | दि. ल. ३ (चं.-शु. दा.), मिथुन लग्न प्रातः 8/32 तक), रा. ल. १ (शुक्र एवं पू. दान व.) आवश्यक |
| ज्ये. कृष्ण | ९ | मंग. | 31 मई | १८ ज्ये. | उ.भा. | मीन | ।।।।। 5गु.।।। 5।। | रात्रि लग्न १ (मेष लगने चंद्र, शुक्र व शनि के दान), पादेन गुरु वेधाभाव |
| ज्ये. कृष्ण | १० | बुध | 1 जून | १९ ज्ये. | उ.भा. | मीन | ।।।।। 5गु.। 5रो.। 5।। | दिवा लग्न ३ (बुध का दान), रात्रौ भद्रा दोष व्याप्तम्, पादेन गुरु वेधऽभावः |
| ज्ये. कृष्ण | १२ | शुक्र | 3 जून | २१ ज्ये. | अश्वि. | मेष | 5शु.।।।। 55 1 | दिवा लग्न ३ (बुध का दान), दुपै. 15/40 से रात्रि पर्यन्त मृत्युबाण दोष |
| ज्ये. शुक्ल | ६ | रवि | 12 जून | २० ज्ये. | मघा | सिंह | । 5हर्ष।।।। 55 1 | ल. गोधूति, रा. ल. ९ (धनु ल. बु. शु. एवं पू. दा. वा.), ११ (कुम्भे षष्ठ शनि पूज्य, दान वा, चंद्र दान), आवश्यक, रात्रि 25/25 उपरांत मृत्युबाण दोषः |

★ आषाढ़ मासे ★ (जून-जुलाई)

| | | | | | | | | |
|-------------|-------|-------|----------|---------|--------|---------|----------------------|--|
| ज्ये. शुक्ल | १/१० | गुरु | 16 जून | ३ आषा. | चित्रा | कन्या | 5श। 5के। 5रा 5। 5।। | रात्रि लग्न २ (वृष), मृत्युबाणदोष 17/20 तक, केतु युति का परिहारः |
| ज्ये. शुक्ल | १० | शुक्र | 17 जून | ४ आषा. | चित्रा | कन्या | 5श। 5के। 5रा 5। 5।। | दिवा लग्न ७ (चंद्र दान, बुला लग्न 15/47 तक, केतु. युति का परिहारः) |
| ज्ये. शुक्ल | १०/११ | शुक्र | 17 जून | ४ आषा. | स्वाती | तुला | ।।।।। 5परि.।।। | रा. ल. २ (वृष ल. अर्धरात्रि 3/59 उप. (चंद्र दा. व पूजा) चंद्र षष्ठे शत्रु क्षेत्रे परिहारः |
| ज्ये. शुक्ल | ११ | शनि | 18 जून | ५ आषा. | स्वाती | तुला | ।।।।। 5परि.।।। | दिवा लगने भद्रा दोषः, रात्रि लग्न १ (मेषे चन्द्र एवं एवं शनि का दान) |
| ज्ये. शुक्ल | १३ | रवि | 19 जून | ६ आषा. | अबु. | वृश्चि. | ।।।।। 5।।।। | रा. ल. १ (चं. शु. दा. व पूजा, लग्न रात 26/38 उप.), रा. ल. २ (चंद्र एवं दान) |
| ज्ये. शुक्ल | १३ | चंद्र | 20 जून | ७ आषा. | अबु. | वृश्चि. | ।।।।। 5।।।। | दि. ल. ७ (चं. दा.), गोधू., रा. ल. ११ लग्नेश शनि षष्ठस्थ पूज्य दान वा—(आवश्यक) |
| आषा. कृष्ण | २ | गुरु | 23 जून | १० आषा. | उ.षा. | घनु/मक. | ।।।।। 5श. 5रो.।। 5। | ल. गोधूली, रा. ल. १ (मेषे शुक्र व शनि का दान), २ (वृष) |
| आषा. कृष्ण | ३ | शुक्र | 24 जून | ११ आषा. | श्रवण | मकर | 5के. 5वै.।। 5श.।।।। | रा. ल. १ (मेषे शुक्र व शनि का दान), २ (वृष) क्रान्तिरात्र्य दोष प्रा. 9/13 से 15/14 तक |
| आषा. कृष्ण | ४ | शनि | 25 जून | १२ आषा. | धनि. | मक/कुंभ | ।।।।। 5मृ. 5वि 5।। | दि. ल. ७ (दुपै. 3 बजे तक), रा. ल. २ (27/50 के बाद) (मृत्युबाण दोष दुपै. 3/15 से अर्धरात्रि 3/49 तक) |
| आषा. कृष्ण | ७/८ | मंग. | 28 जून | १५ आषा. | उ.भा. | मीन | ।।।।। 5गु.।।।। 5 | दि. ल. ८, गोधूति, रा. ल. १ (मेषे चं. मं., शुक्र, शनि का दान), २ (वृष), दग्धा वि. |
| आ. कृष्ण | १/१० | गुरु | 30 जून | १७ आषा. | अश्वि. | मेष | ।।।।। 5के. 5चौ.। 5।। | दि. ल. ७ (चंद्र एवं दा. व पूज्य), रा. ल. २ (चंद्र दा.) वृष लगने भद्रा स्वर्ग लोके शुभमस्ति |
| आषा. शुक्ल | ३/४ | शनि | 9 जुला. | २६ आषा. | मघा | सिंह | ।।।।। 5।।।। | रात्रि लग्न १ (मंगल, शनि का दान) मेष लग्न रात 25/09 उप., २ (वृषे शुक्र दान) |
| आषा. शुक्ल | ४ | रवि | 10 जुला. | २७ आषा. | मघा | सिंह | ।।।।। 5चौ.।।।। | दि. ल. ७ (मं. दा., दुपै. 13/48 तक, भद्रा पूर्व), रा. ल. २ (शु. दा.) वृष लग्न रात 27/01 उप. (भद्रा बाद) |
| आषा. शुक्ल | ७ | बुध | 13 जुला. | ३० आषा. | हस्त | कन्या | ।। 5गु.।।। 5परि 5।। | दि. ल. ७ (चं. मं. दा.), ८, गोधू., रा. ल. १ (चं. श. दा., चंद्र षष्ठ परिहार), रा. ल. २ (वृष लगने शुक्र का दान), पादेन गुरु युत्यभावः |

★ श्रावण मासे ★ (जुलाई-अगस्त, 2005 ई.)

| पक्ष | तिथि | वार | ता.अंग्रेजी | प्रविष्टे | नक्षत्र | चंद्रराशि | लतादि दश गुण-दोष | शुद्ध विवाह लग्न, ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (घण्टा-मिनटों में) |
|--------------|--------|---------|-------------|-----------|---------|-----------|-------------------------------|--|
| आ. शुक्ल | १०/११ | रवि | 17 जुला. | २ श्राव. | अनु. | वृश्चि. | ।।।।। S मृ. S । S । | दि. ल. ७ (चं.दा.), रा. ल. ३ (चं.दा.), मिथुन ल. 18 ता. की प्रातः 4/30 स्टैं. दा. के बाद रा. ल. मिथुने चंद्र षष्ठ परि., -आवश्यक भद्रा स्वर्गे शुभ फलदा, (मृत्युबाण दोषः 15/45 से 28/25 तक) |
| आ. शुक्ल | ११ | चन्द्र | 18 जुला. | ३ श्राव. | अनु. | वृश्चि. | ।।।।। S । S । | दिवा लग्न ५ (शनि का दान)-सिंह लग्न प्रातः 9/13 स्टैं. दा. के बाद |
| आ. शुक्ल | १२ | मंग. | 19 जुला. | ४ श्राव. | मूला | धनु | S सू. ।।।।। S ऐं ।।। | रा. ल. ३ (मिथुने चन्द्र-शुक्र का दान) |
| आ. शुक्ल | १४/१५ | बुध | 20 जुला. | ५ श्राव. | उषा | धनु | ।।।।। S वृ. ।।।।। | रात्रि लग्न ३ (चंद्र, शुक्र का दान, मिथुन ल. अर्धरात्रि 3/40 स्टैं. दा. के बाद) |
| आ. शुक्ल | पूर्णि | गुरु | 21 जुला. | ६ श्राव. | उषा | धनु/मकर. | ।।।।। S वि. ।।।।। | दि. ल. ५ (प्रातः 8/54 स्टैं. दा. तक), ८ (लग्ने भौम स्वर्गही दृष्ट्या शुभः ९ (बुध दा.) |
| आ. शुक्ल | पूर्णि | गुरु | 21 जुला. | ६ श्राव. | श्रवण | मकर | S के ।। S थु. S सू. ।। S ।। | रात्रि लग्न २ (वृषे मंगल का दान), पादेन शुक्र वेधऽभाव |
| श्राव. कृष्ण | १ | शुक्र | 22 जुला. | ७ श्राव. | श्रवण | मकर | S के ।। S थु. S सू. श ।। S ।। | दि. ल. ८ (मं.दा.), वृश्चिके भौम स्वर्गही दृष्ट्या शुभः, ९ (बु. दा.), गोधू. च (पादेन शुक्र वेधऽभाव) |
| श्राव. कृष्ण | १/२ | शुक्र | 22 जुला. | ७ श्राव. | धनि. | मकर | ।। S बु. S बु. S चौ. S ।।। | रात्रि लग्न २ (वृषे-मंगल का दान), पादेन बुध वेधऽभावः |
| श्राव. कृष्ण | २/३ | शनि | 23 जुला. | ८ श्राव. | धनि. | कुम्भ | ।। S बु. S बु. । S ।।। | दि. ल. ५ (चं.दा., सिंह ल. प्रातः 8/02 बाद), ८ (मं.दा.), ९ (बु. दा., धनु ल. 18/39 तक) |
| श्राव. कृष्ण | ५ | चन्द्रे | 25 जुला. | १० श्राव. | उ.भा. | मीन | ।। S गु. ।। S ।। | दि. ल. ८ (लग्ने भौम स्वर्गही दृष्ट्या शुभः, ९ (बुदा.), गो. रा. ल. २ (मं.दा.), ३ (शुदा.) पादेन गुरु वेधऽभावः |
| श्राव. कृष्ण | १० | शनि | 30 जुला. | १५ श्राव. | रोहि. | वृष | ।।।।। S ।। | दि. ल. ८ (दुपै. 15/07 उप., चंद्र ७वें दा., भद्रा स्वर्गे परिहारः, रा. ल. २, ३ (चं.शु.मं.दा.) |
| श्राव. कृष्ण | ११ | रवि | 31 जुला. | १६ श्राव. | रोहि. | वृष | ।।।।। S ।। | दिवा लग्न ५ (सूर्य-शनि का दान), ८ (चंद्र, मंगल का दान), गोधूली च. |
| श्राव. कृष्ण | ११ | रवि | 31 जुला. | १६ श्राव. | मृग. | वृष | ।।।।। S ।। | रात्रि लग्न २ (वृषे चंद्र, मंगल का दान), ३ (चं.-शु. दा.) |
| श्राव. कृष्ण | १२ | चंद्रे | 1 अग. | १७ श्राव. | मृग. | मिथुने | ।।।।। S चौ । S व्या S ।। | दिवा लग्न ५ (सूर्य, शनि का दान), ९ (चंद्र-बुध का दान) |
| श्राव. शुक्ल | १ | शनि | 6 अग. | २२ श्राव. | मघा | सिंह | ।।।।। S अ ।।।।। | दि. ल. ८ (स्वर्गही दृष्ट्या भौम षष्ठ परिहारः), ९ (बुदा.), गोधूली, रा. ल. २, (मं.-दा.) ३ (शुदा.) |
| श्राव. शुक्ल | ५/६ | बुध | 10 अग. | २६ श्राव. | चित्रा | कन्या | । S सा. ।। S रा. S चौ ।। S | गोधूली लग्न, रा. ल. २ (मं.-चं. दा.), ३ (मं. दा.) दग्धा तिथौ चंद्र दान व पूजा |
| श्राव. शुक्ल | ६ | गुरु | 11 अग. | २७ श्राव. | चित्रा | तुला | । S सा. ।। S रा ।।।।। S | दि. ल. ५ (सू. श. दा.), ८ (चं. दा., स्वर्गही दृष्ट्या भौम षष्ठ परिहारः) दग्धा तिथौ चंदा. |
| श्राव. शुक्ल | ६/७ | गुरु | 11 अग. | २७ श्राव. | स्वा. | तुला | S श. ।।।।। S ।। | रा. ल. ३ (शुक्र का दान) मिथुन लग्न रात 2/28 तक (क्रान्तिसाम्य दोष 26/29 से प्रा.) |
| श्राव. शुक्ल | ७ | शुक्र | 12 अग. | २८ श्राव. | स्वा. | तुला | S श. ।।।।। S रो. S ।। | दि. ल. ५ (7/03 के बाद) (सू.-श. का दा.), ८ (चं.दा.), क्रान्तिसाम्य दोष 7/03 तक |

★ भाद्रपद मासे ★ (अगस्त-सितम्बर)

| | | | | | | | | |
|--------------|--------|-------|--------|-----------|--------|----------|-----------------------------|--|
| श्राव. शुक्ल | १२/१३ | बुध | 17 अग. | २ भाद्र. | उषा. | घनु/मकर | S सू. ।।।।। S ।।।।। | दि. ल. ८ (14/12 उप.), ९ (बु. दा.), गोधू., रात्रौ 23/55 के बाद मृत्युबाण दोष |
| श्राव. शुक्ल | पूर्णि | शुक्र | 19 अग. | ४ भाद्र. | धनि. | मका/कुंभ | ।।।।। S S ।। | दि. ल. ८ (स्टैं. दा. 13/19 उप., भौम स्वर्गोत्तरे शुभः), गोधू., रा. ल. २ (मं. दा.) ३ (केतु दान) |
| भाद्र. कृष्ण | ४/५ | मंग. | 23 अग. | ८ भाद्र. | अश्वि. | मेष | । S गं. ।।।।। S S । | रा. ल. २ (चं. मं. दा.), ३ (शु. के. दा.)-मिथुन 27/10 के उप. (27/09 तक क्रान्तिसाम्य दोष) |
| भाद्र. कृष्ण | ५ | बुध | 24 अग. | ९ भाद्र. | अश्वि. | मेष | । S गं ।।।।। S । | दिवा लग्न ९ (बुध का दान), |
| भाद्र. कृष्ण | ७/८ | शुक्र | 26 अग. | ११ भाद्र. | रोहि. | वृष | S मं ।।।।। S व्या. S ।। | रात्रि लग्न २ (वृषे चंद्र-मंग. दान) चंद्र लग्ने परिहारः, ३ (मिथुने केतु-शुक्र दान) |
| भाद्र. कृष्ण | ८/९ | शनि | 27 अग. | १२ भाद्र. | रोहि. | वृष | S मं. S हर्ष ।।। S मृ. S ।। | रा. ल. २ (चं. मं. दा.), वृष लग्न रात 23/32 स्टैं. दा. तक), मृत्युबाण दोष रात 20/40 चं. मिं. तक |
| भाद्र. कृष्ण | ९ | शनि | 27 अग. | १२ भाद्र. | मृग. | वृष | । S हर्ष ।।।।। S ।। | रात्रि लग्न २ (चंद्र-मंगल का दान, चंद्र लग्ने परिहारः) ३ (मिथुने चंद्र दान) |

| पक्ष | तिथि | वार | ता.अंग्रेजी | प्रविष्टि | नक्षत्र | चंद्रराशि | लतादि दशगुण-दोष | शुद्ध विवाह लग्न, ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (घण्टा-मिनटों में) |
|--------------|------|-----|-------------|-----------|---------|-----------|-----------------------|---|
| भाद्र. कृष्ण | ९ | रवि | 28 अंग. | १३ भाद्र. | मृग. | वृष/मिथु | । ५ । । । ५ अ । ५ । ५ | दि. ल. ८ (चं. मं. दा., भौम षष्ठे परिहार), वृश्चि. ल. 12/26 तक), ९ (चं. बु. दान) रा. ल. २ (मं. दान, रात 23/32 तक) तदुपरान्त भद्रा विचार, दग्धा विचार आवश्यक दि. ल. ८ (शु. दा., स्वधोत्रे षष्ठे भौमः शुभः), ९ (धनु), केतु युति का परिहार रा. ल. ३ (के. दा.), पादेन गुरु-शुक्र युत्यभावः, क्रान्तिसाम्य दोष 17/51 से 22/00 तक दिवा लग्न ८ (शु. दा., भौम षष्ठे स्वधोत्री शुभः), ९ (धनु), पादेन गु.-शु. युत्यभाव रात्रौ लग्न ३ (मिथुन) तुला राशिस्थ चन्द्रगते भद्रा शुभ फलदा ॥ दि. ल. ८ (चं. शु. दा.) भौम षष्ठे स्वधोत्रे शुभः), ९, गोधू. रा. ल. ३ (मिथुन ल. रात 25/58 तक) दि. ल. ८ (वृश्चिके स्वगृही दृष्ट्या भौम षष्ठ परिहार), गोधू. रा. ल. ३ (चं. दा., लग्न रात्रि 24/49 तक) रात्रि लग्न ३ (मिथुने चन्द्र ७वें दानम्) दि. ल. ८ (स्वगृही दृष्ट्या भौम षष्ठ परिहारः), ९ (धनु), भद्रा पाताले शुभदा-आवश्यक |

★ मार्गशीर्ष मास ★ (नवम्बर-दिसम्बर, 2005 ई.)

| | | | | | | | | |
|--------------|-------|-------|--------|-----------|--------|----------|-------------------------------|--|
| मार्ग. कृष्ण | २ | गुरु | 17 नव. | २ मार्ग. | रोहिणी | वृष | ५ मं । । । ५ बु ५ । । । | रा. ल. ५ (श. दा., ल. रा. 25/18 तक) मृत्युबाण दोष प्रातः 10/23 से रात्रि 22/15 स्टैं. दा. तक रात्रि लग्न ५ (सिंहे शनि का दान) दि. ल. ११ (वृश्चि शनि पूज्य, लग्न पर गुरु की दृष्टि शुभः), गोधू. रा. ल. ५ (श. दा., भद्रा स्वर्गगते परिहारः) दि. ल. ११ (श. दा., लग्न गुरु दृष्ट्या शुभः), गोधू. रा. ल. ५ (श. चं. दा.) सिंहे चं. ल. दोष परिहार दिवा लग्न ९, ११ (कुम्भे शनि का दान, लग्न गुरु दृष्ट्या शुभः) रा. ल. ५ (सिंहे लग्न शनि का दान), केतु युति का परिहार दि. ल. ९ (बु. दा.), ११ (कुम्भे शनि षष्ठ परि. गुरु त्रिकोणस्थ) गोधू. केतु युति परि. रात्रि लग्न ५ (सिंह लग्न शनि का दान) दि. ल. ९ (बु. दा.), ११ (कुम्भे शनि षष्ठे (गुरु त्रिकोणेन शुभः), गोधू. रात्रि लग्नभावः रात्रि लग्न ५ (सिंह लग्न शनि का दान) रात्रि लग्न ५ (सिंह लग्न शनि का दान) दिवा लग्न ९ (धनुषि बुध का दान) दि. ल. ९ (बु. दान) प्रातः ९ के उप., ११ (श. दा.), दग्धा ति., रा. ल. अभावः, आवश्यक दि. ल. ९ (बु. दा.), रा. ल. ५ (श. दा.), कुम्भे भद्रा दोष व्याप्त दि. ल. ९ (प्रातः 8/13 वजे तक) |
| मार्ग. कृष्ण | २ | गुरु | 17 नव. | २ मार्ग. | मृग | वृष | । । । । । । । । । । | |
| मार्ग. कृष्ण | ३ | शुक्र | 18 नव. | ३ मार्ग. | मृग | वृष/मिथु | । । । । । ५ अ । । । । | |
| मार्ग. कृष्ण | ७/८ | बुध | 23 नव. | ८ मार्ग. | मघा | सिंह | । । । । । । ५ । । | |
| मार्ग. कृष्ण | ८ | गुरु | 24 नव. | ९ मार्ग. | मघा | सिंह | । । । । । । ५ । । | |
| मार्ग. कृष्ण | १० | शनि | 26 नव. | ११ मार्ग. | हस्त | कन्या | । । ५ के । । । ५ । । | |
| मार्ग. कृष्ण | ११ | रवि | 27 नव. | १२ मार्ग. | हस्त | कन्या | । । ५ के । । ५ अ ५ । । | |
| मार्ग. कृष्ण | ११/१२ | रवि | 27 नव. | १२ मार्ग. | चित्रा | कन्या | । । । । ५ रा ५ । । । | |
| मार्ग. कृष्ण | १२ | चंद्र | 28 नव. | १३ मार्ग. | चित्रा | तुला | । । । । ५ रा । । ५ । । | |
| मार्ग. शुक्ल | २ | शुक्र | 2 दि. | १७ मार्ग. | मूला | धनु | । ५ । । । । । । । । | |
| मार्ग. शुक्ल | ३/४ | रवि | 4 दि. | १९ मार्ग. | उषा. | धनु | । । ५ शु । । । । । । । | |
| मार्ग. शुक्ल | ५/६ | मंग | 6 दि. | २१ मार्ग. | श्रवण | मकर | । । । । ५ अ ५ व्या ५ । । | |
| मार्ग. शुक्ल | १० | शनि | 10 दि. | २५ मार्ग. | रेवती | मीन | । ५ । । ५ के ५ चौ ५ व्य ५ । ५ | |
| मार्ग. शुक्ल | ११ | रवि | 11 दि. | २६ मार्ग. | अश्वि. | मेघ | । । । । ५ रो । । । । | |
| मार्ग. शुक्ल | १२ | चंद्र | 12 दि. | २७ मार्ग. | अश्वि. | मेघ | । । । । ५ । । । । | |

★ माघ मासे ★ (जनवरी-फरवरी 2006 ई.)

| पक्ष | तिथि | वार | ता. अंग्रेजी | प्रविष्टे | नक्षत्र | चंद्रराशि | लतादि दशगुण-दोष | शुद्ध विवाह लग्न, शह की पूजा दानादि का विवरण (घण्टा-मिनटों में) |
|-----------|------|-------|--------------|-----------|---------|-----------|----------------------|---|
| माघ कृष्ण | ७ | शनि | 21 जन. | ८ माघ | चित्रा | कं./तुला | ।।।।।।।।।। | रात्रि लग्न ९ (धनु लगने राहु का दान) |
| माघ कृष्ण | ७/८ | रवि | 22 जन. | ९ माघ | चित्रा | तुला | ।।।।।।।।।। | दिया लग्न ११ (शनि षष्ठ दोष परिहार, लग्न पर गुरु की शुभ दृष्टि) |
| माघ कृष्ण | ७/८ | रवि | 22 जन. | ९ माघ | स्वाती | तुला | ५ बु श. ५ ।।।।।।।।।। | गोधू., रात्रि लग्न ९ (राहु दान), शूल योग विचार-नाग पूजा व दान, आवश्यक |
| माघ कृष्ण | १२ | गुरु | 26 जन. | १३ माघ | मूला | धनु | ।।।।।।।।।। | रा. ल. ८ (लग्न पर मंगल की स्वगृही दृष्टि तथा स्वक्षेत्री षष्ठे मं. शुभः), मं. का दान |
| माघ शुक्ल | १/२ | चंद्र | 30 जन. | १७ माघ | धनि | मकर/कुम्भ | ।।।।।।।।।। | दि. ल. ११ (चं. दा., ल. पर गुरु की दृष्टि होने से षष्ठस्थ शनि दोष परि., रा. ल. ९ (रा. दा.) |
| माघ शुक्ल | ५ | गुरु | 2 फर. | २० माघ | रेवती | मीन | ।।।।।।।।।। | रा. ल. ९ (धनुषि राहु का दान) (बसन्त पंचमी) |
| माघ शुक्ल | ६ | शुक्र | 3 फर. | २१ माघ | रेवती | मीन | ।।।।।।।।।। | दि. ल. ११ (लग्न पर गुरु की शुभ दृष्टि होने से षष्ठ शनि परिहारः), गोधू. |
| माघ शुक्ल | ६ | शुक्र | 3 फर. | २१ माघ | अश्वि | मेघ | ।।।।।।।।।। | रात्रि लग्न ९ (धनु-राहु का दान), सिंह लग्नेश सूर्य षष्ठ दोषः |
| माघ शुक्ल | ७ | शनि | 4 फर. | २२ माघ | अश्वि | मेघ | ।।।।।।।।।। | दिया लग्न ८ (षष्ठ स्वक्षेत्री भौम की लग्न पर शुभ दृष्टि) |
| माघ शुक्ल | ९/१० | चंद्र | 6 फर. | २४ माघ | रोहि. | वृष | ।।।।।।।।।। | रात्रि लग्न ११ (गु. की शुभ दृष्टि होने से षष्ठे शनि परिहारः), गोधूली च |
| माघ शुक्ल | १० | मंग. | 7 फर. | २५ माघ | रोहि. | वृष | ।।।।।।।।।। | दि. ल. ११ (कुंभ लग्ने गुरु की शुभ दृष्टि), १ (गु. दा.), गोधूली च. |
| माघ शुक्ल | ११ | बुध | 8 फर. | २६ माघ | मृग | वृष/मिथु | ।।।।।।।।।। | दि. ल. ११ (लग्न पर गुरु की दृष्टि शुभः), १ (गु. दा.) |

★ फाल्गुण मासे ★ (फरवरी-मार्च) 2006 ई.

| | | | | | | | | |
|---------------|---------|-------|---------|------------|--------|----------|---------------------|--|
| माघ शुक्ल | पूर्णि. | चंद्र | 13 फर. | २ फाल्गु. | मघा | सिंह | ।।।।।।।।।। | दि. ल. १ (गु. दा.), गोधू., रा. ल. ७ (गुरु केन्द्र भौमाष्टम परि.), तुला रा. 24/32 तक, तदुपरान्त मृत्युबाण दोषः |
| फाल्गु. कृष्ण | २ | बुध | 15 फर. | ४ फाल्गु. | उषा | सिंह/कं. | ।।।।।।।।।। | गोधू., रा. ल. ७ (चं. मं. दा., गुरु केन्द्र शुभः), ९ (धनु ल. अर्धरात्रि के बाद प्रातः 4/50 तक, भद्रा पूर्व) |
| फाल्गु. कृष्ण | ४/५ | शुक्र | 17 फर. | ६ फाल्गु. | चित्रा | कन्या | ।।।।।।।।।। | रा. ल. ९ (रा. दा.), रात 24/42 तक शूल योग होने से तुला लग्ने भ्रूजंगपात दोष, पादेन बुध वेधः भावः |
| फाल्गु. कृष्ण | ५ | शनि | 18 फर. | ७ फाल्गु. | चित्रा | कं./तुला | ।।।।।।।।।। | दिया लग्न १ (मेघ लग्न प्रातः 10/44 के बाद, चंद्र गुरु का दान), गोधूली, रात्रि लग्न ७ (गुरु केन्द्र गते भौमाष्टम परि.) तुला लग्न रात 23/54 तक |
| फा. कृष्ण | ५/६ | शनि | 18 फर. | ७ फाल्गु. | स्वा. | तुला | ५श. ५गं.।।।।।।।।।। | रा. ल. ७ (चं. दा., भौमाष्टम परिहारः, ९ (धनु में राहु का दान) |
| फाल्गु. कृष्ण | ६ | रवि | 19 फर. | ८ फाल्गु. | स्वा. | तुला | ५श. ५।।।।।।।।।। | दि. ल. १ (चं. गु. दा.), ३ (शु. दा.), दुपे. 15/25 के बाद विवाह नक्षत्र पर सूर्य का वेध दोष होगा) |
| फा. कृष्ण | ७/८ | चंद्र | 20 फर. | ९ फाल्गु. | अनु. | वृश्चि. | ५शु.।।।।।।।।।। | रात्रि लग्न ९ (धनुषि चंद्र-राहु का दान), धनु लग्न रात 27/05 के बाद |
| फाल्गु. कृष्ण | ८ | मंग. | 21 फर. | १० फाल्गु. | अनु. | वृश्चि. | ५शु.५हर्ष।।।।।।।।।। | दि. ल. १ (चं. गु. दा., चन्द्राष्टम परि.), गो., रा. ल. ७ (भौमाष्टम परि., दाने), ९ (रा. चं. दा.) |
| फाल्गु. कृष्ण | १० | गुरु | 23 फर. | १२ फाल्गु. | मूला | धनु | ५ बु.।।।।।।।।।। | प्रातः 10/50 स्टैं. दा. तक मृत्युबाण, रा. ल. ७ (भौम परि.), रात्रि 22/13 उपरांत-भद्रोत्तरे |
| फाल्गु. कृष्ण | १२ | शनि | 25 फर. | १४ फाल्गु. | उषा. | मकर | ५शु.५शु.।।।।।।।।।। | दिया लग्न १ (मेघे गुरु दान), रात्रौ कृष्ण त्रयो. तिथि दोषः |
| फाल्गु. शुक्ल | ३ | गुरु | 2 मार्च | १९ फाल्गु. | रेवती | मीन | ।।।।।।।।।। | दि. ल. १ (चं. गु. दा.), गोधूली, रा. ल. ९ (चं. दा.), दिवस लग्ने दग्धा दोष का अभावः |
| फाल्गु. शुक्ल | ७ | चंद्र | 6 मार्च | २३ फाल्गु. | रोहि. | वृष | ।।।।।।।।।। | दिया लग्न १ (बुध गुरु का दान), रात्रौ तिथि दोषः, भौम युति परिहारः |

वि. सम्बत् २०६३ में सांकेतिक गुरु-शुक्रारत काल लगभग ३ अक्लू (२००६) से २९ नव. तक शुक्रारत तक लगभग ७ नव. से २ दिसं. (२००६ ई.) के मध्य गुरु पश्चिम में अस्त रहेंगे ॥

071

071

071

[illegible]

| वर (लड़का) | वर-कन्या को शुभ एवं पूज्य मासादि | कन्या (लड़की) |
|--|---|---|
| धनु राशि-अप्रैल की २९, ३०, मई की १, २, ४-५ (चं.दा.), ९, १०, ११, १६, १९, २१, २३, २७, २८, २९, ३१-जून की १ (चं.दा.), ३, १२, १६, १७, १८, १९-२० (चं.दा.), २३, २४, २५, २८ (चं.दा.), ३०, जुला. की १, १०, १३, अग. की १७, १९, २३, २४, २६, २७, २८, सितं. की ६, ७, ८, १२, १३, १४, सन् २००६ ई. में जन. की २१, २२, २६, ३०, फर. की २-३ (चं.दा.), ४, ६, ७, ८, १३, १५, १७, १८, १९, २०-२१ (चं.दा.), २३, २५, मार्च की २, ६ तारीखें शुभ रहेंगी। | धनु राशि-अप्रैल की २९, ३०, मई की १, २, ४, ५, ९, १०, ११, १६, १९, २१, २३, २७, २८, २९, ३१, जून की १, ३, १२, १६, १७, १८, १९, २०, २३, २४, २५, २८, ३०, जुला. की १, १०, १३, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २५, ३०, ३१, अग. की १, ६, १०, ११, १२, १७, १९, २३, २४, २६, २७, २८, सितं. की ६, ७, ८, १२, १३, १४, नव. की १७, १८, २३, २४, २६, ३०, दिसं. की २, ४, ६, १०, ११, १२, जन. २००६ ई. की २१, २२, २६, ३०, फर. की २, ३, ४, ६, ७, ८, १३, १५, १७, १८, १९, २०, २१, २३, २५, मार्च की २, ६ शुभ होंगी। | धनु राशि-अप्रैल की २९, ३०, मई की १, २, ४, ५, ९, १०, ११, १६, १९, २१, २३, २७, २८, २९, ३१, जून की १, ३, १२, १६, १७, १८, १९, २०, २३, २४, २५, २८, ३०, जुला. की १, १०, १३, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २५, ३०, ३१, अग. की १, ६, १०, ११, १२, १७, १९, २३, २४, २६, २७, २८, सितं. की ६, ७, ८, १२, १३, १४, नव. की १७, १८, २३, २४, २६, ३०, दिसं. की २, ४, ६, १०, ११, १२, जन. २००६ ई. की २१, २२, २६, ३०, फर. की २, ३, ४, ६, ७, ८, १३, १५, १७, १८, १९, २०, २१, २३, २५, मार्च की २, ६ शुभ होंगी। |
| मकर राशि-मई की १९, २१, २३, २७, २८, २९, ३१, जून की १, ३ (चं.दा.), १६, १७, १८, १९, २०, २३, २४, २५, २८, ३० (चं.दा.), २१, २२, २३, २४, २५, ३०, ३१, अग. की १, १०, ११, १२, नव. की १७, १८, २६, २७, २८, दिसं. की २-४ (चं.दा.), ६, १०, ११, १२, सन् २००६ ई. में जन. की २१, २२, २६ (चं.दा.), ३०, फर. की २, ३-४ (चं.दा.), ६, ७, ८, १५ (२२/२३ बाद), १७, १८, १९, २०, २१, २३ (चं.दा.), २५, मार्च की २, ६ शुभ रहेंगी। | मकर राशि-अप्रैल की २९, ३०, मई की १, २, ४, ५, ९, १०, ११, १६, १९, २१, २३, २७, २८, २९, ३१, जून की १, ३, १२, १६, १७, १८, १९, २०, २३, २४, २५, २८, ३०, जुला. की १, ३, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २५, ३०, ३१, अग. की १, १०, ११, १२, १७, १९, २३, २४, २६, २७, २८, सितं. की ६, ७, ८, १२, १३, १४, नव. की १७, १८, २६, २७, २८, दिसं. की २, ४, ६, १०, ११, १२, सन् २००६ ई. में जन. की २१, २२, २६, ३०, फर. की २, ३, ४, ६, ७, ८, १५ (२२/२३ के बाद), १७, १८, १९, २०, २१, २३, २५, मार्च की २, ६ शुभ रहेंगी। | मकर राशि-अप्रैल की २९, ३०, मई की १, २, ४, ५, ९, १०, ११, १६, १९, २१, २३, २७, २८, २९, ३१, जून की १, ३, १२, १६, १७, १८, १९, २०, २३, २४, २५, २८, ३०, जुला. की १, ३, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २५, ३०, ३१, अग. की १, १०, ११, १२, १७, १९, २३, २४, २६, २७, २८, सितं. की ६, ७, ८, १२, १३, १४, नव. की १७, १८, २६, २७, २८, दिसं. की २, ४, ६, १०, ११, १२, सन् २००६ ई. में जन. की २१, २२, २६, ३०, फर. की २, ३, ४, ६, ७, ८, १५ (२२/२३ के बाद), १७, १८, १९, २०, २१, २३, २५, मार्च की २, ६ शुभ रहेंगी। |
| कुम्भ राशि-अप्रैल की २९, ३०-मई की १ (चं.दा.), २, ४, ५, ९-१०-११ (चं.दा.), जून की १७ (१५/४८ बाद), १८, १९, २०, २३-२४ (चं.दा.), २५, २६, ३०, जुला. की १, १०, १७, १८, १९, २०, २१-२२ (चं.दा.), २३, २४, २५, ३०-३१ (चं.दा.), अग. की १, ६, ११, १२, १७, १९, २३, २४, २६-२७-२८ (चं.दा.), सितं. की ७ (१२/०३ के बाद), ८, १२, १३, १४ (चं.दा.), नव. की १७-१८ (चं.दा.), २३, २४, २८, दिसं. की २, ४, ६ (चं.दा.), १०, ११, १२, सन् २००६ ई. में फर. की १३, १५ (२२/२२ तक), १८ (१०/४४ के बाद), १९, २०, २१, २३, २५ (चं.दा.), मार्च की २, ६ शुभ रहेंगी। | कुम्भ राशि-अप्रैल की २९, ३०, मई की १, २, ४, ५, ९, १०, ११, १६, १९, २१, २३, २७, २८, २९, ३१, जून की १, ३, १२, १७ (१५/४८ बाद), १८, १९, २०, २३, २४, २५, २६, ३०, जुला. की १, १०, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, ३०, ३१, अग. की १, ६, ११, १२, १७, १९, २३, २४, २६, २७, २८, सितं. की ७ (१२/०३ के बाद), ८, १२, १३, १४, नव. की १७, १८, २३, २४, २६, ३०, दिसं. की २, ४, ६, १०, ११, १२, सन् २००६ ई. में जन. की २१, २२, २६, ३०, फर. की २, ३, ४, ६, ७, ८, १५ (२२/२२ तक), १८ (१०/४४ बाद), १९, २०, २१, २३, २५, मार्च की २, ६ शुभ रहेंगी। | कुम्भ राशि-अप्रैल की २९, ३०, मई की १, २, ४, ५, ९, १०, ११, १६, १९, २१, २३, २७, २८, २९, ३१, जून की १, ३, १२, १७ (१५/४८ बाद), १८, १९, २०, २३, २४, २५, २६, ३०, जुला. की १, १०, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, ३०, ३१, अग. की १, ६, ११, १२, १७, १९, २३, २४, २६, २७, २८, सितं. की ७ (१२/०३ के बाद), ८, १२, १३, १४, नव. की १७, १८, २३, २४, २६, ३०, दिसं. की २, ४, ६, १०, ११, १२, सन् २००६ ई. में जन. की २१, २२, २६, ३०, फर. की २, ३, ४, ६, ७, ८, १५ (२२/२२ तक), १८ (१०/४४ बाद), १९, २०, २१, २३, २५, मार्च की २, ६ शुभ रहेंगी। |
| मीन राशि-अप्रैल की २९, ३०, मई की १, २ (चं.दा.), ४, ५, ९, १०, ११, १६, १९, २३, २७, २८, २९ (चं.दा.), ३१, जून की १, ३, १२, जुला. की १ (चं.दा.), १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३ (चं.दा.), २५, ३०, ३१, अग. की १ (चं.दा.), ६, १०, १७, १९ (चं.दा.), २३, २४, २६, २७, २८, सितं. की ६, ७ (१२/०२ तक), १२, १३, १४, नव. की १७, १८, २३, २४, २६, ३०, दिसं. की २, ४, ६, १०, ११, १२, सन् २००६ ई. में जन. की २१ (२८/०९ तक), २६, ३०, फर. की २, ३, ४, ६, ७, ८, १३, १५, १७, १८ (१०/४३ तक), २०, २१, २३, २५, मार्च की २, ६ शुभ रहेंगी। | मीन राशि-अप्रैल की २९, ३०, मई की १, २, ४, ५, ९, १०, ११, १६, १९, २३, २७, २८, २९, ३१, जून की १, ३, १२, १६, १७ (१५/४३ तक), १९, २०, २३, २४, २५, २६, ३०, जुला. की १, १०, १३, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २५, ३०, ३१, अग. की १, ६, १०, १७, १९, २३, २४, २६, २७, २८, सितं. की ६, ७ (१२/०२ तक), १२, १३, १४, नव. की १७, १८, २३, २४, २६, ३०, दिसं. की २, ४, ६, १०, ११, १२, सन् २००६ ई. में जन. की २१ (२८/०९ तक), २६, ३०, फर. की २, ३, ४, ६, ७, ८, १३, १५, १७, १८ (१०/४३ तक), २०, २१, २३, २५, मार्च की २, ६ शुभ रहेंगी। | मीन राशि-अप्रैल की २९, ३०, मई की १, २, ४, ५, ९, १०, ११, १६, १९, २३, २७, २८, २९, ३१, जून की १, ३, १२, १६, १७ (१५/४३ तक), १९, २०, २३, २४, २५, २६, ३०, जुला. की १, १०, १३, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २५, ३०, ३१, अग. की १, ६, १०, १७, १९, २३, २४, २६, २७, २८, सितं. की ६, ७ (१२/०२ तक), १२, १३, १४, नव. की १७, १८, २३, २४, २६, ३०, दिसं. की २, ४, ६, १०, ११, १२, सन् २००६ ई. में जन. की २१ (२८/०९ तक), २६, ३०, फर. की २, ३, ४, ६, ७, ८, १३, १५, १७, १८ (१०/४३ तक), २०, २१, २३, २५, मार्च की २, ६ शुभ रहेंगी। |

कुछ अन्य उपरीणी मुहूर्त

मुण्डन संस्कार मुहूर्त सं. २०६२

बालक की आयु के निषम वर्षों में, उत्तरायण मासों में तथा बालक की जन्म राशि से अष्टमस्थ राशि/लग्न को छोड़कर, ज्येष्ठ मास में बड़े (ज्येष्ठ) लड़के को मुण्डन करना शुभ नहीं होता। यदि बालक की माता गर्भवती या रजस्वला हो, तो भी मुण्डन कार्य न करें। यदि मुण्डनों के साथ उपनयन संस्कार भी हो, तो दोषापत्ति नहीं। मुण्डन के समय, बालक को नद्विधा वस्त्राभूषणों से विभूषित नहीं करना चाहिए। कुल परम्परानुसार कुछ लोग नवरात्रों में अथवा अक्षया तीज आदि शुभ मुहूर्तों में, शक्ति पीठों में, देवी (माता) के मन्दिर में अथवा रिहड़ तीर्थस्थलों पर विना सुनियोजित मुहूर्त के भी मुण्डन आदि शुभ कर्म कर लेते हैं।

| पक्ष तिथि वार | तारीख | प्रविष्टे | नक्षत्र | मुहूर्त विवरण (चं. मिं.) |
|-----------------------------|----------|-----------|----------|---|
| वै. कृ. ५/६, बुध २७ अश्वि | २७ अश्वि | १६ वैशा. | ज्येष्ठा | ल. वृष (चं. दा.), अभि. |
| वै. कृ. ८, रवि १ | १ मई | १९ वैशा. | श्रवण | ल. वृष, अभि. (विप्राय) |
| वै. कृ. ९, चंद्र २ | २ मई | २० वैशा. | धनिष्ठा | वृष, अभि., रिक्तातिथौ चंद्र दान (आवश्यक) |
| वै. कृ. १०, मंग. ३ | ३ मई | २१ वैशा. | शत. | मु. प्रत: ७/४९ तक (शत्रियाणां) |
| वै. शु. ३, बुध ११ मई | ११ मई | २९ वैशा. | मृग | वृष ल., अभि. (श्रक्षयातीज) |
| वै. शु. ७, रवि १५ मई | १५ मई | २ ज्ये. | पुष्य | प्रत: ८/१२ रवे य तक (विप्राय) |
| वै. शु. ११, शुक्र २० मई | २० मई | ७ ज्ये. | हस्त | मु. प्रत: ६/५९ के बाद, अभि. |
| वै. शु. १३, रवि २२ मई | २२ मई | ९ ज्ये. | स्वाती | कर्क, अभि., विप्राणां |
| ज्ये. कृ. २, बुध २५ मई | २५ मई | १२ ज्ये. | ज्येष्ठा | अभि., द्वौ. १२/४५ तक |
| ज्ये. कृ. ५, रवि २८ मई | २८ मई | १५ ज्ये. | श्रवण | दि. ल. मिथुन, अभिजित |
| ज्ये. कृ. ६, रवि २९ मई | २९ मई | १६ ज्ये. | धनि. | ल. मिथुन (८/३२ तक), विप्राणां |
| ज्ये. कृ. ७/८, चंद्र ३० मई | ३० मई | १७ ज्ये. | शत. | मिथुन, अभिजित |
| ज्ये. कृ. ११, शुक्र ३ जून | ३ जून | २१ ज्ये. | अश्वि. | मिथुन, अभिजित |
| ज्ये. शु. ३/४, शुक्र १० जून | १० जून | २८ ज्ये. | पुष्य | मु. द्वौ. १२/३९ के बाद |
| ज्ये. शु. ४/५, रवि ११ जून | ११ जून | २९ ज्ये. | पुष्य | मु. प्रत: ११/०९ के बाद, भद्रांतरे (वैश्यानां) |
| ज्ये. शु. ११, रवि १८ जून | १८ जून | ५ आषा. | स्वा. | मु. ८/१० तक, भद्रापूर्व (वैश्यानां) |

(सन् २००६ ई. में)

| | | | | |
|-----------------------------|--------|--------|----------|---------------|
| माघ कृ. ७/८, रवि २२ जन. | २२ जन. | ९ माघ | चित्रा | कुम्भ, अभिजित |
| माघ कृ. ११/१२, शुक्र २६ जन. | २६ जन. | १३ माघ | ज्येष्ठा | कुम्भ, अभिजित |
| माघ शु. १, चंद्र ३० जन. | ३० जन. | १७ माघ | धनिष्ठा | कुम्भ, अभिजित |

| पक्ष तिथि वार | तारीख | प्रविष्टे | नक्षत्र | मुहूर्त विवरण (चं. मिं.) |
|----------------------------|---------|-----------|-----------|---------------------------------|
| श्रा. शु. ७, शुक्र १२ अग. | १२ अग. | २८ श्राव. | स्वा. | सिंह (श. दा.), अभिजित |
| श्रा. शु. १२, बुध १७ अग. | १७ अग. | २ भाद्र. | उषा. | मुहूर्त द्वौ. १४/१२ उप. |
| श्रा. शु. १५, शुक्र १८ अग. | १८ अग. | ३ भाद्र. | उषा. | प्रत: ७/०५ तक |
| श्रा. शु. १६, शुक्र १९ अग. | १९ अग. | ४ भाद्र. | धनि. | मुहूर्त द्वौ. १३/१९ उपरांत |
| भा. कृ. ८, रवि २७ अग. | २७ अग. | १२ भाद्र. | रोहि. | मुहूर्त प्रात: ९/१५ तक |
| भा. कृ. १२, बुध ३१ अग. | ३१ अग. | १६ भाद्र. | पूर्व. | प्रत: ७/१३ तक |
| भा. शु. ११, बुध १४ सित. | १४ सित. | ३० भाद्र. | उषा. | मु. प्रात: १०/२२ तक, भद्रापूर्व |
| मार्ग. कृ. २, शु. १७ नव. | १७ नव. | २ मार्ग. | रोहि. | मु. प्रात: १० वजे तक |
| मा. कृ. ३, शुक्र १८ नव. | १८ नव. | ३ मार्ग. | मृग | कुम्भ (श. दा.), अभि. |
| मा. कृ. ५/६, चं. २१ नव. | २१ नव. | ६ मार्ग. | पुष्य | लग्न ९, ११, अभिजित |
| मा. कृ. १२, चंद्र २८ नव. | २८ नव. | १३ मार्ग. | चित्रा | ल. ९, ११, अभिजित |
| मा. शु. ५, चंद्र ५ दिस. | ५ दिस. | २० मार्ग. | उषा. | लग्न कुम्भ, अभिजित |
| मा. शु. ७, बुध ७ दिस. | ७ दिस. | २२ मार्ग. | धनि. | कुम्भ ल., अभिजित |
| मा. शु. १०, रवि १० दिस. | १० दिस. | २५ मार्ग. | उषा., रे. | लग्न ९, ११, अभिजित |

(सन् २००६ ई. में)

| | | | | |
|--------------------------|---------|-----------|--------|----------------------|
| माघ कृ. १, चंद्र ३० जन. | ३० जन. | १७ माघ | धनि. | लग्न कुम्भ, अभिजित |
| मा. शु. ७, रवि ४ फर. | ४ फर. | २२ माघ | अश्वि. | लग्न कुम्भ, अभिजित |
| मा. शु. ११, बुध ८ फर. | ८ फर. | २६ माघ | मृग | कुम्भ, मेघ, अभिजित |
| मा. शु. १२, शुक्र १० फर. | १० फर. | २८ माघ | पूर्व. | कुम्भ, मेघ, अभिजित |
| फा. कृ. १२, रवि २५ फर. | २५ फर. | १८ भाद्र. | उषा. | मेघ, अभिजित |
| फा. शु. ३, गुरु २ मार्च | २ मार्च | १९ भाद्र. | रेवती | मेघ (चं. दा.) अभिजित |
| फा. शु. ७, चंद्र ६ मार्च | ६ मार्च | २२ भाद्र. | रोहि. | मेघ, अभिजित |

७ मार्च से होलाष्टक प्रारम्भ

| भाग | प्रथम | द्वितीय | तृतीय | चतुर्थ | पंचम | षष्ठ | सप्तम | अष्टम |
|------------|-------|---------|-------|--------|-------------|--------|--------|-------|
| बैल के शिर | शिर | अग-फर | पृष्ठ | पृष्ठ | दक्ष-कुक्षि | पुच्छ | वाप- | अटम |
| अंग | अंग | फर | फर | फर | कुक्षि | कुक्षि | मुख | |
| नक्षत्र | ३ | ४ | ४ | ३ | ४ | ३ | ४ | ३ |
| फल | अग्नि | शुभ | स्थिर | श्री | धन | स्वामी | दक्षिण | कष्ट |
| | दाह | | | लाभ | लाभ | हानि | दुख | |

विधि—बैल की आकृति बनाकर उसे आठ भागों में बाँटे। सूर्य अधीष्ठित नक्षत्र से आरम्भ करके प्रत्येक भाग में उपरोक्त क्रमानुसार नक्षत्रों की स्थापना करके पाल ज्ञात करें। जैसे—यदि गृह निर्माण के

विपणि (दुकान आदि व्यवसाय) शुरू करने के मुहूर्त सं. २०६२

विपणि (दुकान) अथवा मध्यम स्तरीय कारोबार शुरू करने के मुहूर्त सभी प्रकार के व्यवसाय को प्रारम्भ करने में ग्राह्य होंगे। व्यवसाय प्रारम्भ करने से पूर्व मुहूर्त वाले दिन अपने कार्यालय में किसी विद्वान् ब्राह्मण द्वारा श्री गणपति सहित पंचदेव पूजा, नवग्रह पूजन, कलशस्थापनादि के पश्चात् ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दानादि करना चाहिए।

| पक्ष तिथि वार | तारीख | प्रविष्टे | नक्षत्र | मुहूर्त विवरण (घं. मि.) |
|----------------------|-----------|-----------|---------|------------------------------|
| वै. कृ. ७, शनि | 30 अप्रै. | १८ वैशा. | उषा. | मुहूर्त दुपे. 14/13 के बाद |
| वै. कृ. ८, रवि | 1 मई | १९ वैशा. | श्रव. | लग्न वृष, अभिजित |
| वै. कृ. १२, शुक्र | 5 मई | २३ वैशा. | उषा. | वृष लग्न, अभिजित |
| वै. शु. ३, बुध | 11 मई | २९ वैशा. | मृग. | ल. वृष, अभि. (अक्षया ३) |
| वै. शु. ७, रवि | 15 मई | २ ज्ये. | पुष्य | मु. प्रातः 8/12 बजे तक |
| वै. शु. ११, शुक्र | 20 मई | ७ ज्ये. | हस्त | मु. प्रातः 6/59 के बाद, अभि. |
| ज्ये. कृ. ५, शुक्र | 27 मई | १४ ज्ये. | उषा. | दुपे. 14/05 उपान्त |
| ज्ये. कृ. ५६, शनि | 28 मई | १५ ज्ये. | श्रव. | अभिजित |
| ज्ये. कृ. ६, रवि | 29 मई | १६ ज्ये. | धनि. | मु. प्रातः 8/32 तक |
| ज्ये. कृ. १०, बुध | 1 जून | १९ ज्ये. | उषा. | लग्न मिथुन, अभिजित |
| ज्ये. कृ. १२, शुक्र | 3 जून | २२ ज्ये. | अश्वि | मिथुन, अभिजित |
| ज्ये. शु. ५, शनि | 11 जून | २९ ज्ये. | पुष्य | प्रातः 11/09 के बाद, अभि. |
| ज्ये. शु. १०, शुक्र | 17 जून | ४ आषा. | चित्रा | लग्न सिंह, अभिजित |
| ज्ये. शु. ११, शनि | 18 जून | ५ आषा. | स्वा. | प्रातः 8/10 तक, भद्रपूर्व |
| ज्ये. शु. १३, चंद्र | 20 जून | ७ आषा. | अनु. | लग्न ५ (मं. दा.), अभि. |
| आ. कृ. ३, शुक्र | 24 जून | ११ आषा. | उषा. | मुहूर्त प्रातः 9/12 तक |
| आ. कृ. ५, रवि | 26 जून | १३ आषा. | धनि. | मुहूर्त प्रातः 9/32 तक |
| आ. कृ. ८, बुध | 29 जून | १६ आषा. | रेव. | मुहूर्त प्रातः 11/23 तक |
| आ. कृ. १०, गु. | 30 जून | १७ आषा. | अश्वि | मुहूर्त प्रातः 10/51 के बाद |
| आ. शु. ७, बुध | 13 जुलाई | ३० आषा. | हस्त | लग्न ७, अभिजित |
| आ. शु. ११, चंद्र | 14 जुलाई | ३ श्राव. | अनु. | ल. सिंह 9/13 के बाद, अभि. |
| आ. शु. १५, गु. | 21 जुलाई | ६ श्राव. | उषा. | ल. सिंह (प्रातः 8/54 तक) |
| श्रा. कृ. २/३, शनि | 23 जुलाई | ८ श्राव. | धनि. | ल. सिंह (8/02 उप.), वृश्चि. |
| श्रा. कृ. ५, चंद्र | 25 जुलाई | १० श्राव. | उषा. | लग्न वृश्चि., अभिजित |
| श्रा. कृ. ११, र. | 31 जुलाई | १६ श्राव. | रोहि. | सिंह, वृश्चि., अभिजित |
| श्रा. कृ. १२, चंद्र | 1 अग. | १७ श्राव. | मृग. | सिंह, अभिजित |
| श्रा. शु. ७, शुक्र | 12 अग. | २८ श्राव. | स्वा. | सिंह, अभिजित |
| श्रा. शु. १२/१३, बु. | 17 अग. | २ भाद्र. | उषा. | मुहूर्त दुपे. 14/12 उप. |

पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त सं. २०६२

पुराने (पुरातन) गृह प्रवेश के मुहूर्तों के लिए ऊपर दिए गए नूतन गृह-प्रवेश मुहूर्तों के अतिरिक्त नीचे लिखे मुहूर्त भी ग्रहणीय रहेंगे। अस्थाई तौर पर किराये आदि के मकान में प्रवेश के लिए निम्नलिखित मुहूर्त ग्राह्य होंगे। पुरातन गृह प्रवेश के समय भी नवग्रह पूजन, शान्ति एवं देव पूजन, ब्राह्मण भोजन आदि कृत्य करने कल्याणकारी होंगे।

| पक्ष तिथि वार | तारीख | प्रविष्टे | नक्षत्र | मुहूर्त विवरण (घं. मि.) |
|------------------------|----------|-----------|---------|------------------------------|
| वै. कृ. ८, रवि | 1 मई | १९ वैशा. | श्रवण | लग्न वृष, अभिजित |
| ज्ये. कृ. ७/८, चंद्र | 30 मई | १७ ज्ये. | शत. | लग्न ३, अभिजित |
| ज्ये. शु. ३/४, शुक्र | 10 जून | २८ ज्ये. | पुष्य | दुपे. 12/39 उप. |
| आ. शु. ११, चंद्र | 18 जुलाई | ३ श्राव. | अनु. | सिंह ल. प्रा. 9/13 उप., अभि. |
| आ. शु. ५, गुरु | 21 जुलाई | ६ श्राव. | उषा. | सिंह ल. प्रा. 9/54 तक, अभि. |
| श्रा. कृ. पूर्ण शुक्र | 22 जुलाई | ७ श्राव. | श्रवण | वृश्चिक, अभिजित |
| श्रा. कृ. २/३, शनि | 23 जुलाई | ८ श्राव. | धनि. | सिंह, अभिजित |
| श्रा. कृ. ५, चंद्र | 25 जुलाई | १० श्राव. | उषा. | अभिजित, वृश्चिक |
| श्रा. कृ. १२, चंद्र | 1 अग. | १७ श्राव. | मृग. | सिंह, अभिजित |
| श्रा. शु. ६, गु. | 11 अग. | २७ श्राव. | चित्रा | सिंह, (श. दा.), अभिजित |
| श्रा. शु. ७, शुक्र | 12 अग. | २८ श्राव. | स्वा. | सिंह (प्रा. 7/03 उप.), अभि. |
| श्रा. शु. १३/१४, शुक्र | 18 अग. | ३ भाद्र. | श्रव. | मु. दुपे. 12/30 उप. |
| भा. कृ. ५, बुध | 24 अग. | ९ भाद्र. | अश्वि. | अभिजित, धनु. |
| भा. कृ. ८, शनि | 27 अग. | १२ भाद्र. | मृग. | मुह. प्रातः 9/15 तक |
| भा. कृ. १२, बुध | 31 अग. | १६ भाद्र. | पुन. | मु. प्रातः 7/13 तक |
| भा. शु. १५, गु. | 8 सित. | २४ भाद्र. | स्वा. | अभिजित, वृश्चिक |
| भा. शु. १९, बुध | 14 सित. | ३० भाद्र. | उषा. | मु. प्रातः 10/22 तक |

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त सं. २०६२

नूतन (नवीन) गृह प्रवेश में अपने पण्डित जी से पूछ कर रखे गए पूर्व निर्धारित मुहूर्त पर किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण द्वारा नव. गृह में वास्तु शान्ति, नवग्रह-पूजन-शान्ति, स्वास्ती वाचन एवं पंचदेव गोपूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों एवं आश्रितजनों की यथाशक्ति भोजन-दानादि एवं कन्या पूजन, सवत्सा गाय, जलपूर्ण कलश तथा ब्राह्मणों को आगे करके शंख ध्वनि एवं मंगल गान सहित नव गृह में प्रवेश करना चाहिए। ध्यान रहे, सुप्तभूमि का विचार गृह निर्माण आरम्भ में ही विशेषतया करना चाहिए।

| पक्ष तिथि वार | तारीख | प्रविष्टे | नक्षत्र | मुहूर्त विवरण (घं. मि.) |
|----------------------|-----------|-----------|----------|--|
| वै. कृ. ७, शनि | 30 अप्रै. | १८ वैशा. | उषा. | दुपे. 14/13 के उप., भद्र के बाद |
| वै. कृ. १२, गुरु | 5 मई | २३ वैशा. | उषा. | वृष लग्न, अभिजित |
| वै. शु. ३, बुध | 11 मई | २९ वैशा. | मृग. | वृष, अभिजित, अक्षया (३) |
| वै. शु. ७, रवि | 15 मई | २ ज्येष्ठ | पुष्य | मु. 8/12 तक (रवि पुष्य योग) |
| वै. शु. ११/१२, शुक्र | 20 मई | ७ ज्येष्ठ | हस्त | मु. 6/59 के बाद, अभिजित |
| ज्ये. कृ. ५, शुक्र | 27 मई | १४ ज्ये. | उषा. | दुपे. 14/05 के बाद |
| ज्ये. कृ. ६, शनि | 28 मई | १५ ज्ये. | श्रव. | प्रातः 6/07 तक विशेष मु. अभि. |
| ज्ये. कृ. १०, बुध | 1 जून | १९ ज्ये. | उषा. | मिथुन, अभिजित |
| ज्ये. कृ. १२, शुक्र | 3 जून | २२ ज्ये. | अश्वि. | मिथुन, अभिजित |
| ज्ये. शु. ५, शनि | 11 जून | २९ ज्ये. | पुष्य | प्रातः 11/09 के बाद, अभि. |
| ज्ये. शु. १०, शुक्र | 17 जून | ४ आषा. | चित्रा | कर्क, सिंह (मं. दा.), अभि. |
| ज्ये. शु. ११, शनि | 18 जून | ५ आषा. | स्वा. | प्रातः 8/10 तक, भद्रपूर्व |
| ज्ये. शु. १३, चंद्र | 20 जून | ७ आषा. | अनु. | ल. ५ (मं. का दान), अभि. |
| मार्ग. कृ. २, गु. | 17 नव. | २ मार्ग. | रोहि. | मुहूर्त प्रातः 10 बजे तक, तदुपान्त मृत्युबाण |
| मा. कृ. ३, शुक्र | 18 नव. | ३ मार्ग. | मृग. | कुम्भ (श. दा.), अभिजित |
| मा. कृ. ५/६, चंद्र | 21 नव. | ६ मार्ग. | पुष्य | लग्न ९, ११, अभिजित |
| मा. कृ. १२, चंद्र | 28 नव. | १३ मार्ग. | चित्रा | लग्न ९, ११, अभिजित |
| मा. शु. ५, चंद्र | 5 दिसं. | २० मार्ग. | उषा. | प्रातः 11/04 उप., कुंभ, अभि. |
| मा. शु. ७, बुध | 7 दिसं. | २२ मार्ग. | धनि. | कुम्भ लग्न, अभिजित |
| मा. शु. १०, शनि | 10 दिसं. | २५ मार्ग. | उषा/रेव. | लग्न ९, ११, अभिजित |
| मा. शु. १२, चंद्र | 12 दिसं. | २७ मार्ग. | अश्वि. | धनु लग्न (प्रातः 8/13 तक) |

समय सूर्य मेष नक्षत्र में हो, तो मेषा, पूषा, उषा-यह ३ नक्षत्र प्रथम भाग (शिर) पर आएंगे। इसी क्रम से अन्य सभी २७ नक्षत्रों की स्थापना क्रमानुसार करें। यदि फिर चक्र में लिखे फलानुसार मुहूर्त के शुभाशुभ का निर्णय करें। यदि सूर्य का नक्षत्र प्रथम भाग में पड़े तो मकान में अग्नि का भय हो, यदि पंचम भाग में पड़े तो धन लाभ होगा।

| पक्ष तिथि वार | तारीख | प्रविष्टे | नक्षत्र | मुहूर्त विवरण (चं. मि.) |
|-------------------|----------|-----------|---------|--------------------------------|
| मा. शु. १५, शुक्र | १९ अग. | ४ भाद्र. | धनि. | अभिजित, लग्न ८, |
| भा. शु. ५, गु. | ८ सितं. | २४ भाद्र. | स्वा. | मुहूर्त ६/१७ उप, अभिजित |
| भा. शु. ११, बुध | १४ सितं. | ३० भाद्र. | उषा. | अभिजित |
| मा. कृ. ३, शुक्र | १८ नव. | ३ मार्ग. | मृग. | अभि, ल. कुम्भ (चं.श.दा.) |
| मा. कृ. ५/६ चं. | २१ नव. | ६ मार्ग. | पुष्य | अभिजित, कुम्भ |
| मा. कृ. ११, रवि | २७ नव. | १२ मार्ग. | हस्त | लग्न धनु, अभिजित |
| मा. कृ. १२, चंद्र | २८ नव. | १३ मार्ग. | चित्रा | लग्न धनु, अभिजित |
| मा. शु. १०, शनि | १० दिसं. | २५ मार्ग. | रेवती | लग्न ९, ११, अभिजित |
| मा. शु. ११, रवि | ११ दिसं. | २६ मार्ग. | रे. अ. | मु. प्रातः ११/०२ तक, भद्रपूर्व |
| मा. शु. १२, चंद्र | १२ दिसं. | २७ मार्ग. | अश्वि. | ल. धनु (प्रातः ८/१३ तक) |

सर्वदेव प्रतिष्ठा (मूर्ति स्थापना) मुहूर्त

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त देवी-देवताओं की मूर्ति स्थापना, जलाशय, तालाब, बावड़ी, कुआँ आदि के निर्माण हेतु भी ग्रहणीय होंगे। प्रायः सात्विक देवी-देवताओं की मूर्ति स्थापना में उत्तरायण मास विशेष प्रशस्त माने जाते हैं। उत्तरायण में मुहूर्तों के अतिरिक्त भगवान् विष्णु की मूर्ति स्थापना में वामन जयन्ती, मत्स्य जयन्ती, अक्षया तृतीया, श्री कृष्ण मन्दिर की प्रतिष्ठा हेतु कृष्ण जन्माष्टमी, मार्गशीर्ष मास भी विशेष प्रशस्त है।

इसी भाति श्री गणेश प्रतिमा की स्थापना में उभा., रेवती नक्षत्र, मंगलवार, गणेश चतुर्थी विशेषकर भाद्रपद, माघ, वैशाख, कृष्ण एवं शुक्ल चतुर्थी तिथि विशेषतः शुभ मानी जाती हैं। श्री विष्णु, राम की मूर्ति स्थापना में वैशाख आदि उत्तरायण मासों के अतिरिक्त श्री परशुराम जयन्ती, अक्षया तृतीया, रामनवमी, विजयादशमी, दीपावली आदि विशेष शुभ हैं। श्री विष्णु प्रतिमा में माघ मास वर्जित होता है। भैरव आदि तामस देवों के लिए मार्गशीर्ष मास विशेष ग्राह्य होता है।

श्री शिव मूर्ति, शिवलिंग की प्रतिष्ठा में श्रावण एवं फाल्गुण मास की चतुर्दशी (शिवरात्री) विशेषतया प्रशस्त है। श्री दुर्गा माता, श्री महालक्ष्मी, सरस्वती, गौरी एवं काली माता की भी प्रतिष्ठा में दक्षिणायण (गुर्वास्तादि रहित) मास में नवरात्रे, अष्टमी/नवमी तिथि, मूला नक्षत्र, दीवाली एवं बसन्त पंचमी, नवरात्रे विशेष शुभ माने जाते हैं।

श्री हनुमान जी की मूर्ति स्थापना में चैत्र शु. पूर्णिमा, कार्तिक कृष्ण चौदश, मंगल, रविवार एवं आर्द्रा नक्षत्र विशेष शुभ माने जाते हैं। आगे दिए गए मुहूर्त भगवान् विष्णु, राम, शिव-शक्ति माता, श्री गणेश हनुमान आदि देवों के लिए शुभ एवं ग्राह्य होंगे।

श्री शिव मूर्ति, शिवलिंग की प्रतिष्ठा में श्रावण एवं फाल्गुण मास की चतुर्दशी (शिवरात्री) विशेषतया प्रशस्त है।

श्री दुर्गा माता, श्री महालक्ष्मी, सरस्वती, गौरी एवं काली माता की भी प्रतिष्ठा में दक्षिणायण (गुर्वास्तादि रहित) मास में नवरात्रे, अष्टमी/नवमी तिथि, मूला नक्षत्र, दीवाली एवं बसन्त पंचमी, नवरात्रे विशेष शुभ माने जाते हैं।

श्री हनुमान जी की मूर्ति स्थापना में चैत्र शु. पूर्णिमा, कार्तिक कृष्ण चौदश, मंगल, रविवार एवं आर्द्रा नक्षत्र विशेष शुभ माने जाते हैं। आगे दिए गए मुहूर्त भगवान् विष्णु, राम, शिव-शक्ति माता, श्री गणेश हनुमान आदि देवों के लिए शुभ एवं ग्राह्य होंगे।

| पक्ष तिथि वार | तारीख | प्रविष्टे | नक्षत्र | मुहूर्त विवरण (चं. मि.) |
|--------------------|---------|-----------|---------|-----------------------------|
| मा. कृ. ७, रवि | २२ जन. | ९ माघ | चित्रा | लग्न ११, अभिजित |
| मा. शु. १/२, चंद्र | ३० जन. | १७ माघ | धनि. | कुम्भ, अभिजित |
| मा. शु. ३, बुध | १ फर. | १९ माघ | पू.भा. | मु. प्रातः ८/५८ तक, बुध दान |
| माघ शु. ६, शुक्र | ३ फर. | २१ माघ | रेव. | कुम्भ, अभिजित |
| मा. शु. १२, गुरु | ९ फर. | २७ माघ | आर्द्रा | कुम्भ, मेघ, अभिजित |
| फा. कृ. २, बुध | १५ फर. | ४ फागु. | पू.फा. | मेघ, अभिजित |
| फा. शु. २, बुध | १ मार्च | १८ फागु. | पू.भा. | मेघ, अभिजित |
| फा. शु. ३, गु. | २ मार्च | १९ फागु. | रेव. | मेघ, (चं. दा.), अभिजित |
| फा. शु. ७, चंद्र | ६ मार्च | २३ फागु. | रोहि. | मेघ, अभिजित |

द्विरागमन (मुकलावा) मुहूर्त सं. २०६२

विवाह उपरांत पिता के गृह में आकर दूसरी बार पुनः पति के गृह में जाने को द्विरागमन (मुकलावा) कहते हैं। विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर ही द्विरागमन हो, तो निधर्षित मुहूर्तों के बिना भी वधू प्रवेश या द्विरागमन करवाना शुभ होता है। यद्यपि १६ दिन के भीतर भी द्विरागमन हो, तो भी अभावस, रिक्ता तिथि अथवा शूल, वार आदि अशुभ योगों का भी विचार कर लेना चाहिए। इसके अतिरिक्त, नवविवाहिता स्त्री को विवाह के बाद द्विरागमन अथवा यात्रा में समुख शुक्र एवं दक्षिण शुक्र का भी विचार किया जाता है—अर्थात् शुक्र जिस दिशा (पूर्व या पश्चिम) में उदित होता हो, उस दिशा में शुक्र समुख तथा उससे दहिनी ओर की दिशा दक्षिणस्थ मानी जाती है। मुकलावा के निम्न मुहूर्त विवाहोपरांत १६ दिन के पश्चात् ही विशेषतः ग्रहणीय होंगे।

| वै. कृ. | १२, गुरु | ५ मई | २३ वैशा. | उ.भा. | लग्न वृष, अभिजित |
|-----------|--------------|--------|-----------|--------|--------------------------|
| वै. शु. | ३, बुध | ११ मई | २९ वैशा. | मृग. | लग्न वृष, अभिजित |
| वै. शु. | ११/१२, शुक्र | २० मई | ७ ज्ये. | हस्त | कर्क, अभिजित |
| ज्ये. कृ. | ५, शुक्र | २७ मई | १४ ज्ये. | उषा. | दुपे. १४/०५ के उपरांत |
| ज्ये. कृ. | ६, रवि | २९ मई | १६ ज्ये. | धनि. | मिथुन, अभिजित |
| ज्ये. कृ. | १०, बुध | १ जून | २९ ज्ये. | उभा. | मिथुन, अभिजित |
| ज्ये. कृ. | १२, शुक्र | ३ जून | २९ ज्ये. | अश्वि. | लग्न ५ (मं. दा.), अभिजित |
| ज्ये. शु. | १३, चंद्र | २० जून | ७ आषा. | अनु. | मु. प्रातः १० बजे तक |
| मा. कृ. | २, गु. | १७ नव. | २ मार्ग. | रोहि. | कुम्भ (श. दा.), अभिजित |
| मा. कृ. | ३, शुक्र | १८ नव. | ३ मार्ग. | मृग. | लग्न कुम्भ, अभिजित |
| मा. कृ. | ५, रवि | २० नव. | ५ मार्ग. | पुन. | लग्न धनु, कुंभ, अभिजित |
| मा. कृ. | ५/६, चंद्र | २१ नव. | ६ मार्ग. | पुष्य | लग्न धनु, कुम्भ, अभिजित |
| मा. कृ. | ११/१२, रवि | २७ नव. | १२ मार्ग. | चित्रा | लग्न धनु, कुम्भ, अभिजित |

| पक्ष तिथि वार | तारीख | प्रविष्टे | नक्षत्र | मुहूर्त विवरण (चं. मि.) |
|---------------------|----------|-----------|---------|--------------------------------|
| श्रा. शु. १५, शुक्र | १९ अग. | ४ भाद्र. | धनि. | अभिजित, लग्न ८, |
| भा. शु. ५, गु. | ८ सितं. | २४ भाद्र. | स्वा. | मुहूर्त ६/१७ उप, अभिजित |
| भा. शु. ११, बुध | १४ सितं. | ३० भाद्र. | उषा. | अभिजित |
| मा. कृ. ३, शुक्र | १८ नव. | ३ मार्ग. | मृग. | अभि, ल. कुम्भ (चं.श.दा.) |
| मा. कृ. ५/६ चं. | २१ नव. | ६ मार्ग. | पुष्य | अभिजित, कुम्भ |
| मा. कृ. ११, रवि | २७ नव. | १२ मार्ग. | हस्त | लग्न धनु, अभिजित |
| मा. कृ. १२, चंद्र | २८ नव. | १३ मार्ग. | चित्रा | लग्न धनु, अभिजित |
| मा. शु. १०, शनि | १० दिसं. | २५ मार्ग. | रेवती | लग्न ९, ११, अभिजित |
| मा. शु. ११, रवि | ११ दिसं. | २६ मार्ग. | रे. अ. | मु. प्रातः ११/०२ तक, भद्रपूर्व |
| मा. शु. १२, चंद्र | १२ दिसं. | २७ मार्ग. | अश्वि. | ल. धनु (प्रातः ८/१३ तक) |

यज्ञोपवीत (उपनयन) मुहूर्त वि. सं. २०६२

उपनयन में ज्येष्ठ पुत्र के लिए ज्येष्ठ मास का त्याग करें

| वै. शु. | ३, बुध | ११ मई | २९ वैशा. | मृग. | लग्न वृष, अभिजित |
|-----------|------------|--------|----------|---------|-------------------------|
| वै. शु. | ७, रवि | १५ मई | २ ज्ये. | पुष्य | मुहूर्त लग्न ४, अभिजित |
| वै. शु. | १०, बुध | १८ मई | ५ ज्ये. | पू.फा. | लग्न कर्क, अभिजित |
| वै. शु. | ११/१२, शु. | २० मई | ७ ज्ये. | हस्त | लग्न कर्क, अभिजित |
| ज्ये. कृ. | ७, चंद्र | ३० मई | १७ ज्ये. | शत. | मुहूर्त प्रातः ६/१७ तक |
| ज्ये. कृ. | ९, गु. | १ जून | २७ ज्ये. | आर्द्रा | लग्न सिंह, अभिजित |
| ज्ये. शु. | २/३, गु. | ९ जून | ३० ज्ये. | आश्ले | लग्न सिंह, अभिजित |
| ज्ये. शु. | ५, रवि | १२ जून | ४ आषा. | चित्रा | लग्न सिंह, अभिजित |
| ज्ये. शु. | १०, शु. | १७ जून | ७ आषा. | अनु. | ल. सिंह (मं. दान), अभि. |

नामकरण संस्कार मुहूर्त 20६2

(अन्न प्राशन मुहूर्त में भी ग्राह्य)

अपनी कुल परम्परा अनुसार सूतक समाप्ति के पश्चात् जन्मदिन से १०, ११, १२, १३, १६, १९ या २२वें या ४१वें तथा विषणि में दिए गए शुभ मुहूर्तों में नामकरण संस्कार करना चाहिए। मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक व्यक्तित्व के विकास में उसकी प्रसिद्ध नाम राशि का विशेष महत्त्व होता है। व्यापार, व्यवहार, सर्विस, संकल्पपूर्वक दान दीक्षा-मंत्र-सिद्धि आदि कार्यों में नाम की ही प्रधानता रहती है। नामकरण संस्कार अपने कुल के वृद्ध व्यक्ति, महात्मा, गुरु, पण्डित, ज्योतिषी, पिता या कुल पुरोहित जी से परामर्श के अनुसार अथवा जन्म-नक्षत्र के चरणक्षर से प्रारम्भ होने वाले अक्षर से युक्त किसी महान् पुरुष, कुलदेवता, ईश्वर या देववाचक, मंगल/कल्याणार्थक तथा कानों को मधुर लगने वाले अक्षर वाला नाम रखना चाहिए। यदि जन्म नक्षत्र/राशि पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो लग्न, लग्नेश या भाग्येश ग्रह से सम्बन्धित राशि वाले अक्षर से प्रारम्भ होने वाला नाम रखना चाहिए। उस दिन किसी ब्राह्मण द्वारा स्वास्ती वाचन, पंचदेव एवं नवग्रह पूजादि करवा कर ब्राह्मण का भोजन, वस्त्र, फल दक्षिणा आदि द्वारा सत्कार करना चाहिए।

चुनाव में खड़े होने का मुहूर्त

शुभ तिथियाँ—(१ क.), २, ३, ५, ९, १०, १२ एवं १५ शुक्ल।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार।

शुभ नक्षत्र—अश्विनी, रोहिणी, पुन, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती।

शुभ लग्न—(इ) १, ४, ७, १०।

विशेष—केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११वें मास ग्रह हो। लग्न एवं लग्नेश पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो। बुध, शुक्र, गुरु उदित हों। चन्द्र बली हो तथा प्रत्याशी की राशि मुहूर्त वाले दिन-छटे, आठवें एवं १२वें न हो।

संसद् में शपथ ग्रह के समय स्थिर लग्न प्रशस्त होता है।

सर्वदेव प्रतिष्ठा (मूर्ति स्थापना) मुहूर्त

| पक्ष तिथि वार | प्रविष्टे | नक्षत्र | मुहूर्त विवरण (चं. मि.) | पक्ष तिथि वार | प्रविष्टे | नक्षत्र | मुहूर्त विवरण (चं. मि.) |
|----------------------------|-----------|---------|--|------------------------|-----------|---------|--|
| वै. कृ. ७, शनि 30 अप्रै. | १८ वैशा. | उषा. | तृ. 14 13 के बाद, सु. शनि | मा. शु. ३, बुध | १९ माघ | पूषा. | मु. श्रतः 8/58 तक, गौरी मन्दिर |
| वै. कृ. ८, रवि 1 मई | १९ वैशा. | श्रव. | लग्न वृष, अभि, श्री दुर्गा | मा. शु. ६, शुक्र | २१ माघ | रेव. | ल. कुंभ, अभि., शिव परिवार |
| वै. कृ. १२, गुरु 5 मई | २३ वैशा. | उषा. | वृष, अभि., श्रीगणेश, श्रीम. कृष्ण | मा. शु. ७, शनि | २२ माघ | अश्वि | ल. कुंभ, अभि., सूर्यादि देव |
| वै. शु. २, मंग. 10 मई | २८ वैशा. | रोहि. | ल. २ अभि. (श्रमम श्रुतिमान) | मा. शु. ११, बुध | २६ माघ | मृग | कुंभ, मेघ, अभि., सर्वदेव |
| वै. शु. ३, बुध 11 मई | २९ वैशा. | मृग | ल. २, अभि., (श्री विष्णु, श्री राम, दुर्गा-शक्ति, कृष्ण-राधा के लिए विशेष) | मा. शु. १३, शुक्र | २८ माघ | पुन. | कुंभ, मेघ, अभि., शिव परिवार |
| | | | | फा. कृ. ५, शनि 18 फर. | ७ फागु. | चित्रा | मु. 10/44 के बाद, अभि., शिव परिवार |
| वै. शु. ७, रवि 15 मई | २ ज्ये. | पुष्य | मु. श्रतः 8/12 तक (मूय, श्री हनुमान के लिए विशेष) | फा. कृ. ६, रवि 19 फर. | ८ फागु. | स्वाती | मेघ, अभि., सूर्यादि देव |
| वै. शु. ११, शुक्र 20 मई | ७ ज्ये. | हस्त | शु. हनुमान के लिए विशेष) | फा. कृ. १२, शनि 25 फर. | १४ फागु. | उषा. | ल. मेघ, अभि., श्री शिव, शनि |
| वै. शु. १३/१४, रवि 22 मई | ९ ज्ये. | स्वा. | मु. श्रतः 6/59 के बाद, अभि. (सर्वदेव के लिए) | फा. शु. ३, गुरु | २ मार्च | रेव. | मेघ (चं. दा.), अभि., श्री दुर्गा आदि शक्ति |
| ज्ये. कृ. ५, शुक्र 27 मई | १४ ज्ये. | उषा. | शु. शनि, श्री हनुमान विशेष दुपै 11:05 उप., (विष्णु व रोपना के लिए विशेष) | फा. शु. ७, चंद्र | ६ मार्च | रोहि. | ल. मेघ, अभि., विष्णु, सूर्यादि |
| ज्ये. कृ. ५/६, शनि 28 मई | १५ ज्ये. | श्रव. | अभि., (शिव, शक्ति, रातिक्या) | | | | |
| ज्ये. कृ. ६, रवि 29 मई | १६ ज्ये. | धनि. | मुहूर्त श्रतः 8/32 तक (शिव, सूर्य कार्तिकेय) | | | | |
| ज्ये. कृ. १०, बुध 1 जून | १९ ज्ये. | उषा. | मिथुन, अभि., सर्वदेव | | | | |
| ज्ये. कृ. १२, शुक्र 3 जून | २१ ज्ये. | अश्वि | मि., अभि., श्री विष्णु लक्ष्मी | | | | |
| ज्ये. शु. ५, शनि 11 जून | २९ ज्ये. | पुष्य | श्रतः 11/09 के बाद, अभि. शिव, शनि | | | | |
| ज्ये. शु. १०, शनि 17 जून | ४ आषा. | चित्रा | सिंह, अभि., सर्वदेव | | | | |
| ज्ये. शु. ११, शनि 18 जून | ५ आषा. | स्वा. | श्रतः 8/10 तक, शिव, शनि | | | | |
| ज्ये. शु. १२, चंद्र 20 जून | ७ आषा. | अनु. | सिंह (मं. दा.), अभि. सर्वदेव | | | | |
| भा. कृ. ४, मंग. 23 अग. | ८ भादो. | रेवती | श्रतः 10/10 उप., श्री गणेश | | | | |
| भा. शु. ४, बुध 7 अग. | २३ भाद्र. | चित्रा | ल. ८, अभि., श्री गणेश जी | | | | |
| भा. कृ. ३, शुक्र 18 अग. | ३ मार्ग. | मृग | ल. कुंभ, अभि., गौरी, दुर्गा | | | | |
| भा. कृ. ५/६, चंद्र 21 अग. | ६ मार्ग. | पुष्य | कुंभ, अभि., गौरी, शक्ति | | | | |
| भा. कृ. ११, रवि 27 अग. | १२ मार्ग. | हस्त | ल. धनु, अभि., शिव-शक्ति | | | | |
| भा. कृ. १२, रवि 11 अग. | २६ मार्ग. | रेव. | मु. श्रतः 11/02 तक, कृष्ण-राधा | | | | |
| भा. शु. १२, चंद्र 12 अग. | २७ मार्ग. | अश्वि | मु. श्रतः 8/15 तक (विष्णु लक्ष्मी के लिए विशेष) | | | | |

अभिहित मुहूर्त

पुराणानुसार अभिहित मुहूर्त काल में क्रियमाण सभी कर्म प्रायः सफल होते हैं। भगवान् विष्णु के सुदर्शन चक्र की भांति अभिहित मुहूर्त सब दुष्टों को नाश कर देता है—

दिनपथ्याय सूर्योदयः सर्वाद्योषान्निष्कन्ति॥

चक्रमाद्यय गौर्विन्दः सर्वाद्योषान्निष्कन्ति॥
दिनमान के अर्ध भाग में स्थानीय सूर्यादय जमा कर देने से अभिहित मुहूर्त का मध्य भाग निकल आता है। 'नारद पुराण' के अनुसार अभिहित के मध्याह्न काल से १ घटी अर्थात् २४ मिनट पूर्व और मध्याह्न से २४ मिनट पश्चात् तक के समय को अभिहित काल कहा जाता है।

उदाहरण—मान लें। आपने २८ नवम्बर को अभिहित मुहूर्त का समय जानना है, तो उस दिन के दिनमान (२५/३० घटी पल) का अर्धभाग १२ घटी, ४५ पल होगा। उस अर्ध भाग के ५ घटी, ६ मिनट बनते हैं। इनके उस दिन में जालन्धर के सूर्योदय ७/१० घं. मि. में जमा कर देने से दुपै. १२ बजकर १६ मिनट पर अभिहित मुहूर्त का मध्यकाल होगा। इससे २४ मिनट पूर्व अर्थात् ११/५२ घं. मि. से अभिहित का प्रारम्भ काल तथा (१२/१६ + ००/२४ मिनट = १२ घं. ४० मिनट पर अभिहित का समाप्त काल (मं. मि.) होगा।

स्वयं सिद्ध मुहूर्त

चंद्र शुक्ल प्रतिपदा, अक्षया तृतीया, विजयादशमी, दीपावली स्वयं सिद्ध (अणुपुच्छ) मुहूर्त कहलाती हैं। आवश्यक परिस्थितियों में गृहस्थादि मुहूर्तों में कोई मुहूर्त न बन पड़े तो इन स्वयं सिद्ध मुहूर्तों में से शुभ कार्य का सम्पादन कर सकते हैं।

(सन् 2006 ई. में)

| पक्ष तिथि वार | प्रविष्टे | नक्षत्र | मुहूर्त विवरण (चं. मि.) | पक्ष तिथि वार | प्रविष्टे | नक्षत्र | मुहूर्त विवरण (चं. मि.) |
|------------------------|-----------|---------|----------------------------|---------------------------|-----------|---------|-------------------------|
| मा. कृ. ३, बुध 18 जन. | ५ माघ | पूषा. | श्री गणेश जी | मा. कृ. ७/८, रवि 22 जन. | ९ माघ | चित्रा | श्री गणेश जी |
| मा. कृ. १२, रवि 22 जन. | १९ माघ | चित्रा | ल. कुंभ, अभि. (शिव, सूर्य) | मा. शु. १/२, चंद्र 30 जन. | १७ माघ | धनि. | ल. कुंभ, अभि., सर्वदेव |

वैसे तो भगवान् श्री हरि की कथा किसी भी स्थिति या समय में गाई जा सकती है, परन्तु श्री मदभागवत, श्रीहरिवंश पुराण, रामायण, शिव महापुराण आदि पूज्य ग्रन्थों के पाठ का प्रारम्भ शास्त्र निर्धारित तिथि, नक्षत्र, वार, मास आदि के अनुसार किया जाए, तो विशेष अधिक पुण्यफल प्रद होता है। सुनिश्चित मुहूर्तों में भी कृष्ण पक्ष की अपेक्षा शुक्ल पक्ष श्रेष्ठतर माना गया है। इनमें भी श्री मदभागवत व श्री हरिवंश पुराण के लिए वैशाख, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, कार्तिक एवं माघ मास तथा अष्टमी तिथि एवं भाद्रपद भी शुभ माने जाते हैं। श्री रामचरितमानस तथा देवी भागवत (श्री दुर्गा पाठ) के लिए चैत्र व आश्विन नवरात्रि, दक्षिणायन, प्रतिपदा, वृतीया तथा नवमी तिथि भी प्रशस्त मानी जाती है। श्री शिवमहापुराण के लिए श्रावण एवं माघ फाल्गुण आदि उत्तरायण मास शुभ माने गए हैं। संवत् २०६२ में श्रीमदभागवत, हरिवंश एवं रामायण आदि के पाठारम्भ हेतु विशेष मुहूर्त लिखे

| पक्ष तिथि वार | तारीख | प्रविष्टे | नक्षत्र | मुहूर्त विवरण (घं. मिं.) |
|----------------------------|-----------|-----------------------------|---------|--------------------------|
| वै. कृ. ६, शुक्र 29 अप्रै. | १७ वैशा. | अभिजित, (आवरणके) | पूषा. | महर्त विवरण (घं. मिं.) |
| वै. कृ. ८, रवि 1 मई | १९ वैशा. | ला. वृष, अभि, भगवान् कृष्ण | श्रव. | लान कुम्भ, अभिजित |
| वै. कृ. ९, चंद्र 2 मई | २० वैशा. | वृष, अभि. (रामायण) | धनि. | मु. प्रातः 8/58 तक |
| वै. कृ. १२, ग. 5 मई | २३ वैशा. | लग्न वृष, अभिजित | उ.भा. | लान कुम्भ, अभिजित |
| वै. कृ. ३, बुध 11 मई | २९ वैशा. | ला. वृष, अभि. (अक्षया ३) | मृग. | लान कुम्भ, मेघ, अभि. |
| वै. कृ. ७, रवि 15 मई | २ ज्ये. | प्रातः 8/12 तक | पुष्य | कुम्भ, मेघ, अभिजित |
| वै. कृ. ११, शुक्र 20 मई | ७ ज्ये. | मु. 6/59 के बाद, अभि. | हस्त | लान मेघ, अभिजित |
| वै. कृ. ६, रवि 29 मई | १६ ज्ये. | मु. प्रातः 8/32 तक | धनि. | मेघ, अभिजित |
| ज्ये. कृ. १०, शुक्र 17 जून | ४ आषा. | लान सिंह, अभिजित | चित्रा | लान अभिजित |
| ज्ये. कृ. १३, चंद्र 20 जून | ७ आषा. | लान सिंह, अभिजित | अनु. | |
| आ. शु. ७, बुध 13 जुला. | ३० आषा. | लान तुला, अभिजित | हस्त | |
| आ. शु. ११, चंद्र 18 जुला. | ३ आषा. | मु. 9/13 के बाद, अभिजित | अनु. | |
| आ. शु. १५, ग. 21 जुला. | ३ श्राव. | प्रातः 8/54 तक | उषा. | |
| आ. शु. ७, शुक्र 12 जुला. | २८ श्राव. | लान सिंह, अभिजित | स्वा. | |
| आ. शु. १२/१३, बु 17 अग. | २ भाद्र. | दुपे. 14/12 उप. | उषा. | |
| आ. शु. १५, शुक्र 19 अग. | ४ भाद्र. | अभिजित, लग्न वृश्चिक | धनि. | |
| आ. कृ. ८, शनि 27 अग. | १२ भाद्र. | अभिजित, वृश्चिक | रोहि. | |
| आ. शु. ५, ग. 8 सितं. | २४ भाद्र. | मु. प्रातः 6/17 उप., अभि. | स्वा. | |
| आ. शु. ११, बुध 14 सितं. | ३० भाद्र. | अभिजित | उषा. | |
| आ. कृ. ३, शुक्र 18 नव. | ३ मार्ग. | अभि., ११, श्री देवीमा विशेष | मृग. | |
| आ. कृ. ६, चंद्र 21 नव. | ६ मार्ग. | अभिजित, कुम्भ | पुष्य | |
| आ. कृ. ११, रवि 27 नव. | १२ मार्ग. | धनु, अभिजित | हस्त | |
| आ. कृ. १२, चंद्र 28 नव. | १३ मार्ग. | लग्न धनु, अभिजित | चित्रा | |
| आ. शु. ३, रवि 4 दिसं. | १९ मार्ग. | धनु, अभिजित | पूषा. | |
| आ. शु. ५, चंद्र 5 दिसं. | २० मार्ग. | मु. प्रातः 11/04 उप., अभि. | उषा. | |
| आ. शु. ८, गुरु 8 दिसं. | २३ मार्ग. | दुपे. 15/09 उप. | पूषा. | |
| आ. शु. ११, रवि 11 दिसं. | २६ मार्ग. | मु. 11/02 तक, भद्रा पूर्व | रेव. | |
| आ. शु. १२, चंद्र 12 दिसं. | २७ मार्ग. | मु. प्रातः 8/15 तक | अश्वि | |

वडा व्यापार अथवा कारखाना आरम्भ करने का मुहूर्त
हस्त, पुष्य, उत्तरा-तीनों, चित्रा-इन नक्षत्रों में, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनि (कारखाना) — इन वारों में और २, ३, ५, ७, ११, १३ — इन तिथियों में, गुरु-शुक्रादि उदय काल एवं द्विपुष्कर-त्रिपुष्करादि शुभ मुहूर्तों में बड़े-बड़े व्यापार सम्बन्धी कारोबार करना शुभ एवं वृद्धिकारक होता है।

भूमि खरीदने (क्रय) का मुहूर्त
वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (प्रवि. ७ तक) मार्गशीर्ष, माघ और फाल्गुन मास भूमिक्रय के लिए उत्तम कहे गए हैं।
शुभ तिथियाँ — प्रतिपदा (कृष्ण-पक्ष), कृष्ण तथा शुक्ल पक्ष २, ५, ६, १०, ११, १५ तिथियाँ।
शुभ नक्षत्र — मृगशिर, पुनर्वसु, अश्लेषा, मघा, विशाखा, अनुराधा, तीनों पूर्वा, मूला, रेवती, शतभिषा एवं स्वाती नक्षत्र।
शुभवार — सोमवार, बुधवार, वीरवार, शुक्रवार।

यह व्रत शिवजी की प्रसन्नता और प्रभुत्व की प्राप्ति के लिए किया जाता है। वैसे तो सभी प्रदोष व्रत अत्यन्त कल्याणप्रद होते हैं, परन्तु **शनि प्रदोष व्रत** सन्तान प्राप्ति के लिए, **भौम प्रदोष व्रत** मोक्ष के लिए, **मनः शान्ति एवं सुरक्षा के लिए सोम प्रदोष व्रत** तथा **आरोग्य प्राप्ति एवं आयु वृद्धि के लिए अर्क (रवि) प्रदोष व्रत** विशेष अधिक फलदायी होता है। व्रती को चाहिए कि व्रत वाले दिन सूर्यास्त के समय पुनः स्नान करके शिव पूजन एवं कथा करें और तत्पश्चात् "भवाय भवनाशाय, महादेवाय धीमते। रुद्राय नीलकण्ठाय शर्वाय शर्वाय शशि मौलिने उग्रयोग्रहनाशाय भौमाय भय हरिणे ईशानाय नमस्तुभ्यं पशूनां पतये नमः ॥" से प्रार्थना करके भोजन करें ॥

शिवरात्रि व्रत कथा (भा. टी.)

शिवरात्रि पूजन कैसे करें ?

श्रीमहाशिवरात्रि का व्रत सब व्रतों में उत्तम एवं कल्याणकारी है। जैसे गंगा जी के समान कोई तीर्थ नहीं है। भगवान् शंकर के समान कोई दूसरा देवता नहीं है तथा शिवरात्रि से बढ़कर दूसरा कोई व्रत एवं तप नहीं है।

व्याख्याकार पं. पन्ना लाल द्वारा प्रणीत इस महाशिवरात्रि व्रत कथा में **माहात्म्य**, **आध्यात्मिक रहस्य** एवं **सम्पूर्ण पूजन विधि**, उद्यापन, व्रत कथा, रुद्राष्टक, शिव पंचाक्षर, शिव चालीसा, शिव षडक्षर स्तोत्र, शिवमानस पूजा, आरती सहित बहुत सरल एवं सुबोधगम्य ढंग से प्रस्तुत की गई है जिससे शिव भगत स्वयं शिवरात्रि पूजन कर पुण्य लाभ ले सकें।

पुस्तक खरीदते समय **आखण्डकार पं. पन्ना लाल ज्योतिषी** का नाम तथा **जनरल बुक डिपो** का पता अवश्य देख लें। अथवा सीधे वी.पी.पो. द्वारा मंगवाएं।

मूल्य 25/- (डाक व्यय अलग)।

पता — जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर। **फोन** — 2457959

विवाहादि शुभ कार्यों में दोषपूर्ण एवं त्याज्य—मुहूर्त संवत् २०६२

नीचे वि. संवत् २०६२ में उन विशेष दोषपूर्ण एवं अशुद्ध विवाह मुहूर्तों का विवरण दिया जा रहा है, जिनके अन्तर्गत विवाह नक्षत्र होते हुए भी उनको शुद्ध विवाह मुहूर्तों में सम्मिलित नहीं किया गया। जिज्ञासु पाठकों की शंका समाधान के लिए आगे कुछ अशुद्ध एवं त्याज्य विवाह मुहूर्तों का विवरण लिख रहे हैं जिनका कोई शास्त्रीय परिहार नहीं मिलता है।

| ता. मास | वार | वि. नक्षत्र | दोष विवरण | ता. मास | वार | वि. नक्षत्र | दोष विवरण | ता. मास | वार | वि. नक्षत्र | दोष विवरण | ता. मास | वार | वि. नक्षत्र | दोष विवरण |
|-----------|-------|-------------|------------------------------|----------|-------|-------------|--|-----------------------------|-------------|-------------------|---------------------|---------|-------|-------------|-------------------------------|
| 25 अप्रै. | चंद्र | विशा | शुक्र बाल्यत्व | 3 जुलाई | रवि | रोहि. | शूल योग, भुजंगपात | 18 सितं. | से 3 अक्टू. | तक श्राद्ध रहेंगे | | 17 फर. | शुक्र | हस्त | केतु युति, राहु वेध, भुजंगपात |
| 26 अप्रै. | मंग. | अनु. | शुक्र बाल्यत्व | 12 जुलाई | मंग. | उ.फा. | मंगल, राहु का वेध | गुरु वार्धक्य-3 से 5 अक्टू. | | | | 19 फर. | रवि | स्वा. | रा. ल.सूर्य का वेध |
| 27 अप्रै. | बुध | अनु. | नक्षत्रान्त | 13 जुलाई | बुध | उ.फा. | मंगल, राहु का वेध | गुरु अस्त-6 अक्टू. | से 2 नव. | | | 22 फर. | बुध | मूला | मृत्युबाण दोष |
| 28 अप्रै. | गुरु | मूला | शनि का वेध | 14 जुलाई | गुरु | हस्त | लानऽभाव, भद्रा दोष | 2 से 15 नव.-13 दिन का पक्ष | | | | 24 फर. | शुक्र | उ.भा. | लानऽभाव |
| 30 अप्रै. | शनि | श्रवण | लानऽभाव | 14 जुलाई | गुरु | चित्रा | केतु युति, मृत्युबाण दोष (जे. 12/05 से जे. 12/55 तक) | 25 नव. | शुक्र | उ.फा. | राहु का वेध | 1 मार्च | बुध | उ.भा. | राहु युति, केतु वेध |
| 1 मई | रवि | श्रवण | भौम युति, लानऽभाव | 15 जुलाई | शुक्र | वि.ला. | मासान्त | 26 नव. | शनि | उ.फा. | राहु वेध, मृत्युबाण | 2 मार्च | गुरु | उ.भा. | लानऽभाव, मृत्युबाण |
| 6 मई | शुक्र | मघा | कृष्ण त्रयोदशी | 19 जुलाई | मंग. | मूला | 26/25 सै. दा. तक सूर्य वेध | 3 दिसं. | चंद्र | मूला | लानऽभाव, भुजंगपात | 3 मार्च | शुक्र | अश्वि | लानऽभाव |
| 17 मई | मंग. | उ.फा. | लानऽभाव | 20 जुलाई | बुध | मूला | नक्षत्रान्त | 5 दिसं. | चंद्र | उ.भा. | लानऽभाव | 6 मार्च | रवि | मृग. | तिथि दोष |
| 18 मई | गुरु | उ.फा. | राहु का वेध | 26 जुलाई | मंग. | उ.भा. | लानऽभाव | 5 दिसं. | चंद्र | श्रवण | लानऽभाव | 7 मार्च | चंद्र | मृग. | होलाष्टक प्रारम्भ |
| 19 मई | गुरु | उ.फा. | राहु का वेध | 26 जुलाई | मंग. | उ.भा. | लानऽभाव | 6 दिसं. | मंग. | घनि. | शनि का वेध | | | | |
| 20 मई | शुक्र | हस्त | लानऽभाव | 27 जुलाई | बुध | रेव | राहु की युति | 7 दिसं. | शुक्र | उ.भा. | राहु युति, केतु वेध | | | | |
| 20 मई | शुक्र | चित्रा | केतु युति, भौम वेध | 27 जुलाई | बुध | अश्वि | मंगल की युति | 9 दिसं. | शनि | उ.भा. | राहु युति, केतु वेध | | | | |
| 21 मई | शनि | चित्रा | केतु युति, भौम वेध | 28 जुलाई | गुरु | अश्वि | मंगल की युति | 10 दिसं. | शनि | उ.भा. | राहु युति, केतु वेध | | | | |
| 22 मई | रवि | स्वा. | लानऽभाव | 7 अग. | रवि | मघा | लानऽभाव | 11 दिसं. | रवि | रेव | नक्षत्रान्त | | | | |
| 24 मई | मंग. | अनु. | शनि वेध, मृत्युबाण दोष | 8 अग. | चंद्र | उ.फा. | राहु का वेध | 12 दिसं. | चंद्र | अश्वि | मासान्त | | | | |
| 25 मई | बुध | मूला | शनि का वेध | 9 अग. | मंग. | उ.फा. | राहु वेध, भद्रा दोष | 14 दिसं. | बुध | उ.भा. | राहु युति, केतु वेध | | | | |
| 26 मई | गुरु | मूला | शनि का वेध | 9 अग. | मंग. | हस्त | केतु की युति | 15 दिसं. | गुरु | उ.भा. | राहु युति, केतु वेध | | | | |
| 28 मई | शनि | उ.भा. | नक्षत्रान्त | 10 अग. | मंग. | हस्त | केतु की युति | | | | | | | | |
| 1 जून | बुध | रेव | राहु की युति | 13 अग. | शनि | हस्त | केतु की युति | | | | | | | | |
| 2 जून | गुरु | अश्वि | लानऽभाव | 14 अग. | शनि | हस्त | मंगल का वेध | | | | | | | | |
| 7 जून | मंग. | मृग. | भुजंगपात, क्षीण चंद्र | 15 अग. | चंद्र | अनु. | भौम वेध, मृत्युबाण | | | | | | | | |
| 8 जून | बुध | मृग. | सूर्य युति, भुजंगपात | 18 अग. | गुरु | मूला | मासान्त | | | | | | | | |
| 13 जून | मघा | मघा | मृत्युबाण, मासान्त दोष | 18 अग. | गुरु | श्रवण | मृत्युबाण दोष | | | | | | | | |
| 14 जून | मंग. | उ.फा. | संक्रान्ति दोष | 19 अग. | शुक्र | श्रवण | सूर्य का वेध | | | | | | | | |
| 15 जून | बुध | उ.फा. | राहु का वेध | 21 अग. | रवि | उ.भा. | नक्षत्रान्त | | | | | | | | |
| 15 जून | बुध | हस्त | मंगल का वेध | 21 अग. | रवि | उ.भा. | केतु का वेध | | | | | | | | |
| 16 जून | गुरु | हस्त | मंगल का वेध | 22 अग. | चंद्र | उ.भा. | केतु का वेध | | | | | | | | |
| 16 जून | गुरु | हस्त | मंगल का वेध | 22 अग. | चंद्र | रेव | राहु की युति | | | | | | | | |
| 17 जून | शुक्र | चित्रा | मृत्युबाण दोष | 23 अग. | मंग. | रेव | राहु की युति | | | | | | | | |
| 17 जून | शुक्र | चित्रा | केतु की युति | 23 अग. | मंग. | रेव | राहु की युति | | | | | | | | |
| 21 जून | मंग. | मूला | शनि का वेध | 4 सितं. | रवि | उ.फा. | राहु का वेध | | | | | | | | |
| 22 जून | बुध | मूला | शनि का वेध | 5 सितं. | चंद्र | उ.फा. | राहु वेध, मृत्युबाण | | | | | | | | |
| 24 जून | शुक्र | उ.भा. | भद्रा दोष, लानऽभाव | 5 सितं. | चंद्र | हस्त | मृत्युबाण | | | | | | | | |
| 25 जून | शनि | श्रवण | वैधृति योग, लानऽभाव | 9 सितं. | शुक्र | अनु. | मंगल का वेध | | | | | | | | |
| 26 जून | रवि | घनि. | लानऽभाव | 10 सितं. | शनि | अनु. | मंगल का वेध | | | | | | | | |
| 29 जून | बुध | उ.भा. | नक्षत्रान्त | 11 सितं. | रवि | मूला | लानऽभाव | | | | | | | | |
| 29 जून | बुध | रेव | मंगल, राहु की युति | 14 सितं. | बुध | श्रवण | मृत्युबाण दोष | | | | | | | | |
| 29 जून | बुध | रेव | मंगल, राहु युति, नक्षत्रान्त | 15 सितं. | गुरु | श्रवण | मृत्युबाण दोष | | | | | | | | |
| 30 जून | गुरु | अश्वि | नक्षत्रान्त, लानऽभाव | 16 सितं. | शुक्र | घनि | मासान्त | | | | | | | | |
| 1 जुलाई | | | | | | | संक्रान्ति दोष | | | | | | | | |

अभिजित मुहूर्त

श्री नारदायुसार अभिजित मुहूर्त काल में क्रियमाण सभी कर्म प्रायः सफल होते हैं। भगवान् विष्णु के सुदर्शन चक्र की भांति अभिजित मुहूर्त सब दोषों को नाश कर देता है—
 दिनव्ययते सूर्य मुहूर्त हि अभिजित प्रभुः।
 चक्रमादाय गोविन्दः सर्वदोषान्निवृत्तम्॥
 दिनमान के अर्ध भाग में स्थानीय सूर्योदय जमा कर देने से अभिजित मुहूर्त का मध्य भाग निकल आता है। 'नारद पुराण' के अनुसार अभिजित के मध्याह्न काल से 9 घटी अर्थात् २४ मिनट पूर्व और मध्याह्न से २४ मिनट पश्चात् तक के समय को अभिजित काल कहा जाता है। ध्यान रहे, बुधवार के दिन अभिजित मुहूर्त नहीं ग्रहण करना चाहिए।
 उदाहरण—मान लो, आपने २८ नवम्बर को अभिजित मुहूर्त का समय जानना है, तो उस दिन के दिनमान (२५/३० घटी पल) का अर्धभाग १२ घड़ी, ४५ पल होगा। इस अर्ध भाग के ५ घंटे, ६ मिनट बन्ते हैं। इनको उस दिन में जालन्तर के सूर्योदय ७/१० घं. मि. में जमा कर देने से दुपै. १२ बजकर १६ मिनट पर अभिजित मुहूर्त का मध्यकाल होगा। इससे २४ मिनट पूर्व अर्थात् ११/५२ घं. मि. से अभिजित का प्रारंभ काल तथा (१२/१६ + ००/२४ मिनट = १२ घं. ४० मिनट पर अभिजित का समाप्ति काल (घंटा मिनट) होगा।

विवाहादि शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि विचार

विवाह, मुण्डन, गृहारम्भादि शुभ कार्यों में मास, तिथि, नक्षत्र, योगादि की शुद्धि के साथ विवाह लग्न की शुद्धि को विशेष महत्त्व एवं प्रधानता दी गई है। तिथि को शरीर, चन्द्रमा को मन, योग-नक्षत्रों आदि को शरीर के अंग तथा लग्न को आत्मा माना गया है। यथा—

—ज्योतिर्विबंध
तिथिः शरीरं मन इन्दुवीर्यं विलग्नमात्माऽवयवारसु-भ्रायाः
लग्न बल के बिना जो कुछ भी शुभ कार्य किया जाता है, उसका फल वैसे ही व्यर्थ हो जाता है, जैसे ग्रीष्मकाल में बिना जल के नदी।

लग्नवीर्यं विना यत्र यत्कर्म क्रियते बुधैः।

तत्फलं विलयं याति ग्रीष्मे कुसरिता यथा ॥

—ज्योतिः विदरणे

सभी शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि का विशेष महत्त्व है।

विवाह लग्न का निश्चय करना हो, तो विवाह लग्न में अशुभ एवं पूज्य ग्रह

त्रिविक्रम-संहितानुसार, लग्न स्थान में चन्द्र तथा

सूर्य, शनि, मंगल, राहु, केतु आदि क्रूर ग्रह न

हों, लग्न से छठे स्थान में शुक्र, चन्द्र, व लग्नेश

न हो तथा आठवें स्थान में चन्द्र, मंगल, बुध,

गुरु, शुक्र व लग्नेश नहीं होने चाहिए तथा

सप्तम स्थान में कोई भी ग्रह नहीं होना चाहिए।

सातवें चन्द्र और गुरु समफल करते हैं। अर्थात्

चन्द्र, गुरु का दानादि करने से शान्ति हो

जाती है।

“त्याज्या लग्नेऽब्दयो मंदः षष्ठे शुक्रेन्दुलग्नपाः।

रब्धे-चन्द्रादयः पंच, सर्वेऽब्जगुरु समौ ॥”

परिहारस्वरूप १२वें शनि, तीसरे शुक्र, चतुर्थ में राहु, दशम भाव में मंगल का दोष

यथोचित दानादि करने से शान्ति हो जाती है। ‘पंचांगदिवाकर’ में लगाए गए लग्न मुहूर्तों में

इन तीनों भावों में शनि, शुक्र व मंगल ग्रहों की स्थिति हो वहां उचित दानादि करवा ले।

आगे षष्ठाष्टम एवं द्वादश चन्द्र, शुक्र, अष्टम भौम, लग्नस्थ एवं सप्तमस्थ चन्द्र गुरु

आदि के अपवाद (परिहार) लिखे गए हैं।

विवाह में ग्राह्य शुभ लग्न—मुहूर्त ग्रन्थों के अनुसार विवाह लग्न काल में ३, ६, ८, ११वें सूर्य

तथा इन्हीं स्थानों (३, ६, ११) में राहु, केतु और शनि भी शुभ होते हैं। ३, ६ और ११वें मंगल,

२, ३, ११वें चंद्रमा, ३, ६, ७ शुभ और ८वें स्थानों को छोड़कर अन्य भावों में स्थित शुक्र शुभ

होता है। ग्यारहवें भाव में सूर्य तथा केन्द्र त्रिकोण में गुरु लग्नगत अनेक दोषों का परिहार

करते हैं—

लग्ने वर्गात्तमे वेन्दौ घृणाये लाभगेऽथवा।

केन्द्र कोणे गुरौ दोषा नश्यन्ति सकलाऽपि ॥ मु. गणपति ॥

विवाह लग्न सम्बन्धी परिहार वाक्य

जन्म राशि से अष्टमस्थ लग्न—वर कन्या की जन्म राशि या लग्न से चतुर्थ, अष्टम तथा बारहवीं राशिस्थ लग्न अशुभ कहे गए हैं। यथोक्तम्—

सुखघ्नं दुर्यमुद्राद्वा द्वादश वितनांश कृतं। जन्म भावं लग्नाच्च मृत्युदंलग्नमाष्टमम् ॥

परन्तु परिहार स्वरूप जन्म राशि या लग्न राशि का स्वामी तथा विवाह लग्न का स्वामी

ग्रह समान हो, अथवा मित्र क्षेत्री हो, अथवा अष्टमस्थ लग्न राशि का स्वामी, केन्द्र स्थित हो

अथवा गुर्विदि शुभ ग्रह से वीक्षित हो तो अष्टम लग्न का दोष दूर होता है।

कर्तृरि दोष—लग्न में पापी ग्रह मार्गी होकर १२ भाव में तथा क्रूर (पापी) ग्रह वकी गत

होकर दूसरे भाव में हो, तो कर्तृरि दोष होता है। यह योग दारिद्र्य, शोक व मृत्यु तुल्य

कष्टकारी होता है।

परिहार—कर्तृरि दोष कारक ग्रह नीच, शत्रु क्षेत्री, अथवा अस्तगत हो, तो इस दोष

का परिहार हो जाता है। इसके अतिरिक्त गुरु, शुक्र, बुध इनमें से कोई शुभ ग्रह केन्द्र

त्रिकोण में अथवा २रे या १२वें भावस्थ गुरु हो तो भी कर्तृरि दोष निवार्य हो जाता है।

अष्टम भौम का परिहार—मंगल अस्तगत, नीच राशि का (कर्क) या शत्रु राशि

(मिथुन एवं कन्या) का होकर अष्टम स्थान में हो, तो दोषकारक नहीं, परन्तु लग्नेश होकर

अष्टमगत नहीं होना चाहिए। अस्तगे नीचगे भौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।

कुजाष्टमेदंभवो दोषो न किंचिदपि विद्यते ॥ कश्यप ॥

छठे, बारहवें चन्द्र का परिहार—नीच राशि, शत्रु राशि या नीच-राशिगत चन्द्रमा ६ या

१२वें स्थानस्थ होना दोषपूर्ण नहीं माना गया। जैसे—बृषिक, मिथुन, कन्या राशि ३, ६

नीचराशिगत चन्दे नीचांशगतेऽपि वा, चन्दे षष्ठादि-रिः फल्ये दोषो नास्ति न संशयः।

परन्तु लग्नेश होकर चन्द्र षष्ठाष्टम नहीं होना चाहिए।

लग्नस्थ चन्द्र का परिहार—“कर्किगोऽप्यः पूर्णो विद्युस्तनौ”

व्रतबन्धोक्त अनुसार वृष, कर्क एवं पूर्ण चन्द्रमा या शुभग्रह से दृष्ट हो लग्न में दोषकारक

नहीं होता। मु. मार्तण्ड

षष्ठाष्टमस्थ शुक्रापवाद—नीच एवं शत्रु राशिगत शुक्र छठे, आठवें हो तो दोषकारक

नहीं परन्तु लग्नेश होकर इन भावों में न हो। जैसे—

नीच राशिगत शुके शत्रु क्षेत्रगतेऽपि वा।

भृगु षट्कोट्यतो दोषो नास्ति तत्र न संशयः ॥

सप्तम भावस्थ चन्द्र-गुरु—सप्तम भाव में यद्यपि सभी ग्रह वर्जित कहे हैं, परन्तु चन्द्र

गुरु का परिहार है।

“चन्द्र चान्दी शुक्रजीवा यामित्रे शुभकारकाः।”

‘मुहूर्तगणपति’ अनुसार विवाहादि शुभ कार्य के लग्न में, केन्द्र-त्रिकोण में गुरु, शुक्र एवं

बुध एवं ग्यारहवें भाव में चन्द्र या सूर्य अथवा सप्तमेश हो, तो अनेक दोषों का नाश हो जाता है।

वेध दोष परिहार—पंचशलाका चक्रानुसार विवाह नक्षत्र का क्रूर ग्रह द्वारा वेध हो जाने

पर विवाहित नक्षत्र सर्वथा त्याज्य माना जाता है। परन्तु गुरु, बुध आदि सौम्य ग्रहों का चरण

वेध (१ एवं ४थे चरण के मध्य तथा २ रे व ३ रे चरण ही अशुभ माना है।—ज्योतिनिबन्ध

१३

युतिदोष परिहार—पाप एवं क्रूर ग्रह की युति त्याज्य मानी जाती है। परन्तु यदि चन्द्रमा उच्चस्थ, स्वक्षेत्री या मित्रक्षेत्री (वृष, कर्क, मिथुन, सिंह एवं कन्या) राशि का हो तो युतिदोष अविचारणीय होता है।

दम्पा तिथि परिहार—विवाह लग्न समय केन्द्र-त्रिकोण गत गुरु हो एवं एकादश (११वाँ) भाव शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो दम्पातिथि का दोष नहीं रहता।
—मु० गणपति
पंचांगदिवाकर में शुभ विवाह मुहूर्तों में जहाँ कहीं अशुभ योग का स्पर्श हुआ है, वहाँ पर सम्बन्धित देवता, ग्राहादि का दान व पूजा का उल्लेख कर दिया गया है।

भद्रा का शुभाशुभ विचार

भद्राकाल में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, रक्षा बन्धन आदि मांगलिक कृत्यों का निषेध माना जाता है, परन्तु भद्रा काल में शत्रु का उच्चाटन करना, स्त्री प्रसंग में, यज्ञ करना, स्नान करना, अस्त्र-शस्त्र का प्रयोग, आप्रेशन करना, मुकद्दमा करना, अग्नि लगाना, किसी वस्तु को काटना, भैंस, घोड़ा, ऊँट सम्बन्धी कर्म प्रशस्त माने जाते हैं।

भद्रा परिहार विचार—सामान्य परिस्थितियों में विवाह आदि शुभ मुहूर्तों में भद्रा का त्याग ही करना चाहिए, परन्तु अत्याधिक परिस्थितिवश भूलोक की भद्रा, अथवा भद्रा मुख, कण्ठ एवं हृदयगत भद्रा को छोड़कर भद्रा पुच्छ में शुभ कृत्य किए जा सकते हैं।

कार्यत्वाश्यक के विष्टेर्मुख, कण्ठहृदि मात्रं परित्येत्।

भविष्य पुराणानुसार—भद्रा की पाँच घड़ी मुख में, दो घड़ी कण्ठ में, ११ घड़ी हृदय में, चार घड़ी नाभि में, पाँच घड़ी कटि में और तीन घड़ी पुच्छ में स्थित रहती है। जब भद्रा मुख में रहती है, तब कार्य का नाश होता है, कण्ठ में धन का नाश, हृदय में प्राणों का भय, नाभि में कलह, कटि में अर्थभंग होता है, पर पुच्छ में निश्चित रूप में विजय एवं कार्य सिद्धि हो जाती है—मुखेतु घटिकाः पंच द्वे कण्ठे तु सदा स्थिते। हृदि चैकादश प्रोक्ताश्चतस्रो नाभिमण्डले ॥ कटया पंचैव विज्ञेयतिस्त्राः पुच्छे जयावहाः। मुखे कार्य विनाशाय शीवायां धननाशिनी ॥ एक अन्य मतानुसार अत्याश्यक स्थिति में रात्रि में तिथि के पूर्वार्द्ध की भद्रा, दिन में परार्ध की भद्रा ग्रहण कर सकते हैं।

तिथेः पूर्वार्द्धा रात्रौ दिने भद्रा परार्द्धा। भद्रा दोषो न तत्र स्यात् कार्यत्वाश्यक के सति ॥
भद्रा दोष निवारण के उपाय—भविष्य पुराणानुसार जिस दिन भद्रा हो और परमावश्यक परिस्थितिवश कोई शुभ कार्य करना ही पड़े तो उस दिन उपवास करना चाहिए तथा एक भुक्त रहना चाहिए। प्रातः स्नानादि के उपरान्त देव, पितरि आदि तर्पण के बाद कुशाओं की भद्रा की मूर्ति बनाए और पुष्प, धूप, दीप, गन्ध, नैवेद्य आदि से उसकी पूजा करें, फिर भद्रा के बारह नामों से हवन में १०८ आहुतियाँ देने के पश्चात् तिल और खीरादि सहित ब्राह्मण को भोजन कराकर स्वयं भी मौन होकर तिल मिश्रित कुशरान्न का अल्प भोजन करना चाहिए। फिर पूजन के अन्त में इस प्रकार मंत्र द्वारा प्रार्थना करते हुए

कल्पित भद्राकुश को लोह की पतरी पर स्थापित कर काले वस्त्र का टुकड़ा, पुष्प, गन्ध आदि से पूजित कर प्रार्थना करें—

छाया सूर्य सुते देवि विष्टिरिष्टार्थदायिनी। पूजितासि यथाशक्त्या भद्रे भद्रप्रदा भव ॥
फिर तिल, तैल, सवत्सा द्रव्य ली गाय, काला कम्बल और यथाशक्ति दक्षिणा के साथ ब्राह्मण का सत्कार करें। भद्रा मूर्ति को बहते पानी में विसर्जित कर देना चाहिए। इस प्रकार विधिपूर्वक जो भी व्यक्ति भद्रा व्रत और व्रत का उद्यापन करता है, उसके किसी भी कार्य में विघ्न नहीं पड़ते। भद्रा व्रत करने वाले व्यक्ति को प्रेय, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी तथा ग्रह आदि कष्ट नहीं देते।

भद्रा के बारह नाम—(१) धान्या, (२) दधि मुखी, (३) भद्रा, (४) महामारी, (५) खरानना, (६) कालरात्रि, (७) महारुद्रा, (८) विष्टि, (९) कुलपुत्रिका, (१०) भैरवी, (११) महाकाली, (१२) असुरक्षयकरी ॥

उपरोक्त विधि से १०८ बार आहुतियाँ देने के अतिरिक्त, जो व्यक्ति प्रातःकाल उठकर भद्रा के १२ नामों का श्रद्धापूर्वक स्मरण करता है, उसे किसी व्याधि का भय नहीं होता। रोगी रोगमुक्त हो जाता है। सभी ग्रह अनुकूल फल देते हैं। उसके कार्यों में विघ्न नहीं होते। यथा—द्वादशैव तु नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्। न च व्याधिर्भवेत् तस्य रोगी रोगात् प्रमुच्यते। ग्रहाः सर्वेऽनुकूलः स्युर्न च विघ्नादि जायते। रणे राजकुले द्यूते सर्वत्र विजयी भवेत् ॥

भद्रा परिहार

कुछ आवश्यक स्थितियों में भद्रा दोष का परिहार हो जाता है। यथा—

तिथि पूर्वार्द्धा भद्रा दिवा भद्रा प्रकीर्तिता। तिथिरुत्तरजा भद्रा रात्रिभद्रेति कथ्यते ॥

दिवा भद्रा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिवा। तदाविष्टिकृतो-दोषो न, भवेत्यर्व सौख्यदः ॥

अर्थात् तिथि के पूर्वार्द्ध भाग में प्रारम्भ भद्रा अर्थात् तिथि दिवस के पूर्वार्ध भाग में प्रारम्भ भद्रायादि तिथ्यन्त में रात्रिव्यापिनी हो जाए, तो दोषकारक न होकर सुखदायिनी हो जाती है।
(ii) पीयूषधाराानुसार—दिन की भद्रा रात्रि को और रात्रि की भद्रा दिन को आ जाए, तो भद्रा दोषरहित हो जाती है।

रात्रिभद्रा यदहि स्याद् दिवा भद्रा यदा निशि। न तत्र भद्रादोषः, सा भद्रा-भद्र दायिनी ॥
—पीयूषधारा

(iii) “दिवा परार्द्धजा विष्टिः पूर्वार्द्धोत्था निशि।

तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम् ॥”

उत्तरार्ध की भद्रा दिन में, तथा पूर्वार्द्ध की रात्रि में शुभ होती है।

भद्रा लोक वास

मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक का चन्द्रमा होने से भद्रा स्वर्ग लोक में, कन्या, तुला, धनु, मकर का चन्द्रमा होने से पाताल में, कर्क, सिंह, कुम्भ व मीन राशि के चन्द्रमा में भद्रा मर्त्यलोक (भू-

कार्य-सिद्धि के लिए मुहूर्त में श्रद्धाभाव आवश्यक

आदि काल से ही प्रत्येक मनुष्य बाल्यकाल से लेकर वृद्धावस्था तक सुख प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है। मनुष्य के किया-कलापों को सुव्यवस्थित रूप देने के लिए तथा उसकी मनस्वेष्टाओं को सफलता प्रदान के लिए हमारे मनीषियों ने मुहूर्त शास्त्र का प्रणयन किया था। तिथि, वार, नक्षत्रादि से जनित मुहूर्त विद्या भी भारतीय ज्योतिष एवं काल गणना का प्रारम्भिक रूप कहा जा सकता है। किसी भी धार्मिक एवं शुभ कार्य को आरम्भ करने से पूर्व उसके मुहूर्त सम्बन्धी जानकारी आवश्यक समझी जाती थी। मनुष्य मात्र की कल्याण भावना से प्रेरित होकर ही भारतीय आचार्यों ने मुहूर्त शास्त्र का सूत्रपात किया था। गृहस्थों के गर्भाधान, जन्म-दिन, मुण्डन, विवाह, मृतक आदि संस्कार तथा सन्यासियों के द्वारा किए गए यज्ञ, तपादि अनुष्ठान-सभी में मुहूर्तों का सम्बन्ध अवश्य होता था। शुभ मुहूर्तों के विना गृहस्थ एवं श्रुते-स्मृति आदि शास्त्र परायण लोगों के कार्य सिद्ध हुए नहीं माने जाते थे-

वेदस्य निर्मलं चक्षु ज्योतिः शास्त्रमकलमषम्। विनैतदखिलं श्रौतं स्मार्तं कर्मणि न सिद्ध्यन्ति॥

प्राचीन धर्म परायण लोगों को मुहूर्त शास्त्र में पूर्ण श्रद्धा होने के कारण ही उनके द्वारा शुभ मुहूर्तों में आयोजित विवाह, पुत्रवेष्टि आदि यज्ञ-अनुष्ठान आदि सफल होते थे। आजकल सर्वत्र देखने को आता है कि लोग बहुत से धार्मिक एवं अन्य काम्य कर्मों का पारम्पर्य सुनिश्चित मुहूर्त पर नहीं करते। उदाहरण स्वरूप विवाह-मुहूर्त ही लीजिए। कुछ लोग लड़के-लड़की की जन्मपत्रियों एवं नक्षत्रों का मिलान तो भली प्रकार करवा लेते हैं, परन्तु विवाह आदि शुभ कार्य सुनिश्चित मुहूर्त पर नहीं करते। फलस्वरूप दुर्भाग्यवश कई बार जन्मपत्री मिलान के बावजूद विवाह सम्बन्ध असफल होते देखे गए। तलाक तक की भी सहन करना पड़ता है। उन्हें यह दोषारीपण देवे/जन्मपत्री मिलान करने वाले पण्डित जी को भी सहन करना पड़ता है। उन्हें यह कहते सुना जा सकता है कि हमने तो फलों-फलों पण्डित जी से कुण्डली मिलान कराया था, दूसरों में आरोपित करना चाहता है, अपने निजी व्यवहार को नहीं देखना चाहता। विवाह, गृहप्रवेश, मुण्डन आदि शुभ मुहूर्त तभी सार्थक एवं फलीभूत हो सकते हैं, जबकि मुहूर्त ग्रहण करने वाले व्यक्ति को उनके प्रति पूरी श्रद्धा एवं विश्वास भी हो। क्योंकि बिना श्रद्धा के किया हुआ हवन आदि कर्म, दिया हुआ दान, किया हुआ तप और जो भी किया हुआ कर्म है, वह असत् रूप है, ऐसा कर्म न तो इस लोक में और न परलोक में ही लाभप्रद एवं कल्याणकारी होता है--

अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत्।

असत् इति उच्यते पार्थ न च तत्सत्यं नो दूह ॥ श्री मद्भगवद्गीता अध्याय १७।२८।

विवाह आदि शुभ कार्यों को सुनिश्चित एवं निर्धारित लगन में करने के प्रयास करने चाहिए--

लग्नं कीटि गुणं विद्याद् ग्रहवीर्यं समन्वितम्।

तस्मात्सर्वेषु कार्येषु लग्नं वीर्यं विलोकयेत्॥

इसी कारण लगन को सभी मुहूर्तों की आत्मा कहा गया है--

तिथिः शरीरं मन इन्दुवीर्यं विलग्नमात्माऽवयवास्तु माधाः ॥ ज्योतिर्निबिंध

लोक) में-अर्थात् सम्मुख रहती है। जब भद्रा भू-लोक में (सम्मुख) रहती है, अशुभफल दायिनी एवं वर्जित मानी जाती है, अन्य लोकों में हो, तो शुभ है-

| लोकवास | स्वर्ग | पाताल | भू-लोक |
|------------|------------|-------------|--------------|
| चन्द्रराशि | १, २, ३, ८ | ६, ७, ९, १० | ४, ५, ११, १२ |
| भद्रा-मुख | ऊर्ध्वमुखी | अधोमुख | सम्मुख |

मर्त्यलोकस्थ (४, ५, ११, १२) राशियों में स्थित चन्द्रकालीन भद्रा दिन में उत्तरार्ध वाली रात्रि में शुभ होगी।

(iv) शुक्ल पक्ष की भद्रा का नाम वृश्चिकी है। कृष्ण पक्ष की भद्रा का नाम सर्पिणी है। भ्रान्तर से, दिन की भद्रा सर्पिणी, रात्रि की भद्रा वृश्चिकी है। विच्छू का विष डंक में तथा सर्प का विष मुख में होने के कारण वृश्चिकी भद्रा की पुच्छ और सर्पिणी भद्रा का मुख विशेषतः त्याज्य है।

(v) भद्रा दोष, मंगल-शनिवार जनित दोष, व्यतीपात, अष्टम भावस्थ एवं जन्म नक्षत्र दोष, मध्यान्ह के पश्चात् शुभकारक मानी जाती है।

गोधूलि काल

विवाह मुहूर्तों में कूर, ग्रह युति, वेध, मृत्युबाण आदि दोषों की शुद्धि उपरान्त यदि अभिवांछित मुहूर्त में शुद्ध विवाह-लग्न न निकलता हो, तो मुहूर्त ग्रन्थाचार्यों ने गोधूलि का लग्न ग्रहण करने की सम्मति प्रदान की है।

गोधूलि काल-जब सूर्यास्त न हुआ हो (अर्थात् सूर्यास्त होने वाला हो) और गाय आदि चौपाय अपने-अपने गृहों को लौटते हुए अपने खुरों से पथ की धूलि को आकाश में उड़ाकर जाने लगे, तो उस काल को मुहूर्तकारों ने गोधूलि काल का नाम प्रदान करते हुए, इसे विवाहादि सब मांगलिक कार्यों में प्रशस्त कहा है। यह लग्न, मुहूर्त, अष्टम, जाभिआदि दोषों को नष्ट प्राय कर देता है।

नो वा योगो न मृतिभवनं नैव जाभिन्न दोषो,

गोधूलिः सा मुनिभिरुदिता सर्व कार्येषु शस्ता ॥

-मु० विल्लामणि

जब कोई अन्य शुभ लग्न न बनता हो, और कन्या विवाह योग्य हो गई हो तो गोधूलि में विवाह शुभ होता है। ज्योतिर्विद्वानुसार-

लग्नं शुद्धिर्यदा न स्याद् यौवनं समुपास्थिते, तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम् ॥

गोधूलि लग्न काल के सम्बन्ध में विद्वानों ने मतान्तर पाए जाते हैं-

(i) पीयूषधारा के मतानुसार सूर्य के अर्ध-अस्त होने के अनन्तर २ घड़ी (४८ मिनट) का समय गोधूलि काल है।

(ii) मु० गणपति के अनुसार सूर्यार्ध बिम्ब के अस्त हो जाने के पूर्व एवं पश्चात् १५-१५ पल अर्थात् १२ मिनट का मध्यान्तर गोधूलि संज्ञक है।

(iii) आचार्य नारदानुसार सूर्योदय से सप्तम लग्न गोधूलि लग्न काल होता है।

चतुर्थमभिजित लग्नमुदयार्क्षानु सप्तमम् ॥-नारद

विवाहादि शुभ कार्यों में शास्त्रीय विचार

विवाह में जन्म मास, नक्षत्रादि का विचार—

आद्य गर्भ, अर्थात् बड़े लड़के या बड़ी लड़की का विवाह जन्म मास, जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, जन्म लग्न में न करें। “आद्य गर्भं सुत कन्ययो द्वयो जन्म मास भतिथौ कर ग्रहः। नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते चेद द्वितीय जनुषोः सुतप्रदः॥” मु. चिंतामणि॥”

परन्तु ज्येष्ठ पुत्र के बाद उत्पन्न पुत्र या कन्या का विवाह जन्म मास, नक्षत्रादि में करना प्रशस्त है। ज्येष्ठ पुत्र-कन्या के अतिरिक्त अन्य स्थितियों में जन्म-मास, जन्म राशि, नक्षत्र एवं जन्म लग्न विशेष शुभ माना है।

जन्ममासे च पुत्राढया धनाढया च धनोदये। जन्म मे जन्मराशौ च कन्या हि ध्रुव सन्ति॥

ज्येष्ठ मास में विवाह का विचार

ज्येष्ठ मास, ज्येष्ठ पुत्र और ज्येष्ठ कन्या यह तीन ज्येष्ठ विवाह संस्कार में विशेषतया वर्जित माने जाते हैं। परन्तु यदि दो ज्येष्ठ वर्तमान हों अर्थात् लड़का-लड़की दोनों ज्येष्ठ (बड़े) हों, परन्तु महीना ज्येष्ठ के अतिरिक्त हो अथवा लड़का-लड़की में से एक ज्येष्ठ हो और दूसरा अनुज हो, तो ज्येष्ठ मास में भी विवाह करना सामान्य एवं मध्यम फल होता है—

द्वौ ज्येष्ठौ मध्यमौ प्रोत्तत्रेव ज्येष्ठः शुभावहः।

ज्येष्ठ त्रयं न कर्मीत् विवाहं सर्वसम्मतम्

तथापि आवश्यक परिस्थितिवश ज्येष्ठ मास में कृतिका से सूर्य निकल जाने पर सूर्य दानादि करके विवाह करने में कोई हानि नहीं। मुनि भारद्वाज के मतानुसार ज्येष्ठ के महीने की भान्ति मार्गशीर्ष मास में भी अग्रज लड़का-लड़की एवं मार्ग मास-तीनों का यथासम्भव त्याग करें।

(३) सगे भाई-बहन के विवाह छः मास के भीतर नहीं करने चाहिए। यदि इस बीच संवत् परिवर्तन हो जाए, तो कोई दोष नहीं (मु. मार्तण्ड)। पुत्र के विवाह के उपरान्त अपनी कन्या का विवाह ६ महीने तक न करें। इसी तरह विवाह के बाद ६ महीने तक मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि शुभ कार्य न करें। (नारद)। परन्तु कन्या-विवाह के पश्चात् पुत्र विवाह ६ मास के भीतर शुभ है। दो सगे भाईयों का विवाह दो सगी बहनों से न करें अथवा एक वर के साथ दो सगी बहनों का विवाह न करें (वसिष्ठ) तथा जिस वर को अपनी कन्या देवे, उसकी बहन के साथ अपने लड़के का विवाह न करे (नारद)।

दो सगे भाईयों या दो सगी बहनों का एक संस्कार ६ महीने के भीतर करना सम्भव है (बृहद्भूमनुः)। दो सहोदर (भाई-बहन) के संस्कार आवश्यक स्थिति उत्पन्न होने पर नदी, पर्वत, स्थान एवं पुरोहित भेद (भिन्न) से एक ही दिन अथवा ६ महीने के भीतर शुभ होंगे (शार्ङ्गधर) जुड़वें भाई-बहन के मांगलिक कार्य एक ही मण्डप में भी शुभ हैं। विवाहादि मांगल कार्य से ६ मास तक लघु मंगल कार्य न करें। यह ६ महीने का निषेध केवल तीन पीढ़ि तक के मनुष्यों के लिए कहा है।

मंगल संस्कार से ६ महीने तक पितृकर्म, श्राद्धादि न करें। वागदान अर्थात् विवाह सम्बन्ध का निश्चय हो जाने के बाद वर-कन्या के कुल में माता-पिता भाई आदि निकटस्थ बन्धु की दुःखद मृत्यु हो जाने पर एक वर्ष के पश्चात् विवाह आदि शुभ कार्य करना चाहिए (निर्णय सिंधु) परन्तु अपवाद स्वरूप संकट काल में अथवा अत्यावश्यक परिस्थितिवश एक मास के बाद अथवा सूतक निवृत्ति के बाद जप, पाठ, होम शान्ति एवं यथाशक्ति द्रव्य, वस्त्र, गोदानादि के बाद शुभ कार्य ग्राह्य होंगे—

प्रतिकूलोऽपि कर्त्तव्यो विवाहो मासमन्तरात्।

शान्ति विधाय मां दत्त्वा वागदानादि चरेत् पुनः॥

जन्म नक्षत्र—जातक का जन्म नक्षत्र अन्न प्राशन, उपनयन, मुंडन (चूड़ाकरण), राज्याभिषेक, जन्मदिनादि कृत्यों में प्रशस्त माना गया है, परन्तु यात्रा, सीमान्तोन्नयन तथा विवाहादि कार्यों में जन्म नक्षत्र अनिष्टकर होता है—

वालान्भुवतौ व्रतवचनेऽपि राज्याभिषेके खलुजन्मधिष्यन्म।
शुभं तु अनिष्टं सततं विवाह सीमन्त यात्रादिषु मंगलेषु॥

जन्म मास अग्रज (बड़े) लड़के या लड़की का विवाह जन्म नक्षत्र एवं जन्म मास में करने का निर्विवादेन निषेध माना गया है—

न जन्ममासे जन्म्यहो न जन्मदिवसेऽपि वा। आद्य गर्भं सुतस्याथ दुहितुर्वा करग्रहः॥
परन्तु अनुज लड़के का विवाह जन्म मास में ग्रहणीय माना गया है—
विबुधैः प्रशस्यते चेत् द्वितीयजनुषोः सुतप्रदः—
मुहूर्तं चिंतामणि

वर-वरण एवं सगाई मुहूर्त

वर-कन्या की जन्मपत्रियों में परस्पर सम्यक् मिलान हो जाने के पश्चात् दोनों के माता-पिता विवाह के संकल्प (वागदान) को सम्पुष्ट करने के लिए वर-कन्या का वरण (सगाई) करते हैं। इसके लिए निम्नलिखित शुभ मुहूर्त में कन्या का भाई, कुल पुरोहित (ब्राह्मण) एवं परिवार के सनिकट सगे सम्बन्धियों के साथ यज्ञोपवीत, नारियल, चाबूत सुपारी, हल्दी, अक्षत, छुहारे, गुड़, वस्त्र, अंगूठी, मिष्टान्न, फल, फूलादि अर्पण करके वर का शान्त्र प्रशस्त मांगलिक मन्त्रों के साथ वरण करें। (पूर्ण विधि जानने के लिए हमारी नवीन प्रकाशित ‘विवाह पद्धति’ का अवलोकन करें।)

विवाह में प्रतिपादित शुभ मासों वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन मासों में, रिकता (४, ९, १४) तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में (विशेषकर शुक्ल पक्ष प्रशस्त है), चन्द्र, बुध, गुरु एवं शुक्रवारों में तथा कृतिका, रोहिणी, तीनों पूर्वा, मृग, हस्त, श्रवण, चित्रा नक्षत्रों में शुभ लग्न कालीन वर का वरण करें।

कन्या वरण मुहूर्त—

उपरोक्त शुभ मासों, तिथियों में तथा कृतिका, तीनों पूर्वा, उत्तराषाढा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा अनुषादि विवाहोक्त नक्षत्रों में सुपारी, नारियल, मौसमी फल, सुगन्धित द्रव्य, वस्त्र, आभूषण मिष्टान्न, फल, फूलों आदि के साथ वर परिवार के किसी श्रेष्ठ अग्रज अथवा वृद्धजन के कर कमलों के द्वारा कन्या का विधिवत् वरण करें।

विवाह मुहूर्त विचार

विवाह संस्कार में कुछ मुहूर्त ग्रन्थों में वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (आ. शुक्ला दशमी तक) मार्गशीर्ष, माघ व फाल्गुन मासों में विवाह प्रशस्त कहे हैं। परन्तु कुछ आचार्यों ने चैत्र व पौष इन दो सौ मासों को त्याग कर शेष १० मासों को विवाहादि शुभ कार्यों को प्रशस्त माना है। इसी कारण पंजाब, दिल्ली, हिमाचल, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर आदि प्रदेशों में अति प्राचीन काल से श्रावण, भादों, आश्विन मासों में भी विवाह की प्रथा चली आती है। कुछ पर्वतीय प्रदेशों में कार्तिक महीने भी विवाह होते हैं। कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से शुक्ल की प्रतिपदा तक के तिथियों को छोड़कर शेष तिथियों में, रविवार, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र शुभ वारों में, मंगल व शनिवार मध्यम कहे हैं। रोह, मृग, मघा, उत्तरा ३ (तीनों), हस्त, स्वा., अंशु, मूला, रेव तथा कात्यायनीवैश्व, चित्रा, श्रव., धनि., सहित १५ नक्षत्रों में, वर का सूर्य व चन्द्रमा का बल देखकर विषम वर्षों में तथा कन्या का चन्द्र व गुरु बल देखकर सम वर्षों में विवाह करना शुभ माना गया है। कन्या की आयु यदि १६ वर्ष से अधिक हो, तो गुरु का बल देखना आवश्यक नहीं (वसिष्ठः)

लता दोष

| सूर्य: | चन्द्र: | भौम: | बुध: | गुरु: | शुक्र: | शनि: | राहु: |
|---------|---------|--------|------|----------|-----------|----------|-------|
| १२ | ७ | ३ | २२ | ६ | २४ | ८ | ९ |
| धन हानि | अशुभ | मृत्यु | अशुभ | बंधु-नाश | कार्य-नाश | कुल-क्षय | मरण |

जैसे सूर्य स्थित नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र यदि १२वां हो तो सूर्य की लता एवं पूर्ण चन्द्र के दिन नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र ७वां हो तो चन्द्रमा की लता जाँने।

वेध दोष

| रोहि | मृग | मघा | उषा | हस्त | स्वा | अनु | मूला | उषा | उभा | रेव |
|------|-----|------|-----|------|------|-----|------|-----|------|-----|
| अभि | उषा | श्रव | रेव | उभा | शत | भर | पुन | मृग | हस्त | उषा |

ऊपर के नक्षत्रों में से विवाह का नक्षत्र हो और उसके नीचे के नक्षत्र पर कोई ग्रह हो तो उस ग्रह का वेध होता है। यह क्रूर ग्रहों के वेध विशेषतया वर्जित माना गया है।

एकाग्राल दोष

| वि. | अति | शू | गं | व्य | व | वै | यो |
|-----|-----|----|----|-----|---|----|----|
|-----|-----|----|----|-----|---|----|----|

सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित सहित गणना करने से यदि विषम हो और इन विरुद्ध योगों में से कोई भी योग हो तो एकाग्राल दोष होता है। यह काशमीर में विशेष वर्जित है।

उप ग्रह दोष

सूर्य के नक्षत्र से ५वें, ७वें, ८वें, १०वें, १४वें, १५वें, १८वें, १९वें, २२वें, २३वें, २४वें, २५वें, नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

लतादि दोषाणां परिहारवाक्यानि-लता मालवके (फिरोजपुर इत्यादि)। एकाग्राले व काशमीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्॥ उपग्रहर्क्षे कुरु वाल्हिकेषु (आगरा आदि) कालिंगवंगेषु (जगन्नाथपुरी, बंगाल, अयोध्या च पातिते भम्॥ सौराष्ट्र (कठियावाड़) शाल्वे: लताभं त्यजेत् विद्धिकल सर्वदेशे युतिदोषो भवेद गौड़े (बंगाल) जर्मित्रस्य च यामुने (यमुना के प्रांत)। मासदधाश्च तिथयो मध्यदेशे तिथयो मध्यदेशे विवर्जितः। युतिपरिहार-स्वर्क्षस्थः स्वोच्चगश्चंद्रो मित्रक्षेत्रगतोपिवा। गुरुश्च स्वीयवर्गस्थो वली केन्द्रगतो विधुः। लतापाप उपग्रह परिहारः-वनसंख्यं चरणं त्यजेत्। लतोपग्रहदोषेषु त्याज्या नैवाऽप्य परे॥ परिहार-लतोपग्रहजामित्रयौतैकार्गलकर्तरी। एते दोषा विनश्यति लगनेऽकं दुर्बलान्विते॥

(पात-दोष कुकुर, जांगल, कलिंवा बंग और गवाध में अतिनिन्दित है।)

| अश्वि | भर | कृति | रोहि | मृग | आर्द्रा | पुन | विशा | अनु | ज्येष्ठा | उषा | श्रव | धनि | शत | पूभा |
|-------|------|------|------|------|---------|-----|------|-----|----------|------|------|------|------|------|
| मघा | हस्त | स्वा | मूला | मघा | रोहि | उषा | मृग | उषा | मघा | अनु | उषा | स्वा | मृग | उषा |
| अनु | उषा | उषा | ०० | हस्त | मृग | उषा | ०० | उषा | ०० | मूला | ०० | ०० | मूला | उषा |
| रेव | उभा | ०० | ०० | मृग | उषा | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० |
| ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | अनु | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० |

ऊपर के नक्षत्रों में सूर्य हो तो नीचे के नक्षत्रों को पात दोष लगता है, हर्षण, वैयूति साध्य, व्यतिपात, शूल-इन योगों के अन्त में विवाह का नक्षत्र हो तो भी पात दोष लगता है।

विवाह नक्षत्र से सातवें ग्रह हो तो जामित्र

| रोहि | मृग | मघा | उषा | हस्त | स्वा | अनु | मूला | उषा | उभा | रेव |
|---------|-----|------|-----|-------|------|-----|------|-----|-----|------|
| अभिज्ये | धनि | पूषा | उषा | अश्वि | कृति | मृग | पुन | उषा | उषा | हस्त |

ऊपर के नक्षत्रों में विवाह का नक्षत्र हो और नीचे के नक्षत्रों पर कोई ग्रह हो तो उस ग्रह का जामित्र दोष होता है सो पाप ग्रह का जामित्र विवाह में वर्जित कहा है यह यमुना प्रांत में अतिनिन्दित है।

क्रान्ति साध्य दोष

| मेष | वृष | मिथुन | कर्क | कन्या | तुला | सूर्य | चन्द्र |
|------|-----|-------|--------|-------|-------|--------|--------|
| सिंह | मकर | धन | वृश्चि | मीन | कुम्भ | चन्द्र | सूर्य |

ऊपर व नीचे की राशि पर सूर्य व चन्द्रमा हो तो क्रान्ति-साध्य दोष हो जाने से विवाह में सर्वदा वर्जित है।
*वैशा., आपा., भाद्र., कार्ति., पौष., फा. मासों में शुक्ल पक्षीय तिथियां तथा ज्ये., श्रा., अश्वि., मार्ग व माघ में कृ. पक्षीय तिथियां ही वर्जित है।

जामित्र नक्षत्रों में विवाह का नक्षत्र हो तो जामित्र दोष होता है। यह यमुना प्रांत में अतिनिन्दित है।

युति-दोष

जिस नक्षत्र का विवाह हो और उसी नक्षत्र पर यदि शुभ व पाप ग्रह हो तो युति दोष होता है, अथवा चंद्रमा की राशि में कोई ग्रह हो तो युति दोष होता है। क्रूर ग्रहों की युति विशेष करके वर्जित है। यह गौड़ देश में अतिनिन्दित है।

बुध पक्षक दोष

| रोगपं | अतिपं | राजपं | चौरपंचक | मृत्युपं | वाण |
|--------|-----------|---------|---------|----------|----------|
| ८ १२ ७ | २ ११ १ | ४ | ६ १२ ५ | १ १२ ० | सूर्याश |
| २६ | २० १२ ९ | १३ १२ २ | २४ | १९ १२ ८ | कार्येषु |
| व्रते | गृहकार्ये | सेवाया | यातरा | विवाह | वारे |
| रवौ | भौमे | शनों | भौमे | बुधे | समये |
| रात्रौ | दिवा | दिवा | रात्रौ | संध्याया | |

दग्धा तिथि दोष

| वैशा | ज्येष्ठ | आषाढ़ | मार्ग | कार्ति | पौष | मास |
|--------|---------|--------|-------|--------|-------|------|
| श्रावण | फाल्गुन | आश्विन | भाद्र | माघ | चैत्र | मास |
| ६ | ४ | ८ | १० | १२ | २ | तिथि |

इन २ मासों में से २ तिथियां दग्ध होती हैं सो विवाह में वर्जित कहीं हैं, मध्य देश में त्याज्य है। कुछ विद्वानों अनुसार*

भूमि खरीदने (क्रय) का मुहूर्त

वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (प्रति. ७ तक) मार्गशीर्ष, माघ और फाल्गुन मास भूमि क्रय के लिए उत्तम कहे गए हैं।

शुभ तिथियाँ—प्रतिपदा (कृष्ण-पक्षे), कृष्ण तथा शुक्ल पक्षे २, ५, ६, १०, ११, १५ तिथियां।

शुभ नक्षत्र—मृगशिर, पुनर्वसु, अश्लेषा, मघा, विशाखा, अनुराधा, तीनों पूर्वा, मूला, रेवती, शतभिषा एवं स्वाती नक्षत्र।

शुभवार—सोमवार, बुधवार, वीरवार, शुक्रवार।

भारतीय संस्कृति में संस्कारों का महत्त्व

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में संस्कारों का विशेष महत्त्व है। प्राचीन ऋषियों ने गर्भधान से लेकर अन्त्योष्टि कर्म तक षोडश-संस्कारों के महत्त्व को एकमत से स्वीकार किया है। मनुष्य जन्म से अग्रोभ होता है, पशु संस्कारों से मनुष्य के आन्तरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व का निखार व परिष्कार होता है। जैसे, शास्त्र में कहा गया है—

जन्मना जायते शब्दः संस्काराद द्विज उच्यते ।

वेद पाठात् भवेद विप्रः ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः॥

अतएव सुख, समृद्धि एवं कल्याण चाहने वाले प्रत्येक वर्ण के गृहस्थी मनुष्य को भारतीय परम्परा एवं संस्कृति का अनुगमन करते हुए गर्भाधान, पुंसवन, नामकरणादि संस्कारों को धारण करना चाहिए। शास्त्र विधि अनुसार बच्चे के संस्कार करने से बालक/कन्या मेधावी, स्वास्थ्यवती, यशस्वी एवं दीर्घायु होता है ॥

षोडश संस्कार इस प्रकार से हैं—

(१) गभीरान (२) पुसवन (३) सीमन्तोन्नयन (४) जातकर्म
(५) नामकरण (६) निष्क्रमण (७) अन्नप्राशन (८) चूड़ाकरण
(मुण्डन), (९) यज्ञोपवीत (१०) से (१३) तक चतुर्वेदीय व्रत,
(१४) सम्भानवर्जन (१५) विवाह (१६) अन्येष्टि।

छठ (१) गर्भाधान संस्कार—यह प्रथम संस्कार है, जो स्त्री के ऋतु (रजस्वला)स्नान के पश्चात् किया जाता है। भार्गव के स्त्री धर्म (रजोदर्शन) में होने के १६ दिन तक वह गर्भ-धारण के योग्य रहती है। रजोदर्शन के दिन ६, ८, १०, १२, १४, १६वें दिनों में क्रियमाण गर्भाधान पुत्रदायक तथा विषम दिनों (५, ७, ९, ११, १३, १५) में कन्या-प्रद होता है। उपरोक्त दिनों में भी शुद्ध महर्जन दिनों का विचार किया जाता है।

(१) गर्भाधान संस्कार का महत्त्व

शुभतिथियां—१ (कृष्ण) २, ३, ५, ७, १०, ११, १२,
(शुक्ल)

प्रथम वार—सोम, बुध गुरु एवं शुक्रवार

शुभ नक्षत्र—रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, पुन, पुष्य, स्वा, श्रव, धनिष्ठा व शतभिषा।

शुभ लग्न—लग्न, केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों एवं लग्न का सूर्य, मंगल, और गुरु देखते हों, तो गर्भाधान से पुत्रोत्पत्ति की संभावना होती है, इसके अतिरिक्त पुत्रार्थी विषम लग्न राशि एवं विषम नवराशत लग्न में तथा कन्याकांक्षी सम लग्न राशि में स्त्री संग करें।

गर्भ-धारण के दिन स्त्री-पुरुष दोनों का चन्द्र-बल प्राप्त होना शुभ होता है।

गर्भाधान के लिए त्वाच्य काल—रजोदर्शन से प्रथम चार यात्रि को छोड़कर, रिक्ता तिथि, जन्म नक्षत्र, मघा-अश्ले आदि तीनों गण्डात, मूला, भरणी, अश्विनी, रेवती नक्षत्र, ग्रहण का दिन, माता-पिता के श्राद्ध का दिन, वैधृति, परिच का पूर्वाह्न, संक्रांति, व्यतीपात, दशहरा, संभ्या, दिन का समय, जन्म राशि से अष्टम लान, दीवाली, दशहरा, सम्पन्न आदि तिथि सर्वसाधारण में त्याग करना चाहिए।

गर्भ मासों के अधिपति

गर्भाधान से लेकर नव एवं दस मास तक भिन्न-भिन्न ग्रह अधिपति होते हैं। अरिष्टभय की स्थिति में उसी मास से सम्बन्धित ग्रह की पूजा-दानादि करना चाहिए।

[illegible]

☞ (२) पुंस्वन संस्कार मुहूर्त—यह संस्कार गर्भधारण से तीसरे मास में किया जाता है। इस मास का स्वामी गुरु है। इस दिन श्री विष्णु पूजा करना शुभ होता है। इस संस्कार के शुभ मुहूर्त इस प्रकार से हैं।

शुभवार—रवि, चंद्र, ग

मं. बु. उदित होने चाहिए।
 शुभ तिथियाँ—१ (कृ) २, ३, ७, १०, १२, १३ (शुक्ल)।
 शुभ नक्षत्र—रोहणी, मृग, पुन. पुष्य, हस्त, तीनों उत्तरा, श्रवण,
 अश्लेषा, देवती नक्षत्र। निन्द नक्षत्र त्याग्य हैं।

❧ (३) सीमन्त संस्कार — यह तृतीय संस्कार है, जो गर्भधारण से ६, ८ वें मास, जब मास-स्वामी बली हो। शुभवार-रविवं मंगल एवं गुरु।

ग्रन्थ तिथियां—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ला)।

नशाव—सा पन पश हम्न मला श्रवणः

नक्षत्र—मृग, पुन, पुष्य, हस्त, मूला, श्रवणः ।

लान्—३, ४, ५, ७ आदि विभक्ति लङ्, कर्त्तृविक्रान्त लुङ् निप्रत्ययः।
(३) (क) श्री विष्णु पूजा मुहूर्त—यह पूजा गर्भपान से आठवें मास गर्भस्था के उद्देश्य से की जाती है। इसमें शंख चक्र-गदा-पद्मधारि भगवान् विष्णु की यथाशक्ति, सुवर्णमय प्रतिमा बनवाकर षोडशोपचार से पूजा करके परिश्रान्त, प्रतिमा को ब्राह्मण को दान करें।

शुभ तिथियाँ—२, ७, १२

पञ्चवार—चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ वार—बुध, शुक्र, मङ्गल और श्रवण ।
 मङ्गल—गोहिणी पक्ष और


(४) जातकर्म संस्कार—कुछ शास्त्रकार प्रसव के समय नालाघटन के पूर्व ही इस संस्कार को कार्यान्वित करने की आज्ञा दी है। परन्तु आजकल नवघटी अथवा १६ घटी तक कर लेना चाहिए।

हिए।

कुछ लोग परम्परानुसार ११व जयवा ११व पौष कार्तिक
शुभ तिथियां—१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शु.) शुभ
प = च. व. ग., श.

नक्षत्र—अश्वि. रोह. मृग. पुन. पुष्य. उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा.,
अन श्रव. धनि. शत. रेव।

ॐ मेधा-जनन संस्कार—जात कर्म के साथ ही इस कृत्य का निष्पादन करना चाहिए। बालक/बालिका मेधावी, कीर्तिमान एवं सौभाग्यशाली हो, इसके लिए दाएं हाथ की अनामिका अंगुली से शहद एवं गोधृत चार बार बच्चे को चटाएँ। चारों बार क्रमशः "ॐ भूस्त्वपि धधामि।" ॐ भूस्त्वपि दधामि।" तथा ॐ भूर्भुवस्त्वः सर्वत्वपि दधामि। मंत्रों का उच्चारण करें। इसके साथ ही कुछ घृत-मिश्रित गुड़ भी बालक के तालु में लगा देना शुभ होता है। जिससे बच्चे को स्नानपान के पूर्व ही कुछ चुसने की आदत हो जाए। (अंगुली के अतिरिक्त सुवर्ण या चांदी के चम्मच का भी प्रयोग कर सकते हैं।)

 **स्ननपान का मुहूर्त**—जम्मातर ५वें या ७वें किसी दिन नीचे लिखे भद्रा, व्यक्ति, वैधृति, व्याघात आदि योगों को छोड़कर सिन ११११ गहर्न मात मातन की पथम वार स्ननपान कराए।

शुभ तिथि—१ (क.), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु), १५,
शुभ नक्षत्र—रोह., मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३ हस्त, चित्रा, अनु.
श्रव. धनि, व रेवती ॥

शभ वार—चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र ।

शुभ लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ राशि लग्न।

गणिका पण्य में भी उपरोक्त महर्त्त ग्राह्य है।

श्री-षष्ठी पूजन — जन्म से पांचवें दिन, जीवन्ती देवी का पूजन करना चाहिए। इसी प्रकार छठे दिन रात्रि में षष्ठी पूजन, कात्यायनी देवी' का आनन्द मंगल व गीत वाद्य के साथ पूजन

बालक के दौंत निकलने का फल

कना चाहिए। जीवन्ती एवं षष्ठी पूजा में सूतक की दोग आपत्ति नहीं होती। देशानुसार कोई ११वें या १३वें दिन की षष्ठी पूजन करते हैं।

छं प्रसूता स्नान मुहूर्त—सूतिका स्नान करने के जन्मदिन से एक सप्ताह के बाद करना चाहिए।

शुभ तिथियाँ—१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) १५।

शुभ वार—शुक्र, मंगल, गुरु, शुभ है। सोम एवं शुक्रवार मङ्गल हैं।

शुभ नक्षत्र—आश्वि, रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वा., अनु. रेव।

शुभ लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ सौम्य ग्रह से युत या दृष्ट।

नामकरण संस्कार—यद्यपि प्रत्येक मनुष्य के बाबा एवं आन्तरिक व्यक्तित्व पर उसके परिवेश एवं परिस्थितियों का विशेष प्रभाव होता है। परन्तु ज्योतिष आचार्यों के अनुसार मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास में उसके प्रसिद्ध नाम का भी विशेष महत्त्व होता है—

“नामाखिलस्य व्यवहार हेतु, शुभावहं कर्मसु भाग्य हेतु।
नामैव कीर्तिं लभते मनुष्यस्ततः प्रशस्तं खलु नाम कर्म॥”

गृहारम्भ—प्रवेश, गृह व्यापार, व्यावहारिक कार्य, दान, मन्त्र-सिद्धि, भाग्य, पुनर्विवाह, रोगोत्पत्ति तथा स्वामी-सेवक के पारस्परिक कृत्यों में नाम राशि बांछनीय है।

नामकरण—सूतक-समाप्ति पर देशानुसार १०, ११, १२, १३, १६, १९, २२वें दिन संस्कार करना चाहिए। एक अन्य मतानुसार ब्राह्मण को १० या १२वें दिन, क्षत्रिय को ११ या १२वें दिन वैश्य को १६ या १७वें दिन नामकरण संस्कार करना चाहिए। नामकरण पिता-पितामह या कुल के वृद्ध व्यक्ति के द्वारा स्वास्ती वाचन मन्त्रों सहित (विद्वान् ज्योतिषी से कुण्डली परामर्श के बाद) उच्चारित करवाना चाहिए।

शुभ तिथियाँ—१ (कृष्ण), २, ३, ७, १०, ११, १२, १३ (शुक्ल)।

शुभ वार—चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ नक्षत्र—अश्वि, रोह, मृग, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत, रेवती।

शुभ लग्न—१, ४, ६, ७, ९, १२ लग्न शुभ ग्रह युत या दृष्ट हों।

भद्रा, ग्रहण, श्राद्ध दिन, दुष्ट योग, संक्रान्ति आदि रहित काल में, सुयोग्य ज्योतिषी से प्रथम नामाक्षर पूछ कर कानों को मधुर लगाने वाले अक्षर, महापुरुषों के नाम सदृश अथवा शुभ सार्थक शब्दों वाला नाम रखना कल्याणकारी रहता है।

यदि पहले मास में बालक के दौंत निकल आएँ तो मय्य अपनी आय है। लिप्य औरद्वारक दूसरे मास में भाई को, तीसरे मास में बहिन को, चौथे मास में माता को, पाँचवें मास में बड़े भाई के लिए अनाज दान करनी होती है। छठे मास में दौंत निकलें तो अत्यन्त सुख सातवें मास में पिता से सुट आठवें मास में दा. की पुष्टता, नवें मास में लक्ष्मी प्राप्ति, दसवें मास में सौख्य प्राप्ति, ११वें निकलें तो अति सौख्य, १२वें मास में प्रसन्नता तो विपुल धन प्राप्ति होती है। यदि मय्य से ही दौंतों सहित उद्गम हुआ हो वह माता पिता के गृह से विहीन अथवा ऊपर की पंक्ति के दौंत पहले निकले तो भी माता-पिता तथा नानकें पक्ष के लिए हानिकारक माना जाता है। यदि उपरोक्त अशुभ मासों में बालक को दन्तोत्पत्ति की संभावना हो तो मनुष्यज्य का जाप, ग्रह शान्ति एवं उचित दान आदि करने से अशुभत्व का निवारण तथा अष्टि की शान्ति हो जाती है।

| मास | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|-----|-------|--------|------|------|---------|-----|------|----------|----------|-------|-----|-------|
| फल | स्वयं | प्रादु | वहिन | मातृ | ज्येष्ठ | सुख | पिता | देह | धन | सौख्य | अति | विपुल |
| | को | कट | को | कट | प्रातृ | से | सुख | प्राप्ति | प्राप्ति | मोक्ष | धन | |
| | अन्य | कट | कट | कट | कट | सुख | | | | | | |

झुला आरोहण मुहूर्त—बालक के जन्मदिन से १०, १२, १६, २२ एवं ३२वें दिन बालक को आराम देह झूलें में सुलाना चाहिए। झूलें में डालने से पूर्व शुभ तिथि, वार, नक्षत्र, योगादि का विचार कर लेना चाहिए। झूलें में माता या दादा, दादी के द्वारा, भगवान् विष्णु का ध्यान करते हुए बच्चे का सिर पूर्व की ओर रखकर शिशु को सुलाना चाहिए।

शुभ तिथियाँ—१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ल) व पूर्णिमा।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि, रोहिणी, मृग, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा तथा अनुषाङ्ग।

निक्रमण मुहूर्त—जन्म से ३, ४ मासों में निम्नलिखित शुभ योगों में बालक को प्रथम बार घर से बाहर निकालना हितकर होता है। शीघ्रता में आवश्यक हो तो जन्म से १२वें दिन भी निक्रमण लिखा गया है।

शुभ तिथियाँ—१ (कृ.) २, ३, ४, ७, १०, ११, १२ (शु.) एवं १५।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु तथा शुक्र।

शुभ नक्षत्र—अश्वि, मृग, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि।

शुभ लग्न—२, ३, ४, ५, ७, ९, १०, ११ राशि लग्न।

माता, दादी आदि आत्मीयजन बालक को स्नानादि करावा कर वस्त्रादि से अलंकृत करें तथा पुण्याहवाचन, शंख और मंगल मंत्रों एवं गीत-वाद्य सहित ध्वनि के साथ उसे प्रथम देवालय (मन्दिर) में ले जावें। वहाँ देव पूजा व अर्चना करके आत्मीयजन शुभशीघ्र दें तथा मन्दिर की परिक्रमा कराके स्नानार्ह लौट कर बच्चे को ननिहाल या मौसी के घर ले जावें। पुनः गृहागमन के समय दीर्घायु ससक आशीर्वाचनों से बालक का अभिनन्दन करें। पुनश्च, निक्रमण तृतीय मास में हो, तो बालक को सूर्य-दर्शन तथा चतुर्थ मास में हो तो चन्द्र-दर्शन करवाना चाहिए।

भूयुपवेशन मुहूर्त—जन्म से पंचम मास में मंगल के बलावृत्ति होने पर बालक को प्रथम बार भूमि पर विराजमान (बिठाने) के लिए विचारणीय मुहूर्त—

शुभ तिथियाँ—१ (कृ.) २, ३, ४, ७, १०, ११, १३ (शु.) तथा पूर्णिमा।

शुभ वार—चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार।

शुभ नक्षत्र—अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उत्तरा, हस्त, अनु, ज्ये, अभिजित।

शुभ लग्न—२, ५, ८, ११ राशि लग्न।

जीविका परीक्षा—‘भूयुपवेशन’ के अवसर पर बालक के सामने हानि रहित अस्त्र-शस्त्र, पुस्तकें, लेखनी (Pen-Pencil), तस्त्र, सोना, चाँदी, तौबा, लोहादि धातुएँ, मशीनें मोटर, पंखा-रेडियो, टी. वी. आदि खिलौने, विज्ञान, हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृतदि सहित्य आदि वस्तुएँ रखें। इन वस्तुओं में से जिस वस्तु को बालक सहज रूप में सर्वप्रथम स्पर्श करें, वही उसकी भावी जीविका होगी। ऐसा अनुमान लगाना चाहिए। कुल परम्परा अनुसार, कहीं-कहीं यह क्रिया अन्नप्राशन के साथ भी कर लेते हैं।

अन्न-प्राशन का मुहूर्त—जन्म से सौर मास ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र को तथा ५, ७, ९ या ११वें मास पुत्री को उसकी पाचन शक्ति उपपुक्त होने पर प्रथम बार बच्चे को अन्न प्राशन कराना अन्न प्राशन में शुक्ल पक्ष विशेष प्रशस्त माना गया है। यद्यपि कृष्ण पक्ष की १, ३, ५, ७, १० तिथियाँ भी ग्राह्य हैं। सोमवार, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार शुभ हैं।

नक्षत्र—अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, अभिजित श्रव, धनि, रेवती तथा जन्म-नक्षत्र ‘सप्तशलाका चक्र’ द्वारा क्रूर ग्रह विद्ध नक्षत्र त्याज्य होगा। जन्म राशि से ६, ८वें लग्न को छोड़कर २, ३, ४, ५, ७, ९, १०, ११ की राशि का लग्न जबकि लग्न से १, ४, ७वें शुभ ग्रह हों तथा लग्न शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो।

विशेष—अन्न प्राशन दिन के पूर्वार्द्ध भाग में बालक की राशि का चन्द्रबल देखकर भद्रा रहित काल एवं उपरोक्त शुभ दिन को

—वस्तु भूमि का शुभाशुभ विचार—

(क) गृहनिर्माण हेतु जिस भूमि की शुभाशुभ परीक्षा करनी हो, तो शाम के समय वहाँ पर भूमि पूजन करवाने के पश्चात् वहाँ अपने एक हाथ लम्बा, एक हाथ चौड़ा और डेढ़ हाथ गहरा गढ़ा खोद कर उसे जल भर दें। प्रातःकाल आकर उसे देखने पर, यदि वह गढ़ा पानी से भरा हुआ दिखे तो, भूमि शुभ जानें। यदि पानी न हो, तो मध्यम जानें, और यदि गढ़ा में पानी न हो और उसके आस-पास की मिट्टी फटी हुई हो, तो भूमि को अशुभ समझें।

(ख) वास्तुभूमि में परीक्षा के लिए भूमि में लगभग डेढ़ फुट गहरा उतना ही चौड़ा गढ़ा खोदें। खुदाई के समय यदि पत्थर, ईंट, तांबा, यात्र, धनादि द्रव्य मिलें, तो यह परिवार की आयु, धन, संतति आदि में वृद्धि होने के संकेत हैं। इसे शुभ शकुन मानना चाहिए। यदि भूमि खोदने पर कपाल, हड्डी, कोयला, केश, राख, गुठली, रई, सीप खोपड़ी, लोहादि मिलें तो इसे अशुभ शकुन समझना चाहिए।

(ग) विश्वकर्मा के अनुसार एक अन्य परीक्षा भूमि में उत्तर दिशा की ओर एक लगभग डेढ़ फुट गहरा और डेढ़ फुट चौड़ा गढ़ा खोदें। गढ़ों में से सारी मिट्टी निकाल लें। तथा निकाली हुई मिट्टी को दुबारा उसे गढ़ों में भर दें। यदि गढ़ा भर देने के बाद भी मिट्टी शेष बच जाती है, तो समझ लें कि भूमि उत्तम है। यदि फिर भरने के बाद मिट्टी शेष नहीं बचती और गढ़ा पूरा भर जाता है, तो इससे यह समझना चाहिए कि भूमि मध्यम स्तराय होगी। यदि निकाली गई सारी मिट्टी गढ़ों में भरने पर भी, गढ़ा पूरी तरह नहीं भरता है, तो समझें कि जमान निकट प्रकार की है।

(घ) फटी हुई, शूल (कांटों), दीमक आदि से युक्त ऊँची-नीची भूमि अशुभ होती है।

(ङ) शुभ-भूमि—चिकनी, गीली, उपजाऊ मिट्टी अथवा घास, पुष्प, लताओं, फूलों आदि से युग्म्वित एवं समतल भूमि गृह स्वामी एवं उसके परिवार के लिए सुख-समृद्धि में वृद्धिकारक होती है।

(च) मकान की नींव को गहरा खोदते समय यदि काली ईंट देखने को मिलें, तो भूमि शुभ जानें। हड्डी, केश, (बाल), कोयला राखादि निकलें तो वहाँ मकान बनवाने वाले को रोगादि से कष्ट रहे।

सुप्त भूमि (भू-शयन) का विचार

प्रत्येक सूर्य संक्रान्ति से ५, ७, ९, १०, २१ एवं २४वें प्रविष्टे की पृथ्वी सोई रहती है, अतएव सुप्त भूमि के दिवसों में यथासम्भव कृषि, होम, गृह निर्माण, वापी, कुआँ, तालाब के लिए भूमि का खनन न करें। एक अन्य मतानुसार, सूर्य-नक्षत्र से ५, ७, ९, १२, १९, तथा २६ वे नक्षत्रों में भी भूमि का शयन होता है।

भू-रजस्वला—सूर्य संक्रान्ति के दिन से १, ५, १०, १९, १६, १८, १९ वें दिन भूमि रजस्वला रहती है। अतः इन दिनों भी यज्ञ, हवन, कृषि, तालाब, गृह निर्माणारम्भ आदि कार्यों का आरम्भ न करें।

है। जन्मदिन पर तिल स्नान, तिलों चाबल, दूध, चीनी आदि से बनी क्षौर तथा वस्त्र अनाजादि का दान एवं स्वयं भी क्षौर सेवन शुभ होता है।

७-मुण्डन (चूड़ाकर्म) संस्कार मुहूर्त

जन्म या गर्भाधान में १, ३, ४, ७ इत्यादि विषम वर्षों के कुलाचार के अनुसार उत्तरायणगत सूर्य में बालक का चोलकर्म (मुण्डन) संस्कार पूर्वाह्न काल में करना चाहिए।

चैत्र मास को छोड़कर अन्य उत्तरायण के मासों में—वैशा, ज्ये, आषा. (२० जून तक), माघ, फाल्गुन, २, ३, ४, ५, ६, ७, १०, ११, १३ (शु०) १५ तिथियों में, संक्रान्ति आदि पर्व दिनों को छोड़कर, चन्द्र, स्वा, ज्ये, श्रव, अधि., धनि. और शतभिषा नक्षत्रों में मुण्डन कार्य शुभ है। लोकाचार अनुसार कुछ लोग नवपत्रों में, अक्षयतीज आदि शुभ दिनों में बिना सुनिश्चित मुहूर्तों के भी मुण्डन आदि कार्य कर सकते हैं।

बालक का जन्म मास त्याज्य है। परन्तु जन्म नक्षत्र या जन्म राशि शुभ है। तथा जन्म राशि या जन्म लग्न से अष्टम लग्न न हो। बालक की माता रजस्वला या गर्भवती हो, तो मुण्डन कार्य न करावें परन्तु यदि गर्भ ५ मास से अधिक का हो तो या बालक की आयु ५ वर्ष से अधिक हो, तो दोष नहीं। ज्येष्ठ (बड़े) लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में शुभ नहीं।

७ क्षौर (हजामत) कर्म मुहूर्त—मुण्डन के लिए जो तिथियाँ, नक्षत्र और वार शुभ बतलाए गए हैं, वे ही क्षौर (हजामत) के लिए शुभ हैं। मंगल, शनि, व रवि वारों में क्षौर से पुनः ९वाँ दिन, रिक्ता तिथियों और विशेष ग्राम (नगर) में जाने के दिन, स्नान करने के बाद, शरीर में उबटन लगाने के बाद और भोजन कर लेने के बाद अपना कल्याण चाहने वाले वाले क्षौर कर्म (हजामत) न करावें॥ विशेष—यज्ञ में, विवाह, मृतक कर्म में कारागार (जेल) से छूटने पर, राजा और ब्राह्मण की आज्ञा से क्षौर कर्म निषेध दिनों में भी करा लेना शुभ होता है।

विवाह में तैलादि चढ़ाने का मुहूर्त

वर कन्या जिसको विवाह से पूर्व तैल चढ़ाना हो, उसका चन्द्र बल देख लेना चाहिए। तैलादि मंगल कार्य हेतु, मेधादि राशि वारों के लिए चक्र में निर्दिष्ट संख्या दिन पूर्व करना चाहिए। उदाहरणार्थ मिथुन राशि वाले वर-कन्या को विवाह से ५ दिन पूर्व तैल चढ़ाना चाहिए। इनमें विवाह का दिन गिनती में न करें।

| राशि | मेघ | वृष | मिथु | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चि | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|------|-----|-----|------|------|------|-------|------|--------|-----|-----|-------|-----|
| दिन | ७ | १० | ५ | १० | ५ | ७ | ७ | ५ | ५ | ५ | ५ | ७ |

सूर्य, ब्रह्म, विष्णु, महेश तथा दिक्पतियों की पूजा करके माता स्वल्कृत बालक को अपनी गोद में बिठाकर ईश्वर-स्मरण करते हुए उसे मधु, घृत, दही, खीर का भोजन सर्व प्रथम कराएँ।

७-कर्ण वेध का मुहूर्त—बालक के जन्म से १२, १६वें दिन, या ६, ७, ८वें मास में अथवा ३, ५वें वर्ष बालक का कर्ण छेदन प्रशस्त माना जाता है।

श्राद्ध मास—चैत्र, (का. शु. ११ के बाद), पौष तथा फाल्गुन। तिथियाँ—४, ९, १४ (रिक्ता तिथियाँ छोड़कर)।

वार—बु., बु., गु., शु. वारों में अशुभ, मृग, आ. पुन. पुष्य हस्त, चित्रा, अनु, अभि, श्रव, धनि, रेव, विहद तथा जन्म नक्षत्र भी त्याज्य।

शुभ लग्न—२, ३, ६, ७, ९, १२।

विशेष—बालक को पूर्वाभिमुख बिठाकर हाथ में कुछ मिष्ठान दें तथा पुत्र के बाएँ कान को तथा पुत्री के दाएँ कान को सुवर्ण या चाँदी की रत्नाकार से सौभाग्यवती स्त्री या कुशल स्वर्णकार से कर्ण विधवाना चाहिए।

७-कन्या की नासिका छेदन—हेतु उपरोक्त कर्ण वेध मुहूर्त के मासों में ही कन्या का नामक विंधवाया जाता है। शुक्ल पक्ष की तिथियाँ शुभ होती हैं—२, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५।

जन्म दिन कृत्य

सामान्यतः लोग अंग्रेजी तारीख अनुसार ही जन्मदिन कृत्य कर लेते हैं। परन्तु इसमें कई बार भूल होने की सम्भावना रहती है। सिद्धान्तः एक सौर वर्ष उपरान्त जिस दिन जन्मेष्ट एवं जन्मदिन के समान ही स्पष्ट सूर्य के राशि, अंश, कलादि की जब पुनरावृत्ति आ जाए, उसी दिन को जन्मदिन का नववर्ष प्रवेश माना जाएगा। यदि इतनी सूक्ष्मता का पता न चल पाए तो देशी प्रविष्टों के अनुसार जन्म दिन के वर्ष का निर्धारण किया जाए तो शुद्धता के अधिक पास रहेंगे। यदि किसी सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा वार्षिक जन्मदिन का निर्णय (गणितानुसार) करवा लें तो और अधिक उचित होगा।

जन्मदिन के शुभ अवसर पर प्रातः उठकर गंगा जल सहित शुद्ध पवित्र जल से बालकको स्नानादि के पश्चात् सुन्दर वस्त्र धारण करवा कर पूर्वाभिमुख होकर माता पिता उसे गोदी में बिठाकर किसी सुयोग्य पण्डित जी द्वारा पंचदेव पूजन, नवग्रह पूजन एवं संकल्पपूर्वक छाया दान सहित जन्मदिन पूजन करवाना चाहिए। पूजनोपरान्त भगवान् सूर्यदेव को अर्घ्य तथा ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दानादि करें।

विशेषकर वर्षफल में स्थित अशुभ ग्रहों के दान, जपादि करवाने से बच्चों को आरोग्यता एवं माता-पिता को सुख-शान्ति बनी रहती

आवाहयक मुहूर्त विचार

| नाम मुहूर्त | शुभ ग्राह्य तिथियां | शुभ वार मास | शुभ नक्षत्र |
|-----------------------------------|---|---|--|
| बच्चे का नाम रखना | १ (कृ.), २, ३, ५, ७, ८, १०, ११, १२, १३ (शु.), १५ शुभ तिथियां ॥ | चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, वैशा, ज्ये, आ, श्रा, भा., आश्वि, मार्ग, माघ, फागु.। | अश्वि, कृति, रोह, मृग, मघा, पूर्वा ३, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, मृ, श्रव, धनि, रेवती। |
| बच्चे को स्कूल डालना (विद्यारम्भ) | २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शु.), १४, बुध एवं पूर्णिमा तिथि | वै., ज्ये, आपा, श्रा, भा, अश्वि, मार्ग, माघ, फागु तथा कार्तिक (पूर्वतिथि केवल)। रवि, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र प्रशस्त। मं. श. (मध्यम)। | रोह, मृग, मघा, उत्तरा ३ (तीनों), हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, मूला, रेव। |
| मुंडन संस्कार | १ (कृष्ण), २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३ (शुक्ल), १५ शुभ तिथियां। | चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, वैशा, मार्ग, माघ व फाल्गुन मास। | अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, मूल, श्रव, धनि, रेव। |
| दुकान/बही खता शुरू करना | १ (कृ.), २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शुक्ल) तिथियां। | रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार। | अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, मघा, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, विशा, अनु, मूला, रेवती। |
| नौकरी करना | २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १५ तिथियां। | चन्द्र, बुध, गुरु व शुक्र। | अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, मूल, श्रव, धनि, शत, रेवती। |
| स्कूटर, कारादि सवारी खरीदना | १ (कृ.), २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३ (शु.), १५। | रवि, मंगल, गुरु | अश्वि, रोहि, मृग, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, अभि, श्रव |
| गृहारम्भ (मकान बनाना) | १ (कृ.), २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३ (शु.) व १५। | रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र वारों में। | अश्वि, मृग, उफा, हस्त, श्रवण, विशाखा। |
| शिलान्यास (नींव खोदना) | गृहारम्भ वाली तिथियां ग्राह्य। | मंगल, गुरु, शुक्र। | मृग, पुन, श्ले, मघा, विशाखा, अनु, पूर्वा ३, मूला, रेवती। |
| नए घर में प्रवेश | १ (कृ.), २, ३, ५, ७, १०, ११, १२ (शुक्ल) १५ तिथियां। | रवि, मंग, बुध, गुरु, वार प्रशस्त हैं। | भर, आर्द्रा, श्ले, मघा, पूर्वा-३, ज्ये., मूला, नक्षत्र। |
| | | रवि, चंद्र, बुध, गुरु शनि। | अश्वि, पुन, पुष्य, हस्त, विशा, ज्ये, धनि, शत, रेवती। |
| | | रवि, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, जन्म नक्षत्र त्याज्य है। | अश्वि, मृग, पुष्य, चित्रा, पुन, हस्त, अनु, स्वा, अभि, श्रवण, धनिष्ठा हैं। |

आपकी किताबों का क्या काम है ?

| नाम वार | रविवार | सोमवार | मंगलवार | बुधवार | वीरवार | शुक्रवार | शनिवार |
|----------------------------------|--|--|---|---|--|--|---|
| यात्रा में शुभ ग्रह-दिशाएँ | पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षिण पूर्व) | पश्चिम, दक्षिण वायव्य (उत्तर-पश्चिम) | दक्षिण-पूर्व आग्नेय (दक्षिण-पूर्व) | दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम) | पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर) | पूर्व, उत्तर ईशान (उत्तर पूर्व) | पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम) |
| यात्रा में त्याज्य (दिशाशूले) | पश्चिम, वायव्य (उ. पश्चि. कोण) | पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षि. पश्चि.) | उत्तर, पश्चिम वायव्य (उत्तर पश्चि.) | उत्तर, पश्चिम ईशान (पूर्व-उत्तर) | दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षि. पश्चि.) | पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य कोण (द. पश्चि.) | पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर) |
| विद्या एवं शिक्षा | विज्ञान, इंजीनियरिंग, सना, उद्योग, बिजली, मैडिकल, एवं प्रशासनिक शिक्षा सम्बन्धी। | लेखनादि कार्य, मैडिकल शिक्षा, सौंदर्य प्रसाधन, औषधि निर्माण व योजना सम्बन्धी। | विजली (इलेक्ट्रिकल), सर्जरी का शिक्षा, शस्त्र विद्या सीखना, अग्नि, स्पोर्ट्स, भूगर्भ विज्ञान, दंत चिकित्सा आदि। | गणित, लेखनादि, बौद्धिक कार्य, बैंक कालात, तकनीक होनर, ज्योतिष, विज्ञान, वाहनादि चलाना सीखना। | दर्शन-शास्त्र, धर्म मंत्र ज्योतिष, वकालत, उच्च पद प्रशासनिक शिक्षा वैद्यक आदि। | नृत्य, वाद्य गायन, कला, संगीत, पेंटिंग, गीत-काल्प रचना, स्त्रियों एवं व्यंग्य सम्बन्धी शिक्षा। | तकनीकी शिल्प, कला, मशीनरी सम्बन्धी ज्ञान (Engineering) अंग्रेजी, उर्दू, फारसी का ज्ञान शुरू करना। |
| सम्बन्धी | राज्य प्रशासनिक कार्य सेनाधिकारी, ज्यूलर्ज, औषधि, शस्त्र, अग्नि, अनाज, सोना, तांबा, चौदो, गाय, बैलादि का क्रय-विक्रय, मैडिकल, इलेक्ट्रिकल, मंत्रानुष्ठान यज्ञादि। | कृषि, गाय, भैंस, दूध, घी डेयरी, फार्म, औषधि, सोडादि तरल पदार्थ, शंख, मोती, स्त्री, धन सम्पदा, सौंदर्य प्रसाधन, सुगन्धि (Perfumes) सम्बन्धी वस्तुओं का क्रय-विक्रय, विदेशी पत्राचार आदि। | शक्ति, अग्नि एवं विजली से सम्बन्धित कार्य, बेकरी electronics, स्पोर्ट्स Goods, सोना, तांबा, मृगा, पीतलादि का क्रय भूमि, सर्जरी एवं रक्षा सामग्री, सन्धि विच्छेद आदि कार्य। | कृषि एवं व्यापारिक वस्तुओं का क्रय-विक्रय, शेरों का क्रय, पुस्तक, लेखन प्रशासन, लेखाकार्य (Accounts) शिक्षण, वकालत, शिल्प, एवं सम्पादन कार्य, वाहन क्रय-विक्रय। | धार्मिक अनुष्ठान, उच्च प्रशासनिक कार्य, उच्च शिक्षा के कार्य, आभूषण, औषधि, लकड़ी, भूमि, वाहनादि का लेन-देन, विदेश गमनादि कार्य। | संगीत, पेंटिंग, विदेशी बाद, टेल्फोन, स्त्रियों एवं श्रमिक वस्तुओं से सम्बन्धित कार्य, रुई, कपड़ा बौक्सिंग, चाँदी, जवाहरत, गायन, शूगर, सोडा, सुगन्धित द्रव्य, वाहनादि क्रय विक्र, खुशबूदार वस्तु। | मशीनरी, लोहा, लकड़ी चमड़ा, सीमेंट, तेल, पेट्रोल, पत्थर, भूमि, डेकेदारी, शस्त्रों का क्रय- विक्रय, अन्वेषण एवं आश्रयण कार्य, अधीनस्थ कर्मचारी, वाहनादि प्रयोग विदेश-यात्रादि कार्य। |

अनुष्ठान आरम्भ करने का युक्त

| नाम वार | रवि | चन्द्र | मंगल | बुध | बृह. | शुक्र | शनि |
|-----------------------|--------|--------|-------|-----------|-------|---------|-----------|
| नवीन वस्त्र धारण करना | शुभ है | मध्यम | अशुभ | शुभ | शुभ | अति शुभ | अशुभ |
| नवीन आभूषण धारण | शुभ | शुभ | मध्यम | शुभ | शुभ | शुभ | अशुभ |
| तेल लगाना | अशुभ | शुभ | अशुभ | विशेष शुभ | अशुभ | शुभ | विशेष शुभ |
| हजामत करना | मध्यम | शुभ | अशुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | मध्यम |
| नया जूता पहनना | अशुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | मध्यम | शुभ | मध्यम |
| मुकदमा करना | अशुभ | अशुभ | शुभ | शुभ | अशुभ | मध्यम | शुभ |

मास—वैशाख, श्रावण, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, भाद्र फाल्गुन।

तिथि (शुक्ला)—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३।

वार—सू. गु. शु. (सोम मध्यम)।

नक्षत्र—अश्वि, रो. मृ. पुन. प. उत्तरा. ३. ह. स्वा. दि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे।

लग्न—शिव की आराधना १. ४. ७, १० लग्नों में एवं विष्णु की २, ५, ८, ११ लग्नों में तथा

देवी की ३, ६, ९, १२ लग्नों में कर्तव्य है।

अन्य देवताओं के अनुष्ठान में वह राशि लग्न ग्रहण करें, जब ३, ६, ११ वें क्रूर ग्रह १, २, ४,

५, ७, ९, १० वें सौम्य ग्रह तथा ८, १२ वें प्रहाभाव।

विशेष—आराध्य देवताओं के मास, तिथि, वार, नक्षत्र विशेष शुभ है। पुनश्च, गुरु-शुक्रास्त,

बलहीन चन्द्र तथा कुयोग परित्याज्य हैं।

यात्रादि मुहूर्त विचार

किसी कार्य के उद्देश्य से देशान्तर गमन को यात्रा कहते हैं। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा और २, ३, ५, ७, १०, ११, १३—इन तिथियों में अश्वि, मृग, पुनर्वसु, अश्लेष, धनि, रेवती, इन नक्षत्रों में तथा चौर, वाण, भद्रा, वैधृति, व्यतिपात और मासांत दिनदिन दोष रहित समय में यात्रा करें। यात्रा करने से पूर्व क्रोध और मैथुन कर्म का त्याग करना चाहिए।

दिशाशूल

सोमवार, शनिवार को पूर्व, रविवार और शुक्रवार को पश्चिम, मंगलवार, बुधवार को उत्तर तथा गुरुवार को दक्षिण दिशा का दिशाशूल होता है, अतः उक्त वारों को उस दिशा की यात्रा नहीं करनी चाहिए। अत्यावश्यक हान पर रविवार को पान और घी खाकर, सोमवार को दर्पण देखकर या दूध पीकर, मंगलवार को गुड़ खाकर, बुधवार को धनिया या तिल खाकर, गुरुवार को दही खाकर, शुक्रवार को दूध पीकर और शनिवार को अदरक या उड़द खाकर प्रस्थान किया जा सकता है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पाँव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, यात्रा सफल होगी।

चन्द्रवास ज्ञान चक्र

| पूर्व | दक्षिण | पश्चिम | उत्तर |
|-------|--------|--------|---------|
| मेघ | वृष | मिथुन | कर्क |
| सिंह | कन्या | तुला | बृश्चिक |
| धनु | मकर | कुम्भ | मीन |

चन्द्रवास विचार

जाने जाती दिशा में चन्द्रमा का नाम सम्मुख और दाहिनी ओर को हाँ तो धन का लाभ और सुख होता है। यदि पीठ की ओर अथवा बाई तरफ चन्द्रवास हो तो कष्ट और धन की हानि होती है।

सम्मुख चन्द्रमा का विचार

करणदोष, नक्षत्रदोष, वारदोष, संक्रान्ति दोष, अशुभतिथिदोष, कुलिक दोष, प्रहाड़ वारजला दोष, मंगल, शनि, रवि, राहु-केतु के दोष को सम्मुख चन्द्रमा दूर करता है।

'यात्रा के समय शुभ शकुन'

यात्रा के समय श्वेत पुष्पों का दर्शन श्रेष्ठ माना गया है। भरे हुए घड़े का दिखाई देना तो बहुत ही उत्तम है। दूर का कोलाहल, अकेला वृद्ध पुरुष, पशुओं में बकरे, गौ, घोड़े तथा हाथी, देवप्रतिमा, प्रज्वलित अग्नि, दूर्वा, ताजा गोबर, सोना, चांदी, रत्न, बच, सरसों आदि औषधियाँ, भूँग, छाता, पीढ़ा, राजचिह्न, जिसके पास कोई रोंता न हो ऐसा शव, फल, घी, दही, दूध, अक्षत, दर्पण, मधु, शंख, ईख, शुभ सूचक वचन, भक्त पुरुषों का गाना-बजाना, मेघ की गम्भीर गर्जना, बिजली की चमक तथा मन का सन्तोष—ये सब शुभ शकुन हैं। 'चले आओ'—यह शब्द यदि सामने की ओर से सुनाई पड़े तो उत्तम है। 'जाओ'—यह शब्द यदि पीछे की ओर से हो तो उत्तम है।

क्षौरकर्म (हजामत) के लिए शुभाशुभ दिन

गर्गादि आचार्यों के अनुसार रविवार, मंगलवार एवं शनिवार को क्षौर (हजामत) कर्म करवाने से आयु का क्षय होता है। सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार को क्षौर कर्म (हजामत) करवाना शुभ होता है। मतान्तर से एक पुत्र सन्तान वाले गृहस्थों को सोमवार के दिन, तथा विद्या एवं धनाकांक्षी गृहस्थों को गुरुवार के दिन क्षौर नहीं करवाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त पूर्व वाले दिन, जन्मदिन, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी (१४) आदि रिक्ता तिथियों में, व्रत के दिन, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति, श्राद्ध के दिन, भद्रा और व्यातिपात योग में तथा भोजन करने के बाद, देश-प्रदेश जाने के समय में शुभाकांक्षी और कर्म न करावें।

तैलाभ्यंग—अर्थात् तैल मालिश करना

रविवार, मंगलवार, गुरुवार तथा शुक्रवार को तैल लगाना शुभ नहीं माना जाता है। निर्णय सिन्धु के अनुसार रविवार तैल लगाने से ताप, मंगलवार को आयु क्षीणता, गुरुवार से धन-हानि, शुक्रवार को तैल लगाने से दुःख होता है। सोमवार, बुधवार तथा शनिवारों को तैल लगाना शुभ होता है।

निषिद्ध वारों में तैल लगाना हो, तो रविवार को पुष्प, गुरुवार को दूर्वा, मंगल को मिट्टी, और शुक्रवार को गोबर तेल में डालकर लगाने से दोष नहीं होता। गन्धयुक्त (सुगन्धित) तेल एवं प्रतिदिन तैल लगाने वालों को भी दोष नहीं लगता—(नित्यं—अभ्यङ्गकं चैव वासिते नैव दूषणम्॥)

फलित ज्योतिष की दुर्लभ पुरतकें

गलत एवं असुद्ध ज्ञान की अपेक्षा अल्प सही एवं शुद्ध ज्ञान की जानकारी श्रेष्ठ होती है। यह नियम सभी विषयों पर सटीक बैठता है। ज्योतिष में तो यह नियम और भी आवश्यक है। गणित एवं फलित ज्योतिष ज्ञान के लिए विश्वसनीय एवं प्रामाणिक ग्रन्थों एवं पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए। हमारे कार्यालय से प्रकाशित ज्योतिष तत्त्व (तीन पुस्तकों का सैट) का अध्ययन एवं अनुशीलन करने बाद आप ज्योतिष सम्बन्धी गूढ़ रहस्यों को सुगमता से हृदयंगम कर सकते हैं, क्योंकि मेष आदि द्वादश लगनों को आधार मानकर कुण्डली में सभी ग्रहों की स्थितियों का विस्तृत फलादेश अनेक प्रसिद्ध उदाहरण कुण्डलियाँ देकर समझाया गया है। ज्योतिष ज्ञान प्राप्ति के लिए इच्छुक प्रत्येक विद्यार्थी के लिए उत्तम फलित ग्रंथ (दो भागों में) प्रत्येक भाग का मूल्य २५० रुपये। जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर। फोन 2457959

अश्वि अश्विच व्यवस्था

अश्विच दो प्रकार का होता है—(१) जनना श्विच जिसे सूतक और (२) मरणाश्विच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भाश्विच-व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भश्राव' कहते हैं। पांचवें, छठे मास में 'गर्भपात' और इसके उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर, किसी भी मास में गर्भ के गिरने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अश्विच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पितादि सपिण्डों को ३ दिन का 'सूतक' होता है।

जननाश्विच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने २ वर्ष के अनुसार पूरा अश्विच (सूतक) होता है, जैसे बाह्यण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हो, तो, २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से एक मास तक धर्मकार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

मृत्युत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ष के अनुसार अश्विच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाये तो माता को १० दिन तक सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाश्विच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये तो पितादि सपिण्डों का पूर्ण जननाश्विच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं होता।

मृताश्विच-व्यवस्था

नामकरण अर्थात् १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दांत आने से पहिले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताश्विच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थात् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक, अर्थात् मुंडन संस्कार न हुए बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है और ३ वर्ष में मुंडन संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या श्विच-व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुराणों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाए व प्रसूता हो तो माता-पिता सहोदर, भाईयों को तीन दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का अश्विच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अश्विच होता है।

मातामह-मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना की ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १ ॥ दिन का पातक होता है।

सास-ससुर तथा जामातु पर अश्विच विचार

सास और ससुर यदि मर जाये तो जामित्र पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १ ॥ दिन का पातक लगता है। जामाई के मरने पर १ दिन का पातक होता है।

बन्धुव्रत-विचार

भूआ मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबंधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी की मामी के पुत्रों को पितृबंधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबंधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बंधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो तीन दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १ दिन का पातक होता है। और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का।

राहु कालम्

शुभ कार्यों में विशेषतया त्याग्य

दक्षिण भात में राहु-कालम् का विशेष प्रचलन है। विशेष वार प्रतिदिन डेढ़ घण्टे के लिए यह अनिष्ट समय होता है। जिसे शुभ कार्यरम्भ में यथासम्भव टाल देना चाहिए। दक्षिणी भारत में राहु कालम् का विशेष विचार किया जाता है।

सोमवार—प्रातः ७/३० से प्रातः ९ बजे तक
मंगलवार—अपराह्न ३/०० से ४/३० बजे तक
बुधवार—दोपहर १२/०० से १/३० बजे तक
बृहस्पतिवार—दोपहर १/३० से ३/०० बजे तक
शुक्रवार—प्रातः १०/३० से दुपै १२ बजे तक
शनिवार—प्रातः १/०० से प्रातः १०/३० बजे तक
रविवार—सायं ४/३० से सायं ६/०० बजे तक

स्त्री जानक विचार

- यदि कन्या की जन्म कुण्डली में सप्तमेश ग्रह के साथ शनि स्थित हो, तो ऐसी कन्या का विवाह बड़ी आयु में होता है।
- यदि सूर्य, मंगल, बुध लान में हो और गुरु द्वादश भाव में स्थित हो, तो भी उस कन्या का विवाह दीर्घकाल में ही होता है।
- जिस स्त्री के जन्म काल में सप्तम भाव में शुभ-अशुभ—दोनों प्रकार के ग्रह होते हैं, उसके दो विवाहों के योग बनते हैं।
- यदि किसी स्त्री के सप्तम भाव में सूर्य हो अथवा अन्य कोई पाप ग्रह ७वें भाव में स्थित हो, तो ऐसी स्त्री को वैवाहिक—सुख कम मिलता है।
- यदि सप्तम भाव में बुध तथा शनि की युति हो, तो ऐसी स्त्री का पति नपुंसक होता है।
- आठवें भाव में बुध गया हो ऐसी स्त्री काक—बन्ध्या होती है अर्थात् एक बार सन्तान होकर पुनः सन्तान होने में बाधा होती है।

विष कन्या योग

- शनिवार, आश्लेषा नक्षत्र और द्वितीय तिथि—में तीनों जिस दिन मिलें उस दिन जन्मी कन्या विष कन्या होती है।
- मंगलवार, विशाखा नक्षत्र और द्वादशी तिथि—ये तीनों जिस दिन मिलें, उस दिन जन्मी कन्या विष कन्या होती है।
- यदि पंचम भाव में धन अथवा मीन राशि हो तथा गुरु पंचम भाव में स्थित हो अथवा पंचम भाव पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो, तो ऐसे योग वाली स्त्री को उपाय से सन्तान होती है।

जाली योग

- यदि कुं. में बुध, गुरु और शुक्र ४, ७, १०वें स्थानों में स्थित हों, और शेष ग्रह इनमें भिन्न भावों में पड़ें हों, तो माला योग होता है। इस योग के होने से जातक धनवान् वस्त्राभूषणों से युक्त, एक से अधिक स्त्रियों से प्रेम सम्बन्ध रखने वाला, एवं उच्च अधिकारी होता है। चुनाव, कम्पटीशन आदि में प्रायः सफल रहता है।

जन्म कुण्डली

- जन्म कुण्डली में यदि लान और सप्तम भाव में समस्त ग्रह पड़ें हों तो शकट योग होता है। इस योग वाला व्यक्ति स्वार्थी, चतुर, रोगी, दुष्ट, अल्प-विद्या, झूझवरी एवं संचालनादि कार्यों में सफल होता है। धन की उसे प्रायः कमी रहती है। बन्धुओं का सुख भी नहीं होता।

गृह व राशियों के तत्त्वों पर से शारीरिक स्थिति

जन्म समय जिस प्रकार की उदित लग्न राशि और ग्रह के तत्त्व होंगे, जातक की शरीर संरचना भी वैसी ही होगी। शरीर की स्थिति के सम्बन्ध में विचार करने के लिए ग्रह और राशियों के तत्त्व नीचे लिखे जाते हैं—

| ग्रह | शुक्रादि | तत्त्व | कद |
|--------|------------|-------------|-----------------|
| सूर्य | शुक्र ग्रह | अग्नि | मध्यम |
| चन्द्र | जल ग्रह | जल | दीर्घ |
| मंगल | शुक्र ग्रह | अग्नि | ह्रस्व |
| बुध | जलीय | पृथ्वी | मध्यम |
| गुरु | जलीय | आकाश या तेज | मध्यम या ह्रस्व |
| शुक्र | जलीय | जल तत्त्व | ह्रस्व |
| शनि | शुक्र | वायु तत्त्व | दीर्घ |
| राहु | शुक्र | वायु | दीर्घ |
| केतु | शुक्र | वायु | मध्यम |

राशि तत्त्व

| मेघ | अग्नि | पृथ्वी | ह्रस्व |
|---------|--------|--------|--------|
| वृष | वायु | वायु | ह्रस्व |
| मिथुन | जल | जल | मध्यम |
| कर्क | अग्नि | अग्नि | दीर्घ |
| सिंह | पृथ्वी | पृथ्वी | दीर्घ |
| कन्या | वायु | वायु | दीर्घ |
| तुला | जल | जल | मध्यम |
| वृश्चिक | अग्नि | अग्नि | मध्यम |
| धन | पृथ्वी | पृथ्वी | ह्रस्व |
| मकर | वायु | वायु | ह्रस्व |
| कुम्भ | जल | जल | ह्रस्व |
| मीन | | | |

(१) जन्म लग्न में जल राशि हो एवं उसमें जल तत्त्व ग्रह की स्थिति हो, तो जातक का शरीर मोटा एवं पुष्ट होगा।

(२) लग्न एवं लग्नाधिपति ग्रह जलराशिगत हो, तो भी शरीर स्थूल एवं पुष्ट होगा।

(३) यदि जन्म लग्न अग्नि राशि का हो और अग्नि तत्त्व के ग्रह उसमें स्थित हों, तो मनुष्य शक्तिशाली एवं बली होता है, पर शरीर देखने में दुबला लगेगा।

पिता घर से बाहर, बालक अन्य शब्द से रोया हो। आयु के २, ४, १५, २३, २५, ३५, ४५, ५६वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

तुला—गौरवर्ण, कुछ लम्बा चेहरा, काले नेत्र, वड़ी नाक, थोड़े बाल, चंचल, तीक्ष्ण बुद्धि, दुबला कृश शरीर, माता का मुख परिचय की ओर, कषाय भोजन किया हो तथा पुराने वस्त्र धारण किए हों, बालक-बालिका दीर्घ शब्द में रोए। आयु के ३, ६, ८, १५, २७, ३१वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

वृश्चिक—ऊँचा मस्तक, सौम्य प्रकृति, पुष्ट शरीर, ताग्रवर्ण भूरे नेत्र, शीघ्रदय, तेज स्वभाव, केश लम्बे, स्त्रियाँ २ या ३, गृह का द्वार उत्तर की ओर, बालक की पीठ पर चिन्ह, माता ने लाल वस्त्र पहने हों, बालक देर से रोया हो। आयु के २, ६, ११, २७, ५८वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

धनु—रंग गोर, ऊँचा मस्तक, बड़े नेत्र, माता का मुख पूर्व की ओर, पीले वस्त्र सहित चित्रित वस्त्र एवं पकवान भोजन किया हो, बालक की छाती पर चिन्ह, माता का मुख उत्तर-पूर्व की ओर होगा तथा जन्म समय १ या ५ स्त्रियाँ, बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। वर्ष के १, ३, १०, १८, २१, ३७, ४२वें वर्ष विशेष कष्टकारी होंगे।

मकर—जन्म समय कृश शरीर, पिंगल वर्ण, बहुत केश, ऊँचा मस्तक एवं ऊँची नाक, वात-विकार, माता का सिर दक्षिण की ओर, पुराना काला, नीला वस्त्र धारण किया हो, कसैला भोजन व शीतल जल पिया हो, स्त्रियाँ ३ या ४ हों, सूतिका गृह प्राचीन एवं गृह द्वार उत्तर की ओर, जन्म के बाद बालक ने थोड़ा रोया हो। आयु के ३, ५, १३, २७, ३३, ५७वें वर्ष में विशेष कष्ट रहें। जातक पर शनि का विशेष प्रभाव रहे।

कुम्भ—जन्म समय कुम्भ लग्न हो, तो बालक-बालिका का चौड़ा मस्तक, कुछ मोटे होंठ, वात-पित्त प्रकृति, श्वेत-श्याम वर्ण, ध्रुववर्ण वस्त्र, मध्यम केश, माता का मुख परिचय की ओर, ३ या ५ स्त्रियाँ, शाकादि का भोजन किया हो, माता को शरीर कष्ट, पिता घर में न हो तथा बालक-बालिका ने थोड़ा रुदन किया हो। आयु के २, ४, १३, २८, ३३, ४२, ४८, ५७वें वर्ष विशेष कष्ट हो। बालक पर शनि ग्रह का विशेष प्रभाव रहेगा।

मीन—बालक जन्म समय सुन्दर सौम्य एवं पीत (पिंगल) वर्ण, वात-श्लेष्म कफ प्रकृति, माता पीले वर्ण सहित मिश्रित वर्ण के वस्त्र धारण किए हुए मिष्ठान्न सहित अल्प भोजन किए, उस का मुख उत्तर की ओर, जन्म समय २ या ३ स्त्रियाँ हों, बालक जन्म से कुछ देरी के बाद रोया हो। आयु के १, ७, १०, १३, १६, २६, २९, ३८, ४१वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

मेघ—बालक के जन्म समय मेघ लग्न हो तो घर के पूर्व की ओर प्रसूतिका की शय्या, दो उपसूतिकाएँ अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य में बितने ग्रह हों उतनी उपसूतिका की संख्या जाते, मुख की कानि लाल वर्ण की, माता का मुख पूर्व की ओर, बालक की प्रकृति पित्तकारक, चंचल एवं साहसी होगी। माता के वस्त्र लाल वर्ण के तथा उसने पहले मीठा भोजन किया हो। जन्म के बाद बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। मकान पुराना होगा। आयु के २, ४, ११, १६, २९वें साल विशेष कष्ट रहे।

वृष—बालक के जन्म समय वृष लग्न हो, तो बालक गौरवर्ण सुन्दर रूप, द्वार एवं माता का शिर दक्षिण की ओर, रक्त-पित्त प्रकृति, माता ने श्वेत वस्त्र और चाँदी के आभूषण पहने हों, पहले शाकादि का भोजन किया हो। पाँव से प्रसवोत्पन्न, ३ या ४ उपसूतिकाएँ हों। आयु के १, १३, १८, ३३, ४३, ५८वें वर्ष में विशेष कष्ट हो।

मिथुन—बालक का चंचल स्वभाव, वात-श्लेष्म (वायु बलगम) प्रकृति, उपसूतिकाएँ (स्त्रियाँ) ३ या ५, माता का मुख परिचय की ओर, स्तनों में दूध कम उतरा हो, माता ने पहले नमकीन विचित्र (मिश्रित) भोजन किया हो, वस्त्र हरा पुर्ण, गृह का द्वार परिचय की ओर हो, शिराभिमुख प्रसव हुआ हो, बालक ने दीर्घ स्वर में रुदन किया हो। आयु के २, ४, १०, १३, ३८, ४८वें साल कष्ट रहे।

कर्क—गौर वर्ण, कोमल पर पुष्ट शरीर, चंचल नेत्र, वात-श्लेष्म प्रकृति, कद लम्बा व गोल, सुन्दर मुख, माता का मुख उत्तर की ओर, प्रसव से पूर्व माता ने मीठा-शीतल थोड़ा भोजन किया हो, तथा पुराने वस्त्र पहिने हो, माता के दाहिने अंग पर लहसन का निशान हो, प्रसव से पूर्व माता ने श्वेत व गुलाबी वस्त्र व चाँदी के आभूषण पहिने हों। प्रसवोत्पन्न बालक कुछ देर से रोया हो। वह जलीय (liquids) का शौकीन हो। आयु के १, ५, २५, ३१, ४८, ६२वें वर्ष कष्ट।

सिंह—जन्म समय सिंह लग्न हो, तो माता का मुख पूर्व किन्तु गृहद्वार दक्षिण की ओर, उसने रक्त वस्त्र एवं सुवर्ण आभूषण पहने हों, प्रसव पूर्व उसने खट्टा व कसैला भोजन किया हो। जन्म समय ३ या ५ स्त्रियाँ, नया मकान, बालक की पीठ पर चिन्ह हो और वह दीर्घ स्वर में रोया हो। आयु के ३, ५, १२, २८, ३६, ४९वें वर्ष कष्ट रहे।

कन्या—इस लग्न का स्वामी बुध है। जन्म समय बालक के सुन्दर नेत्र, गौर वर्ण, अल्प बाल, गोल चेहरा, सौम्य पाँव, चंचल वृत्ति, कण्ठ व जंघा में चिह्न हो। माता का मुख दक्षिण की ओर, स्त्रियाँ ४ या ५, माता लाल एवं प्राचीन वस्त्र, कसैला सहित भोजन,

(४) पृथ्वी राशि का लग्न हो और उसका राशि स्वामी ग्रह जल राशि में हो तो शरीर साधारणतया स्थूल होता है।

(५) पृथ्वी राशि लग्न हो और लग्नपति ग्रह पृथ्वी राशि में हो, तो शरीर स्थूल और दृढ़ होता है।

(६) यदि लग्न राशि पृथ्वी तत्त्व की हो और उसमें पृथ्वी तत्त्व का ही ग्रह पड़ा हो, तो जातक नाटे (छोटे) कद वाला होता है।

(७) यदि लग्न वायु तत्त्व राशि वाला हो और उसमें वायु तत्त्व के ग्रह हों, तो जातक दुबला, परन्तु तीक्ष्ण बुद्धि वाला होगा।

(८) यदि लग्न अग्नि या वायु तत्त्व की राशि वाला हो और लग्नाधिपति जल राशिगत हो तो शरीर स्थूल होगा।

(९) यदि लग्न में अग्नि या वायु तत्त्व की राशि हो और लग्नेश ग्रह पृथ्वी राशिगत हो, तो हड्डियाँ साधारणतया मजबूत और शरीर पुष्ट होगा।

इसके साथ ही लग्न की राशि हल्क, दीर्घ या सम (मध्यम), जिस प्रकार की हो, उसी के अनुसार जातक के शरीर की ऊँचाई समझनी चाहिए।

इसी भाँति लग्न राशि और लग्नेश ग्रह के अनुसार जातक के रूप-रंग का निर्णय करना चाहिए।

राशियों द्वारा वर्ण ज्ञान

मेघ लग्न में लाल मिश्रित, वृष में पीला मिश्रित खेत, मिथुन में विविध मिश्रित श्वेत, कर्क में नीला मिश्रित सफेद, सिंह में गन्दमी, कन्या में श्याम मिश्रित सफेद, तुला में तालिका युक्त सफेद, वृश्चिक में तालिका युक्त सफेद, धनु में पीत वर्ण युक्त सफेद, मकर में चितकबरा सफेद, कुम्भ में आकाश सदृश नीला, मीन में पीत युक्त गौर वर्ण। इस भाँति लग्न राशि और लग्नेश के स्वरूप के अनुसार जातक के रूप-रंग का निश्चय करना चाहिए। इसके अतिरिक्त लग्न पर ग्रहों की दृष्टियों का भी प्रभाव रहता है।

ग्रहों के अनुसार वर्ण (रूप-रंग) विचार

सूर्य से रक्त-श्याम (गन्दमी) चन्द्र से गौरवर्ण, मंगल से लाल वर्ण, बुध से दूर्बाल के समान श्यामल, गुरु सुवर्ण (बादामी), शुक्र से (नीलिमा युक्त) सफेद, शनि से श्यामवर्ण, राहु से कृष्ण एवं केतु से धूम वर्ण जानना चाहिए। बुध-शुक्र एक साथ हों तो गौरवर्ण न होते हुए भी सुन्दर आकृति होती है। लग्न एवं लग्नेश पर पाप ग्रह की दृष्टि होने से जातक के सौन्दर्य में कमी आती है।

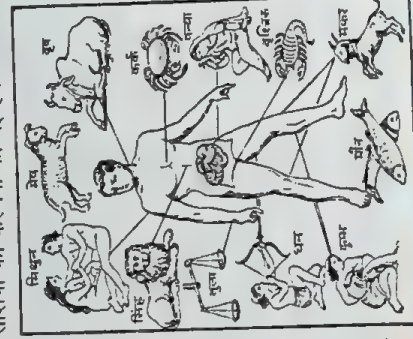
शरीर के अंगों पर व्रण, तिलादि का विचार—जिस अंग का विचार करना हो, उस अंग की राशि जिस प्रकार की हल्क या दीर्घ हो तथा उस राशि में रहने वाला जैसा ग्रह होगा, उस अंग की वैसी ही स्थिति (हल्क या दीर्घ) होगी।

द्वादश भावों में अंग ज्ञान—ज्योतिष शास्त्र में लग्न भाव में स्थित राशि से सिर, दूसरे भाव की राशि को मुख, तीसरे भाव से वक्षस्थल और फेफड़े, चौथे भाव की राशि से हृदय और छाती, पंचम स्थान से कुक्षि और पीठ, छठे भाव से कमर और आंते, सप्तम स्थान से नाभि और गुदागंग के बीच का स्थान, अष्टम स्थान से गुदागंग, नवम भाव से ऊरु और जंघा, दशम स्थान से टेढ़ना, एकादश स्थान की राशि से पिण्डलियाँ, द्वादश स्थान से पाँव का विचार करना चाहिए।

राशि के अनुसार अंगों का विचार—(१) मेघ राशि से मुख, मस्तक। (२) वृष से नेत्र, जिह्वा, कण्ठ, भुजाएँ। (३) मिथुन राशि से हाथ, कन्धे, हृदय। (४) कर्क से पैर, (५) सिंह राशि से कमर, पीठ, मेरूदण्ड। (६) कन्या राशि से नाभि, पैर। (७) तुला राशि से नाभि के नीचे, गुद, मूत्राशय। (८) वृश्चिक से मूत्रेन्द्रिय, जननेन्द्रिय, गुदा आदि। (९) धनु से जंघाएँ, नितम्ब। (१०) मकर राशि से दोनों घुटने। (११) कुम्भ से दोनों पिंडलियाँ। (१२) मीन राशि से दोनों पाँवों का विचार किया जाता है।

काल पुरुष में राशि ज्ञान

काल पुरुष एक कार्यात्मिक विराट् समय को पुरुष माना गया है, जिसमें द्वादश राशियों की कल्पना की गई है।



कालपुरुष के शिर में मेघ राशि मुख में वृष, वक्षस्थल में मिथुन, हृदय में कर्क, उदर में सिंह, कटि में कन्या इत्यादि काल पुरुष

के शरीर की राशि जानें। जिस लग्न में बालक जन्मे वह शिर जानना अन्य सब राशि क्रम से अंग होते हैं।

ग्रहों के अनुसार अंगों पर चिन्ह विचार

जिस भाव एवं राशि पर पाप ग्रह हों, उसमें व्रण (घाव) आदि और जिसमें शुभ ग्रह हों, उस स्थान पर चिन्ह कहना चाहिए। यदि ग्रह अपनी राशि या अपने नवांश में हो, तो, व्रण या चिन्ह जन्म (गर्भ) से ही समझना चाहिए। अन्यथा ग्रह की अपनी दशा के समय व्रण या चिन्ह प्रकट होते हैं।

यदि किसी जातक के जन्म लग्न में मंगल और सप्तम भाव में गुरु या शुक्र हो, तो उसके सिर में व्रण (दाग) होता है।

जन्म लग्न में मंगल-शुक्र और चन्द्रमा हों तो जातक को जन्म से दूसरे या छठे वर्ष सिर में चोट लगने से घाव होता है। जन्म लग्न में शुक्र और आठवें स्थान में राहु हो, तो मस्तक या बाएँ कान में चिन्ह होगा। यदि लग्न में गुरु, सप्तम में राहु और आठवें स्थान में गुरु या हों, तो जातक के बाएँ हाथ में चिन्ह होता है अथवा लग्न में गुरु या शुक्र हो और आठम में पाप ग्रह हों, तो भी बाएँ हाथ पर चिन्ह होगा।

पाँचवें या नवें (८, ९) शनि हो और उस पर शुक्र की दृष्टि हो, तो मूत्रेन्द्रिय या गुदा के समीप तिल होता है। पाँचवें या नवम भाव में शुक्र और बुध हों, अष्टम में गुरु और लग्न या चतुर्थ भाव में शनि हो, तो पैर पर चिन्ह होता है। चतुर्थ स्थान में राहु या शुक्र दोनों में से एक ग्रह स्थित हो और लग्न में शनि या मंगल स्थित हो, तो पाँव के तलवे में चिन्ह होता है। दूसरे भाव में शुक्र, आठवें भाव में सूर्य और तीसरे में मंगल हो तो जातक की कमर के आस-पास चिन्ह होता है। १२वें भाव में गुरु, नौवें भाव में चन्द्रमा और तीसरे या ११वें में बुध हो, तो गुदा स्थान में चिन्ह होता है।

जातक के शरीर में तिल, मस्सा, चिन्ह आदि का विचार लग्न राशि, लग्न स्थित द्रेक्वाण राशि एवं शेषोदय राशि आदि के द्वारा भी किया जाता है।

पितृ-प्ररोक्ष ज्ञान

बालक के जन्म समय पिता घर में था या नहीं ? जन्मकुण्डली में यदि लग्न को चन्द्रमा न देखा हो तो बालक के जन्म समय उसका पिता घर में नहीं था, यदि सूर्य जन्म लग्न से अष्टम, नवम, एकादश तथा द्वादश स्थान में चर राशि का होकर पड़ा हो और चन्द्रमा लग्न को न देखा हो तो पिता बालक के जन्म समय दूसरे देश में था। इन्होंने उपरोक्त स्थानों में सूर्य स्थित राशि का हो तो पिता घर में नहीं था, परन्तु देश ही में है। इसी प्रकार सूर्य के द्विस्वभाव में होने पर मार्ग में कहे, परन्तु इन सब योगों में लग्न को चन्द्रमा न देखा हो तो ऐसा होगा।

माता पिता को अरिष्ट योग

पिता के लिये सूर्य तथा दशम स्थान से और माता के लिये चन्द्रमा तथा चतुर्थ स्थान से विचार करना चाहिये। यदि बालक की जन्मकुण्डली में सूर्य के साथ अथवा दशम स्थान में पाप ग्रह बैठे हों या देखते हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच में पड़ा हो तो बालक के जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिये। यदि सूर्य से ४/६/८ स्थान में पाप ग्रह हों, शुभ कोई भी न हो तो भी पिता को कष्ट ज्ञानें।

इसी प्रकार चन्द्रमा तथा चतुर्थ भाव से माता का विचार करें। चन्द्रमा के साथ २/१२ स्थान में व ४/६/८ स्थान में कूर ग्रह हों, शुभ न हों तो माता को कष्ट ज्ञानें।

बालारिष्ट योग

शास्त्रानुसार जब तक बच्चा १२ वर्ष का न हो जावे, उसकी आयु निश्चित नहीं की जा सकती। बालक की कुण्डली में आयु योग होने पर भी कई बार माता-पिता के किए हुए पाप कर्मों से तथा ग्रहों के प्रभाव से बच्चे की अकाल मृत्यु हो जाती है। प्रथम चार वर्ष की आयु तक माता के पापों के कारण, ८ से १२ वर्ष तक की आयु तक बालक अपने पूर्व जन्म से पापों के कारण अपमृत्यु होती है। जन्म से आठ वर्ष तक बालारिष्ट, आठ से २० वर्ष की आयु तक योगारिष्ट तथा २० वर्ष से ३२ वर्ष की आयु तक अत्यायु कहलाती है। यदि बच्चे की कुण्डली में चतुर्थ या दशम स्थान में शुभ ग्रह स्थित हों तो माता को सुखपूर्वक प्रसव होता है।

❖ यदि लग्न या चन्द्रमा से चौथे या सप्तम स्थान में क्रूर ग्रह हों, तो माता को प्रसव के समय अधिक कष्ट होगा अथवा ४ एवं सप्तम भावों पर शनि मंगल आदि क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो, तो अप्रेशन द्वारा प्रसव होता है।

❖ यदि लग्न से छठे, आठवें तथा १२वें भावों में क्रूर ग्रह हों और इन स्थानों में शुभ ग्रह न हों तथा गुरु या शुक्र पाप ग्रहों के मध्य में हों, तो बच्चे सहित माता व सन्तान दोनों को मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।

❖ यदि लग्न में पाप ग्रह हों और चन्द्रमा पाप ग्रह के साथ स्थित हो तथा लग्न एवं चन्द्रमा पर शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो, तो बालारिष्ट समझना चाहिए।

❖ लग्न एवं अष्टम भाव में पाप ग्रह स्थित हों, तथा वारहवें भाव में क्षीण चन्द्रमा स्थित हो और उसे कोई शुभ ग्रह न देखता हो, तो विशेष बालारिष्ट योग होता है।

❖ चन्द्रमा ४-६-८-१२ भावों में हो तथा उसके दोनों ओर पाप ग्रह हों, तो चन्द्रमा पापाक्रान्त होने से बालक एवं माता दोनों को अरिष्ट होता है।

❖ यदि लग्न का स्वामी ७वें भाव में हो और वह शनि, राहु, मंगल आदि पाप ग्रहों से युक्त हो, तो एक वर्ष तक विशेष अरिष्ट होता है।

❖ उपरोक्त बालारिष्ट के कुछ योग दिए गए हैं और अधिक

अत्यायु के योगों के विस्तारपूर्वक जानने के लिए हमारी प्रकाशित ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) प्रथम भाग पुस्तक का अध्ययन करें। उपरोक्त बालारिष्ट योगों के अतिरिक्त बालक के जन्म समय गण्डान्त नक्षत्र, विष घटी नक्षत्र, अशुभ ग्रह दशा, माता-पिता की कुण्डलियों में अशुभ ग्रह योगों पर भी विचार कर लेना चाहिए।

बालक/बालिका की कुण्डली में अरिष्ट योग या उसको सम-भावना हो, तो उपयुक्त चिकित्सा उपायों के साथ-साथ प्रति वर्ष एवं प्रति मास (परिस्थिति अनुसार) जन्म तिथि, नक्षत्र के दिन (चान्द्र मास के हिसाब) या वर्ष प्रवेश कालीन जप, होम, नवग्रह पूजन, तुलादान, छायादान, मृतसंजीवनी मन्त्र का जप या मृत्युञ्जय मन्त्र का पाठ, दान एवं ब्राह्मण भोजन आदि कारवाना कल्याणकारी रहेगा।

नींव में रखने योग्य पदार्थ

शिलान्यास हेतु आवश्यक सामग्री —

❖ तांबे की गड़वी में चावल भरकर तथा सरसों, हल्दी भरें तथा गड़वी को मौली तथा आम्र पत्तों से बांध लें।

❖ ५ नई ईंट

❖ ५ पंचवली तथा गीता आदि धार्मिक ग्रन्थ

❖ १ जोड़ी सर्प, सर्वोषधि, श्रीफल एक, लाल वस्त्र, जनेऊ-जोड़ा

❖ (विशेष) — भद्रपद, आश्विनी और कार्तिक मास में भवन निर्माण हो तो सर्प का मुख पूर्व में होना चाहिए।

❖ फाल्गुन, चैत्र, वैशाख मासों में निर्माण हो तो सर्प का मुख पश्चिम दिशा की ओर हो।

❖ ज्येष्ठ, आषाढ़ श्रावण मासों में सर्प का मुख उत्तर दिशा की ओर हो।

❖ मार्गशीर्ष, पौष, माघ मासों में सर्प का मुख दक्षिण दिशा में होना चाहिए।

❖ ५ काँड़ीयां, सिंधूर, ५ सुपारी साबुत दरिया या तालाब के किनारे की घास तथा १ पांच कच्चा दूध। (यदि सम्भव हो तो गंगाजल एवं गंगादि तीर्थ से लाई हुई रेत या मिट्टी भी रख दी जाए तो अधिक अच्छा है।

❖ नारियल

जन्मदिन कैसे मनाएं ?

पारचात्य सभ्यता की अन्धानुकरण की दौड़ में आजकल मध्यम एवं उच्च वर्ग के अधिकांश लोग अपना व अपने बच्चों का जन्मदिन गत बीते वर्ष जितनी मोमबत्तियाँ जलाकर, फिर उन्हें फूंक से बुझाकर फूलियाँ बजाते हुए Happy Birthday to you बोलते हुए मनाते हैं। तत्कालीन प्रवृत्ति ज्यों की वुझा देना हमारी भारतीय संस्कृति एवं परम्परा के विरुद्ध है।

जन्म दिन के शुभ अवसर पर प्रातः उठकर सर्वप्रथम अपने अग्रजों (माता-पिता, दादा-दादी, गुरु आदि आप्त जन) को प्रणाम करके उनसे शुभारंभ ग्रहण करना चाहिए (इसके अभाव में सर्वप्रथम सूर्य भगवान् के दर्शन करके गावत्री मन्त्र जप करें।)

तदुपरान्त शौचार्चि कार्यों से निवृत्त होकर सर्वोषधि गंगा जल सहित शुद्ध जल से स्नान कर, स्वच्छ वस्त्र धारण कर पूर्वोर्ध्वमुख होकर शुद्धासन पर बैठकर गणपति, शिव, विष्णु आदि देवों तथा नवग्रहों (स्वस्तिवाचन, एवं शान्ति पाठ आदि मन्त्रों का शुद्ध चित्त होकर स्वयं अथवा किसी सुयोग्य ब्राह्मण के द्वारा पूजन व पाठोदि करवाना चाहिए। विशेषकर वर्ष कुण्डली और अरिष्टकर ग्रहों एवं मुंथा आदि का दान, जपार्चि करवाने से आरोग्य, सुख व समृद्धि बनी रहती है। इस दिन श्री मार्कण्डेय, भारद्वाज, कश्यप, अत्रेय, विश्वामित्र, गौतम, श्री परशुराम, श्री नारद, वशिष्ठादि दीर्घजीवी ऋषियों का स्मरण कर नमस्कार करने से दीर्घायुष्म की प्राप्ति होती है।

पूजनोपरान्त हवन करवाना और ब्राह्मण भोजन करवाना शुभ होता है। जन्मदिन पर तिल प्रयोग भी आयुवर्द्धक होता है। तिल स्नान, तिल होम, तिल निर्मित वस्तु (क्षीरादि) का प्रयोग व दानादि शुभप्रद होता है। पूजा के बाद केशरी वर्ण के वस्त्र में गुगल, नीम की पत्तियाँ, गोरोचन, सफेद सरसों तथा दुर्वा बौधकर दाईं भुजा में किसी ब्राह्मण द्वारा स्वस्तिवाचन मंगल मन्त्रों सहित बंधवा लेने से वर्षभर किसी अनिष्ट का भय नहीं रहता है।

जन्मदिन पर सूर्यदेव को 'ॐ घृणि सूर्याय नमः' आदि मन्त्रों सहित अर्घ्य देना, गावत्री मन्त्र का पाठ तथा इस दिन श्री परमात्म तत्त्व का चिन्तन, स्मरण एवं संकीर्तन करना एवं दानादि शुभ कार्यों में प्रवृत्त रहना शुभ होता है।

जन्मदिन पर क्षौर कर्म (हजामत बनाना), मौस-मदिरा तामसिक वस्तुओं का सेवन, निन्दा, कलह, हिंसा, यात्रा, स्त्री प्रसंग, जुआ आदि कृत्य निषेध हैं। अग्रजों द्वारा मांगलिक मन्त्रों से शुभ आशीर्वाद ग्रहण करना सर्वप्रकार से कल्याणकारी रहता है—

“ॐ असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मांमृत्युं गमय।”
“भद्रम् कर्णेभिः श्रणुयाम् देवाः।
भद्रम् पश्येम अक्षिभिः यजन्त्रा।
सिद्ध्येः अङ्गैः सुष्टवांसः तनूभिः वयशेम वि अशेमहि देवहितम् यदायुः॥”

निधि, नक्षत्रादि सम्पत्ति नक्षत्रों का विभाग

अश्विनी नक्षत्र—मेष राशि एवं केतु के इस नक्षत्र में उत्पन्न हुए बच्चे का जीवन प्रायः संघर्षशील होता है। इस नक्षत्र में प्रथम चरण में जन्म होने से पिता के लिए कष्टकारी, दूसरे चरण में फिजूलखर्ची, तीसरे चरण में भ्रमणशील तथा चतुर्थ नक्षत्र में कृश शरीर (अपने शरीर के लिए) कष्ट रहता है।

आश्लेषा नक्षत्र—कर्क राशि एवं बुध के नक्षत्र के जातक प्रायः चंचल एवं चतुर बुद्धि वाले तथा परिवर्तनशील प्रकृति के होते हैं। प्रथम चरण में जन्म हो तो विशेष दोष नहीं, दूसरे चरण में पैतृक धन की हानि, तीसरे चरण में माता-पिता के लिए गण्डान्त शूल तथा चतुर्थ चरण में पिता के लिए अनिष्टकारी है—

आश्लेषाद्ये न गण्डं स्यात्तं धनगण्डं द्वितीयके। तृतीये मातृगण्डं तु पितृगण्डं चतुर्थके ॥

मघा नक्षत्र—सूर्य राशि और केतु के नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्टवादी, शीघ्र कुटुम्ब होने वाले, उद्यमी और धनवान होते हैं। प्रथम चरण में उत्पन्न हो तो माता-पिता को कष्ट या मातृ पक्ष की हानि, दूसरे चरण में पिता को परेशानी, तीसरे चरण में जन्म हो तो शुभ फलदायक, चतुर्थ चरण में जन्म हो तो विद्या, धनादि के लिए शुभ होता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र—मंगल की राशि (वृश्चिक) एवं बुध के नक्षत्र में उत्पन्न जातक सरल हृदय, तीक्ष्ण बुद्धि, धर्म परायण तथा उन्नति के कार्यों में अनेक बाधाओं से युक्त होते हैं। ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रथम पाद (चरण) में उत्पन्न बच्चा ज्येष्ठ (बड़े) को अरिष्टकर, दूसरे चरण में पैदा हो तो छोटे भाई को नेष्ट, तीसरे चरण में पिता के लिए अरिष्टकर तथा यदि चतुर्थ चरण में उत्पन्न हो जातक स्वयं अपने एवं पिता के लिए अनिष्टकारी होता है।

ज्येष्ठाद्यापादेऽवज्रमाशुं हन्याद् द्वितीयपादे यदि तत्कानिष्ठम्।

तृतीयपादे पितरं निहन्ति चतुर्थे मृतमेति जातः ॥

ज्येष्ठा नक्षत्र और मंगलवार के योग में उत्पन्न कन्या बड़े भाई के लिए अरिष्टकारक होती है। **अभुक्त मूल नक्षत्र**—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम २ घटियाँ तथा मूला नक्षत्र के आरम्भ की २ घटियाँ—कुल चार घटियाँ अभुक्त मूल गण्ड नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें उत्पन्न कन्या, पुत्र, पशु और नौकर कुल के लिए अनिष्टकारी होते हैं। इनमें उत्पन्न बच्चे को बिना शान्ति कराये न देखें।

अभुक्त मूँ गठिका चतुष्टयं ज्येष्ठान्त्यमूलादि भवं हि नारदः।

जातं शिशुं तत्र परित्यजेत् वा मुखं पिताऽस्याष्ट समा न पश्येत् ॥

अभुक्त मूल—नक्षत्रों की आद्यान्त घटियों के बारे में विद्वानाचार्यों में मतान्तर पाया जाता है। यथा—नारद के अनुसार ज्येष्ठा, मूला नक्षत्र की चार घटियाँ, वशिष्ठ के अनुसार २ घटियाँ तथा

बृहस्पति के मतानुसार केवल १-१ अभुक्त-मूल संज्ञक है। अभुक्तमूलोत्पन्न बालक यदि जीवित रहे, तो अपने वंश की वृद्धि करने वाला, धनवान् एवं सम्पत्तिवान् होता है।

मूला नक्षत्र—केतु के नक्षत्र और गुरु की राशि (धनु) में उत्पन्न जातक धार्मिक रुचि वाला, उदार हृदय, मिलनसार, परोपकारी, धन-वाहनादि सुखों से युक्त होता है। चरण भेदानुसार मूला के प्रथम चरण में उत्पन्न जातक पिता की हानि करता है। दूसरे चरण में माता की हानि, तीसरे चरण में धन का नाश तथा चौथा चरण शुभ होता है। नक्षत्र की विधिपूर्वक शान्ति करवा लेने से अनिष्ट का भय नहीं रहता।

मूलाद्यापादे पितरं निहन्त्याद् द्वितीयके मातरमाशु हन्ति।

तृतीयजे वित्तविनाशकः स्यात् चतुर्थपादे समुपैति सौख्यम् ॥

मूला नक्षत्र और रविवार दोनों के योग में उत्पन्न कन्या श्वसुर के लिए अनिष्टकारी होती है—**भौमवासरे योगेन ज्येष्ठाजा ज्येष्ठ सोदरम् ॥ भानुवासरयोगेन मूलजा श्वसुरं हरेत् ॥**

मूला नक्षत्र की सम्पूर्ण घटियों को १५ द्वारा भाग देकर १५ खण्ड बना लें। प्रत्येक खण्ड का फल इस प्रकार से होगा। प्रथम भाग हो तो पिता के लिए अनिष्टकर, दूसरे में चाचा की हानि, तीसरे में बहनोई की हानि, चौथे में पितामह (दादा) की हानि, आठवें में चाची के लिए अनिष्टकर, नवमे में सबके लिए अनिष्टकर, दसवें अंश में पशु का नाश, ग्यारहवें में नौकर का नाश होता है। बारहवें अंश में स्वयं जातक का नाश होता है। तेरहवें अंश में हो तो उसके ज्येष्ठ भाई का नाश, चौदहवें अंश में जातक की बहिन का अनिष्ट होता है। अगर पन्द्रहवें में हो तो नाना का नाश (अनिष्ट) होता है।

उदाहरणार्थ यदि मूल का सर्वर्क्ष योग ६४ घड़ी १८ पल है, तो इसमें १५ द्वारा भाग देने से लब्ध प्रथम भाग में ४ घड़ी, १७ पल हुए। मान लो कि जन्मकालीन भयात् २८ १८५ है। ४ १७ घट्यादि को ९ से गुणा करने पर पता चला कि ३८ १३३ पर नौवां खण्ड (भाग) समाप्त होकर ३८ १८५ पर दसवां भाग पड़ता है। तदनुसार फल चौपाय आदि पशु के लिए अनिष्ट रहेगा।

रेवती नक्षत्र—बुध के नक्षत्र और गुरु की राशि (मीन) में उत्पन्न जातक सर्वप्रिय, विद्यावान्, सुन्दर आकृति, तर्कशील एवं धनवान् होता है। रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो राजा के समान वैभवशाली, दूसरे में मन्त्री के समान सुख साधनों से युक्त, तीसरे में जन्म होने से धनवान् तथा चतुर्थ में जन्म होने से माता-पिता के लिए अरिष्टकारी होता है।

दिवाजातस्तु पितरं रात्रिजे जननी तथा। आत्मानं संख्यायेद्यहन्ति नास्ति गण्डे विपर्ययः ॥
गण्डमूल नक्षत्र शान्ति के लिए हमारे कार्यालय से 'गण्डमूल शान्ति' पुस्तक भंगवा लें।

यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में कोई अशुभ ग्रह अनिष्टकारक हो अथवा किसी विशेष कार्य सिद्धि में कोई अनिष्ट ग्रह बाधा एवं पीड़ा पहुंचा रहा हो, तो उससे सम्बन्धित वाग में विधि अनुसार व्रत, पाठ-पूजा एवं ग्रह मंत्र के जप हवन दानादि करने से अरिष्ट ग्रह की शान्ति होने से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से "व्रत और त्पौहार" एवं सप्तवार कथा मंगवा कर पढ़ सकते हैं। मूल्य ३० रुपए। व्रत, जप, हवनादि अनुष्ठान करने से मानसिक व कायिक पापों का प्रायश्चित्त हो जाता है।

रविवार के व्रत की विधि—सर्व मनोकामना की पूर्ति विशेषकर शत्रु विजय, पुत्र प्राप्ति, नेत्र रोग, कुष्ठ (कोढ़) आदि चर्म रोगों के निवारण हेतु तथा आयु एवं सौभाग्य वृद्धि के लिए रविवार का व्रत किया जाता है। इस व्रत को सूर्यपत्नी (विशेषकर रविवासरी), रथ सप्तमी अथवा शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) रविवार से प्रारम्भ करके प्रत्येक रविवार कम से कम बारह (१२) अथवा एक वर्ष पर्यन्त व्रत रखें। व्रत के दिन प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर सूर्य के बीज मंत्र "ॐ ह्रीं हौं सः सूर्याय नमः" मंत्र का कम से कम तीन माला करके सूर्य भगवान् का ध्यान करें। आदित्याय विद्महे भास्कराय धीमहि तन्नो भानुः प्रचोदयात्। अथवा गायत्री मंत्र की दो माला जाप करें। तदनन्तर ताम्र बर्तन में शुद्ध जल (गंगा जल सहित), गंगाक्षत, लाल पुष्प या लाल चन्दन एवं कुशा डालकर सूर्य देव को इस मंत्र द्वारा अर्घ्य देकर प्रदक्षिणा करें—“एहि सूर्य सहस्रांशो तेजो राशे जगतपते। अनुकम्पय मां यद्वाणाय अर्घ्यं दिवाकर” स्वयं भी लाल चन्दन या केशरादि से तिलक लगाए। उस दिन नमक-तेलादि ताम्रसिक भोजन से परहेज रखें। उद्यापन-कालीन अंतिम रविवार को सूर्य के बीज मंत्र तथा सूर्य गायत्री मंत्र द्वारा हवनादि के पश्चात् ब्राह्मण दम्पति को मिष्ठान सहित भोजन करवा कर यथाशक्ति गेहूँ, गुड़, ताम्र बर्तन, नारियल, लाल वस्त्र, मिष्ठानादि का दक्षिणा सहित दान करें। सूर्य शान्ति हेतु मानक (माणिक्य) रत्न सुवर्ण की अंगूठी में धारण करना तथा लाल वस्त्र दान करना शुभ रहता है।

सोमवार के व्रत की विधि—यह व्रत श्रावण, चैत्र, वैशाख, कार्तिक या मागशीर्ष के महीनों के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। इस व्रत को पांच वर्ष अथवा सोलह सोमवार पर्यन्त श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक धारण करें। चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि, आर्द्रा नक्षत्र, सोमवार को अथवा श्रावण मास के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ करने का विशेष माहात्म्य है। व्रतारम्भ करने वाले स्त्री-पुरुष को चाहिए कि प्रातःकाल जल में कुछ काले तिल डालकर स्नान करें। स्नानानन्तर "ॐ नमः शिवाय" आदि शिव मंत्रों द्वारा तथा श्वेत फूलों, सफेद चन्दन, चावल, पंचामृत, अक्षत, सुपारी, फल, गंगा, जल, विल्व पत्रादि से शिव-पार्वती का पूजन करें और पूजनोपरान्त ब्राह्मण को दान-दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें। भोजन एक समय नमक रहित होना चाहिए। व्रत का उद्यापन भी उपर्युक्त महीनों में करना श्रेयकर होता है। उद्यापन में दशमांश जप का हवन करके सफेद वस्तुओं जैसे—चावल, श्वेत वस्त्र, वरपत्ती, दूध-दही, क्षीर, चांदी, सफेद फूलों का दान करना चाहिए। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति होकर मनोरथ सिद्धि होती है। उद्यापन के दिन ब्राह्मणों तथा बच्चों को खीर, पूड़ी, मिष्ठान भोजन करवा कर यथाशक्ति दान करें। चन्द्रमा की शान्ति हेतु चांदी की अंगूठी में चन्द्रकान्तमणि एवं मोती धारण करना, श्वेत वस्त्र दान करना, दूध, दही, बरपत्ती, चावल, बतासे आदि का दान करना कल्याणकारी होता है। व्रत के दिन इसके नीचे मंत्र "ॐ श्रां श्रीं श्रां सः चन्द्रमसे नमः" को कम से कम तीन माला का जाप करना चाहिए।

चन्द्रमा की शान्ति हेतु चांदी की अंगूठी में चन्द्रकान्तमणि एवं मोती धारण करना, श्वेत वस्त्र दान करना, दूध, दही, बरपत्ती, चावल, बतासे आदि का दान करना कल्याणकारी होता है। व्रत के दिन इसके नीचे मंत्र "ॐ श्रां श्रीं श्रां सः चन्द्रमसे नमः" को कम से कम तीन माला का जाप करना चाहिए।

मंगलवार के व्रत की विधि—सर्व प्रकार के सुखों, रक्त विकार, शत्रु दमन, स्वास्थ्य रक्षा, पुत्र प्राप्ति, स्वास्थ्य लाभ, हृदयमोचनान्दि के लिए मंगलवार का व्रत उत्तम है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ सप्ताह तक अथवा यथाशक्ति जीवन-पर्यन्त रखें। इस व्रत में गेहूँ और गुड़ सहित भोजन करें। भोजन नमक रहित एक समय ही करना चाहिए। इस व्रत से मंगल ग्रह के अरिष्ट दोष भी शांत हो जाते हैं। व्रत में श्री हनुमान जी की लाल पुष्पों, फूलों, ताम्र बर्तन तथा नारियल द्वारा पूजा एवं दान करना चाहिए साथ ही श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। भौम ग्रह की शान्ति के लिए "ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः" बीज मंत्र की कम से कम तीन माला जाप करनी चाहिए। मंगल की शुभता के लिए ताम्बे में मूंगा धारण करना शुभ होता है। मंगल देवता का ध्यान निम्नलिखित मंत्र द्वारा करना चाहिए—

रक्तल मात्यम्भरधरः शक्ति शूल गदाधारः। चतुर्भुजः रक्तोमा वरदः स्याद धरासुतः ॥
इसके अतिरिक्त श्री हनुमान चालीसा तथा श्री हनुमान उपासना करना भी कल्याणप्रद रहता है।
बुधवार के व्रत की विधि—इस व्रत का प्रारम्भ शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) बुधवार से करें। २१ व्रत रखें। बुधवार के व्रत से बुध ग्रह की शान्ति तथा धन, बुद्धि, विद्या और व्यापार में वृद्धि होती है। यह व्रत विशाखा नक्षत्रकालीन बुधवार को प्रारम्भ करके सात अथवा हर बुधवार तक करें। व्रत के दिन स्नानोपरान्त हरे वस्त्र पहिनकर श्री विष्णु सहस्रनाम का पाठ तथा ग्रह शान्ति के लिए हरा वस्त्र धारण करके, बीजमंत्र "ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः" का पाठ कम से कम तीन माला जाप करनी चाहिए। इस दिन एक समय नमक रहित जैसे—मूंगी से बना हुआ हलवा, मीठी पंजीरी व मूंग के लड्डुओं का दान करें और स्वयं भी सेवन करें। व्रत के अन्तिम बुधवार को मधुसर्प, दधि तथा घृत के साथ बीज मंत्र का हवन करें। तदुपरान्त सुपात्रव्यक्ति को मूंगी सहित भोजन, हरे फल, हरा-पीला वस्त्र दान करें। गौओं को हरा चारा भी डाल दें।

बुध ग्रह की शान्ति के लिए हरा वस्त्र धारण करना, छोटी इलाइची, तुलसी तथा कांसे के बर्तन में भोजन करना तथा पन्ना रत्न धारण करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है।

बृहस्पतिवार के व्रत की विधि—यह व्रत गुरु ग्रह की शान्ति तथा विद्या-बुद्धि, धन-धान्य, पुत्र-पौत्र विवाह आदि सुखों की प्राप्ति के लिए किया जाता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (ज्येष्ठ) वीरवार से प्रारम्भ करके तीन वर्ष अथवा १६ वीरवार तक करना चाहिए। व्रत प्रारम्भ के दिन प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर पीले वस्त्र धारण करके पीले पुष्पों, चने की दाल, पीला यज्ञोपवीत, पीला चन्दन, बेसन की बरपत्ती, हल्दी व पीले चावल एवं केला आदि पीले फलों सहित भगवान् विष्णु तथा बृहस्पति (गुरु) की पूजा करनी चाहिए तथा गुरु के बीज मन्त्र की कम से कम तीन या पांच अथवा १६ माला करनी चाहिए। व्रती को वृहस्पति वाग को शिर नहीं धोना चाहिए तथा एक समय ही नमक रहित भोजन करना चाहिए। व्रती को उस दिन भोग लगा कर किसी ब्राह्मण व बालक को चने की दाल, बेसन की बरपत्ती, बेसन का हलुवा, घी, लड्डु, पीले चावल, केतों आदि पीतल का बर्तन तथा पीले वस्त्र का दान दक्षिण सहित करके स्वयं भी ऐसा ही भोजन करना चाहिए। इस दिन केले के वृक्ष की पूजा का भी विधान लिखा है। मन-वचन और कर्म द्वारा शुद्ध चित्त होकर गुरु गायत्री मंत्र अथवा गुरु के बीज मंत्र "ॐ ग्रां ग्रीं श्रीं सः गुरवे नमः" का यथाशक्ति पाठ करें। उद्यापन में पाठ के दशमांश भाग का समधि,

॥ १५ ॥

मधु-सर्पों, घृत, दीर्घ व हरिद्रा सहित सामग्री द्वारा हवन करना कल्याणकारी रहता है। बृहस्पति की शुभता के लिए सोने की अंगूठी में पुष्कराज पहिना भी शुभ रहता है।

शुक्रवार व्रत कथा की विधि—यह व्रत धन, विवाह, संतानादि भौतिक सुखों में वृद्धिकारक होता है। यह व्रत शुक्ल-पक्ष के प्रथम (जेठ) शुक्रवार से शुरू किया जाता है। श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार को प्रारम्भ करने से विशेष रूप से लक्ष्मी की कृपा रहती है। व्रत के दिन स्नानोपनयन सफेद वस्त्र धारण करके श्री लक्ष्मी देवी की धूप, दीप, स्वेत, चंदन, चावल, रवेत पुष्प, चीनी, सुपारी से पूजा करके बच्चों में स्वेत मिलाई और फलादि बाँट दें। ग्रह शान्ति के लिए

“३० द्रों द्रों सः शुक्राय नमः” को ३ माला या दस माला का जाप करें। स्वयं भी एक समय क्षीरादि श्वेत वस्तुओं का सेवन करें। नमक का प्रयोग न करें। यही पदार्थ यथा-शक्ति संभव हो तो एकाक्षरी (एक अर्थ वाला) भिक्षुक की या श्वेत गाय को दे। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो या उद्यापन : परान्त हवनदि के पश्चात्, ब्राह्मणों एवं बालकों (चटुकों) को क्षीर चावलादि से युक्त भोजन कराने तथा श्वेत वस्त्र, खाण्ड, चावल, चाँदी फलादि सेफेट पदार्थों का दान करें। यह व्रत शुक्र शान्ति का सरल उपचार है। यह व्रत २१ या ३१ अथवा यथा शक्ति मात्रा में करें—मनोवाञ्छित फल की प्राप्ति होगी, ऐसा शिवपराण में लिखा है।

ऐसी शिवपुराण में लिखा है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

द्वादश राशि के प्रत्येक मनुष्य को घाती चक्र में दिए अनुसार प्रत्येक तिथि, वार नक्षत्र, लन, चंद्रमास घातक होते हैं। अतः मनुष्य को चाहिए कि वे अपना कोई भी इष्ट और शुभ कार्य घातक समय वा मुहूर्त पर आरंभ न करें। नीचे दिया हुआ घात चक्र युद्ध, विवाद (शास्त्रार्थ) राज सेवा, वाहन, यात्रा, रोगादि कार्यों में देखना चाहिए। अर्थात् इन राशि वालों के लिए इन कार्यों में घात चन्द्र, वारादि शुभ नहीं और तीर्थ यात्रा, विवाहादि में घात चन्द्रादि का विचार न करें। विशेष फलादेश जानने के लिये पत्र व्यवहार करें।

| राशयः | मेघ | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|------------------|-----------|---------|--------|---------|---------|----------|---------|---------|---------|---------|----------|----------|
| घातमास | कार्तिक | मार्ग | आषाढ़ | पौष | ज्येष्ठ | भाद्रपद | माघ | आश्विन | श्रावण | वैशाख | चैत्र | फाल्गुन |
| घात तिथि | १-६-११ | ५-१०-१५ | २७-१२ | २७-१२ | ३-८-१२ | ५, १०-१५ | ४९-१४ | १-६-११ | ३-८-१२ | ४-९-१४ | ३-८-१२ | १-०-१५ |
| घात वार | रवि | शनि | चन्द्र | बुध | शनि | शनि | गुरु | शुक्र | शुक्र | मंगल | गुरु | शुक्र |
| घात नक्षत्र | मघा | हस्त | स्वाति | अनुराधा | मूला | श्रवण | शत. | रेवती | भरणी | रोहिणी | आर्द्रा | आश्लेषा |
| घात योग | विष्कुम्भ | सुकर्मा | परिघ | धृति | प्रीति | सुकर्मा | अतिगंड | ब्रह्म | वैधृति | गंड | व्याघात | वज्र |
| घात करण | ख | शकुनि | कौलव | नाग | बालव | कौलव | तैत्तिल | गर | तैत्तिल | शकुनि | किंस्तुभ | चतुष्पाद |
| घात लान | १ | २ | ४ | ७ | १० | १२ | ६ | ८ | ९ | ११ | ३ | ५ |
| घात प्रहर | प्रथम | चतुर्थ | तृतीय | प्रथम | प्रथम | प्रथम | चतुर्थ | प्रथम | प्रथम | चतुर्थ | तृतीय | चतुर्थ |
| घा. घा. चंद्र | मेघ | कन्या | कुम्भ | सिंह | मकर | मिथुन | धनु | वृष | मीन | सिंह | धनु | कुम्भ |
| स्त्री घा. चंद्र | मेघ | धनु | मिथुन | सिंह | वृश्चिक | वृश्चिक | मीन | धनु | कन्या | वृश्चिक | मिथुन | नेष |

यह व्रत शुक्ल पक्ष के शनिवार विशेषकर श्रावण मास शनिवार के दिन लौह निर्मित शनि की प्रतिमा का पंचामृत से स्नान करा कर धूप-गंध, नीले पुष्प (विशेषकर काला गुलाब) फल, तिल, लौंग, सरसों का तेल, चावल, गंगजल, दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अधिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डाल दें। ११ शनिवार करने के उपरान्त उद्यापन के समय पिलेश्वर महादेव से शनिदेव की पूजा करें। ७ बार धारो को लपेटने के चारों ओर अंकन के लपेट कर धूप दीप नैवेद्य से शनिदेव की पूजा करें। ७ बार धारो को लपेटने के साथ ही साथ शनिदेव की जय बोलते रहे और गांधि, कौशिक, पिल्लाद तीनों महामुनियों का स्मरण अवश्य करना चाहिए। इस दिन शनि स्तोत्र का पाठ, जूते, जुराब, नीले रंग का वस्त्र काला छाता, काले माश, काले चने, चाकू, नारियल और तेल से निर्मित वस्तुओं का दान किसी वृद्ध ब्राह्मण को देवें और स्वयं भी उड़दादि तथा तेल निर्मित पदार्थों का सेवन करें और एक समय नमक रहित भोजन करना चाहिए। घोड़े को माल (लोह का) छल्ला पहनना चाहिए। हनुमान जी को भी तेल चढ़ाना चाहिए और संकटमोचन का पाठ करना चाहिए। शनिदेव की शान्ति के लिए महामृत्युञ्जय का जाप भी कल्याणकारी रहेगा।

रहेगा ।

राहु की शान्ति के लिए भी शनि का व्रत उपरोक्त विधि अनुसार कर और दान में नाश्वर, काबल, जौ आदि दे और पशियों को बाजार डालना चाहिए। सतनाजा दान करना चाहिए। राहु के

केतु ग्रह की शान्ति हेतु-केतु के बीज मंत्र "ॐ स्वा ह्रीं स्रौं सः केतवे नमः" की पांच माला का वाजमंत्र ३७ या ३९ प्रा सः १५६ नमः ॥ का ॥

ग्रहों का भौतिक मैत्री चक्र

| | | | | | | | | | |
|---------|-----------------------|------------------------------|------------------------|---------------------|------------------------|----------------|------------------------|------------------------|-----------------------|
| गह | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
| मित्र | चंद्र मंगल गुरु | सूर्य बुध | सूर्य चंद्र गुरु | सूर्य शुक्र | सूर्य चंद्र मंगल | बुध शनि | बुध शुक्र | शुक्र बुध शनि | वुध गुरु |
| सम | बुध | मंगल गुरु शुक्र शनि | शुक्र शनि | मंगल गुरु शनि | शनि | गुरु | गुरु | राहु शुक्र | मंगल |
| शत्रु | शुक्र शनि | ०० ०० | बुध राहु | चंद्र | बुध शुक्र | सूर्य चंद्र | सूर्य मंगल चंद्र | सूर्य चंद्र मंगल | सूर्य चंद्र शनि |
| उच्चांश | मेघ १० | वृषे ३ | म. २८ | कं. १५ | कर्क ५ | मी. २७ | तु. २० | वृ. १५ | |
| नीचांश | तु. १० | वृश्चि ३ | क. २८ | मी १५ | म. ५ | कं. २७ | मे. २० | बृ. १५ | |

नक्षत्र, राशि, वर्ण, योनि आदि ज्ञान चक्र

वर्ण ज्ञान चक्र

| वर्ण | ब्राह्मण | क्षत्रिय | वैश्य | शूद्र |
|------|----------|----------|--------|--------|
| राशि | १२/४/८ | १/५/९ | २/६/१० | ३/७/११ |

ग्रह मैत्री चक्र:

| ग्रहा: | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|----------|----------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|
| मित्राणि | चं मं गु | सू बु | सू चं | सू शु | सू चं | बु श | शु बु |
| समा: | बुध: | मं गु | शु श | मं गु | श | मं गु | गु |
| शत्रवः | शु श | ०० | बुध | चं | बु शु | सू चं | सू चं |
| उच्चांश | मे १० | वृष ३ | म २८ | क १५ | क १५ | मी २७ | तु २० |
| नीचांश | तु १० | बृ ३ | क २८ | मी १५ | म ५ | क २७ | मे २० |

मित्र नवपंचम चक्र

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |

शत्रु नवपंचम चक्र

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |

मित्रषडाष्टक चक्र

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |

शत्रुषडाष्टक चक्र

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |

मित्रद्विदश चक्र

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |

शत्रुद्विदश चक्र

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |

नव पंचम—कन्या से वर अथवा वर से कन्या की राशि पांचवीं, नौवीं हो, तो दम्पति को संतान हानि की संभावना होती है। परन्तु मीन-कर्क, कर्क-वृश्चिक, कुम्भ-मिथुन, कन्या-मकर विशेषतः त्याज्य माने जाते हैं। राशि मैत्री होने की स्थिति में नव-पंचम दोष अचिन्तनीय है।

षडाष्टक दोष—लड़के और लड़की की राशियाँ परस्पर छूटे-आठवें हों तो षडाष्टक यथा-सम्भव त्याज्य है। शत्रु षडाष्टक दोष विशेषतः त्याज्य माना जाता है।

विस्तृत विवेचन के लिए देखें आगामी पृष्ठ।

नामाक्षरों से वर्ग देखने का चक्र (अपने से चतुर्थ वर्ग को मित्र क्षेत्री समझना चाहिए)

| अ ई उ ए | क ख ग घ ङ | च छ ज झ ञ | ट ठ ड ढ ण | त थ द ध न | प फ ब भ म | य र ल व | श स ह |
|---------|-----------|-----------|-----------|-----------|-----------|---------|-------|
| गरुड़ | बिडाल | सिंह | श्वान | सर्प | मूषक | हरिण | मेढ़ा |

| नक्षत्र | चरणाक्षर | राशि | वश्य | योनि | महावैर योनि | राशि स्वामी | गण | नाड़ी | तत्त्व | नाम (संज्ञा) | नक्षत्र देवता | कितने तारे | पंचशला का वेध |
|---------------|--------------------|--------------|-------------|---------|-------------|-------------|--------|--------|-------------|--------------|---------------|------------|---------------|
| अश्विनी | चू. चे. चो. ला. | मेष | चतुष्पद | अश्व | महिष | मंगल | देव | आदि | अग्नि | क्षिप्र | अश्वि कु. | ३ | पू. फा. |
| भरणी | ली. लू. ले. लो. | मेष | चतुष्पद | गज | सिंह | मंगल | मनुष्य | मध्य | अग्नि | उग्र | यम | ३ | अनु |
| कृत्तिका | अ. इ. उ. ए. | मे. १ वृष ३ | चतुष्पद | मेढ़ा | वानर | मंगल | राक्षस | अन्त्य | अग्नि | मिश्र | अग्नि | ६ | विशा |
| रोहिणी | ओ. वा. वी. वू. | वृष | चतुष्पद | सर्प | न्याला | शुक्र | मनुष्य | अन्त्य | पृथ्वी | ध्रुव | ब्रह्मा | ५ | अभि |
| मृगशिरा | वे. वो. का. की. | वृ. २ मि. २ | च. २ नर २ | सर्प | न्याला | शुक्र | देव | मध्य | पृ. २ वा. २ | मृदु | चन्द्रमा | ५ | उषा |
| आर्द्रा | कु. क. को. हा. ही. | मिथुन | न. (मनुष्य) | श्वान | मृग | शुक्र | मनुष्य | आदि | वा. ३ ज. १ | तीक्ष्ण | शिव | १ | पूषा |
| पुनर्वसु | कू. के. हो. डा. | मि. ३ क. १ | जलचर | मार्जार | मूषक | वृ. ३ चं. १ | देव | आदि | जल | चर | अदिति | ४ | मूला |
| पुष्य | डू. डे. डो. | कर्क | जलचर | मेढ़ा | वानर | चंद्र | देव | मध्य | जल | क्षिप्र | गुरु | ३ | ज्ये. |
| आश्लेषा | डी. डू. डे. डो. | कर्क | जलचर | मार्जा. | मूषक | चंद्र | राक्षस | अन्त्य | जल | तीक्ष्ण | सर्प | ५ | धनि. |
| मघा | मा. मी. मू. मे. | सिंह | चतुष्पद | मूषक | बिडाल | सूर्य | राक्षस | अन्त्य | अग्नि | उग्र | पितर | ५ | श्रव |
| पू. फा. | मो. टा. टी. टू. | सिंह | चतुष्पद | गौ | बिडाल | सूर्य | मनुष्य | मध्य | अग्नि | उग्र | भग. सूर्य | २ | अश्वि |
| उ. फा. | टू. टो. पा. पौ. | सिं. १ कं. ३ | च. १ न. ३ | महिष | व्याघ्र | सू. १ बु. ३ | मनुष्य | आदि | अ. १ पृ. ३ | ध्रुव | अर्यमा | २ | रेव |
| हस्त | पू. ष. ण. ठ. | कन्या | नर | व्याघ्र | अश्व | बुध | देव | मध्य | पृथ्वी | क्षिप्र | सूर्य | ५ | उषा |
| चित्रा | पे. पो. रा. री. | कं. २ तु. २ | नर | व्याघ्र | गौ | बु. २ शु. २ | राक्षस | मध्य | पृ. २ वा. २ | मृदु | विश्व | १ | पूषा |
| स्वाती | रू. रे. रो. ता. | तुला | नर | महिष | अश्व | शुक्र | देव | अन्त्य | वा. ३ ज. १ | चर | वायु | १ | शत |
| विशाखा | ती. तू. ते. तो. | तु. ३ वृ. १ | न. ३ को. १ | व्याघ्र | गौ | शु. ३ मं. १ | राक्षस | अन्त्य | जल | मिश्र | इंद्राग्नि | ४ | कृति |
| अनुराधा | ना. नी. नू. ने. | वृश्चिक | कीट | मृग | श्वान | मंगल | देव | मध्य | जल | मृदु | मिश्र | ४ | भर |
| ज्येष्ठा | नो. या. यो. यू. | वृश्चिक | कीट | मृग | श्वान | मंगल | राक्षस | आदि | जल | तीक्ष्ण | इन्द्र | ३ | पुष्य |
| मूला | ये. यो. भा. भी. | धनु | नर | श्वान | मृग | गुरु | राक्षस | आदि | अग्नि | तीक्ष्ण | राक्षस | ११ | पुन |
| पूर्वाषाढा | भू. ध. फ. ढ. | धनु | न॥ चतु ३ | वानर | मेढ़ा | गुरु | मनुष्य | मध्य | अग्नि | उग्र | जल | २ | आर्द्रा |
| उत्तराषाढा | भे. भो. जो. ख. | ध. १ मं. ३ | चतुष्पद | नकुल | सर्प | गुरु | मनुष्य | अन्त्य | अ. १ पृ. ३ | ध्रुव | विश्वे | २ | मृग |
| अभिजित | जु. जे. जो. ख. | मकर | — | नकुल | सर्प | गुरु | — | अन्त्य | पृथ्वी | क्षिप्र | विष्णु | २ | रोह |
| श्रवणा | खी. खू. खे. खो. | म. २ कुं. २ | चतु. १ ज. २ | वानर | मेढ़ा | शनि | देव | अन्त्य | पृथ्वी | क्षिप्र | विष्णु | ३ | कृति |
| धनिष्ठा | गा. गी. गे. | कुम्भ | नर | सिंह | गज | शनि | राक्षस | मध्य | वा. ३ ज. १ | उग्र | वरुण | ४ | विशा |
| शतभिषा | गो. सा. सी. सू. | कुं. ३ मी. १ | ज. २ न. २ | अश्व | महिष | शनि | मनुष्य | आदि | जल | ध्रुव | रुद्र | २ | स्वा |
| पूर्वाभाद्रपद | से. सो. दा. दी. | मीन | जलचर | सिंह | गज | श. ३ गुरु | मनुष्य | मध्य | जल | उग्र | आहिबु | २ | हस्त |
| उ. भाद्रपद | दू. ध. झ. ज. | मीन | जलचर | गौ | व्याघ्र | गुरु | देव | अन्त्य | जल | मृदु | पूषा | ३२ | उफा |
| रेवती | दे. दो. चा. ची. | मीन | जलचर | गौ | सिंह | गुरु | देव | अन्त्य | जल | मृदु | पूषा | ३२ | उफा |

मैलापक में मंगलीक योग एवं परिहार

विवाह योग्य लड़के-लड़की की जन्म कुण्डली में वर्ण, वश्य, तारा, ग्रहमैत्री, नाड़ी आदि अष्टकूट सम्बन्धी गुण मिलान के पश्चात् कुण्डली में मंगल एवं मंगलीक दोष पर विशेष रूप से विचार किया जाता है। मंगलीक दोष का आधार सामान्यतः निम्न श्लोक माना जाता है।

लगने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तुविनाशाय भर्ता कन्या विनाशकः।

—मु. संग्रहदर्पण

अर्थात् जिस कन्या की कुण्डली में १, ४, ७, ८ या १२वें स्थान में मंगल हो, तो वह कन्या वर (पति) के लिए हानिकारक तथा इसी भाँति जिस लड़के की कुण्डली में इन्हीं स्थानों में मंगल हो वह कन्या की हानिकारक होता है। इसी भाँति लगन, चन्द्र और कभी-कभी शुक्र की राशि से भी मंगल की उपयुक्त स्थितियों का विचार किया जाता है।

अपवाद—(१) मंगल दोष वाली कन्या का विवाह मंगलीक दोष वाले वर के साथ करने से मंगल का अनिष्ट दोष नहीं होता तथा वर-वधू के मध्य दाम्पत्य सुख बढ़ता है—

कुज दोष वती देया कुजदोषवते किल। नास्ति दोषो न चानिष्टं दाम्पत्योः सुखवर्धनम्॥

मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक के परिहार स्वरूप मुहूर्त ग्रन्थों में अनेकत्र परिहार वाक्य मिलते हैं।

यथा—

(२) यदि लड़की की कुण्डली में जिस स्थान पर मंगल स्थित (मंगलीक कारक) हो, और लड़के की कुण्डली में उसी स्थान पर शनि, मंगल, सूर्य, राहु आदि कोई पाप ग्रह स्थित हों, तो भौमदोष भंग हो जाता है। इसी प्रकार लड़के की कुण्डली में भौम दोष होने पर कन्या की कुण्डली में उसी भाव में कोई पाप ग्रह होने से भी भौमदोष नहीं रहता—

शनि भौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।

तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोष विनाश कृत्॥—फलित संग्रह

भौमेन सदृशो भौमः पापो व तादृशो भवेत्। विवाहः शुभदः प्रोक्तश्चिदरायुः पुत्रपौत्रदः॥

अर्थात् एक की कुण्डली में मंगल दोष हो, तो दूसरे की कुण्डली में भी उन्हीं स्थानों में शनि आदि पाप ग्रह होने से मंगलीक दोष भंग होकर विवाह में शुभ होता है।

यामित्रे च सदा सौरि लगने वा हिषुके तथा। अष्टमे द्वादशो चैव भौमदोषो न विद्यते॥

यह श्लोक भी लगभग इसी आशय का है।

(३) मेष राशि का मंगल लगन में, बृश्चिक राशि का चौथे भाव में, मकर का सातवें, कर्क राशि का आठवें, एवं धनु राशि का मंगल १२वें हो, तो मंगल दोष नहीं होता।

यथोक्तम्—

अजे लगने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे।

छूने मृगे कर्किकाष्टौ भौमदोषो न विद्यते॥

प्रकारान्तर से, मीन का मंगल ७वें भाव तथा कुम्भ राशि का मंगल अष्टम में हो, तो भौम दोष नहीं होता।

“छूने मीने घटे चाष्टौ भौम दोषो न विद्यते”

—मु. पारिजात

—मु. चिंतामणि

(४) यदि द्वितीय भाव में चन्द्र-शुक्र का योग हो, या मंगल गुरु द्वारा दृष्ट हो, केन्द्र भावस्थ राहु हो, अथवा केन्द्र में राहु-मंगल का योग हो, तो मंगल दोष नहीं रहता—

न मंगली चन्द्र भूगु द्वितीये, न मंगली पश्यति यस्य जीवा।

न मंगली केन्द्रगते च राहुः, न मंगली मंगल-राहु योगे॥

न मंगली केन्द्रगत अथवा शत्रुक्षेत्री मंगल उपरोक्त

(५) बलावित गुरु वा शुक्र लगन में हो, तो वक्रा, नीचस्थ, अस्तगत अथवा शत्रुक्षेत्री मंगल उपरोक्त

दृष्ट स्थानों में होने पर भी भौम दोष नहीं होता—

सबले गुरौ भूगौ वा लगने छूनेऽथवाभीमे।

यक्के नीचारि गृहस्थे वाऽस्तेऽपि न कुज दोषः॥

(६) इसी भाँति केन्द्र व त्रिकोण में यदि शुभ ग्रह हों, तथा ३, ६, ११वें भावों में पाप-ग्रह हों तथा सप्तमेश ग्रह सप्तम में ही हो, तो मंगल दोष नहीं होता—

“केन्द्र कोणो शुभादये च विषडायैऽप्यसदृशः।

तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा॥”

अपरं च—

(७) यद्यपि १, २, ४, ७, ८, ११ और १२वें भावों में स्थित मंगल वर-वधू के वैवाहिक जीवन में विघटन उत्पन्न करता है, परन्तु यदि मंगल अपने घर (१, ८) का हो, उच्चस्थ (मकर) का किंवा मित्र क्षेत्री मंगल दोष कारक नहीं होता—

तनु धन सुख मदनायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।

विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगैवा॥

(८) यदि वर-कन्या की कुण्डलियों में परस्पर राशिमैत्री हो, गणैक्य हो, २७ गुण या अधिक मिलान होता हो, तो भी भौम दोष अविवारणीय है।

राशिमैत्रं यदा याति गणैक्यं वा यदा भवेत्। अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते॥

—मुहूर्त दीपक

विवेचन—उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मुहूर्त संग्रह दर्पण में दिए गए मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक (“लगने व्यये पाताले—”) के परिहारस्वरूप कुछ अर्वाचीन ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं, जिनमें परस्पर विरोध वाक्यता भी मिलती है।

उल्लेखनीय है कि प्राचीन सैद्धान्तिक एवं प्रतिष्ठित मुहूर्त ग्रंथों जैसे—विवाह वृन्दावन, मुहूर्त मार्तण्ड, सारावली, मु. चिन्तामणि (प्राचीन संस्करण), ज्योतिः निबन्ध आदि) में मंगलीक सम्बन्धी उपर्युक्त श्लोक एवं तत्सम्बन्ध विभिन्न परिहार वाक्यों का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता।

वर-कन्या की कुण्डली में मंगलीक दोष एवं उसके परिहार का निर्णय अत्यन्त सावधानीपूर्वक करना चाहिए। केवल १, ४, ७, ८ आदि भावों में मंगल को देखकर दाम्पत्य जीवन के सुख-दुःख का निर्णय वर देना उपयुक्त नहीं। मंगलीक वाले स्थानों (भावों) में मंगल के अतिरिक्त कोई अन्य कूर ग्रह भी १, २, ७ एवं १२वें स्थानों में हो, तो वह भी परिवारिक एवं वैवाहिक जीवन के लिए अनिष्टकारी होता है। यथा—

लगने कूरा व्यये कूरा धने कूराः कुजस्तथा।

सप्तमे भवने कूराः परिवार क्षयकराः॥

—मु. संग्रह दर्पण

(श्रेष्ठ पृष्ठ 157 पर देखें)

विवाह गृहस्थाश्रम की आधारशिला है और उसी के मध्यम से मनुष्य, देव-ऋषि एवं पितरादि ऋण त्रय से उद्धार होकर परम कल्याण को प्राप्त होता है। तद हेतु उत्तम लक्षणों जैसे—सुन्दर, सुशीला, मधुरभाषिणी एवं पतिव्रता कन्या तथा कर्तव्यनिष्ठ, स्वस्थ, शिक्षित, सदाचारी एवं सुसंस्कृत लड़के के साथ विवाह सम्बन्ध शुभ होता है। विवाह सम्बन्ध करने से पूर्व लड़के-लड़की का कुल-गोत्र, सनाथता, विद्या, धन, स्वस्थ (शरीर) और आयु—इन सात गुणों की परीक्षा करने के पश्चात् ही कुण्डलियों में परस्पर मंगलीक आदि अरिष्ट योगों तथा वर्ग, स्त्रीदूर, कर्तारि एवं वर्णादि अष्टकूटों का विचार करना चाहिए।

मैलापक प्रक्रिया में मंगलीक और अष्टकूट तत्त्वों का विशेष महत्त्व है, क्योंकि वर-कन्या के दाम्पत्य जीवन को अधिकाधिक सुखी एवं पंगलमय बनाने के लिए उनके जन्म नक्षत्रों एवं जन्म कुण्डलियों के अनुसार मिलान करना अत्यन्त आवश्यक है। उपयुक्त मिलान न होने की स्थिति में पति-पत्नी के वैवाहिक जीवन में—विचार वैमनस्य, सन्तान काट, वैधव्य, वैधूर्यादि दोष अथवा पारिवारिक कष्ट होने की सम्भावनाएं हो जाती हैं। मंगलीक दोष का विशेष विवरण इसी पंचांग के अन्य पृष्ठों में दिया गया है। यहाँ पर नक्षत्र मिलान के मुख्य तत्त्व अष्टकूट का विवेचन किया जा रहा है। ध्यान रहे, अष्ट (आठ) कुंडों का निर्णय वर-कन्या के जन्म नक्षत्रों से ही किया जाता है। अष्टकूटों के आठ कूट (अंग) निम्नलिखित हैं :—

(१) वर्ण (२) वक्ष्य (३) तारा (४) गोनि (५) ग्रहमैत्री (६) गणमैत्री (७) भकूट तथा

(८) नाडी —ये आठ कूट हैं।

प्रत्येक कूट की क्रम संख्या अपने श्रेष्ठ गुणों की सूचक हैं। वर्णादि अष्टकूटों में गुणों का योग ३६ होता है। इसमें क्रमानुसार वर्ण का १ गुण, वक्ष्य के २, तारा के ३, गोनि के ४, ग्रहमैत्री के ५, गण-मैत्री के ६, भकूट के ७ एवं नाडी के ८ (आठ) गुण जानने चाहिए।

वर्णादि कुल ३६ गुणों के योग में से १ से १७ तक गुण मिलान तुच्छ एवं निन्दनीय (त्याज्य) माने जाते हैं, १८ से २१ तक मध्यम एवं ग्राह्य और २२ से २८ तक उत्तम तथा २९ से ३६ तक गुण सर्वोत्कृष्ट मिलान माना जाता है।

एकैकवृद्धितो ज्ञेया वर्णादीनां गुणाः क्रमात्।

विवाहः शुभदस्तोषं गुणे त्यप्तादशाधिके ॥

वर्णादि अष्टकूट

(१) वर्ण विचार—४, ५, १२ राशियों का ब्राह्मण, १, ५, ९ का क्षत्रिय, २, ६, १० वैश्य तथा ३, ७, ११ राशियों का शूद्रवर्ण होता है। वर का वर्ण कन्या के वर्ण से उच्च स्तरीय अथवा समान वर्ण होने पर एक गुण प्राप्त होता है। अन्यथा शून्य गुण होगा।

परिहार—यदि वर की राशि का वर्ण कन्या के राशि-वर्ण से होन हो, परन्तु राशिपति उत्तम वर्ण हो, तो वर्ण मिलान शुभ हो जाता है।

(२) वक्ष्य विचार—सिंह राशि के अतिरिक्त सभी राशियाँ नर (मनुष्य) राशि के वक्ष्य हैं। जल राशियाँ (४।१० व. १२) नर राशियाँ (३।६।७।९ वृ. ११) का भक्ष्य हैं। वृश्चिक को छोड़कर शेष राशियाँ सिंह राशि के वक्ष्य हैं। समान वक्ष्य होने पर २ गुण, एक वक्ष्य और दूसरा शत्रु होने पर एक गुण, एक वक्ष्य और एक

भक्ष्य होने पर आधा गुण तथा एक शत्रु और एक भक्ष्य होना शून्य अर्थात् गुणाभाव होगा।

(३) तारा विचार—कन्या के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तक तथा वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर दोनों संख्याओं को अलग-अलग ९ द्वारा भाग देने पर यदि शेष ३, ५, ७ वने तो अशुभ तारा होती है।

दोनों (वर-कन्या) ताराओं में अशुभ तारा हो तो शून्य गुण, एक में तारा शुभ और दूसरे में अशुभ हो तो डेढ़ गुण तथा दोनों में तारा शुभ हो तो ३ गुण होते हैं।

(४) योनि विचार—अश्विनी आदि नक्षत्रों के अनुसार जातक की योनि ज्ञात की जाती है। वर और कन्या की योनियों का आपसी वैर त्याज्य है। जैसे—गौ और व्याघ्र में, सिंह और गज, त्योंता और सर्प में, अश्व और महिष में, श्वान और हरिण में, वानर और मेघ में, मूषक और मार्जार में, परस्पर महावैर है।

[नोट—योनि व महावैर योनि की तालिका चक्र गत पृष्ठों में दिया गया है।]

गुण—वर-कन्या की एक ही योनि होना शुभ है। योनियों में परस्पर अतिमित्र हो तो ४ गुण, मित्र हो तो ३, सहज प्रकृति समान हो तो २, सामान्य वैर हो तो १ गुण तथा योनियों में अतिशत्रुता हो तो शून्य-अर्थात् गुणाभाव होगा।

(५) ग्रह मैत्री—ग्रह मैत्री कूट के सन्दर्भ में वर-कन्या के राशि स्वामियों का एक्य अथवा मैत्री भाववि अभिप्रेत्य है। (राशि स्वामी का विवरण गत पृष्ठों में नक्षत्र, राशि, वर्णादि तालिका चक्र में दिया गया है।)

गुण विचार—वर-कन्या की राशियों में परस्पर अधि-मित्रता या राश्यैक होने पर ५ गुण, एक सम और दूसरा मित्र हो, तो ४ गुण, एक-दूसरे के सम हो, तो ३ गुण, एक मित्र दूसरा शत्रु हो, तो १ गुण, एक सम दूसरा शत्रु हो, तो आधा गुण, दोनों की राशियाँ परस्पर शत्रु हों, तो शून्य अर्थात् गुणाभाव होता है। अष्टकूटों में राशि स्वामी की मैत्री को विशेष महत्त्व दिया गया है। मिलान में वर्ण, योनि, गण और पडाष्टक दोष होने पर भी यदि परस्पर राशि मैत्री पाई जाती हो तो अन्य किंचिद् दोषों का निवारण हो जाता है। यथा—

गणदोषो योनि दोषो वर्णदोषः पडाष्टकम्।

चत्वारि नैव दुष्यन्ति राशिमैत्री यदा भवेत्॥

अपवाद—वर-कन्या के राशिपतियों में परस्पर वैर होने पर भी राशि नवांशपति परस्पर मित्र हों, तो विवाह शुभ माना जाता है। यथा—

राशिनाथे विरुद्धेऽपि सबल नवांशकाशिषो।

तन्मैत्रेऽपि च कर्तव्य, दम्पज्योः शुभमिच्छता॥

(६) गण विचार—अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, स्वा, अनु, श्रव, रेवती नक्षत्रों का देवता गण, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भर० और आर्द्रा इन नक्षत्रों का मनुष्यगण, कृति, अश्ले, मघा, चित्रा, विशा, ज्ये, मूला, धनि, और शत का राक्षसगण।

वर-कन्या का एक ही गण होने पर विवाह उत्तम, देव-मनुष्य हो तो शुभ, किसी एक का राक्षसगण और दूसरा मनुष्यगण हो अथवा किसी एक का देवगण और दूसरा राक्षस गण हो तो अशुभ एवं त्याज्य होता है।

गुण विभाजन—वर-कन्या का एक ही गुण हो, तो ६ गुण, वर का देवागण एवं कन्या का मनुष्यगण हो तो भी ६ गुण, पर कन्या देवागण एवं वर का मनुष्य हो तो ५ गुण, एक का देवागण तथा दूसरा राक्षसगण अथवा एक का मनुष्यगण दूसरे का राक्षसगण हो, तो शून्य गुण होता है इत्यादि।

मनुष्यादि गणों का गुण बोधक चक्र

| गुण | देव | मनुष्य | राक्षस |
|--------|-----|--------|--------|
| देव | ६ | ५ | १ |
| मनुष्य | ६ | ६ | ० |
| राक्षस | ० | ० | ६ |

गुण दोष परिहार—

(क) राशिपतियों में परस्पर मित्रता या राशिनिर्वाणपति में भिन्नता हो, तो गणदोष नहीं रहता।

ग्रहभैत्री च राशिश्च विद्यते नियतं यदि। न गणभाव जनिंत दूषणस्याद विरोधदम्॥

(ख) ग्रहभैत्री तथा वर-कन्या के नक्षत्रों की नाड़ियों में भिन्नता हो, तो गणदोष होने पर भी दोष नहीं होता।

(ग) इसी भाँति तारा, वर, योनि ग्रहभैत्री तथा भूकूट की शुद्धि होने पर कोई दोषपति नहीं होती।

—पीयूषधारा

—मुहूर्त मानपण्ड

(७) भूकूट विचार—इस राशिभूकूट भी कहते हैं। वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर छेदे एवं आठवें हो, तो षडाष्टक दोष होता है। यदि वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर पाँचवीं-नौवीं हो, तो नव

पंचम दोष, यदि दोनों की राशियाँ परस्पर दूसरी और बारहवीं हो, तो द्विद्वादश दोष कहलाता है।

षडाष्टक दोष (विशेषकर शत्रु-षडाष्टक) होने की स्थिति में वर-कन्या, इनके माता-पिता अथवा उनके

किसी निकटस्थ बन्धु को मृत्यु-तुल्य कष्ट होने की सम्भावना होती है। नवपंचम दोष की स्थिति में

विवाहित दम्पति को संतान सम्बन्धी दुःख होने का भय होता है तथा द्विद्वादश दोष (शत्रुकूट) होने पर

वर कन्या को धन हानि एवं आर्थिक परेशानियों का सामना रहता है।

षडाष्टक परिहार—(i) मेष-वृश्चिक, वृष-तुला, मिथुन-मकर, कर्क-धनु, सिंह-मीन तथा कन्या-

कुम्भ आदि मित्र राशियों का षडाष्टक शुभ होता है, जबकि वैर-षडाष्टक ही विशेषतया त्याज्य होता है।

यथा—१-६, २-९, ३-८, ४-११, ५-१०, ७-१२ राशियों का शत्रुत षडाष्टक होने से त्याज्य माना जाता है।

(ii) परन्तु परिहारस्वरूप तारा-शुद्धि, राशीश-भैत्री, राशिश्चयैक्य, अथवा राशि स्वामी ग्रह

समान होने पर षडाष्टक दोष भी ग्राह्य होता है। यथा—

न वर्गवर्णों न गणोः न योनिर्द्विद्वादशो चैव षडाष्टके वा।

तारा विरुद्धे नव पंचमे वा भैत्री यदा स्यात्शुभदो विवाहः॥

—वृ. ज्योतिस्सार

नव पंचम परिहार—

(i) वर की राशि से कन्या की राशि पाँचवीं हो और कन्या की राशि से वर की राशि ९वीं हो, तो यह

नव-पंचम शुभ होता है—

वरस्य पंचमे कन्या, कन्यायां नवमेवरः। एतत् त्रिकोणकं ग्राह्यां पुत्रपौत्र सुखावहम्॥

—वृहज्योतिषः सारः

(ii) मीन-कर्क, वृश्चिक-कर्क, मिथुन-कुम्भ और कन्या-मकर—ये चार नवपंचम विशेषतया त्याज्य

माने जाते हैं।

मीनालियां युते कीटे कुम्भे मिथुन संगते। मकरे कन्यायुक्ते न कुर्यान्नवजयमे॥ —शार्ङ्गधर

(iii) वर-कन्या दोनों के चन्द्र राशि अधिपति अथवा राशि नवांशपति परस्पर मित्रक्षेत्रों हों, तो

नवपंचम अविचारणीय है।

द्वि-द्वादश दोष का परिहार—

(i) लड़के की राशि से कन्या की राशि दूसरी हो तो कन्या धन हानिकारक और १२वीं हो तो वह

धनवती और पति प्रिया होती है।

(ii) १-२, ३-४, ५-६, ७-८, ९-१० एवं ११-१२ राशियों का द्वि-द्वादश शत्रु-द्विद्वादश-एवं च

अनिष्टकर मानते हैं।

(iii) मतान्तर में सिंह और कन्या द्वि-द्वादश ग्राह्य है।

इसके अतिरिक्त कुछ पतिस्थितियों में वर-कन्या की परस्पर राशि-स्थिति विशेष शुभकारी होती है।

जैसे—वर-कन्या, दोनों की एक ही राशि १०वें का होना, दोनों की राशियों का परस्पर ३-११वें (त्रिकोणदश)

होना, दोनों की राशियों का आपस में ४-१०वें होना एवं च दोनों की राशियों का परस्पर सप्तम (सप्तमसप्तक)

होना वर-कन्या के वैवाहिक जीवन के लिए शुभफल प्रद होता है। परन्तु अपवाद रूप में, कर्क-मकर का

तथा सिंह-कुम्भ राशियों का समसप्तमक योग वर-कन्या के विवाह में शुभ नहीं माना गया—

मकरे कर्कटे चैव कुम्भे सिंहे तथैव च।

परस्परं सप्तमे च वेधव्यं तु विनिर्दिशेत्॥

परस्परं सप्तमे च वेधव्यं तु विनिर्दिशेत्॥

एक ही नाड़ी होना विवाह में अशुभ माना गया है।

अश्वन्यादि २७ जन्म नक्षत्रों को तीन नाड़ियों (पंक्तियों) में विभाजित किया गया है—आदि, मध्य

और अन्त्य। इनका विवरण निम्न चक्र में दिया गया है।

| आदि नाड़ी | अश्वि | आर्द्रा | पुन | उफा | हस्त | ज्ये | मूले | शत | पूषा |
|--------------|-------|---------|-------|------|--------|------|------|------|------|
| मध्य नाड़ी | भर | मृग | पुष्य | पूजा | चित्रा | अनु | पूषा | धनि | उभा |
| अन्त्य नाड़ी | कृति | रोह | श्ले | मघा | स्वा | विशा | उषा | श्रव | रेव |

वर-कन्या का जन्म नक्षत्र एक ही नाड़ी में पड़ना विवाह में अशुभ माना जाता है। दोनों की आदि

(प्रथम) नाड़ी हो, तो विवाह के पश्चात् उनका परस्पर वियोग आदि, मध्य नाड़ी हो, तो दोनों की हानि

तथा अन्त्य नाड़ी हो तो वैधव्य या अतिशय दुःख होता है।

—वृहज्योतिषसार

नाड़ी चक्र

नाड़ी गुण विभाग— भिन्न नाड़ी में आठ गुण तथा समान नाड़ी (नाड्यैक्य) होने की स्थिति में शून्य गुण—अर्थात् गुणभाव होता है।

नाड़ी दोषापवाद एवं परिहार—

(i) नाड़ी दोष ब्राह्मणों के लिए, वर्णदोष क्षत्रियों के लिए, गण दोष वैश्यों के लिए तथा योनि दोष शूद्रों के लिए विशेष रूप से विचारणीय होता है—

नाड़ी दोषस्तु विप्राणां वर्णदोषश्च क्षत्रिये। गणदोषश्च वैश्येषु योनि दोषस्तु पादजान्॥

अध्यान रहे, ब्राह्मणतेर वर्ण जातियों के लिए नाड़ी दोष नितान्तः उपेक्षणीय नहीं होता ॥

(ii) यदि वर-कन्या दोनों की एक राशि हो, एवं च नक्षत्र चरण भिन्न (पाद भेद) हो, तो ऐसी स्थिति में नाड़ी एक हो और राशि अलग-अलग हो, अर्थात् शुभ होता है।
एवं गण दोष नहीं होता—अर्थात् शुभ होता है।

राश्यैक्ये चेद भिन्नमृल द्वयोः स्थानक्षत्रैक्ये राशिगुण्यं तथैव।

नाड़ी दोषों नो गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्॥

यद्यपि वर-कन्या का एक ही नक्षत्र अथवा एक ही राशि का होने से नाड़ी दोष का परिहार माना गया है, परन्तु यदि दोनों के नक्षत्र चरणों में समानता हो अथवा नक्षत्रों में पाद वैध हो, तो विवाह सर्वदा त्याज्य एवं वर्जित होगा। यथा—

एक नक्षत्र जातानां नाड़ी दोषो न विद्यते। अन्यक्षानाडीवेधेषु विवाहो वर्जितः सदा॥

—ज्योतिष तत्त्व प्रकाश

—ज्योतिष तत्त्व प्रकाश

(iii) 'ज्योतिष चिन्तामणि' अनुसार राहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, ज्येष्ठा, कृतिका, पुष्य, श्रवण, रेवती वेध होना भी पाद-वैध कहलाता है।

एवं उत्तराभाद्रपद—इन नक्षत्रों में उत्पन्न वर-कन्या को नाड़ी दोष नहीं लगता।

रोहिण्यार्द्रा मृगेश्चान्नामणि' अनुसार राहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, ज्येष्ठा, कृतिका, पुष्य, श्रवण, रेवती वेध होना भी पाद-वैध कहलाता है।

रोहिण्यार्द्रा मृगेश्चान्नामणि' अनुसार राहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, ज्येष्ठा, कृतिका, पुष्य, श्रवण, रेवती वेध होना भी पाद-वैध कहलाता है।

अहिर्बुध्न्यक्षमेतेषां नाड़ी दोषो न विद्यते॥

—ज्योतिष चिन्तामणि

उपयुक्त उपायों से परिहार—

हमारे मतानुसार गण, योनि, पडाष्टक, द्विदादश, नाड़ी आदि अष्टकृतों में परिहार वाक्य उपलब्ध हो जाने पर भी अपनी शक्ति एवं सामर्थ्यानुसार यथोचित संख्या में जप, पाठ, दानादि करना लेना चाहिए।

'वृहस्पति संहिता' के अनुसार नाड़ी दोष की शांति के लिए श्री मृत्युञ्जय मन्त्र का जाप (यथोचित संख्या में) करके ब्राह्मणों को गो, वरक, अनाज, वृतादि सहित भोजन एवं सुवर्ण, चांदी, रत्नों की दक्षिण आदि से समुद्र करने से नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है—

अन्यत्र भी लिखा है—श्री महाभूम्युञ्जय के जप-पाठ के उपरान्त—

षडाष्टके गोमिथुनं प्रदेयं, कास्यं सरूयं नवपंचमेव च।

नाड्यां सुवर्णान्मन्थो सुधेनुं द्विदादशे ब्राह्मणतर्पणं च॥

अर्थात् द्रुष्ट पडाष्टक दोष होने पर गोमिथुन (एक गाय, एक बैल), नवपंचम में चांदी-कांसे का बर्तन, नाड़ी दोष से गाय, अनाज, सुवर्ण वरक का दान तथा द्विदादश में ब्राह्मणों एवं सुपात्र जनों को यथाशक्ति भोजन, दान-दक्षिणादि द्वारा समुद्र करने से नितान्त मध्यन्त्री अष्टकृत दोषों की शांति हो जाती है।

मंगल अथवा मंगलीक दोष का निर्णय कुण्डली विशेष में सभी ग्रहों के पारस्परिक अनुशीलन के पश्चात् ही करना चाहिए। सभी लान कुण्डलियों में मंगलीक दोष का प्रभाव एक जैसा नहीं होता। इसमें कोई संदेह नहीं कि कुछ लग्न कुण्डलियों में मंगल अथवा मंगलीक दोष का अशुभ एवं अनिष्ट प्रभाव वर-कन्या के वैवाहिक जीवन पर पड़ता है, परन्तु यदि किसी कुण्डली में मंगल अन्य ग्रहों के सहचर्य से योगकारक हो, उच्चस्थ या स्वरशिगत हो अथवा गुरु आदि शुभ ग्रह की दृष्टि से प्रभावित हो, तो मंगल अशुभ की अपेक्षा शुभ प्रभाव कारक होगा। जैसे—मकर, मेष, वृश्चिक, सिंह, धनु और मीन राशि के मंगल को शुभ माना जाता है तथा कर्क एवं सिंह लग्नों में मंगल केन्द्र त्रिकोणपति होने से मंगल अशुभ न होकर योगकारक माना जाएगा—

“सर्वे त्रिकोणनेतारो ग्रहा शुभफलप्रदाः।

इसी भान्ति स्वेच्छस्थितः शुभफलं प्रकरोति पूर्णम्।

नीचक्षेत्रास्तु विपलं गिपु मन्दैरेज्यम्॥”

भाव सर्वे शुभपतियुता वीक्षितः वा शुभैर्गैः—

तत्तद्भावाः सकल फलदाः पापद्वययोगहीनाः॥”

अतएव वर-कन्या की कुण्डलियों का मिलान करते समय उनके सुखी एवं सम्पन्न दाम्पत्य जीवन के लिए केवल मंगल या मंगलीक पर ही अत्यधिक बल न देते हुए मंगलापक सम्बन्धी अन्य तत्त्वों का भी सर्वाङ्ग रूप से विवेचन करना चाहिए। जिसमें कुछ मुख्य तत्त्व निम्नलिखित हैं—

(१) चलित भाव कुण्डली—जो ग्रह भाव मध्य होते हैं, वह भाव सम्बन्धी पूर्ण फल प्रकट करते हैं, जो ग्रह भाव सन्धि में होते हैं, वह शून्य फल दिखाते हैं। तदनुसार वर-कन्या की कुण्डलियों का मिलान करते समय दोनों की कुण्डलियों के ग्रह स्पष्ट, भाव स्पष्ट एवं चलित भाव कुण्डली वनी होनी चाहिए, तभी मंगल अथवा मंगलीक दोष की वास्तविक स्थिति का पता चल पाएगा। यदि दोनों की कुण्डलियों में मंगल सन्धिगत होगा, तो मंगलीक दोष भंग माना जाएगा।

(२) सप्तम भाव में सप्तमेश या शुभ एवं योगकारक ग्रहों की स्थिति अथवा मंगल या सप्तम भाव पर गुरु, शुक्र की दृष्टि अथवा सप्तमेश ग्रह की स्वगृही दृष्टि होने से मंगलीक दोष क्षीण होगा।

(३) सप्तमेश ग्रह उच्चस्थ या स्व-मित्रादि राशिगत होकर केन्द्र त्रिकोणादि भावों में स्थित हो तो विवाह में मंगल का दोष निष्प्रभावी होगा।

(४) इसके विपरीत सप्तमेश त्रिक में हो, पापग्रह युक्त व पाप द्रुष्ट, नीच राशिगत अथवा अस्तंगत हो तो विवाह का पूर्ण सुख नहीं होता—

दुःस्थे कामपती तु पाप ग्रहगे पापेक्षिते—तद्युते। तज्जाया भवनस्य मध्यमफलं सर्वं शुभं चान्यथा॥

(५) इसके अतिरिक्त लग्नेश, कुटुम्बेश (द्वितीयेश), पंचमेश, अष्टमेश, सप्तमेश एवं चन्द्र, शुक्र, गुरु, मंगलादि ग्रहों के बलावल का विचार करना भी नितान्त आवश्यक है।

(६) अष्टकृत नक्षत्र राशि मिलान पर यदि वर-कन्या में परस्पर राशिमेंत्री उपलब्ध हो गुणाधिक्य (२७ या अधिक) गुण मिलते हैं तो भी मंगलीक दोष अविवारणीय होगा।

इस प्रकार वर-कन्या की कुण्डली में मंगल के अतिरिक्त कुण्डलियों में अन्य सभी ग्रहों के शुभाशुभात्त का सम्यक् विचार करते हुए विद्वान् ज्योतिषी को ग्राह्यकः सम्बन्धी अपना अन्तिम निर्णय देना चाहिए।

शुद्ध वार-कन्या मीलापक सारिणी (भाग-१)

| वर/नक्षत्र | मेष | | | वृष | | | मिथुन | | | कर्क | | | सिंह | | | कन्या | | |
|------------------|-----------------|------------------|-----------------|----------------|-------------------|------------------|------------|-------------------|----------------|---------------|------------------|----------------|---------------|------------------|---------------|--------------|----------------|---------------|
| कन्या नक्षत्र | अश्वि 1 से 4 | भर 1 से 4 | कृति 1 | कृति 2,3,4 | रोह 1 से 4 | मृग 1,2 | मृग 3,4 | आर्द्रा 1 से 4 | पुन 1,2,3 | पुन 4 | पुष्य 1 से 4 | श्ले 1 से 4 | मघा 1 से 4 | पूर्वा 1 से 4 | उफा 1 | उफा 2,3,4 | हस्त 1 से 4 | चित्रा 1,2 |
| मेष | अश्वि 1 से 4 | भर 1 से 4 | कृति 1 | कृति 2,3,4 | रोह 1 से 4 | मृग 1,2 | मृग 3,4 | आर्द्रा 1 से 4 | पुन 1,2,3 | पुन 4 | पुष्य 1 से 4 | श्ले 1 से 4 | मघा 1 से 4 | पूर्वा 1 से 4 | उफा 1 | उफा 2,3,4 | हस्त 1 से 4 | चित्रा 1,2 |
| वृष | कृति 2,3,4 | रोह 1 से 4 | मृग 1,2 | मृग 3,4 | आर्द्रा 1 से 4 | पुन 1,2,3 | पुन 4 | पुष्य 1 से 4 | श्ले 1 से 4 | मघा 1 से 4 | पूर्वा 1 से 4 | उफा 1 | उफा 2,3,4 | हस्त 1 से 4 | चित्रा 1,2 | | | |
| मिथुन | पुन 1,2,3 | पुन 4 | पुष्य 1 से 4 | श्ले 1 से 4 | मघा 1 से 4 | पूर्वा 1 से 4 | उफा 1 | उफा 2,3,4 | हस्त 1 से 4 | चित्रा 1,2 | | | | | | | | |
| कर्क | मघा 1 से 4 | पूर्वा 1 से 4 | उफा 1 | उफा 2,3,4 | हस्त 1 से 4 | चित्रा 1,2 | | | | | | | | | | | | |
| सिंह | उफा 1 | उफा 2,3,4 | हस्त 1 से 4 | चित्रा 1,2 | | | | | | | | | | | | | | |
| कन्या | चित्रा 1,2 | हस्त 1 से 4 | उफा 1 | उफा 2,3,4 | हस्त 1 से 4 | चित्रा 1,2 | | | | | | | | | | | | |
| मेष | अश्वि 1 से 4 | भर 1 से 4 | कृति 1 | कृति 2,3,4 | रोह 1 से 4 | मृग 1,2 | मृग 3,4 | आर्द्रा 1 से 4 | पुन 1,2,3 | पुन 4 | पुष्य 1 से 4 | श्ले 1 से 4 | मघा 1 से 4 | पूर्वा 1 से 4 | उफा 1 | उफा 2,3,4 | हस्त 1 से 4 | चित्रा 1,2 |
| वृष | कृति 2,3,4 | रोह 1 से 4 | मृग 1,2 | मृग 3,4 | आर्द्रा 1 से 4 | पुन 1,2,3 | पुन 4 | पुष्य 1 से 4 | श्ले 1 से 4 | मघा 1 से 4 | पूर्वा 1 से 4 | उफा 1 | उफा 2,3,4 | हस्त 1 से 4 | चित्रा 1,2 | | | |
| मिथुन | पुन 1,2,3 | पुन 4 | पुष्य 1 से 4 | श्ले 1 से 4 | मघा 1 से 4 | पूर्वा 1 से 4 | उफा 1 | उफा 2,3,4 | हस्त 1 से 4 | चित्रा 1,2 | | | | | | | | |
| कर्क | मघा 1 से 4 | पूर्वा 1 से 4 | उफा 1 | उफा 2,3,4 | हस्त 1 से 4 | चित्रा 1,2 | | | | | | | | | | | | |
| सिंह | उफा 1 | उफा 2,3,4 | हस्त 1 से 4 | चित्रा 1,2 | | | | | | | | | | | | | | |
| कन्या | चित्रा 1,2 | हस्त 1 से 4 | उफा 1 | उफा 2,3,4 | हस्त 1 से 4 | चित्रा 1,2 | | | | | | | | | | | | |

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1, 2, 3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वदश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाडी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वार-कन्या मीलापक सारिणी — (भाग-२)

| वर/नक्षत्र | | मेष | | | वृष | | | मिथुन | | | कर्क | | | सिंह | | | कन्या | | | |
|------------|---------|---------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|-------------|
| कन्या | नक्षत्र | अश्वि | भर | कृति | कृति | रोह | मृग | मृग | आर्द्रा | पुन | पुन | पुष्य | श्ले | मघा | पूर्वा | उफा | उफा | हस्त | चित्रा | |
| | | 1 से 4 | 1 से 4 | 1 | 2,3,4 | 1 से 4 | 1,2 | 3,4 | 1 से 4 | 1,2,3 | 4 | 1 से 4 | 1 से 4 | 1 से 4 | 1 से 4 | 1 | 2,3,4 | 1 से 4 | 1,2 | |
| तुला | चित्रा | २२॥ 3,4 | १४ 3,4,6 | २८॥ 3,4 | २४ 3,7 | २०॥ 4,6,7 | १२ 6,7,8 | १३ 6,8,9 | २९ 4,6,9 | १९॥ 3,6,9 | २०॥ 3,5,6 | ११ 3568 | २६॥ 3,5,७ | २५॥ 3,5,७ | ११॥ 3568 | १७॥ 456७ | १७॥ 2346 | २० 2,4,6 | २९ 2,8 | |
| | स्वा. | २७॥ 1 से 4 | २९॥ 3,4 | १७॥ 3 | १३ 3,6,8 | १५॥ 3678 | २६ 3,7,8 | २७ 4,7 | २६॥ 4,9 | २८ 9 | २९ 5,७ | २७ 3,5 | १४ 3568 | १३ 3568 | २५॥ 3,5,७ | २५॥ 3,5,७ | २६ 2,3 | २७॥ 2,3 | २९ 2,4,6 | |
| | विशा | २२॥ 1,2,3 | २३ 3,4,6 | २०॥ 3,4,6 | १५॥ 3,4,8 | १०॥ 3478 | १८॥ 3678 | २० 3,6,7 | २० 3,6,9 | २१ 4,6,9 | २२ 4,6,9 | २१॥ 56,७ | १८॥ 4,5,6 | १७॥ 3,5,8 | १९॥ 358,७ | १७॥ 358७ | २३46 2346 | २३46 2346 | २९ 2346 | २७॥ 2,3 |
| वृश्चिक | विशा | १७ 4 | १७ 1467 | १४॥ 1478 | १९॥ 1,4,8 | १४॥ 1368 | २२॥ 1,3,6 | २२॥ 1567 | १३ 1567 | १३॥ 1567 | १९॥ 4,6,9 | १८॥ 4,6,9 | १५॥ 3,8,9 | २२ 1,3,8 | २३॥ 136७ | २१॥ 146७ | १७॥ 1456 | १८ 1456 | २७ 135७ | |
| | अनु. | २५ 1 से 4 | १५॥ 1,3,7 | २० 1367 | २४॥ 1,3,6 | २७॥ 1,3,4 | २०॥ 1,3,8 | १० 13578 | १५ 13457 | २०॥ 1,5,7 | २६॥ 9 | १८॥ 8,9 | २१ 6,9 | २५ 1,3,6 | २१ 138७ | २१॥ 1,3,७ | २५ 135७ | २६ 135७ | ११॥ 1358 | |
| | ज्ये. | १२ 1 से 4 | १८॥ 1678 | २५ 1367 | २९॥ 1,3,7 | २२॥ 1,3 | २२॥ 1,3,6 | २२॥ 1,3,6 | १३ 13567 | ३ 134578 | ५॥ 135678 | १०॥ 3689 | २० 6,9 | २६ 9 | ३१ 1,4,७ | २४ 136७ | १७ 1368 | १३ 13568 | १३ 1568७ | २४॥ 1345 |
| धनु | मूला | १२ 1 से 4 | २१ 4689 | २५ 6,9 | १९॥ 3,9 | १३ 1,5,7 | १३॥ 1567 | २१ 1567 | १५ 1356 | १२ 1568 | ७॥ 14568 | १७॥ 4678 | २४ 3,6,7 | २५ 4,7 | २० 9,७ | ९॥ 6,9७ | १३ 689७ | १३ 1568 | २६ 1568 | २६ 1,4,5 |
| | पूषा | २६ 1 से 4 | १८॥ 9 | १८॥ 8,9 | १२॥ 4,6,9 | १८॥ 14567 | ११ 1457 | १८॥ 14578 | २७ 1458 | २७ 1,3,5 | २३॥ 1,3,5 | १३ 37,७ | १७॥ 3478 | १९ 3,6,7 | १७॥ 6,9,७ | २५ 8,9७ | २८॥ 9,७ | २७ 1,5 | १३॥ 1,3,5 | १३568 |
| | उषा | २५ 1 | २६ 3,9 | १२ 4,9 | ६ 4689 | १० 15678 | १७ 14578 | २५ 1457 | २७ 1,4,5 | २७॥ 1,3,5 | २३॥ 1,3,5 | २३॥ 37,७ | ८॥ 3,7,७ | ८॥ 678७ | २४ 4689 | २५ 4,9७ | २८॥ 9,७ | २८॥ 1,5 | २९ 1,5 | १५,6 |
| मकर | उषा | २७ 2,3,4 | २८॥ 3,4,5 | १४॥ 4,5 | १२ 4568 | १६ 4689 | २३ 4,8,9 | २१ 3,4,9 | २२ 1347 | २२॥ 1,3,7 | २८ 3,5 | २८ 3,5 | १४ 3568 | ४॥ 45678 | २० 4,5,7 | २१ 4,5,7 | २४ 9,७ | २४॥ 9,७ | १९॥ 4,6,9 | |
| | श्रव | २७ 1234 | २६॥ 3,4,5 | १४ 3,4,5 | १२ 4568 | १६ 4689 | २६ 4,8,9 | २३ 4,9 | २१ 147७ | २२ 1,3,7 | २८ 1,4,7 | २६ 4,5 | १५ 4568 | ६॥ 5678 | १८॥ 4,5,7 | २० 4,57 | २४ 4,9७ | २४॥ 4,9७ | १९॥ 4,6,9 | |
| | धनि | २० 1,2 | ११॥ 3456 | २६ 34568 | २४ 3,4,5 | २०॥ 3,4,9 | १२ 4,6,9 | ९ 4689 | १६ 1678 | १६ 1467 | २२ 1467 | १३ 4,5,6 | २८ 4568 | ४॥ 4,5 | १९॥ 4,5,7 | ५॥ 5678 | १२॥ 4567 | १६ 469७ | १८ 469७ | १५ 489७ |
| कुम्भ | धनि | २० 3,4 | १०॥ 4,5,6 | २६ 4568 | ३०॥ 3,4,5 | २७ 3,4 | १९॥ 4,6 | १२ 4,6,8 | १९ 4689 | १८॥ 4,6,9 | १३ 3469 | ४॥ 4567 | १९॥ 45678 | २५॥ 357७ | ११ 3,5,७ | १८॥ 568७ | १८ 456७ | १९ 4,6,7 | १७ 4,6,7 | १७ 4,7,8 |
| | शत | १५ 1 से 4 | २१ 3568 | २८ 3,5,6 | ३२॥ 3,5 | २५॥ 3,4,6 | २७ 4,6 | २० 4,6,9 | १२ 4698 | १३ 6,9,8 | ८ 5678७ | १४ 567७ | २१ 5,7,७ | २६॥ 3,5,७ | २०॥ 356७ | १६॥ 568७ | १५॥ 3678 | १५॥ 4678 | १७॥ 4,7 | |
| | पूषा | १८ 1,2,3 | २५ 4,5,8 | २० 3,4,5 | २५ 4,5,6 | ३१॥ 3,4,6 | ३१॥ 3,4 | २५ 3,4,9 | १७॥ 4,8,9 | १८॥ 4,8,9 | १३॥ 4578७ | २० 457७ | १३ 3567७ | १९॥ 5,6,७ | २५॥ 4,5,७ | १६॥ 458७ | १५॥ 4,7,8 | १५॥ 3478 | १७॥ 3467 | |
| मीन | पूषा | १४॥ 4 | २२ 1248 | १६॥ 1234 | १९ 1246 | २६ 1456 | २६ 1345 | २६ 1345 | १८॥ 145७ | १९ 1458 | १८ 4,8,9 | २५ 4,9 | १९ 4,6,9 | १८ 1467 | २३॥ 1347 | १४॥ 1478 | १६ 1458७ | १७ 1458 | १५॥ 1456 | |
| | उषा | २५ 1 से 4 | १७ 1,2,3 | १९ 1238 | २१ 1236 | २६ 1356 | १८ 1345 | १७॥ 1358 | २५ 135७ | २८ 1,5,७ | २७॥ 9 | १९ 8,9 | २१॥ 6,9 | १९ 1367 | १७ 1378 | २६ 1,3,7 | २७॥ 135७ | २७ 135७ | १० 14568 | |
| | रेव | २५ 1 से 4 | २४॥ 1,2,4 | १९ 1,2,3 | १४ 1268 | १७॥ 1568 | २६ 1358 | २५ 1,3,5 | २४॥ 135७ | २६ 135७ | २४॥ 1,3,5 | २७॥ 3,9 | १४ 9 | १३ 6,8,9 | २३॥ 1687 | २४ 1,3,7 | २६ 1,3,7 | २७ 135७ | २७ 135७ | १९॥ 1456 |

केन्द्रों (1, 2, 3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ष दोष की जगह 1, द्विदश

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1, 2, 3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विदश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाडी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मिलापक सारिणी — (भाग-३)

| वर/नक्षत्र | | तुला | | | वृश्चिक | | | धनु | | | मकर | | | कुम्भ | | | मीन | | |
|------------|---------|--------|--------|-------|---------|--------|--------|--------|--------|-------|-------|--------|-------|--------|--------|-------|-------|--------|--------|
| कन्या | नक्षत्र | चित्रा | स्वा. | विशा | विशा | अनु | ज्ये | मूला | पूषा | उषा | उषा | श्रव | धनि | धनि | शत | पूषा | पूषा | उषा | रेव |
| | | 3,4 | 1 से 4 | 1,2,3 | 4 | 1 से 4 | 1 से 4 | 1 से 4 | 1 से 4 | 1 चरण | 2,3,4 | 1 से 4 | 1,2 | 3,4 | 1 से 4 | 1,2,3 | 4 | 1 से 4 | 1 से 4 |
| ऐष | अश्वि | २२॥ | २६॥ | २२॥ | १८॥ | २५॥ | १४॥ | १३ | २५ | २३॥ | २५ | २६ | २० | २०॥ | १५ | १६ | १५ | २५ | २६ |
| | 1 से 4 | 1346 | 1,3,4 | 1346 | 3467 | 3,7 | 6,7,8 | 6,8,9 | 4,9 | 1,3,9 | 1,3,5 | 1,3,5 | 1456 | 1456 | 1358 | 1358 | 2348 | 2,3 | 2,4 |
| | भर | १३॥ | २९ | २१॥ | १७॥ | १७॥ | २० | २० | १८॥ | २६ | २७॥ | २६ | १० | ९॥ | २० | २४ | २३ | १७॥ | २७ |
| | 1 से 4 | 1368 | 1,3 | 1,3,6 | 3467 | 378 | 3,6,7 | 6,9 | 6,9 | 4,9 | 1,5 | 1,3,5 | 14568 | 14568 | 1356 | 1345 | 2,3,4 | 2,3,8 | 2,3 |
| वृष | कृति | २७॥ | १५ | १९॥ | १५॥ | १९॥ | २५॥ | २५ | १८॥ | १२॥ | १३॥ | १२ | २५ | २५॥ | २७ | १९॥ | १७॥ | १९॥ | १२ |
| | 1 चरण | 1,3,4 | 1368 | 1348 | 3478 | 3,6,7 | 3,7 | 3,9 | 4,6,9 | 6,8,9 | 1568 | 14568 | 1,3,5 | 1,2,5 | 1,3,5 | 1356 | 2346 | 2,3,6 | 2368 |
| | कृति | २३ | ११ | १४॥ | २०॥ | २४॥ | ३०॥ | २० | १४ | ७ | १२ | १०॥ | २४ | २९॥ | ३१॥ | २३॥ | २० | २२ | १४ |
| | 2,3,4 | 1347 | 13678 | 1378 | 3,4,8 | 3,6 | 3 | 3,5,7 | 4567 | 5678 | 6,9,8 | 4689 | 3,4,9 | 1,3,4 | 1,3 | 1346 | 3456 | 3,5,6 | 3568 |
| मिथुन | रोह | १९॥ | १५॥ | ९॥ | १५ | २९॥ | २४ | १४॥ | १९॥ | ११॥ | १६ | १७॥ | २०॥ | २६ | २५ | ३१ | २७ | २७ | १९ |
| | 1 से 4 | 1,6,7 | 1378 | 1678 | 1368 | 3,4 | 3,6 | 3567 | 3,5,7 | 4578 | 4,8,9 | 4,8,9 | 4,6,9 | 1,4,6 | 1,3,6 | 1,3,4 | 3,4,5 | 3,4,5 | 3,5,8 |
| | मृग | १२ | २५॥ | १९ | २५ | २१॥ | २४॥ | १५ | १०॥ | १७॥ | २२ | २५॥ | १३ | १९॥ | २७ | २९॥ | ३,5 | ३,5,8 | ३,5 |
| | 1-2 | 1678 | 1,7 | 1367 | 3,6 | 3,5,8 | 3,6 | 3567 | 3578 | 3457 | 3,4,9 | 4,9 | 4689 | 1468 | 1,4,6 | 1,3,4 | 3,5 | 3,5,8 | 3,5 |
| कर्क | मृग | १४ | २७ | २१ | १४ | ११ | १४ | २३ | १८॥ | २५ | २०॥ | २४ | ११ | १३ | २१॥ | २४ | २५॥ | १७॥ | २६॥ |
| | 3-4 | 6,8,9 | 4,9 | 3,6,9 | 3567 | 3578 | 3567 | 3,5,6 | 3458 | 3,4,5 | 347व | 4,7,व | 678व | 6,8,9 | 6,9 | 3,9 | 3,5,व | 3,5,8 | 3,5,व |
| | आर्द्रा | २१ | २७ | २०॥ | १३ | १७॥ | ३ | १६ | २८ | २८ | २३॥ | २३॥ | १८ | १९॥ | १२॥ | १७॥ | १९ | २६॥ | २७ |
| | 1 से 4 | 4,6,9 | 9 | 4,6,9 | 4567 | 3457 | 345678 | 3568 | 3,5 | 3,5 | 3,7व | 3,7,व | 467व | 4,6,7 | 4689 | 4,8,9 | 5,8,व | 3,5,व | 3,5,व |
| सिंह | पुन. | २१ | २८ | २२ | १५ | २२ | ७ | १४ | २७ | २७ | २२॥ | २३॥ | १७॥ | १९ | १४ | १६ | १८॥ | २८ | २७॥ |
| | 1,2,3 | 3,6,9 | 9 | 6,9 | 5,7व | 5,7व | 35678 | 34568 | 3,5 | 3,5 | 3,7व | 3,7,व | 3467 | 3469 | 6,8,9 | 4689 | 4,8,9 | 5,व | 3,5,व |
| | पुन. | २१ | २८ | २२ | २० | २६ | १२ | ८॥ | २१ | २१॥ | २६ | २७ | २१ | १२ | ८॥ | १०॥ | १६॥ | २६॥ | २६ |
| | 4 | 1356 | 1,5व | 156व | 6,9 | 9 | 3689 | 14678 | 147व | 147व | 1,3,5 | 1,3,5 | 1456 | 14567 | 1567 | 14578 | 4,8,9 | 9 | 3,9 |
| कन्या | पुष्य | ११ | २६॥ | २१॥ | १९॥ | १८॥ | २१ | १७॥ | ११॥ | २१॥ | २६ | २५ | १३ | ४॥ | १४ | १८॥ | २४ | १८॥ | २७ |
| | 1 से 4 | 14568 | 1,3,5 | 1456 | 4,6,9 | 8,9 | 6,9 | 1367 | 1478 | 1347 | 1,3,5 | 1345 | 13568 | 145678 | 13567 | 1457 | 4,9 | 8,9 | 9 |
| | श्ले. | २५॥ | १२ | १७॥ | १५ | २०॥ | २६ | २३ | १६ | ७॥ | १३ | १३ | २६ | १७॥ | २० | ११ | १८ | २१ | १३ |
| | 1 से 4 | 1,3,5 | 1568 | 1,5,8 | 3,8,9 | 6,9 | 9 | 1,4,7 | 1367 | 3678 | 4568 | 4568 | 1,4,5 | 1457 | 1357 | 14567 | 4,6,9 | 6,9 | 6,8,9 |
| कुम्भ | मघा | २४॥ | ११॥ | १६॥ | २२॥ | २६ | ३३ | २५ | १९॥ | ८॥ | ३॥ | ४॥ | १८॥ | २४॥ | २५॥ | १८॥ | १९ | २० | १३॥ |
| | 1 से 4 | 1,3,5 | 13568 | 1358व | 3,8व | 3,6व | व | 9,व | 6,9व | 689व | 15678 | 15678 | 1,5,7 | 1,5,व | 1,5,व | 156व | 3,6,7 | 3,6,7 | 6,7,8 |
| | पूषा | १०॥ | २५॥ | १८॥ | २४ | २३॥ | २५॥ | २० | १७॥ | २४ | १९ | १८॥ | ४॥ | ११ | १९॥ | २४॥ | २५ | १७॥ | २६ |
| | 1 से 4 | 1568 | 135व | 156व | 3,6व | 3,8व | 3,6व | 6,9व | 8,9,व | 4,9व | 1,5,7 | 1,5,7 | 15678 | 1568 | 156व | 135व | 3,7 | 3,7,8 | 3,7 |
| मीन | उफा | १७ | २५॥ | १६॥ | २२॥ | ३१॥ | १७॥ | १॥ | २५ | २५॥ | २० | २० | ११॥ | १७॥ | ११ | १५॥ | १६ | २६॥ | २६ |
| | 1 | 13456 | 1,3,5 | 13456 | 3,4,6 | 3,व | 3,6,8 | 3689 | 9,व | 9,व | 1,5,7 | 1,5,7 | 1567 | 1356 | 3568 | 358व | 3478 | 3,7 | 3,7 |
| | उफा | १६॥ | २५॥ | १७ | १८ | २७॥ | १३॥ | १४ | २९॥ | २९॥ | २४॥ | २५ | १७ | १६॥ | १०॥ | १४॥ | १७॥ | २८ | २७॥ |
| | 2,3,4 | 1246 | 1,2,3 | 1246 | 456व | 3,5व | 568व | 3568 | 5 | 5 | 9,व | 9,व | 3,6,9 | 1367 | 3678 | 1378 | 3,5,8 | 3,5,व | 3,5,व |
| वृश्चिक | हस्त | २० | २६॥ | १८॥ | २० | २६ | १३॥ | १५ | २७ | २८॥ | २४ | २४ | १९ | १९ | ८॥ | १३॥ | १६॥ | २६॥ | २७॥ |
| | 1 से 4 | 1246 | 1,2,3 | 1236 | 3456 | 3,5व | 3568 | 3568 | 3,5 | 5 | 9,व | 9,व | 4,6,9 | 1467 | 34678 | 1378 | 3458 | 3,5व | 3,5,व |
| | चित्रा | २० | १९ | २६॥ | २८॥ | ११ | २५ | २७ | १४ | २२ | १७॥ | १९ | १५॥ | १६ | २४ | १६॥ | १९॥ | १० | १९॥ |
| | 1,2 | 1,2,8 | 1246 | 1,2,3 | 3,5व | 3568 | 345व | 3,4,5 | 3568 | 3,5,6 | 3,6,9 | 6,9,व | 4,8,9 | 1478 | 1,4,7 | 1467 | 3456 | 34568 | 3456 |

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ४) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1, 2, 3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनितैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाडी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वष्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वाच-कल्या मीलापक सारिणी — (भाग-४)

| वर/नक्षत्र | | तुला | | | वृश्चिक | | | धनु | | | मकर | | | कुम्भ | | | मीन | | |
|------------|---------|---------------|---------------|---------------|---------------|--------------|-------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|-------------|--------------|--------------|
| क्या | नक्षत्र | चित्रा | स्वा. | विशा | विशा | अनु | ज्ये | मूला | पूषा | उषा | उषा | श्रव | धनि | धनि | शत | पूषा | पूषा | उषा | रेव |
| | | 3,4 | 1 से 4 | 1,2,3 | 4 | 1 से 4 | 1 से 4 | 1 से 4 | 1 से 4 | 1 चरण | 2,3,4 | 1 से 4 | 1,2 | 3,4 | 1 से 4 | 1,2,3 | 4 | 1 से 4 | 1 से 4 |
| तुला | चित्रा | २८ 3,4 | २७ 8 | ३४ 4,6 | २३॥ 3 | ६ 2,3व | २१ 2348व | २७॥ 234व | १४ 3,4,5 | २२ 3568 | २५ 3,5,6 | २७ 3,6,व | २३॥ 6,व | १८॥ 4,8,व | २६ 4,8,9 | १९ 4,9 | १२ 3469 | ३ 4567 | १२ 345678 |
| | स्वा. | २८ 1 से 4 | २८ 4,6 | २० 8 | १० 4,6,8 | २१॥ 248व | १६॥ 2,3व | २३ 236व | २७ 3,5,8 | १९ 3,5 | २२ 3,5,8 | २३ 3,8,व | २७ 3,8,व | २१ 4,6 | २० 4,6,9 | २५ 4,9 | १९ 4,9 | १९॥ 457,व | १२ 3,7,व |
| | विशा | ३४॥ 1,2,3 | १९ 3 | २८ 4,6,8 | १७॥ 8 | १६ 2,8व | २१॥ 246व | २७॥ 234व | २२ 3,4,5 | १४ 3,5,8 | १७ 3568 | १७॥ 368व | ३०॥ 368व | २५ 3,4,व | २६ 3,4,9 | २० 4,9 | १४ 4,6,9 | १३॥ 4567 | ४ 45678 |
| वृश्चिक | विशा | २३ 4 | ७ 123व | १६॥ 12468व | २८ 128व | २७॥ 8 | ३१॥ 4,6 | २२ 3,4 | १७॥ 1234 | ९ 1362व | १२॥ 12368 | १२॥ 13568 | २५ 13568 | २४ 1345 | २६ 1345 | २० 145,व | १९॥ 1456 | १८॥ 4,8,9 | ९॥ 4,6,9 |
| | अनु. | ६॥ 1 से 4 | २२ 12568 | १६ 123व | २८ 1246 | २८ 4,6 | ३१ 8 | १५ 6 | १३॥ 12346 | २२ 1238व | २५ 123व | २६ 1,3,5 | १२ 1,3,5 | ११ 13568 | २१ 1358 | २१ 1356 | २४॥ 145व | २४ 4,9 | २७॥ 8,9 |
| | ज्ये. | १९॥ 1 से 4 | १५ 1234 | १९॥ 126व | ३१॥ 1234 | ३० 3,4 | २८ 6 | १४॥ 8 | १७॥ 1248 | १७॥ 1236 | १७॥ 1236 | २० 1356 | २० 1356 | २५ 1,3,5 | २४ 1345व | १८ 1358 | १० 13568 | २१॥ 3689 | २१॥ 6,9 |
| धनु | मूला | २६ 1 से 4 | २१ 1,4,5 | २६ 1356 | २३ 1,4,5 | १५॥ 124व | १५ 1246 | २८ 1248 | २८ 8 | २६॥ 4,8 | १५॥ 3,6 | १५॥ 1236 | २०॥ 1236 | २८॥ 1234 | २१॥ 1,3,4 | १४॥ 1,3,8 | १६॥ 1468 | २५ 3468 | २७ 6,व |
| | पूषा | १३ 1 से 4 | २७ 1568 | २१ 1,3,5 | १८ 1356 | १५॥ 246व | १८ 238व | २८ 246व | ३४ 4,6 | २३ 8 | २३ - | २३ 124व | २३॥ 1,2,व | ५॥ 1268 | १४॥ 1468 | २३॥ 1,4,६ | ३०॥ 1,4 | ३१ 4,व | २३ 8,व |
| | उषा | २१ 1 | १९ 1,5,6 | १३ 1,5,8 | ९॥ 1568 | २४ 268व | १८॥ 2,3व | २६॥ 2,3,6 | ३४ 3,4,6 | २८ - | १६॥ 8 | १५ 128व | १५॥ 1248व | २३॥ 1236व | २३॥ 1,3,6 | २९॥ 1,3,6 | ३१ 1,3,4 | ३१ 3,व | २३ 3,8,व |
| मकर | उषा | २४ 2,3,4 | २२॥ 1,3,6 | १५॥ 1,3,8 | १३ 1368 | २७ 4568 | २१ 4,5 | १६ 4,5,6 | २४ 246व | १७॥ 2,4व | २८ 2,8व | २६ 8 | २६॥ 4,8 | १७॥ 4,6 | १७॥ 126व | २३॥ 126व | ३०॥ 1234 | ३१ 3,4 | २२॥ 3,4,8 |
| | श्रव | २७ 1234 | २२॥ 146व | १७॥ 148व | १४ 1468 | २७ 3568 | २२ 3,4,5 | १७॥ 3456 | २३॥ 246व | १५ 2,3व | २५ 248व | २८ 4,8 | २८ 8 | १९ 4,6 | १८ 1246 | २१॥ 124व | २८॥ 3,4 | २९॥ 3,4 | २२॥ 3,4,8 |
| | धनि | २३ 1,2 | २४॥ 148व | २९ 146व | २६ 1,4व | १२ 3,4,5 | २६ 4568 | २१ 3,4,5 | ७॥ 234व | १६ 2468व | २७॥ 2346 | २७॥ 3,4,6 | २७॥ 4,6 | २८ 8 | १८॥ 128व | २४ 124व | २० 126व | २६॥ 3,6 | १५॥ 4,6,8 |
| कुम्भ | धनि | १८॥ 3,4 | २० 4,8,9 | २५ 4,6,9 | २५ 3,4,9 | ११ 4,5व | २५ 4568 | २९॥ 4,5व | १५॥ 3,4 | २४॥ 3468 | १८॥ 3,6 | १९ 236व | २० 246व | २८ 2,8,व | ३३ 8 | २८ 4 | १९॥ 3,6 | ८॥ 236व | १७॥ 2468व |
| | शत | २६ 1 से 4 | १९॥ 4,9 | २६ 4,6,9 | २६॥ 4,9 | २१ 4,5व | १९ 356व | २२॥ 358व | २४॥ 3,4,8 | २४॥ 3,4,6 | १८॥ 236व | १८॥ 236व | २५ 2,4,व | ३३ 4 | २८ 8 | १९॥ 4,8,8 | ८॥ 2468व | १७॥ 236व | १६ 236व |
| | पूषा | १९ 1,2,3 | २६ 3469 | २० 4,9 | २०॥ 4,6,9 | २६॥ 456व | १९ 4,5व | १५ 4568व | २९॥ 3468 | ३०॥ 3,4 | २४॥ 3,4 | २३॥ 234व | २०॥ 234व | २९ 236व | १९ 3,6 | २८ 4,8,8 | १७॥ 8 | २२॥ 2,6,व | २०॥ 2,4,व |
| मीन | पूषा | १२ 4 | १९॥ 14567 | १३॥ 1457 | १९॥ 14567 | २५ 4,6,9 | ९ 4689 | १५॥ 1468 | २९ 134व | ३० 1,3व | २९॥ 1,3,4 | २८॥ 1,3,4 | २५॥ 1,3,6 | १७ 1236व | ८ 12468 | १७ 128व | २८ 8 | ३३ 4 | ३५ 3,4 |
| | उषा | ३ 1 से 4 | १९॥ 145678 | १२॥ 1357 | १८॥ 14567 | १९॥ 4,6,9 | २१॥ 8,9 | २४॥ 6,9 | २२॥ 136व | ३० 1,8व | २९॥ 134व | २९॥ 1,3,4 | १४॥ 1,3,4 | ५॥ 1468 | १६॥ 12468 | २२ 1236व | ३३ 124व | २८ 4 | २८ - |
| | रेव | १३ 1 से 4 | ११ 14567 | ४॥ 1578व | १०॥ 145678 | २७॥ 4689 | २२॥ 9 | २७ 6,9 | २९॥ 146व | २१॥ 1,3व | २१॥ 138व | २१॥ 1348 | २१॥ 1348 | २३ 1346 | १४॥ 1246व | १६॥ 1236व | ३० 124व | ३४ 3,4 | २८ 8 |

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1, 2, 3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विदश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाडी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

पंचांग-परिवर्तन करना

'पंचांगदिवाकर' में जहाँ तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल तथा ग्रहों की वक्रो-मार्गी या राशि चार्ट भा. स्टै. टा. में दिए गए हैं, उन (समयों) में भारत के किसी अन्य स्थल के लिए जोई संस्कार करने की आवश्यकता नहीं है तथा विश्व के किसी अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्रादि का समाप्ति काल जानने हेतु भा. स्टै. टा. से उस देश का स्टै. अन्तर जमा या घटा कर प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु पंचांगदिवाकर में तिथ्यादि के समाप्ति काल घड़ी पलों में दिए हुए हैं, क्योंकि यह घड़ी पल जालन्धर के स्पष्ट सूर्योदय काल से हैं, इसलिए अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र राशि प्रवेश आदि हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। यह ध्यान रहे कि भारतीय ज्योतिष में वार (रविवार, सोमवार) का प्रारम्भ तथा तिथि, नक्षत्र आदि का घड़ी पलों में समाप्ति काल सूर्योदय के समय से ही माना जाता है।

भारत के किसी भी अन्य नगर का पंचांग अर्थात् तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र-सूर्यादि संचार घटी पलों में प्राप्त करना हो तो आप इसी पंचांग में आगामी पृष्ठों से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश, रेखांश आदि ज्ञात करके मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से सू. उ. ज्ञात कर लें। आपके अभीष्ट नगर के सू. उ. का जालन्धर के सूर्योदय से जितना अन्तर होगा, उसके घड़ी पल बनाकर $2\frac{1}{2}$ गुणा करके ऋण (घटावे) या जमा (धन) करें। यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पूर्व अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर से पूर्व (पहले) होगा, वहाँ सूर्योदय अन्तर (कालान्तर) के घड़ी पल बनाकर पंचांगदिवाकर में तिथ्यादि के घड़ी-पलों में जमा करें तथा यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पश्चिम में स्थित होगा अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर के सू. उ. से बाद होगा, वहाँ कालान्तर के घड़ी पलों से घटावे।

उदाहरण — मान लीजिए २९ सितं., २००४ ई. को दिल्ली का पंचांग बनाना है, तो दिल्ली का अक्षांश, स्टै. अन्तर प्राप्त कर मध्यम सूर्योदय सारिणी से ६/१७ सू. उ. प्राप्त (घण्टा मिनट वाले पृष्ठों से दिल्ली का तैयार दैनिक सू. उ. देख सकते हैं) हुआ जोकि जालन्धर के सू. उ. (६/२३) से ६ मिनट पूर्व (पहले) है। अतः घड़ी पलों में तिथि, नक्षत्रादि दिल्ली के प्राप्त करने के लिए हमें जालन्धर के तिथि, नक्षत्र आदि में ६ मिनट के घटी पल १५ पल जमा करने होंगे। (ढाई गुणा करके)। ध्यान रहे, सूर्योदय अन्तर नगरों में सदैव एक समान नहीं रहता। इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि भारतीय ज्योतिष अनुसार जन्मपत्री निर्माण के समय जन्मपत्री में उसी तिथि, नक्षत्रादि के घड़ी पल लिखे जाते हैं जो जातक के जन्म से पूर्व ही समाप्त क्यों न हो जाए। कई बार पंचांग परिवर्तन करते हुए तिथियों/नक्षत्रों के क्षय या वृद्धि में भी अन्तर पड़ सकता है।

२९ सितं., २००४ ई. को जालन्धर का पंचांग — २९ सितं., २००४ ई. को दिल्ली का पंचांग

घटी पल

तिथि — २९/१० (समाप्ति काल)

नक्षत्र — ५३/०८

योग — ३९/३३

घटी पल

तिथि — २९/२५ (समाप्ति काल)

नक्षत्र — ५३/२३

योग — ३९/४८

जालन्धर से अतिरिक्त नगर की जन्मपत्री निर्माण हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। इस प्रक्रिया द्वारा आप भारत के किसी भी नगर का सू. उ. ज्ञात करके जालन्धर के सू. उ. से अन्तर जानकर पंचांग परिवर्तन कर सकते हैं। जबकि जहाँ तिथ्यादि, ग्रहों के वक्रो-मार्गी का समय भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं है। घण्टा मिनट वाले पृष्ठों पर सर्वत्र समय (तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र संचार आदि का) भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं।

लग्न सारिणी द्वारा लग्न स्पष्ट करने की विधि

आगामी पृष्ठों पर विभिन्न अक्षांशों पर आधारित, निर्मित लग्न सारिणियां दी गई हैं। जिस नगर का लग्न स्पष्ट करना हो, सर्वप्रथम अपने अभीष्ट काल का सूर्योदयात् इष्टकाल घट्यादि में बना लें। इसके लिए उस स्थान का सही सूर्योदय का ज्ञान होना आवश्यक है। अपने नगर की शुद्ध एवं सूक्ष्म सूर्योदय काल जानने के लिए पंचांगदिवाकर के आगामी पृष्ठों में दी गई। अक्षांश सारिणियों का प्रयोग करना चाहिए। स्थानीय इष्टकाल बना लेने के पश्चात् अपने अभीष्ट काल का सूर्य स्पष्ट ग्रहण करें। सूर्यस्पष्ट जिस राशि के जितने अंश पर हो, लग्न सारिणी में उसी राशि के सामने तथा सूर्य स्पष्ट के अंशों के कोष्ठक के नीचे जितने घड़ी पल हो, उनमें अपने इष्ट के घड़ी पल जोड़ (जमा) देने से लग्न स्पष्ट जानने के लिए घड़ी पल होंगे। यह घड़ी पल लग्नसारिणी में जिस राशि के सामने और जितने अंश के नीचे होगा, वही राश्यादि पर लग्नस्पष्ट होगा।

उदाहरण — मान लीजिए, विक्रमी संवत् २०६१ मध्ये कांगड़ा (हि. प्र.) में चैत्र शुक्ल अष्टमी, प्रविष्टे १५ चैत्र, तदनुसार २८ मार्च, २००४ ई. को दोपहर २ बजेकर २४ मिनट पर उत्पन्न बालक का लग्न स्पष्ट करना है। इसका सूर्योदयात् ईष्ट २० घड़ी ०५ पल बनेगा तथा इष्टकालिक सूर्यस्पष्ट १२/१४°/०६'११" होगा। कांगड़ा का अक्षांश ३२/०५ होने के कारण आगामी पृष्ठों पर दी गई उसके निकटवर्ती अक्षांश ३१/२० की लग्न सारिणी प्रयोग में लाई जा सकती है। लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट की राशि अर्थात् मीन राशि के सामने और १४° अंश के नीचे कोष्ठक में हमें ०/५१ घट्यादि प्राप्त हुए। इनको जन्म इष्ट के घट्यादि २०/०५ में जमा कर देने से कुल जोड़ २०/५६ घट्यादि बनेगा। इस जोड़ को पुनः लग्न सारिणी में निकटवर्ती संख्या २०/५२ कर्क (३) राशि के सामने और २० अंश के नीचे प्राप्त हुई। यह संख्या हमारे कुल जोड़ २०/५६ से केवल ४ पल कम है। अब अनुपातिक विधि द्वारा ४ पलों के कलादि निकाल लेने से हमें इष्टकालिक लग्न स्पष्ट पता चल जाएगा। जैसे यदि १२ पल के पीछे १ अंश अर्थात् ६० कला का अन्तर पड़ता है तो १ पल के पीछे ५ कला का अन्तर पड़ेगा। इसी प्रकार ४ पलों के पीछे २२ कलाओं का अन्तर पड़ेगा। इस प्रकार उपरोक्त इष्टकाल पर (२०/०५ घट्यादि) ३ गत राशि अर्थात् कर्क लग्न, २० अंश, २२ कला पर लग्न स्पष्ट होगा। (लग्न स्पष्ट ३/२०°/२२'००')। अधिक सूक्ष्मता के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित पुस्तक 'ज्योतिष तत्त्व' का अध्ययन करें।

उत्तर पलभा १५ १० ॥५०

लग्न सारणी लंदन (अक्षांश ५१।३०)

चरखण्ड १५१ ११२० १५१

उत्तर पलभा १५ १० १५०
उपरोक्त लंदन सारिणी विदेशी नगरों जैसे—लंदन; बर्मिंघम, साऊथ हैम्पटन, आक्सफोर्ड, स्लोह तथा लंदन के आसपास नगरों के लग्न निकालने के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगी। ध्यान रहें, लग्न स्पष्ट करने के लिए लंदनादि नगरों का ही सूर्योदय एवं सूर्य स्पष्ट करना चाहिए।

| निकालन के लिए विशेष उपयोगी तालिका | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|-----------------------------------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|
| अंश | | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | | |
| ० मेष | घ. प. | १ ४६ | १ ५० | १ ५५ | १ ५९ | २ ४ | २ ९ | २ १४ | २ १९ | २ २४ | २ २९ | ३ ३५ | ४ ४० | ४ ४६ | ५ ५२ | ५ ५८ | ६ ५ | ६ १५ | ६ २१ | ६ २६ | ६ ३१ | ६ ३६ | ६ ४१ | ६ ४६ | ६ ५० | ६ ५५ | ६ ५९ | ७ ४ | ७ ९ | ७ १४ | ७ १९ | ७ २४ | |
| १ वृष | घ. प. | ४ ३० | ४ ३५ | ४ ४१ | ४ ४७ | ४ ५३ | ५ ५ | ५ ११ | ५ १६ | ५ २० | ५ २५ | ५ ३१ | ५ ३६ | ५ ४१ | ५ ४६ | ५ ५१ | ५ ५६ | ५ ५९ | ६ ४ | ६ ९ | ६ १४ | ६ १९ | ६ २४ | ६ २९ | ६ ३४ | ६ ३९ | ६ ४४ | ६ ४९ | ६ ५४ | ६ ५९ | ७ ४ | ७ ९ | |
| २ मिथुन | घ. प. | ८ ३५ | ८ ४८ | ८ ५३ | ९ ०२ | ९ ११ | ९ २० | ९ २९ | ९ ३८ | ९ ४७ | ९ ५६ | १० ०२ | १० १५ | १० २८ | १० ४१ | १० ५४ | १० ७७ | ११ २० | ११ ३३ | ११ ४६ | ११ ५९ | १२ २२ | १२ ३५ | १२ ४८ | १२ ५० | १३ ०३ | १३ १६ | १३ २९ | १३ ४२ | १३ ५५ | १४ ०७ | १४ १९ | |
| ३ कर्क | घ. प. | १४ २९ | १४ ४२ | १४ ५५ | १५ ०८ | १५ २० | १५ ३३ | १५ ४६ | १५ ५९ | १६ १३ | १६ २७ | १६ ४१ | १६ ५५ | १७ ०९ | १७ २३ | १७ ३७ | १७ ५१ | १८ ०५ | १८ १९ | १८ ३५ | १८ ५० | १९ ०४ | १९ १८ | १९ ३२ | १९ ४६ | २० ०० | २० १३ | २० २७ | २० ४१ | २० ५५ | २१ ०९ | २१ २० | |
| ४ सिंह | घ. प. | २१ २३ | २१ ३७ | २१ ५२ | २२ ०६ | २२ २० | २२ ३४ | २२ ४८ | २३ ०२ | २३ १७ | २३ ३१ | २३ ४५ | २३ ५९ | २४ १३ | २४ २७ | २४ ४१ | २४ ५५ | २५ ०९ | २५ २३ | २५ ३७ | २५ ५१ | २६ ५ | २६ १८ | २६ ३२ | २६ ४६ | २६ ५९ | २७ १३ | २७ २७ | २७ ४१ | २७ ५६ | २८ १० | २८ २० | |
| ५ कन्या | घ. प. | २८ २४ | २८ ३८ | २८ ५२ | २९ ०७ | २९ २१ | २९ ३५ | २९ ५० | ३० ०२ | ३० १६ | ३० ३० | ३० ४५ | ३० ५९ | ३१ १३ | ३१ २७ | ३१ ४१ | ३१ ५५ | ३२ ०९ | ३२ २३ | ३२ ३७ | ३२ ५१ | ३३ ५ | ३३ १९ | ३३ ३३ | ३३ ४७ | ३३ ५९ | ३४ १३ | ३४ २७ | ३४ ४१ | ३४ ५५ | ३५ ०७ | ३५ १९ | |
| ६ तुला | घ. प. | ३५ २५ | ३५ ३९ | ३५ ५३ | ३६ ०७ | ३६ २२ | ३६ ३७ | ३६ ५१ | ३७ ०५ | ३७ २० | ३७ ३४ | ३७ ४८ | ३७ ५९ | ३८ १३ | ३८ २७ | ३८ ४१ | ३८ ५५ | ३९ ०० | ३९ १३ | ३९ २७ | ३९ ४१ | ४० ५५ | ४० ९ | ४० २३ | ४० ३७ | ४० ५१ | ४० ५९ | ४१ १३ | ४१ २७ | ४१ ४१ | ४१ ५५ | ४२ ०५ | |
| ७ वृश्चिक | घ. प. | ४२ ३० | ४२ ४४ | ४२ ५८ | ४३ १२ | ४३ २६ | ४३ ४१ | ४३ ५५ | ४४ १० | ४४ २४ | ४४ ३८ | ४४ ५२ | ४४ ५७ | ४५ ५८ | ४५ १२ | ४५ २६ | ४५ ३८ | ४५ ५० | ४६ ०२ | ४६ १६ | ४६ २८ | ४६ ४२ | ४६ ५४ | ४७ ०६ | ४७ १९ | ४७ ३१ | ४७ ४४ | ४७ ५६ | ४८ ०८ | ४८ २० | ४८ ३२ | ४८ ४४ | |
| ८ धनु | घ. प. | ४८ ५९ | ४८ ४९ | ४९ १९ | ४९ ४९ | ४९ ५९ | ५० १० | ५० ५० | ५० ५० | ५० ५० | ५१ ५१ | ५१ ५१ | ५१ ५१ | ५१ ५१ | ५१ ५१ | ५१ ५१ | ५१ ५१ | ५१ ५१ | ५१ ५१ | ५१ ५१ | ५१ ५१ | ५१ ५१ | ५१ ५१ | ५१ ५१ | ५१ ५१ | ५१ ५१ | ५१ ५१ | ५१ ५१ | ५१ ५१ | ५१ ५१ | ५१ ५१ | ५१ ५१ | |
| ९ मकर | घ. प. | ५३ ५३ | ५३ ५४ | ५४ १० | ५४ १९ | ५४ २८ | ५४ ३७ | ५४ ४६ | ५५ ५५ | ५५ ०० | ५५ ०६ | ५५ १२ | ५५ १७ | ५५ २३ | ५५ २९ | ५५ ३४ | ५५ ४० | ५५ ४६ | ५५ ५२ | ५५ ५८ | ५६ ०४ | ५६ १० | ५६ १६ | ५६ २२ | ५६ २८ | ५६ ३४ | ५६ ४० | ५६ ४६ | ५६ ५२ | ५६ ५८ | ५७ ०३ | ५७ ०९ | |
| १० कुम्भ | घ. प. | ५७ ०८ | ५७ १३ | ५७ १९ | ५७ २५ | ५७ ३० | ५७ ३५ | ५७ ४१ | ५७ ४७ | ५७ ५२ | ५७ ५७ | ५८ ०१ | ५८ ०५ | ५८ ०९ | ५८ १४ | ५८ १९ | ५८ २३ | ५८ २८ | ५८ ३३ | ५८ ३७ | ५८ ४१ | ५८ ४५ | ५८ ४९ | ५८ ५३ | ५८ ५७ | ५८ ५९ | ५९ ०१ | ५९ ०४ | ५९ ०८ | ५९ १३ | ५९ १७ | ५९ २२ | ५९ २७ |
| ११ मीन | घ. प. | ५९ ३१ | ५९ ३५ | ५९ ३९ | ५९ ४४ | ५९ ४८ | ५९ ५२ | ५९ ५७ | ० ०२ | ० ७ | ० ११ | ० १५ | ० २० | ० २४ | ० २८ | ० ३३ | ० ३७ | ० ४१ | ० ४५ | ० ४९ | ० ५३ | ० ५८ | ० ०३ | ० ०८ | ० १३ | ० १८ | ० २२ | ० २७ | ० ३२ | ० ३७ | ० ४२ | ० ४७ | |

पल्लभा X 19 14

अक्षांश १९°

पलभा ४/७/५५

मुम्बई, कल्याण, पूना, औरंगाबाद, अहमदनगर, बस्तर, खण्डाला, भुवनेश्वर, पुरी, दादरा आदि नगरों के लिए

[illegible]

कलकत्ता, अहमदाबाद, इटारसी, इन्दौर, उज्जैन, कटनी, कच्छ, जबलपुर, भोपाल, राँची, हौशंगाबाद आदि नगरों के लिए

| अंश | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|---------|----|----|----|----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| ० | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ |
| मेष | ५९ | ६ | १४ | २१ | २९ | ३७ | ४४ | ५२ | ० | ९ | १८ | २६ | ३५ | ४४ | ५२ | १ | १० | १८ | २७ | ३५ | ४४ | ५३ | १ | १० | १९ | २७ | ३६ | ४४ | ५३ | २ | १० |
| १ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ |
| वृष | १० | १९ | २८ | ३६ | ४५ | ५४ | ६ | ११ | २१ | ३१ | ४२ | ५२ | २ | १२ | २३ | ३३ | ४३ | ५३ | ४ | १४ | २४ | ३५ | ४५ | ५५ | ५ | १६ | २६ | ३६ | ४६ | ५७ | ७ |
| २ | १२ | २२ | ३२ | ४२ | ५२ | ६२ | ७२ | ८२ | ९२ | १०२ | ११२ | १२२ | १३२ | १४२ | १५२ | १६२ | १७२ | १८२ | १९२ | २०२ | २१२ | २२२ | २३२ | २४२ | २५२ | २६२ | २७२ | २८२ | २९२ | ३०२ | |
| मिथुन | ७ | १७ | २७ | ३७ | ४८ | ५८ | ६८ | ७८ | ८८ | ९८ | १०८ | ११८ | १२८ | १३८ | १४८ | १५८ | १६८ | १७८ | १८८ | १९८ | २०८ | २१८ | २२८ | २३८ | २४८ | २५८ | २६८ | २७८ | २८८ | २९८ | ३०८ |
| ३ | १७ | २७ | ३८ | ४८ | ५८ | ६८ | ७८ | ८८ | ९८ | १०८ | ११८ | १२८ | १३८ | १४८ | १५८ | १६८ | १७८ | १८८ | १९८ | २०८ | २१८ | २२८ | २३८ | २४८ | २५८ | २६८ | २७८ | २८८ | २९८ | ३०८ | |
| कर्क | ३८ | ४९ | ० | १२ | २३ | ३४ | ४५ | ५६ | ६७ | ७८ | ८९ | ९९ | १०९ | ११९ | १२९ | १३९ | १४९ | १५९ | १६९ | १७९ | १८९ | १९९ | २०९ | २१९ | २२९ | २३९ | २४९ | २५९ | २६९ | २७९ | २८९ |
| ४ | २३ | ३३ | ४३ | ५३ | ६३ | ७३ | ८३ | ९३ | १०३ | ११३ | १२३ | १३३ | १४३ | १५३ | १६३ | १७३ | १८३ | १९३ | २०३ | २१३ | २२३ | २३३ | २४३ | २५३ | २६३ | २७३ | २८३ | २९३ | ३०३ | ३१३ | ३२३ |
| सिंह | १७ | २८ | ३९ | ४९ | ५९ | ६९ | ७९ | ८९ | ९९ | १०९ | ११९ | १२९ | १३९ | १४९ | १५९ | १६९ | १७९ | १८९ | १९९ | २०९ | २१९ | २२९ | २३९ | २४९ | २५९ | २६९ | २७९ | २८९ | २९९ | ३०९ | ३१९ |
| ५ | २८ | ३८ | ४९ | ५९ | ६९ | ७९ | ८९ | ९९ | १०९ | ११९ | १२९ | १३९ | १४९ | १५९ | १६९ | १७९ | १८९ | १९९ | २०९ | २१९ | २२९ | २३९ | २४९ | २५९ | २६९ | २७९ | २८९ | २९९ | ३०९ | ३१९ | ३२९ |
| कन्या | ४७ | ५८ | ६९ | ७९ | ८९ | ९९ | १०९ | ११९ | १२९ | १३९ | १४९ | १५९ | १६९ | १७९ | १८९ | १९९ | २०९ | २१९ | २२९ | २३९ | २४९ | २५९ | २६९ | २७९ | २८९ | २९९ | ३०९ | ३१९ | ३२९ | ३३९ | ३४९ |
| ६ | ३४ | ४४ | ५४ | ६४ | ७४ | ८४ | ९४ | १०४ | ११४ | १२४ | १३४ | १४४ | १५४ | १६४ | १७४ | १८४ | १९४ | २०४ | २१४ | २२४ | २३४ | २४४ | २५४ | २६४ | २७४ | २८४ | २९४ | ३०४ | ३१४ | ३२४ | ३३४ |
| तुला | १५ | २६ | ३७ | ४८ | ५९ | ६९ | ७९ | ८९ | ९९ | १०९ | ११९ | १२९ | १३९ | १४९ | १५९ | १६९ | १७९ | १८९ | १९९ | २०९ | २१९ | २२९ | २३९ | २४९ | २५९ | २६९ | २७९ | २८९ | २९९ | ३०९ | ३१९ |
| ७ | ३९ | ४० | ४० | ४० | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ |
| वृश्चिक | ५२ | ६३ | ७४ | ८५ | ९६ | १०७ | ११८ | १२९ | १३९ | १४९ | १५९ | १६९ | १७९ | १८९ | १९९ | २०९ | २१९ | २२९ | २३९ | २४९ | २५९ | २६९ | २७९ | २८९ | २९९ | ३०९ | ३१९ | ३२९ | ३३९ | ३४९ | ३५९ |
| ८ | ४५ | ४५ | ४५ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० |
| धनु | ३० | ४१ | ५२ | ६३ | ७४ | ८५ | ९६ | १०७ | ११८ | १२९ | १३९ | १४९ | १५९ | १६९ | १७९ | १८९ | १९९ | २०९ | २१९ | २२९ | २३९ | २४९ | २५९ | २६९ | २७९ | २८९ | २९९ | ३०९ | ३१९ | ३२९ | ३३९ |
| ९ | ५० | ५० | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ | ५५ | ५५ |
| मकर | ४५ | ५५ | ६५ | ७५ | ८५ | ९५ | १०५ | ११५ | १२५ | १३५ | १४५ | १५५ | १६५ | १७५ | १८५ | १९५ | २०५ | २१५ | २२५ | २३५ | २४५ | २५५ | २६५ | २७५ | २८५ | २९५ | ३०५ | ३१५ | ३२५ | ३३५ | ३४५ |
| १० | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ |
| कुम्भ | १५ | २४ | ३३ | ४१ | ५० | ५९ | ६८ | ७७ | ८६ | ९५ | १०४ | ११३ | १२२ | १३१ | १४० | १४९ | १५८ | १६७ | १७६ | १८५ | १९४ | २०३ | २१२ | २२१ | २३० | २३९ | २४८ | २५७ | २६६ | २७५ | २८४ |
| ११ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मीन | ११ | १८ | २६ | ३३ | ४१ | ४९ | ५६ | ६४ | ७१ | ७९ | ८६ | ९३ | १०० | १०७ | ११४ | १२१ | १२८ | १३५ | १४२ | १४९ | १५६ | १६३ | १७० | १७७ | १८४ | १९१ | १९८ | २०५ | २१२ | २१९ | २२६ |

जयपुर, अयोध्या, लखनऊ, कानपुर, गोंडा, गोरखपुर, मथुरा, अजमेर, अलवर, जोधपुर, अलीगढ़, हरदोई, कन्नौज, उन्नाव, देवरिया, फैजाबाद, फर्रुखाबाद भरतपुर, ग्वालियर आदि नगरों के लिए

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---------|----|----|----|----|----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| अंश | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| ० | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| मेष | ५० | ५७ | ४ | १२ | १९ | २६ | ३३ | ४१ | ४९ | ५७ | ६ | १४ | २२ | ३१ | ३९ | ४७ | ५६ | ६४ | ७२ | ८१ | ८९ | ९७ | १०५ | ११३ | १२१ | १२९ | १३७ | १४५ | १५३ | १६१ | १६९ |
| १ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ |
| वृष | ५२ | १ | ९ | १७ | २६ | ३४ | ४२ | ५१ | ६० | ६९ | ७८ | ८७ | ९६ | १०५ | ११४ | १२३ | १३२ | १४१ | १५० | १५९ | १६८ | १७७ | १८६ | १९५ | २०४ | २१३ | २२२ | २३१ | २४० | २४९ | २५८ |
| २ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १७ | १७ |
| मिथुन | ४३ | ५३ | ६३ | ७३ | ८३ | ९३ | १०३ | ११३ | १२३ | १३३ | १४३ | १५३ | १६३ | १७३ | १८३ | १९३ | २०३ | २१३ | २२३ | २३३ | २४३ | २५३ | २६३ | २७३ | २८३ | २९३ | ३०३ | ३१३ | ३२३ | ३३३ | ३४३ |
| ३ | १७ | २८ | ३९ | ४९ | ५९ | ६९ | ७९ | ८९ | ९९ | १०९ | ११९ | १२९ | १३९ | १४९ | १५९ | १६९ | १७९ | १८९ | १९९ | २०९ | २१९ | २२९ | २३९ | २४९ | २५९ | २६९ | २७९ | २८९ | २९९ | ३०९ | ३१९ |
| कर्क | १७ | २८ | ३९ | ४९ | ५९ | ६९ | ७९ | ८९ | ९९ | १०९ | ११९ | १२९ | १३९ | १४९ | १५९ | १६९ | १७९ | १८९ | १९९ | २०९ | २१९ | २२९ | २३९ | २४९ | २५९ | २६९ | २७९ | २८९ | २९९ | ३०९ | ३१९ |
| ४ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ | २८ |
| सिंह | ३ | १५ | २७ | ३८ | ४० | ५१ | ६२ | ७३ | ८४ | ९५ | १०६ | ११७ | १२८ | १३९ | १४९ | १५९ | १६९ | १७९ | १८९ | १९९ | २०९ | २१९ | २२९ | २३९ | २४९ | २५९ | २६९ | २७९ | २८९ | २९९ | ३०९ |
| ५ | २८ | २८ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ |
| कन्या | ४५ | ५५ | ७ | १८ | २० | ३१ | ४१ | ५२ | ६३ | ७४ | ८५ | ९६ | १०७ | ११८ | १२९ | १३९ | १४९ | १५९ | १६९ | १७९ | १८९ | १९९ | २०९ | २१९ | २२९ | २३९ | २४९ | २५९ | २६९ | २७९ | २८९ |
| ६ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ |
| तुला | २४ | ३५ | ४६ | ५७ | ९ | २० | ३१ | ४३ | ५४ | ६ | १७ | २९ | ४१ | ५२ | ०४ | १५ | २७ | ३७ | ४७ | ५० | २ | १३ | २५ | ३७ | ४८ | ०० | ११ | २३ | ३५ | ४६ | ५८ |
| ७ | ४० | ४० | ४० | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ | ४५ |
| वृश्चिक | ९ | २१ | ३३ | ४४ | ५६ | ७ | १९ | ३१ | ४२ | ५३ | ५ | १६ | २८ | ३९ | ५१ | २ | १४ | २५ | ३६ | ४७ | ५८ | ११ | २२ | ३४ | ४५ | ५६ | ०८ | १९ | ३१ | ४२ | ५४ |
| ८ | ४५ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ |
| धनु | ५४ | ५ | १६ | २८ | ३९ | ५१ | २ | १४ | २४ | ३४ | ४४ | ५४ | ६४ | ७४ | ८४ | ९४ | १०४ | ११४ | १२४ | १३४ | १४४ | १५४ | १६४ | १७४ | १८४ | १९४ | २०४ | २१४ | २२४ | २३४ | २४४ |
| ९ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ |
| मकर | ६ | १६ | २६ | ३६ | ४६ | ५६ | ०७ | १७ | २५ | ३५ | ४२ | ५० | ५८ | ७ | १५ | २३ | ३२ | ४० | ४८ | ५७ | ५ | १३ | २२ | ३० | ३८ | ४७ | ५५ | ६४ | ७३ | ८२ | ९१ |
| १० | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ |
| कुम्भ | २८ | ३७ | ४५ | ५३ | २ | १० | १८ | २७ | ३४ | ४१ | ४८ | ५६ | ६४ | ७३ | ८० | ८७ | ९४ | १०१ | १०८ | ११५ | १२२ | १२९ | १३६ | १४३ | १५० | १५७ | १६४ | १७१ | १७८ | १८५ | १९२ |
| ११ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| मीन | १३ | २० | २७ | ३५ | ४२ | ४९ | ५६ | ४ | ११ | १८ | २५ | ३३ | ४० | ४७ | ५४ | ६१ | ६८ | ७५ | ८२ | ८९ | ९६ | १०३ | ११० | ११७ | १२४ | १३१ | १३८ | १४५ | १५२ | १५९ | १६६ |

लग्न सारणी अक्षांश ३१।२०

उत्तर पलभा (७।१७।२१)

जालन्धर, अमृतसर, लुधियाना, चण्डीगढ़, रोपड़, फगवाड़ा, कपूरथला, होशियारपुर, फिरोज़पुर, शिमला, मण्डी, हमीरपुर, ऊना आदि के लिए

| अंश | | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | |
|-----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|
| ० मेष | घ. प. | २ ४१ | २ ४८ | २ ५५ | ३ २ | ३ ९ | ३ १६ | ३ २३ | ३ ३० | ३ ३८ | ४ ४६ | ४ ५३ | ४ ६० | ४ ६८ | ४ ७५ | ४ ८२ | ४ ८९ | ४ ९६ | ४ १०३ | ४ ११० | ४ ११७ | ४ १२४ | ४ १३१ | ४ १३८ | ४ १४५ | ४ १५२ | ४ १५९ | ४ १६६ | ४ १७३ | ४ १८० | ४ १८७ | ४ १९४ | ४ २०१ |
| १ वृष | घ. प. | ६ ३४ | ६ ४२ | ६ ५० | ६ ५८ | ६ ६ | ७ १४ | ७ २३ | ७ ३० | ७ ४० | ७ ५० | ८ ० | ८ १० | ८ २० | ८ ३० | ८ ४० | ८ ५० | ९ ० | ९ १० | ९ २० | ९ ३० | ९ ४० | ९ ५० | ९ ६० | ९ ७० | ९ ८० | ९ ९० | १० ० | १० १० | १० २० | १० ३० | १० ४० | १० ५० |
| २ मिथुन | घ. प. | ११ २० | ११ ३० | ११ ४० | ११ ५० | १२ ० | १२ १० | १२ २० | १२ ३० | १२ ४१ | १२ ५३ | १३ ५ | १३ १६ | १३ २७ | १३ ३८ | १३ ५० | १४ ३ | १४ १४ | १४ २५ | १४ ३७ | १४ ४८ | १४ ५० | १५ ० | १५ ११ | १५ २३ | १५ ३४ | १५ ४६ | १५ ५८ | १६ ०९ | १६ २१ | १६ ३२ | १६ ४४ | १६ ५५ |
| ३ कर्क | घ. प. | १६ ५५ | १७ ०७ | १७ १९ | १७ ३१ | १७ ४३ | १७ ५४ | १८ ०६ | १८ १७ | १८ २९ | १८ ४१ | १८ ५३ | १९ ५ | १९ १७ | १९ २९ | १९ ४० | १९ ५२ | २० ४ | २० १६ | २० २८ | २० ४० | २० ५२ | २१ ०३ | २१ १५ | २१ २७ | २१ ३९ | २१ ५१ | २२ ०३ | २२ १५ | २२ २७ | २२ ३९ | २२ ५० | |
| ४ सिंह | घ. प. | २२ ५० | २३ २ | २३ १४ | २३ २६ | २३ ३८ | २३ ५० | २४ २ | २४ १३ | २४ २५ | २४ ३७ | २४ ४८ | २५ ०० | २५ १२ | २५ २३ | २५ ३५ | २५ ४७ | २५ ५८ | २६ १० | २६ २२ | २६ ३३ | २६ ४५ | २६ ५६ | २७ ०८ | २७ २० | २७ ३२ | २७ ४३ | २७ ५५ | २८ ७ | २८ १८ | २८ ३० | २८ ४२ | |
| ५ कन्या | घ. प. | २८ ४२ | २८ ५३ | २९ ०५ | २९ १७ | २९ २८ | २९ ४० | २९ ५२ | ३० ०३ | ३० १५ | ३० २७ | ३० ३८ | ३० ५० | ३१ ०२ | ३१ १३ | ३१ २५ | ३१ ३७ | ३१ ४८ | ३२ ० | ३२ १२ | ३२ २३ | ३२ ३५ | ३२ ४७ | ३२ ५८ | ३३ ०८ | ३३ २० | ३३ ३२ | ३३ ४३ | ३३ ५५ | ३३ ७ | ३३ १८ | ३४ ३० | |
| ६ तुला | घ. प. | ३४ ३३ | ३४ ४४ | ३४ ५६ | ३५ ०८ | ३५ १९ | ३५ ३१ | ३५ ४३ | ३५ ५४ | ३६ ६ | ३६ १८ | ३६ २९ | ३६ ४२ | ३६ ५४ | ३७ ०६ | ३७ १७ | ३७ २९ | ३७ ४१ | ३७ ५३ | ३८ ०५ | ३८ १७ | ३८ २९ | ३८ ४१ | ३८ ५३ | ३९ ०५ | ३९ १७ | ३९ २९ | ३९ ४१ | ३९ ५३ | ४० ०५ | ४० १६ | ४० २८ | |
| ७ वृश्चिक | घ. प. | ४० २८ | ४० ४० | ४० ५२ | ४१ ०४ | ४१ १६ | ४१ २८ | ४१ ४० | ४१ ५१ | ४२ ०३ | ४२ १५ | ४२ २६ | ४२ ३८ | ४२ ४९ | ४३ ०१ | ४३ १२ | ४३ २४ | ४३ ३६ | ४३ ४७ | ४३ ५९ | ४४ १० | ४४ २२ | ४४ ३३ | ४४ ४५ | ४४ ५६ | ४५ ०८ | ४५ २० | ४५ ३२ | ४५ ४४ | ४५ ५६ | ४६ ०७ | ४६ १८ | |
| ८ धनु | घ. प. | ४६ १८ | ४६ ३० | ४६ ४२ | ४६ ५४ | ४७ ०६ | ४७ १८ | ४७ २८ | ४७ ३९ | ४७ ५१ | ४७ ६२ | ४८ ०४ | ४८ १६ | ४८ २८ | ४८ ४० | ४८ ५२ | ४८ ६३ | ४९ ०५ | ४९ १७ | ४९ २९ | ४९ ४१ | ४९ ५३ | ४९ ६५ | ५० ०८ | ५० २० | ५० ३२ | ५० ४४ | ५० ५६ | ५० ०७ | ५१ १८ | ५१ २९ | ५१ ४० | |
| ९ मकर | घ. प. | ५१ २९ | ५१ ३९ | ५१ ४९ | ५१ ५८ | ५२ ९ | ५२ १८ | ५२ २८ | ५२ ३८ | ५२ ४७ | ५२ ५५ | ५३ ०३ | ५३ ११ | ५३ २१ | ५३ ३० | ५३ ४० | ५३ ५१ | ५४ ०२ | ५४ १२ | ५४ २२ | ५४ ३२ | ५४ ४२ | ५४ ५२ | ५५ ०३ | ५५ १३ | ५५ २३ | ५५ ३३ | ५५ ४३ | ५५ ५३ | ५६ ०४ | ५६ १४ | ५६ २४ | |
| १० कुम्भ | घ. प. | ५५ ४३ | ५५ ५१ | ५५ ५९ | ५६ ७ | ५६ १५ | ५६ २३ | ५६ ३१ | ५६ ३९ | ५६ ४६ | ५६ ५३ | ५७ ०० | ५७ ७ | ५७ १४ | ५७ २० | ५७ २७ | ५७ ३४ | ५७ ४१ | ५७ ४७ | ५७ ५४ | ५८ ०१ | ५८ ८ | ५८ १६ | ५८ २४ | ५८ ३२ | ५८ ४० | ५८ ४६ | ५८ ५३ | ५९ ० | ५९ ६ | ५९ १३ | ५९ २० | |
| ११ मान | घ. प. | ५९ १६ | ५९ २३ | ५९ २९ | ५९ ३६ | ५९ ४३ | ५९ ५० | ५९ ५७ | ६० ३ | ६० १० | ६० १७ | ६० २४ | ६० ३१ | ६० ३८ | ६० ४४ | ६० ५१ | ६० ५८ | ६१ ५ | ६१ १२ | ६१ १९ | ६१ २६ | ६१ ३३ | ६१ ४० | ६१ ४६ | ६१ ५३ | ६१ ६० | ६२ ६ | ६२ १३ | ६२ २० | ६२ २७ | ६२ ३४ | ६२ ४१ | |

लग्न सारणी अक्षांश २९°

उत्तर पलभा (६।३९।०५)

दिल्ली, रोहतक, मेरठ, हिसार, गुड़गांव, मुरादाबाद, नैनीताल, गाज़ियाबाद आदि के लिए उपयोगी

| अंश | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|-----------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|
| ० मेष | घ. ४८ | घ. ५५ | घ. ६२ | घ. ६९ | घ. ७६ | घ. ८३ | घ. ९० | घ. ९७ | घ. १०४ | घ. १११ | घ. ११८ | घ. १२५ | घ. १३२ | घ. १३९ | घ. १४६ | घ. १५३ | घ. १६० | घ. १६७ | घ. १७४ | घ. १८१ | घ. १८८ | घ. १९५ | घ. २०२ | घ. २०९ | घ. २१६ | घ. २२३ | घ. २३० | घ. २३७ | घ. २४४ | घ. २५१ | घ. २५८ |
| १ वृष | घ. ४८ | घ. ५६ | घ. ६४ | घ. ७३ | घ. ८१ | घ. ८९ | घ. ९७ | घ. १०५ | घ. ११३ | घ. १२१ | घ. १२९ | घ. १३७ | घ. १४५ | घ. १५३ | घ. १६१ | घ. १६९ | घ. १७७ | घ. १८५ | घ. १९३ | घ. २०१ | घ. २०९ | घ. २१७ | घ. २२५ | घ. २३३ | घ. २४१ | घ. २४९ | घ. २५७ | घ. २६५ | घ. २७३ | घ. २८१ | |
| २ मिथुन | घ. ३७ | घ. ४७ | घ. ५७ | घ. ६७ | घ. ७७ | घ. ८७ | घ. ९७ | घ. १०७ | घ. ११७ | घ. १२७ | घ. १३७ | घ. १४७ | घ. १५७ | घ. १६७ | घ. १७७ | घ. १८७ | घ. १९७ | घ. २०७ | घ. २१७ | घ. २२७ | घ. २३७ | घ. २४७ | घ. २५७ | घ. २६७ | घ. २७७ | घ. २८७ | घ. २९७ | घ. ३०७ | घ. ३१७ | घ. ३२७ | |
| ३ कर्क | घ. १७ | घ. १७ | घ. १७ | घ. १७ | घ. १७ | घ. १८ | घ. १८ | घ. १८ | घ. १८ | घ. १९ | घ. १९ | घ. १९ | घ. १९ | घ. १९ | घ. २० | घ. २० | घ. २० | घ. २० | घ. २० | घ. २१ | घ. २१ | घ. २१ | घ. २१ | घ. २१ | घ. २१ | घ. २२ | घ. २२ | घ. २२ | घ. २२ | घ. २३ | घ. २३ |
| ४ सिंह | घ. २३ | घ. २३ | घ. २३ | घ. २३ | घ. २३ | घ. २३ | घ. २४ | घ. २४ | घ. २४ | घ. २४ | घ. २५ | घ. २५ | घ. २५ | घ. २५ | घ. २५ | घ. २५ | घ. २६ | घ. २६ | घ. २६ | घ. २६ | घ. २६ | घ. २७ | घ. २७ | घ. २७ | घ. २७ | घ. २७ | घ. २७ | घ. २८ | घ. २८ | घ. २८ | घ. २८ |
| ५ कन्या | घ. २८ | घ. २८ | घ. २९ | घ. २९ | घ. २९ | घ. २९ | घ. ३० | घ. ३० | घ. ३० | घ. ३० | घ. ३० | घ. ३१ | घ. ३१ | घ. ३१ | घ. ३१ | घ. ३१ | घ. ३१ | घ. ३२ | घ. ३२ | घ. ३२ | घ. ३२ | घ. ३२ | घ. ३२ | घ. ३२ | घ. ३३ | घ. ३३ | घ. ३३ | घ. ३३ | घ. ३४ | घ. ३४ | घ. ३४ |
| ६ तुला | घ. ३४ | घ. ३४ | घ. ३४ | घ. ३५ | घ. ३५ | घ. ३५ | घ. ३५ | घ. ३५ | घ. ३६ | घ. ३६ | घ. ३६ | घ. ३६ | घ. ३६ | घ. ३७ | घ. ३७ | घ. ३७ | घ. ३७ | घ. ३७ | घ. ३८ | घ. ३८ | घ. ३८ | घ. ३८ | घ. ३८ | घ. ३८ | घ. ३९ | घ. ३९ | घ. ३९ | घ. ३९ | घ. ४० | घ. ४० | घ. ४० |
| ७ वृश्चिक | घ. ४० | घ. ४० | घ. ४० | घ. ४० | घ. ४१ | घ. ४१ | घ. ४१ | घ. ४१ | घ. ४१ | घ. ४२ | घ. ४२ | घ. ४२ | घ. ४२ | घ. ४२ | घ. ४३ | घ. ४३ | घ. ४३ | घ. ४३ | घ. ४३ | घ. ४४ | घ. ४४ | घ. ४४ | घ. ४४ | घ. ४४ | घ. ४४ | घ. ४५ | घ. ४५ | घ. ४५ | घ. ४५ | घ. ४५ | घ. ४५ |
| ८ धनु | घ. ४५ | घ. ४६ | घ. ४६ | घ. ४६ | घ. ४६ | घ. ४६ | घ. ४७ | घ. ४७ | घ. ४७ | घ. ४७ | घ. ४७ | घ. ४८ | घ. ४८ | घ. ४८ | घ. ४८ | घ. ४८ | घ. ४९ | घ. ४९ | घ. ४९ | घ. ४९ | घ. ४९ | घ. ४९ | घ. ४९ | घ. ४९ | घ. ५० | घ. ५० | घ. ५० | घ. ५० | घ. ५१ | घ. ५१ | घ. ५१ |
| ९ मकर | घ. ५१ | घ. ५१ | घ. ५१ | घ. ५१ | घ. ५१ | घ. ५२ | घ. ५२ | घ. ५२ | घ. ५२ | घ. ५२ | घ. ५२ | घ. ५३ | घ. ५३ | घ. ५३ | घ. ५३ | घ. ५३ | घ. ५३ | घ. ५३ | घ. ५३ | घ. ५४ | घ. ५४ | घ. ५४ | घ. ५४ | घ. ५४ | घ. ५४ | घ. ५४ | घ. ५४ | घ. ५४ | घ. ५५ | घ. ५५ | घ. ५५ |
| १० कुम्भ | घ. ५१ | घ. ५१ | घ. ५१ | घ. ५१ | घ. ५१ | घ. ५२ | घ. ५२ | घ. ५२ | घ. ५२ | घ. ५२ | घ. ५२ | घ. ५३ | घ. ५३ | घ. ५३ | घ. ५३ | घ. ५३ | घ. ५३ | घ. ५३ | घ. ५३ | घ. ५४ | घ. ५४ | घ. ५४ | घ. ५४ | घ. ५४ | घ. ५४ | घ. ५४ | घ. ५४ | घ. ५४ | घ. ५५ | घ. ५५ | घ. ५५ |
| ११ मीन | घ. ५१ | घ. ५१ | घ. ५१ | घ. ५१ | घ. ५१ | घ. ५१ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |

[illegible]

पलभा ७/४८/३०

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|--------------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|
| अंश | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | |
| ० मेघ | घ. प. | २ ३७ | २ ४४ | २ ५१ | २ ५८ | ३ ४ | ३ ११ | ३ १८ | ३ २४ | ३ ३२ | ३ ४० | ३ ४८ | ४ ५६ | ४ ४ | ४ १२ | ४ २० | ४ २८ | ४ ३५ | ४ ४३ | ४ ५१ | ४ ५९ | ५ ७ | ५ १५ | ५ २३ | ५ ३१ | ५ ३९ | ५ ४७ | ५ ५४ | ६ २ | ६ १० | ६ १८ | ६ २६ |
| १ वृष | घ. प. | ६ २६ | ६ ३४ | ६ ४२ | ६ ५० | ६ ५८ | ७ ६ | ७ १३ | ७ २१ | ७ २९ | ७ ३७ | ७ ४५ | ७ ५१ | ८ १ | ८ ९ | ८ १७ | ८ २५ | ८ ३३ | ८ ४१ | ८ ४९ | ८ ५७ | ९ ३० | ९ ४० | ९ ५० | ९ ५० | १० ० | १० १० | १० २० | १० ३० | १० ४० | १० ५० | ११ ० |
| २ मिथुन | घ. प. | ११ १० | ११ २० | ११ ३० | ११ ४० | ११ ५० | ११ ५९ | १२ ९ | १२ १९ | १२ ३२ | १२ ४३ | १२ ५४ | १२ ६ | १३ १७ | १३ २९ | १३ ४१ | १३ ५२ | १४ ४ | १४ १५ | १४ २७ | १४ ३९ | १४ ५० | १५ २ | १५ १३ | १५ २५ | १५ ३७ | १५ ४८ | १६ ०० | १६ ११ | १६ २३ | १६ ३५ | १६ ४६ |
| ३ कर्क | घ. प. | १६ ४६ | १६ ५८ | १७ ९ | १७ ११ | १७ २३ | १७ ३५ | १७ ४७ | १८ ५६ | १८ ७ | १८ १९ | १८ ३१ | १८ ४३ | १९ ५५ | १९ ६ | १९ १८ | १९ ३० | १९ ४४ | १९ ५६ | २० ६ | २० १८ | २० ३० | २० ४४ | २० ५६ | २१ ६ | २१ १८ | २१ ३० | २१ ४४ | २१ ५६ | २२ ६ | २२ १८ | २२ ३० |
| ४ सिंह | घ. प. | २२ ४४ | २२ ५६ | २३ ६ | २३ १८ | २३ ३० | २३ ४२ | २४ ५६ | २४ ६ | २४ १८ | २४ ३० | २४ ४४ | २४ ५६ | २५ ६ | २५ १९ | २५ ३० | २५ ४३ | २५ ५५ | २६ ७ | २६ १९ | २६ ३० | २६ ४२ | २६ ५४ | २७ ६ | २७ १८ | २७ ३० | २७ ४१ | २७ ५३ | २८ ५ | २८ १७ | २८ २९ | २८ ४१ |
| ५ कन्या | घ. प. | २८ ४१ | २८ ५२ | २९ ४ | २९ १६ | २९ २८ | २९ ४० | २९ ५२ | ३० ३ | ३० १५ | ३० २७ | ३० ३९ | ३० ५१ | ३१ १४ | ३१ २६ | ३१ ३८ | ३१ ५० | ३२ २ | ३२ १४ | ३२ २५ | ३२ ३७ | ३२ ४९ | ३३ १ | ३३ १३ | ३३ २५ | ३३ ३६ | ३३ ४८ | ३४ ० | ३४ १२ | ३४ २४ | ३४ ३६ | |
| ६ तुला | घ. प. | ३४ ३६ | ३४ ४७ | ३४ ५९ | ३५ ११ | ३५ २३ | ३५ ३५ | ३५ ४७ | ३५ ५८ | ३६ १० | ३६ २२ | ३६ ३४ | ३६ ४६ | ३६ ५९ | ३७ ११ | ३७ २३ | ३७ ३५ | ३७ ४७ | ३७ ५९ | ३८ ११ | ३८ २३ | ३८ ३५ | ३८ ४७ | ३८ ५९ | ३९ ११ | ३९ २३ | ३९ ३५ | ४० ४७ | ४० ५९ | ४० ११ | ४० २३ | ४० ३५ |
| ७ वृश्चिक | घ. प. | ४० ३५ | ४० ४७ | ४० ५९ | ४१ ११ | ४१ २३ | ४१ ३५ | ४१ ४७ | ४१ ५९ | ४२ ११ | ४२ २३ | ४२ ३४ | ४२ ४६ | ४२ ५७ | ४३ ९ | ४३ २१ | ४३ ३२ | ४३ ४४ | ४३ ५५ | ४३ ७ | ४३ १९ | ४३ ३० | ४४ ४२ | ४४ ५३ | ४४ ६५ | ४४ ७६ | ४४ ८८ | ४५ १७ | ४५ २८ | ४५ ४१ | ४५ ५३ | ४६ २६ |
| ८ धनु | घ. प. | ४६ २६ | ४६ ३८ | ४६ | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

दशमलग्न सारणी

(सर्वत्र उपयोगी)

लंकोदय २७८ । २९९ । ३२३

| अंश | ०० | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | ०८ | ०९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|---------|----|----|----|----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| ० | १८ | १८ | १८ | १८ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २३ | २३ |
| मेघ | ३३ | ४२ | ५२ | ६१ | ७० | ७९ | ८८ | ९७ | १०६ | ११५ | १२४ | १३३ | १४२ | १५१ | १६० | १६९ | १७८ | १८७ | १९६ | २०५ | २१४ | २२३ | २३२ | २४१ | २५० | २५९ | २६८ | २७७ | २८६ | २९५ | ३०४ |
| १ | २३ | २३ | २३ | २३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ |
| वृष | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ६७ | ७७ | ८७ | ९७ | १०७ | ११७ | १२७ | १३७ | १४७ | १५७ | १६७ | १७७ | १८७ | १९७ | २०७ | २१७ | २२७ | २३७ | २४७ | २५७ | २६७ | २७७ | २८७ | २९७ | ३०७ | ३१७ | ३२७ |
| २ | २८ | २८ | २८ | २८ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ |
| मिथुन | ४५ | ५५ | ६५ | ७५ | ८५ | ९५ | १०५ | ११५ | १२५ | १३५ | १४५ | १५५ | १६५ | १७५ | १८५ | १९५ | २०५ | २१५ | २२५ | २३५ | २४५ | २५५ | २६५ | २७५ | २८५ | २९५ | ३०५ | ३१५ | ३२५ | ३३५ | ३४५ |
| ३ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ | ३९ | ४० |
| कर्क | ८ | १८ | २९ | ४० | ५१ | ६१ | ७१ | ८१ | ९१ | १०१ | १११ | १२१ | १३१ | १४१ | १५१ | १६१ | १७१ | १८१ | १९१ | २०१ | २११ | २२१ | २३१ | २४१ | २५१ | २६१ | २७१ | २८१ | २९१ | ३०१ | ३११ |
| ४ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ४० | ४० | ४० | ४० | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ |
| सिंह | १२ | २२ | ३२ | ४२ | ५२ | ६२ | ७२ | ८२ | ९२ | १०२ | ११२ | १२२ | १३२ | १४२ | १५२ | १६२ | १७२ | १८२ | १९२ | २०२ | २१२ | २२२ | २३२ | २४२ | २५२ | २६२ | २७२ | २८२ | २९२ | ३०२ | ३१२ |
| ५ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४९ |
| कन्या | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५४ |
| ६ | ३३ | ४२ | ५२ | ६२ | ७२ | ८२ | ९२ | १०२ | ११२ | १२२ | १३२ | १४२ | १५२ | १६२ | १७२ | १८२ | १९२ | २०२ | २१२ | २२२ | २३२ | २४२ | २५२ | २६२ | २७२ | २८२ | २९२ | ३०२ | ३१२ | ३२२ | ३३२ |
| तुला | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५९ |
| ७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ६७ | ७७ | ८७ | ९७ | १०७ | ११७ | १२७ | १३७ | १४७ | १५७ | १६७ | १७७ | १८७ | १९७ | २०७ | २१७ | २२७ | २३७ | २४७ | २५७ | २६७ | २७७ | २८७ | २९७ | ३०७ | ३१७ | ३२७ |
| वृश्चिक | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ६० | ६० | ६० | ६० | ६० | ६० | ६१ | ६१ | ६१ | ६१ | ६१ | ६१ | ६१ | ६२ | ६२ | ६२ | ६२ | ६२ | ६३ | ६३ | ६४ |
| ८ | ४५ | ५५ | ६५ | ७५ | ८५ | ९५ | १०५ | ११५ | १२५ | १३५ | १४५ | १५५ | १६५ | १७५ | १८५ | १९५ | २०५ | २१५ | २२५ | २३५ | २४५ | २५५ | २६५ | २७५ | २८५ | २९५ | ३०५ | ३१५ | ३२५ | ३३५ | ३४५ |
| धनु | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | १० |
| ९ | १८ | २९ | ४० | ५१ | ६१ | ७१ | ८१ | ९१ | १०१ | १११ | १२१ | १३१ | १४१ | १५१ | १६१ | १७१ | १८१ | १९१ | २०१ | २११ | २२१ | २३१ | २४१ | २५१ | २६१ | २७१ | २८१ | २९१ | ३०१ | ३११ | ३२१ |
| मकर | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ | १५ |
| १० | २२ | ३२ | ४२ | ५२ | ६२ | ७२ | ८२ | ९२ | १०२ | ११२ | १२२ | १३२ | १४२ | १५२ | १६२ | १७२ | १८२ | १९२ | २०२ | २१२ | २२२ | २३२ | २४२ | २५२ | २६२ | २७२ | २८२ | २९२ | ३०२ | ३१२ | ३२२ |
| कुम्भ | २३ | २३ | २३ | २३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ | २९ |
| ११ | ५५ | ६५ | ७५ | ८५ | ९५ | १०५ | ११५ | १२५ | १३५ | १४५ | १५५ | १६५ | १७५ | १८५ | १९५ | २०५ | २१५ | २२५ | २३५ | २४५ | २५५ | २६५ | २७५ | २८५ | २९५ | ३०५ | ३१५ | ३२५ | ३३५ | ३४५ | ३५५ |
| मीन | ५५ | ६५ | ७५ | ८५ | ९५ | १०५ | ११५ | १२५ | १३५ | १४५ | १५५ | १६५ | १७५ | १८५ | १९५ | २०५ | २१५ | २२५ | २३५ | २४५ | २५५ | २६५ | २७५ | २८५ | २९५ | ३०५ | ३१५ | ३२५ | ३३५ | ३४५ | ३५५ |

ग्रहों के छः प्रकार के बल

स्थान बल, दिग्बल, काल बल, नैसर्गिक बल, चेष्टा बल और दृक् बल, यह छः प्रकार के बल हैं। फलित ज्ञान के लिए इन बलों को जान लेना आवश्यक है। स्थान बल—जो ग्रह उच्च, मित्रगृही, मूल त्रिकोणस्थ, स्वन्वशास्थ अथवा द्रेष्काणस्थ होता है, वह स्थान बली कहलाता है। दिग्बल—बुध और गुरु लग्न में रहने से, शुक्र और चन्द्रमा चतुर्थ में रहने से, शनि सप्तम में रहने से, और मंगल दशम स्थान में रहने से दिग्बली होते हैं। कालबल—रात में जन्म होने पर चन्द्र, शनि और मंगल तथा दिन में जन्म होने पर सूर्य, बुध और शुक्र कालबली होते हैं। मतान्तर से बध को सर्वदा काल बली माना जाता है। नैसर्गिक बल—शनि, मंगल, बुध, शुक्र, चन्द्र और सूर्य उत्तरोत्तर बली होते हैं। चेष्टाबल—मकर से मिथुन पर्यन्त किसी राशि में रहने से सूर्य और चन्द्रमा तथा मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि चन्द्रमा के साथ रहने से चेष्टाबली होते हैं। दृक् बल—शुभ ग्रहों से दृष्ट ग्रह दृक् बली होते हैं। बलवान् ग्रह अपने स्वभाव के अनुसार जिस भाव में रहता है, उस भाव का फल देता है। पाठकों को राशि स्वभाव और ग्रहस्वभाव दोनों का समन्वय कर फल अवागत करना चाहिये।

दशम स्पष्ट तथा भावस्पष्ट

इष्ट कालिक द्वादश भावों को वास्तविक स्थिति जानने के लिए भाव-स्पष्ट किया जाता है। भाव स्पष्ट के लिए दशम लग्न सारिणी का प्रयोग किया जाता है॥ विधि इस प्रकार है।—लग्न स्पष्ट करने के लिए लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट के राशयशां से प्राप्त घटी-पत्नी को इष्टकाल के घटी पत्नी में जमा करने पर जो योगफल मिले उसको दशम लग्न सारिणी के निकटस्थ कोष्ठकों में देखने पर जो राशि अंशादि प्राप्त होंगे वही दशम लग्न स्पष्ट होगा।

भाव स्पष्ट का उदाहरण—मान लो किसी जातक का जन्मोष्टकाल २० १४५ घट्यादि है तथा जालंधर लग्न सा० से सूर्य स्पष्ट (० १२ १७) द्वारा प्रातःकाल ४ १९ है, और लग्न स्पष्ट ४। १० ३५ है। इष्ट और सूर्य स्प. से प्रातःकालों को जमा करने से हमें २४ ५४ घट्यादि प्राप्त हुए। इन प्राप्त योगकों को दशम लग्न सारिणी में देखने पर हमें दशम भाव स्पष्ट १८ ३६ प्राप्त हुआ। दशम भाव स्प. में ६ राशि जोड़ने से चतुर्थ भाव तथा ४ थे भाव में से लग्न भाव स्पष्ट घटा कर शेष को ६ द्वारा भाग देने पर जो अंश-कलादि प्राप्त हों, वह पक्षांश कहलाता है। पक्षांश को लग्न भाव में जोड़ने से लग्न की सन्धि तथा इस सन्धि में पक्षांश को पुनः जोड़ने से द्वितीय भाव स्प. होगा। द्वितीय भाव में पक्षांश जोड़ने से दूसरे भाव की सन्धि, इस सन्धि में पक्षांश जमा करने से तृतीय भाव होगा। तृतीय भाव में पक्षांश जमा करने से चरे भाव की सन्धि, और इस सन्धि में पक्षांश जोड़ने से चतुर्थ भाव प्राप्त हो जाता है। अब उसी पक्षांश को एक राशि में से घटाकर शेष को ४वें भाव में जोड़ने से चतुर्थ भाव की सन्धि, फिर इस सन्धि में उसी शेष को जोड़ने से पंचम भाव होगा। लग्न भाव स्पष्ट में ६ राशि जोड़ने से सप्तम भाव तथा प्रथम लग्नभाव की सन्धि में ६ राशि युक्त करने से सप्तम भाव की सन्धि होगी। इसी प्रकार २९, ३९ भावों में प्रत्येक में क्रम से ६-६ राशि जोड़ने से अष्टम, नवम, दशम, एकादश आदि भाव एवं सन्धियां प्राप्त हो जाती हैं।

—पं० पन्ना लाल ज्यो.

षट्पदी सारणी चक्रम

| भाग | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | ०८ | ०९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ |
|---------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| अंशादि | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ |
| रा. घट. | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| २ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ३ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ६ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ७ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ८ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ११ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १२ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १३ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १६ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १७ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १८ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| २० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| २१ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| २२ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| २३ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| २४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| २५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| २६ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

षड्वर्ग में १ होरा, २ द्रेष्काण, ३ सप्तमांश, ४ नवमांश, ५ द्वादशांश, ६ त्रिंशांश स्पष्ट कुण्डलियों का विचार किया जाता है। यदि ६ वर्गों में वर्गेश अधिकांश शुभ ग्रह हों तो शुभफल यदि अधिकांश अशुभ ग्रह हों तो अनिष्ट फल देते हैं।

षड्वर्ग सारणी — होरादि ६ वर्गों के लग्न व उनमें ग्रह स्थापन हेतु पीछे जो षड्वर्ग सारिणी दी गई है। अपने लग्न स्पष्ट से प्राप्त राशि अंशानुसार नवांशदि लग्न का ज्ञान करें। राशि व होरादि वर्ग के सामने और अंशों के नीचे कोष्ठक में जो अंक होगा, वही उस वर्ग का लग्न होगा।

उदाहरण — मान लें लग्न स्पष्ट ५।१२९।२५ है। यहां पर लग्न राशि कन्या और अंशदि ४।२९।२५ है। सारिणी में ३ भाग ४।१७ पर समाप्त होता है। अतः हमारे अभीष्ट अंशदि (४।२९) ४ चतुर्थ खाने के नीचे पड़ेगे। अतएवं कन्या राशि के सामने (दाईं ओर) तथा चतुर्थ भाग के नीचे की तालिका पर होरा के सामने ४ अर्थात् कर्क लग्न, द्रेष्काण ६ (कन्या), सप्तमांश का १ (मेष), नवमांश का १९ (कुम्भ), द्वादशांश का ७ (तुला), एवं त्रिंशांश का २ (वृष) लग्न निकलेगा। इन वर्गों के स्वामी क्रमशः चंद्र, बुध, मंगल, शनि, शुक्र व शुक्र ग्रहों में २ पापग्रह तथा शेष ४ शुभ ग्रह होने के कारण उक्त कन्या लग्न शुभग्रह फल युक्त-श्रेष्ठ फल होगी। ग्रहस्थापन हेतु उदाहरणार्थ यदि सूर्य स्पष्ट ७।८।१०।१२ है, ७वें भाग एवं ८।३४।१७ अंशदि के नीचे तथा (७) एवं राशि वृश्चिक के सामने दाईं ओर कोष्ठक के होरादि वर्गों में क्रमशः ४।८।३४।११ राशियां होंगी। सूर्य होरादि वर्गों में तदनुसार राशि में स्थापित करें। इसी भाँति अन्य चन्द्रादि ग्रहों की स्थापना करेंगे।

होरा फल

होरा लग्न में सिंह (५) अथवा कर्क लग्न ही रहता है। होरा लग्न विषम ५ राशि हो और सूर्य उसी में स्थित हो तो जातक पुरुषार्थी, उच्चपदाभिलाषी, शूरवीर होगा, गुरु, मंगलादि मित्र ग्रह साथ में हों तो व्यक्ति विद्वान्, धन धान्य युक्त उत्तम मित्र युक्त, उच्चपदासीन, नेता व सम्पत्तिवान् होगा। यदि सम ४ राशि सूर्य होरा में शनि, भौम क्षीण चंद्र, राहु आदि पाप ग्रह हों तो जातक नीच प्रकृति वाला, कुल पर्यादा विरुद्ध आचरण करने वाला एवं निर्धनी होता है। होरा लग्न में सम राशि हो और चन्द्रमा उसी में स्थित हो तथा साथ में शुक्रादि शुभ ग्रह हों तो जातक मृदु-भाषी, शान्त स्वभाव, व्यवसायी, समृद्ध, धनी, सुखी परिवार वाला, सुशील व राजदरबार से लाभ प्राप्त करने वाला होगा। यदि चन्द्र होरा में सूर्य, शनि आदि पाप ग्रह हों तो नीचाचरण वाला निर्धनी, नीच कार्यों में प्रवृत्त, सुख में कमी होगी।

द्रेष्काण फल विचार

अपने वर्ग के द्रेष्काण में स्थित सौम्य ग्रह केन्द्र अथवा त्रिकोण में हों तो जातक सत्यवक्ता,

धनी, विद्वान् व अनेक कलाओं का ज्ञाता होता है। द्रेष्काणपति शुभ ग्रह की राशि में हो या शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट अथवा युक्त हो तो धन, मान व यश की वृद्धि और अनेक सुखों की पूर्ति करता है। द्रेष्काणपति चन्द्रमा से युक्त व भौम अथवा शुक्र द्वारा वीक्षित हो तो जातक को स्वार्जित धन की प्राप्ति होती है। द्रेष्काणेश शत्रु या नीच राशि में हो तो उस राशि अनुसार शरीर में घाव, चोटदि का चिह्न होगा। जिस द्रेष्काण में चन्द्रमा स्थित हो उस द्रेष्काण का स्वामी सौम्य ग्रहों द्वारा दृष्ट हों तो तदग्रहानुरूप शुभफलदायक होगा।

सप्तमांशफल विचार

सप्तमांश लग्नपति चन्द्रमा से युक्त या शुभ ग्रहों द्वारा युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक भाई बन्धुओं से युक्त प्रसिद्ध कांतिवान्, धनी, वाक्पटु, एवं मित्रों द्वारा सहायक होता है। सप्तमांश में पड़े अधिकांश ग्रह उच्च राशिस्थ हों तो जातक समृद्ध, नीच हों तो दरिद्र होता है। सप्तमांशपति पुरुष ग्रह स्वराशि हों या मित्रराशि में हों या शुभ ग्रहों से युक्त हों तो जातक को सुन्दर, सुशील, गुणी, पुत्र संतान का सुख प्राप्त होता है। सप्तमांश लग्नपति पाप ग्रह हो पाप ग्रह की राशि में हो तो अयोग्य व नीच कर्म करने वाली संतान होती है। सप्तमांश लग्नपति स्त्री ग्रह हो और शुक्र, वृध आदि स्त्री ग्रहों द्वारा दृष्ट हो तो जातक के कन्याएं अधिक उत्पन्न होंगी। सप्तमांश लग्नपति लग्न से ७।८।१२वें स्थान में पापग्रह से दृष्ट या गृष्ट हो तो जातक संतानहीन होता है। तृतीय स्थान स्थित रवि या गुरु अथवा भौम सप्तमांश में हो तो जातक सत्यवादी, मनोवांछित अर्थात् निर्वाह योग्य धन प्राप्त करने वाला होता है।

नवमांश कुण्डली विचार

वर्गोत्तम (लग्नानुरूप नवांश) को छोड़कर लग्न का प्रथम नवांश हो तो जातक चंचल, दुष्ट स्वभाव व चोर होता है। द्वितीय नवांश हो तो पुरुष संगीत और स्त्रियों का प्रेमी व भोगी होता है। तृतीय नवांश में उत्पन्न धर्मात्मा, रोगी व ज्ञानी होगा। चतुर्थ में उत्पन्न व्यक्ति गुरुभक्त व सम्पन्न होता है। पंचम में दीर्घायु प्रसिद्ध व बहुपुत्र वाला, षष्ठ में स्त्री के वशीभूत, नपुंसक अपव्ययी व प्रमादी होता है। सप्तम में उत्पन्न पराक्रमी व बुद्धिमान्, अष्टम नवांश में व्यक्ति कृतज्ञ ढ़ेभी, बहुसंतान युक्त व क्लेश में रहता है। नवांश में उत्पन्न पुरुष प्रतापी, कार्य-कुशल व धनधान्य से युक्त होता है। जो ग्रह जन्मकुण्डली व नवमांश कुण्डली-दोनों में उच्चराशिस्थ या स्वराशिस्थ हो वह वर्गोत्तम कहलाता है जिसका फल अत्युत्तम कहा जाता है। नवमांश लग्न का स्वामी मंगल हो या मंगल द्वारा दृष्ट हो तो जातक की स्त्री मिलनसार, श्वेत वर्ण पर कुछ तेज स्वभाव की होगी। बुध हो तो सुन्दर आकृति, चतुर, शिल्पविद्या में निपुण, गुरु हो तो पतिव्रता, विद्यावान्, धार्मिक स्वभाव व शुभाचर्य वाली। शुक्र हो तो चतुर, श्रृंगारप्रिय, श्वेतवर्णी सुन्दरी व कामुक होगी। नवमांशपति शनि हो तो क्रूर स्वभाव की, श्यामवर्णी पति से विरोध करने वाली स्त्री होती है। नवमांश लग्न का स्वामी शुभ ग्रह हो और वह स्वराशिस्थ अथवा केन्द्र त्रिकोण में स्थित तो जातक को स्त्री का अच्छा सुख मिलता है। नवांशपति भाग्येश के

अपने पूर्वजों के प्रति श्राद्धादि तर्पण की महिमा

हमारे जो आत्मीय पूर्वज हमारे सुखों में अपने अन्तर्मन में सुखी होते थे एवं हमारे कष्टों से दुखी होते थे, उनकी स्मृति मिटाए नहीं मिलती। अपने उन आत्मीय पूर्वजों का शास्त्रीय मन्यों द्वारा आह्वान, पूजन एवं उनके याद में यथाशक्ति अन्न-धनादि का दान करना ही श्राद्ध कहलाता है। इस प्रकार अपने दिवंगत पितरों की स्मृति में जो कुछ भी अन्न, फल, वस्त्र, धनादि का श्राद्धपूर्वक दान किया जाता है, उसे श्राद्ध कहते हैं—

श्राद्धया दीयते यत्र तत् श्राद्धं प्रक्रीतितम् ॥

जो विधिवत् अपने पितृजनों के लिए श्राद्ध करता है, फिर उसे पूजा, धन, विद्या, धन, सम्पदा, निरोगता, यश अभीष्ट कामनाओं की पूर्ति एवं दीर्घायु का आशीर्वाद देते हैं—

अमावस्या, आश्विन कृष्ण पक्ष, उत्तरायण-दक्षिणायन श्राद्धयोग्य ब्राह्मण की प्राप्ति होना, विषुव संक्रान्ति (सूर्य की मेघ एवं तुला संक्रान्ति), मकर संक्रान्ति, व्यतीपात, गजच्छाया-योग, चन्द्र-सूर्य ग्रहण तथा मृत्यु तिथि—ये सब श्राद्ध के काल (अवसर) कहे गए हैं।

ॐ उषान्तस्या निधीमहाशन्तः समिधीमहि ।

उषान्तशुत आवाह पितृकैविशे अस्तवे ॥ यजु १९।७० ॥

‘हे अग्ने! तुम्हारे यजन की कामना करते हुए हम तुम्हें स्थापित करते हैं। यजन की ही इच्छा रखते हुए तुम्हें प्रज्वलित करते हैं। हविष्य को इच्छा रखते हुए तुम भी वृत्ति को कामना वालें हमारे पितरों को हविष्य भोजन करने के लिए बुलाओ

आयन्त्यु नः पितरः सोम्यासोऽनिष्ठाताः यधिभिः देवयानैः ।

अस्मिन्त्युः स्वधया भद्रतोऽधिबुवन्तु तेऽवन्तुऽस्मान् ॥

(यजु १८।५८)

“हे सोमपान करने योग्य अनिष्ठात पितृगण, देवताओं के साथ गमन करने योग्य मार्गों से यहाँ आवें और इस यज्ञ में स्वधा से वृत्त होकर हमें मानसिक उपदेश दें तथा हमारी रक्षा करें।”

इसके पश्चात् पितृगणों का नाम-गोत्र आदि का उच्चारण करते हुए प्रत्येक दिवंगत पूर्वज के निमित्त सर्वप्रथम कुशाओं को द्रिगुणित करके उनका मूल और अग्रभाग दक्षिण की ओर किए हुए उन्हें आँटों और तर्जनी के बीच रखे और स्वयं दक्षिणाभिमुख होकर बाएँ घुटने को पृथ्वी पर रखकर जनेऊ (यज्ञोपवीत) को अपसव्य (दाएँ कंधे पर रखकर) अर्ध पात्र में जल एवं गंगाजल, काले तिल पिलाकर पितृ तीर्थ से (आँटों और तर्जनी के मध्य भाग से) पितरों के लिए तर्पण करें ॥

उपरोक्त विधि से ३-३ अंजलि तिलसहित जल दें। यथा—

पिता के लिए—अमुकगोत्रः अस्मात्पिता, अमुक शर्मा (पिता नाम, जाति आदि)। यसुरूप-सूयताम इदं सतिलं जलं (गंगाजलवा) तस्मै स्वधा नमः ॥ ३ ॥

दादा को तर्पण के समय वसुरूप के स्थान रुद्र रूप का प्रयोग करें तथा माता को तर्पण के समय दा वसुरूप शब्द प्रयोग करें।

इसके पश्चात् निम्नमन्त्र से पितृ तीर्थ से जलोंजलि दें—

ॐ उदरीतामवर उत्तरास उम्यध्यामाः पितरः सोम्यासः ।

असुं य ईयुर्वक्ता ऋत ज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु ॥

(यजुः १९।४९ ॥)

श्राद्ध कर्म अपने निवास स्थान पर ही करना चाहिए, अथवा आवश्यक परिस्थितिवा मन्दिर या तीर्थों में भी किया जा सकता है। दूसरे के घर में जो श्राद्ध किया जाता है, उसमें श्राद्ध करने वाले पितरों को कुछ नहीं मिलता ॥

श्राद्ध से विमुख नहीं होना चाहिए जो व्यक्ति जानबूझ कर श्राद्ध नहीं करता, पितर शाप देकर वापिस लौट जाते हैं।

साथ २५।११वें भाव में उच्च या स्वराशि का होकर पड़ा हो तो स्त्रियों से अनेक प्रकार का लाभ तथा ससुराल से धन लाभ होता है। नवमांशपति पाप ग्रहों से युक्त या पाप ग्रह से दृष्ट्य होकर ६, ८वें या १२वें भाव में स्थित हो तो जातक को स्त्री सुख नहीं मिलता। अधिकांश ग्रह यदि नीच नवांश में हों तो जातक पराधीन होकर जीवन निर्वाह करता है। नवांश कुण्डली में जितने पुरुष ग्रह बलवान् होकर ५वें भाव में स्थित हों व ५वें भाव पर पूर्ण दृष्टि करें उतने ही पुत्र होंगे। यदि ५वें चन्द्रमा, शुक्र या बुध हो या इनसे दृष्ट हो तो कन्याएं होती हैं। केतु या शनि होने से गर्भ स्थिर नहीं रहता है। अर्थात् गर्भपात का भय होता है।

द्वादशांश फल विचार

द्वादशांश लग्न से माता-पिता के सुख-दुःख तथा आयु सीमा का विचार किया जाता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह स्वराशि, मित्रराशि या उच्च राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१०वें भावों में स्थित हो, तो जातक को पिता का पूर्ण सुख और नीच राशि हो तो पिता का अल्प सुख होता है इसी भांति द्वादशांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह शुभ ग्रहों युक्त, स्वराशि, मित्र या उच्चराशिस्थ होकर १।४।५।७।९।१०वें भावों में हों तो माता का विशेष सुख होता है। यदि स्त्री ग्रह पापयुक्त या दृष्ट होकर ६।८।१२वें भाव में हों तो माता के बहुसुख में कमी रहती है। बारह राशि के द्वादशांश में क्रम से आयु प्रमाण इस प्रकार से वर्णित है। ८०, ८४, ८६, ८४, ६०, ५३, ७०, ५०, ६६, १०० अर्थात् क्रम से द्वादशांश में इतने वर्ष की आयु प्राप्ति की संभावना होती है।

त्रिंशांश फल विचार

त्रिंशांश में जो ग्रह मित्र के घर में या उच्च में हो वह सभी कार्यों में उत्साही धनी, धर्मिष्ठ व पूज्य होता है। मंगल अपने त्रिंशांश में स्थित हो तो वह प्राणी तेजस्वी धैर्यवान् स्त्री-धन से युक्त, बुध अपने त्रिंशांश में हो तो बुद्धिमान, संगीत, प्रेमी, गुरु हों तो जातक उद्यमी, धनवान्, शुक्र हो तो जातक बहुपुत्रों वाला, अनेक स्त्रियों से मित्रता करने वाला होता है। शनि हो तो परस्त्रीगमन करने वाला, दुःखी व मलिन हृदय होगा।

सहज ग्रह शान्ति

अहिसकस्य दान्तस्य धर्माजित धनस्य च। सर्वदा नियमस्थ सदा सानुग्रहाः ग्रहाः ॥

जो व्यक्ति किसी को दुख नहीं देता, न किसी की हिंसा चाहता है, जो संयमी (अर्थात् जिसने अपने मन, वचन एवं कर्मी) आदि इंद्रियों पर संयम है और जो धर्म निर्दिष्ट मार्ग से धन का उपार्जन करता है तथा जो शास्त्र प्रतिपादित नियमों का पालन करता है। उसपर ग्रह सदैव अनुग्रह—अर्थात् उन्हें अनुकूल शुभ फल प्रदान करते हैं तथा ईश्वर की कृपा वनी रहती है।

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

| नोट-जिस शहर के आगे (-) का चिन्ह लगाया गया है, वह नगर 82½ रेखांश में उत्तरे मिनट पश्चिम है और जिस स्थान पर (+) का चिन्ह लगा है, वह स्थान उत्तरे मिनट पूर्व में है। सूर्योदयास्त जानने के लिए जिन नगरों का स्टैं. अन्तर (-) है, उन्हें मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी में (-) की दशाए (+) करना होगा तथा ' + ' चिन्ह वाले नगरों को मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से प्राप्त सू. उ. - सू. अ. में (-) ऋण करें। | | | | | | | | | | | |
|--|------------------------|-----------------------|---------------------------|------------------------|------------------------|-----------------------|---------------------------|------------------------|------------------------|-----------------------|---------------------------|
| नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सें. | नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सें. | नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सें. |
| अमृतसर (पंजा.) | 31 37 | 74 55 | -30 20 | उधमपुर (ज. का.) | 32 55 | 75 07 | -29 32 | युजो (उ. प्र.) | 28 15 | 77 50 | -18 40 |
| अलीगढ़ (उ. प्र.) | 27 54 | 78 06 | -17 36 | श्रद्धिकेश (उत्तरां.) | 30 07 | 78 18 | -15 12 | खण्डवा (म. प्र.) | 21 50 | 78 07 | -24 28 |
| अमरावती (त्रिपुरा) | 23 49 | 91 18 | +35 12 | एटा (उ. प्र.) | 27 38 | 78 40 | -15 20 | गया (बिहार) | 24 49 | 85 01 | +10 04 |
| अहमदाबाद (गुज.) | 23 03 | 72 40 | -39 20 | औरंगाबाद (महा.) | 19 53 | 75 23 | -28 28 | गालियर (म. प्र.) | 26 14 | 78 10 | -17 20 |
| अहमदनगर (महा.) | 19 05 | 74 48 | -30 48 | कटक (उड़ी.) | 20 28 | 85 54 | +13 36 | नालगिरी (ज. का.) | 35 55 | 74 22 | -32 32 |
| आइतूर (काय.) | 32 54 | 74 45 | -31 00 | कडुआ (ज. का.) | 32 17 | 75 36 | -27 36 | गुदासापुर (पंजाब) | 32 03 | 75 27 | -28 12 |
| अजमेर (राज.) | 26 27 | 74 42 | -31 12 | कारगिल (ज. का.) | 34 30 | 76 13 | -25 08 | गुडगांव (हरि.) | 28 29 | 77 04 | -21 44 |
| अल्मोड़ा (उत्तरां.) | 29 37 | 79 40 | -11 20 | किरसवाड़ (ज. का.) | 33 19 | 75 48 | -26 48 | गोरखपुर (उ. प्र.) | 26 45 | 83 24 | +03 36 |
| अलवर (राज.) | 27 34 | 76 38 | -23 28 | कटरा (ज. का.) | 33 01 | 74 58 | -30 08 | गुवाहाटी (आसा.) | 26 11 | 91 47 | +37 08 |
| अमरावती (महा.) | 20 56 | 77 48 | -18 48 | कटनी (म. प्र.) | 23 47 | 80 27 | -08 12 | गोधरा (गुज.) | 22 45 | 73 40 | -35 20 |
| अम्बाला (हर.) | 30 21 | 76 52 | -22 32 | कतवाल (हरि.) | 29 42 | 77 02 | -21 52 | गोजीपुर (उ. प्र.) | 25 34 | 83 35 | +04 20 |
| अम्बिकापुर (म. प्र.) | 23 10 | 83 15 | +03 00 | कलकत्ता (बंग.) | 22 34 | 88 24 | +23 36 | गोईदावल (पंजा.) | 31 22 | 75 08 | -29 28 |
| अकिलेश्वर (गुज.) | 21 38 | 73 03 | -37 48 | कपूरथला (पंजा.) | 31 23 | 75 25 | -28 20 | गोरामा (पंजा.) | 31 06 | 75 47 | -26 52 |
| अमोठी (उ. प्र.) | 26 08 | 81 50 | -02 40 | करौली (राज.) | 26 30 | 77 01 | -21 56 | गंगानगर (राज.) | 29 49 | 73 50 | -34 40 |
| अमरीहा (उ. प्र.) | 28 54 | 78 29 | -16 04 | कांगड़ा (हि. प्र.) | 32 05 | 76 18 | -24 48 | गण्डा (उ. प्र.) | 27 08 | 82 01 | -01 56 |
| आनन्दपुर सा. (पं.) | 31 15 | 76 32 | -23 52 | कानपुर (उ. प्र.) | 26 28 | 80 22 | -08 32 | गहरौकर (पंजा.) | 31 13 | 76 11 | -25 16 |
| आनन्द (गुज.) | 22 32 | 73 00 | -38 00 | कालका (हरि.) | 30 49 | 76 57 | -22 12 | गाजियाबाद (उ. प्र.) | 28 40 | 77 26 | -20 16 |
| अनन्तनाग (काश्.) | 33 43 | 75 12 | -29 12 | कुरुक्षेत्र (हि. प्र.) | 31 58 | 77 10 | -23 40 | गुलमर्ग (ज. का.) | 34 05 | 74 25 | -32 20 |
| अनूपगढ़ (राज.) | 29 07 | 73 06 | -37 36 | कुराही (पंजाब) | 30 50 | 76 35 | -23 40 | गोवा (पंजाब) | 15 27 | 73 50 | -34 40 |
| आजमगढ़ (उ. प्र.) | 26 03 | 83 13 | +02 52 | कोटकपूरा (पंजाब) | 30 34 | 74 52 | -30 32 | गोलकुण्डा (आ. प्र.) | 17 24 | 78 23 | -16 28 |
| अयोध्या (उ. प्र.) | 26 48 | 82 14 | -01 04 | कोटिया (पंजाब) | 31 49 | 75 23 | -28 28 | चम्बा (हि. प्र.) | 32 34 | 76 08 | -25 28 |
| अबोहर (पंजा.) | 30 08 | 74 12 | -33 12 | कसौग (हि. प्र.) | 31 23 | 77 14 | -21 04 | चित्तौड़गढ़ (राज.) | 24 54 | 74 42 | -31 12 |
| आसनसोल (बंग.) | 23 42 | 87 01 | +18 04 | कन्नौर (हि. प्र.) | 31 32 | 78 20 | -16 40 | चण्डीगढ़ (के. प्र.) | 30 44 | 76 52 | -22 32 |
| आगरा (उ. प्र.) | 27 10 | 78 26 | -18 00 | कन्हाय्य (हि. प्र.) | 30 57 | 77 08 | -21 28 | चन्दौसी (उ. प्र.) | 28 27 | 78 49 | -14 44 |
| आबू (राज.) | 24 40 | 72 45 | -39 00 | कोहिमा (ना.) | 25 41 | 94 07 | +46 28 | चमौली (उत्तरां.) | 30 24 | 79 21 | -12 36 |
| ईलाहाबाद (उ. प्र.) | 25 28 | 81 54 | -02 24 | कुमारसेन (हि. प्र.) | 31 18 | 77 37 | -19 32 | चूरु (राज.) | 28 19 | 75 01 | -29 56 |
| इटवा (उ. प्र.) | 26 47 | 79 02 | -13 52 | कुरुक्षेत्र (हरि.) | 29 59 | 76 48 | -22 48 | चिन्तापूर्ण (हि. प्र.) | 31 47 | 76 04 | -25 44 |
| इम्फाल (मणि.) | 24 46 | 93 58 | +45 52 | कस्तापुर (पंजा.) | 31 27 | 75 32 | -27 52 | हिन्दवाड़ा (म. प्र.) | 22 03 | 78 58 | -14 08 |
| इन्दौर (म. प्र.) | 22 44 | 75 50 | -26 40 | कैथल (हरि.) | 16 42 | 74 16 | -24 16 | जगदधाला | 31 19 | 75 34 | -27 44 |
| इटासी (म. प्र.) | 22 30 | 77 55 | -18 20 | कोल्हापुर (महा.) | 31 08 | 77 36 | -19 36 | जोड़ियाला गुरु | 31 51 | 75 37 | -27 32 |
| इरवपुर (राज.) | 24 35 | 73 41 | -35 16 | कोटखाई (हि. प्र.) | 27 03 | 79 58 | -10 08 | जम्मु (ज. का.) | 32 43 | 74 54 | -30 24 |
| इज्जैन (म. प्र.) | 23 09 | 75 43 | -27 08 | कनौज (उ. प्र.) | 25 10 | 75 52 | -26 32 | जौनपुर (उ. प्र.) | 25 46 | 82 44 | +00 56 |
| उन्नाव (उ. प्र.) | 26 33 | 80 31 | -07 56 | कोटा (राज.) | 30 42 | 76 13 | -25 08 | जैसलमेर (राज.) | 26 55 | 70 54 | -46 24 |
| उस्ताकशी (उत्तरां.) | 30 44 | 78 27 | -16 12 | खाना (पंजाब) | 30 45 | 76 37 | -23 32 | जयपुर (राज.) | 26 55 | 75 52 | -26 32 |
| ऊना (हि. प्र.) | 31 32 | 76 18 | -24 48 | खरद (पंजाब) | 30 45 | 76 37 | -23 32 | | | | |

171

| नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै. | नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै. | नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै. | नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै. |
|---------------------|------------------------------|-----------------------------|--------------------------------|----------------------|------------------------------|-----------------------------|--------------------------------|----------------------|------------------------------|-----------------------------|--------------------------------|-------------------------|------------------------------|-----------------------------|--------------------------------|
| दातापुर (पंजा.) | 31 53 | 75 45 | -27 00 | पयोला (हि. प्र.) | 32 04 | 76 34 | -23 44 | बांसवाड़ा (राज.) | 23 30 | 74 24 | -32 24 | मनाली (हि. प्र.) | 32 17 | 77 19 | -20 44 |
| दाजिलिंग (बंगा.) | 27 03 | 88 18 | +23 12 | प्रतापगढ़ (उ. प्र.) | 25 50 | 81 59 | -02 04 | बागपत (उ. प्र.) | 28 57 | 77 13 | -21 08 | मद्रास (केनई) (ता.जा.) | 13 04 | 80 17 | -08 52 |
| दुर्गापुर (बंगा.) | 23 30 | 87 20 | +19 20 | पाली (राज.) | 25 46 | 73 25 | -36 20 | बुंदी (राज.) | 25 27 | 75 40 | -27 20 | युम्बई (महा.) | 19 00 | 72 54 | -38 24 |
| दुर्ग (छत्तीसगढ़) | 21 10 | 81 17 | -04 52 | पोरबन्दर (गुज.) | 21 37 | 69 37 | -51 32 | बैजनाथ (हि. प्र.) | 32 03 | 76 36 | -23 36 | यमुनानगर (हरि.) | 30 08 | 77 16 | -20 56 |
| द्राक्षिका (गुज.) | 22 14 | 69 01 | -53 56 | पंचमढ़ी (म. प्र.) | 22 30 | 78 22 | -16 32 | बिलासपुर (हि. प्र.) | 31 19 | 76 45 | -23 00 | रामपुर बुधौ. (हि. प्र.) | 31 28 | 77 39 | -19 24 |
| देवरिया (उ. प्र.) | 26 32 | 83 45 | +05 00 | पुरी (उड़ी) | 19 48 | 85 52 | +13 28 | विलासपुर (म. प्र.) | 22 05 | 82 12 | -01 12 | रोहड़ (हि. प्र.) | 31 12 | 77 44 | -19 04 |
| देतिया (म. प्र.) | 25 39 | 78 27 | -16 12 | पुरुलिया (बंगा.) | 23 20 | 86 24 | +15 36 | बक्सर (म. प्र.) | 19 10 | 81 59 | -02 04 | रोपड़ (पंजाब) | 30 57 | 76 32 | -23 52 |
| धनबाद (बिहार) | 23 47 | 86 30 | +16 00 | पुर्निया (म. प्र.) | 24 44 | 80 14 | -09 04 | बैतौर (का.) | 12 58 | 77 36 | -19 36 | राजपुर (पंजाब) | 30 29 | 76 34 | -23 44 |
| धर्मशाला (हि. प्र.) | 32 16 | 76 23 | -24 28 | पिलानी (राज.) | 28 23 | 75 35 | -27 04 | भटिंडा (पंजाब) | 30 11 | 75 00 | -30 00 | राजकोट (पंजाब) | 30 41 | 75 36 | -27 36 |
| धौलपुर (राज.) | 26 42 | 77 53 | -18 28 | पुष्कर (राज.) | 26 30 | 74 34 | -31 44 | भरवाह (का.) | 33 04 | 75 50 | -26 40 | रोहतक (हरि.) | 28 54 | 76 38 | -23 28 |
| धुरी (पंजा.) | 30 22 | 75 52 | -26 32 | फौजिगढ़वाल (उत्तरां) | 30 09 | 78 47 | -14 52 | भिवानी (हरि.) | 28 46 | 76 18 | -24 48 | रिलाइडी (हरि.) | 28 12 | 76 40 | -23 20 |
| नागौर (राज.) | 27 11 | 73 40 | -35 20 | फतेहगढ़ सा. (पंजा.) | 30 39 | 76 22 | -24 32 | भुवनेश्वर (उड़ी) | 20 10 | 85 50 | +13 20 | रामबन (ज. का.) | 33 14 | 75 15 | -29 00 |
| नवलगढ़ (राज.) | 27 51 | 75 18 | -38 48 | फैजाबाद (उ. प्र.) | 26 47 | 82 06 | -01 36 | भारतपुर (राज.) | 27 05 | 77 30 | -20 00 | रियासी (ज. का.) | 33 04 | 74 53 | -30 28 |
| नकोदर (पंजा.) | 31 07 | 75 29 | -28 04 | फर्रुखाबाद (उ. प्र.) | 27 24 | 79 36 | -11 36 | भावनगर (गुज.) | 21 46 | 77 11 | -41 16 | रामनगर (ज. का.) | 32 50 | 75 22 | -28 32 |
| नर्महल (पंजा.) | 31 01 | 75 22 | -28 32 | फगवाड़ा (पंजा.) | 31 13 | 75 47 | -26 52 | भुज (गुज.) | 23 15 | 69 40 | -51 20 | रतलाम (म. प्र.) | 23 21 | 75 07 | -29 32 |
| नौहर (राज.) | 29 11 | 74 46 | -30 56 | फरीदकोट (पंजा.) | 30 40 | 74 57 | -30 12 | मिलिई (छत्ती.) | 21 13 | 81 26 | -04 16 | राजौरी (ज. का.) | 33 23 | 74 18 | -32 48 |
| नसीरवादा (राज.) | 26 18 | 74 46 | -30 56 | फाजिल्का (पंजा.) | 30 24 | 74 04 | -33 44 | फिण्ड (म. प्र.) | 26 36 | 78 46 | -14 56 | रायपुर (छत्ती.) | 21 15 | 81 41 | -03 16 |
| नयाना (हरि.) | 29 36 | 76 08 | -25 28 | फिरोजपुर (पंजा.) | 30 55 | 74 40 | -31 20 | भोलवाड़ा (राज.) | 25 21 | 74 40 | -31 20 | रायबली (उ. प्र.) | 26 14 | 81 16 | -04 56 |
| नुसिक (महा.) | 20 02 | 73 50 | -34 40 | फिल्लौर (पंजा.) | 31 01 | 75 48 | -26 48 | भोपाल (म. प्र.) | 23 16 | 77 24 | -20 24 | रायपुर (उ. प्र.) | 28 48 | 79 03 | -13 48 |
| नुगापुर (महा.) | 21 09 | 79 09 | -13 24 | फरीदाबाद (हरि.) | 28 25 | 77 22 | -20 32 | मजिठा (पंजाब) | 30 31 | 75 59 | -26 04 | रौवा (झार.) | 23 23 | 85 23 | +11 32 |
| नरौली (हरि.) | 28 02 | 76 14 | -25 04 | फरीदाबाद (हरि.) | 29 31 | 75 30 | -28 00 | मनेकाटला (पंजा) | 31 46 | 75 01 | -29 56 | रायसिंहनगर (राज.) | 29 32 | 73 27 | -36 12 |
| नंगल (पंजा.) | 31 23 | 76 23 | -24 28 | बटाला (पंजा.) | 31 49 | 75 14 | -29 04 | मलोट (पंजाब) | 30 13 | 74 29 | -32 04 | राजकोट (गुज.) | 22 18 | 70 48 | -46 48 |
| नवांशहर (पंजा.) | 30 07 | 76 08 | -25 28 | बंगा (पंजा.) | 31 11 | 75 59 | -26 04 | मानसा (पंजाब) | 29 59 | 75 23 | -28 28 | राजेश्वरम् (ता.) | 09 17 | 79 22 | -12 32 |
| नाहन (हि. प्र.) | 30 25 | 76 09 | -25 24 | बलाचौर (पंजा.) | 31 03 | 76 19 | -24 44 | मोगा (पंजाब) | 30 48 | 75 10 | -29 20 | रूड्डी (उत्तरां.) | 29 52 | 77 53 | -18 28 |
| नालागढ़ (हि. प्र.) | 30 33 | 77 21 | -20 36 | बदौनाथ (उत्तरां.) | 30 44 | 79 30 | -12 00 | मोहाली (पंजा.) | 30 43 | 76 42 | -23 12 | लुधियाना (पंजा.) | 30 55 | 75 54 | -26 24 |
| नैनीताल (उत्तरां.) | 30 57 | 76 22 | -24 32 | बक्सर (उ. प्र.) | 25 35 | 83 59 | +05 56 | मोतौंड (का.) | 33 48 | 75 18 | -28 48 | लह (ज. का.) | 34 10 | 77 40 | -19 20 |
| नौरा (ज. का.) | 29 23 | 79 30 | -12 00 | बडौदा (गुज.) | 22 18 | 73 13 | -37 08 | मैन्सगढ़ (हरि.) | 28 18 | 76 09 | -25 24 | लढाख (रैज) | 32 00 | 80 00 | -10 00 |
| पटियाला (पंजा.) | 32 17 | 75 42 | -27 12 | बडगाम (ज. का.) | 34 00 | 74 44 | -31 04 | ममसादेजी (हरि.) | 30 44 | 76 52 | -22 32 | लखनऊ (यू.पी.) | 26 52 | 80 56 | -06 16 |
| पठानकोट (पंजा.) | 30 20 | 76 25 | -24 20 | बरनाला (पंजा.) | 30 23 | 75 33 | -27 48 | मराना (राज.) | 27 04 | 74 43 | -31 08 | लखोमपुर (उ. प्र.) | 27 57 | 80 49 | -06 44 |
| पटौटी (पंजा.) | 31 17 | 74 51 | -30 36 | बिजौरी (उ. प्र.) | 29 23 | 78 11 | -17 16 | मेरठ (उ. प्र.) | 29 00 | 77 42 | -19 12 | लाडवा (हरि.) | 29 59 | 77 05 | -21 40 |
| पंचकुला (हरि.) | 30 45 | 76 53 | -22 28 | बनारस (उ. प्र.) | 25 20 | 83 00 | +02 00 | मिर्जापुर (उ. प्र.) | 25 10 | 82 36 | +00 24 | वागपसी | 25 20 | 83 00 | +02 00 |
| पानीपत (हरि.) | 29 23 | 77 01 | -21 56 | बरोली (उ. प्र.) | 28 22 | 79 27 | -12 12 | मुगादाबाद (उ. प्र.) | 28 51 | 78 49 | +14 44 | विशाखापट्टनम | 17 42 | 83 20 | +03 20 |
| पिबोवा (हरि.) | 29 56 | 76 36 | -23 36 | बलिया (उ. प्र.) | 25 44 | 84 11 | +06 44 | मुगलसराय (उ. प्र.) | 25 17 | 83 11 | +02 44 | शिमला (हि. प्र.) | 31 06 | 77 13 | -21 08 |
| पिथौरगढ़ (उत्तरां.) | 29 35 | 80 13 | -09 08 | बदायूं (उ. प्र.) | 28 02 | 79 10 | -13 20 | मथूरी (उत्तरां.) | 30 27 | 78 06 | -17 36 | शाहदर (दिल्ली) | 28 40 | 77 20 | -20 40 |
| पिंजौर (हरि.) | 30 49 | 76 55 | -22 20 | बाराबंकी (उ. प्र.) | 26 56 | 81 13 | -05 08 | मथुरा (उ. प्र.) | 27 28 | 77 41 | -19 16 | शाहबाबाद (हरि.) | 30 10 | 76 55 | -22 20 |
| पुँछ (ज. का.) | 33 51 | 74 08 | -33 28 | बाराभाकी (ज. का.) | 34 10 | 74 30 | -32 00 | मुजफ्फर न. (उ. प्र.) | 28 28 | 77 41 | -19 16 | शालापुर (महा.) | 17 42 | 75 56 | -26 16 |
| पहलगाँव (ज. का.) | 34 01 | 75 24 | -28 24 | बनिहाल (ज. का.) | 33 32 | 75 19 | -28 44 | मुजफ्फर (पंजाब) | 30 29 | 74 31 | -31 56 | शोलापुर (महा.) | 28 40 | 77 20 | -20 40 |
| पटना (बिहार) | 25 37 | 85 13 | +10 52 | बल्लभगढ़ (हरि.) | 28 22 | 77 20 | -20 40 | मन्दसौर (म. प्र.) | 24 03 | 76 42 | -29 12 | शिलांग (मेघा) | 25 34 | 91 56 | +37 44 |
| पोलीभीत (उ. प्र.) | 28 38 | 79 48 | -10 48 | बहादुरगढ़ (हरि.) | 28 42 | 76 55 | -22 20 | मैसूर (कर्ना.) | 12 18 | 76 42 | -23 12 | श्रीगंगानगर (राज.) | 29 49 | 73 50 | -34 40 |
| पालमपुर (हि. प्र.) | 32 06 | 76 33 | -23 48 | बीकानेर (राज.) | 28 01 | 73 22 | -36 32 | मण्डौ (हि. प्र.) | 31 43 | 76 58 | -22 08 | श्रीमथपुर (राज.) | 27 25 | 75 32 | -27 52 |

| नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सें. | नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सें. | नगर | अक्षांश (उत्तर) अं. क. | रेखांश (पूर्व) अं. क. | स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सें. |
|-------------------------|------------------------|-----------------------|---------------------------|--------------------|------------------------|-----------------------|---------------------------|--------------------|------------------------|-----------------------|---------------------------|
| सरहिन्द (पं.) | 30 38 | 76 23 | -24 28 | सरकाघाट (हि. प्र.) | 31 43 | 76 22 | -24 32 | सागर (म. प्र.) | 23 50 | 78 48 | -14 48 |
| सुलतानपुर लोधी (पं.) | 31 11 | 75 12 | -29 12 | सिसवा (हरि.) | 29 32 | 75 06 | -29 36 | सिहोर (म. प्र.) | 23 12 | 77 00 | -22 00 |
| समराना (पं.) | 30 09 | 76 12 | -25 12 | सोनभत (हरि.) | 28 58 | 76 59 | -22 04 | सहानपुर (उ. प्र.) | 29 58 | 77 30 | -20 00 |
| समराला (पं.) | 30 51 | 76 11 | -25 16 | सुरगढ (राज.) | 29 19 | 73 57 | -34 12 | सोतापुर (उ. प्र.) | 27 36 | 80 42 | -07 12 |
| सुनाम (पंजाब) | 30 08 | 75 48 | -26 48 | सुरत (गुजरात) | 21 10 | 72 50 | -38 40 | सोमनाथ (गुज.) | 21 04 | 70 26 | -48 16 |
| साबवा (जं. का.) | 32 33 | 75 07 | -29 32 | सीकर (राज.) | 27 36 | 75 09 | -29 24 | होशियारपुर (पंजा.) | 31 32 | 75 57 | -26 12 |
| सुन्दरनगर (हि. प्र.) | 31 33 | 76 54 | -22 24 | सवाईमाधोपुर (राज.) | 25 59 | 76 30 | -24 00 | हमीपुर (हि. प्र.) | 31 42 | 76 30 | -24 00 |
| सोलन (हि. प्र.) | 30 55 | 77 09 | -21 24 | सांभर (राज.) | 26 55 | 75 10 | -29 20 | हासो (हरि.) | 29 06 | 76 00 | -26 00 |
| सुजानपुर दि. (हि. प्र.) | 31 50 | 76 31 | -23 56 | सिरौही (राज.) | 24 54 | 72 55 | -38 20 | हिसार (हरि.) | 29 10 | 75 46 | -26 56 |

हिमाचल प्रदेश के नगरों के अक्षांश-रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------------|-------|-------|-------|---------------|-------|-------|-------|--------------|-------|-------|-------|----------------|-------|-------|-------|
| अम्ब | 31 43 | 76 06 | 25 36 | चाणुडा देवी | 32 08 | 76 20 | 24 40 | नगर | 32 10 | 77 20 | 20 40 | मण्डी | 31 43 | 76 58 | 22 08 |
| अर्को | 31 09 | 76 59 | 22 04 | चिन्तपुरणी | 31 47 | 76 04 | 25 44 | नाराटा बगवां | 32 06 | 76 24 | 24 28 | मणाली | 32 17 | 77 19 | 20 40 |
| आनी | 31 28 | 77 20 | 20 40 | चावल | 31 03 | 77 14 | 21 04 | नादौन | 31 47 | 76 22 | 24 32 | मनीकरण | 32 01 | 77 20 | 20 40 |
| आलमपुर | 31 54 | 76 30 | 24 00 | चौपाल | 30 58 | 77 36 | 19 36 | नाहन | 30 33 | 77 21 | 20 36 | मुबारकपुर | 31 44 | 75 59 | 26 04 |
| इन्दौरा | 32 06 | 75 41 | 27 16 | जाली | 32 06 | 76 01 | 25 56 | नालागाँव | 30 57 | 76 22 | 24 32 | मशौकवा | 31 07 | 77 14 | 21 04 |
| काना | 31 23 | 76 18 | 24 48 | जस्सूर | 32 17 | 75 55 | 26 20 | नूरपुर | 32 18 | 75 56 | 26 16 | मंगवाल | 32 03 | 76 05 | 25 40 |
| कैरसिंग | 31 32 | 77 14 | 21 08 | जतोग | 31 08 | 77 33 | 19 48 | नाराटा | 32 07 | 76 23 | 24 44 | महासू | 31 05 | 77 13 | 21 08 |
| कसीली | 30 54 | 77 02 | 21 52 | जुब्बल | 31 07 | 77 38 | 19 28 | निरमण्ड | 31 28 | 77 34 | 19 28 | महतपुर | 31 22 | 76 17 | 24 52 |
| कल्या | 31 34 | 78 16 | 16 56 | जोगिन्द्र नगर | 31 58 | 76 45 | 23 00 | नाकाण्डा | 31 15 | 77 28 | 20 08 | खालसर | 31 38 | 76 50 | 22 40 |
| कण्डाघाट | 30 57 | 77 08 | 21 28 | ज्वालामुखी | 31 53 | 76 20 | 24 40 | नैना देवी | 31 19 | 76 31 | 23 56 | रामपुर डुहौर | 31 28 | 77 39 | 19 24 |
| कांगडा | 32 05 | 76 18 | 24 48 | टीसा | 32 48 | 76 12 | 25 12 | पच्छाद | 31 47 | 77 08 | 21 28 | राजगढ़ | 30 52 | 77 22 | 20 32 |
| काला अम्ब | 30 29 | 77 13 | 21 08 | ठ्योग | 31 08 | 77 33 | 19 48 | पण्डोह | 31 41 | 77 07 | 21 32 | रायसन | 32 05 | 77 07 | 21 32 |
| कुम्हरी | 31 07 | 77 12 | 21 12 | डमटाल | 32 13 | 75 41 | 27 16 | पररोला | 32 04 | 76 34 | 23 44 | रोहडू | 31 12 | 77 44 | 19 04 |
| कुम्हारहटी | 30 52 | 77 03 | 21 48 | डग्राई | 30 53 | 77 06 | 21 36 | परवाणू | 30 52 | 77 05 | 21 40 | लाहौल स्मिति | 32 31 | 77 01 | 21 56 |
| कोटखाई | 31 08 | 77 36 | 19 36 | डल्हौजी | 32 31 | 76 00 | 26 00 | पाओटा साहिब | 30 29 | 77 38 | 19 28 | शाहपुर | 32 14 | 76 12 | 25 12 |
| कोटागढ़ | 31 19 | 77 29 | 20 04 | डैहर | 31 29 | 76 52 | 22 22 | पालमपुर | 32 06 | 76 33 | 23 48 | शिमला | 31 06 | 77 13 | 21 08 |
| कोटला | 32 17 | 76 02 | 25 52 | दलियारा | 31 52 | 76 11 | 25 16 | बरसर (भोटा) | 31 34 | 76 23 | 24 08 | शेरपुर | 32 34 | 75 59 | 26 04 |
| कुल्लू | 31 58 | 77 10 | 21 20 | तारादेवी | 31 04 | 77 10 | 21 20 | बसोली | 31 34 | 76 23 | 24 28 | सपाटू | 30 57 | 77 01 | 21 56 |
| कुमासन | 31 18 | 77 37 | 19 32 | तत्तापानी | 31 14 | 77 10 | 21 20 | बंगाना तै. | 31 33 | 76 27 | 24 16 | सकाघाट | 31 43 | 76 22 | 24 32 |
| कुनिहार | 30 58 | 77 10 | 21 20 | त्रिलोकनाथ | 32 43 | 76 39 | 23 24 | बड़ागांव | 31 20 | 77 15 | 21 00 | संतोखगढ़ | 31 41 | 76 20 | 24 40 |
| किन्नौर | 31 32 | 78 20 | 16 40 | त्रिलोकपुर | 30 34 | 77 09 | 21 24 | बजार | 31 40 | 77 20 | 20 40 | सैज | 31 49 | 77 19 | 20 44 |
| केलांग | 32 37 | 77 05 | 21 40 | ददाहू | 30 55 | 77 28 | 20 08 | बनीखेत | 32 32 | 75 58 | 26 08 | सोलन | 30 55 | 77 09 | 21 24 |
| खजियार | 32 31 | 76 03 | 25 40 | देहरा गंगोपुर | 31 55 | 76 14 | 25 04 | बकलोह | 32 27 | 75 59 | 26 04 | सुन्दरनगर | 31 33 | 76 54 | 22 24 |
| खली (पणपुर) | 31 48 | 76 18 | 24 48 | दोलतपुर | 31 46 | 75 58 | 26 08 | बिलासपुर | 31 19 | 76 45 | 23 00 | सुजानपुर दिहरा | 31 50 | 76 31 | 23 56 |
| गंगोट | 31 41 | 76 04 | 25 48 | धनेटा | 31 38 | 76 29 | 24 04 | बैजनाथ | 32 03 | 76 36 | 23 36 | हमीपुर | 31 42 | 76 30 | 24 00 |
| गोहर | 31 32 | 77 02 | 21 52 | धर्मशाला | 32 16 | 76 23 | 24 28 | भरवाई | 31 47 | 76 07 | 25 36 | हड़सर | 32 21 | 76 33 | 23 48 |
| गुमावी | 31 30 | 76 41 | 23 16 | धर्मपुर | 30 54 | 77 04 | 21 44 | भरमौर | 32 27 | 76 32 | 23 52 | हाटकोटी | 31 09 | 77 44 | 19 04 |
| चन्वा | 32 34 | 76 08 | 25 28 | धारा | 31 49 | 77 15 | 21 00 | भुतार | 31 54 | 77 09 | 21 24 | हरिपुर | 32 39 | 76 11 | 25 16 |
| चव्योट | 31 36 | 77 04 | 21 44 | धौलाकुआं | 30 30 | 77 29 | 20 04 | भाखड़ा | 31 20 | 76 30 | 24 00 | हसियुराधार | 30 53 | 77 28 | 20 08 |

राजस्थान के मुख्य नगरों के अक्षांश-रेखांश

| नगर | अक्षांश (उत्तर) | रेखांश (पूर्व) | स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मि. सें. | नगर | अक्षांश (उत्तर) | रेखांश (पूर्व) | स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मि. सें. | नगर | अक्षांश (उत्तर) | रेखांश (पूर्व) | स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मि. सें. |
|--------------------|--------------------|-------------------|---------------------------------------|-------------|--------------------|-------------------|---------------------------------------|--------------------|--------------------|-------------------|---------------------------------------|
| अजमेर | 26 27 | 74 42 | 31 12 | देवली | 25 46 | 75 25 | 28 20 | मांगरोल | 25 21 | 76 30 | 24 00 |
| अनूपगढ़ | 29 07 | 73 06 | 37 36 | देवलिया | 24 38 | 74 42 | 31 12 | मारवाड़ जंक्शन | 25 44 | 73 45 | 35 00 |
| अलवर | 27 34 | 76 38 | 23 28 | देवीकोट | 26 38 | 71 07 | 45 32 | मावली | 24 48 | 73 58 | 34 08 |
| असोप | 26 48 | 73 44 | 35 04 | धौलपुर | 26 42 | 77 53 | 18 28 | मेड़ता | 26 40 | 74 06 | 33 36 |
| अलीगढ़ | 25 58 | 76 07 | 25 30 | नवलगढ़ | 27 51 | 75 18 | 28 48 | मेड़ता रोड़ | 26 44 | 73 55 | 34 20 |
| अमेर | 25 20 | 73 59 | 34 04 | नसीराबाद | 26 18 | 74 46 | 30 56 | मुकन्दबाड़ा | 24 49 | 76 01 | 25 56 |
| आबू | 24 40 | 72 45 | 39 00 | नागौर | 27 11 | 73 40 | 35 20 | मुनावाओ | 25 43 | 70 15 | 49 00 |
| आमेर | 26 59 | 75 52 | 26 32 | नाथद्वारा | 24 56 | 73 50 | 34 40 | मोहनगढ़ | 27 17 | 71 18 | 44 48 |
| उदयपुर | 24 35 | 73 41 | 35 16 | नीम का थाना | 27 44 | 75 48 | 26 48 | रतनगढ़ | 28 05 | 74 39 | 31 24 |
| एकलिंगजी | 24 44 | 73 46 | 34 56 | नोखा | 27 35 | 73 29 | 36 04 | रानीवाड़ा | 24 46 | 72 13 | 41 08 |
| करौली | 26 30 | 77 01 | 21 56 | नौहर | 29 11 | 74 46 | 30 56 | रामगढ़ (जयपुर) | 27 14 | 75 10 | 29 20 |
| कांकरोली | 25 02 | 73 54 | 34 24 | पचपदरा | 25 55 | 72 21 | 40 36 | रामगढ़ (जैसलमेर) | 27 23 | 70 30 | 48 00 |
| किशनगढ़ | 26 33 | 74 52 | 30 32 | पाली | 25 46 | 73 25 | 36 20 | रायसिंहनगर | 29 32 | 73 27 | 36 12 |
| केकड़ी | 25 55 | 75 10 | 29 20 | परबतसर | 26 53 | 74 47 | 30 52 | रीगस | 27 21 | 75 34 | 27 44 |
| कोटा | 25 10 | 75 52 | 26 32 | पिलानी | 28 23 | 75 35 | 27 40 | रूपनगर | 26 47 | 74 54 | 30 24 |
| खण्डेला | 27 37 | 75 32 | 27 52 | पल्लू | 28 56 | 74 13 | 33 08 | लछमनगढ़ | 27 45 | 75 04 | 29 44 |
| गोगुण्डा | 24 46 | 73 34 | 35 44 | पुष्कर | 26 30 | 74 34 | 31 44 | लाठी | 27 03 | 71 30 | 44 00 |
| गंगानगर | 29 49 | 73 50 | 34 40 | पोखरण | 26 56 | 71 55 | 42 20 | लूनी | 26 00 | 72 52 | 38 32 |
| गंगापुर (टोंक) | 26 29 | 76 46 | 22 56 | फतेहपुर | 28 00 | 75 00 | 30 00 | शाहगढ़ | 27 08 | 69 58 | 50 08 |
| गंगापुर (भीलवाड़ा) | 25 13 | 74 16 | 32 56 | फलौदी | 27 09 | 72 22 | 40 32 | शाहपुरा (जयपुर) | 27 22 | 75 58 | 26 08 |
| घोटारू | 27 18 | 70 04 | 49 44 | फुलेरा | 26 52 | 75 16 | 28 56 | शाहपुरा (भीलवाड़ा) | 25 40 | 74 50 | 30 40 |
| चात्सू | 26 36 | 75 59 | 26 04 | बड़ी सादड़ी | 24 25 | 74 28 | 32 08 | शेरगढ़ (जोधपुर) | 26 24 | 72 21 | 40 36 |
| चित्तौड़गढ़ | 24 54 | 74 42 | 31 12 | बयाना | 26 55 | 77 17 | 20 52 | शेरगढ़ (झालावाड़) | 24 41 | 76 32 | 23 52 |
| चूरू | 28 19 | 75 01 | 29 56 | ब्यावर | 26 06 | 74 21 | 32 36 | श्रीगंगानगर | 29 49 | 73 50 | 34 40 |
| चोमू | 27 08 | 75 47 | 26 52 | बाड़मेर | 25 46 | 71 25 | 44 20 | श्रीमाधोपुर | 27 25 | 75 32 | 27 52 |
| चोटो | 25 28 | 71 06 | 45 36 | बांटीकुई | 27 02 | 76 34 | 23 44 | श्रीमोहनगढ़ | 27 17 | 71 12 | 45 12 |
| छाबरा | 24 40 | 76 54 | 22 24 | बाप | 27 24 | 72 22 | 40 32 | समदड़ी | 25 49 | 72 35 | 39 40 |
| छोटीसदड़ी | 24 24 | 74 36 | 31 36 | बारों | 25 07 | 76 30 | 24 00 | सरदार शहर | 28 27 | 74 30 | 32 00 |
| जयपुर | 26 55 | 75 52 | 26 32 | बांसवाड़ा | 23 30 | 74 24 | 32 24 | सरूपसर | 29 22 | 73 37 | 35 32 |
| जसवंतपुरा | 24 48 | 72 30 | 40 00 | बालोतरा | 25 50 | 72 14 | 41 04 | सवाईमाधोपुर | 25 59 | 76 30 | 24 00 |
| जालौर | 25 22 | 72 38 | 39 28 | बिलाड़ा | 26 11 | 73 42 | 35 12 | सांगानेर | 26 49 | 75 52 | 26 32 |
| जैसलमेर | 26 55 | 70 54 | 46 24 | बीकानेर | 28 01 | 73 22 | 36 32 | सांचोर | 24 41 | 71 50 | 42 40 |
| जोधपुर | 26 18 | 73 04 | 37 44 | बून्दी | 25 27 | 75 40 | 27 20 | साम्भर | 26 55 | 75 10 | 29 20 |
| जोधसर | 28 07 | 73 50 | 34 40 | भरतपुर | 27 05 | 77 30 | 20 00 | सादूलपुर | 28 39 | 75 24 | 28 24 |
| झालावाड़ | 24 36 | 76 09 | 25 24 | भादरा | 29 15 | 75 20 | 28 40 | सिरोही | 24 54 | 72 55 | 38 20 |
| झुंझुनू | 28 06 | 75 25 | 28 20 | भीनमाल | 25 01 | 72 19 | 40 44 | सिवाना | 25 37 | 72 27 | 40 12 |
| टोडारायसिंह | 26 00 | 75 29 | 28 04 | भीलवाड़ा | 25 21 | 74 40 | 31 20 | सीकर | 27 36 | 75 09 | 29 24 |
| टोंक | 26 11 | 75 50 | 26 40 | मकराना | 27 04 | 74 43 | 31 08 | सुजानगढ़ | 27 42 | 74 30 | 32 00 |
| डूंगरपुर | 23 50 | 73 43 | 35 08 | महाजन | 28 49 | 73 56 | 34 16 | सूरतगढ़ | 29 19 | 73 57 | 34 12 |
| डीडवाना | 27 17 | 74 25 | 32 20 | | | | | हनुमानगढ़ | 29 35 | 74 21 | 32 36 |
| तिजारा | 27 55 | 76 50 | 22 40 | | | | | | | | |
| थानागाजी | 27 25 | 76 19 | 24 44 | | | | | | | | |
| देओरा | 26 30 | 70 42 | 47 12 | | | | | | | | |
| देचू | 26 47 | 72 20 | 40 40 | | | | | | | | |

हरियाणा के नगरों के अक्षांश-रेखांश

| नगर | अक्षांश (उत्तर) | रेखांश (पूर्व) | स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मि. सें. | नगर | अक्षांश (उत्तर) | रेखांश (पूर्व) | स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मि. सें. | नगर | अक्षांश (उत्तर) | रेखांश (पूर्व) | स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण मि. सें. |
|-------------|--------------------|-------------------|---------------------------------------|-----------|--------------------|-------------------|---------------------------------------|-------------|--------------------|-------------------|---------------------------------------|
| अम्बाला | 30 21 | 76 52 | 22 32 | नरवाणा | 29 36 | 76 08 | 25 28 | महेन्द्रगढ़ | 28 18 | 76 09 | 25 24 |
| अलीपुर | 29 10 | 75 52 | 26 32 | नारनौल | 28 02 | 76 14 | 25 04 | माहम | 28 58 | 76 19 | 24 44 |
| अगरोहा | 29 20 | 75 38 | 27 28 | नारायणगढ़ | 30 30 | 77 09 | 21 24 | मोहाना | 29 04 | 76 50 | 22 40 |
| करनाल | 29 42 | 77 02 | 21 52 | नाहर | 28 23 | 76 23 | 24 28 | यमुनानगर | 30 08 | 77 16 | 20 56 |
| कलानौर | 28 52 | 76 23 | 24 28 | नीलोखेड़ी | 29 52 | 76 54 | 22 24 | रादौर | 30 02 | 77 06 | 21 36 |
| कालका | 30 49 | 76 57 | 22 12 | पंचकूला | 30 45 | 76 53 | 22 28 | रैना | 29 28 | 74 54 | 30 24 |
| कुरुक्षेत्र | 29 59 | 76 48 | 22 48 | पटौदी | 28 19 | 76 48 | 22 48 | रिवाड़ी | 28 12 | 76 40 | 23 20 |
| केसरी | 30 15 | 76 53 | 26 28 | पलवल | 28 10 | 77 19 | 20 44 | रोडी | 29 44 | 75 15 | 29 00 |
| कैथल | 29 48 | 76 26 | 24 16 | पानीपत | 29 23 | 77 01 | 21 56 | रोहतक | 28 54 | 76 38 | 23 28 |
| खतौली | 30 37 | 76 58 | 22 08 | पिंजौर | 30 49 | 76 55 | 22 20 | रिवासा | 28 48 | 75 57 | 26 12 |
| गुड़गांव | 28 29 | 77 04 | 21 44 | पिपली | 29 59 | 76 52 | 22 32 | लाडवा | 29 59 | 77 05 | 21 40 |
| गोहाना | 29 09 | 76 41 | 23 16 | पिहोवा | 29 56 | 76 36 | 23 36 | लोहारू | 28 16 | 75 45 | 27 00 |
| घरौण्डा | 29 34 | 76 58 | 22 08 | फतेहाबाद | 29 31 | 75 30 | 28 00 | शाहाबाद | 30 10 | 76 55 | 22 20 |
| जगाधरी | 30 10 | 77 16 | 20 56 | फरीदाबाद | 28 25 | 77 22 | 20 32 | सिरसा | 29 32 | 75 06 | 29 36 |
| जाखल | 29 49 | 75 49 | 26 44 | बल्लभगढ़ | 28 22 | 77 20 | 20 40 | सिवानी | 28 55 | 75 37 | 27 32 |
| जीन्द | 29 19 | 76 21 | 24 36 | बहादुरगढ़ | 28 42 | 76 55 | 22 20 | सोनीपत | 28 58 | 76 59 | 22 04 |
| झज्जर | 28 38 | 76 39 | 23 24 | भादसों | 29 56 | 76 56 | 22 16 | हसनपुर | 27 59 | 77 29 | 20 04 |
| टोहाना | 29 43 | 75 53 | 26 28 | भिवानी | 28 46 | 76 18 | 24 48 | हांसी | 29 06 | 76 00 | 26 04 |
| थानेसर | 29 58 | 76 56 | 22 16 | मनसादेवी | 30 44 | 76 52 | 22 32 | हिसार | 29 10 | 75 46 | 26 56 |
| दादरी | 28 33 | 77 32 | 19 52 | मनीमाजरा | 30 42 | 76 53 | 22 28 | | | | |

जम्मू-कश्मीर के नगरों के अक्षांश-रेखांश

| | | | | | | | | | | | |
|-------------|-------|-------|-------|-----------|-------|-------|-------|-------------|-------|-------|-------|
| अनन्तनाग | 33 43 | 75 12 | 29 12 | विलास | 35 27 | 74 06 | 33 36 | बसौली | 32 30 | 75 49 | 26 24 |
| अखनूर | 32 54 | 74 45 | 31 00 | चुशूल | 33 35 | 78 39 | 15 24 | बारामूला | 34 10 | 74 30 | 32 00 |
| अवन्तीपुरा | 33 56 | 75 03 | 29 48 | छम्ब | 32 51 | 74 23 | 32 28 | भद्रवाह | 33 04 | 75 50 | 26 40 |
| अमरनाथ गुफा | 34 13 | 75 33 | 27 48 | जम्मू | 32 43 | 74 54 | 30 24 | मार्तण्ड | 33 48 | 75 18 | 28 48 |
| इष्कुमान | 36 36 | 73 50 | 34 40 | जंगला | 33 40 | 77 00 | 22 00 | मिनीमार्ग | 34 49 | 75 02 | 29 52 |
| उड़ी | 34 04 | 74 02 | 33 52 | जास्कार | 33 30 | 77 00 | 22 00 | मुजफ्फराबाद | 34 22 | 73 31 | 35 56 |
| ऊधमपुर | 32 55 | 75 07 | 29 32 | जस्मेरगढ़ | 32 18 | 75 05 | 29 40 | मनावर | 32 50 | 74 25 | 32 20 |
| कटुआ | 32 17 | 75 36 | 27 36 | डोडा | 33 11 | 75 34 | 27 44 | रामनगर | 32 50 | 75 22 | 28 32 |
| कटरा | 33 01 | 74 58 | 30 08 | तेरू | 36 11 | 72 45 | 39 00 | राजौरी | 33 23 | 74 18 | 32 48 |
| कारगिल | 34 30 | 76 13 | 25 08 | द्रास | 34 22 | 75 50 | 26 40 | रामबन | 33 14 | 75 15 | 29 00 |
| केरन | 34 40 | 73 59 | 34 04 | नवांशहर | 32 30 | 74 46 | 30 56 | रियासी | 33 04 | 74 53 | 30 28 |
| किश्तवाड़ | 33 19 | 75 48 | 26 48 | नागिर | 36 17 | 74 45 | 31 00 | लेह | 34 10 | 77 40 | 19 20 |
| कोटली | 33 30 | 73 57 | 34 12 | नौशेरा | 33 13 | 74 17 | 32 52 | वैष्णो देवी | 33 03 | 74 56 | 30 16 |
| कुलगाम | 33 42 | 75 02 | 29 52 | पदम | 33 28 | 76 54 | 22 24 | वूलर | 34 20 | 74 37 | 31 22 |
| खयालू | 35 10 | 76 20 | 24 40 | पहलगांव | 34 01 | 75 24 | 28 24 | शेरकिला | 36 05 | 74 04 | 33 44 |
| खरताक्षो | 34 53 | 76 12 | 25 12 | परिपंजाल | 33 36 | 74 22 | 22 32 | श्रीनगर | 34 06 | 74 51 | 30 36 |
| गुलमर्ग | 34 05 | 74 25 | 32 20 | पुंछ | 33 51 | 74 08 | 33 28 | साम्बा | 32 33 | 75 07 | 29 32 |
| गिलगित | 35 55 | 74 22 | 32 32 | बनिहाल | 33 32 | 75 19 | 28 44 | सोपूर | 34 19 | 74 30 | 32 00 |
| गुरयास | 34 38 | 74 56 | 30 16 | बटोटी | 33 06 | 75 19 | 28 44 | सोनामार्ग | 34 19 | 75 20 | 28 40 |
| चिनेनी | 33 01 | 75 20 | 28 40 | बटोत | 33 10 | 75 06 | 29 36 | सोन्दर | 33 29 | 75 57 | 26 12 |
| | | | | बड़गाम | 34 00 | 74 44 | 31 04 | सोपुर | 34 19 | 74 30 | 32 00 |

विदेशी नगरों के अक्षांश-रेखांश एवं स्टै. अन्तर

आगे लिखे गए विदेशी नगरों के सामने स्थानीय समय का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए अन्तिम कालम में (-) चिह्न वाले नगरों का समय भा. स्टै. टा. से पहले घटित होगा जबकि (+) चिह्न वाले नगरों के आगे निर्दिष्ट समय, उतने घण्टे भिन्न बाद में घटित होगा। जैसे इंग्लैंड (लंदन) के आगे +5/30 घं. मिं. लिखे हैं, इसका भाव यह हुआ कि यदि इंग्लैंड में प्रातः के 6/30 बजे हैं तो भारत में दोपहर के 12 बजे होंगे। इसी भांति न्यूयार्क (अमेरिका) के आगे +10/30 घं. मिं. होने से इसका यह तात्पर्य होगा कि वहां साढ़े दस घण्टे पीछे अर्थात् गत दिवस के डेढ़ (1/30) बजे होंगे। ज्ञातव्य रहे, अमेरिका, कैनैडा, मैक्सिको आदि देशों में एक ही समय अलग-अलग स्टैण्डर्ड टाइम का निर्धारण किया जाता है। जैसे-एटलांटिक टाइम (A.T.), ईस्टर्न टाइम (Eastern Time), सेंट्रल टाइम (Central Time), माऊन्टेन टाइम, पैसिफिक टाइम इत्यादि। यह सब स्टै. टाइम अलग-अलग रेखांशों पर आधारित होते हैं। जिसे स्टैण्डर्ड मेरिडियन कहते हैं। उदाहरणतया ईस्टर्न टाइम 75° रेखांश, सेंट्रल टाइम 90° रेखांश पर, माऊन्टेन टाइम 105° पश्चिम रेखांश अनुसार निर्धारित होता है। अमरीका या कैनैडा में किसी नगर का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए वहां स्टैण्डर्ड मेरिडियन निर्धारक रेखांश का ज्ञान आवश्यक है। दूसरे, विदेशी समयान्तर में विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि अमरीका, कैनैडा, ब्रिटेन आदि कुछ देशों में ग्रीष्मकालीन समय (Day Saving Time) या Summer Time का भी विचार किया जाता है। जोकि प्रायः अप्रैल के अन्तिम रविवार से अक्टूबर के अन्तिम रविवार तक होता है। (अमरीका, कैनैडा में)। इन दिनों देश की घड़ियां एक घण्टा आगे कर दी जाती है। सुभी निधि शर्मा MS.C.

| नगर | देश | अक्षांश उ.=North द.=South | रेखांश पू.=East प.=West | स्टै. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) | स्टैण्डर्ड मेरिडियन | भा. स्टै. टा. से अन्तर | नगर | देश | अक्षांश उ.=North द.=South | रेखांश पू.=East प.=West | स्टै. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) | स्टैण्डर्ड मेरिडियन | भा. स्टै. टा. से अन्तर |
|--------------------------|-------------|---------------------------------|-------------------------------|---|------------------------|---------------------------|---------------------------|-------------|---------------------------------|-------------------------------|---|------------------------|---------------------------|
| | | अं. क. | अं. क. | मिं. से. | अं. क. | घं. मिं. | | | अं. क. | अं. क. | मिं. से. | अं. क. | घं. मिं. |
| अथेंस (Athens)* | Greece | 37 54 उ. | 23 52 पू. | -24 32 | 30 00 पू. | +03 30 | कन्थार | Afghanistan | 31 33 उ. | 65 30 पू. | -08 00 | 67 30 पू. | +01 00 |
| आकलैण्ड* | New Zealand | 36 52 द. | 174 42 पू. | -21 12 | 180 00 पू. | -06 30 | कैण्डी (Kandy) | Sri Lanka | 07 18 उ. | 80 38 पू. | -07 28 | 82 30 पू. | +00 00 |
| ओटावा (E.T.)* | Canada | 45 26 उ. | 75 42 पू. | -02 48 | 75 00 पू. | +10 30 | कोलाबो | Sri Lanka | 06 56 उ. | 79 51 पू. | -10 56 | 82 30 पू. | 00 00 |
| अबु-धाबी | U.A.E. | 24 58 उ. | 54 10 पू. | -22 20 | 60 00 पू. | +01 30 | कोपनहेगन* | Denmark | 55 40 उ. | 12 30 पू. | -10 00 | 15 00 पू. | +04 30 |
| ऑस्टिन (Texas) (Austin)* | U.S.A. | 30 16 उ. | 97 45 पू. | -31 00 | 90 00 पू. | +11 30 | कैलीफोर्निया* | U.S.A. | 35 58 उ. | 118 40 पू. | +05 20 | 120 00 पू. | +13 30 |
| ऐबिलेन (Abilen)* | U.S.A. | 32 27 उ. | 99 44 पू. | -38 56 | 90 00 पू. | +11 30 | कोलम्बस (E.T.)* | U.S.A. | 32 28 उ. | 84 59 पू. | -39 56 | 75 00 पू. | +10 30 |
| ऐब्सफोर्ड (Abersford)* | U.S.A. | 49 10 उ. | 122 30 पू. | -10 00 | 120 00 पू. | +13 30 | कोलम्बिया (C.T.)* | U.S.A. | 38 57 उ. | 92 20 पू. | -09 20 | 90 00 पू. | +11 30 |
| ऐमस्टर्डम* (Netherlands) | U.S.A. | 52 22 उ. | 04 53 पू. | -40 28 | 15 00 पू. | +04 30 | कालगिरी (Calgary)* | Canada | 51 03 उ. | 114 03 पू. | -36 12 | 105 00 पू. | +12 30 |
| ओक्सफोर्ड (C.T.)* | U.S.A. | 34 22 उ. | 89 32 पू. | +01 52 | 90 00 पू. | +11 30 | ग्रोनविच* | England | 51 29 उ. | 00 00 | 00 00 | 00 00 | +05 30 |
| ऐडनबर्ग (Adenbergh)* | England | 55 52 उ. | 3 12 पू. | -12 48 | 00 00 | +05 30 | जनेवा (Geneva)* | Switzerland | 46 12 उ. | 06 09 पू. | -35 24 | 15 00 पू. | +04 30 |
| एडमंटन (Edmonton)* | Canada | 53 33 उ. | 113 29 पू. | -33 56 | 105 00 पू. | +12 30 | जकार्ता | Indonesia | 06 10 द. | 106 49 पू. | +07 16 | 105 00 पू. | -01 30 |
| ओक्सफोर्ड (Oxford)* | England | 51 46 उ. | 1 15 पू. | -5 00 | 00 00 | +05 30 | जाफना | Sri Lanka | 09 40 उ. | 80 00 पू. | -10 00 | 82 30 पू. | 00 00 |
| ईस्लामाबाद* | Pakistan | 33 40 उ. | 73 04 पू. | -07 44 | 75 00 पू. | +00 30 | जेरूसलाम | Israel | 31 46 उ. | 35 14 पू. | +20 56 | 30 00 पू. | +03 30 |
| इस्तंबूल (Istanbul)* | Turkey | 41 00 उ. | 29 00 पू. | -04 00 | 30 00 पू. | +03 30 | टोरंटो (Toronto)* | Canada | 43 39 उ. | 79 23 पू. | -17 32 | 75 00 पू. | +10 30 |
| काठमाण्डू | Nepal | 27 42 उ. | 85 19 पू. | -03 44 | 86 15 पू. | -00 15 | टोकियो (Tokyo) | Japan | 35 40 उ. | 139 46 पू. | +19 04 | 135 00 पू. | -03 30 |
| कुआलालम्पुर | Malaysia | 03 02 उ. | 101 40 पू. | -73 20 | 120 00 पू. | +02 30 | टैरस (Terrace)* | Canada | 54 17 उ. | 128 57 पू. | -35 48 | 120 00 पू. | +13 30 |
| कुवैत | Kuwait | 29 20 उ. | 47 59 पू. | +11 56 | 45 00 पू. | +02 30 | डोनकास्टर (Doncaster)* | England | 53 27 उ. | 01 02 पू. | -04 08 | 00 00 | +05 30 |
| कराची* | Pakistan | 24 52 उ. | 67 03 पू. | -31 48 | 75 00 पू. | +00 30 | डेट्रोइट (Detroit Michi)* | U.S.A. | 42 20 उ. | 83 03 पू. | -32 12 | 75 00 पू. | +10 30 |
| काबुल | Afghanistan | 34 32 उ. | 69 12 पू. | +06 48 | 67 30 पू. | +01 00 | डबलिन (Dublin)* | Ireland | 53 21 उ. | 06 15 पू. | -25 00 | 00 00 पू. | +05 30 |

| नगर | देश | अक्षांश उ.=North द.=South | रेखांश पू.=East प.=-West | स्टैण्डर्ड मेरिडियन | भा. स्टै. टा. से अन्तर | नगर | देश | अक्षांश उ.=North द.=South | रेखांश पू.=East प.=-West | स्टैण्डर्ड मेरिडियन | भा. स्टै. टा. से अन्तर |
|--------------------------------|-------------|---------------------------------|--------------------------------|------------------------|---------------------------|---------------------------|---------------|---------------------------------|--------------------------------|------------------------|---------------------------|
| नगर | देश | अक्षांश उ.=North द.=South | रेखांश पू.=East प.=-West | स्टैण्डर्ड मेरिडियन | भा. स्टै. टा. से अन्तर | नगर | देश | अक्षांश उ.=North द.=South | रेखांश पू.=East प.=-West | स्टैण्डर्ड मेरिडियन | भा. स्टै. टा. से अन्तर |
| डर्बी (Derby)* | England | 52 58 उ. | 01 25 प. | 00 00 प. | +05 30 | मानचेस्टर* | England | 53 28 उ. | 02 12 प. | 00 00 | +05 30 |
| दालेस (Dales Texas)* | U.S.A. | 29 56 उ. | 97 34 प. | 90 00 प. | +11 30 | मिचिगन सिटी (Michigan)* | U.S.A. | 42 53 उ. | 88 03 प. | 90 00 प. | +11 30 |
| दोरे-सलाम | Tanzania | 06 50 द. | 39 17 प. | 45 00 पू. | +02 30 | मोंट्रियल (Montreal)* | Canada (E.T.) | 45 31 उ. | 73 33 प. | 75 00 प. | +10 30 |
| दुबई (Dubai) | U.A.E. | 25 19 उ. | 55 18 पू. | 60 00 पू. | +01 30 | मिसौरी (Missouri)* | Canada (E.T.) | 43 33 उ. | 79 35 प. | 75 00 प. | +10 30 |
| न्यूयॉर्क (New York)* | U.S.A. | 40 43 उ. | 74 00 प. | 75 00 प. | +10 30 | मैक्सिको सिटी* | Mexico | 19 26 उ. | 99 10 प. | 90 00 प. | +11 30 |
| न्यूजर्सी (E.T.)* | U.S.A. | 40 43 उ. | 74 09 प. | 75 00 प. | +10 30 | मैलबर्न* | Australia | 37 50 उ. | 144 59 पू. | 150 00 पू. | -04 30 |
| नोटिंगहम (Nottingham)* | England | 52 51 उ. | 01 18 प. | 00 10 | +05 30 | मनीला (Manila)* | Philippines | 14 35 उ. | 121 00 पू. | 120 00 पू. | -02 30 |
| नरोबी | Kenya | 01 18 द. | 36 52 पू. | 45 00 पू. | +02 30 | मुल्तान* | Pakistan | 30 11 उ. | 71 29 पू. | 75 00 पू. | +00 30 |
| न्यू कैसल (New Castle)* | England | 52 27 उ. | 09 04 प. | 00 00 | +05 30 | रियाध | Saudi Arabia | 24 39 उ. | 46 41 पू. | 45 00 पू. | +02 30 |
| पेरिस (Paris)* | France | 48 50 उ. | 02 20 पू. | 15 00 पू. | +04 30 | रावलपिंडी* | Pakistan | 33 36 उ. | 73 04 पू. | 75 00 पू. | +00 30 |
| पर्थ* (Perth) | Australia | 31 57 द. | 115 52 पू. | 120 00 पू. | -02 30 | लाहौर* (Pakistan) | Pakistan | 31 15 उ. | 74 18 पू. | 75 00 पू. | +00 30 |
| पेशावर* | Pakistan | 34 01 उ. | 71 33 पू. | 75 00 पू. | +00 30 | लीड्स (Leeds)* | England | 53 50 उ. | 01 35 प. | 00 00 | +05 30 |
| प्लाइमाउथ (Plymouth)* | England | 50 25 उ. | 04 05 प. | 00 00 | +05 30 | लिवरपूल (Liverpool)* | England | 53 24 उ. | 02 58 प. | 00 00 | +05 30 |
| प्रिंस जॉर्ज (Prince George)* | Canada | 53 55 उ. | 122 46 प. | 120 00 प. | +13 30 | लंदन* | England | 51 32 उ. | 00 05 प. | 00 00 | +05 30 |
| प्रिंस रूडर्ट (Prince Rupert)* | Canada | 54 19 उ. | 130 19 प. | 120 00 प. | +13 30 | लिसबन (Lisbon)* | England | 38 43 उ. | 09 10 प. | 00 00 | +05 30 |
| पोर्ट लुईस (Port Louis)* | Mauritius | 20 10 द. | 57 30 पू. | 60 00 पू. | +01 30 | लोस एंजलस* | U.S.A. | 34 03 उ. | 118 17 प. | 120 00 प. | +13 30 |
| फ्लोरिडा (Florida City) | U.S.A. | 25 27 उ. | 80 29 प. | 75 00 प. | +10 30 | वॉशिंगटन (Washington)* | England | 52 36 उ. | 02 05 प. | 00 00 | +05 30 |
| बगदाद | Iraq | 33 18 उ. | 44 30 पू. | 45 00 पू. | +02 30 | वैनकोवर* | Canada (P.T.) | 49 17 उ. | 123 05 प. | 120 00 प. | +13 30 |
| बहावलपुर* | Pakistan | 30 00 उ. | 73 16 पू. | 75 00 पू. | +00 30 | विक्टोरिया* | Canada (P.T.) | 48 25 उ. | 123 21 प. | 120 00 प. | +13 30 |
| बैंकांक | Thailand | 13 43 उ. | 100 31 पू. | 105 00 पू. | -01 30 | वॉशिंगटन* | U.S.A. | 38 55 उ. | 77 04 प. | 75 00 प. | +10 30 |
| बीजिंग | China | 39 55 उ. | 116 25 पू. | 120 00 पू. | -02 30 | वैलिंगटन (Wellington)* | New Zealand | 41 16 द. | 174 47 पू. | 180 00 पू. | -06 30 |
| बर्लिन* | Germany | 52 32 उ. | 13 25 पू. | 15 00 पू. | +04 30 | शिकागो (C.T.)* | U.S.A. | 41 53 उ. | 87 38 प. | 90 00 प. | +11 30 |
| बर्न* | Switzerland | 46 55 उ. | 07 30 पू. | 15 00 पू. | +05 30 | सेन फ्रांसिस्को (P.T.)* | U.S.A. (P.T.) | 37 48 उ. | 122 25 प. | 120 00 प. | +13 30 |
| बर्मिंघम (Birmingham)* | England | 52 30 उ. | 01 50 प. | 00 00 | +05 30 | सैंता रोज़ा (Santa Rosa)* | U.S.A. (P.T.) | 38 30 उ. | 123 05 प. | 120 00 प. | +13 30 |
| ब्रेडफोर्ड (Bradford)* | England | 53 46 उ. | 01 40 प. | 00 00 | +05 30 | साउथ-हैम्पटन* | England | 50 54 उ. | 01 24 प. | 00 00 | +05 30 |
| ब्रैम्पटन (Brampton)* | Canada | 43 41 उ. | 79 48 प. | 75 00 प. | +10 30 | सिंगापुर | Singapore | 01 17 उ. | 103 54 पू. | 120 00 पू. | -02 30 |
| बैकर्सफील्ड (Bakersfield)* | Cal. U.S.A. | 35 23 उ. | 119 01 प. | 120 00 पू. | +13 30 | सिडनी* | Australia | 33 52 द. | 151 12 पू. | 150 00 पू. | -04 30 |
| ब्रिस्टल (Bristol)* | England | 51 27 उ. | 02 35 प. | 00 00 | +05 30 | हॉउसटन (Texas)* | U.S.A. | 29 45 उ. | 95 22 प. | 90 00 प. | +11 30 |
| बॉन (Bonn)* | Germany | 50 44 उ. | 07 04 पू. | 15 00 पू. | +04 30 | हैम्पटन (Hamilton)* | Canada | 43 15 उ. | 79 50 प. | 75 00 प. | +10 30 |
| बोस्टन (Boston)* | U.S.A. | 42 21 उ. | 71 04 प. | 75 00 प. | +10 30 | युबा सिटी (California)* | U.S.A. | 41 16 उ. | 121 08 प. | 120 00 प. | +13 30 |
| फ्रेडरिक (Frederick Maryland)* | U.S.A. | 39 38 उ. | 78 31 प. | 75 00 प. | +10 30 | विन्निपेग (Manitoba)* | Canada | 49 54 उ. | 97 08 प. | 90 00 प. | +11 30 |
| ब्रिस्बेन* | Australia | 27 28 द. | 153 02 पू. | 150 00 पू. | -04 30 | | | | | | |

*इन नगरों में ग्रीनवाइलीन समय (Summer or Day Saving Time) प्रचलित है।

मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से विश्व के किसी भी नगर का सूर्योदयास्त निकालें

ज्योतिष शास्त्र में सूर्योदयास्त की उपयोगिता सर्वविदित है। पृथ्वी पर सभी स्थानों पर सूर्योदयास्त एवं दिनमान एक समान नहीं होता। पृथ्वी की दैनिक गति एवं परिक्रमण गति के कारण प्रत्येक स्थान पर प्रतिदिन सूर्योदय एवं अस्त काल में अन्तर पड़ता है। सूर्योदयास्तादि तथा विभिन्न स्थानों की पारस्परिक अंशात्मक दूरी जानने के लिए अभीष्ट स्थान का अक्षांश, रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर की आवश्यकता पड़ती है। किसी नगर के स्टैण्डर्ड अन्तर की जानकारी के लिए तत्सम्बन्धी देश के मानक समय (Standard Time) के माध्यमिक मध्याह्न (Stand. Meridian) रेखा ज्ञान होना चाहिए। भारतीय मानक समय का निर्धारण रेखांश ८२°३० पूर्व (ग्रीनविच से) एवं अक्षांश २३°११ उत्तर रेखाओं के मध्य बिन्दु पर आधारित है। इसी मध्यवर्ती रेखांश बिन्दु ८२°३० के आधार पर भारत में स्थित अन्य नगरों की अंशात्मक दूरी (Standard difference) ४ मिट प्रति एक अंश के अनुपात से ऋण (—) अथवा जमा (+) किया जाता है। जो भारतीय नगर ८२°३० रेखांश से पश्चिम में पड़ेंगे, वहाँ का देशान्तर (स्टै० अन्तर) ऋण (—) लिखा जाता है तथा जो भा० नगर ८२°३० के पूर्व में पड़ेंगे, वहाँ का स्टै० अन्तर जमा (+) में अंकित किया जाता है।

गत पृष्ठों पर लिखे गए प्रायः सभी नगर ८२°३०' पू० रेखांश से पश्चिम में स्थित होने के कारण, उनका रेखांतर (स्टैण्डर्ड अन्तर) ऋण (—) लिखा गया है, जबकि अपने नगर का सूर्योदय-अस्त जानने के लिए नगर के आगे लिखे हुए स्टै० अन्तर को स्थानीय मध्यम सूर्योदयास्त अक्षांश सारिणी में प्राप्त सूर्योदयास्त में जमा (+) करके अभीष्ट नगर का सूर्योदयास्त पता चलेगा।

यदि आपके नगर के अक्षांश (अंश कला में) मध्यम अक्षांश सारिणी में दिए सूर्योदयादि से कम या अधिक हो तो आप अभीष्ट तिथि से सूर्योदय-अस्त में अनुपातिक विधि से मिट/सैकिंडज का संस्कार करके अभीष्ट तिथि का सूर्योदयास्त निकाल सकते हैं। इस दृश्यमान सूर्योदयास्त में अपने अक्षांश भेद के अनुसार लगभग २/३ मिट जमा करने (किरणवक्रा भवन संस्कार) से शुद्ध शास्त्रीय मान (इष्टकालिक) का सूर्योदयास्त प्राप्त हो जायेगा।

उदाहरण — मान लो, आपको २ फर. को सोनीपत का सूर्योदय ज्ञात करना है। सर्वप्रथम सोनीपत के अक्षांश, रेखांश ज्ञात करेंगे। गत पृष्ठों में देखने से हमें सोनीपत का अक्षांश २८°५८, रेखांश ७६°५९ तथा स्टै० अन्तर — २२°०४ मि. से. प्राप्त हुआ है। सारिणी में अक्षांश २५ से ३० के मध्य अनुपातिक विधि से देखने पर हमें सू. उ. ६/४९ प्राप्त हुआ। इसमें स्टै० अन्तर (— २२°०४) अर्थात् २२ मिट जमा करने (क्वॉकि स्टै० अन्तर ऋण है अथवा यू. कहिए सोनीपत ८२°३० रेखांश के पश्चिम में है) से सूर्योदय ७/११ प्राप्त हुए। इसमें ३ मिट शास्त्रीय समय भी जमा करने से शुद्ध इष्टकालिक सूर्योदय प्राप्त होगा। अर्थात् ७/१४ आगे लिखे अक्षांशों में भारत के अतिरिक्त विदेशों के भी जैसे—इंग्लैण्ड, कैनेडा, अमरीका आदि नगरों के सूर्योदयास्त सुगमता से ज्ञात किए जा सकते हैं।

ध्यान रहे, भारत के अधिकांश नगर अक्षांश १०° से ३५° अक्षांश तक ही पड़ते हैं, शेष अक्षांश विदेशी नगरों के हैं।

नीचे उत्तरी अक्षांशों के अनुसार स्वदेशीय (लोकल) मध्यम सूर्योदयास्त लिख रहे हैं इनमें अपने अभीष्ट अक्षांश का स्टै० अन्तर + या — करने से स्टै० टा. में सू. उ. व सू. अ. निकल आएगा।

| अक्षांश | अक्षांश १०° उ. | अक्षांश १०° उ. | अक्षांश २०° उ. | अक्षांश २०° उ. | अक्षांश ३०° उ. | अक्षांश ३०° उ. | अक्षांश ३५° उ. | अक्षांश ४०° उ. | अक्षांश ४५° उ. | अक्षांश ५०° उ. | अक्षांश ५०° उ. | अक्षांश ५२° उ. | अक्षांश ५२° उ. | अक्षांश ५४° उ. |
|---------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|----------------|
| तारीख | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. उ. | सू. उ. | सू. अ. | सू. अ. |
| जनवरी | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| १ जन | ६ १७ | १७ ४९ | ६ ३५ | १७ ३१ | ६ ५६ | १७ १० | ७ ०८ | १६ ५८ | ७ ३९ | १६ २८ | ७ ५९ | १६ ०८ | ८ ०८ | १५ ४७ |
| २ | ६ १८ | १७ ५१ | ६ ३६ | १७ ३३ | ६ ५६ | १७ १३ | ७ ०८ | १७ ०० | ७ ३९ | १६ ३१ | ७ ५९ | १६ ११ | ८ ०८ | १५ ५० |
| ३ | ६ १८ | १७ ५२ | ६ ३६ | १७ ३४ | ६ ५७ | १७ १४ | ७ ०९ | १७ ०२ | ७ ३९ | १६ ३३ | ७ ५९ | १६ १३ | ८ ०८ | १५ ५३ |
| ४ | ६ १९ | १७ ५३ | ६ ३७ | १७ ३५ | ६ ५७ | १७ १६ | ७ ०९ | १७ ०४ | ७ ३९ | १६ ३५ | ७ ५८ | १६ १६ | ८ ०७ | १५ ५६ |
| ५ | ६ २० | १७ ५४ | ६ ३७ | १७ ३६ | ६ ५७ | १७ १७ | ७ ०९ | १७ ०५ | ७ ३९ | १६ ३६ | ७ ५८ | १६ १८ | ८ ०६ | १५ ५९ |
| ६ | ६ २० | १७ ५५ | ६ ३७ | १७ ३६ | ६ ५७ | १७ १८ | ७ ०९ | १७ ०५ | ७ ३९ | १६ ३६ | ७ ५८ | १६ १८ | ८ ०५ | १५ ५९ |
| ७ | ६ २१ | १७ ५६ | ६ ३८ | १७ ३९ | ६ ५७ | १७ २० | ७ ०८ | १७ ०९ | ७ ३९ | १६ ३७ | ७ ५८ | १६ १९ | ८ ०४ | १५ ५९ |
| ८ | ६ २२ | १७ ५८ | ६ ३८ | १७ ४० | ६ ५७ | १७ २२ | ७ ०८ | १७ ११ | ७ ३९ | १६ ४१ | ७ ५५ | १६ २३ | ८ ०३ | १५ ५९ |
| ९ | ६ २२ | १७ ५९ | ६ ३८ | १७ ४१ | ६ ५७ | १७ २४ | ७ ०८ | १७ १३ | ७ ३९ | १६ ४१ | ७ ५५ | १६ २३ | ८ ०२ | १५ ५९ |
| १० | ६ २३ | १८ ०० | ६ ३८ | १७ ४२ | ६ ५६ | १७ २५ | ७ ०७ | १७ १५ | ७ ३९ | १६ ४२ | ७ ५५ | १६ २३ | ८ ०१ | १५ ५९ |
| ११ | ६ २३ | १८ ०१ | ६ ३८ | १७ ४३ | ६ ५६ | १७ २७ | ७ ०६ | १७ १७ | ७ ३९ | १६ ४३ | ७ ५५ | १६ २३ | ८ ०० | १५ ५९ |
| १२ | ६ २३ | १८ ०२ | ६ ३८ | १७ ४४ | ६ ५५ | १७ २९ | ७ ०५ | १७ १९ | ७ ३९ | १६ ४४ | ७ ५५ | १६ २३ | ८ ०० | १५ ५९ |
| १३ | ६ २३ | १८ ०३ | ६ ३७ | १७ ४६ | ६ ५५ | १७ ३३ | ७ ०४ | १७ २३ | ७ ३९ | १६ ४५ | ७ ५५ | १६ २३ | ८ ०० | १५ ५९ |
| १४ | ६ २३ | १८ ०४ | ६ ३७ | १७ ४६ | ६ ५५ | १७ ३३ | ७ ०३ | १७ २३ | ७ ३९ | १६ ४५ | ७ ५५ | १६ २३ | ८ ०० | १५ ५९ |
| १५ | ६ २३ | १८ ०५ | ६ ३७ | १७ ४६ | ६ ५५ | १७ ३३ | ७ ०२ | १७ २५ | ७ ३९ | १६ ४५ | ७ ५५ | १६ २३ | ८ ०० | १५ ५९ |
| १६ | ६ २३ | १८ ०५ | ६ ३७ | १७ ४६ | ६ ५५ | १७ ३३ | ७ ०२ | १७ २५ | ७ ३९ | १६ ४५ | ७ ५५ | १६ २३ | ८ ०० | १५ ५९ |
| १७ | ६ २३ | १८ ०५ | ६ ३७ | १७ ४६ | ६ ५५ | १७ ३३ | ७ ०२ | १७ २५ | ७ ३९ | १६ ४५ | ७ ५५ | १६ २३ | ८ ०० | १५ ५९ |
| १८ | ६ २३ | १८ ०५ | ६ ३७ | १७ ४६ | ६ ५५ | १७ ३३ | ७ ०२ | १७ २५ | ७ ३९ | १६ ४५ | ७ ५५ | १६ २३ | ८ ०० | १५ ५९ |
| १९ | ६ २३ | १८ ०५ | ६ ३७ | १७ ४६ | ६ ५५ | १७ ३३ | ७ ०२ | १७ २५ | ७ ३९ | १६ ४५ | ७ ५५ | १६ २३ | ८ ०० | १५ ५९ |
| २० | ६ २३ | १८ ०५ | ६ ३७ | १७ ४६ | ६ ५५ | १७ ३३ | ७ ०२ | १७ २५ | ७ ३९ | १६ ४५ | ७ ५५ | १६ २३ | ८ ०० | १५ ५९ |
| २१ | ६ २३ | १८ ०५ | ६ ३७ | १७ ४६ | ६ ५५ | १७ ३३ | ७ ०२ | १७ २५ | ७ ३९ | १६ ४५ | ७ ५५ | १६ २३ | ८ ०० | १५ ५९ |
| २२ | ६ २३ | १८ ०५ | ६ ३७ | १७ ४६ | ६ ५५ | १७ ३३ | ७ ०२ | १७ २५ | ७ ३९ | १६ ४५ | ७ ५५ | १६ २३ | ८ ०० | १५ ५९ |

—शुभचिन्तक पं. पन्ना लाल गणितकर्त्ता

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

हिमाचल प्रदेश के प्रमुख शहरों के सूर्योदयास्त की सारणी भा. स्टै. टाईम

नीचे हिमाचल प्रदेश के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण-वक्रों भवन संस्कार रहित हैं। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग २ मिनट घटाने तथा अस्त में २ मिनट जोड़ने से किरण वक्रों संस्कार सहित अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय-सूर्यास्त होंगे। पाठकों की सुविधा हेतु आगे प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त से पूर्व हिमाचल प्रदेश के विभिन्न नगरों के सूर्योदयास्त में परिवर्तन संस्कार लिख रहे हैं जिससे आप किसी भी अभीष्ट नगर का सूर्योदय सुगमता पूर्वक ज्ञात कर सकते हैं।

उदाहरण—मान लीजिए करसोग में ११ अप्रैल को सूर्योदय व सूर्यास्त जानना है तो हमें जिला मण्डी के स्तम्भ (Column) में देखने से सूर्योदय ६ घण्टे १ मिनट तथा सूर्यास्त १८ घण्टे ४४ मिनट प्राप्त हुए। इन दोनों सू० उ० व सू० अ० में नीचे दी गई संस्कार तालिका में करसोग का संस्कार—१ घण्टे ०४ मिनट घटाने से हमें ५ घण्टे ५९ मिनट ५६ सैकण्ड और १८ घण्टे ४२ मिनट २६ सैकण्ड में प्राप्त हुए। ये करसोग के शुद्ध शास्त्रीय सूर्योदय एवं सूर्यास्त होंगे।

| नगर | काँगड़ा-धर्म | | हमीरपुर | | ऊना | | बिलासपुर | | मंडी-कुल्लू | | सरकाघाट | | शिमला | | सोलन | | चम्बा | | नाहन | | रामपुर बुधौ | |
|---------|--------------|---------|---------|---------|---------|---------|----------|---------|-------------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|-------------|---------|
| | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त |
| जनवरी | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. |
| 1 | ७ २८ | १७ २९ | ७ २७ | १७ २८ | ७ २६ | १७ २७ | ७ २५ | १७ २६ | ७ २४ | १७ २५ | ७ २३ | १७ २४ | ७ २२ | १७ २३ | ७ २१ | १७ २२ | ७ २० | १७ २१ | ७ १९ | १७ २० | ७ १७ | १७ १८ |
| 4 | ७ २८ | १७ ३२ | ७ २८ | १७ ३३ | ७ २६ | १७ ३३ | ७ २५ | १७ ३३ | ७ २५ | १७ ३३ | ७ २३ | १७ ३३ | ७ २२ | १७ ३३ | ७ २१ | १७ ३३ | ७ २० | १७ ३३ | ७ १९ | १७ ३० | ७ १७ | १७ १८ |
| 7 | ७ २९ | १७ ३४ | ७ २८ | १७ ३५ | ७ २६ | १७ ३५ | ७ २५ | १७ ३५ | ७ २५ | १७ ३५ | ७ २३ | १७ ३५ | ७ २२ | १७ ३५ | ७ २१ | १७ ३५ | ७ २० | १७ ३५ | ७ १९ | १७ ३० | ७ १७ | १७ १८ |
| 10 | ७ २९ | १७ ३७ | ७ २९ | १७ ३६ | ७ २६ | १७ ३६ | ७ २५ | १७ ३६ | ७ २५ | १७ ३६ | ७ २३ | १७ ३६ | ७ २२ | १७ ३६ | ७ २१ | १७ ३६ | ७ २० | १७ ३६ | ७ १९ | १७ ३० | ७ १७ | १७ १८ |
| 13 | ७ २८ | १७ ३९ | ७ २८ | १७ ३८ | ७ २६ | १७ ३८ | ७ २५ | १७ ३८ | ७ २५ | १७ ३८ | ७ २३ | १७ ३८ | ७ २२ | १७ ३८ | ७ २१ | १७ ३८ | ७ २० | १७ ३८ | ७ १९ | १७ ३० | ७ १७ | १७ १८ |
| 16 | ७ २८ | १७ ४२ | ७ २८ | १७ ४१ | ७ २६ | १७ ४१ | ७ २५ | १७ ४१ | ७ २५ | १७ ४१ | ७ २३ | १७ ४१ | ७ २२ | १७ ४१ | ७ २१ | १७ ४१ | ७ २० | १७ ४१ | ७ १९ | १७ ३० | ७ १७ | १७ १८ |
| 19 | ७ २८ | १७ ४५ | ७ २८ | १७ ४४ | ७ २६ | १७ ४४ | ७ २५ | १७ ४४ | ७ २५ | १७ ४४ | ७ २३ | १७ ४४ | ७ २२ | १७ ४४ | ७ २१ | १७ ४४ | ७ २० | १७ ४४ | ७ १९ | १७ ३० | ७ १७ | १७ १८ |
| 22 | ७ २६ | १७ ४७ | ७ २५ | १७ ४६ | ७ २५ | १७ ४६ | ७ २५ | १७ ४६ | ७ २५ | १७ ४६ | ७ २३ | १७ ४६ | ७ २२ | १७ ४६ | ७ २१ | १७ ४६ | ७ २० | १७ ४६ | ७ १९ | १७ ३० | ७ १७ | १७ १८ |
| 25 | ७ २५ | १७ ५० | ७ २५ | १७ ४९ | ७ २५ | १७ ४९ | ७ २५ | १७ ४९ | ७ २५ | १७ ४९ | ७ २३ | १७ ४९ | ७ २२ | १७ ४९ | ७ २१ | १७ ४९ | ७ २० | १७ ४९ | ७ १९ | १७ ३० | ७ १७ | १७ १८ |
| 28 | ७ २३ | १७ ५२ | ७ २३ | १७ ५१ | ७ २३ | १७ ५१ | ७ २३ | १७ ५१ | ७ २३ | १७ ५१ | ७ २३ | १७ ५१ | ७ २३ | १७ ५१ | ७ २३ | १७ ५१ | ७ २३ | १७ ५१ | ७ २३ | १७ ५१ | ७ २३ | १७ ५१ |
| 31 | ७ २१ | १७ ५५ | ७ २१ | १७ ५४ | ७ २१ | १७ ५४ | ७ २१ | १७ ५४ | ७ २१ | १७ ५४ | ७ २१ | १७ ५४ | ७ २१ | १७ ५४ | ७ २१ | १७ ५४ | ७ २१ | १७ ५४ | ७ २१ | १७ ५४ | ७ २१ | १७ ५४ |
| 3 फर. | ७ २० | १७ ५८ | ७ २१ | १७ ५७ | ७ २१ | १७ ५७ | ७ २१ | १७ ५७ | ७ २१ | १७ ५७ | ७ २१ | १७ ५७ | ७ २१ | १७ ५७ | ७ २१ | १७ ५७ | ७ २१ | १७ ५७ | ७ २१ | १७ ५७ | ७ २१ | १७ ५७ |
| 6 | ७ १८ | १८ ०० | ७ १९ | १८ ०१ | ७ १९ | १८ ०१ | ७ १९ | १८ ०१ | ७ १९ | १८ ०१ | ७ १९ | १८ ०१ | ७ १९ | १८ ०१ | ७ १९ | १८ ०१ | ७ १९ | १८ ०१ | ७ १९ | १८ ०१ | ७ १९ | १८ ०१ |
| 9 | ७ १५ | १८ ०३ | ७ १८ | १८ ०३ | ७ १८ | १८ ०३ | ७ १८ | १८ ०३ | ७ १८ | १८ ०३ | ७ १८ | १८ ०३ | ७ १८ | १८ ०३ | ७ १८ | १८ ०३ | ७ १८ | १८ ०३ | ७ १८ | १८ ०३ | ७ १८ | १८ ०३ |
| 12 | ७ १२ | १८ ०६ | ७ १२ | १८ ०६ | ७ १२ | १८ ०६ | ७ १२ | १८ ०६ | ७ १२ | १८ ०६ | ७ १२ | १८ ०६ | ७ १२ | १८ ०६ | ७ १२ | १८ ०६ | ७ १२ | १८ ०६ | ७ १२ | १८ ०६ | ७ १२ | १८ ०६ |
| 15 | ७ १० | १८ ०८ | ७ १० | १८ ०८ | ७ १० | १८ ०८ | ७ १० | १८ ०८ | ७ १० | १८ ०८ | ७ १० | १८ ०८ | ७ १० | १८ ०८ | ७ १० | १८ ०८ | ७ १० | १८ ०८ | ७ १० | १८ ०८ | ७ १० | १८ ०८ |
| 18 | ७ ०७ | १८ १० | ७ ०७ | १८ १० | ७ ०७ | १८ १० | ७ ०७ | १८ १० | ७ ०७ | १८ १० | ७ ०७ | १८ १० | ७ ०७ | १८ १० | ७ ०७ | १८ १० | ७ ०७ | १८ १० | ७ ०७ | १८ १० | ७ ०७ | १८ १० |
| 21 | ७ ०४ | १८ १३ | ७ ०३ | १८ १३ | ७ ०३ | १८ १३ | ७ ०३ | १८ १३ | ७ ०३ | १८ १३ | ७ ०३ | १८ १३ | ७ ०३ | १८ १३ | ७ ०३ | १८ १३ | ७ ०३ | १८ १३ | ७ ०३ | १८ १३ | ७ ०३ | १८ १३ |
| 24 | ७ ०१ | १८ १५ | ७ ०० | १८ १५ | ७ ०० | १८ १५ | ७ ०० | १८ १५ | ७ ०० | १८ १५ | ७ ०० | १८ १५ | ७ ०० | १८ १५ | ७ ०० | १८ १५ | ७ ०० | १८ १५ | ७ ०० | १८ १५ | ७ ०० | १८ १५ |
| 27 | ६ ५८ | १८ १८ | ६ ५७ | १८ १८ | ६ ५७ | १८ १८ | ६ ५७ | १८ १८ | ६ ५७ | १८ १८ | ६ ५७ | १८ १८ | ६ ५७ | १८ १८ | ६ ५७ | १८ १८ | ६ ५७ | १८ १८ | ६ ५७ | १८ १८ | ६ ५७ | १८ १८ |
| 2 मार्च | ६ ५४ | १८ २० | ६ ५३ | १८ २० | ६ ५३ | १८ २० | ६ ५३ | १८ २० | ६ ५३ | १८ २० | ६ ५३ | १८ २० | ६ ५३ | १८ २० | ६ ५३ | १८ २० | ६ ५३ | १८ २० | ६ ५३ | १८ २० | ६ ५३ | १८ २० |
| 5 | ६ ५१ | १८ २२ | ६ ५० | १८ २२ | ६ ५० | १८ २२ | ६ ५० | १८ २२ | ६ ५० | १८ २२ | ६ ५० | १८ २२ | ६ ५० | १८ २२ | ६ ५० | १८ २२ | ६ ५० | १८ २२ | ६ ५० | १८ २२ | ६ ५० | १८ २२ |
| 8 | ६ ४६ | १८ २४ | ६ ४५ | १८ २४ | ६ ४५ | १८ २४ | ६ ४५ | १८ २४ | ६ ४५ | १८ २४ | ६ ४५ | १८ २४ | ६ ४५ | १८ २४ | ६ ४५ | १८ २४ | ६ ४५ | १८ २४ | ६ ४५ | १८ २४ | ६ ४५ | १८ २४ |
| 11 | ६ ४३ | १८ २७ | ६ ४२ | १८ २७ | ६ ४२ | १८ २७ | ६ ४२ | १८ २७ | ६ ४२ | १८ २७ | ६ ४२ | १८ २७ | ६ ४२ | १८ २७ | ६ ४२ | १८ २७ | ६ ४२ | १८ २७ | ६ ४२ | १८ २७ | ६ ४२ | १८ २७ |
| 14 | ६ ४० | १८ २८ | ६ ३९ | १८ २८ | ६ ३९ | १८ २८ | ६ ३९ | १८ २८ | ६ ३९ | १८ २८ | ६ ३९ | १८ २८ | ६ ३९ | १८ २८ | ६ ३९ | १८ २८ | ६ ३९ | १८ २८ | ६ ३९ | १८ २८ | ६ ३९ | १८ २८ |
| 17 | ६ ३६ | १८ ३० | ६ ३५ | १८ २९ | ६ ३५ | १८ २९ | ६ ३५ | १८ २९ | ६ ३५ | १८ २९ | ६ ३५ | १८ २९ | ६ ३५ | १८ २९ | ६ ३५ | १८ २९ | ६ ३५ | १८ २९ | ६ ३५ | १८ २९ | ६ ३५ | १८ २९ |
| 20 | ६ ३१ | १८ ३२ | ६ ३० | १८ ३१ | ६ ३० | १८ ३१ | ६ ३० | १८ ३१ | ६ ३० | १८ ३१ | ६ ३० | १८ ३१ | ६ ३० | १८ ३१ | ६ ३० | १८ ३१ | ६ ३० | १८ ३१ | ६ ३० | १८ ३१ | ६ ३० | १८ ३१ |

184

| नगर | कौंगड़ा-धर्म. | हमीरपुर | ऊना | बिलासपुर | मंडी-कुल्लू | सरकाघाट | शिमला | सोलन | चम्बा | नाहन | रामपुर बुरो. | |
|----------|---------------|----------|----------|----------|-------------|----------|----------|----------|----------|----------|--------------|----------|
| तारीख | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त |
| मार्च | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 23 | ६ २८ | १८ ३४ | ६ २७ | १८ ३३ | ६ २८ | १८ ३३ | ६ २३ | १८ ३१ | ६ २५ | १८ ३० | ६ २२ | १८ ३० |
| 26 | ६ २४ | १८ ३६ | ६ २३ | १८ ३५ | ६ २४ | १८ ३५ | ६ २० | १८ ३३ | ६ २१ | १८ ३३ | ६ १९ | १८ ३२ |
| 29 | ६ २१ | १८ ३८ | ६ २० | १८ ३७ | ६ २० | १८ ३७ | ६ १६ | १८ ३५ | ६ १७ | १८ ३५ | ६ १५ | १८ ३४ |
| 2 अप्रै. | ६ १५ | १८ ४० | ६ १४ | १८ ४० | ६ १५ | १८ ४० | ६ ११ | १८ ३७ | ६ १२ | १८ ३७ | ६ १० | १८ ३६ |
| 5 | ६ १२ | १८ ४३ | ६ १० | १८ ३९ | ६ ११ | १८ ४० | ६ ०७ | १८ ३९ | ६ ०९ | १८ ३९ | ६ ०६ | १८ ३८ |
| 8 | ६ ०९ | १८ ४५ | ६ ०८ | १८ ४३ | ६ ०९ | १८ ४३ | ६ ०४ | १८ ४३ | ६ ०५ | १८ ४३ | ६ ०३ | १८ ४० |
| 11 | ६ ०४ | १८ ४७ | ६ ०३ | १८ ४६ | ६ ०४ | १८ ४६ | ६ ०० | १८ ४६ | ६ ०१ | १८ ४६ | ५ ५९ | १८ ४२ |
| 14 | ६ ०१ | १८ ५० | ६ ०० | १८ ४९ | ५ ५८ | १८ ४९ | ५ ५७ | १८ ४९ | ५ ५८ | १८ ४९ | ५ ५६ | १८ ४४ |
| 17 | ५ ५७ | १८ ५१ | ५ ५६ | १८ ५० | ५ ५७ | १८ ५१ | ५ ५३ | १८ ४७ | ५ ५४ | १८ ४८ | ५ ५२ | १८ ४६ |
| 20 | ५ ५४ | १८ ५४ | ५ ५३ | १८ ५३ | ५ ५४ | १८ ५३ | ५ ५० | १८ ५३ | ५ ५१ | १८ ५३ | ५ ४९ | १८ ४९ |
| 23 | ५ ५० | १८ ५६ | ५ ५० | १८ ५५ | ५ ५० | १८ ५५ | ५ ४६ | १८ ५५ | ५ ४८ | १८ ५५ | ५ ४५ | १८ ५१ |
| 26 | ५ ४८ | १८ ५८ | ५ ४७ | १८ ५७ | ५ ४५ | १८ ५५ | ५ ४४ | १८ ५७ | ५ ४५ | १८ ५४ | ५ ४३ | १८ ५३ |
| 29 | ५ ४६ | १९ ०१ | ५ ४५ | १९ ०० | ५ ४४ | १९ ०० | ५ ४२ | १८ ५७ | ५ ४२ | १८ ५७ | ५ ४१ | १८ ५६ |
| 2 मई | ५ ४४ | १९ ०२ | ५ ४३ | १९ ०१ | ५ ४० | १९ ०१ | ५ ३९ | १८ ५८ | ५ ४० | १८ ५८ | ५ ३८ | १८ ५७ |
| 4 | ५ ४१ | १९ ०३ | ५ ४० | १९ ०२ | ५ ३७ | १९ ०२ | ५ ३७ | १८ ५८ | ५ ३७ | १९ ०३ | ५ ३६ | १८ ५८ |
| 7 | ५ ३८ | १९ ०५ | ५ ३७ | १९ ०४ | ५ ३४ | १९ ०४ | ५ ३४ | १९ ०४ | ५ ३४ | १९ ०४ | ५ ३३ | १९ ०० |
| 10 | ५ ३५ | १९ ०७ | ५ ३४ | १९ ०६ | ५ ३३ | १९ ०६ | ५ ३२ | १९ ०३ | ५ ३३ | १९ ०७ | ५ ३१ | १९ ०२ |
| 13 | ५ ३४ | १९ ०९ | ५ ३२ | १९ ०८ | ५ ३० | १९ ०८ | ५ ३० | १९ ०५ | ५ ३३ | १९ १० | ५ २९ | १९ ०४ |
| 16 | ५ ३२ | १९ ११ | ५ ३० | १९ १० | ५ २८ | १९ १० | ५ २८ | १९ ०७ | ५ ३२ | १९ १२ | ५ २७ | १९ ०६ |
| 19 | ५ ३० | १९ १३ | ५ २८ | १९ १२ | ५ २६ | १९ १२ | ५ २६ | १९ ०९ | ५ ३० | १९ १३ | ५ २५ | १९ ०८ |
| 22 | ५ २८ | १९ १५ | ५ २६ | १९ १४ | ५ २४ | १९ १४ | ५ २४ | १९ ११ | ५ २८ | १९ १५ | ५ २३ | १९ १० |
| 25 | ५ २७ | १९ १६ | ५ २५ | १९ १६ | ५ २३ | १९ १६ | ५ २३ | १९ १३ | ५ २७ | १९ १५ | ५ २३ | १९ १२ |
| 28 | ५ २५ | १९ १८ | ५ २४ | १९ १८ | ५ २२ | १९ १८ | ५ २१ | १९ १४ | ५ २६ | १९ १६ | ५ २१ | १९ १४ |
| 31 | ५ २४ | १९ २० | ५ २२ | १९ २० | ५ २१ | १९ १७ | ५ २० | १९ १७ | ५ २१ | १९ १७ | ५ २० | १९ १६ |
| 3 जून | ५ २३ | १९ २३ | ५ २२ | १९ २२ | ५ २० | १९ १९ | ५ २० | १९ २० | ५ २४ | १९ २३ | ५ १९ | १९ १९ |
| 6 | ५ २३ | १९ २४ | ५ २२ | १९ २४ | ५ २० | १९ २१ | ५ २२ | १९ २४ | ५ २३ | १९ २४ | ५ १८ | १९ २० |
| 9 | ५ २२ | १९ २५ | ५ २१ | १९ २५ | ५ १९ | १९ २२ | ५ १९ | १९ २५ | ५ २३ | १९ २५ | ५ १९ | १९ २० |
| 12 | ५ २२ | १९ २७ | ५ २१ | १९ २७ | ५ १८ | १९ २३ | ५ १८ | १९ २७ | ५ २३ | १९ २७ | ५ १८ | १९ २२ |
| 15 | ५ २२ | १९ २८ | ५ २१ | १९ २८ | ५ १८ | १९ २३ | ५ १८ | १९ २८ | ५ २३ | १९ २७ | ५ १८ | १९ २२ |
| 18 | ५ २१ | १९ ३० | ५ २१ | १९ ३० | ५ १८ | १९ २५ | ५ १७ | १९ २८ | ५ २३ | १९ ३० | ५ १७ | १९ २३ |
| 21 | ५ २१ | १९ ३१ | ५ २१ | १९ ३१ | ५ १९ | १९ २६ | ५ १७ | १९ २८ | ५ २३ | १९ ३१ | ५ १६ | १९ २४ |
| 24 | ५ २३ | १९ ३२ | ५ २२ | १९ ३२ | ५ १९ | १९ २७ | ५ १७ | १९ ३२ | ५ २३ | १९ ३१ | ५ १६ | १९ २४ |
| 27 | ५ २५ | १९ ३३ | ५ २३ | १९ ३२ | ५ १८ | १९ २७ | ५ १७ | १९ ३२ | ५ २३ | १९ ३२ | ५ १६ | १९ २४ |
| 30 | ५ २५ | १९ ३३ | ५ २४ | १९ ३३ | ५ १८ | १९ २७ | ५ १७ | १९ ३३ | ५ २३ | १९ ३२ | ५ १६ | १९ २४ |
| 3 जुलाई | ५ २६ | १९ ३२ | ५ २५ | १९ ३२ | ५ १८ | १९ २८ | ५ १७ | १९ ३२ | ५ २३ | १९ ३२ | ५ १६ | १९ २४ |
| 6 | ५ २८ | १९ ३२ | ५ २७ | १९ ३२ | ५ १८ | १९ २८ | ५ १७ | १९ ३२ | ५ २३ | १९ ३२ | ५ १६ | १९ २४ |
| 9 | ५ ३० | १९ ३० | ५ २९ | १९ ३१ | ५ १८ | १९ ३० | ५ १७ | १९ ३३ | ५ २३ | १९ ३३ | ५ १६ | १९ २४ |
| 12 | ५ ३२ | १९ २९ | ५ ३१ | १९ २८ | ५ १९ | १९ २६ | ५ १९ | १९ २६ | ५ २३ | १९ २५ | ५ १८ | १९ २५ |

| नगर | काँगड़ा-धर्म. | | हमीरपुर | | ऊना | | बिलासपुर | | मंडी-कुल्लू | | सकाघाट | | शिमला | | सोलन | | चम्बा | | नाहन | | रामपुरा बुर्गौ. | |
|---------|---------------|---------|---------|---------|---------|---------|----------|---------|-------------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|-----------------|---------|
| | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त |
| तारीख | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. | घं. मि. |
| 15 | ५ ३३ | १९ २८ | ५ ३३ | १९ २७ | ५ ३३ | १९ २८ | ५ ३३ | १९ २८ | ५ ३३ | १९ २५ | ५ ३३ | १९ २८ | ५ ३० | १९ २५ | ५ ३० | १९ २४ | ५ ३४ | १९ २९ | ५ २९ | १९ २२ | ५ ३० | १९ २४ |
| 18 | ५ ३४ | १९ २७ | ५ ३४ | १९ २६ | ५ ३४ | १९ २७ | ५ ३३ | १९ २४ | ५ ३३ | १९ २४ | ५ ३४ | १९ २७ | ५ ३३ | १९ २३ | ५ ३३ | १९ २२ | ५ ३५ | १९ २८ | ५ ३१ | १९ २१ | ५ ३१ | १९ २२ |
| 21 | ५ ३६ | १९ २५ | ५ ३६ | १९ २५ | ५ ३६ | १९ २५ | ५ ३३ | १९ २२ | ५ ३३ | १९ २२ | ५ ३६ | १९ २५ | ५ ३३ | १९ २१ | ५ ३३ | १९ २१ | ५ ३७ | १९ २६ | ५ ३२ | १९ २० | ५ ३३ | १९ २० |
| 24 | ५ ३८ | १९ २३ | ५ ३८ | १९ २२ | ५ ३८ | १९ २३ | ५ ३५ | १९ २० | ५ ३५ | १९ २० | ५ ३८ | १९ २३ | ५ ३५ | १९ १९ | ५ ३५ | १९ १९ | ५ ३९ | १९ २४ | ५ ३४ | १९ २० | ५ ३५ | १९ १८ |
| 27 | ५ ४० | १९ २२ | ५ ३९ | १९ २१ | ५ ४० | १९ २१ | ५ ३७ | १९ १७ | ५ ३८ | १९ १८ | ५ ३८ | १९ २२ | ५ ३७ | १९ १८ | ५ ३७ | १९ १८ | ५ ४१ | १९ २३ | ५ ३६ | १९ १६ | ५ ३७ | १९ १६ |
| 30 | ५ ४२ | १९ १९ | ५ ४१ | १९ १९ | ५ ४२ | १९ १९ | ५ ३९ | १९ १५ | ५ ४० | १९ १६ | ५ ४२ | १९ १९ | ५ ३९ | १९ १६ | ५ ३९ | १९ १६ | ५ ४३ | १९ २० | ५ ३८ | १९ १४ | ५ ३८ | १९ १४ |
| 2 अग. | ५ ४४ | १९ १८ | ५ ४३ | १९ १७ | ५ ४४ | १९ १८ | ५ ४१ | १९ १४ | ५ ४२ | १९ १५ | ५ ४४ | १९ १८ | ५ ४१ | १९ १४ | ५ ४१ | १९ १४ | ५ ४५ | १९ १९ | ५ ४० | १९ १२ | ५ ४० | १९ १३ |
| 5 | ५ ४६ | १९ १६ | ५ ४५ | १९ १५ | ५ ४६ | १९ १६ | ५ ४३ | १९ १२ | ५ ४४ | १९ १३ | ५ ४६ | १९ १६ | ५ ४३ | १९ १३ | ५ ४३ | १९ १३ | ५ ४७ | १९ १७ | ५ ४२ | १९ १० | ५ ४३ | १९ १२ |
| 8 | ५ ४८ | १९ १३ | ५ ४७ | १९ १२ | ५ ४८ | १९ १३ | ५ ४५ | १९ ११ | ५ ४६ | १९ १२ | ५ ४८ | १९ १३ | ५ ४५ | १९ ११ | ५ ४५ | १९ ०९ | ५ ४९ | १९ १४ | ५ ४४ | १९ ०७ | ५ ४५ | १९ १० |
| 11 | ५ ५० | १९ ११ | ५ ४९ | १९ १० | ५ ५० | १९ ११ | ५ ४७ | १९ ०८ | ५ ४८ | १९ ०९ | ५ ५० | १९ ११ | ५ ४७ | १९ ०८ | ५ ५१ | १९ ०६ | ५ ५३ | १९ ११ | ५ ४६ | १९ ०४ | ५ ४७ | १९ ०७ |
| 14 | ५ ५१ | १९ ०९ | ५ ५० | १९ ०८ | ५ ५१ | १९ ०९ | ५ ४८ | १९ ०६ | ५ ४९ | १९ ०७ | ५ ५१ | १९ ०९ | ५ ४८ | १९ ०५ | ५ ४८ | १९ ०५ | ५ ५२ | १९ १० | ५ ४७ | १९ ०० | ५ ४८ | १९ ०५ |
| 17 | ५ ५३ | १९ ०४ | ५ ५२ | १९ ०३ | ५ ५३ | १९ ०४ | ५ ५० | १९ ०१ | ५ ५१ | १९ ०३ | ५ ५३ | १९ ०६ | ५ ५० | १९ ०१ | ५ ५० | १९ ०१ | ५ ५४ | १९ ०५ | ५ ४७ | १९ ०० | ५ ४८ | १९ ०५ |
| 20 | ५ ५५ | १९ ०१ | ५ ५५ | १९ ०१ | ५ ५५ | १९ ०१ | ५ ५२ | १८ ५९ | ५ ५३ | १९ ०० | ५ ५५ | १९ ०१ | ५ ५२ | १८ ५९ | ५ ५२ | १८ ५९ | ५ ५६ | १९ ०२ | ५ ४९ | १८ ५७ | ५ ५० | १९ ०० |
| 23 | ५ ५७ | १८ ५८ | ५ ५७ | १८ ५८ | ५ ५७ | १८ ५८ | ५ ५४ | १८ ५५ | ५ ५५ | १८ ५५ | ५ ५७ | १८ ५८ | ५ ५४ | १८ ५५ | ५ ५४ | १८ ५५ | ५ ५८ | १८ ५९ | ५ ५३ | १८ ५४ | ५ ५२ | १८ ५८ |
| 26 | ५ ५९ | १८ ५४ | ५ ५९ | १८ ५३ | ५ ५९ | १८ ५३ | ५ ५६ | १८ ५० | ५ ५७ | १८ ५१ | ५ ५८ | १८ ५४ | ५ ५६ | १८ ५० | ५ ५६ | १८ ५० | ५ ५९ | १८ ५५ | ५ ५५ | १८ ५४ | ५ ५५ | १८ ५४ |
| 29 | ६ ०१ | १८ ५० | ६ ०० | १८ ४९ | ६ ०० | १८ ५० | ५ ५८ | १८ ४६ | ५ ५९ | १८ ४७ | ५ ५९ | १८ ५० | ५ ५८ | १८ ४६ | ५ ५८ | १८ ४६ | ६ ०२ | १८ ५० | ५ ५७ | १८ ४५ | ५ ५७ | १८ ४५ |
| 1 सित. | ६ ०२ | १८ ४६ | ६ ०२ | १८ ४५ | ६ ०२ | १८ ४६ | ५ ५९ | १८ ४४ | ६ ०० | १८ ४५ | ६ ०३ | १८ ४६ | ५ ५९ | १८ ४३ | ६ ०० | १८ ४३ | ६ ०४ | १८ ४६ | ५ ५९ | १८ ४१ | ५ ५८ | १८ ४३ |
| 4 | ६ ०४ | १८ ४३ | ६ ०३ | १८ ४१ | ६ ०४ | १८ ४२ | ६ ०२ | १८ ४० | ६ ०३ | १८ ४१ | ६ ०४ | १८ ४२ | ६ ०२ | १८ ४० | ६ ०३ | १८ ४१ | ६ ०६ | १८ ४२ | ६ ०१ | १८ ४० | ६ ०० | १८ ३८ |
| 7 | ६ ०६ | १८ ४० | ६ ०६ | १८ ३९ | ६ ०६ | १८ ४० | ६ ०४ | १८ ३७ | ६ ०४ | १८ ३७ | ६ ०५ | १८ ३९ | ६ ०४ | १८ ३७ | ६ ०४ | १८ ३७ | ६ ०७ | १८ ३९ | ६ ०३ | १८ ३७ | ६ ०२ | १८ ३५ |
| 10 | ६ ०९ | १८ ३५ | ६ ०९ | १८ ३४ | ६ ०९ | १८ ३४ | ६ ०६ | १८ ३२ | ६ ०६ | १८ ३२ | ६ ०८ | १८ ३३ | ६ ०६ | १८ ३२ | ६ ०७ | १८ ३२ | ६ ०९ | १८ ३५ | ६ ०५ | १८ ३१ | ६ ०५ | १८ ३१ |
| 13 | ६ ११ | १८ ३१ | ६ ११ | १८ ३० | ६ ११ | १८ ३० | ६ ०७ | १८ २८ | ६ ०७ | १८ २९ | ६ १० | १८ ३१ | ६ ०७ | १८ २८ | ६ ०७ | १८ २८ | ६ ११ | १८ ३१ | ६ ०७ | १८ २७ | ६ ०७ | १८ २७ |
| 16 | ६ १२ | १८ २७ | ६ १२ | १८ २६ | ६ १२ | १८ २६ | ६ ०९ | १८ २४ | ६ ०९ | १८ २५ | ६ १२ | १८ २७ | ६ ०९ | १८ २४ | ६ ०९ | १८ २४ | ६ १३ | १८ २८ | ६ ०७ | १८ २४ | ६ ०९ | १८ २३ |
| 19 | ६ १४ | १८ २३ | ६ १४ | १८ २३ | ६ १३ | १८ २३ | ६ १० | १८ २० | ६ १० | १८ २१ | ६ १४ | १८ २३ | ६ १० | १८ २० | ६ १० | १८ २० | ६ १४ | १८ २३ | ६ ०९ | १८ २१ | ६ १० | १८ २१ |
| 22 | ६ १६ | १८ १८ | ६ १६ | १८ १८ | ६ १६ | १८ १८ | ६ १२ | १८ १५ | ६ १२ | १८ १६ | ६ १६ | १८ १८ | ६ १२ | १८ १५ | ६ १२ | १८ १५ | ६ १७ | १८ १८ | ६ १२ | १८ १३ | ६ १२ | १८ १४ |
| 25 | ६ १७ | १८ १५ | ६ १७ | १८ १५ | ६ १७ | १८ १५ | ६ १४ | १८ १२ | ६ १४ | १८ १३ | ६ १७ | १८ १५ | ६ १४ | १८ १२ | ६ १४ | १८ १२ | ६ १९ | १८ १५ | ६ १३ | १८ १० | ६ १४ | १८ ११ |
| 28 | ६ १९ | १८ ११ | ६ १९ | १८ ११ | ६ १९ | १८ ११ | ६ १६ | १८ ०८ | ६ १७ | १८ ०९ | ६ १९ | १८ ११ | ६ १६ | १८ ०८ | ६ १६ | १८ ०८ | ६ २१ | १८ १२ | ६ १५ | १८ ०७ | ६ १५ | १८ ०७ |
| 1 अक्त. | ६ २२ | १८ ०७ | ६ २१ | १८ ०७ | ६ २१ | १८ ०७ | ६ १८ | १८ ०४ | ६ १८ | १८ ०४ | ६ २१ | १८ ०७ | ६ १८ | १८ ०४ | ६ १८ | १८ ०४ | ६ २३ | १८ ०७ | ६ १७ | १८ ०२ | ६ १६ | १८ ०३ |
| 4 | ६ २३ | १८ ०४ | ६ २३ | १८ ०३ | ६ २३ | १८ ०४ | ६ १९ | १८ ०० | ६ १९ | १८ ०० | ६ २३ | १८ ०४ | ६ १९ | १८ ०० | ६ १९ | १८ ०० | ६ २३ | १८ ०४ | ६ १८ | १७ ५९ | ६ १८ | १७ ५९ |
| 7 | ६ २५ | १८ ०१ | ६ २४ | १८ ०० | ६ २४ | १८ ०० | ६ २१ | १७ ५७ | ६ २१ | १७ ५७ | ६ २४ | १८ ०० | ६ २१ | १७ ५७ | ६ २१ | १७ ५७ | ६ २५ | १८ ०० | ६ २० | १७ ५६ | ६ २० | १७ ५६ |
| 10 | ६ २७ | १७ ५७ | ६ २६ | १७ ५६ | ६ २६ | १७ ५६ | ६ २३ | १७ ५४ | ६ २६ | १७ ५५ | ६ २९ | १७ ५६ | ६ २३ | १७ ५३ | ६ २३ | १७ ५३ | ६ २७ | १७ ५६ | ६ २५ | १७ ५२ | ६ २५ | १७ ५२ |
| 13 | ६ २९ | १७ ५३ | ६ २८ | १७ ५२ | ६ २८ | १७ ५२ | ६ २६ | १७ ५० | ६ २६ | १७ ५० | ६ ३० | १७ ५३ | ६ २६ | १७ ५० | ६ २६ | १७ ५० | ६ ३० | १७ ५३ | ६ २५ | १७ ४८ | ६ २५ | १७ ४८ |
| 16 | ६ ३१ | १७ ५० | ६ ३० | १७ ४९ | ६ ३१ | १७ ४९ | ६ २८ | १७ ४७ | ६ २८ | १७ ४७ | ६ ३१ | १७ ४९ | ६ २८ | १७ ४७ | ६ २८ | १७ ४७ | ६ ३२ | १७ ४९ | ६ २७ | १७ ४५ | ६ २६ | १७ ४५ |
| 19 | ६ ३३ | १७ ४६ | ६ ३२ | १७ ४५ | ६ ३३ | १७ ४५ | ६ ३० | १७ ४३ | ६ ३३ | १७ ४३ | ६ ३४ | १७ ४५ | ६ ३० | १७ ४३ | ६ ३० | १७ ४३ | ६ ३४ | १७ ४६ | ६ २९ | १७ ४१ | ६ २९ | १७ ४१ |
| 22 | ६ ३६ | १७ ४३ | ६ ३५ | १७ ४३ | ६ ३५ | १७ ४३ | ६ ३२ | १७ ४० | ६ ३२ | १७ ४० | ६ ३५ | १७ ४२ | ६ ३२ | १७ ४० | ६ ३२ | १७ ४० | ६ ३६ | १७ ४३ | ६ ३० | १७ ३८ | ६ ३० | १७ ३८ |
| 25 | ६ ३८ | १७ ४० | ६ ३८ | १७ ४० | ६ ३७ | १७ ४० | ६ ३४ | १७ ३७ | ६ ३४ | १७ ३७ | ६ ३७ | १७ ४० | ६ ३४ | १७ ३६ | ६ ३४ | १७ ३६ | ६ ३८ | १७ ४० | ६ ३३ | १७ ३५ | ६ ३३ | १७ ३५ |
| 28 | ६ ४० | १७ ३७ | ६ ४० | १७ ३७ | ६ ३९ | १७ ३७ | ६ ३६ | १७ ३४ | ६ ३६ | १७ ३४ | ६ ४० | १७ ३७ | ६ ३६ | १७ ३३ | ६ ३६ | १७ ३३ | ६ ४० | १७ ३७ | ६ ३५ | १७ ३२ | ६ ३५ | १७ ३२ |
| 31 | ६ ४३ | १७ ३४ | ६ ४३ | १७ ३४ | ६ ४२ | १७ ३३ | ६ ३९ | १७ ३३ | ६ ३९ | १७ ३३ | ६ ४३ | १७ ३४ | ६ ३९ | १७ ३० | ६ ३९ | १७ ३० | ६ ४३ | १७ ३४ | ६ ३८ | १७ २९ | ६ ३८ | १७ २९ |
| 3 नव. | ६ ४५ | १७ ३० | ६ ४५ | १७ ३० | ६ ४४ | १७ ३० | ६ ४१ | १७ २८ | ६ ४१ | १७ २८ | ६ ४५ | १७ ३१ | ६ ४१ | १७ २७ | ६ ४१ | १७ २७ | ६ ४५ | १७ ३२ | ६ ४० | १७ २७ | ६ ४० | १७ २६ |

| नगर | काँगड़ा-धर्म | हमीरपुर | ऊना | बिलासपुर | मंडी-कुल्लू | सरकाघाट | शिमला | सोलन | चम्बा | नाहन | रामपुर बुधौ |
|-------|--------------|----------|----------|----------|-------------|----------|----------|----------|----------|----------|-------------|
| तारीख | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय |
| नवंबर | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |

| नगर | काँगड़ा-धर्म | हमीरपुर | ऊना | बिलासपुर | मंडी-कुल्लू | सरकाघाट | शिमला | सोलन | चम्बा | नाहन | रामपुर बुधौ |
|-------|--------------|------------|------------|------------|-------------|------------|------------|------------|------------|------------|-------------|
| तारीख | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय | अस्त | उदय |
| नवंबर | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. | घं. मिं. |
| 6 | ६ ४८ १७ २९ | ६ ४७ १७ २८ | ६ ४७ १७ २८ | ६ ४७ १७ २८ | ६ ४७ १७ २८ | ६ ४७ १७ २८ | ६ ४७ १७ २८ | ६ ४७ १७ २८ | ६ ४७ १७ २८ | ६ ४७ १७ २८ | ६ ४७ १७ २८ |
| 9 | ६ ५० १७ २७ | ६ ४९ १७ २६ | ६ ४९ १७ २६ | ६ ४९ १७ २६ | ६ ४९ १७ २६ | ६ ४९ १७ २६ | ६ ४९ १७ २६ | ६ ४९ १७ २६ | ६ ४९ १७ २६ | ६ ४९ १७ २६ | ६ ४९ १७ २६ |
| 12 | ६ ५२ १७ २५ | ६ ५१ १७ २४ | ६ ५१ १७ २४ | ६ ५१ १७ २४ | ६ ५१ १७ २४ | ६ ५१ १७ २४ | ६ ५१ १७ २४ | ६ ५१ १७ २४ | ६ ५१ १७ २४ | ६ ५१ १७ २४ | ६ ५१ १७ २४ |
| 15 | ६ ५४ १७ २३ | ६ ५३ १७ २३ | ६ ५३ १७ २३ | ६ ५३ १७ २३ | ६ ५३ १७ २३ | ६ ५३ १७ २३ | ६ ५३ १७ २३ | ६ ५३ १७ २३ | ६ ५३ १७ २३ | ६ ५३ १७ २३ | ६ ५३ १७ २३ |
| 18 | ६ ५७ १७ २१ | ६ ५६ १७ २१ | ६ ५६ १७ २१ | ६ ५६ १७ २१ | ६ ५६ १७ २१ | ६ ५६ १७ २१ | ६ ५६ १७ २१ | ६ ५६ १७ २१ | ६ ५६ १७ २१ | ६ ५६ १७ २१ | ६ ५६ १७ २१ |
| 21 | ७ ०० १७ २० | ६ ५९ १७ २० | ६ ५९ १७ २० | ६ ५९ १७ २० | ६ ५९ १७ २० | ६ ५९ १७ २० | ६ ५९ १७ २० | ६ ५९ १७ २० | ६ ५९ १७ २० | ६ ५९ १७ २० | ६ ५९ १७ २० |
| 24 | ७ ०२ १७ १९ | ७ ०१ १७ १८ | ७ ०१ १७ १८ | ७ ०१ १७ १८ | ७ ०१ १७ १८ | ७ ०१ १७ १८ | ७ ०१ १७ १८ | ७ ०१ १७ १८ | ७ ०१ १७ १८ | ७ ०१ १७ १८ | ७ ०१ १७ १८ |
| 27 | ७ ०४ १७ १९ | ७ ०३ १७ १८ | ७ ०३ १७ १८ | ७ ०३ १७ १८ | ७ ०३ १७ १८ | ७ ०३ १७ १८ | ७ ०३ १७ १८ | ७ ०३ १७ १८ | ७ ०३ १७ १८ | ७ ०३ १७ १८ | ७ ०३ १७ १८ |
| 30 | ७ ०७ १७ १८ | ७ ०६ १७ १८ | ७ ०६ १७ १८ | ७ ०६ १७ १८ | ७ ०६ १७ १८ | ७ ०६ १७ १८ | ७ ०६ १७ १८ | ७ ०६ १७ १८ | ७ ०६ १७ १८ | ७ ०६ १७ १८ | ७ ०६ १७ १८ |
| 3 दिस | ७ ०९ १७ १८ | ७ ०८ १७ १८ | ७ ०८ १७ १८ | ७ ०८ १७ १८ | ७ ०८ १७ १८ | ७ ०८ १७ १८ | ७ ०८ १७ १८ | ७ ०८ १७ १८ | ७ ०८ १७ १८ | ७ ०८ १७ १८ | ७ ०८ १७ १८ |
| 6 | ७ १२ १७ १८ | ७ ११ १७ १७ | ७ ११ १७ १७ | ७ ११ १७ १७ | ७ ११ १७ १७ | ७ ११ १७ १७ | ७ ११ १७ १७ | ७ ११ १७ १७ | ७ ११ १७ १७ | ७ ११ १७ १७ | ७ ११ १७ १७ |
| 9 | ७ १४ १७ १८ | ७ १३ १७ १८ | ७ १३ १७ १८ | ७ १३ १७ १८ | ७ १३ १७ १८ | ७ १३ १७ १८ | ७ १३ १७ १८ | ७ १३ १७ १८ | ७ १३ १७ १८ | ७ १३ १७ १८ | ७ १३ १७ १८ |
| 12 | ७ १६ १७ १९ | ७ १५ १७ १८ | ७ १५ १७ १८ | ७ १५ १७ १८ | ७ १५ १७ १८ | ७ १५ १७ १८ | ७ १५ १७ १८ | ७ १५ १७ १८ | ७ १५ १७ १८ | ७ १५ १७ १८ | ७ १५ १७ १८ |
| 15 | ७ १८ १७ २१ | ७ १७ १७ २० | ७ १७ १७ २० | ७ १७ १७ २० | ७ १७ १७ २० | ७ १७ १७ २० | ७ १७ १७ २० | ७ १७ १७ २० | ७ १७ १७ २० | ७ १७ १७ २० | ७ १७ १७ २० |
| 18 | ७ २० १७ २२ | ७ १९ १७ २१ | ७ १९ १७ २१ | ७ १९ १७ २१ | ७ १९ १७ २१ | ७ १९ १७ २१ | ७ १९ १७ २१ | ७ १९ १७ २१ | ७ १९ १७ २१ | ७ १९ १७ २१ | ७ १९ १७ २१ |
| 21 | ७ २२ १७ २३ | ७ २१ १७ २२ | ७ २१ १७ २२ | ७ २१ १७ २२ | ७ २१ १७ २२ | ७ २१ १७ २२ | ७ २१ १७ २२ | ७ २१ १७ २२ | ७ २१ १७ २२ | ७ २१ १७ २२ | ७ २१ १७ २२ |
| 24 | ७ २३ १७ २४ | ७ २२ १७ २३ | ७ २२ १७ २३ | ७ २२ १७ २३ | ७ २२ १७ २३ | ७ २२ १७ २३ | ७ २२ १७ २३ | ७ २२ १७ २३ | ७ २२ १७ २३ | ७ २२ १७ २३ | ७ २२ १७ २३ |
| 27 | ७ २५ १७ २६ | ७ २४ १७ २५ | ७ २४ १७ २५ | ७ २४ १७ २५ | ७ २४ १७ २५ | ७ २४ १७ २५ | ७ २४ १७ २५ | ७ २४ १७ २५ | ७ २४ १७ २५ | ७ २४ १७ २५ | ७ २४ १७ २५ |
| 30 | ७ २६ १७ २८ | ७ २५ १७ २७ | ७ २५ १७ २७ | ७ २५ १७ २७ | ७ २५ १७ २७ | ७ २५ १७ २७ | ७ २५ १७ २७ | ७ २५ १७ २७ | ७ २५ १७ २७ | ७ २५ १७ २७ | ७ २५ १७ २७ |

हिमाचल प्रदेश के अन्य नगरों के लिए संस्कार सारिणी

| धर्मशाला | | | हमीरपुर | | | बिलासपुर | | | मण्डी | | | शिमला | | | चम्बा | | |
|------------|---------|----------|---------------|---------|----------|--------------|---------|----------|----------|---------|----------|---------|---------|----------|--------------|---------|----------|
| नगर | संस्कार | मि. सें. | नगर | संस्कार | मि. सें. | नगर | संस्कार | मि. सें. | नगर | संस्कार | मि. सें. | नगर | संस्कार | मि. सें. | नगर | संस्कार | मि. सें. |
| काँगड़ा | + ० २० | | नादीन | + ० ३२ | | घुमारवीं | + ० ३६ | | मनाली | - १ २४ | | कोटरवाई | - १ ३२ | | बनीखेत | + ० ४८ | |
| नरपुर | + १ २८ | | सुजानपुरदिहरी | + ० ०४ | | भाखड़ा | + १ २० | | बंजार | - १ २८ | | रोहडू | - २ ०४ | | डलाहौजी | - ० ४० | |
| नगरोटा | + ० ०४ | | | | | नैना देवी | + १ १६ | | अनी | - ० ५६ | | | | | लोहौल स्पीति | - ३ २४ | |
| खजियार | + १ १२ | | ऊना | | | | | | निरमण्ड | - २ २४ | | सोलन | | | त्रिलोकनाथ | - ३ ३४ | |
| ज्वालामुखी | + ० १२ | | | | | | | | | | | सपाटू | + ० ३२ | | | | |
| सरकाघाट | + ० ०४ | | गरोट | + १ ०० | | जोगिन्द्रनगर | + ० ५२ | | | | | परवाणु | + ० १६ | | नाहन | | |
| पालमपुर | - ० ४० | | अम्ब | + ० ४८ | | सुन्दरनगर | + ० २० | | तारादेवी | + ० १२ | | कसौली | + ० २८ | | | | |
| भुन्तर | - ३ ०४ | | दौलतपुर | + १ २० | | करसोग | - १ ०४ | | नारकण्डा | - १ ०० | | अर्की | + ० ४० | | पौटा साहिब | + १ ०८ | |
| नैनाथ | - ० ५२ | | चिन्तापूर्णी | + ० ५६ | | किन्नौर | - ५ २८ | | कुमारसेन | - १ ३६ | | नालागढ़ | + ३ ०८ | | राजगढ़ | - ० १२ | |

चन्द्रमा-स्पष्ट द्वारा विंशोत्तरी दशा का भोग्य काल जानना

नीचे चन्द्रमा के अंश-कला की तालिका के सामने चन्द्र संचार की मेपादि वारह राशियों की तालिका तथा उनके द्वारा केतु, सूर्य, भौमादि ग्रहों द्वारा भोग्य दशा वर्षों की सारिणी लिख रहे हैं।

ध्यान रहे, आपके द्वारा किया गया चन्द्र स्पष्ट नितान्त शुद्ध होना चाहिए। चन्द्र स्पष्ट निकालने की सरल विधि हमारे कार्यालय से प्रकाशित ज्योतिष तत्त्व का अवलोकन करें।

उदाहरण— यदि आपका चन्द्र स्पष्ट ५।१।५२' है तो इसका तात्पर्य हुआ कि चन्द्रमा कन्या राशि के १° अंश ५२' कला पर संचार कर रहा है। अब सारिणी नं. I (क) में चन्द्र-स्पष्ट के नीचे व १° अंश ५० कला के सामने और चन्द्र राशि कन्या के नीचे तालिका में देखने पर सूर्य की भोग्य दशा ३ वर्ष, ८ मास और ३ दिन प्राप्त हुई। अब शेष २ कलाओं हेतु आगामी पृष्ठों पर सारिणी नं. II (ख) में सूर्य की २ कलाओं का भोग्यकाल देखने से ५ दिन प्राप्त हुए क्योंकि जैसे-जैसे चन्द्रमा के अंश बढ़ते हैं, दशा का भोग्यकाल कम होता जाता है। अतः ५ दिन घटा देने से हमें सूर्य की भोग्य दशा ३ वर्ष, ७ मास, २८ दिन प्राप्त हुई। शुद्ध चन्द्र स्पष्ट की गणित प्रक्रिया जानने के लिए ज्योतिष तत्त्व पढ़ें।

सारिणी नं० I (क)

| चंद्र स्पष्ट | चन्द्र राशि | | चन्द्र राशि | | चन्द्र राशि | | चन्द्र राशि | | चन्द्र राशि | | चन्द्र राशि | |
|-----------------|-------------|--------------|---------------|--------------|---------------|--------------|---------------|--------------|---------------|--------------|---------------|--------------|
| | अंश-कला | मेघ-सिंह-धनु | वृष-कन्या-मकर | मेष-सिंह-धनु | वृष-कन्या-मकर | मेष-सिंह-धनु | वृष-कन्या-मकर | मेष-सिंह-धनु | वृष-कन्या-मकर | मेष-सिंह-धनु | वृष-कन्या-मकर | मेष-सिंह-धनु |
| ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० |
| ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ |
| ०२ | ०२ | ०२ | ०२ | ०२ | ०२ | ०२ | ०२ | ०२ | ०२ | ०२ | ०२ | ०२ |
| ०३ | ०३ | ०३ | ०३ | ०३ | ०३ | ०३ | ०३ | ०३ | ०३ | ०३ | ०३ | ०३ |
| ०४ | ०४ | ०४ | ०४ | ०४ | ०४ | ०४ | ०४ | ०४ | ०४ | ०४ | ०४ | ०४ |
| ०५ | ०५ | ०५ | ०५ | ०५ | ०५ | ०५ | ०५ | ०५ | ०५ | ०५ | ०५ | ०५ |
| ०६ | ०६ | ०६ | ०६ | ०६ | ०६ | ०६ | ०६ | ०६ | ०६ | ०६ | ०६ | ०६ |
| ०७ | ०७ | ०७ | ०७ | ०७ | ०७ | ०७ | ०७ | ०७ | ०७ | ०७ | ०७ | ०७ |
| ०८ | ०८ | ०८ | ०८ | ०८ | ०८ | ०८ | ०८ | ०८ | ०८ | ०८ | ०८ | ०८ |
| ०९ | ०९ | ०९ | ०९ | ०९ | ०९ | ०९ | ०९ | ०९ | ०९ | ०९ | ०९ | ०९ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ |
| १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ |
| १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ |
| १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ |
| १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ |
| १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ |
| १७ | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ |
| १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ |
| १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ |
| २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० |
| २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ |
| २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ |
| २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ |
| २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ |
| २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ |
| २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ |
| २८ | २८ | २८ | २८ | २८ | २८ | २८ | २८ | २८ | २८ | २८ | २८ | २८ |
| २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ |
| ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० |

[illegible]

ग्रहों की दृशाऽन्तर्दृशा का ज्ञान

नीपे लिखे चक्रों में अपने जस नखत के हैं लिखि जाते हैं चक्रों में चक्रों की सी रेखा के लक्षणों में लिखे हुए

दशा का भुक्त और्य ज्ञान—जन्म समय जो नक्षत्र हो उसका भयात (जन्म समय तक जितना नक्षत्र व्यतीत हो गया हो) और भोग (कुल नक्षत्र) बनाओ फिर उसके पलादि बनाकर भयात के पलों को जन्म दशा के वर्षों से गुणा दो, लब्ध व्यतीत दशा के वर्ष आवेंगे। शेष को ३० से गुणा कर भोग से भाग दो, लब्ध दिन आवेंगे, शेष को ६० से गुणा कर भोग से भाग दो, लब्ध मास निकलेंगे, शेष को १२ से गुणा कर भोग से भाग दो, लब्ध मास निकलेंगे, शेष को ३० से गुणा कर भोग से भाग दो, लब्ध दिन आवेंगे, शेष को ६० से गुणा कर भोग से भाग दो, लब्ध मास निकलेंगे, शेष को १२ से गुणा कर भोग से भाग दो, लब्ध पल इत्यादि आवेंगे। यह भुक्त दशा के वर्ष मासादि आवेंगे, जन्म समय की दशा के कुल वर्षों में से घटा दो, लब्ध भोग्य वर्षों को जोड़ते जाते से दशा चक्र हो जागा। अधिक स्थम रूप से दशा नक्षत्र का ज्ञान करते के लिए हमने कर्णजिज्ञासा नामक ग्रन्थ में व्याख्या की है।

| सूर्यदशावर्ष ६ | चन्द्रदशावर्ष १० | भौमदशावर्ष ७ | राहुदशावर्ष १८ | गुरुदशावर्ष १६ | शनिदशावर्ष १९ | बुधदशावर्ष १७ | केतुदशावर्ष ७ | शुक्रदशावर्ष २० |
|-------------------|-------------------|-------------------|--------------------|--------------------|-----------------------|-------------------|-------------------|---------------------|
| कृ. उ. फा. उ. बा. | रोहि. हस्त श्रवण | मृग. चित्रा. धनि. | आर्द्रा. स्वा. शत. | पुन. विशा. पू. भा. | पुष्य. अनु. उ. भा. ५७ | श्ले. ज्ये. रेवती | मघा. मूला. अश्वि | पू. फा. पू. भा. भर. |
| ग्रह वर्ष मा. दि. | ग्रह वर्ष मा. दि. | ग्रह वर्ष मा. दि. | ग्रह वर्ष मा. दि. | ग्रह वर्ष मा. दि. | ग्रह वर्ष मा. दि. | ग्रह वर्ष मा. दि. | ग्रह वर्ष मा. दि. | ग्रह वर्ष मा. दि. |
| सू. ० ३ १८ | चं. ० १० ० | ० ४ २७ | रा. २ ८ १२ | गु. २ १ १८ | श. ३ ० ३ | २ ४ २७ | के. ० ४ २७ | शु. ३ ४ ० |
| चं. ० ६ ० | मं. ० ७ ० | १ ० १८ | बु. २ ४ २४ | श. २ ६ १२ | बु. २ ८ १ | ० ११ २७ | शु. १ २ ० | सू. १ ० ० |
| मं. ० ४ ६ | रा. १ ६ ० | ० ११ ६ | श. २ १० ६ | बु. २ ३ ६ | के. १ १ १ | २ १० ० | सू. ० ४ ६ | चं. १ ८ ० |
| रा. ० १० २४ | बु. १ ४ ० | १ १ १ | बु. २ ६ १८ | के. ० ११ ६ | शु. ३ २ ० | ० १० ६ | चं. ० ७ ० | मं. १ २ ० |
| गु. ० १ १८ | श. १ ७ ० | ० ११ २७ | के. १ ० १८ | शु. २ ८ ० | सू. ० ११ १२ | १ ५ ० | मं. ० ४ २७ | रा. ३ ० ० |
| श. ० ११ १२ | बु. १ ५ ० | ० ४ २७ | शु. ३ ० ० | सू. ० १ १८ | चं. १ ७ ० | ० ११ २७ | रा. १ ० १८ | बु. २ ८ ० |
| बु. ० १० ६ | के. ० ७ ० | १ २ ० | सू. ० १० २४ | चं. १ ४ ० | मं. १ १ १ | २ ६ १८ | बु. ० ११ ६ | श. ३ २ ० |
| के. ० ४ ६ | शु. १ ८ ० | ० ४ ६ | चं. १ ६ ० | मं. ० ११ ६ | रा. २ १० ६ | २ ३ ६ | श. १ १ १ | बु. २ १० ० |
| श. १ ० ० | सू. ० ६ ० | ० ७ ० | मं. १ ० १८ | रा. २ ४ २४ | बु. २ ६ १२ | २ ८ १ | के. ० ११ २७ | चं. १ २ ० |

योगिनी दशा विचार—योगिनी दशा कुल ३६ वर्ष की होती है। प्रत्येक ३६ वर्षों के पश्चात् पुनः उसी दशा की पुनरावृत्ति होती है। योगिनी दशाओं में क्रमशः मंगला, पिंगला, धात्र्या, भ्रागरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और संकटा—ये आठ नाम हैं। इनकी वर्ष संख्या भी क्रमानुसार $1+2+3+4+5+6+7+8=36$ वर्ष होते हैं। मंगला, पिंगला आदि योगिनी दशाएँ अपने नामानुसार ही शाश्वत फल प्रदान करती हैं।

योगिनी दशा की विधि—अश्विनी नक्षत्र से आरम्भ करके अपने जन्म नक्षत्र तक की संख्या में ३ जोड़कर ८ द्वारा भाग देने पर शेष १ बचे तो मंगला, २ बचें तो पिंगला, ३ बचे तो धान्या एवं च शेष ८ या ० बचे तो संकटा की दशा होगी। उदाहरणार्थ—यदि जन्म नक्षत्र अनुराधा हो, तो अश्विनी से अनुराधा तक गिनने पर १७ की संख्या हुई। इनमें ३ जमा करने पर कुल योग २० मिला। इसको ८ द्वारा भाग देने पर २ लब्धि तथा शेष ४ बचे। पूर्वोक्त क्रमानुसार मंगला से गिनने पर चौथी दशा—अर्थात् धामरी की दशा (जन्मकाल से) प्रारम्भ होगी। योगिनी की भूक्त-भोग्य दशा अन्तर्दशा जानने के लिए ज्योतिष तत्त्व पढ़ें।

अन्तर्दशमासादि शुभ दशा—मंगला, धा. भ. सि., नेष्टदशा—पिंगला, भ्रामरी, उल्का, संकटा ।

अनन्तदशा निकालने की विधि—जब किसी ग्रह की अनन्तदशा निकालनी हो तो उस ग्रह के वर्षों का पृथक् २ हर एक ग्रह की दशा के वर्षों से गुणा कर महादशा के वर्षों से भाग दें (विंशोत्तरी १२०) (अष्टोत्तरी १०८) (योगिनी ३६) भाग देने से जो अंक आवे अनन्तदशा के वर्ष, मासादि आवेंगे।

योगिनीदशाऽन्तर्दशाज्ञान के लिए चक्र

| मंगला १ | पिंगला २ | धन्या ३ | भापरी ४ | भद्रिका ५ | उल्का ६ | सिद्धा ७ | संकटा ८ |
|-----------------------|-----------------------|-----------------------|-----------------------|-----------------------|---------------------|-----------------------|-----------------------|
| मा. १२ चं. मा. १२ चं. | मा. २४ सू. मा. २४ सू. | मा. ३६ बृ. मा. ३६ बृ. | मा. ४८ मं. मा. ४८ मं. | मा. ६० बु. मा. ६० बु. | मा. ७२ श. मा. ७२ श. | मा. ८४ शु. मा. ८४ शु. | मा. ९६ के. मा. ९६ के. |
| मं. ०१० पिं. ११० | मं. ०१० पिं. ११० | धा. ३० धा. ३० | भा. ५१० भा. ५१० | भ. ८१० भ. ८१० | उ. १२० उ. १२० | सि. १६१० सि. १६१० | सं. २११० सं. २११० |
| पिं. ०२० धा. २० | पिं. ०२० धा. २० | भा. ४० भा. ४० | भ. ६२० भ. ६२० | उ. १०० उ. १०० | सि. १४० सि. १४० | मं. २१२० मं. २१२० | र २० र २० |
| भा. १०० भा. १०० | भा. २२० भा. २२० | भ. ५० भ. ५० | उ. ८० उ. ८० | सि. ११२० सि. ११२० | सं. १६० सं. १६० | मं. २१३० मं. २१३० | पिं. ५११० पिं. ५११० |
| भा. ११० भा. ११० | भा. ३१० भा. ३१० | उ. ६० उ. ६० | सि. ९१० सि. ९१० | सं. १३१० सं. १३१० | मं. २०० मं. २०० | धा. ८० धा. ८० | ८० ८० |
| भा. १२० भा. १२० | भा. ४० भा. ४० | सि. ७० सि. ७० | सं. १०२० सं. १०२० | मं. १२० मं. १२० | पि. ४० पि. ४० | धा. ७० धा. ७० | भा. १०२० भा. १०२० |
| भा. १३० भा. १३० | भा. ५० भा. ५० | सं. ६० सं. ६० | मं. ९१० मं. ९१० | पि. ३१० पि. ३१० | धा. ६० धा. ६० | भा. ९१० भा. ९१० | १० १० |
| उ. २० उ. २० | सि. ४२० सि. ४२० | सं. ८० सं. ८० | पि. २२० पि. २२० | धा. ५० धा. ५० | भा. ८० भा. ८० | मं. ११२० मं. ११२० | उ. १६० उ. १६० |
| सि. २१० सि. २१० | सं. ५१० सं. ५१० | मं. १०० मं. १०० | पि. २०० पि. २०० | धा. ५० धा. ५० | भा. ८० भा. ८० | उ. ११२० उ. ११२० | १६० १६० |
| सं. २२० सं. २२० | मं. ०२० मं. ०२० | पिं. २० पिं. २० | धा. ४० धा. ४० | भा. ६२० भा. ६२० | मं. १०० मं. १०० | उ. १४० उ. १४० | सि. १८२० सि. १८२० |
| श्रवण, आर्द्रा चित्रा | पुन. स्वा. धनि | पुष्य विशा शत | श्ले. अनु. पूभा. आश्व | मघा. ज्ये. उभा. भर. | पूफा मूला रेव कृति | उफा. पूषा रोह | हस्त उषा मृग |



गृहों की अन्तरदशा से प्रत्यन्तर दशा ज्ञात करना

भारतीय ज्योतिष में फलित कथन के लिए विभिन्न प्रकार की दशाओं का वर्णन मिलता है। परन्तु वर्तमान काल में केवल तीन प्रकार की दशाओं का प्रचलन मिलता है। विशोत्तरी दशा, योगिनी दशा और अष्टोत्तरी दशा। अष्टोत्तरी दशा की अवधि 108 वर्ष की होती है। योगिनी दशा की एक आवृत्ति 36 वर्ष की होती है। अष्टोत्तरी दशा का कुल मान 120 वर्षों का होता है। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत, महाराष्ट्र आदि में, योगिनी दशाओं का प्रचलन उत्तर भारत—विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश में अधिक पाया जाता है, जबकि विशोत्तरी दशा पद्धति का प्रचलन समस्त भारत वर्ष में पाया जाता है। प्रस्तुत चक्रों में विशोत्तरी में प्रत्येक ग्रह की अन्तर-दशा में प्रत्यन्तर दशाएँ निकालने की प्रक्रिया बतलाई गई है। किसी ग्रह की प्रत्यन्तर दशा निकल आने से फलदेश आ जाती है। दशाऽन्तरदशाओं के फलदेश का वर्णन आप हमारी पुस्तक ज्योतिष तत्त्व फलित खण्ड भाग (दो) में पढ़ सकते हैं। विशोत्तरी दशा पद्धति के अन्तर्गत ग्रहों की महादशा एवं अन्तरदशाओं के चक्र गत पृष्ठों में लिख चुके हैं। यहाँ पर पुनरावलोकन कर सकते हैं—

| ग्रह | सूर्य | चन्द्र | मंग. | राहु | गुरु | शनि | बुध | केतु | शुक्र |
|------|-------|--------|------|------|------|-----|-----|------|-------|
| वर्ष | 6 | 10 | 7 | 18 | 16 | 19 | 17 | 7 | 20 |

| सूर्यान्तर दशा चक्र—6 वर्ष | | | | | | | | | |
|----------------------------|---------|---------|--------|-------------|------|---------|---------|--------|-------------|
| ग्रह | सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | बु. के. शु. | ग्रह | सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | बु. के. शु. |
| वर्ष | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 |
| मास | 3 | 6 | 4 | 10 | 9 | 11 | 10 | 4 | 0 |
| दिन | 18 | 0 | 6 | 24 | 18 | 12 | 6 | 6 | 0 |

| सूर्य मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|---------|--------|-------------|------|---------|---------|--------|-------------|
| ग्रह | सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | बु. के. शु. | ग्रह | सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | बु. के. शु. |
| मास | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| दिन | 5 | 9 | 6 | 14 | 17 | 15 | 6 | 18 | |
| घंटे | 9 | 0 | 7 | 4 | 9 | 2 | 7 | 7 | 00 |
| मिन्ट | 36 | 0 | 12 | 48 | 36 | 24 | 12 | 12 | 00 |

| सूर्य मध्ये शनि का प्रत्यन्तर | | | | | | | | | |
|-------------------------------|----------------|------|----------------|------|----------------|------|----------------|------|----------------|
| ग्रह | श. बु. के. शु. | ग्रह | श. बु. के. शु. | ग्रह | श. बु. के. शु. | ग्रह | श. बु. के. शु. | ग्रह | श. बु. के. शु. |
| मास | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 |
| दिन | 24 | 18 | 16 | 27 | 17 | 28 | 19 | 21 | 15 |
| घंटे | 3 | 10 | 22 | 0 | 2 | 12 | 22 | 7 | 14 |
| मिन्ट | 36 | 48 | 48 | 0 | 24 | 0 | 48 | 12 | 24 |

| सूर्य मध्ये बुध का प्रत्यन्तर | | | | | | | | | |
|-------------------------------|---------------------|---------|--------|------|---------------------|---------|--------|------|---------------------|
| ग्रह | बु. के. शु. सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | ग्रह | बु. के. शु. सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | ग्रह | बु. के. शु. सू. चं. |
| मास | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 |
| दिन | 13 | 17 | 21 | 15 | 25 | 17 | 15 | 10 | 18 |
| घंटे | 8 | 20 | 0 | 7 | 12 | 20 | 21 | 19 | 10 |
| मिन्ट | 24 | 24 | 0 | 12 | 0 | 24 | 36 | 12 | 48 |

| सूर्य मध्ये केतु का प्रत्यन्तर | | | | | | | | | |
|--------------------------------|-----------------|---------|--------|------|-----------------|---------|--------|------|-----------------|
| ग्रह | के. शु. सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | ग्रह | के. शु. सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | ग्रह | के. शु. सू. चं. |
| मास | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| दिन | 7 | 21 | 6 | 10 | 7 | 18 | 16 | 16 | 17 |
| घंटे | 8 | 0 | 7 | 12 | 8 | 21 | 19 | 22 | 20 |
| मिन्ट | 24 | 0 | 12 | 0 | 24 | 36 | 12 | 48 | 24 |

| सूर्य मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------|--------|---------------------|------|---------|--------|---------------------|------|---------|
| ग्रह | मं. रा. | गु. श. | बु. के. शु. सू. चं. | ग्रह | मं. रा. | गु. श. | बु. के. शु. सू. चं. | ग्रह | मं. रा. |
| मास | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| दिन | 7 | 18 | 16 | 19 | 17 | 7 | 21 | 6 | 10 |
| घंटे | 8 | 21 | 19 | 22 | 20 | 8 | 0 | 7 | 12 |
| मिन्ट | 24 | 36 | 12 | 48 | 24 | 24 | 0 | 12 | 0 |

| सूर्य मध्ये राहु का प्रत्यन्तर | | | | | | | | | |
|--------------------------------|--------------------------------|------|--------------------------------|------|--------------------------------|------|--------------------------------|------|--------------------------------|
| ग्रह | रा. गु. श. बु. के. शु. सू. चं. | ग्रह | रा. गु. श. बु. के. शु. सू. चं. | ग्रह | रा. गु. श. बु. के. शु. सू. चं. | ग्रह | रा. गु. श. बु. के. शु. सू. चं. | ग्रह | रा. गु. श. बु. के. शु. सू. चं. |
| मास | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 |
| दिन | 18 | 13 | 21 | 15 | 18 | 24 | 16 | 27 | 18 |
| घंटे | 14 | 4 | 7 | 21 | 21 | 0 | 4 | 0 | 21 |
| मिन्ट | 24 | 48 | 12 | 36 | 36 | 0 | 48 | 0 | 36 |

| चन्द्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------------------|---------|--------|------|---------------------|---------|--------|------|---------------------|
| ग्रह | बु. के. शु. सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | ग्रह | बु. के. शु. सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | ग्रह | बु. के. शु. सू. चं. |
| मास | 2 | 0 | 2 | 0 | 1 | 0 | 2 | 2 | 0 |
| दिन | 12 | 29 | 25 | 12 | 29 | 16 | 8 | 20 | |
| घंटे | 6 | 18 | 0 | 12 | 12 | 18 | 12 | 0 | 18 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

| चन्द्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर | | | | | | | | | |
|--------------------------------|------------------------|---------|--------|------|------------------------|---------|--------|------|------------------------|
| ग्रह | श. बु. के. शु. सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | ग्रह | श. बु. के. शु. सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | ग्रह | श. बु. के. शु. सू. चं. |
| मास | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 |
| दिन | 12 | 5 | 10 | 17 | 12 | 1 | 28 | 3 | 29 |
| घंटे | 6 | 0 | 12 | 6 | 12 | 0 | 6 | 12 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

| चन्द्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|--------|---------------------|------|---------|--------|---------------------|------|---------|
| ग्रह | मं. रा. | गु. श. | बु. के. शु. सू. चं. | ग्रह | मं. रा. | गु. श. | बु. के. शु. सू. चं. | ग्रह | मं. रा. |
| मास | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 |
| दिन | 12 | 1 | 28 | 3 | 29 | 12 | 5 | 10 | 17 |
| घंटे | 6 | 12 | 0 | 6 | 18 | 6 | 0 | 12 | 12 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

| चन्द्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर | | | | | | | | | |
|---------------------------------|--------------------------------|------|--------------------------------|------|--------------------------------|------|--------------------------------|------|--------------------------------|
| ग्रह | रा. गु. श. बु. के. शु. सू. चं. | ग्रह | रा. गु. श. बु. के. शु. सू. चं. | ग्रह | रा. गु. श. बु. के. शु. सू. चं. | ग्रह | रा. गु. श. बु. के. शु. सू. चं. | ग्रह | रा. गु. श. बु. के. शु. सू. चं. |
| मास | 2 | 2 | 2 | 2 | 1 | 3 | 0 | 1 | 1 |
| दिन | 21 | 12 | 25 | 16 | 1 | 0 | 27 | 15 | 1 |
| घंटे | 0 | 0 | 12 | 12 | 0 | 0 | 0 | 0 | 12 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

| चन्द्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------------------|---------|--------|------|---------------------|---------|--------|------|---------------------|
| ग्रह | बु. के. शु. सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | ग्रह | बु. के. शु. सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | ग्रह | बु. के. शु. सू. चं. |
| मास | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| दिन | 7 | 21 | 6 | 10 | 7 | 18 | 16 | 16 | 17 |
| घंटे | 8 | 0 | 7 | 12 | 8 | 21 | 19 | 22 | 20 |
| मिन्ट | 24 | 0 | 12 | 0 | 24 | 36 | 12 | 48 | 24 |

| चन्द्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर | | | | | | | | | |
|--------------------------------|------------------------|---------|--------|------|------------------------|---------|--------|------|------------------------|
| ग्रह | श. बु. के. शु. सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | ग्रह | श. बु. के. शु. सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | ग्रह | श. बु. के. शु. सू. चं. |
| मास | 2 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 |
| दिन | 12 | 29 | 25 | 12 | 29 | 16 | 8 | 20 | |
| घंटे | 6 | 18 | 0 | 12 | 12 | 18 | 12 | 0 | 18 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

| चन्द्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|--------|---------------------|------|---------|--------|---------------------|------|---------|
| ग्रह | मं. रा. | गु. श. | बु. के. शु. सू. चं. | ग्रह | मं. रा. | गु. श. | बु. के. शु. सू. चं. | ग्रह | मं. रा. |
| मास | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 |
| दिन | 18 | 13 | 21 | 15 | 18 | 24 | 16 | 27 | 18 |
| घंटे | 14 | 4 | 7 | 21 | 21 | 0 | 4 | 0 | 21 |
| मिन्ट | 24 | 48 | 12 | 36 | 36 | 0 | 48 | 0 | 36 |

| चन्द्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर | | | | | | | | | |
|---------------------------------|--------------------------------|------|--------------------------------|------|--------------------------------|------|--------------------------------|------|--------------------------------|
| ग्रह | रा. गु. श. बु. के. शु. सू. चं. | ग्रह | रा. गु. श. बु. के. शु. सू. चं. | ग्रह | रा. गु. श. बु. के. शु. सू. चं. | ग्रह | रा. गु. श. बु. के. शु. सू. चं. | ग्रह | रा. गु. श. बु. के. शु. सू. चं. |
| मास | 2 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| दिन | 12 | 29 | 25 | 12 | 29 | 16 | 8 | 20 | |
| घंटे | 6 | 18 | 0 | 12 | 12 | 18 | 12 | 0 | 18 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

| चन्द्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर | | | | | | | | | |
|--------------------------------|------------------------|---------|--------|------|------------------------|---------|--------|------|------------------------|
| ग्रह | श. बु. के. शु. सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | ग्रह | श. बु. के. शु. सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | ग्रह | श. बु. के. शु. सू. चं. |
| मास | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 |
| दिन | 12 | 5 | 10 | 17 | 12 | 1 | 28 | 3 | 29 |
| घंटे | 6 | 0 | 12 | 6 | 12 | 0 | 6 | 12 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

| चन्द्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|--------|---------------------|------|---------|--------|---------------------|------|---------|
| ग्रह | मं. रा. | गु. श. | बु. के. शु. सू. चं. | ग्रह | मं. रा. | गु. श. | बु. के. शु. सू. चं. | ग्रह | मं. रा. |
| मास | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 |
| दिन | 12 | 1 | 28 | 3 | 29 | 12 | 5 | 10 | 17 |
| घंटे | 6 | 12 | 0 | 6 | 18 | 6 | 0 | 12 | 12 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

| चन्द्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------------------|---------|--------|------|---------------------|---------|--------|------|---------------------|
| ग्रह | बु. के. शु. सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | ग्रह | बु. के. शु. सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | ग्रह | बु. के. शु. सू. चं. |
| मास | 2 | 0 | 2 | 0 | 1 | 0 | 2 | 2 | 0 |
| दिन | 12 | 29 | 25 | 12 | 29 | 16 | 8 | 20 | |
| घंटे | 6 | 18 | 0 | 12 | 12 | 18 | 12 | 0 | 18 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

| चन्द्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर | | | | | | | | | |
|--------------------------------|------------------------|---------|--------|------|------------------------|---------|--------|------|------------------------|
| ग्रह | श. बु. के. शु. सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | ग्रह | श. बु. के. शु. सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | ग्रह | श. बु. के. शु. सू. चं. |
| मास | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 |
| दिन | 12 | 5 | 10 | 17 | 12 | 1 | 28 | 3 | 29 |
| घंटे | 6 | 0 | 12 | 6 | 12 | 0 | 6 | 12 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

| चन्द्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|--------|---------------------|------|---------|--------|---------------------|------|---------|
| ग्रह | मं. रा. | गु. श. | बु. के. शु. सू. चं. | ग्रह | मं. रा. | गु. श. | बु. के. शु. सू. चं. | ग्रह | मं. रा. |
| मास | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 |
| दिन | 12 | 1 | 28 | 3 | 29 | 12 | 5 | 10 | 17 |
| घंटे | 6 | 12 | 0 | 6 | 18 | 6 | 0 | 12 | 12 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

| चन्द्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर | | | | | | | | | |
|--------------------------------|---------------------|---------|--------|------|---------------------|---------|--------|------|---------------------|
| ग्रह | बु. के. शु. सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | ग्रह | बु. के. शु. सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | ग्रह | बु. के. शु. सू. चं. |
| मास | 2 | 0 | 2 | 0 | 1 | 0 | 2 | 2 | 0 |
| दिन | 12 | 29 | 25 | 12 | 29 | 16 | 8 | 20 | |
| घंटे | 6 | 18 | 0 | 12 | 12 | 18 | 12 | 0 | 18 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

| चन्द्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर | | | | | | | | | |
|--------------------------------|------------------------|---------|--------|------|------------------------|---------|--------|------|------------------------|
| ग्रह | श. बु. के. शु. सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | ग्रह | श. बु. के. शु. सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | ग्रह | श. बु. के. शु. सू. चं. |
| मास | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 |
| दिन | 12 | 5 | 10 | 17 | 12 | 1 | 28 | 3 | 29 |
| घंटे | 6 | 0 | 12 | 6 | 12 | 0 | 6 | 12 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

| चन्द्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर | | | | | | | | | |
|---------------------------------|---------|--------|---------------------|------|---------|--------|---------------------|------|---------|
| ग्रह | मं. रा. | गु. श. | बु. के. शु. सू. चं. | ग्रह | मं. रा. | गु. श. | बु. के. शु. सू. चं. | ग्रह | मं. रा. |
| मास | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 |
| दिन | 12 | 1 | 28 | 3 | 29 | 12 | 5 | 10 | 17 |

मंगल मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

| ग्रह | सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | बु. के. | शु. |
|-------|---------|---------|--------|---------|-----|
| मंगल | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| मार्स | 6 | 10 | 7 | 18 | 16 |
| दिन | 17 | 12 | 8 | 21 | 19 |
| घंटे | 12 | 6 | 12 | 0 | 6 |
| मिनिट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

मंगल मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | बु. के. | शु. |
|-------|---------|---------|--------|---------|-----|
| मंगल | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| मार्स | 17 | 12 | 1 | 28 | 3 |
| दिन | 17 | 12 | 1 | 28 | 3 |
| घंटे | 12 | 6 | 12 | 0 | 6 |
| मिनिट | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |

राहु की अन्तर्दशाएँ (18 वर्ष)

| ग्रह | रा. गु. श. | बु. के. | शु. चं. | मं. रा. |
|-------|------------|---------|---------|---------|
| मंगल | 2 | 2 | 2 | 2 |
| मार्स | 2 | 2 | 2 | 2 |
| दिन | 1 | 1 | 1 | 1 |
| घंटे | 1 | 1 | 1 | 1 |
| मिनिट | 0 | 0 | 0 | 0 |

राहु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | रा. गु. श. | बु. के. | शु. चं. | मं. रा. |
|-------|------------|---------|---------|---------|
| मंगल | 4 | 4 | 4 | 4 |
| मार्स | 25 | 9 | 3 | 26 |
| दिन | 25 | 9 | 3 | 26 |
| घंटे | 19 | 14 | 21 | 16 |
| मिनिट | 12 | 24 | 36 | 48 |

राहु मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | रा. गु. श. | बु. के. | शु. चं. | मं. रा. |
|-------|------------|---------|---------|---------|
| मंगल | 3 | 4 | 4 | 4 |
| मार्स | 25 | 16 | 2 | 20 |
| दिन | 25 | 16 | 2 | 20 |
| घंटे | 4 | 19 | 9 | 4 |
| मिनिट | 48 | 12 | 36 | 48 |

राहु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

| ग्रह | रा. गु. श. | बु. के. | शु. चं. | मं. रा. |
|-------|------------|---------|---------|---------|
| मंगल | 5 | 4 | 1 | 5 |
| मार्स | 12 | 25 | 29 | 21 |
| दिन | 12 | 25 | 29 | 21 |
| घंटे | 10 | 8 | 20 | 7 |
| मिनिट | 48 | 24 | 0 | 12 |

राहु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

| ग्रह | रा. गु. श. | बु. के. | शु. चं. | मं. रा. |
|-------|------------|---------|---------|---------|
| मंगल | 4 | 1 | 5 | 1 |
| मार्स | 10 | 23 | 3 | 15 |
| दिन | 10 | 23 | 3 | 15 |
| घंटे | 1 | 13 | 0 | 21 |
| मिनिट | 12 | 12 | 0 | 36 |

राहु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | के. शु. चं. | मं. रा. | गु. श. | बु. के. | शु. |
|-------|-------------|---------|--------|---------|-----|
| मंगल | 0 | 2 | 0 | 1 | 1 |
| मार्स | 22 | 3 | 18 | 1 | 22 |
| दिन | 22 | 3 | 18 | 1 | 22 |
| घंटे | 1 | 0 | 21 | 12 | 1 |
| मिनिट | 12 | 0 | 36 | 00 | 12 |

राहु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | रा. गु. श. | बु. के. | शु. चं. | मं. रा. |
|-------|------------|---------|---------|---------|
| मंगल | 6 | 1 | 3 | 2 |
| मार्स | 0 | 24 | 0 | 3 |
| दिन | 0 | 24 | 0 | 3 |
| घंटे | 0 | 0 | 0 | 0 |
| मिनिट | 0 | 0 | 0 | 0 |

राहु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

| ग्रह | सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | बु. के. | शु. |
|-------|---------|---------|--------|---------|-----|
| मंगल | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 |
| मार्स | 16 | 27 | 18 | 13 | 21 |
| दिन | 16 | 27 | 18 | 13 | 21 |
| घंटे | 4 | 0 | 21 | 14 | 7 |
| मिनिट | 48 | 0 | 36 | 24 | 48 |

राहु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | चं. मं. रा. | गु. श. | बु. के. | शु. चं. |
|-------|-------------|--------|---------|---------|
| मंगल | 1 | 2 | 2 | 2 |
| मार्स | 15 | 1 | 21 | 12 |
| दिन | 15 | 1 | 21 | 12 |
| घंटे | 0 | 12 | 0 | 12 |
| मिनिट | 0 | 0 | 0 | 0 |

राहु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

| ग्रह | मं. रा. | गु. श. | बु. के. | शु. चं. |
|-------|---------|--------|---------|---------|
| मंगल | 0 | 1 | 1 | 1 |
| मार्स | 22 | 26 | 20 | 29 |
| दिन | 22 | 26 | 20 | 29 |
| घंटे | 1 | 16 | 9 | 20 |
| मिनिट | 12 | 48 | 36 | 24 |

गुरु की अन्तर्दशाएँ (16 वर्ष)

| ग्रह | गु. श. | बु. के. | शु. चं. | मं. रा. |
|-------|--------|---------|---------|---------|
| मंगल | 2 | 2 | 0 | 2 |
| मार्स | 1 | 6 | 3 | 11 |
| दिन | 18 | 12 | 6 | 0 |
| घंटे | 18 | 12 | 6 | 0 |
| मिनिट | 0 | 18 | 0 | 6 |

गुरु मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | गु. श. | बु. के. | शु. चं. | मं. रा. |
|-------|--------|---------|---------|---------|
| मंगल | 3 | 4 | 3 | 1 |
| मार्स | 12 | 1 | 18 | 14 |
| दिन | 12 | 1 | 18 | 14 |
| घंटे | 9 | 14 | 19 | 9 |
| मिनिट | 36 | 24 | 12 | 0 |

गुरु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

| ग्रह | रा. गु. श. | बु. के. | शु. चं. | मं. रा. |
|-------|------------|---------|---------|---------|
| मंगल | 4 | 4 | 1 | 5 |
| मार्स | 24 | 9 | 23 | 2 |
| दिन | 24 | 9 | 23 | 2 |
| घंटे | 9 | 4 | 4 | 0 |
| मिनिट | 36 | 48 | 48 | 0 |

गुरु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

| ग्रह | रा. गु. श. | बु. के. | शु. चं. | मं. रा. |
|-------|------------|---------|---------|---------|
| मंगल | 3 | 1 | 4 | 1 |
| मार्स | 25 | 17 | 16 | 10 |
| दिन | 25 | 17 | 16 | 10 |
| घंटे | 14 | 14 | 0 | 19 |
| मिनिट | 24 | 24 | 0 | 12 |

गुरु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | के. शु. चं. | मं. रा. | गु. श. | बु. के. | शु. |
|-------|-------------|---------|--------|---------|-----|
| मंगल | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 |
| मार्स | 19 | 26 | 16 | 28 | 19 |
| दिन | 19 | 26 | 16 | 28 | 19 |
| घंटे | 14 | 0 | 19 | 0 | 14 |
| मिनिट | 24 | 0 | 12 | 0 | 24 |

गुरु मध्ये शुक का प्रत्यन्तर

| ग्रह | रा. गु. श. | बु. के. | शु. चं. | मं. रा. |
|-------|------------|---------|---------|---------|
| मंगल | 5 | 1 | 2 | 1 |
| मार्स | 10 | 18 | 20 | 26 |
| दिन | 10 | 18 | 20 | 26 |
| घंटे | 0 | 0 | 0 | 0 |
| मिनिट | 0 | 0 | 0 | 0 |

गुरु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

| ग्रह | सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | बु. के. | शु. |
|-------|---------|---------|--------|---------|-----|
| मंगल | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 |
| मार्स | 14 | 24 | 16 | 13 | 8 |
| दिन | 14 | 24 | 16 | 13 | 8 |
| घंटे | 9 | 0 | 19 | 4 | 9 |
| मिनिट | 36 | 0 | 12 | 48 | 36 |

गुरु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | चं. मं. रा. | गु. श. | बु. के. | शु. चं. |
|-------|-------------|--------|---------|---------|
| मंगल | 1 | 0 | 2 | 2 |
| मार्स | 10 | 28 | 12 | 4 |
| दिन | 10 | 28 | 12 | 4 |
| घंटे | 0 | 0 | 0 | 0 |
| मिनिट | 0 | 0 | 0 | 0 |

गुरु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

| ग्रह | मं. रा. | गु. श. | बु. के. | शु. चं. |
|-------|---------|--------|---------|---------|
| मंगल | 0 | 1 | 1 | 1 |
| मार्स | 16 | 20 | 14 | 23 |
| दिन | 16 | 20 | 14 | 23 |
| घंटे | 14 | 9 | 19 | 4 |
| मिनिट | 24 | 36 | 12 | 48 |

शनि मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | चं. मं. रा. | गु. श. | बु. के. | शु. चं. |
|-------|-------------|--------|---------|---------|
| मंगल | 1 | 1 | 2 | 2 |
| मार्स | 17 | 3 | 25 | 16 |
| दिन | 17 | 3 | 25 | 16 |
| घंटे | 12 | 6 | 12 | 0 |
| मिनिट | 0 | 0 | 0 | 0 |

शनि मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

| ग्रह | मं. रा. | गु. श. | बु. के. | शु. चं. |
|-------|---------|--------|---------|---------|
| मंगल | 0 | 1 | 1 | 2 |
| मार्स | 23 | 29 | 23 | 3 |
| दिन | 23 | 29 | 23 | 3 |
| घंटे | 6 | 20 | 4 | 12 |
| मिनिट | 36 | 24 | 48 | 12 |

शनि मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | रा. गु. श. | बु. के. | शु. चं. | मं. रा. |
|-------|------------|---------|---------|---------|
| मंगल | 5 | 4 | 5 | 4 |
| मार्स | 3 | 16 | 12 | 25 |
| दिन | 3 | 16 | 12 | 25 |
| घंटे | 21 | 19 | 10 | 8 |
| मिनिट | 36 | 12 | 48 | 24 |

शनि मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | गु. श. | बु. के. | शु. चं. | मं. रा. |
|-------|--------|---------|---------|---------|
| मंगल | 4 | 4 | 1 | 5 |
| मार्स | 1 | 24 | 9 | 23 |
| दिन | 1 | 24 | 9 | 23 |
| घंटे | 14 | 9 | 4 | 4 |
| मिनिट | 24 | 36 | 48 | 48 |

शुध की अन्तर्दशाएँ (17 वर्ष)

| ग्रह | बु. के. | शु. चं. | मं. रा. | गु. श. |
|-------|---------|---------|---------|--------|
| मंगल | 0 | 2 | 0 | 1 |
| मार्स | 23 | 6 | 19 | 3 |
| दिन | 23 | 6 | 19 | 3 |
| घंटे | 6 | 12 | 2 | 6 |
| मिनिट | 36 | 0 | 48 | 0 |

शुध मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | रा. गु. श. | बु. के. | शु. चं. | मं. रा. |
|-------|------------|---------|---------|---------|
| मंगल | 4 | 1 | 4 | 1 |
| मार्स | 2 | 20 | 24 | 13 |
| दिन | 2 | 20 | 24 | 13 |
| घंटे | 19 | 13 | 12 | 8 |
| मिनिट | 48 | 48 | 0 | 24 |

शुध मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | के. शु. चं. | मं. रा. | गु. श. | बु. के. | शु. |
|-------|-------------|---------|--------|---------|-----|
| मंगल | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 |
| मार्स | 20 | 29 | 17 | 29 | 20 |
| दिन | 20 | 29 | 17 | 29 | 20 |
| घंटे | 19 | 12 | 20 | 18 | 19 |
| मिनिट | 48 | 0 | 24 | 0 | 48 |

गुरु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | रा. गु. श. | बु. के. | शु. चं. | मं. रा. |
|-------|------------|---------|---------|---------|
| मंगल | 4 | 3 | 4 | 1 |
| मार्स | 9 | 25 | 16 | 2 |
| दिन | 9 | 25 | 16 | 2 |
| घंटे | 14 | 4 | 19 | 9 |
| मिनिट | 24 | 48 | 12 | 36 |

शनि की अन्तर्दशाएँ (19 वर्ष)

| ग्रह | रा. गु. श. | बु. के. | शु. चं. | मं. रा. |
|-------|------------|---------|---------|---------|
| मंगल | 3 | 1 | 3 | 0 |
| मार्स | 0 | 6 | 1 | 3 |
| दिन | 0 | 6 | 1 | 3 |
| घंटे | 3 | 1 | 3 | 0 |
| मिनिट | 3 | 1 | 3 | 0 |

शनि मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

| ग्रह | रा. गु. श. | बु. के. | शु. चं. | मं. रा. |
|-------|------------|---------|---------|---------|
| मंगल | 5 | 2 | 6 | 1 |
| मार्स | 21 | 3 | 3 | 0 |
| दिन | 21 | 3 | 3 | 0 |
| घंटे | 11 | 10 | 4 | 12 |
| मिनिट | 24 | 12 | 12 | 0 |

शनि मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | रा. गु. श. | बु. के. | शु. चं. | मं. रा. |
|-------|------------|---------|---------|---------|
| मंगल | 4 | 1 | 5 | 1 |
| मार्स | 17 | 26 | 11 | 18 |
| दिन | 17 | 26 | 11 | 18 |
| घंटे | 6 | 12 | 10 | 18 |
| मिनिट | 36 | 36 | 0 | 48 |

शनि मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | के. शु. चं. | मं. रा. | गु. श. | बु. के. | शु. |
|-------|-------------|---------|--------|---------|-----|
| मंगल | 0 | 2 | 0 | 1 | 1 |
| मार्स | 23 | 6 | 19 | 3 | 23 |
| दिन | 23 | 6 | 19 | 3 | 23 |
| घंटे | 6 | 12 | 2 | 6 | 20 |
| मिनिट | 36 | 0 | 48 | 0 | 36 |

शनि मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | रा. गु. श. | बु. के. | शु. चं. | मं. रा. |
|-------|------------|---------|---------|---------|
| मंगल | 6 | 1 | 3 | 2 |
| मार्स | 10 | 27 | 5 | 6 |
| दिन | 10 | 27 | 5 | 6 |
| घंटे | 0 | 0 | 12 | 0 |
| मिनिट | 0 | 0 | 0 | 0 |

शनि मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

| ग्रह | सू. चं. | मं. रा. | गु. श. | बु. के. | शु. |
|-------|---------|---------|--------|---------|-----|
| मंगल | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 |
| मार्स | 17 | 28 | 19 | 21 | 15 |
| दिन | 17 | 28 | 19 | 21 | 15 |
| घंटे | 2 | 12 | 22 | 7 | 14 |
| मिनिट | 24 | 0 | 48 | 12 | 24 |

बुध मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. सू. | चं. मं. | रा. गु. | शु. बु. के. |
|-------|---------|---------|---------|-------------|
| मास | 5 | 1 | 2 | 1 |
| दिन | 20 | 21 | 25 | 29 |
| घटे | 0 | 0 | 0 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 |

बुध मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. सू. | चं. मं. | रा. गु. | शु. बु. के. |
|-------|---------|---------|---------|-------------|
| मास | 0 | 0 | 0 | 0 |
| दिन | 15 | 25 | 17 | 15 |
| घटे | 7 | 12 | 20 | 21 |
| मिन्ट | 12 | 0 | 24 | 36 |

बुध मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. सू. | चं. मं. | रा. गु. | शु. बु. के. |
|-------|---------|---------|---------|-------------|
| मास | 1 | 0 | 2 | 2 |
| दिन | 12 | 29 | 16 | 8 |
| घटे | 12 | 18 | 12 | 13 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 |

बुध मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. सू. | चं. मं. | रा. गु. | शु. बु. के. |
|-------|---------|---------|---------|-------------|
| मास | 0 | 1 | 1 | 1 |
| दिन | 20 | 23 | 17 | 26 |
| घटे | 19 | 13 | 14 | 12 |
| मिन्ट | 48 | 36 | 24 | 12 |

बुध मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. सू. | चं. मं. | रा. गु. | शु. बु. के. |
|-------|---------|---------|---------|-------------|
| मास | 4 | 4 | 4 | 1 |
| दिन | 17 | 2 | 25 | 10 |
| घटे | 16 | 9 | 8 | 01 |
| मिन्ट | 48 | 36 | 24 | 12 |

बुध मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. सू. | चं. मं. | रा. गु. | शु. बु. के. |
|-------|---------|---------|---------|-------------|
| मास | 3 | 4 | 3 | 4 |
| दिन | 18 | 9 | 25 | 17 |
| घटे | 19 | 4 | 14 | 14 |
| मिन्ट | 12 | 48 | 24 | 24 |

बुध मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. सू. | चं. मं. | रा. गु. | शु. बु. के. |
|-------|---------|---------|---------|-------------|
| मास | 5 | 4 | 1 | 5 |
| दिन | 3 | 17 | 26 | 11 |
| घटे | 10 | 6 | 12 | 10 |
| मिन्ट | 12 | 36 | 36 | 0 |

केतु की अन्तर्दशाएँ (7 वर्ष)

| ग्रह | शु. सू. | चं. मं. | रा. गु. | शु. बु. के. |
|-------|---------|---------|---------|-------------|
| वर्ष | 0 | 1 | 0 | 0 |
| मास | 4 | 2 | 4 | 7 |
| दिन | 27 | 0 | 6 | 0 |
| मिन्ट | 27 | 0 | 6 | 0 |

केतु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. सू. | चं. मं. | रा. गु. | शु. बु. के. |
|-------|---------|---------|---------|-------------|
| मास | 0 | 0 | 0 | 0 |
| दिन | 8 | 24 | 7 | 12 |
| घटे | 13 | 12 | 8 | 6 |
| मिन्ट | 48 | 0 | 24 | 36 |

केतु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. सू. | चं. मं. | रा. गु. | शु. बु. के. |
|-------|---------|---------|---------|-------------|
| मास | 2 | 0 | 1 | 0 |
| दिन | 10 | 21 | 5 | 24 |
| घटे | 0 | 0 | 12 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 |

केतु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. सू. | चं. मं. | रा. गु. | शु. बु. के. |
|-------|---------|---------|---------|-------------|
| मास | 0 | 0 | 0 | 0 |
| दिन | 6 | 10 | 7 | 18 |
| घटे | 7 | 12 | 8 | 21 |
| मिन्ट | 12 | 0 | 24 | 36 |

केतु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. सू. | चं. मं. | रा. गु. | शु. बु. के. |
|-------|---------|---------|---------|-------------|
| मास | 0 | 0 | 1 | 0 |
| दिन | 17 | 12 | 1 | 28 |
| घटे | 12 | 6 | 12 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 |

केतु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. सू. | चं. मं. | रा. गु. | शु. बु. के. |
|-------|---------|---------|---------|-------------|
| मास | 0 | 0 | 0 | 0 |
| दिन | 8 | 22 | 19 | 23 |
| घटे | 13 | 1 | 14 | 6 |
| मिन्ट | 48 | 12 | 24 | 36 |

केतु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. सू. | चं. मं. | रा. गु. | शु. बु. के. |
|-------|---------|---------|---------|-------------|
| मास | 1 | 1 | 1 | 1 |
| दिन | 26 | 20 | 29 | 23 |
| घटे | 16 | 9 | 20 | 13 |
| मिन्ट | 48 | 36 | 24 | 12 |

केतु मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. सू. | चं. मं. | रा. गु. | शु. बु. के. |
|-------|---------|---------|---------|-------------|
| मास | 1 | 1 | 1 | 0 |
| दिन | 14 | 23 | 17 | 19 |
| घटे | 19 | 4 | 14 | 16 |
| मिन्ट | 12 | 48 | 24 | 24 |

केतु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. सू. | चं. मं. | रा. गु. | शु. बु. के. |
|-------|---------|---------|---------|-------------|
| मास | 2 | 1 | 0 | 2 |
| दिन | 3 | 6 | 23 | 6 |
| घटे | 4 | 12 | 6 | 12 |
| मिन्ट | 12 | 36 | 36 | 0 |

केतु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. सू. | चं. मं. | रा. गु. | शु. बु. के. |
|-------|---------|---------|---------|-------------|
| मास | 1 | 0 | 1 | 0 |
| दिन | 20 | 20 | 29 | 17 |
| घटे | 13 | 19 | 12 | 20 |
| मिन्ट | 48 | 0 | 24 | 36 |

शुक्र की अन्तर्दशाएँ (20 वर्ष)

| ग्रह | शु. सू. | चं. मं. | रा. गु. | शु. बु. के. |
|------|---------|---------|---------|-------------|
| वर्ष | 3 | 1 | 1 | 3 |
| मास | 8 | 0 | 6 | 0 |
| दिन | 0 | 0 | 0 | 0 |

शुक्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. सू. | चं. मं. | रा. गु. | शु. बु. के. |
|-------|---------|---------|---------|-------------|
| मास | 6 | 2 | 3 | 2 |
| दिन | 20 | 0 | 10 | 10 |
| घटे | 0 | 0 | 0 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 |

शुक्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. सू. | चं. मं. | रा. गु. | शु. बु. के. |
|-------|---------|---------|---------|-------------|
| मास | 0 | 1 | 0 | 1 |
| दिन | 18 | 0 | 21 | 24 |
| घटे | 0 | 0 | 0 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 |

शुक्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. सू. | चं. मं. | रा. गु. | शु. बु. के. |
|-------|---------|---------|---------|-------------|
| मास | 1 | 1 | 3 | 2 |
| दिन | 20 | 5 | 0 | 20 |
| घटे | 0 | 0 | 0 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 |

शुक्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. सू. | चं. मं. | रा. गु. | शु. बु. के. |
|-------|---------|---------|---------|-------------|
| मास | 0 | 2 | 1 | 2 |
| दिन | 24 | 3 | 26 | 6 |
| घटे | 12 | 0 | 0 | 12 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 |

शुक्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. सू. | चं. मं. | रा. गु. | शु. बु. के. |
|-------|---------|---------|---------|-------------|
| मास | 5 | 4 | 5 | 2 |
| दिन | 12 | 24 | 21 | 3 |
| घटे | 0 | 0 | 0 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 |

शुक्र मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. सू. | चं. मं. | रा. गु. | शु. बु. के. |
|-------|---------|---------|---------|-------------|
| मास | 4 | 5 | 4 | 1 |
| दिन | 8 | 2 | 16 | 26 |
| घटे | 0 | 0 | 0 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 |

शुक्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. सू. | चं. मं. | रा. गु. | शु. बु. के. |
|-------|---------|---------|---------|-------------|
| मास | 6 | 5 | 2 | 6 |
| दिन | 0 | 11 | 6 | 10 |
| घटे | 12 | 12 | 12 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 |

शुक्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. सू. | चं. मं. | रा. गु. | शु. बु. के. |
|-------|---------|---------|---------|-------------|
| मास | 4 | 1 | 5 | 1 |
| दिन | 24 | 29 | 20 | 21 |
| घटे | 12 | 12 | 0 | 0 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 |

शुक्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

| ग्रह | शु. सू. | चं. मं. | रा. गु. | शु. बु. के. |
|-------|---------|---------|---------|-------------|
| मास | 0 | 2 | 0 | 1 |
| दिन | 24 | 10 | 21 | 5 |
| घटे | 12 | 0 | 0 | 12 |
| मिन्ट | 0 | 0 | 0 | 0 |

ज्वालामुखी योग

इस योग का फल अशुभ माना गया है। इस योग में आरम्भ किया हुआ कार्य पूर्णतय सिद्ध नहीं हो पाता अथवा बार-बार विघ्न-बाधाएं होती हैं। इस योग में शुभ कार्य आरम्भ नहीं करने चाहिए। दुष्ट शत्रुओं पर प्रयोग करने के लिए यह मुहूर्त अच्छा समझा जाता है।

जब प्रतिपदा को मूला नक्षत्र, पंचमी को भरणी, अष्टमी को कृतिका या नवमी को रोहिणी अथवा दशमी को आश्लेषा नक्षत्र आता है तो ज्वालामुखी योग बनता है। इस प्रकार ५ नक्षत्रों एवं ५ तिथियों के संयोग से ज्वालामुखी योग बनता है। इस योग के अशुभ फल को प्रकट करने के लिए निम्नलिखित लोकोक्ति प्रचलित है—

जन्मे तो जीव नहीं, बसे तो उजड़े गांव,
नारी पहने चूड़ियाँ, पुरुष विहीनी होय,
बोवें तो काटे नहीं, कूएँ उपजे न नीर॥

यद्यपि यह लोकोक्ति अतिशयक्तपूर्ण हो सकती है परन्तु इसके अशुभ प्रभाव के सम्वन्ध का उल्लेख कई ग्रन्थों में मिलता है। ज्वालामुखी योगानुसार यदि बालक इस योग में पैदा हो तो उसे अरिष्ट योग होता है। यदि इस योग में विवाह किया जाए तो वैधव्य का भय होता है। यदि बीजवपन किया जाए तो फसल अच्छी नहीं होती तथा जल आदि हेतु कूओं खोदा जावे तो जलाशय (कूआँ) शीघ्र सूख जाए—यदि कोई रोग ग्रस्त हो जल्दी ठीक न हो—इत्यादि अशुभ फल घटित होते हैं।

ग्रहों की विंशोत्तरी दशाओं का वर्णन

फलित ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों द्वारा अपना शुभशुभ फल प्रदान करने का समय ज्ञात करने के लिए भारतीय दशा-पद्धति का विशेष महत्त्व है। सभी ग्रह अपनी दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर दशा एवं सूक्ष्म दशाकाल में फल देते हैं। भारतीय आचार्यों ने ग्रहों की अनेक प्रकार की दशाओं एवं अन्तर्दशाओं आदि का वर्णन किया है, जैसे विंशोत्तरी दशा, योगिनी दशा, अष्ट-तरी दशा, काल दशा इत्यादि मुख्य हैं। परन्तु उत्तरी भारत में सर्वाधिक महत्त्व एवं मान्यता महर्षि पाराशर द्वारा प्रतिपादित विंशोत्तरी महादशाऽन्तर दशा पद्धति को दी जाती है। तदनन्तर योगिनी दशा एवं तदुपान्त अष्टोत्तरी दशा की मान्यता प्रदान की जाती है। आचार्य वराहमिहिरानुसार जातक को जिस ग्रह की दशाऽन्तरदशा होती है, उस ग्रहावधि में उस ग्रह की छाया जातक पर रहती है। अग्नि (तेज), पृथ्वी, जल, आकाश और वायु-इन पाँचों में से जो महाभूत जिस ग्रह से सम्बन्धित होता है, वह ग्रह अपनी दशा और अन्तर्दशा में उस महाभूत की कांति को प्राणी के शरीर एवं उसकी चेष्टाओं से प्रकट करता है। जैसे सूर्य एवं मंगल की दशा में जातक रूपवान्, तेजवान् एवं कान्तियुक्त हो जाता है। यदि अशुभ हो, तो जातक में क्रोधाधिक्य, पित्त प्रकोप, नेत्र पीड़ा या रक्त विकार होते हैं। यदि जातक को मधुर-अम्लादि मृदु रसों के प्रति रूचि, संगीत, गायन, कल्पना, काम एवं भोगासक्ति की प्रबलता हो, तो जातक पर चन्द्र एवं शुक्र कृत जल की छाया जायें। जब जातक के शरीर से उत्तम सुगन्धि (बुध नीचादि अशुभ हो, तो दुर्गन्धि) आती हो, तो बुध कृत पृथ्वी की छाया जायें। जब जातक की प्रवृत्ति धर्म-कर्म एवं परोपकार की ओर बढ़े एवं भक्ति संगीत की ओर रूचि हो और वाणी में भी मधुरता एवं गाम्भीर्य हो तो, गुरु कृत आकाश तत्त्व सम्बन्धी छाया जाननी चाहिए। जो स्पर्श में कोमल हो, या वायु सम्बन्धी प्रकोप हो, तो आकाश सम्बन्धी छाया जाननी चाहिए।

छाया शुभाशुभ फलानि निवेदयन्ती लक्ष्या मनुष्यपशु पक्षिपुलक्षणज्ञैः।

तेजो गुणान् बहिरपि प्रतिभासयन्ती, दीपप्रभा स्फटिकरत्न घटस्थितेव ॥ वृहत्संहिता ॥

जातक के जन्म समय चन्द्रमा जिस नक्षत्र में होता है। उस नक्षत्र-चरण के अनुसार ही ग्रह दशा का निर्धारण किया जाता है। किसी व्यक्ति का जन्म जिस नक्षत्र में होगा, उसी नक्षत्र के स्वामी ग्रह से विंशोत्तरी दशा का प्रारम्भ माना जाता है। चन्द्र स्पष्ट तथा नक्षत्रों के भयात्-भभोग (सर्वक्ष) द्वारा जन्म दशा के भोग्य वर्षों को जानने की सरल विधि "ज्योतिष तत्त्व-गणित खण्ड में तथा इसी 'पञ्चांग दिवाकर' में पढ़ सकते हैं।

पाठकों की सुविधा के लिए चन्द्र संचार से ग्रहों की भोग्य दशा वर्षों का विवरण संक्षिप्त रूप से आगामी पृष्ठों पर कर रहे हैं। गणित सहित इसका विस्तृत विवरण ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड) में लिख चुके हैं।

चन्द्र स्पष्ट से नक्षत्रों एवं ग्रहों के भोग्य वर्ष

| क्रम | नक्षत्र | राशि अंश कला | से | रा. अं. क. तक | नक्षत्र स्वामी | दशा वर्ष |
|------|----------------|--------------|----|-----------------|----------------|----------|
| 1. | अश्विनी | 0 - 00 - 00 | से | 0 - 13 - 20 तक | केतु | 7 वर्ष |
| 2. | भरणी | 0 - 13 - 20 | से | 0 - 26 - 40 तक | शुक्र | 20 वर्ष |
| 3. | कृत्तिका | 0 - 26 - 40 | से | 1 - 10 - 00 तक | सूर्य | 6 वर्ष |
| 4. | रोहिणी | 1 - 10 - 00 | से | 1 - 23 - 20 तक | चन्द्र | 10 वर्ष |
| 5. | मृगशिर | 1 - 23 - 20 | से | 2 - 06 - 40 तक | मंगल | 7 वर्ष |
| 6. | आर्द्रा | 2 - 06 - 40 | से | 2 - 20 - 00 तक | राहु | 18 वर्ष |
| 7. | पुनर्वसु | 2 - 20 - 00 | से | 3 - 03 - 20 तक | गुरु | 16 वर्ष |
| 8. | पुष्य | 3 - 03 - 20 | से | 3 - 16 - 40 तक | शनि | 19 वर्ष |
| 9. | आश्लेषा | 3 - 16 - 40 | से | 4 - 00 - 00 तक | बुध | 17 वर्ष |
| 10. | मघा | 4 - 00 - 00 | से | 4 - 13 - 20 तक | केतु | 7 वर्ष |
| 11. | पूर्वाफाल्गुनी | 4 - 13 - 20 | से | 4 - 26 - 40 तक | शुक्र | 20 वर्ष |
| 12. | उत्तराफाल्गुनी | 4 - 26 - 40 | से | 5 - 10 - 20 तक | सूर्य | 20 वर्ष |
| 13. | हस्त | 5 - 10 - 00 | से | 5 - 23 - 20 तक | चन्द्र | 10 वर्ष |
| 14. | चित्रा | 5 - 23 - 20 | से | 6 - 06 - 40 तक | मंगल | 7 वर्ष |
| 15. | स्वाती | 6 - 06 - 40 | से | 6 - 20 - 00 तक | राहु | 18 वर्ष |
| 16. | विशाखा | 6 - 20 - 00 | से | 7 - 03 - 20 तक | गुरु | 16 वर्ष |
| 17. | अनुराधा | 7 - 03 - 20 | से | 7 - 16 - 40 तक | शनि | 19 वर्ष |
| 18. | ज्येष्ठा | 7 - 16 - 40 | से | 8 - 00 - 00 तक | बुध | 17 वर्ष |
| 19. | मूला | 8 - 00 - 00 | से | 8 - 13 - 20 तक | केतु | 7 वर्ष |
| 20. | पूर्वाषाढा | 8 - 13 - 20 | से | 8 - 26 - 40 तक | शुक्र | 20 वर्ष |
| 21. | उत्तराषाढा | 8 - 26 - 40 | से | 9 - 10 - 00 तक | सूर्य | 6 वर्ष |
| 22. | श्रवण | 9 - 10 - 00 | से | 9 - 23 - 20 तक | चन्द्र | 10 वर्ष |
| 23. | धनिष्ठा | 9 - 23 - 20 | से | 10 - 06 - 40 तक | मंगल | 7 वर्ष |
| 24. | शतभिषा | 10 - 06 - 40 | से | 10 - 20 - 00 तक | राहु | 18 वर्ष |
| 25. | पूर्वाभाद्रपद | 10 - 20 - 00 | से | 11 - 03 - 20 तक | गुरु | 16 वर्ष |
| 26. | उत्तराभाद्रपद | 11 - 03 - 20 | से | 11 - 16 - 40 तक | शनि | 19 वर्ष |
| 27. | रेवती | 11 - 16 - 40 | से | 0 - 00 - 00 तक | बुध | 17 वर्ष |

प्रत्येक ग्रह के अन्तर्गत तीन-तीन नक्षत्रों का समावेश होता है। जो ग्रह जिन-जिन नक्षत्रों का स्वामी होता है। तदनुसार ही नक्षत्र के दशा वर्षों का निर्धारण होता है। जैसे—कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी

एवं उत्तराषाढा नक्षत्रों का स्वामी सूर्य ग्रह होने से, कृतिका आदि प्रत्येक नक्षत्र की दशा का मान सूर्य प्रदत्त छः (6) वर्ष होंगे। इसी प्रकार अन्य नक्षत्रों की दशा के भोग्य वर्ष मान होंगे। आगे लिखी तालिका से स्पष्ट होगा—

| जन्म नक्षत्र (Birth Nakshatra) | (क्रम) | नक्षत्र स्वामी ग्रह (Lord of Nakshatra) | भोग्य दशा वर्ष Duration of Period) |
|-----------------------------------|--------|---|--|
| कृतिका, उ. फाल्गुनी, उ. पा. | 1 | सूर्य | 6 वर्ष |
| रोहिणी, हस्त, श्रवण | 2. | चन्द्र | 10 वर्ष |
| मृगशिर, चित्रा, धनिष्ठा | 3. | मंगल | 7 वर्ष |
| आर्द्रा, स्वाती, शतभिषा | 4. | राहु | 18 वर्ष |
| पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद | 5. | गुरु | 16 वर्ष |
| पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्रपद | 6. | शनि | 19 वर्ष |
| अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती | 7. | बुध | 17 वर्ष |
| मघा, मूला, अश्विनी | 8. | केतु | 7 वर्ष |
| पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, भरणी | 9. | शुक्र | 20 वर्ष |

विंशोत्तरी दशा पद्धति में ग्रहों की दशा का क्रम उपरोक्त तालिका में दर्शाए गए अनुक्रम के अनुसार ही किया जाता है, यथा—सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु, गुरु, शनि, बुध, केतु, शुक्र। इसको कण्ठस्थ करने के लिए (आ च भौ रा जी शबु के शु) का सूत्र याद कर सकते हैं, जैसे आ से तात्पर्य सूर्य, च से चन्द्र, भौ को भौम (मंगल), रा को राहु, जी को जीव (गुरु) समझें। इत्यादि जन्म समय किसी ग्रह की भुक्त-भोग्य दशा ज्ञात करने के लिए चन्द्र स्पष्ट पद्धति एवं नक्षत्र के भयात्-भभोग की प्रक्रिया ग्रहण की जाती है। दोनों विधियों द्वारा किसी ग्रह की भोग्य दशा लगभग समान आती है। दोनों प्रकार की प्रणालियों का सरल विवरण उदाहरण सहित हमारी पंचांग दिवाकर या ज्योतिष तत्व (गणित खण्ड) में देख सकते हैं।

~~~~~ ग्रहों की अन्तर्दशा जानने की विधि ~~~~~

ग्रहों की अन्तर्दशा के भोग्य वर्ष, मास आदि जानने के लिए महादशा ग्रह के वर्षों को अन्तर्दशा ग्रह के वर्षों से गुणा करके जो संख्या मिले, उसे 120 से भाग देने पर अन्तर्दशा के भोग्य वर्ष, फिर शेष को 12 से गुणा करके पुनः 120 से भाग देने पर तथा शेष 30 से गुणा करके पुनः 120 से भाग देने पर हमें अन्तर्दशा के भोग्य दिन आदि प्राप्त होंगे। उदाहरणस्वरूप—यदि हमें शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के भोग्य वर्षादि जानने हैं, तो शनि की महादशा के 19 वर्ष की शुक्र दशा के 20 वर्ष से गुणा करने पर हमें 380 की संख्या मिली, इसको 120 से भाग देने पर 3 वर्ष तथा शेष 20 की 12 से गुणा करके प्राप्त संख्या 240 को पुनः 120 से भाग देने पर हमें 2 मास प्राप्त हुए। इस प्रकार शनि महादशा के मध्य शुक्रान्तर भोग्यदशा 3 वर्ष, 2 महीने होगी। इसी प्रकार अन्य सभी ग्रहों

की अन्तर्दशाएं जान सकते हैं। सूर्यादि सभी ग्रहों को अन्तर्दशाओं के भोग्य वर्ष, मासादि के चक्र आप इसी में तथा पंचांगदिवाकर में अवलोकन कर सकते हैं।

ग्रहों की विंशोत्तरी महादशा के फलादेश के सम्बन्ध में उपरोक्त 'ज्योतिष तत्व' (गणित खण्ड) पृष्ठ 210 से पृष्ठ 213 तक का अध्ययन कर सकते हैं। सम्पादक

दशाऽन्तर्दशा के फलादेश सम्बन्धी विशेष नियम

- (1) जो ग्रह उच्च राशिस्थ, मित्र राशि या वर्गोत्तम में हो या स्वराशि का होकर केन्द्र या त्रिकोण (१, ४, ५, ७, ९, १०) में स्थित हो, वह अपनी दशा या अन्तर्दशा काल में कार्यों में लाभ व उन्नति, आरोग्य सुख, अभीष्ट कार्यों में सफलता, भाग्योन्नति आदि सुख प्रदान करवाता है।
- (2) जो ग्रह नीच राशि, शत्रु राशि, वक्रो ग्रह एवं अस्तांगत हो, उसकी दशाऽन्तर्दशा में वनते कामों में अड़चनें, धन हानि, रोग एवं शत्रु भय, अपव्यय आदि अशुभ फल होते हैं। इसी भान्ति वक्रो ग्रह की दशा में स्थान परिवर्तन, धन हानि एवं सुख में कमी होती है।
- (3) पाप ग्रह की महादशा में अशुभ भावस्थ पाप ग्रह की अन्तर्दशा में स्वास्थ्य हानि, शत्रु भय, धन का नुकसान, बन्धुओं से वैर, कलह-क्रेश, अड़चनें, मानसिक व शारीरिक कष्ट होते हैं।
- (4) जिस ग्रह की महादशा हो, उससे छटे या आठवें या 12वें स्थान में स्थित ग्रहों की अन्तर्दशा हो, तो जातक को धन हानि, कार्य-व्यवसाय में बाधाएं, अत्यधिक संघर्ष एवं धन का खर्च, स्थानान्तरण एवं मानसिक तनाव, कलह व शरीर कष्ट होते हैं।
- (5) शुभ ग्रह की महादशा के मध्य शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो, तो उसका फल उत्तम होगा। उसमें धन लाभ, आरोग्य सुख, अभिलषित कार्यों में सफलता, विद्या लाभ एवं स्त्री (पति) सुख व संतान आदि सुख प्राप्त होते हैं। महादशा स्वामी एवं अन्तर्दशा स्वामी दोनों बलान्वित हों, तो और भी अच्छा है।
- (6) केन्द्र भावों को विष्णु स्थान और त्रिकोण भावों को लक्ष्मी स्थान भी कहा जाता है। केन्द्र त्रिकोण के स्वामी ग्रह यदि केन्द्र-त्रिकोण (1-4-5-6-9-10) भावों में ही आ जावें, तो विशेष शुभ फल देते हैं, इनकी दशाऽन्तर्दशा में विपुल धन, लाभ, धर्म-परायणता, विद्या, भूमि-जायदाद, विद्या एवं सवारी आदि सुखों की प्राप्ति तथा स्त्री-संतान सम्बन्धी पारिवारिक सुखों की उपलब्धि होती है।
- (7) दुःस्थानों (6, 8 एवं 12वें) स्थानों में स्थित ग्रहों अथवा उनके स्वामी ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा में धन हानि, रोग, शत्रु, धन का अत्यधिक खर्च, कठिनाइयाँ, शरीर कष्ट, मानसिक तनाव एवं संघर्ष होते हैं।
- (8) जो ग्रह शुभ एवं योगकारक ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तथा अस्त, वक्रो एवं सन्धिगत न हो, तो उस ग्रह की दशाऽन्तर्दशा में धन लाभ, प्रिय बन्धुओं का सुख, भूमि, वाहन आदि का लाभ, विद्या एवं धर्म में रुचि तथा कार्यों में सफलता होती है।
- (9) महादशा ग्रह का स्वामी एवं अन्तर्दशा ग्रह का स्वामी परस्पर मित्र क्षेत्री हों तथा कुण्डली में उनकी पारस्परिक स्थिति 6-8 या 12वीं न हो, तो उनकी दशाऽन्तर्दशा में ग्रह अपने भावेशत्व के अनुसार भूमि, जायदाद, धन, परिवार आदि का सुख प्रदान करेगा।

4. चतुर्थेश दशा में भूमि, मकान, वाहनादि सुखों की प्राप्ति, माता का सुख होता है। यदि अशुभ ग्रह युक्त हो, तो माता या पिता दोनों में से किसी एक को शरीर कष्ट का भय।

5. पंचमेश की दशा में विद्या की प्राप्ति, धन लाभ-संतान-सुख एवं सोची हुई योजनाओं में सफलता प्राप्त होती है। यदि अशुभ या पाप ग्रह युक्त हों, तो विघ्न एवं अड़चनों के बाद सफलता प्राप्त होती है।

6. षष्ठेश की दशा में रोग व शत्रुओं का भय, मातुल पक्ष को कष्ट, व्यवसाय में विघ्न-बाधाएं, शरीर कष्ट तथा खर्च अधिक होते हैं।

7. सप्तमेश पाप ग्रह हो, तो उसकी दशा में शरीर कष्ट, धन हानि, स्त्री को कष्ट, तनाव एवं व्यवसाय में बाधाएँ आती हैं। यदि शुभ ग्रह हों, तो मिश्रित फल होते हैं।

8. अष्टमेश (पाप ग्रह हो तो) उसकी दशा में परिवारिक बन्धुओं सम्बन्धी परेशानी, आर्थिक उलझनें, बनते कामों में विघ्न, एवं मृत्युतुल्य कष्ट होते हैं। यदि शुभ ग्रह हों, तो कष्टों में कमी होती है।

9. नवमेश की दशा में परोपकार एवं धार्मिक भावना में वृद्धि, तीर्थ यात्रा, विद्या में उन्नति, भाग्यवश लाभ व उन्नति, कार्य-व्यवसाय में सफलता और श्रेष्ठ लोगों के साथ सम्बन्ध होते हैं।

10. दशमेश की दशा में कार्य-व्यवसाय में लाभ व उन्नति, सरकारी क्षेत्रों से लाभ, परन्तु माता के स्वास्थ्य के लिए अशुभ होगी।

11. एकादशेश की दशा में आय के स्रोतों में वृद्धि, तथा गत किए गए प्रयासों में सफलता होती है। विद्या, संतान के लिए शुभ है। यदि एकादशेश पाप ग्रह युक्त व दृष्ट हो, तो स्वयं जातक के स्वास्थ्य के लिए अशुभ होती है।

12. द्वादशेश की दशा में गुप्त चिन्ताएँ, खर्च की अधिकता, वृथा भागदौड़ एवं धन हानि तथा बनते कामों में अड़चनें होती हैं।

दशाफल में प्रत्येक लग्नगत ग्रहों का शुभाशुभ

आगे मेधादि द्वारा लगनों के अन्तर्गत ग्रह दशाओं के शुभाशुभत्व का विवरण दे रहे हैं। किसी लग्न में ग्रहों के शुभत्व एवं अशुभत्व का निर्देश सदा के लिए स्थायी नहीं समझना चाहिए। कुछ स्थितियों में किसी लग्न विशेष में शुभफल प्रदक लिखा ग्रह भी अपना दशाऽन्तर्दशा में अशुभ फल देने लगता है। उदाहरण स्वरूप मेष लग्न में गुरु को (भाग्येश होने के कारण) शुभ फल देने वाला लिखा गया है। परन्तु जन्म कुण्डली में यदि गुरु नीच (मकर) राशि का होकर अस्त एवं वक्र होकर पड़ा हो अथवा शत्रु राशि (२, ६) का होकर राहु, शनि आदि पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो गुरु अपना दशाऽन्तर्दशा में जातक को उच्च विद्या एवं भाग्योन्नति में विघ्न-बाधाएँ, बड़े आत्मीय लोगों के साथ विरोध, धन का अपव्यय एवं रोग आदि अशुभ फल भी होते हैं। इसी प्रकार अशुभ ग्रह भी कई बार स्थान, स्थिति एवं शुभ ग्रहों की दृष्टि के कारण शुभ एवं मिश्रित फल देने लगते हैं। आगे दशाफल में प्रत्येक लग्न में ग्रहों का शुभ-अशुभ विवरण देते हैं—

(10) जिस ग्रह की महादशा चल रही हो, यदि अन्तर्दशा स्वामी ग्रह उसका शत्रु हो, या शत्रु राशि में स्थित हो, या छठे/आठवें में हो, या लनेश का शत्रु हो, तो ऐसी अन्तर्दशा में शत्रु भय, रोग भय, धन हानि, स्थान परिवर्तन, भाई-बन्धुओं से वैर-विरोध तथा बनते कार्यों में अड़चनें पड़ती हैं।

(11) शुभ ग्रह की महादशा में पाप ग्रह की अन्तर्दशा हो तो, उस अन्तर्दशा का पूर्वार्द्धभाग सुखदायक और उत्तरार्द्ध भाग कष्टकारी होता है।

(12) शनि की दशा में चन्द्र का अन्तर अथवा चन्द्रमा की दशा में शनि का अन्तर काल प्रायः आर्थिक दृष्टि से कष्टकारी होता है।

इसके अतिरिक्त यदि चन्द्रमा शनि की राशि (मकर या कुम्भ) में हो, तो उसकी महादशा के मध्य यदि सप्तमेश की अन्तर्दशा हो, तो भी कष्टकारी होती है।

(13) शनि में मंगल अथवा मंगल में शनि की अन्तर्दशा संघर्षपूर्ण, रोग एवं शरीर कष्ट तथा आर्थिक दृष्टि से परेशानीकारक रहती है।

(14) शनि में सूर्य की दशा और सूर्य में शनि की अन्तर्दशा प्रायः जातक के स्वास्थ्य की दृष्टि से तथा उसके माता-पिता एवं अग्रजों के लिए कष्टकारी होती है।

(15) राहु और केतु की दशाऽन्तर्दशा प्रायः अशुभफली होती है। यदि राहु ३, ६ या ११वें भाग में हों, तो अच्छा फल भी प्रकट होता है।

(16) जो ग्रह उच्च राशि से निकलकर नीच राशि की ओर जा रहा हो, उसकी दशा को अवरोहिणी दशा कहा जाता है। यह दशा अशुभ एवं कष्टकारी होती है। परन्तु यदि अवरोही ग्रह उच्च, मित्र या अपने नवांश में हो, तो वह दशा मिश्रित फल देने वाली होती है।

(17) जो ग्रह नीच से उच्च राशि की ओर अग्रसर हो, उसकी दशा को आरोहिणी दशा कहते हैं। इस अवधि में जातक को शुभ फल प्राप्त होते हैं। यदि ग्रह नीच या शत्रु राशि के नवांश में हो, तो शुभ फलों में कमी होती है।

(18) यदि कोई ग्रह अपनी उच्च राशि, मित्र राशि या स्वराशिगत हों, परन्तु वही ग्रह नीच या शत्रु नवांश में हो तो उस ग्रह की दशा पूर्वार्ध भाग में शुभ तथा उत्तरार्ध में मिश्रित फल देने वाली होगी।

(19) ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा के फल सम्बन्धी अन्तिम निर्णय करते समय उस समय के गोचर ग्रहों के प्रभाव पर भी अवश्य विचार कर लेना चाहिए।

भावेश अनुसार विंशोत्तरी दशा का फल

1. लनेश ग्रह की दशा में उद्यम में वृद्धि, शारीरिक सुख, धन लाभ, भूमि, वाहन आदि सुख होते हैं, परन्तु धन का अपव्यय एवं परिवार सम्बन्धी परेशानियाँ भी देखी गई हैं।

2. द्वितीयेश की दशा में धन-आय के साधन बढ़ते हैं परन्तु यदि धनेश पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो वृथा खर्च एवं स्वास्थ्य के लिए अशुभ है।

3. तृतीयेश की दशा में संघर्ष एवं भ्रमण अधिक रहेगा। भाई-बन्धु एवं आत्मीय जनों के बारे में परेशानियाँ व खर्च भी अधिक होते हैं।

दशा फल में प्रत्येक लग्न में ग्रहों का शुभ-अशुभ विवरण

| लग्न राशि | शुभ फल | अशुभ फल | मिश्रित फल |
|-----------|------------------------|--------------------|--------------------------|
| मेघ | सूर्य, मंगल, गुरु | बुध, शुक्र | चन्द्र, शनि, राहु, केतु |
| पुष्य | सूर्य, बुध, शुक्र, शनि | मंगल, केतु | चन्द्र, राहु, गुरु |
| मिथुन | चंद्र, बुध, शुक्र | मंगल, केतु | सूर्य, गुरु, शनि, राहु |
| कर्क | चन्द्र, मंगल | बुध, शनि, राहु | सूर्य, केतु, गुरु, शुक्र |
| सिंह | सूर्य, मंगल | शनि, शुक्र, राहु | चन्द्र, बुध, गुरु, केतु |
| कन्या | बुध, शुक्र | मंगल, सूर्य, केतु | चन्द्र, शनि, गुरु, राहु |
| तुला | बुध, शुक्र, शनि | सूर्य, राहु, गुरु | चंद्र, मंगल, केतु |
| वृश्चिक | सूर्य, चन्द्र, गुरु | बुध, शनि, राहु | मंगल, शुक्र, केतु |
| धनु | सूर्य, मंगल, गुरु | शुक्र, शनि, राहु | बुध, चन्द्र, केतु |
| मकर | बुध, शुक्र, शनि | चन्द्र, गुरु | सूर्य, मंगल, राहु, केतु |
| कुम्भ | मंगल, शुक्र, शनि | चन्द्र, केतु | सूर्य, बुध, गुरु, राहु |
| मीन | चन्द्र, मंगल, गुरु | सूर्य, शुक्र, राहु | बुध, शनि, केतु |

सूर्य की महादशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा का फल

सूर्य में सूर्य का अन्तर-कुण्डली में उच्च, स्वराशि या मित्र राशि का होकर, १, ३, ६, ९, १० या ११ वें भाव में हो, तो जातक के उद्यम एवं पराक्रम में वृद्धि, स्वास्थ्य का लाभ, पिता एवं उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से लाभ, मान-सम्मान एवं पदोन्नति हो, व्यवसाय में धन लाभ के अवसर, विदेश गमन तथा सोची हुई योजनाओं में आंशिक सफलता प्राप्त होती है। यदि सूर्य शत्रु, नीचादि राशिगत होकर २, ७, ८ या १२ वें भाव में हो तो उपरोक्त सुखों में कमी, भाई-बन्धुओं से कलह-क्लेश एवं असहयोग, स्वास्थ्य हानि, आर्थिक एवं परिवारिक परेशानियाँ, नेत्र विकार तथा क्रोध व उत्तेजना अधिक रहे। यदि सूर्य शुभ ग्रह युक्त या दृष्ट हो, तो मिश्रित फल रहेंगे। इन दिनों सूर्य उपासन एवं सूर्य सम्बन्धी दान करना शुभ होगा।

सूर्य में चन्द्रान्तर—कुण्डली में चन्द्र उच्च, स्वराशि, मित्र राशि होकर केन्द्र-त्रिकोणादि शुभ भावों में हो, तो जातक को इस दशा में मन को प्रसन्नता देने वाले समाचार प्राप्त होंगे। धन प्राप्ति के साधनों में वृद्धि, माता एवं स्त्री से सुख, सन्तान सुख तथा कुछ महत्वपूर्ण लोगों के साथ मैत्री सम्बन्ध बनेंगे। इस अवधि में सुन्दर वस्त्र, स्त्री आभूषण, वाहन, धन सम्पत्ति आदि सुखों की प्राप्ति तथा परिवारिक जनों का सहयोग भी मिलेगा। विदेश यात्रा एवं धर्म-कर्म में रुचि बढ़ती है। यदि चन्द्र नीच या शत्रुराशिगत होकर अशुभ भावस्थ होकर क्षीण बली, क्रूर ग्रह युक्त अथवा सूर्य से षडाष्टक स्थिति में हो, तो जातक को शारीरिक एवं मानसिक परेशानी, असुखद यात्रा, गृह कलह, परिवारिक चिन्ता, तनाव, आय कमी तथा खर्च अधिक हों। माता या स्त्री सम्बन्धी कष्ट, नेत्र विकार, सिर पीड़ा, वात, कफ आदि सम्बन्धी रोगों का भय हो।

सूर्य में मंगल का अन्तर-मंगल स्वराशि, उच्चादि स्थिति में हो तो जातक के पराक्रम व उत्साह में वृद्धि, भूमि लाभ, मकान, पुत्र-सन्तति, गृह में मंगल एवं वाहनादि सुखों में वृद्धि होती है। इस अवधि में भाई-बन्धुओं एवं मित्रों का सहयोग, शत्रुओं पर विजय, स्वास्थ्य में लाभ, सकाराक्षेत्रों से लाभ एवं सफलता मिलती है। सन्तान सम्बन्धी प्रसन्नता एवं पुरुषार्थ में वृद्धि होती है। यदि सूर्य से मंगल छटे, आठवें या १२ वें स्थान में हो, अथवा नीच, वक्र या शत्रु राशिगत होकर शनि आदि अशुभ ग्रह से युक्त हो, तो जातक का भाई-बन्धुओं से विरोध, धन हानि, रक्त विकार एवं चोटोदि का भय, सन्तान कष्ट, किसी प्रिय-वन्धु से तकरार एवं परिवार एवं धन सम्बन्धी चिन्ताएं होती हैं।

सूर्य में राहु का अन्तर-सूर्य व राहु के मध्य स्वाभाविक शत्रुता होती है। परन्तु यदि कुण्डली में सूर्य व राहु के मध्य ३, ६, १०, ११ वें सम्बन्ध बनता हो, तो जातक को विघ्नों एवं संघर्ष के बाद धन लाभ, भाग्योन्नति हो, जातक का मन सांसारिक विषयों की ओर अधिक आकृष्ट होता है। जातक को व्यवसाय में दौड़पूप एवं कठिनाईयों के बाद धनार्जन होता है। यदि सूर्य से राहु (कुण्डली में) १, ४, ५, ६, ७, ८ या १२ वें स्थान पर हो, तो धन-हानि, स्त्री-पुत्र या अन्य आत्मीय जनों को कष्ट, नेत्र विकार, सिर पीड़ा, मन्दगति, वायु प्रकोप आदि अशुभ फल होते हैं।

सूर्य में गुरु का अन्तर-गुरु उच्च या स्वराशि का होकर केन्द्र या त्रिकोण (१, ४, ५, ७, ९, १०) में हो, तो जातक को उच्च विद्या में सफलता, भाई-बन्धुओं का सुख एवं सहयोग प्राप्त हो, उच्च पद-प्रतिष्ठा, विवाह, संतान एवं वाहन आदि सुखों की प्राप्ति, धन सम्पदा, एवं पुत्र सुख के योग हों, स्त्री की कुण्डली में पति सुख प्राप्ति के योग। गुरु की भुक्ति में धर्म-कर्म एवं परोपकार में प्रवृत्ति तथा ज्योतिष एवं पौराणिक साहित्य में भी रुचि बढ़ती है तथा गुणों में वृद्धि, श्रेष्ठ लोगों से सम्पर्क होते हैं। सूर्य से गुरु ६, ८, १२ वें भाव में हो, नीच राशिस्थ हो या पाप ग्रहों से युक्त हो तो जातक को शरीर कष्ट, मानसिक तनाव, धन हानि, राज भय, विद्या में रुकावटें, उदर विकार, धन का अपव्यय एवं बनते कामों में अड़चन, परिवारिक कलह, स्त्री (पति) एवं सन्तान सम्बन्धी चिन्ता होती है।

सूर्य मध्ये शनि का अन्तर-कुण्डली में शनि उच्च या स्वराशि का होकर केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो इस दशा अवधि में शत्रु नाश, व्यवसाय में धन लाभ विवाह एवं सन्तान सुख तथा क्रय-विक्रय में वृद्धि तथा आय के स्रोतों में गुप्त युक्तियों द्वारा बढ़ोत्तरी होती है। महादशा स्वामी सूर्य से शनि यदि ६, ८ या १२ वें स्थान पर हो, नीच या पापग्रह युक्त हो, तो जातक को गुप्त शत्रु भय, संकट, बन्धु वियोग, पिता व अग्रजों पर कष्ट, धन हानि, पाप कर्मों में रुचि, बनते कामों में बाधाएं, उच्च विद्या में बाधाएं, शरीर कष्ट, कफ, वायु प्रकोप, दांतों व कानों में पीड़ा एवं मानसिक तनाव बढ़ जाते हैं।

सूर्य मध्ये बुधान्तर-कुण्डली में बुध उच्च राशि या स्वराशि का होकर केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो बुध की अन्तर्दशा में विद्या में सफलता एवं उन्नति, व्यवसाय में धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे, विवाह एवं सन्तान सुख, आय के स्रोतों में वृद्धि, ज्योतिष, गणित, कम्प्यूटर, तंत्र आदि बौद्धिक कार्यों में रुचि बढ़े।

बुध ६, ८, १२ वें भाव अस्त, वक्रादि स्थिति में हो तो जातक को शरीर कष्ट, व्यवसाय एवं मन में अस्थिरता, सिर पीड़ा, तनाव, वात, पित्त, कफ एवं चर्म रोगों का भय होता है। शेष पृष्ठ १९९ पर देखें।

योगिनी दशाओं का फल

भारतीय फलित ज्योतिष में अनेक प्रकार की दशाओं और उनके फलों का वर्णन मिलता है। विशोत्तरी दशा पद्धति के पश्चात् उत्तर-पश्चिमी भारत में योगिनी दशा का प्रणयन अवश्य किया जाता है। पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश एवं जम्मू कश्मीर इत्यादि प्रदेशों में योगिनी दशाओं का विशेष प्रचलन है।

योगिनी दशा के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी हम अपने ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड) में उदाहरण सहित विस्तारपूर्वक लिख चुके हैं। पाठकों की सुविधा के लिए संक्षेप में पुनः जानकारी देते हैं।

योगिनी दशा में मंगल आदि दशाओं का कुल मान 36 वर्ष का होता है। 36 वर्ष के पश्चात् उनकी पुनः आवृत्ति होती है। इन आठ दशाओं के क्रमशः ये नाम हैं—

1. मंगला, 2. पिंगला, 3. धान्या, 4. भ्रामरी, 5. भद्रिका, 6. उत्का, 7. सिद्धा, और 8. संकटा। इनकी क्रम संख्या अनुसार ही इनकी वर्ष संख्या निर्धारित की गई है, जिनका कुल जोड़ 36 वर्ष आता है। $1 + 2 + 3 + 4 + 5 + 6 + 7 + 8 =$ कुल 36 वर्ष। मंगला, पिंगला आदि दशाएं अपना नामानुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करती हैं।

योगिनी दशा जानने की विधि—विशोत्तरी दशा की भांति ही योगिनी दशा का आधार 27 नक्षत्र हैं। यथा-अश्विनी नक्षत्र से प्रारम्भ करके अपने जन्म नक्षत्र तक की संख्या में 3 जोड़ करके, कुल जमा को 8 द्वारा भाग देने से यदि 1 शेष बचे तो मंगला, 2 शेष बचें तो पिंगला, 3 बचें तो धान्या इत्यादि क्रमानुसार दशा जानें, यदि शेष शून्य (0) बचे तो आठवीं अर्थात् संकटा दशा जानें।

प्रत्येक दशा का स्वामी ग्रह भी अलग-अलग ग्रह होता है। किस नक्षत्र के अन्तर्गत मंगला, पिंगला, आदि कौन सी दशा आती है तथा उस दशा का स्वामी कौन सा ग्रह है। यह सब आगामी तालिका (चक्र) से जान सकते हैं—

जन्म नक्षत्रानुसार योगिनी दशा चक्र

| दशा नाम | मंगला | पिंगला | धान्या | भ्रामरी | भद्रिका | उत्का | सिद्धा | संकटा |
|---------------|----------------------|----------------------|---------------------|-----------------------------|------------------------|----------------------------|-------------------|----------------|
| दशा वर्ष क्रम | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| दशा स्वामी | चंद्र | सूर्य | गुरु | मंगल | बुध | शनि | शुक्र | रा. के |
| जन्म नक्षत्र | आर्द्रा चित्रा श्रवण | पूर्व स्वाती धनिष्ठा | पुष्य विशाखा शतीभषा | अश्लेषा अनु. पू. भा. अश्वि. | मघा ज्येष्ठा उभा. भरणी | पूर्वा मूला रेवती कृत्तिका | उषा. पूषा. रोहिणी | हस्त उषा. मृग. |

जन्म नक्षत्र से योगिनी दशा का भोग्य काल जानना—

विशोत्तरी दशा पद्धति के समान ही योगिनी दशा में जन्म कालीन नक्षत्र का भयात (नक्षत्र का बीता हुआ काल) तथा भोग (कुल मान)—दोनों को पलात्मक में बना लें। फिर पलात्मक भयात को योगिनी की जन्म दशा वर्षों से गुणा करके, प्राप्त संख्या को पलात्मक भोग के द्वारा भाग देने से योगिनी दशा के भुक्त वर्ष, मास आदि निकल आएंगे। इस प्राप्त वर्ष, मासदि जो जन्म दशा के कुल वर्षों में से घटा देने से हमें जन्म कालीन भोग्य दशा के वर्ष, मास आदि प्राप्त हो जाएंगे।

उदाहरण—मान लो, 20 अक्टूबर, सन् 2000 ई., शुक्रवार की अर्द्धरात्रि 1 बजकर 30 मिनट (ईष्ट ४९/१३) पर जन्म किसी बालक की योगिनी दशा निकालनी है। जन्म समयानुसार पुष्य नक्षत्र का भयात ३० घड़ी १० पल तथा भोग ६६ घड़ी ४५ पल होंगे। ऊपर लिखी तालिका अनुसार धान्या दशा प्रारंभ होगी। अब पलात्मक भयात को दशा वर्ष 3 से गुणा करने पर 5430 पल प्राप्त हुए। इसको पुष्य नक्षत्र के भोग 4005 से भाग देने पर हमें भुक्त दशा 1 वर्ष 4 मास, 8 दिन प्राप्त हुए।

इसको धान्या दशा के कुल मान 3 वर्ष में से घटा देने पर हमें भोग्य धान्या दशा के 1 वर्ष 07 मास तथा 22 दिन प्राप्त हुए। इसको जन्म तारीख, मास, वर्ष आदि में जमा करने पर धान्य दशा 12 जून, 2002 तक समाप्त होगी। इसके आगे क्रमानुसार भ्रामरी (4 वर्ष), भद्रिका (5 वर्ष) इत्यादि जमा करते जाने से आगामी वर्षों का भोग्य दशाकाल प्राप्त हो जाएगा।

योगिनी दशा में अन्तर्दशा निकालने की विधि—अन्तर्दशा सम्बन्धी चक्र ज्योतिष तत्त्व गणित-खण्ड में उदाहरण सहित पढ़ सकते हैं।

(1) मंगला दशा (1 वर्ष)—(जानादकरी दशा भवति सा ज्ञेया सदा मंगला)—मंगला दशा में मंगल कार्यों का उदय होता है। विद्या में सफलता, जातक की प्रवृत्ति धार्मिक कार्यों, ब्राह्मणों एवं ईश्वर भक्ति एवं परोपकार के कार्यों में बढ़ती है। स्त्री, सन्तान एवं सवारी आदि सुखों की प्राप्ति तथा भाई-बन्धुओं का सहयोग प्राप्त होता है। गृह में किसी मंगल कार्य का उत्सव होने की भी सम्भावना होती है। जातक की प्रवृत्ति सत्कार्यों की ओर अधिक रहती है।

(2) पिंगला दशा (2 वर्ष)—इस दशा में शारीरिक एवं मानसिक कष्ट, घरेलू कलह-क्लेश, धन हानि, बनते कामों में विघ्न-बाधाएं, कार्यों में विफलता, नीच लोगों से कुसंगति, व्याकुलता, गुप्त चिन्ता, अस्वस्थता आदि अशुभ फल होते हैं। पिंगला दशा प्रारम्भ में कुछ सुखकारक परन्तु उत्तरार्द्ध में कष्टकारी मानी जाती है। जातक का अधिकांश समय सोच-विचार में व्यतीत होता है। मित्र भी शत्रुओं जैसा व्यवहार करते हैं। आय कम खर्च अधिक होते हैं।

(3) धान्या दशा फल (3 वर्ष)—इस दशा में जातक को धन-धान्य एवं सुख के साधनों में वृद्धि होती है। उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध होते हैं। स्त्री एवं सन्तान की ओर से खुशी प्राप्त होती है। विद्या लाभ, व्यवसाय में लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होते हैं। जातक व धन तीर्थ

यात्रा, धर्म एवं परोपकारी कार्यों में भी व्यय होता है। सरकारी क्षेत्रों से भी सम्मान एवं लाभ के अवसर प्राप्त होते हैं।

(4) धामरी दशा (4 वर्ष) — स्त्री, संतान अथवा परिवार की तरफ से परेशानी, कलह-कलेश का भय, अधिकांश समय भ्रमण (धूमने फिरने) में व्यतीत हो, कई प्रकार के कार्यों में व्यस्तता रहे, परन्तु स्थिरता न हो, आय कम तथा खर्च अधिक रहे, स्वास्थ्य भी ठीक न रहे, वित्त में व्याकुलता रहे, शत्रु भय, शरीर कष्ट तथा किसी ऋण लेने की भी सम्भावना हो सकती है। इस दशा काल में दौड़धूप व खर्च अधिक होते हैं।

(5) भद्रिका दशा (5 वर्ष) — इस दशा काल में जातक के पुण्यों का उदय और धर्म-कर्म की ओर प्रवृत्ति बढ़ती है। साथ ही धन-धान्य की वृद्धि तथा जातक के गुणों का प्रकाश बढ़ता है। उच्च विद्या में सफलता, व्यवसाय में लाभ व उन्नति, गृह में कोई मंगल कार्य हो, विप्रादि श्रेष्ठ लोगों से सम्पर्क, सुन्दर एवं सुशील स्त्री का सुख, वाहन एवं भूमि आदि सुखों की प्राप्ति होती है। कामुक एवं विलास आदि कार्यों पर खर्च अधिक होगा। दशा के अन्तिम भाग में व्यवसाय के क्षेत्र में संघर्ष व कठिनाइयों का सामना होता है।

(6) उल्का दशा (6 वर्ष) — इस दशा में जातक का निकटस्थ सम्बन्धियों एवं मित्रों से मतभेद एवं विरोध रहे, कोई बुरा काम बिगड़े, अत्यधिक संघर्ष करने पर भी आय कम व खर्चों की अधिकता रहे। स्त्री एवं सन्तान सम्बन्धी परेशानियाँ, क्रोध एवं तनाव अधिक हो। दुर्घटना से चोटालि का भय, शरीर कष्ट, बुढ़ि में विभ्रम, व्याधि एवं शत्रु भय, हृदय, उदर, कान, दाँतों, पैरों एवं नैत्रों में पीड़ा तथा व्यसन आदि के कारण कष्ट आदि अशुभ फल प्रकट होते हैं।

(7) सिद्धा दशा (7 वर्ष) — उच्च विद्या में सफलता, सोच हुए (अभोध) कार्यों में सिद्धि प्राप्त हो, बिगड़े कार्यों में सुधार, मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, जातक की धार्मिक कृत्यों (परोपकार आदि) की ओर प्रवृत्ति बढ़ती है। धर्म, ज्योतिष, मंत्र आदि विधाओं की ओर रुचि, भूमि-जायदाद, वाहन, स्त्री एवं सन्तान आदि सुखों में वृद्धि तथा उच्चपदासीन (प्रतिष्ठित) लोगों से सम्बन्ध बढ़ते हैं। विवाह एवं गृहस्थ सुख और सौभाग्य में वृद्धि तथा व्यवसाय में लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होते हैं। दशा के अन्त में पारिवारिक उलझनों के कारण कुछ कठिनाइयाँ व चिन्ताएँ होती हैं।

(8) संकटा दशा (8 वर्ष) — भाई-बन्धुओं या पारिवारिक सदस्यों के साथ विरोध एवं मन-मुटाव पैदा हो। शरीर कष्ट एवं शत्रु भय, बनते कार्यों में विघ्न-बाधाएँ, अत्यधिक परिश्रम एवं संघर्ष करने पर भी विशेष लाभ प्राप्त न हो, किसी विश्वस्त मित्र द्वारा धोखा दिए जाने की सम्भावना एवं धन हानि, स्त्री एवं सन्तान आदि के कारण तनाव व गुप्त चिन्ता, व्यवसाय में अस्थिरता, भ्रमणशीलता व खर्च अधिक हो, परदेश (विदेश आदि) में जाने की उत्कट इच्छा (आभिलाषा) बनी रहती है। इस दशाबन्धि में उत्साह एवं पराक्रम में कमी, मानसिक व शारीरिक कष्ट, वात-पित्त एवं कफादि में विकास के कारण रोग भय, अपव्यय, विघ्न भय आदि अशुभ फल होते हैं। संकटा दशा का पूर्वार्ध भाग राहु से तथा उत्तरार्ध भाग केतु से प्रभावित रहता है।

उपरोक्त पिंगला, उल्का, संकटा आदि क्रूर एवं अशुभ दशा के फल प्रकट हो रहें हों, तो जातक को उस दशा स्वामी ग्रह से सम्बन्धित ग्रह का जाप, पूजा एवं दानादि करके ग्रह शान्ति करवा लेना चाहिए।

योगिनी दशा में अन्तर्दशाओं का फल विचार-

योगिनी अन्तर्दशाओं में जब मंगला आदि शुभ दशाओं के अन्तर में धान्या, भद्रिका आदि शुभ योगिनी की ही अन्तर्दशा चलती है, तो अपने ग्रह स्वामी के गुणों के अनुसार शुभ फलों में वृद्धि होती है। यदि दोनों योगिनी अन्तर्दशाएँ अशुभ फलप्रदा होंगी, तो अशुभ फलों की मात्रा में वृद्धि होगी। यदि मुख्य योगिनी शुभफली एवं उपदशा अशुभफली हो, तो मिश्रित फल प्राप्त होंगे।

नोट — विशाखरी, योगिनी आदि सभी प्रकार की दशाओं के फल का विचार करते समय उस समय की 'पंचांग दिवाकर' में दी गई ग्रहों की गोचर स्थिति एवं उसके प्रभाव को भी ध्यान में अवश्य रखना चाहिए। इससे ग्रह फलकथन में अधिक सुक्ष्मता होगी — प. पन्ना लाल ज्योतिषी।

पृष्ठ 197 का शेष भाग सूर्य मध्ये केतु का अन्तर — केतु स्वगृही (वृश्चिक, धनु व मीन) राशि का होकर सूर्य से ३, ६, १० या १२वें भाव में हो तो जातक को निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनते रहते हैं। परन्तु आय के साधनों में अनिश्चितता बनी रहती है। आवेशपूर्वक किए गए कार्यों में रुकावटें पैदा होंगी। यदि सूर्य से केतु की स्थिति ६, ८, या १२वें भाव में हो, तो जातक को देश-प्रदेश में भ्रमण करना पड़े एवं भागदौड़ अधिक हो, व्यवसायिक क्षेत्रों द्वारा आय में कमी, परन्तु खर्च बहुत हो, सन्तान सम्बन्धी चिन्ता एवं आत्मीय जनों को कष्ट, पारिवारिक कलह, स्थानान्तरण एवं शारीरिक कष्ट, नेत्र एवं सिर दर्द व अन्य क्लिष्ट रोगों का भय होता है।

सूर्य मध्ये शुक्र का अन्तर — शुक्र उच्चस्थ, मित्र क्षेत्री हो एवं केन्द्र-त्रिकोण भावों में स्थित हो तो जातक शुक्र की अन्तर्दशा में स्त्री सुख, मकान, वस्त्र आभूषण एवं वाहन आदि भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है। उच्चस्तरीय लोगों के साथ सम्पर्क बढ़ने लगता, गायन, कला आदि क्षेत्रों में रुचि होगी। काम एवं भागवृत्ति बढ़ेगी। आय के साथ खर्च भी अधिक होगा। यदि शुक्र कुण्डली में छठे, आठवें या १२वें भाव में नीच या शुभ राशिगत हो, तो जातक को धन हानि अथवा वस्तु, मनोरंजन कार्यों एवं स्त्रियों तथा विलासादि कार्यों पर खर्च अधिक हो, नीच लोगों के साथ संगति अधिक होगी। व्यवसाय आदि पर व्यय अधिक, गुप्त रोग होने का आशंका रहे। स्त्री एवं संतान सम्बन्धी चिन्ता हो।

नोट — अन्य दशा अन्तर्दशाओं का फल आगामी वर्ष के पंचांगदिवाकर में देंगे अथवा अधिक जानकारी के लिए ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) भाग-दो का अध्ययन करें।

पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान वालों की श्री दशवर्षीय पंचांग

(दैनिक ग्रह स्पष्ट सहित) संवत् 2051 से संवत् 2060 तक

(सन् 1994 से सन् 2003-04 ई. तक) सम्पादक: पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी

हमारे ज्योतिष संस्थान से गत वर्ष से प्रकाशित 'अर्ध शताब्दी पंचांग' - (सं. 2001 से सं. 2050 तक) को ज्योतिष के विद्वानों द्वारा हृदय से सराहा गया है, जिसके कारण प्रथम संस्करण हाथों हाथ बिकता है। द्वितीय संशोधित संस्करण भी छप गया है। ज्योतिष विद्वानों के विशेष अनुरोध पर अब संवत् 2051 से 2060 तक वर्षों की दस वर्षीय पंचांग भी आकर्षक चढिया जिल्द में छप कर तैयार हो चुकी है। आशा है, यह ज्योतिष संकलन ग्रन्थ भी 'अर्ध शताब्दी पंचांग' की मानित ज्योतिष मर्दियों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। मूल्य 160/-

मंगवाने का पता — जनरल बुक डिपो (पब्लिशर्स)

अड्डा होशियारपुर, जातनगर शहर (पिन-144008) फोन : 2457959 (Office)

सूर्यादि ग्रहों के यंत्र-धारण विधि

सूर्य यंत्र—जन्मपत्री में सूर्य की स्थिति अशुभ हो अथवा विंशोत्तरी दशा में सूर्य की अशुभ दशा चल रही हो, गोचर स्थिति भी अशुभ हो, तो सूर्य यंत्र को शुक्ल पक्ष के रविवार के दिन (यादि कृतिका, उत्तरा फाल्गुनी या उत्तराषाढा नक्षत्र भी हो तो और भी अच्छा है) उन्मूल्य विधि अनुसार अष्टगन्ध से लिखकर सोने या ताम्र के तांबेज में रखकर अथवा सोने या ताम्र की प्लेट पर खुदवा कर लाल रमाल एवं लाल (गुलाबी) डोरी में लपेट कर अपने पास रखे। प्रातः धारण करने से पूर्व यंत्र पर "ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः" इस मंत्र का ७ हजार बार जाप करना कल्याणकारी होगा।

चन्द्र यंत्र—आपकी राशि की जन्मकुण्डली में दशा-अन्तरदशा अथवा गोचर में चन्द्रमा अशुभ हो तो चन्द्र यंत्र को शुक्ल पक्ष की जन्मकुण्डली में दशा-अन्तरदशा अथवा गोचर में चन्द्रमा अशुभ हो तो विधि अनुसार चांदी का यंत्र धारण करें अथवा भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर चांदी के तांबेज में रखकर सफेद डोरी में धारण करें। यंत्र धारण करने से पूर्व उस पर "ॐ सोमयाय नमः" या "ॐ श्रां श्रौं श्रीं सः चन्द्रमे नमः" इस मंत्र का १००० पढ़ कर पूरा कर लेना शुभ होगा।

मंगल यंत्र—अपनी राशि या कुण्डली में मंगल ग्रह के अनिष्ट निवारण हेतु शुक्ल पक्ष के मंगलवार को ग्राहिण, चित्रा या धनिष्ठा नक्षत्र कालीन "ॐ क्रौं क्रौं सः भौमाय नमः" मंत्र को दस हजार संख्या में जाप एवं पूजा के परचात ताम्बे का यंत्र (प्लेट, लाकेट आदि) धारण करना श्रेयकर रहता है। ताम्र यंत्र के अभाव में भोजपत्र पर अष्टगंध से यंत्र लिखकर ताम्बे के तांबेज में धारण कर सकते हैं।

बुध यंत्र—अपनी राशि या कुण्डली में बुध के अनिष्ट निवारण हेतु शुक्ल पक्ष के बुधवार को आश्लेषा, ज्येष्ठा या रेवती नक्षत्र के समय सोने या चांदी की प्लेट, अंगूठी या लाकेट पर खुदवा कर हरे रमाल में बुध यंत्र धारण करें। धारण करे से पूर्व इस पर बुध के बीज मंत्र का १००० की संख्या में पाठ करना शुभ होगा।

गुरु यंत्र—अपनी राशि या कुण्डली में गुरु के अनिष्ट निवारण हेतु शुक्ल पक्ष के गुरुवार को पुनर्वसु, विशाखा अथवा पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के समय या किसी अन्य शुभ मुहूर्त पर सोने, चांदी या ताम्बे की प्लेट अथवा लाकेट या अंगूठी पर यंत्र खुदवा कर गुरु का बीजमंत्र "ॐ ग्रां ग्रीं सः गुरवे नमः" (११०००) पढ़ते हुए पोले रमाल में लपेट कर अपने पास रखने से अनिष्ट प्रभाव दूर हो जाता है।

शुक्र यंत्र—अपनी राशि या कुण्डली में शुक्र ग्रह के अनिष्ट निवारण हेतु शुक्ल पक्ष के शुक्रवार को पूर्वाषाढा या भरणी नक्षत्र कालीन अथवा किसी अन्य शुभ मुहूर्त में चांदी की प्लेट या लाकेट अथवा अंगूठी पर यंत्र खुदवा कर शुक्र का बीज मंत्र "ॐ द्रां द्रीं सः शुक्राय नमः" १६००० की संख्या में पढ़कर स्वते चन्दन और श्री गंगा जल के ३ छटि देते हुए गुलाबी रमाल में लपेटकर अपने पास रखें।

शनि यंत्र—अपनी नाम राशि या जन्म कुण्डली में शनि ग्रह के अनिष्ट निवारण हेतु कृष्ण पक्ष के शनिवार को पुष्य, अशुभ या उत्तराभाद्रपद नक्षत्र कालीन अथवा किसी अन्य शुभ मुहूर्त में सोने या सप्तधातु की प्लेट, लाकेट अथवा अंगूठी पर यंत्र खुदवा कर, शनि के बीज मंत्र "ॐ शं शनैश्चराय नमः" मंत्र की ३ माला का जाप करके यथाशक्ति दान के उपरान्त काले रमाल में लपेट कर अपने पास रखें।

राहु यंत्र—अपनी नाम राशि या जन्मकुण्डली में राहु के अनिष्ट निवारण हेतु कृष्ण पक्ष के शनिवार को आर्द्रा, स्वाती या शतभिषा नक्षत्र कालीन अथवा किसी अन्य शुभ मुहूर्त में चांदी अथवा सप्तधातु की प्लेट, लाकेट अथवा अंगूठी में यंत्र खुदवा कर राहु के बीज मंत्र "ॐ भ्रां भ्रौं सः राहवे नमः" की कम-से-कम तीन माला का जाप करके दानपूर्वक धूप वर्ण के रमाल में लपेट कर अपने पास रखने से लाभ होगा।

केतु यंत्र—अपनी राशि या जन्म कुण्डली में केतु के अनिष्ट प्रभाव को दूर करने के लिए शुक्ल पक्ष के मंगलवार या रविवार को अश्विनी, मघा या मूला नक्षत्र में केतु के अनिष्ट प्रभाव को दूर करने के लिए शुक्ल या सप्तधातु की प्लेट, लाकेट या अंगूठी में यंत्र को खुदवाकर केतु के बीज मंत्र "ॐ स्वां स्वीं स्त्रीं सः केतवे नमः" की तीन माला का जाप करके दानपूर्वक लहसुनिया जैसे वर्ण के रमाल में लपेट कर अपने पास रखने से नेष्ट फल दूर हो जाता है।

अनिष्ट निवारक नवग्रह यंत्र और उनको धारण करने की विधि

संसार में प्रत्येक मनुष्य को अपने पूर्व जन्म में तथा वर्तमान जन्म में किए गए कर्मों एवं नव ग्रहों के प्रभावस्वरूप अनेक प्रकार के शुभ-अशुभ (सुख-दुःखादि) फलों की प्राप्ति होती है। जिस पुरुष/स्त्री की जन्म राशि या प्रसिद्ध राशि पर सूर्य, चन्द्र, मंगल आदि ग्रह अशुभ प्रभाव डाल रहे हों, उन्हें तदनुसार सम्बन्धित ग्रह यंत्र को अष्टगंध की स्याही तथा अनार की कलम द्वारा भोजपत्र पर लिखकर सोने, चांदी अथवा तांबे के तांबेज में रखकर गले में धारण करे अथवा पुरुष दाहिनी भुजा में तथा स्त्री बाईं भुजा में धारण करें। इन यंत्रों की सोना, चांदी अथवा तांबे के लाकेट अथवा प्लेट पर खुदवा कर उस पर सम्बन्धित ग्रह की पूजा शुभ मुहूर्त में विधिपूर्वक धारण करने से ग्रह जनित अनिष्ट प्रभाव का निवारण होकर सब प्रकार की बाधाएं दूर होती हैं।

अष्टगंध—केशर, कस्तूरी, कपूर, गोरोचन, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, अगर-तागर तथा कुमकुम।

सूर्य का यंत्र

| | | |
|---|---|---|
| ६ | १ | ८ |
| ७ | ५ | ३ |
| २ | ९ | ४ |

चन्द्र का यंत्र

| | | |
|---|----|---|
| ७ | २ | ९ |
| ८ | ६ | ४ |
| ३ | १० | ५ |

मंगल का यंत्र

| | | |
|---|----|----|
| ८ | ३ | १० |
| ९ | ७ | ५ |
| ४ | ११ | ६ |

बुध का यंत्र

| | | |
|----|----|----|
| ९ | ४ | ११ |
| १० | ८ | ६ |
| ५ | १२ | ७ |

गुरु का यंत्र

| | | |
|----|----|----|
| १० | ५ | १२ |
| ११ | ९ | ७ |
| ६ | १३ | ८ |

शुक्र का यंत्र

| | | |
|----|----|----|
| ११ | ६ | १३ |
| १२ | १० | ८ |
| ७ | १४ | ९ |

शनि का यंत्र

| | | |
|----|----|----|
| १२ | ७ | १४ |
| १३ | ११ | ९ |
| ८ | १५ | १० |

राहु का यंत्र

| | | |
|----|----|----|
| १३ | ८ | १५ |
| १४ | १२ | १० |
| ९ | १६ | ११ |

केतु का यंत्र

| | | |
|----|----|----|
| १४ | ९ | १६ |
| १५ | १३ | ११ |
| १० | १७ | १२ |

“नवग्रहों के ध्यान मन्त्र”

सूर्य—पद्मासनः पद्मकारः पद्मगर्भः समधृतिः। सप्तश्वः सप्तज्जश्रु द्विभुजः स्यात् सदाविः॥
चन्द्रमा—श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेताश्वः। श्वेतवाहनः गदापाणिर्द्विबाहुश्च कर्तव्यो वरदः शशी॥
मंगल—रक्तमाल्याम्बरधरः शक्तिशूलगदाधरः। चतुर्भुजः रक्तरोमा वरदः स्याद् धरासुतः॥
बुध—पीतमाल्याम्बरधरः कर्णिकारसमधृतिः। खड्गचर्मगदापाणिः सिंहस्थो वरदो बुधः॥
बृहस्पति—देवानां गुरुः तद्वत् पीतवर्णः चतुर्भुजः। दण्डी च वरदः कार्यः साक्षसूत्रकमण्डलुः॥
शुक्र—दैत्यानां गुरुः तद्वत् श्वेतवर्णः चतुर्भुजः। दण्डी च वरदः कार्यः साक्षसूत्रकमण्डलुः॥
शनि—इन्द्रनीलधृतिः शूलो वरदोग्रधवाहनः। बाणबाणासनधरः कर्तव्योऽर्कसुतस्तथा॥
राहु—करालवदनः खड्गचर्मशूलो वरप्रदः। नीलसिंहासनस्थश्च राहुश्च प्रशस्यते॥
केतु—धूम्रा द्विबाहुः सर्वेदिनी विकृताननाः। गृधासनगता नित्यं केतवः स्युर्वरप्रदाः॥

(मत्स्यपुराण १४।१९—९)

भाष्योक्त्य देखने का चक्र

यदि आपको किसी व्यक्ति के भाग्य का फल जानना हो, तो उस व्यक्ति को कहें कि वह व्यक्ति 1 से 31 की संख्या के भीतर कोई भी अंक मन में सोच ले। तदुपरांत उसको पूछें कि नीचे लिखे A से लेकर E तक के पाँच यंत्रों में से किस-किस यंत्र में उसका सोचा हुआ अंक विद्यमान है। जिस-जिस यंत्र में अमुक व्यक्ति का सोचा हुआ अंक मिले, उस यंत्र के दाईं तरफ के सबसे ऊपर के कोने वाले पहले हिन्दुओं को परस्पर जमा कर लेने से व्यक्ति विशेष के मन में सोची हुई संख्या पता लग जाएगी। उस अंक की संख्या के आधार पर व्यक्ति के 'भाग्य का फल' आगे लिखे अनुसार जानें—

उदाहरण—मान लो किसी मनुष्य ने अपने मन में 22 का अंक सोचा है। अब देखो कि यह 22 का अंक खाना नं० A, B, C, D, E में कहाँ मिलता है। अब इन यंत्रों B, C, E के ऊपर के दाएँ कोनों के अंकों 2 + 4 + 16 को जोड़ो तो 22 का जोड़ बनता है। अतः प्रश्नकर्त्ता ने 22 का अंक सोचा है और इसके अनुसार देखा तो लिखा है, कि विदेश गमन सम्बन्धी विचार बनेगा। व्यवसाय में कुछ परिवर्तन के योग हैं। इसी भाँति अन्य अंकों के बारे में भी विचार करें।

नं० A नं० B नं० C नं० D नं० E

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| 7 | 5 | 3 | 1 | 7 | 6 | 3 | 2 | 30 | 29 | 28 | 4 | 30 | 10 | 28 | 8 | 29 | 30 | 31 | 16 |
| 15 | 13 | 11 | 9 | 15 | 14 | 11 | 10 | 22 | 21 | 20 | 23 | 26 | 25 | 24 | 31 | 26 | 25 | 24 | 20 |
| 17 | 19 | 21 | 23 | 23 | 22 | 19 | 18 | 15 | 13 | 12 | 14 | 14 | 13 | 12 | 27 | 21 | 22 | 23 | 27 |
| 25 | 27 | 29 | 31 | 31 | 30 | 27 | 26 | 5 | 6 | 7 | 31 | 9 | 29 | 11 | 15 | 17 | 18 | 19 | 28 |

(1) तुम्हारे मन की मुराद उस समय पूरी होगी, जब तुमको इस का ध्यान भी न होगा। (2) धैर्य रखें, भाग्योदय होने वाला है। फिर भी प्रतिदिन गायत्री मन्त्र का पाठ करते रहें। (3) किसी ऐसे साधन द्वारा तुम्हारी आशा पूर्ण होगी जिसका आपको ध्यान भी नहीं होगा। (4) जिस गुप्त चिन्ता के लिए आप पेशान हो, उसकी सफलता के लिए अभी कुछ विलम्ब हो सकता है, अपना पुरुषार्थ जारी रखें। (5) आपके लिए खुशी का समय आने वाला है, धैर्य रखें। सूर्य उपासना करना शुभ होगा। (6) घबराओ नहीं, तुम्हारी बेहतरी का साधन (ईश्वर कृपा से) शांति निकल आएगा। (7) आपको मुश्किलों का हल माता-पिता के आशीर्वाद से ही निकल जाएगा। (8) तुम्हारे भाग्य में धन-सम्पत्ति का सुख लिखा है, किन्तु विशेष परिश्रम करना होगा, लक्ष्मी चालीसा का पाठ करना शुभ रहेगा। (9) थोड़े दिनों में आपके सामने विदेश यात्रा सम्बन्धी प्रस्ताव रखा जाएगा, इसको स्वीकृति देने से पहले गम्भीरता से विचार करना उचित होगा। (10) इस समय आपका भाग्य गर्दिश में है, विशेष पुरुषार्थ एवं शिव उपासना करने से सफलता मिलेगी। (11) आपके संवर्ष और पेशानियों का समय बीत गया है, आने वाले दिनों में धन-

लाभ एवं सुख के साधन बढ़ेंगे। (12) उतावलेपन से बतते काम बिगड़ सकते हैं। धीरज से काम लें, धीरे-धीरे ही बिगड़े कामों में सुधार आएगा। (13) किसी प्रिय बन्धु के सहयोग से बिगड़ा हुआ कोई विशेष काम बनेगा। (14) अभी बनते कामों में विघ्न-बाधाएँ रहेंगी। मानसिक तनाव व उद्विग्नता से बचें। (15) भाग्य में अभी कशमकश रहेगी। लगभग अढ़ाई महीने बाद सुधार के योग हैं। (16) ईश्वर पर भरोसा रखो, लगभग दो महीने बाद भाग्य में परिवर्तन होने के संकेत मिलते हैं। (17) अभी सितारे गर्दिश में है, लगभग डेढ़ मास बाद हालात में सुधार होगा। (18) अनावश्यक चिन्ता एवं तनाव से बचें, अच्छा समय आने वाला है। (19) उत्साहपूर्वक कर्म करते रहें, भाग्य में परिवर्तन व शुभ लाभ के योग पाए जाते हैं। (20) अपने भाग्य एवं पुरुषार्थ पर भरोसा रखें, मनोवांछित कार्यों में सफलता मिलने वाली है। (21) वर्तमान काल में आपके भाग्य के सितारे गर्दिश में है। लगभग एक मास बाद हालात में सुधार के योग हैं। (22) विदेश गमन सम्बन्धी विचार बनेगा। व्यवसाय में कुछ परिवर्तन के योग हैं। (23) आर्थिक पेशानियों के कारण तनाव होगा, लगभग डेढ़ मास बाद भाग्य में लाभ व उन्नति के योग हैं। (24) वर्तमान में समय संघर्षपूर्ण होगा। निकट भविष्य में मनोवांछित कार्यों में सिद्धि प्राप्ति होने के संकेत हैं। (25) किसी अंतरंग मित्र की सहायता से कोई बिगड़ा काम बनेगा। अचानक धन लाभ भी होगा। (26) वृथा कामों में समय न गंवाओ, आने वाले दो महीनों में लाभ व उन्नति के योग हैं। (27) व्यर्थ की चिन्ता न करें, लगभग डेढ़ मास बाद भाग्य में सुखद परिवर्तन होने के आसार हैं। (28) उत्साह से अपने कर्तव्य पालन में लगे रहें, लगभग दो मास में भाग्य में शुभ परिवर्तन होने वाला है। (29) संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के कारण मन अशांत रहेगा। लगभग अढ़ाई मास बाद आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। लक्ष्मी स्तोत्र का पाठ करें। (30) अपने निश्चय पर दृढ़ रहें, लगभग डेढ़ मास आर्थिक कामों में सुधार होगा। (31) वर्तमान परिस्थितियाँ संघर्षपूर्ण होंगी। कार्य-व्यवसाय में परिवर्तन के बाद सफलता प्राप्त होगी।

‘श्री अर्द्धशताब्दि पंचांग’

(संवत् 2001 से 2050 तक) अर्थात् सन् 1944 से 1993-94 ई. तक

(दैनिक बृहस्पति-ज्योतिषियों के लिए एक संश्लेषी एवं आवश्यक ग्रन्थ)
(प्रधान सम्पादक—पं. पन्ना लाल ज्यो.,
उप-सम्पादक—पं. विवेक शर्मा, व्यवस्थापक—पं. पंकज शर्मा)

नोट—पूर्ण राशि अग्रिम भेजने पर डाक खर्च (लगभग 60/- रु.)
माफ। पुस्तक आपको रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा भेज दी जाएगी। मूल्य 640/- रु.

पता—जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धरा। फोन—2457959

स्वाज्ञ—शकुन का शिभाशीभ फल विचार

दैनिक जीवन में मनुष्य की जो वासनाएँ अतृप्त अथवा अपूर्ण रहती हैं, वही स्वप्न रूप में येन-केन प्रकारेण पूर्ति का आभास कराती हैं। सूर्योदय के कुछ पूर्व अथवा ब्रह्म मुहूर्त में देखे गए स्वप्न का फल दस दिनों में, रात्रि के प्रथम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक वर्ष के पश्चात्, रात्रि के दूसरे प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल तीन मास के बाद, रात्रि के अन्तिम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक मास में प्रकट होता है, जबकि दिन में देखे गए स्वप्न विश्वसनीय नहीं होते। शुभ सांकेतिक स्वप्न देखने के पश्चात् सोना नहीं चाहिए, शेष रात्रि भजन, चिन्तन में बितानी चाहिए तथा किसी को अपना स्वप्न बताना भी नहीं चाहिए। इसके विपरीत अशुभ स्वप्न देखने के बाद फिर सो जाएँ तथा प्रातःकाल यदि उस अशुभ स्वप्न की स्मृति ताज़ी रहे तो गुरुजनों को उसे बतला दें। अशुभ निवारण के लिए गायत्री पाठ, स्नानदानादि, अनुष्ठानादि कार्यों का सम्पादन करें। अधिक जानकारी हेतु हमारे कार्यालय से स्वप्न ज्योतिषज्ञान सम्बन्धी पुस्तक मंगवाएँ।

[illegible]

अंगों पर छिपकली गिरने का फल

अंग फल पल्ली (किरली) पतन पर आवश्यक कर्तव्य

शरीर पर छिपकली गिरते समय, उस समय जो भी वस्त्र पहने हों, उन्हें पहिने हुए ही स्नान करना चाहिए। तत्पश्चात् तिल, उड़द, घृत में छाया-पात्र का दान एवं यथाशक्ति धन का दान करके "महामृत्युञ्जय मन्त्र" का पाठ करना चाहिए।

| अंग | फल | अंग | फल |
|---------------|------------------|-------------------|------------------|
| मस्तक (सिर) | राज्य लाभ | बायें हाथ | धन हानि |
| कयाल | ऐश्वर्य प्राप्ति | नाभि | पुत्र प्राप्ति |
| नाक | सौभाग्य वृद्धि | हृदय | सुख-राश प्राप्ति |
| दाहिना कान | आयु वृद्धि | गुदा | रोग भय |
| बायाँ कान | भूषण लाभ | गुनाग | मित्र से भेट |
| दाईं भुजा | मान-सम्मान | दायें पाँव | यात्रा (भ्रमण) |
| बाईं भुजा | धन-हानि, राज भय | बायें पाँव | रोग-क्लेश |
| कण्ठ | शत्रु नाश | पावों की उंगलियों | यात्रा |
| पीठ के मध्य | क्लह-क्लेश | गर्दन | यश, लाभ- |
| बाईं पीठ | रोग भय | | |
| दायें पीठ | सुख लाभ | | |
| दायें कन्धे | विजय, सफलता | | |
| बायें कन्धे | दुश्मनों से भय | | |
| कमर | रोग भय | | |
| दाईं जाँघ | धन हानि | | |
| बाईं जाँघ | पुत्र से लाभ | | |
| दायें हाथ | धन लाभ | | |

स्वप्न एवं अन्य शकुन सम्बन्धी विस्तृत जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से स्वप्न-ज्योतिष विज्ञान नामक पुस्तक माँगवाकर पढ़ें।
— जनरल बुक डिपो

अंगस्फुरण फल

| सिर | बाहुमध्य | धनागमः |
|----------------|----------------|----------------------|
| पृथ्वी लाभ | कर (हाथ) | धन प्राप्ति |
| स्थान लाभ | छाती | विजय |
| प्रिय प्राप्ति | पाश्वर् | उत्तम प्रीति |
| प्रियदर्शन | नाभि | यात्रा से लाभ |
| लक्ष्मी दर्शन | उदर पेट | कोष प्राप्तिः |
| स्त्री सुख | वृष्णा | पुत्र लाभ |
| गन्ध सुख | जानु (घुटना) | रिपु (शत्रु) सन्धि |
| स्त्री चुम्बन | जंघा | हानिप्रद |
| भूषण प्राप्ति | चरण के ऊपर | स्थान प्राप्तिः |
| शत्रु भय | चरण के नीचे | लाभप्रदः |
| पराजय | दक्षिण कर्ण | दीर्घायु |
| मित्र समागम | प्रिय प्राप्ति | शत्रुनाश |

फलित ज्योतिष में कुछ प्रसिद्ध योगों का वर्णन

निम्नलिखित योगों में राहु-केतु का समावेश नहीं किया जाता (ज्योतिष तत्त्व फलित खण्ड भाग-2 से उद्धृत)

रुचकादि पंच-महापुरुष योग

'पंच महापुरुष' योग के शीर्षक के अन्तर्गत रुचक आदि पांच शुभ योगों का वर्णन प्रायः सभी प्राचीन ज्योतिष ग्रन्थों में मिलता है। इनका फल राजयोगों के समान शुभ माना जाता है। आधुनिक युग में इनके फलस्वरूप जातक राजा तो न सही, परन्तु राज तुल्य ऐश्वर्य, धन, सन्तति आदि सुखों को प्राप्त करता है। विशेषकर मंगल, बुध, गुरु आदि योगकारक ग्रहों की अपनी-अपनी दशा में अवश्य शुभ एवं श्रेष्ठ फल होते हैं।

यदि मंगल, बुध, गुरु, शुक्र या शनि अपनी उच्च राशि या मूलत्रिकोण या स्वराशि में स्थित होकर लग्न से केन्द्र में हों, तो क्रम से रुचक, भद्र, हंस, मालव्य और शशक नामक पंच-महापुरुष योग होता है। जातकाभरणम, मानसागरी, सारावती इत्यादि ग्रन्थों का यही मत है परन्तु मन्त्रेश्वर महाराज के मतानुसार यदि जन्म लग्न से केन्द्र में स्वोच्च, स्वराशिस्थ, भौमादि, ग्रह न भी हों परन्तु यदि चन्द्र लग्न से उपरोक्त भौम आदि ग्रह केन्द्रगत हों, तो भी रुचक आदि योगों का निर्माण होता है तथा धन-धान्य आदि शुभ फल घटित होते हैं—

लग्नेन्दोरपि योग पंचकामिदं साम्राज्य सिद्धिप्रदं ॥ तेष्वाकादिवु भाग्यवान् नृपसमो राजा नृपेन्दोऽधिकः ॥

अर्थात् चन्द्र लग्न से केन्द्र में उपयुक्त पांच ग्रहों में कोई स्वराशि या उच्च राशि का होकर केन्द्र में हो, तो साम्राज्य और सिद्धि प्रदान करने वाला होता है। शुक्र, भौम, बुधादि ग्रह यदि सूर्य के साथ अस्तंगत हों, तो जातक को विशेष उत्तम फल न देकर अपनी दशा में केवल शुभ फल देते हैं।

(1) रुचक योग—यदि मंगल कुंडली में उच्च राशि का या स्वराशि का होकर केन्द्र में स्थित हो, तो रुचक नामक योग होता है। ऐसे जातक का दीर्घ चेहरा हो, जातक अत्यन्त साहसी, गुणी, शूरवीर, कांति युक्त सुन्दर, सुगठित शरीर, रक्त-गंदमी वर्ण, बलिष्ठ शत्रुओं पर विजय पाने वाला, कीर्तिवान्, धनवान्, परिश्रमी और स्वाभिमानी स्वभाव का होता है।

दीर्घस्य स्वच्छ कान्ति बहुरुचिरबलः साहसावाप्त कार्य। गर्विष्ठो रुचके प्रतीत गुणवान् सेनापतिः जित्वरः ॥

ऐसा जातक अपने साहस, बल से कार्य सिद्धि करवाने वाला, कुछ तेज स्वभाव, गुरु एवं देवी-देवताओं का भक्त, ज्योतिष, मन्त्र, धर्म आदि शास्त्रों में रुचि रखने वाला, धन, यश एवं सवारी आदि सुखों से युक्त तथा दीर्घायु होता है। देखें उदा. कुंडली नं. 73

(2) भद्र योग—बुध यदि अपनी उच्च या स्वराशि का होकर केन्द्र में स्थित हो, तो भद्र नामक योग बनता है। ऐसा जातक तीव्र बुद्धिमान, प्रभावशाली, सुन्दर मुखकृति, स्वच्छ रहन-सहन, मृदु एवं मधुरभाषी, दीर्घायु, सन्तुलित एवं सुगन्धित शरीर और सुन्दर नाक वाला, सात्विक एवं परोपकारी, दानी स्वभाव, ज्योतिष, धर्म एवं योगादि शास्त्रों का ज्ञानकार, विद्वान्, धैर्यवान्, धर्माला, शंख के समान वाणी, बौद्धिक कार्यों में विशेष कुशल, स्वतन्त्र विचारक किन्तु अपने विचारों को गुप्त रखने वाला, यशस्वी एवं लोगों में आदर प्राप्त करने वाला, ऐसे जातक के हाथ एवं पावों में शंख, पक्षी, चक्र, घञ्जा, कमल आदि के चिन्ह भी होते हैं।

आयुमान् सकुशाप्त बुद्धिः अमलो विद्वज्जनश्लाघितो। भूषो भद्रकयोगजोऽति विभवशचस्थान् कोलाहलः ॥
ऐसे जातक का सुन्दर मस्तक, लम्बी, गोल एवं पुष्ट बाहें, धन-सम्पदा से युक्त वैभवशाली और उच्च पदाधिकारी होता है। उदाहरण कुंडली हेतु देखें धनु लग्न के अन्तर्गत कुंडली नं. 86 (श्री लाल बहादुर शास्त्री) देखें ज्योतिष तत्त्व

2000

2001

2051

| नक्षत्र चरण | चरण | | | कष्ट लक्षणानि | देवता | दानद्रव्याणि | जप संख्या | जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि | वलिदान |
|-------------------|-------|-------|----|---------------|--------------------------------------|-------------------|-----------|---|--|
| | १ | २ | ३ | ४ | | | | | |
| स्वाती १५ | ६० | १७ | ३० | ०० | अनेक तरह के रोग ज्वर, कष्ट | वायु देवता | ५ हजार | ॐ वायव्यरदि बुधः सुमेध इवेतः सिवीक्तिनो युतामिमी श्री तं वायवे सुमनसा वितयुर्विश्वेनारः स्वपत्न्या निवृद्धः ॥१५॥ ॐ वायवे नमः ॥ | चन्दनगंध कमल पुष्प अगर गुगुल धूप, दीप पायस शर्करा घृत नैवेद्य। |
| विशाखा १६ | दि १५ | दि ०० | ०४ | १३ | कुक्षिशूल रोग सर्व गात्र पीडा | इन्द्राग्नी देवता | १० हजार | ॐ इन्द्राग्नी आगत Ω सुतं गार्भिर्निमी वरेण्यम्। अस्व पातं धियोपिता ॥१६॥ ॐ इन्द्राग्नीभ्यो नमः ॥ | श्री खण्ड चन्दन गंध कमल पुष्प देवदारु धूपघृत पायस नैवेद्य, दीपक केशर। |
| अनुराधा १७ | दि ६० | दि १२ | ३६ | ३० | तीव्र ज्वर महारोग शिर पीडा | मित्र देवता | १० हजार | ॐ नमो मित्रस्वरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृत Ω सपर्यत दूरदृशे देव जाताय केतवे दिवसपुत्राय सूर्योयश Ω सत ॥१८॥ ॐ मित्राय नमः ॥ | कुंकुमगंध कमल पुष्प चन्दन धूपः पायस घृत पुष्प मोदक नैवेद्य, केशर, गंध। |
| ज्येष्ठा १८ | दि ५९ | दि ०९ | ०६ | ०४ | पित्तरोग शरीर कापना व्याकुलता | इन्द्र देवता | ५ हजार | ॐ त्रातराभिन्द्रमधितारभिन्द्र Ω हवे हवेसुहव Ω शूर्पर्मिन्द्रम वहयामि शकं पुरुहूतिभिन्द्र Ω स्वास्ति नो मधवा धात्विकः ॥ ॐ इन्द्राय नमः ॥ | चन्दन गंध सुगंध पुष्प कपूर धूप विचित्रात्र नैवेद्य, चाम्पा पुष्प पायस, नारियल। |
| मूला १९ | दि ०० | दि ०९ | १५ | ०६ | ज्वरशूलसंत्रिपत महाकाठिन रोग | निकृति देवता | ५ हजार | ॐ मातेवपुत्र प्रथिवी पुरीष्यमग्नि Ω स्वयोनावमारुषा तां विश्वेदेवक्रतुभिः सविधानः प्रजापति विश्वकर्मा विमुच्यत ॥ ॐ निष्कृते नमः ॥ | कृष्ण अगर गंध नील पत्र पुष्प कृष्ण अगर धूप मिष्टान्नहावि माप नैवेद्य। |
| पूर्वाषाढा २० | दि ०० | दि १५ | २४ | १० | शरीरपीडा कंपरोग शिररोग महाकष्ट | जल देवता | ५ हजार | ॐ अपास मम कील्वषम पकृत्यामपोरयः अपामार्गत्वमस्मद यदुः स्वपत्य-सुवः ॥२०॥ ॐ अदृभ्यो नमः ॥ | चन्दनगन्ध पत्र पुष्प गुगुल धूप घृत पायस नैवेद्य। |
| उत्तराषाढा २१ | दि ३० | दि २४ | २६ | १६ | कटिपीडा प्रलाप उदर शूलरोग युक्त | विश्वदेवा देवता | १० हजार | ॐ विश्वे अद्य मरुत विश्वऽउतो विश्वे भवत्यग्रयः समिन्धाः विश्वेनोदवा अवसागमस्तु विश्वेवस्तु द्रविणं बाजो अस्मै ॥२१॥ | चन्दन गंध मालती गुगुल पुष्प पायस नैवेद्य। |
| श्रवण २२ | दि ६० | दि २४ | ०६ | ०९ | वातापित्तकफरोग अतिसारसर्वगात्रपी | गोविन्द देवता | १० हजार | ॐ विष्णोरारामसि विष्णो शनपत्रेस्थो विष्णो सुरुसि विष्णो ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥२२॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ | चन्दन गंध मालतीपुष्प कपूर गुगुल धूप ओदन पायस पडरम नैवेद्य। |
| घनिष्ठा २३ | दि १५ | दि २० | २९ | २१ | मूत्रकृच्छ्र ज्वर रक्त अतिसार कंपरोग | वसु देवता | १० हजार | ॐ वसोःपवित्र मसि शतधारंदसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवत्वासविता पुनानुवसोः पवित्रेणशतधारोण सुवाकामधुसः ॥ ॐ वसुभ्यो नमः ॥ | अगर गंध कमल पुष्प अगर धूप घृत पायस नैवेद्य, दीपक, ताम्र वर्तन। |
| शतभिषा २४ | दि ०० | दि ४५ | ०३ | २२ | वायु रोग से भय संत्रिपातज्वरपीडा | वरुण देवता | १० हजार | ॐ वरुणस्योत्तमभनमसिवरुणस्यकुं मस्तर्जनी स्योवरुणस्य ऋत सदन्य सि वरुण स्यऋतमदन ससि वरुणस्यऋतसदनमसि ॥ ॐ वरुणाय नमः ॥ | कुंकुम अगर गन्ध कमल पुष्प अगर धूप घृत धूप नैवेद्य। |
| पूर्वाभाद्र-पद २५ | दि ०० | दि १२ | २९ | १९ | सर्षगात्रपीडाछर्दी चिन्ताव्याकुलता | ऽजेकपाद देवता | ५ हजार | ॐ उत्तनाऽहिर्वृध्वः शृणोत्वज एकपापुथिवी समुद्रः विश्वे देवा ऋता वृधो हुवाना सुतामंत्राः कविशस्ता अवन्तु ॥ ॐ अजेकपदे नमः ॥ | कुंकुम चन्दनगन्धवेतार्क पुष्प सर्वोपधी मिश्र धूप दधि पायस नैवेद्य। |
| उत्तराभा-द्रपद २६ | दि १० | दि २० | ०९ | १५ | कामलारोगअतिसा ज्वरवायुशूलभ्रम | अहिर्बुध्न देवता | १ हजार | ॐ शिवोनामासिस्वाधितितो पिता नमस्तेऽस्तुमामाहि Ω सो निवर्त्तयान्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायम्पायाय (सुश्रुतास्वाय ॥२६॥) ॐ अहिर्बुधाय नमः ॥ | कपूरचन्दनगन्ध पत्र पुष्प विल्व गुगुल धूप दधि पायस नैवेद्य। |
| रेवती २७ | दि १८ | दि १० | ०९ | २० | वातपित्तज्वर भ्रम उरु शूलपीडा | पूषा देवता | १० हजार | ॐ पूषन् तव व्रते वय नरियेम कदाचन। स्तोतारस्तेऽहस्ससि ॥२७॥ ॐ पूषोनमः ॥ | रक्त चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प घृत गुगुल धूप घृत पायस नैवेद्य। |

रोग-त्रिनाडी चक्र

| | | | | | | | | | | |
|---------|--------|--------|------|-------|-------|-------|-------|------|---|--|
| आर्द्रा | पूषा | उषा | अनु | ज्ये० | धनि | शत० | भरणी | कृति | <p>मंगलवार १६/११/१९ तिथि कृत्तिका नक्षत्र। बुधवार २१/११/१९ तिथि आश्लेषा नक्षत्र। गुरुवार ३८/११/१९ तिथि मघाहस्तनक्षत्र। शुक्रवार ४९/११/१९ तिथि-आर्द्रा धनिष्ठा नक्षत्र। शनिवार ५१/११/१९ तिथि-भरणीनक्षत्र। इन तीन योगों में रोग का प्रारम्भ हो तो मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट जानना। (रोग के दिन नक्षत्र से नाम का नक्षत्र ५/११/१९ ३ संख्या पर काल का मुंह होता है और १०, १८वें नक्षत्र काल की दंष्ट्र (दाढ़) होती है, मुख वा दंष्ट्रा में जिस दिन नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यंत रोगाग्रसित पुरुष की मृत्यु तुल्य कष्ट जानना। सूर्य जिस नक्षत्र में हो, वह नक्षत्र, चन्द्र नक्षत्र और नाम का नक्षत्र जिस दिन एक नाड़ी में हो उसी दिन असाध्य रोगी की मृत्यु जानना।</p> | |
| पुनर्व | मघा | हस्त | विशा | मूला | श्रव० | पूषा | अश्वि | रोहि | | |
| आश्ले | चित्रा | स्वाती | पूषा | उषा | उभा | रेवती | मृग | | | |
| | | | | | | | | | | |

!! अथ बालकष्टावली पूतना विधान !!

मंत्र को २१ बार पढ़कर सात बार रुग्ण बालक के सिर पर घुमाकर चौरस्ते (चौराहे) पर मौन होकर रख आवें ॥

| जन्म से | पूतना नाम | ग्रसित लक्षण | मूर्तिद्रव्य | बलि द्रव्य तथा समय | धूप | मन्त्र |
|------------------|-----------------------------------|---|--|--|---|--|
| दि ०१ मा १ व ०१ | १ योगिनी २ मातुका ३ नदिनी | ज्वर गात्रशोष अनाहार वमन मूछा कोपना हीन ज्वर उदर पीड़ा | नदी का मिट्टी का पुतला ३ दिन विधान | उबले चावल सफेद चंदन का लेप सफेद फूल ध्वजा ५ चिलिडियां (पूड़े) ५ दीपक ५ प्रातः समय पूर्व दिशा में तीन दिन बलि देवे। | सरसों बालछड़ आक विल्वपत्र तिल्ली और मनुष्य के केश नीम घी का धूप | ॐ नमो भक्तवत्सले मोचिनी स्वाहा |
| दि ०२ मा २ व ०२ | १ सुनदिनी २ योगिनी ३ स्तनदा | ज्वर हाथ पांव संकोचदांतों का पीसना आँखें मीचना ज्वरादि रोदन आँखें दुखना | सेर चावल की पीठी का पुतला ३ दिन विधान | उबले चावल सेर पर आटे के पूड़े मच्छी और बकरे का मांस ध्वजा १३ दीपक १३ पश्चिम दिशा में सन्ध्या समय ३ दिन बलि देवे। | पूर्ववत् सब वस्तुओं का धूप देना | ॐ नमो भगवती स्वाहा |
| दि ०३ मा ३ व ०३ | १ पूतना | ज्वर कम्प न प्रलाप अरुचि आँखें मीचना वमन रोमांच | पूर्ववत् मूर्ति | लाल चावल लाल ध्वजा लाल चन्दन लालफूल सायंकाल उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे। | गोशृङ्ग और सांप को कांचली का धूप देना | ॐ नमो भगवती स्वाहा |
| दि ०४ मा ४ व ०४ | १ मुखमंडिका २ आकाशयोगिनी | ज्वर गात्र भग आंखमीचना शिर झुकाना श्वास श्याम ता अरुचि नींद न आना | चावल के चूर्ण का पुतला विल्व के काटे से रेखा | सफेद चंदन का लेप सफेद फूल सफेद ध्वजा सेर भर आटे के पूड़े तीनों सन्ध्या समय पश्चिम दिशा में बलि ३ दिन देवे। | लहसन नीम के पते मनुष्य के और बिल्ली के बाल गो घृत धूप देना। | ॐ नमो पूतने मातवीर्लि भक्ष सुशोभने बालकमुचसुयोगेन बलिदाने नहर्षयेत् |
| दि ०५ मा ५ व ०५ | विडालिका | ज्वर हिक्का श्वास शूल गात्र संकोच अरुचि उदर पीड़ा | सेर भरचावल की पीठी का पुतला | उबले चावल ध्वजा ५ दीपक ५ सफेद चन्दन सफेद फूल अपराह्न के समय वृक्ष के मूल में पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे। | पूर्ववत् धूप देना | ॐ सुभगे सुभलेदेवि सर्व शत्रु निवारिणी। कुरु शान्ति शिशोः स्वस्थं जीव दानेन राक्षसि |
| दि ०६ मा ६ व ०६ | शकुनी | ज्वर गात्र संकोच अरुचि श्वास लेने में कठिनाई उदर पीड़ा | सेर चावल की पीठी का पुतला बनाना | कृष्णोदन ध्वजा ५ दीपक ५ काले फूल मच्छी का मांस बकरे का मांस पायस दूध आधसेर आटे के पूड़े अपराह्न पश्चिम दिशा में तीन दिन बलि देवे | कूट गुग्गुल सफेद चन्दन सरसों हाथी का दांत गो घृत धूप देना। | ॐ एहसि त्व महाभगे बालमुच शुभभने। क्षेम कुरु जगत्स्मिन् शोभावान वरं कुरु |
| दि ०७ मा ७ व ०७ | शुष्करेवती | ज्वर देह संकोच अरुचि कांपना रोदन करना | पूर्ववत् मूर्ति | सफेद ध्वजा ७ दीपक ७ सफेद फूल सफेद चंदन सायंकाल पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे। | गो शृङ्ग और लहसन से पूर्ववत् धूप देना। | ॐ नमो पद्मपत्राक्षि विशालाक्षि वन शिव। सगुहं बलि भाषज्ब बाले मुच सुशोभने। |
| दि ०८ मा ८ व ०८ | विडालिका | ज्वर गात्र संकोच आँखें मीचना रोना जिक्काशोष शिर पीड़ा अरुचि | पूर्ववत् मूर्ति | पायस (खीर) दूध घी लाजा मध्याह्न द पूर्व संध्या समय दक्षिण दिशा में ३ दिन बलि देवे | गुग्गुल में घृत मिलाकर उपरोक्त धूप देना। | ॐ नमो सर्व भूतेशि शोभने त्वं पिशाचिनी। बलिचैवा सुरी कृत्य त्वरितं मुच बालकम् |
| दि ०९ मा ९ व ०९ | मनोमत्ता | ज्वर वमन तृष्णा श्वास अफारा देह संकोच उदर शूल | पूर्ववत् मूर्ति | उबले चावल मच्छी का मांस पापड़ गन्ना संध्या समय उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे। | गोशृङ्ग को घृत में पिसकर पूर्ववत् धूप देना | ॐ नमो भगवते वासुदेवाय हुं फट स्वाहा। |
| दि १० मा १० व १० | रेवती | ज्वर वमनाकास श्वास पीड़ा | पूर्ववत् मूर्ति | गुड़ उबले चावल घी ध्वजा २५ पूड़े २५ लालफूल २५ सफेद फूल ४४ संध्यासमय दक्षिण में ३ दिन बलिदेवे | गोशृङ्ग लहसन को घृत में मिलाकर धूप देना। | ॐ नमो भगवते वासुदेवाय फट स्वाहा। |
| दि ११ मा ११ व ११ | सुदर्शना | ज्वर अरुचि मुखशोष गात्र पीड़ा रोदन | माष उड़द की पीठी | उबले चावल सफेद चंदन लेपन सफेद फूल ध्वजा २५ दीपक २५ पूड़े २५ बलि संध्या समय दक्षिण दिशा में बलि देवे। | पूर्ववत् धूप देना | ॐ नमो भगवते रावणाय चंद्रहास वज्रहस्ताय ॐ हुं फट स्वाहा। |
| दि १२ मा १२ व १२ | अदभुता | ज्वर रोदन पसीना आँखें दुखना सन्नाप रोमांच शरीर पीड़ा | सेर चावल की पीठी का पुतला | ध्वजा १३ पूड़े मच्छी का मांस बकरे का मांस पापड़ संध्या समय दक्षिण में ३ दिन बलि देवे | गो शृङ्ग को घृत में पिस कर पूर्ववत् धूप देना। | ॐ नमो नारायणाय प्रचल २ ताप हर २ शोषय २ मर्दय २ हन दुष्टान् हुं फट स्वाहा |

वर्षफल बनाने की सारिणी (सूर्य सिद्धान्तीय)

| वर्ष | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | ०८ | ०९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० |
|------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| वार | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | ०८ | ०९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० |
| घड़ी | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | ०८ | ०९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० |
| पल | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | ०८ | ०९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० |
| विपल | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | ०८ | ०९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० |

वर्ष फल साधन

जिस संवत् या वर्ष का वर्ष लग्न निकालना हो, उस संवत् में से जातक के जन्म का संवत् घटाते से जो वर्ष शेष बचेगा वह गतवर्ष होंगे फिर वर्षफल सारणी में गत वर्षों के नीचे लिखे वार, घड़ी पलादि के ध्रुवांक को जातक के जन्म, वार, घड़ी, पलादि में जमा कर लेने पर आगामी वर्ष का वार एवं वर्षफल काल निकल आएगा। अब इस वर्षफल को स्थानिक लग्न सारणी की सहायता से जन्म लग्न की भान्ति ही वर्ष लग्न ज्ञात कर सकते हैं। फिर वर्ष प्रवेश के वर्षफल अनुसार ही हस्तस्थाना कर लें। उदाहरण सहित इसका स्पष्टीकरण हमारी प्रकाशित वर्षफल चन्द्रिका में पढ़ें।

मुन्था—जन्म लग्न राशि की संख्या में से गतवर्ष की संख्या को जोड़कर जो योगफल आए, उसे १२ से भाग देकर जो संख्या शेष रहे, उसी राशि अंक पर मुन्था स्थापित करनी चाहिए। मुन्था जन्म लग्न से प्रति वर्ष एक राशि आगे चलती है।

त्रिपताकी चक्र—त्रिपताकी का चन्द्रमा निकालने के लिए वर्ष प्रवेश की संख्या को १ द्वारा भाग दें। जो शेष बचे जन्मकुण्डली में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित है, उससे आगे उतने भाव गिनकर प्राप्त राशि अंक पर चन्द्रमा लगावें। शेष ग्रहों के लिए वर्ष प्रवेश संख्या में ४ द्वारा भाग दें। शेष को जन्मस्थान के ग्रहों से जहां वे स्थित हैं, उतना आगे गिनकर चक्र में लिखें।

मुद्रा दशा निकालना—गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें से दो घटायें, १ द्वारा भाग देने से जो शेष बचे तदनुसार दशा जाननी चाहिए। यदि १ बचे तो सूर्य की, २ बचें तो चन्द्रमा, ३ बचें तो मंगल, ४ से राहु, ५ बचें तो गुरु, ६ बचें तो शनि, ७ से बुध, ८ से

केतु, ९ अथवा ० बचे तो शुक्र की दशा जाननी चाहिए।

मुद्रा दशा के दिनादि—सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल के २१ दिन, राहु के ५४ दिन, गुरु के ४८ दिन, शनि के ५७ दिन, बुध के ५१ दिन, केतु के २१ दिन तथा शुक्र के ६० दिन मुद्रा दशा में होते हैं।

स्थानबल—सूर्य वर्ष लग्न से ९वें, चन्द्रमा ३९, मंगल ६९, बुध १, गुरु १९वें, शुक्र ५, शनि १२वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं। स्वभोच्चबल—सूर्य १५, चन्द्रमा २४, मंगल १८, १०, बुध ३६, वृहस्पति १२, ४, शुक्र २७, १२, शनि १०, ११, ७—इन राशियों में ५ बल देते हैं।

गुरुष-स्त्री ग्रहः—स्त्री ग्रह लग्न से १।२।३।७।८।९, घरों में ५ बल देते हैं और पुरुषग्रह लग्न से ४।५।६।१०।११।१२ घरों में ५ बल देते हैं। दिन के समय पुरुष ग्रह तथा रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

| मे. | व. | मि. | क. | सिं. | क. | तु. | व. | ध. | म. | कं. | मी. | राशि |
|-----|-----|-----|-----|------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----------|--------|
| स. | श. | श. | श. | बु. | चं. | बु. | मं. | श. | मं. | बु. | चं. | दिनपति |
| बु. | चं. | बु. | मं. | सू. | श. | श. | श. | मं. | बु. | चं. | रात्रिपति | |

वर्ष लग्न की जो राशि हो उसकी ऊपर की पंक्ति में राशि के सामने देखो और उसके नीचे यदि इष्ट दिन का हो तो दिनपति के सामने रात्रि का हो तो रात्रिपति के सामने और वर्ष लग्न की राशि के नीचे जो ग्रह है वही त्रिराशिपति होगा।

वर्ष कुण्डली में दृष्टि चक्र

| ग्रह | सू. | चं. | मं. | बु. | ध. | म. | कं. | मी. | राशि |
|-----------------|------|------|------|------|------|------|------|------|------|
| प्रत्यक्ष मित्र | ५-९ | ५-९ | ५-९ | ५-९ | ५-९ | ५-९ | ५-९ | ५-९ | ५-९ |
| गुप्त मित्र | ३-११ | ३-११ | ३-११ | ३-११ | ३-११ | ३-११ | ३-११ | ३-११ | ३-११ |
| प्रत्यक्ष शत्रु | १-७ | १-७ | १-७ | १-७ | १-७ | १-७ | १-७ | १-७ | १-७ |
| गुप्त शत्रु | ४-१० | ४-१० | ४-१० | ४-१० | ४-१० | ४-१० | ४-१० | ४-१० | ४-१० |

वर्ष कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो वह उस भाव से पांचवें और ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। तीसरे ग्यारहवें गुप्तमित्र दृष्टि से, पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से और ४-१० गुप्त शत्रु दृष्टि से देखते हैं।

(१) प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि शुभ और बलवान् होती है। (२) गुप्त मित्र दृष्टि सम है। (३) गुप्त शत्रु दृष्टि अशुभ है। (४) शत्रु दृष्टि अशुभ है।

दृष्टि फल

प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि—इस का फल कार्य में शीघ्र सफलता, सम्बन्धियों से सुख-प्रेम और लाभ इत्यादि इस से जिन मनुष्यों के साथ पहिले शत्रुता होती है उन से प्रेम उत्पन्न होता है तथा नए सम्बन्ध स्थापित होते हैं।

गुप्त शत्रु दृष्टि—यह प्रत्यक्ष दृष्टि से कुछ कम फलदायक है। अर्थात् कार्य बड़ी कठिनाई से सफलता को प्राप्त होता है, यह प्रत्यक्ष रूप में सहायता करने वाली होती है, परन्तु गुप्त रूप से शत्रुता करने वाली होती है।

गुप्त मित्र दृष्टि—इसका फल प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से कम होता है। यह भी कार्य में सफलता व लाभदायक है, परन्तु प्रत्यक्ष भाव से नहीं, गुप्त भाव से सफलता व कार्य सिद्ध होता है।

प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि—इसका फल शत्रुता उत्पन्न करना, बनता कार्य विगाड़ना, मित्र से वैर, धन हानि, मानसिक परेशानी, निकट बंधुओं से मन-मुटाव इत्यादि हैं।

वेध-सिद्ध नवीन मतानुसार वर्ष प्रवेश सारिणी

एक सौर वर्ष में सूर्य द्वारा उसी राशि, अंश, कला, विकला पर घूमकर पुनः जितना समय लगता है, उसकी अवधि (Duration) के सम्बन्ध भिन्न-भिन्न मत पाए जाते रहे हैं। "सूर्य सिद्धान्तानुसार" उक्त समय ३६५ दिन, १५ घड़ी, ३१ पल ३० विपल है, जबकि आधुनिक वैधशालाओं द्वारा प्रमाणित यह समय ३६५ दिन, १५ घड़ी २२ पल और साढ़े ५३ विपल होते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग ८३० पल अथवा ३ मिन्ट २७ सेकिण्ड का अन्तर पाया जाता है। प्रत्येक शताब्दि (वर्ष) यह अन्तर बढ़ता जाता है। फलस्वरूप वर्ष प्रवेश इष्ट एवं कभी-कभी एक-दो लगनों का भी अन्तर पड़ जाता है। गत पृष्ठों में हमने सूर्य सिद्धान्तानुसार वर्ष सारिणी पहिले की भान्ति ही दी हुई है। अब आजकल कुछ विद्वान नवीन वैधसिद्ध वर्ष सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। इससे फलादेश में भी अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। अधिक जानकारी हेतु हमारे ज्योतिष कार्यालय से 'वर्षफल चन्द्रिका' लेखक पण्डित पन्ना लाल गणितकर्ता (संशोधित संस्करण) मांगवा कर पढ़ें। यद्यपि परम्परागामी सूर्य-सिद्धान्तीय वर्ष सारिणी का ही प्रयोग कर रहे हैं।

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|--------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|-----|-----|-----|
| गताब्द | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | |
| वार | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | |
| घटी | १५ | ३० | ४६ | १ | १६ | ३२ | ४७ | ३ | १८ | ३३ | ४९ | १ | १६ | ३५ | ५० | ६ | २१ | ३६ | ५१ | ६ | २१ | ३६ | ५१ | ६ | २१ | ३६ | ५१ | ६ | २१ | ३६ | ५१ |
| पल | २२ | ४५ | ८ | ३१ | ५४ | १७ | ४० | ३ | २५ | ४८ | ११ | ३४ | ५७ | २० | ४३ | ६ | २९ | ५२ | ७५ | ९ | ३२ | ५५ | ७८ | १ | २४ | ४७ | ७० | ९३ | ११६ | १३९ | १६२ |
| विपल | ५३ | १६ | ३९ | ३२ | २५ | १८ | ११ | ०४ | ५७ | ५० | ४३ | ३६ | २९ | २२ | १५ | ८ | ०१ | ५४ | ४७ | ४० | ३३ | २६ | १९ | १२ | ०५ | ५८ | ५१ | ४४ | ३७ | ३० | |
| गताब्द | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० | |
| वार | ३ | ५ | ६ | ० | १ | ३ | ४ | ५ | ६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ० | १ | २ | ३ | ४ |
| घटी | ५६ | १२ | २७ | ४२ | ५८ | १३ | २९ | ४४ | ५९ | १५ | ३० | ४६ | १ | १६ | ३२ | ४७ | २ | १८ | ३३ | ४९ | ६ | २१ | ३६ | ५१ | ६ | २१ | ३६ | ५१ | ६ | २१ | ३६ |
| पल | ४९ | १२ | ३५ | ५८ | २० | ४३ | ६ | २९ | ५२ | १५ | ३८ | १ | २३ | ४६ | ९ | ३२ | ५५ | ७८ | ११ | ३४ | ५७ | ८० | ३ | २६ | ४९ | ७२ | ९५ | ११८ | १४१ | १६४ | १८७ |
| विपल | २३ | १६ | ९ | २ | ५५ | ४८ | ४१ | ३४ | २७ | २० | १३ | ६ | ५९ | ५२ | ४५ | ३८ | ३१ | २४ | १७ | १० | ०३ | ५६ | ४९ | ४२ | ३५ | २८ | २१ | १४ | ७ | ० | |
| गताब्द | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | |
| वार | ६ | ० | २ | ३ | ४ | ५ | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ |
| घटी | ३८ | ५३ | ९ | २४ | ३९ | ५५ | १० | २५ | ४१ | ५६ | १२ | २७ | ४२ | ५८ | १३ | २८ | ४४ | ५९ | १५ | ३० | ४५ | ०१ | १६ | ३२ | ४७ | ०२ | १८ | ३३ | ४८ | ०४ | |
| पल | १५ | ३८ | १ | २४ | ४७ | १० | ३३ | ५६ | १८ | ४१ | ४ | २७ | ५० | १३ | ३६ | ५९ | २२ | ४५ | ७ | ३० | ५३ | १६ | ३९ | ६२ | ८५ | १० | ३३ | ५६ | ७९ | १०२ | |
| विपल | ५३ | ५६ | ३९ | ३२ | २५ | १८ | ११ | ४ | ५७ | ५० | ४३ | ३६ | २९ | २२ | १५ | ८ | १ | ५४ | ४७ | ४० | ३३ | २६ | १९ | १२ | ०५ | ५८ | ५१ | ४४ | ३७ | ३० | |

वर्ष कुण्डली में मुंथा का महत्त्व

वर्ष कुण्डली में नवग्रहों के समान मुंथा की भी स्थापना की जाती है। मुंथा यद्यपि कोई ग्रह नहीं है, तो भी इसका फल ग्रह के समान ही महत्त्वपूर्ण है। मुंथा जन्म लग्न से प्रति वर्ष एक-एक राशि आगे चलती है। वर्ष कुण्डली में ४, ६, ७, ८ एवं १२वें भाव में स्थित मुंथा अशुभ फलदायक होती है। यदि ४, ६, ७, ८, १२वें भाव में शुभ ग्रह युक्त हो तो इतनी अधिक अनिष्टकारी नहीं होती। लगनादि द्वादश भावों में मुंथा का फल इस प्रकार होगा—(१) लग्न भाव में मुंथा स्थित हो तो उस वर्ष शत्रुओं का नाश, भाग्य में वृद्धि, सवारी का सुख, यदि घर राशि में हो तो स्थान परिवर्तन के भी योग बनते हैं। (२) द्वितीय भावस्थ मुंथा हो तो कठिन परिश्रम द्वारा धन लाभ एवं धन प्राप्ति के साधन बनते हैं। मनोरंजन एवं सुख साधनों पर व्यय भी बढ़ता है। (३) तृतीय भावस्थ मुंथा होने से शत्रुओं का नाश, भाइयों, मित्रों या उच्च पद प्राप्त महानुभावों का सहयोग प्राप्त होता है। (४) चतुर्थ भावस्थ मुंथा शरीर कष्ट, वायु विकार, अपने-परायों से विरोध, गुल चित्ताएँ, नौकरी और व्यवसाय में अनेक प्रकार के विघ्न, स्थान परिवर्तन आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (५) पंचमस्थ मुंथा अत्यन्त शुभ फल देने वाली होती है। सर्विस अथवा व्यापार में लाभ, धन, पुत्र एवं विद्या का लाभ, नए उद्योग से सफलता मिले। (६) षष्ठस्थ मुंथा हो तो शरीर कष्ट, शत्रुओं का भय, चित्त में अशांति, नानेक पक्ष की हानि, स्वभाव में चिड़चिड़ापन रहता है। (७) सप्तमस्थ मुंथा अशुभ रहती है। स्त्री अथवा निकट वन्धुओं की ओर से कलह-वैरोध, परिवारिक सदस्यों को कष्ट, बने बनाए कार्य बिगड़ना आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (८) अष्टमस्थ मुंथा होने से आशाओं में निराशा, पेट तथा अन्य गुल रोगों का भय, स्थान परिवर्तन, अनावश्यक यात्राओं तथा स्वास्थ्य पर भी अपव्यय होता है। (९) नवमस्थ मुंथा उत्तम फल देती है। नौकरी में पदोन्नति अथवा व्यवसाय में लाभ-वृद्धि, परिवारिक सुख एवं भाग्योन्नति होती है। (१०) दशमस्थ मुंथा होने से आर्थिक लाभ, सकारी क्षेत्र में यदि कोई कार्य रूका होगा तो पूरा होगा (अर्थात् लाभ होगा) तथा सोचें हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। (११) ग्यारहवें भाव में मुंथा होने से धन लाभ सुख-प्राप्ति, व्यापार और क्रय-विक्रय के कार्यों में लाभ होगा। (१२) द्वादशस्थ मुंथा आने से नया व्यापार तथा यात्रा करने से हानि, स्थान परिवर्तन के योग बनेंगे।

वेध सिद्ध शुद्ध वर्ष प्रवेश सारिणी (घण्टा-मिनटों में)

सूर्य सिद्धान्तानुसार 365 दिन, 15 घटी, 31 पल, 30 विपलों में—अर्थात् 365 दिन, 6 घण्टे, 12 मिनट एवं 36 सैकंडों में सूर्य पुनः उसी स्थान या बिन्दु पर आ जाता है। जबकि नवीन एवं आधुनिक अनुसंधानों से यह सिद्ध हो चुका है कि सूर्य (पृथ्वी) को पुनः उसी बिन्दु पर आने में 365 दिन, 6 घण्टे, 9 मिनट एवं 9 सैकंड लगते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग साढ़े तीन मिनटों अर्थात् 3 मिनट 27 सैकंड (प्रतिवर्ष) का अन्तर पड़ता है तथा वर्षमान सारिणी में यह अन्तर प्रतिवर्ष बढ़ता जाता है। 40 वर्षों के अंतराल में यह अन्तर 2 घण्टे 18 मिनट का हो जाएगा। जिससे प्राचीन सूर्य सिद्धान्तीय सारिणी से एक/दो लग्नों का अंतर हो जाना स्वाभाविक है।

आजकल अधिकांश ज्योतिषी वेध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। आधुनिक कम्प्यूटर प्रणाली द्वारा भी नवीन वर्ष प्रवेश सारिणी का ही अनुमोदन किया जाता है। गत वर्षों से पंचांग दिवाकर में नवीन सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी घड़ी/पलात्मक में दे चुके हैं। आगे वेध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष-प्रवेश सारिणी घण्टा/मिनटों में दे रहे हैं। वर्ष-लग्न निकालने के लिए इसका प्रयोग और भी अधिक सरल है।

प्रस्तुत सारिणी की प्रयोग विधि—आपको जिस साल का वर्ष प्रवेश ज्ञात करना हो, उस वर्ष में से जन्म वर्ष निकाल देने से हम गताब्द अर्थात् गतवर्ष मिलेंगे। गतवर्ष के सामने के वार एवं घंटा/मिंट को अपने जन्म वार एवं जन्म समय (स्टैं. टा.) में जमा कर देने से हमें नववर्ष प्रवेश कालीन वार एवं घण्टा-मिनट भा. स्टैं. टाइम में मिल जाएगा। नववर्ष प्रवेश स्टैं. घंटा/मिंट को दैनिक लग्न में देखने से हमें लग्न ज्ञात हो जाएगा। ध्यान रहे, सारिणी में जमा करने से जोड़ यदि 24 घं. से अधिक आ जाए, तो उसमें से 24 घंटा दें, तथा 1 वार जमा कर लें। वार की गणना रविवार से की जाती है।

उदाहरण—मान लो किसी जातक का जन्म 2 अक्टूबर, 1974 ई० में, बुधवार की प्रातः साढ़े पाँच (5/30) बजे हुआ। यदि हमने उस जातक का सन् 2005 ई. की वर्ष कुण्डली तैयार करनी है, तो 2005 ई. में से जन्म वर्ष घटा देने पर हमें 31 गतवर्ष प्राप्त हुए। आगे दो गई वर्ष प्रवेश सारिणी में गतवर्ष 31 के सामने हमें 3 वार, 22 घण्टे एवं 44 मिनट मिले। इनको जातक के जन्मवार एवं जन्म समय (5/30) में जमा कर देने से हमें 7 वार 28 घण्टे, 14 मिनट प्राप्त हुए। अब 28 घण्टों में से 24 घं. घटा देने और 1 वार बढ़ा देने से हमें 8 वार अर्थात् रविवार की प्रातः 4 बजकर, 14 मिनट प्राप्त हुए।

जन्त्री/पंचांग में दी गई है, लग्न सारिणी से देखने पर 1 अक्तू. की मध्य रात्रि एवं 2 अक्तू. की प्रातः 4 बजकर 14 पर हमें सिंह वर्ष लग्न प्राप्त हुआ। वर्ष लग्न सिंह में सं. २०६२ की पंचांग से 2 अक्तू. 2005 ई. प्रातः 4/14 स्टैं. टा. के ग्रह स्थापन करके हमें नववर्ष प्रवेश की कुण्डली प्राप्त होगी। मुंथा लगाने के लिए जातक के जन्म लग्न राशि में गतवर्ष जमा करके प्राप्त संख्या को 12 से भाग देने जो संख्या शेष बचे उसी राशि पर मुंथा स्थापित की जाती है।

वर्ष लग्न के अंश, कला, विकला जानने के लिए हमें वर्षेष्ट, सूर्य स्पष्ट तथा (जातक द्वारा वर्तमान में स्थायी तौर पर रह रहे) नगर की लग्न सारिणी का प्रयोग करना होगा। अधिक जानकारी एवं फलादेश के लिए हमारी प्रकाशित 'वर्षफल चन्द्रिका' पुस्तक का अध्ययन करें।

| | वार | घंटे | मिनट |
|--------------------------|-------|------|------|
| जन्म वार समयादि | 4 | 5 | 30 |
| सारिणी से प्राप्त संख्या | + 3 | 22 | 44 |
| | 8 | 28 | 14 |
| अर्थात् (रविवार) | 1 वार | 4 | 14 |

| गत वर्ष | वार | घंटे | मिंट | गत वर्ष | वार | घंटे | मिंट | गत वर्ष | वार | घंटे | मिंट | गत वर्ष | वार | घंटे | मिंट |
|---------|-----|------|------|---------|-----|------|------|---------|-----|------|------|---------|-----|------|------|
| 1 | 1 | 6 | 9 | 26 | 4 | 15 | 58 | 51 | 1 | 01 | 47 | 76 | 4 | 11 | 36 |
| 2 | 2 | 12 | 18 | 27 | 5 | 22 | 07 | 52 | 2 | 07 | 57 | 77 | 5 | 17 | 46 |
| 3 | 3 | 18 | 27 | 28 | 0 | 04 | 17 | 53 | 3 | 14 | 06 | 78 | 6 | 23 | 55 |
| 4 | 5 | 00 | 37 | 29 | 1 | 10 | 26 | 54 | 4 | 20 | 15 | 79 | 1 | 06 | 04 |
| 5 | 6 | 6 | 46 | 30 | 2 | 16 | 35 | 55 | 6 | 02 | 24 | 80 | 2 | 12 | 13 |
| 6 | 0 | 12 | 55 | 31 | 3 | 22 | 44 | 56 | 0 | 08 | 33 | 81 | 3 | 18 | 22 |
| 7 | 1 | 19 | 04 | 32 | 5 | 04 | 53 | 57 | 1 | 14 | 42 | 82 | 5 | 00 | 31 |
| 8 | 3 | 01 | 13 | 33 | 6 | 11 | 02 | 58 | 2 | 20 | 51 | 83 | 6 | 06 | 41 |
| 9 | 4 | 07 | 23 | 34 | 0 | 17 | 32 | 59 | 4 | 03 | 01 | 84 | 0 | 12 | 50 |
| 10 | 5 | 13 | 32 | 35 | 1 | 23 | 21 | 60 | 5 | 09 | 10 | 85 | 1 | 18 | 59 |
| 11 | 6 | 19 | 41 | 36 | 3 | 05 | 30 | 61 | 6 | 15 | 19 | 86 | 3 | 01 | 08 |
| 12 | 1 | 01 | 50 | 37 | 4 | 11 | 39 | 62 | 0 | 21 | 28 | 87 | 4 | 07 | 17 |
| 13 | 2 | 07 | 59 | 38 | 5 | 17 | 48 | 63 | 2 | 03 | 37 | 88 | 5 | 13 | 26 |
| 14 | 3 | 14 | 08 | 39 | 6 | 23 | 57 | 64 | 3 | 06 | 43 | 89 | 6 | 19 | 36 |
| 15 | 4 | 20 | 17 | 40 | 1 | 06 | 07 | 65 | 4 | 15 | 56 | 90 | 1 | 01 | 45 |
| 16 | 6 | 02 | 27 | 41 | 2 | 12 | 16 | 66 | 5 | 22 | 05 | 91 | 2 | 07 | 54 |
| 17 | 0 | 08 | 36 | 42 | 3 | 18 | 25 | 67 | 0 | 04 | 14 | 92 | 3 | 14 | 03 |
| 18 | 1 | 14 | 45 | 43 | 5 | 00 | 34 | 68 | 1 | 10 | 23 | 93 | 4 | 20 | 12 |
| 19 | 2 | 20 | 54 | 44 | 6 | 06 | 43 | 69 | 2 | 16 | 32 | 94 | 6 | 02 | 21 |
| 20 | 4 | 03 | 03 | 45 | 0 | 12 | 42 | 70 | 3 | 22 | 41 | 95 | 0 | 08 | 30 |
| 21 | 5 | 9 | 12 | 46 | | 19 | 02 | 71 | 5 | 04 | 51 | 96 | 1 | 14 | 40 |
| 22 | 6 | 15 | 22 | 47 | 3 | 01 | 11 | 72 | 6 | 11 | 00 | 97 | 2 | 20 | 49 |
| 23 | 0 | 21 | 31 | 48 | 4 | 07 | 20 | 73 | 0 | 17 | 09 | 98 | 4 | 20 | 58 |
| 24 | 2 | 03 | 40 | 49 | 5 | 13 | 29 | 74 | 1 | 23 | 18 | 99 | 5 | 09 | 07 |
| 25 | 3 | 09 | 49 | 50 | 6 | 19 | 38 | 75 | 3 | 05 | 27 | 100 | 6 | 15 | 16 |

श्री दुर्गा चरित् एवं सप्तशती की महिमा

कलियुग में समस्त दुःखों एवं कष्टों के निवारण का एकमात्र उपाय भगवती देवी दुर्गा की उपासना ही शास्त्रों में बतलाया गया है। "काली हि कार्या सिद्धयर्थमुपायं श्री दुर्गार्चनम् ॥" श्री दुर्गासप्तशती में वर्णित श्री दुर्गा जी के चरितों का विधिपूर्वक पाठ करने से मनुष्यों के पाप नष्ट होकर उन्हें धन-धान्य एवं सौभाग्यादि की प्राप्ति होती है। शुभ कार्यों में बार-बार पढ़ने वाले विष्णों की शान्ति होती है। विधिपूर्वक पाठ करने से जीवन के चारों क्षेत्रों-धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष में मनोवांछित फल प्रदान करने वाली भद्राकिनी है।

जो व्यक्ति चैत्र, आश्विनादि नवरात्रों में दीपावली, दशहरा, अष्टमी आदि पर्वों पर अथवा कोई आकस्मिक संकट उपस्थित हो जाने पर श्रद्धा भक्ति के साथ श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ करता है। मौ दुर्गा की कृपा शक्ति से समस्त विघ्न दूर होकर मनोवांछित फलों की प्राप्ति हो जाती है। पाठोपरांत पाठ की दशश्री संख्या में श्री दुर्गा हवन करने ४ शीघ्र ही कामना सिद्ध होती है।

श्री दुर्गासप्तशती मात्र धर्म ग्रन्थ ही नहीं, बल्कि एक सिद्ध ग्रन्थ है। श्री दुर्गा सप्तशती के प्रस्तुत नवीन संशोधित संस्करण में मूल पाठ के साथ हिन्दी टीका, श्री दुर्गा यन्त्र, संक्षिप्त पाठ विधि, श्री दुर्गा पाठ सार कथा, श्री नवदुर्गा महिमा, देवी कवच, अर्पला स्तोत्र, तीनों रहस्य, नवचण्डी, शतचण्डी-विधान, श्री सप्तशती के प्रत्येक अध्याय के मंत्रों की आहुतियां हवन विधि सहित, अनुष्ठान हेतु अनेक काम्य तांत्रिक प्रयोग, कनकधारा स्तोत्र, आरतियां इत्यादि अनेक नवीन विषय जो अन्य किसी भी अन्य प्रचलित सप्तशती में आए नहीं पाएंगे। मूल पाठ के साथ हवन विधि भी (हिन्दी) टीका सहित दी गई है जिससे कर्मकाण्डी पण्डित जी के अतिरिक्त साधारण श्रद्धालु भी विधि अनुसार पाठ करके भगवती देवी की कृपा के पात्र बन सकते हैं। धर्म पारायण प्रत्येक पाठक के लिए संग्रहणीय एवं उपयोगी पुस्तक। इसमें दिए गए तांत्रिक प्रयोगों की सहायता से मनोवांछित कामनाओं की सहज पूर्ति हो सकती है। श्री दुर्गासप्तशती (सरल भाषा में) भी उपलब्ध है। श्री दुर्गाचन सृति भी उपलब्ध है।

भेट—55 रुपए डाक व्यय 20 रु. अलग ॥

नोट—कार्यालय के नियमानुसार 50 रु. अग्रिम मनीआर्डर द्वारा भेजें।

प्रकाशक—जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर।

—स्मार्त और वैष्णव का भेद—

वेद, श्रुति-स्मृति आदि ग्रन्थों को मानने वाले धर्म परायण प्रायः सभी गृहस्थी लोग स्मार्त कहलाते हैं। इनके लिए व्रतोपवास आदि के साधारण नियम ही अनुसरणीय होते हैं। पंजाब, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर, हरियाणा, दिल्ली, महाराष्ट्र, राज. आदि के निवासी गृहस्थी प्रायः स्मार्त के अन्तर्गत आते हैं।

वैष्णव-वह धर्म परायण लोग जिन्होंने किसी प्रतिष्ठित वैष्णव सम्प्रदाय के गुरु से दीक्षा ग्रहण की हो, गले में श्री गुरु द्वारा दी गई कण्ठी धारण की गई हो तथा मस्तक एवं गले पर श्री खण्ड चन्दन या गोपी चन्दन के तिलक त्रिपुण्ड्र आदि के चिन्ह धारण किए हुए एवं विशिष्ट सम्प्रदाय से सम्बन्धित भक्त जन वैष्णव कहलाते हैं।

धर्म सिन्धुकार ने एकादशी, अष्टमी आदि व्रतों में स्मार्त एवं गृहस्थ जनों को पूर्वा विदा में व्रतादि करने का निर्देश दिया है, जबकि वैष्णवों एवं विधवाओं आदि को परवर्ती तिथि में व्रतादि करने का निर्देश दिया है—

"स्मार्तानां गृहिणां पूर्वा पोष्या। यतिभिर्निकाय गृहिभि-वनस्थै विधवाभिवेष्णवैश्च परैवोष्या ॥"

किसी ग्रह के अंश कलादि स्पष्ट के द्वारा नक्षत्र-पाद (चरण) आरम्भ ज्ञात करना (आरम्भ काल)

सूर्य चन्द्रादि ग्रह अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों के क्रांतिवृत्त (Zodiac = 360°) को पूरा परिभ्रमण करने में अलग-अलग समय लेते हैं। ३६० अंश को २७ द्वारा भाग देने से प्रति नक्षत्र का मध्यम मान १३ अंश २० कला बनता है तथा एक नक्षत्र के चार चरण (पाद) होने से प्रत्येक नक्षत्र पाद को भोग्य मान ३०-२०' (अंश कला) होगा (१३०-२०') ÷ 4 = 3°-20' शून्य से आरम्भ होकर प्रत्येक ग्रह इसी भांति क्रमानुसार नक्षत्र चरण राशि आदि परिवर्तन करता है। अधिक व्याख्या हेतु देखें ज्यो. तत्व।

| रा. अं. क. | नक्षत्रपाद राशि | रा. अं. क. | नक्षत्रपाद राशि | रा. अं. क. | नक्षत्रपाद राशि |
|------------|--------------------|------------|-----------------|------------|-----------------|
| ०-००-०० | अश्विनी (१) मेघे | ४-००-०० | मघा (१) सिंहे | ८-००-०० | मूला (१) धनु |
| ०-०३-२० | " (२) | ४-०३-२० | " (२) | ८-०३-२० | " (२) |
| ०-०६-४० | " (३) | ४-०६-४० | " (३) | ८-०६-४० | " (३) |
| ०-१०-०० | " (४) | ४-१०-०० | " (४) | ८-१०-०० | " (४) |
| ०-१३-२० | भरणी (१) | ४-१३-२० | पूर्वा (१) | ८-१३-२० | पूर्वा (१) |
| ०-१६-४० | " (२) | ४-१६-४० | " (२) | ८-१६-४० | " (२) |
| ०-२०-०० | " (३) | ४-२०-०० | " (३) | ८-२०-०० | " (३) |
| ०-२३-२० | " (४) | ४-२३-२० | " (४) | ८-२३-२० | " (४) |
| ०-२६-४० | कृत्तिका (१) मेघे | ४-२६-४० | उषा (१) | ८-२६-४० | उषा (१) |
| १-००-०० | " (२) वृषे | ५-००-०० | " (२) कन्या | ९-००-०० | उषा (१) मक |
| १-०३-२० | " (३) | ५-०३-२० | " (३) | ९-०३-२० | " (३) |
| १-०६-४० | " (४) | ५-०६-४० | " (४) | ९-०६-४० | " (४) |
| १-१०-०० | रोहिणी (१) | ५-१०-०० | हस्ते (१) | ९-१०-०० | श्रव (१) |
| १-१३-२० | " (२) | ५-१३-२० | " (२) | ९-१३-२० | " (२) |
| १-१६-४० | " (३) | ५-१६-४० | " (३) | ९-१६-४० | " (३) |
| १-२०-०० | " (४) | ५-२०-०० | " (४) | ९-२०-०० | " (४) |
| १-२३-२० | मृगशिरा (१) | ५-२३-२० | चित्रा (१) | ९-२३-२० | धनि (१) |
| १-२६-४० | " (२) | ५-२६-४० | " (२) | ९-२६-४० | " (२) |
| २-००-०० | " (३) मिथुन | ६-००-०० | चित्रा (२) गुला | १०-००-०० | " (३) कुम्भे |
| २-०३-२० | " (४) | ६-०३-२० | " (४) | १०-०३-२० | " (४) |
| २-०६-४० | आर्द्रा (१) | ६-०६-४० | स्वाती (१) | १०-०६-४० | शतीष्या (१) |
| २-१०-०० | " (२) | ६-१०-०० | " (२) | १०-१०-०० | " (२) |
| २-१३-२० | " (३) | ६-१३-२० | " (३) | १०-१३-२० | " (३) |
| २-१६-४० | " (४) | ६-१६-४० | " (४) | १०-१६-४० | " (४) |
| २-२०-०० | पुनर्वसु (१) | ६-२०-०० | विशाखा (१) | १०-२०-०० | पूषा (१) |
| २-२३-२० | " (२) | ६-२३-२० | " (२) | १०-२३-२० | " (२) |
| २-२६-४० | " (३) | ६-२६-४० | " (३) | १०-२६-४० | " (३) |
| ३-००-०० | पुनर्वसु (४) कर्के | ७-००-०० | " (४) वृश्चिके | ११-००-०० | पूषा (४) मीने |
| ३-०३-२० | पुष्ये (१) | ७-०३-२० | अनुराधा (१) | ११-०३-२० | उभा (१) |
| ३-०६-४० | " (२) | ७-०६-४० | " (२) | ११-०६-४० | " (२) |
| ३-१०-०० | " (३) | ७-१०-०० | " (३) | ११-१०-०० | " (३) |
| ३-१३-२० | " (४) | ७-१३-२० | " (४) | ११-१३-२० | उभा (४) |
| ३-१६-४० | अश्ले (१) | ७-१६-४० | ज्ये (१) | ११-१६-४० | रेवती (१) |
| ३-२०-०० | " (२) | ७-२०-०० | " (२) | ११-२०-०० | " (२) |
| ३-२३-२० | " (३) | ७-२३-२० | " (३) | ११-२३-२० | " (३) |
| ३-२६-४० | " (४) | ७-२६-४० | " (४) | ११-२६-४० | रेवती (४) मेषे |

'दैनिक लगन सारिणी'—दिल्ली-के लगन ज्ञान

[जालन्धर की दै. लगन सारणी के अतिरिक्त दिल्ली की दैनिक सारिणी]

आगामी पृष्ठों में दो गई लगन सारणी में अंग्रेजी तारीखों के अनुसार दिल्ली में निरयण मेघादि लगनों का समाप्ति काल घंटा-मिंट भा० स्टैं० टा० में दिया गया है। किसी महीने की तारीख को कौन-सा लगन कब समाप्त होगा। यह इस सारिणी से शीघ्र ही जाना जा सकता है। सूक्ष्मता के लिए आगामी पृष्ठ में दो गई वार्षिक संस्कार तालिका का भी प्रयोग कर लेना उचित रहेगा। लगन सम्बन्धी और अधिक सूक्ष्मता एवं स्पष्टता लाने के लिए गत पृष्ठों में दो गई दिल्ली की लगन सारिणी (अक्षांश २९°, पलभा आधारित) का जन्मेष्ट एवं सूर्य स्पष्ट का प्रयोग करते हुए सूक्ष्म लगन स्पष्ट भी ज्ञात कर सकते हैं।

‘‘ज्योतिष तत्त्व’’ (फलित खण्ड—दो भागों में)

प्रस्तुत 'ज्योतिष तत्त्व' फलित खण्ड में फलित ज्योतिष सम्बन्धी अद्वितीय सूत्र जो आपको फलित ज्योतिष की किसी भी अन्य पुस्तक में उपलब्ध नहीं होंगे—दिए गए हैं। इस पुस्तक में ज्योतिष सम्बन्धी प्रारम्भिक जानकारी, फलादेश सम्बन्धी अद्वितीय एवं उपयोगी सूत्र, द्वादश भावों में विचारणीय विषय, भाव, भावेश एवं कारकत्व, फलादेश कथन सम्बन्धी विशेष नियम, मेघ से मीन लगन पर्यन्त—प्रत्येक लगन के अन्तर्गत नवग्रहों का पृथक्-२ फल तथा प्रत्येक लगन में उदाहरण कुण्डलियां, भचक्र में लगन राशि की स्थिति, लगन की चारित्रिक विशेषताएँ, तदनन्तर जन्मपत्री में चलित एवं सुदर्शन चक्रों का महत्त्व, ग्रहों की दृष्टियों का फल, देष्काण, नवांशादि कुण्डलियों का उदाहरण सहित फल, विदेश यात्रा तथा अन्य सम्बन्धी विविध योग, विपुल धन योग, गोचर एवं अष्टकवर्ग फल विचार विशेषतरी तथा योगिनी दशाऽन्तर्दशा फल, मंगलीक योग पर, स्त्री जातिका फल, विचारआदि विविध एवं उपयोगी विषयों को सरल, सारगर्भित एवं बोधमय शैली में प्रस्तुत किया गया है। ज्योतिष में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों एवं ज्योतिषियों के लिए अत्यन्त उपयोगी एवं संग्रहणीय ग्रन्थ है। आज ही स्थानीय पुस्तक विक्रेता से खरीदें अथवा सीधे मंगवाएँ। दोनों भाग का मूल्य—500/- रुपए

—जनरल बुक डिपो, अट्टा होशियारपुर, जालन्धर शहर—144008 (पंजाब)

अथ केरल प्रश्न चक्रम्

प्रातः काले वदेत्पुष्पं मय्याहे तु फलं वदेत् ॥ सायंकाले वदेन्मन्त्रः रात्रौ तु देवतां वदेत् ॥१॥

| व्यञ्ज | धूप | सिंह | श्वान | घृष | खर | गज | व्यांक्ष | व्यजादि अष्टक वर्गाः |
|---|---|--|--|---|--|--|--|---|
| अ इ उ ए ओ अस्ति धातु कुशल स्थिर समीप स्वल्प पत्र गोधूम कुसुम्भ सुख ४५ दिन लाभ पूर्व ब्राह्मण उखल भैरव आगम जय न मोक्ष ७ दिन स्थिर शुभः पुत्र १०० वर्ष लाभ विलम्ब ७ दिन | क ख घ ङ नस्ति धातु रोग महाकष्ट समीप सप्त अस्थि तिल श्वेतांग कष्ट दो मास हानि आनये क्षत्रिय अग्निगृहे दुर्गा न आगम हानि मोक्ष १ वर्ष न सिद्धि कलह कन्या १ वर्ष न लाभ उत्तम ७ दिन | च छ ज झ ञ अस्ति मूल सुख चंचल दूरस्थ एकविंश फल पीतान लोहिता सुख ४५ दिन लाभ दक्षिण वैश्य अरण्ये सूर्य आगम जय न मोक्ष १५ दिन कलह शुभ पुत्र १०० वर्ष लाभ विलम्ब ३० दिन | ट ठ ड ढ ण नस्ति जीव कष्ट चंचल पुनर्गत एकमास काष्ठ दाल पांडु कष्ट १ मास हानि नर्ऋत्य शूद्र अन्तरिक्ष हनुमन्त न आगम हानि मोक्ष ६ मास दीर्घकाल कलह कन्या २० वर्ष न लाभ उत्तम २० दिन | त थ द ध ण अस्ति जीव सुख महाकष्ट मार्गस्थ ४५ दिन धान्य तण्डुल पीत सुख १५ दिन लाभ पश्चिम धनिक भांडगते रुद्राण आगम जय न मोक्ष १ मास त्वरित शुभ पुत्र ६० वर्ष लाभ विलम्ब १० मास २ मास | प फ ब भ म नस्ति जीव कष्ट मार्गस्थ दो मास तृण चणक आकाश कष्ट १ मास हानि वायव्य नौकर काष्ठगते सरस्वती न आगम हानि मोक्ष ६ मास दीर्घकाल कलह कन्या १२ वर्ष न लाभ उत्तम २ मास | य र ल व अस्ति मूल सुख दूरस्थ दो मास जीव गुण श्याम सुख ७ दिन लाभ उत्तर नीच गृहे गणेश आगम जय न मोक्ष ३ मास स्थिर शुभः पुत्र ४५ वर्ष लाभ विलम्ब २ मास | श ष स ह नस्ति जीव कष्ट पुनर्गत एकवर्ष पुष्प यव मिश्र कष्ट २ मास हानि ईशान नाई भूमिस्थे पितर न आगम हानि जय न मोक्ष १ वर्ष न सिद्धि कलह कन्या ६ वर्ष न लाभ उत्तम २ मास | व्यजादि अष्टक वर्गाः उच्चारित प्रश्नक्षरिणि सत्यासत्य प्रश्न निर्णयः धातु मूल जीव ज्ञान प्रवासी सुख दुःख प्रवासी चर स्थिरादिज्ञानम् प्रवासी गमागम ज्ञानम् प्रवासी दिनावधि ज्ञानम् मुष्टि प्रश्ने द्रव्यं ज्ञानम् गोधूमादि धान्य ज्ञानम् मुष्टि प्रश्ने वर्णं ज्ञानम् रोगी प्रश्ने सुखादि ज्ञानम् कष्ट दिनादि ज्ञानम् नष्ट लाभालाभ ज्ञानम् नष्ट लाभालाभ ज्ञानम् चौर जाति प्रश्ने ज्ञानम् चोरित द्रव्य स्थानम् देव पूजा उपासनादि शत्रु गमागम प्रश्न ज्ञानम् जय हानि प्रश्न ज्ञानम् बन्दी मोक्षामोक्ष ज्ञानम् बन्दी मोक्षा अवधि कार्यासिद्धिभविष्यति नवा विवाह प्रश्ने शुभाशुभम् पुत्र व कन्या प्राप्ति ज्ञानम् आयु प्रश्ने आयु ज्ञानम् धन लाभ प्रश्ने लाभालाभ वर्षा प्रश्ने भविष्यति नवा वर्षा वर्षादि दिनादि |

| दैनिक लग्न सारणी जनवरी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI | | | | | | | | | | | | | दैनिक लग्न सारणी फरवरी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI | | | | | | | | | | | | |
|---|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|--|
| ता. | मकर | कुम्भ | मीन | मेघ | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेघ | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | |
| चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | |
| 1 | 8 10 | 9 53 | 11 21 | 12 45 | 14 21 | 16 16 | 18 30 | 20 50 | 23 09 | 1 25 | 3 43 | 6 02 | 1 | 7 51 | 9 19 | 10 43 | 12 19 | 14 14 | 16 28 | 18 49 | 21 07 | 23 23 | 1 40 | 4 00 | |
| 2 | 8 06 | 9 49 | 11 17 | 12 41 | 14 17 | 16 12 | 18 26 | 20 47 | 23 05 | 1 21 | 3 39 | 5 58 | 2 | 7 47 | 9 15 | 10 39 | 12 15 | 14 10 | 16 24 | 18 45 | 21 03 | 23 19 | 1 36 | 3 56 | |
| 3 | 8 02 | 9 45 | 11 13 | 12 37 | 14 13 | 16 08 | 18 22 | 20 43 | 23 01 | 1 17 | 3 35 | 5 54 | 3 | 7 43 | 9 11 | 10 35 | 12 11 | 14 06 | 16 20 | 18 41 | 20 59 | 23 15 | 1 32 | 3 52 | |
| 4 | 7 53 | 9 41 | 11 09 | 12 33 | 14 09 | 16 04 | 18 18 | 20 39 | 22 57 | 1 13 | 3 31 | 5 50 | 4 | 7 39 | 9 07 | 10 31 | 12 07 | 14 02 | 16 16 | 18 37 | 20 55 | 23 11 | 1 28 | 3 48 | |
| 5 | 7 54 | 9 37 | 11 05 | 12 29 | 14 05 | 16 00 | 18 14 | 20 35 | 22 53 | 1 09 | 3 27 | 5 46 | 5 | 7 35 | 9 03 | 10 27 | 12 03 | 13 58 | 16 12 | 18 33 | 20 52 | 23 07 | 1 24 | 3 44 | |
| 6 | 7 50 | 9 33 | 11 01 | 12 25 | 14 01 | 15 56 | 18 10 | 20 31 | 22 49 | 1 05 | 3 23 | 5 42 | 6 | 7 31 | 8 59 | 10 23 | 11 59 | 13 54 | 16 08 | 18 29 | 20 48 | 23 03 | 1 21 | 3 40 | |
| 7 | 7 46 | 9 29 | 10 57 | 12 21 | 13 57 | 15 52 | 18 06 | 20 27 | 22 45 | 1 01 | 3 19 | 5 38 | 7 | 7 27 | 8 55 | 10 19 | 11 55 | 13 50 | 16 04 | 18 25 | 20 44 | 22 59 | 1 17 | 3 36 | |
| 8 | 7 42 | 9 25 | 10 53 | 12 17 | 13 53 | 15 48 | 18 02 | 20 23 | 22 41 | 0 57 | 3 15 | 5 34 | 8 | 7 23 | 8 51 | 10 15 | 11 51 | 13 46 | 16 00 | 18 21 | 20 40 | 22 55 | 1 13 | 3 32 | |
| 9 | 7 38 | 9 21 | 10 49 | 12 13 | 13 49 | 15 44 | 17 58 | 20 18 | 22 37 | 0 53 | 3 11 | 5 30 | 9 | 7 19 | 8 47 | 10 11 | 11 47 | 13 42 | 15 56 | 18 18 | 20 36 | 22 51 | 1 09 | 3 28 | |
| 10 | 7 34 | 9 17 | 10 45 | 12 09 | 13 45 | 15 40 | 17 54 | 20 15 | 22 33 | 0 49 | 3 07 | 5 26 | 10 | 7 15 | 8 43 | 10 07 | 11 43 | 13 38 | 15 52 | 18 14 | 20 32 | 22 47 | 1 05 | 3 24 | |
| 11 | 7 30 | 9 13 | 10 41 | 12 05 | 13 41 | 15 36 | 17 50 | 20 11 | 22 29 | 0 45 | 3 03 | 5 22 | 11 | 7 11 | 8 39 | 10 03 | 11 39 | 13 34 | 15 48 | 18 10 | 20 28 | 22 43 | 1 01 | 3 20 | |
| 12 | 7 26 | 9 09 | 10 37 | 12 01 | 13 37 | 15 32 | 17 46 | 20 07 | 22 25 | 0 41 | 2 59 | 5 18 | 12 | 7 07 | 8 35 | 9 59 | 11 35 | 13 30 | 15 44 | 18 06 | 20 24 | 22 39 | 24 57 | 3 16 | |
| 13 | 7 22 | 9 05 | 10 33 | 11 57 | 13 33 | 15 28 | 17 42 | 20 04 | 22 22 | 0 37 | 2 55 | 5 14 | 13 | 7 04 | 8 31 | 9 55 | 11 31 | 13 26 | 15 40 | 18 02 | 20 20 | 22 35 | 24 53 | 3 12 | |
| 14 | 7 18 | 9 01 | 10 29 | 11 53 | 13 29 | 15 24 | 17 38 | 20 00 | 22 18 | 0 33 | 2 51 | 5 10 | 14 | 7 00 | 8 27 | 9 51 | 11 27 | 13 22 | 15 36 | 17 58 | 20 16 | 22 31 | 24 49 | 3 08 | |
| 15 | 7 14 | 8 57 | 10 25 | 11 49 | 13 25 | 15 20 | 17 34 | 19 56 | 22 14 | 0 29 | 2 47 | 5 6 | 15 | 6 56 | 8 23 | 9 47 | 11 23 | 13 18 | 15 32 | 17 54 | 20 12 | 22 27 | 24 45 | 3 04 | |
| 16 | 7 10 | 8 54 | 10 22 | 11 46 | 13 22 | 15 17 | 17 31 | 19 52 | 22 10 | 0 26 | 2 43 | 5 2 | 16 | 6 52 | 8 19 | 9 43 | 11 19 | 13 14 | 15 28 | 17 50 | 20 08 | 22 23 | 24 41 | 3 00 | |
| 17 | 7 06 | 8 50 | 10 18 | 11 42 | 13 18 | 15 13 | 17 27 | 19 48 | 22 06 | 0 22 | 2 39 | 4 58 | 17 | 6 48 | 8 15 | 9 39 | 11 15 | 13 10 | 15 24 | 17 46 | 20 04 | 22 19 | 24 37 | 2 56 | |
| 18 | 7 02 | 8 46 | 10 14 | 11 38 | 13 14 | 15 09 | 17 23 | 19 44 | 22 02 | 0 18 | 2 35 | 4 54 | 18 | 6 44 | 8 11 | 9 35 | 11 11 | 13 06 | 15 20 | 17 42 | 20 00 | 22 15 | 24 33 | 2 52 | |
| 19 | 6 58 | 8 42 | 10 10 | 11 34 | 13 10 | 15 05 | 17 19 | 19 40 | 21 58 | 0 14 | 2 31 | 4 51 | 19 | 6 40 | 8 07 | 9 31 | 11 07 | 13 02 | 15 16 | 17 38 | 19 56 | 22 11 | 24 29 | 2 48 | |
| 20 | 6 54 | 8 38 | 10 06 | 11 30 | 13 06 | 15 01 | 17 15 | 19 36 | 21 54 | 0 10 | 2 27 | 4 47 | 20 | 6 36 | 8 04 | 9 28 | 11 04 | 12 58 | 15 13 | 17 34 | 19 52 | 22 07 | 24 25 | 2 44 | |
| 21 | 6 50 | 8 34 | 10 02 | 11 26 | 13 02 | 14 57 | 17 11 | 19 32 | 21 50 | 0 6 | 2 23 | 4 43 | 21 | 6 32 | 8 00 | 9 24 | 11 00 | 12 55 | 15 09 | 17 30 | 19 48 | 22 03 | 24 21 | 2 41 | |
| 22 | 6 47 | 8 30 | 9 58 | 11 22 | 12 58 | 14 53 | 17 07 | 19 28 | 21 46 | 0 2 | 2 19 | 4 39 | 22 | 6 28 | 7 56 | 9 20 | 10 56 | 12 51 | 15 05 | 17 26 | 19 44 | 21 59 | 24 17 | 2 37 | |
| 23 | 6 43 | 8 26 | 9 54 | 11 18 | 12 54 | 14 49 | 17 03 | 19 24 | 21 42 | 23 58 | 2 15 | 4 35 | 23 | 6 24 | 7 52 | 9 16 | 10 52 | 12 47 | 15 01 | 17 22 | 19 40 | 21 55 | 24 14 | 2 33 | |
| 24 | 6 39 | 8 22 | 9 50 | 11 14 | 12 50 | 14 45 | 16 59 | 19 20 | 21 38 | 23 54 | 2 12 | 4 31 | 24 | 6 20 | 7 48 | 9 12 | 10 48 | 12 43 | 14 57 | 17 18 | 19 36 | 21 51 | 24 10 | 2 29 | |
| 25 | 6 35 | 8 18 | 9 46 | 11 10 | 12 46 | 14 41 | 16 55 | 19 16 | 21 34 | 23 50 | 2 08 | 4 27 | 25 | 6 16 | 7 44 | 9 08 | 10 44 | 12 39 | 14 53 | 17 14 | 19 32 | 21 47 | 24 06 | 2 25 | |
| 26 | 6 31 | 8 15 | 9 43 | 11 07 | 12 43 | 14 38 | 16 52 | 19 13 | 21 31 | 23 47 | 2 04 | 4 23 | 26 | 6 12 | 7 40 | 9 04 | 10 40 | 12 35 | 14 49 | 17 10 | 19 28 | 21 43 | 24 02 | 2 21 | |
| 27 | 6 27 | 8 11 | 9 39 | 11 03 | 12 39 | 14 34 | 16 48 | 19 09 | 21 27 | 23 43 | 2 00 | 4 19 | 27 | 6 08 | 7 36 | 9 00 | 10 36 | 12 31 | 14 45 | 17 06 | 19 24 | 21 39 | 23 58 | 2 17 | |
| 28 | 6 23 | 8 07 | 9 35 | 10 59 | 12 35 | 14 30 | 16 44 | 19 05 | 21 23 | 23 39 | 1 56 | 4 16 | 28 | 6 05 | 7 33 | 8 57 | 10 32 | 12 27 | 14 41 | 17 02 | 19 20 | 21 35 | 23 54 | 2 13 | |
| 29 | 6 19 | 8 03 | 9 31 | 10 55 | 12 31 | 14 26 | 16 40 | 19 01 | 21 19 | 23 35 | 1 52 | 4 12 | 29 | 6 01 | 7 29 | 8 53 | 10 28 | 12 23 | 14 37 | 16 56 | 19 14 | 21 29 | 23 49 | 2 11 | |
| 30 | 6 15 | 7 59 | 9 27 | 10 51 | 12 27 | 14 22 | 16 36 | 18 57 | 21 15 | 23 31 | 1 48 | 4 08 | 30 | 6 00 | 7 28 | 8 52 | 10 27 | 12 22 | 14 36 | 16 55 | 19 13 | 21 28 | 23 48 | 2 10 | |
| 31 | 6 12 | 7 55 | 9 23 | 10 47 | 12 23 | 14 18 | 16 32 | 18 53 | 21 11 | 23 27 | 1 44 | 4 04 | फर | 6 08 | 7 25 | 8 49 | 10 24 | 12 19 | 14 33 | 16 52 | 19 10 | 21 25 | 23 45 | 2 08 | |

| दैनिक लग्न सारणी | | भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली | | | | | | | | | | भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली | | | | | | | | | | | | | |
|------------------|----------|----------------------------------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------------------------------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|-----|
| मेघ | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेघ | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेघ | |
| चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | |
| 1 | 628 | 823 | 1037 | 1258 | 1515 | 1731 | 1950 | 2209 | 0013 | 156 | 323 | 447 | 1 | 620 | 835 | 1054 | 1312 | 1529 | 1747 | 2006 | 2210 | 2353 | 121 | 245 | 421 |
| 2 | 624 | 819 | 1033 | 1254 | 1511 | 1727 | 1946 | 2205 | 0009 | 152 | 319 | 444 | 2 | 616 | 831 | 1050 | 1308 | 1525 | 1743 | 2002 | 2206 | 2349 | 117 | 241 | 417 |
| 3 | 620 | 815 | 1029 | 1250 | 157 | 1724 | 1942 | 2201 | 0005 | 148 | 316 | 440 | 3 | 612 | 827 | 1046 | 1304 | 1521 | 1739 | 1958 | 2202 | 2345 | 113 | 237 | 413 |
| 4 | 616 | 811 | 1025 | 1246 | 153 | 1720 | 1938 | 2157 | 0001 | 144 | 312 | 436 | 4 | 608 | 823 | 1042 | 1300 | 1517 | 1735 | 1954 | 2158 | 2341 | 109 | 233 | 409 |
| 5 | 612 | 807 | 1021 | 1242 | 1459 | 1716 | 1934 | 2153 | 2357 | 140 | 308 | 432 | 5 | 604 | 819 | 1038 | 1256 | 1513 | 1731 | 1950 | 2154 | 2337 | 105 | 229 | 405 |
| 6 | 608 | 803 | 1017 | 1238 | 1455 | 1712 | 1930 | 2149 | 2353 | 136 | 304 | 428 | 6 | 600 | 815 | 1034 | 1252 | 1509 | 1727 | 1946 | 2150 | 2333 | 101 | 225 | 401 |
| 7 | 604 | 759 | 1013 | 1234 | 1451 | 1708 | 1926 | 2145 | 2349 | 132 | 300 | 424 | 7 | 557 | 811 | 1031 | 1248 | 1505 | 1723 | 1942 | 2146 | 2329 | 2457 | 221 | 358 |
| 8 | 600 | 755 | 1009 | 1230 | 1447 | 1704 | 1922 | 2141 | 2345 | 128 | 256 | 420 | 8 | 553 | 807 | 1027 | 1244 | 1501 | 1719 | 1939 | 2143 | 2326 | 2453 | 217 | 354 |
| 9 | 556 | 751 | 1005 | 1226 | 1443 | 1700 | 1918 | 2137 | 2341 | 124 | 252 | 416 | 9 | 549 | 803 | 1023 | 1240 | 1458 | 1716 | 1935 | 2139 | 2322 | 2449 | 213 | 350 |
| 10 | 552 | 747 | 1001 | 1222 | 1439 | 1656 | 1914 | 2133 | 2337 | 120 | 248 | 412 | 10 | 545 | 759 | 1019 | 1237 | 1454 | 1712 | 1931 | 2135 | 2318 | 2446 | 209 | 346 |
| 11 | 548 | 744 | 957 | 1218 | 1435 | 1652 | 1910 | 2129 | 2333 | 116 | 244 | 408 | 11 | 541 | 755 | 1015 | 1233 | 1450 | 1708 | 1927 | 2131 | 2314 | 2442 | 205 | 342 |
| 12 | 544 | 740 | 953 | 1214 | 1431 | 1648 | 1906 | 2125 | 2329 | 112 | 240 | 404 | 12 | 537 | 751 | 1011 | 1229 | 1446 | 1704 | 1923 | 2127 | 2310 | 2438 | 202 | 338 |
| 13 | 540 | 736 | 949 | 1210 | 1428 | 1644 | 1902 | 2121 | 2325 | 108 | 236 | 400 | 13 | 533 | 747 | 1007 | 1225 | 1442 | 1700 | 1919 | 2123 | 2306 | 2434 | 158 | 334 |
| 14 | 536 | 732 | 945 | 1206 | 1424 | 1640 | 1858 | 2117 | 2321 | 104 | 232 | 356 | 14 | 529 | 743 | 1003 | 1221 | 1438 | 1656 | 1915 | 2119 | 2302 | 2430 | 154 | 330 |
| 15 | 532 | 728 | 941 | 1202 | 1420 | 1636 | 1854 | 2113 | 2317 | 100 | 228 | 352 | 15 | 525 | 739 | 959 | 1217 | 1434 | 1652 | 1911 | 2115 | 2258 | 2426 | 150 | 326 |
| 16 | 528 | 724 | 937 | 1158 | 1416 | 1632 | 1850 | 2109 | 2313 | 2456 | 224 | 348 | 16 | 521 | 735 | 955 | 1213 | 1430 | 1648 | 1907 | 2111 | 2254 | 2422 | 146 | 322 |
| 17 | 524 | 720 | 933 | 1154 | 1412 | 1628 | 1846 | 2105 | 2309 | 2452 | 220 | 344 | 17 | 517 | 731 | 951 | 1209 | 1426 | 1644 | 1903 | 2107 | 2250 | 2418 | 142 | 318 |
| 18 | 520 | 716 | 929 | 1150 | 1408 | 1624 | 1842 | 2101 | 2305 | 2448 | 216 | 340 | 18 | 513 | 727 | 947 | 1205 | 1422 | 1640 | 1859 | 2103 | 2246 | 2414 | 138 | 314 |
| 19 | 516 | 712 | 925 | 1146 | 1404 | 1620 | 1838 | 2057 | 2301 | 2444 | 212 | 336 | 19 | 509 | 723 | 943 | 1202 | 1418 | 1636 | 1855 | 2059 | 2242 | 2410 | 134 | 310 |
| 20 | 512 | 708 | 921 | 1142 | 1400 | 1616 | 1834 | 2053 | 2257 | 2440 | 209 | 332 | 20 | 505 | 719 | 939 | 1158 | 1414 | 1632 | 1851 | 2055 | 2238 | 2406 | 130 | 306 |
| 21 | 508 | 704 | 917 | 1138 | 1356 | 1612 | 1830 | 2049 | 2253 | 2436 | 205 | 328 | 21 | 501 | 715 | 936 | 1154 | 1410 | 1628 | 1847 | 2051 | 2234 | 2402 | 126 | 302 |
| 22 | 504 | 700 | 913 | 1134 | 1352 | 1608 | 1826 | 2045 | 2249 | 2432 | 201 | 324 | 22 | 457 | 711 | 932 | 1150 | 1406 | 1624 | 1843 | 2047 | 2230 | 2358 | 122 | 258 |
| 23 | 500 | 656 | 909 | 1130 | 1348 | 1604 | 1822 | 2041 | 2245 | 2428 | 157 | 320 | 23 | 453 | 707 | 928 | 1146 | 1402 | 1620 | 1839 | 2043 | 2226 | 2354 | 118 | 254 |
| 24 | 456 | 652 | 905 | 1126 | 1344 | 1601 | 1819 | 2038 | 2242 | 2425 | 153 | 316 | 24 | 449 | 703 | 924 | 1142 | 1358 | 1616 | 1836 | 2039 | 2222 | 2351 | 115 | 250 |
| 25 | 452 | 648 | 901 | 1122 | 1340 | 1557 | 1815 | 2034 | 2238 | 2421 | 149 | 312 | 25 | 446 | 659 | 920 | 1138 | 1354 | 1613 | 1832 | 2035 | 2218 | 2347 | 111 | 246 |
| 26 | 448 | 644 | 858 | 1118 | 1336 | 1553 | 1811 | 2030 | 2234 | 2417 | 145 | 308 | 26 | 442 | 655 | 916 | 1134 | 1350 | 1609 | 1828 | 2031 | 2214 | 2343 | 107 | 243 |
| 27 | 444 | 640 | 854 | 1114 | 1332 | 1549 | 1807 | 2026 | 2230 | 2413 | 141 | 304 | 27 | 438 | 651 | 912 | 1130 | 1346 | 1605 | 1824 | 2027 | 2210 | 2339 | 103 | 239 |
| 28 | 440 | 636 | 850 | 1110 | 1328 | 1545 | 1803 | 2022 | 2226 | 2409 | 137 | 301 | 28 | 434 | 647 | 909 | 1126 | 1343 | 1601 | 1820 | 2023 | 2206 | 2335 | 99 | 235 |
| 29 | 436 | 632 | 846 | 1106 | 1324 | 1541 | 1759 | 2018 | 2222 | 2405 | 133 | 257 | 29 | 430 | 643 | 905 | 1123 | 1339 | 1557 | 1816 | 2020 | 2202 | 2331 | 95 | 231 |
| 30 | 432 | 628 | 842 | 1102 | 1320 | 1537 | 1755 | 2014 | 2218 | 2401 | 129 | 253 | 30 | 426 | 639 | 901 | 1119 | 1335 | 1554 | 1813 | 2016 | 2159 | 2328 | 91 | 228 |
| 31 | 429 | 624 | 838 | 1058 | 1316 | 1533 | 1751 | 2010 | 2214 | 2357 | 125 | 249 | 31 | 425 | 635 | 897 | 1115 | 1331 | 1550 | 1809 | 2013 | 2155 | 2326 | 90 | 227 |
| जून | 425 | 620 | 834 | 1054 | 1314 | 1533 | 1751 | 2010 | 2214 | 2357 | 125 | 249 | जून | 425 | 635 | 897 | 1115 | 1331 | 1550 | 1809 | 2013 | 2155 | 2326 | 90 | 227 |

दैनिक लग्न सारणी

भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली

DELHI

दैनिक लग्न सारणी

भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली

DELHI

| क्र. | सिधुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेघ | वृष | मिथुन |
|------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|-----------|
| ता. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. | चं. मिं. |
| 1 | 635 | 857 | 1115 | 1331 | 1550 | 1809 | 2013 | 2156 | 2324 | 2448 | 224 | 418 | 1 |
| 2 | 631 | 853 | 1111 | 1327 | 1546 | 1805 | 20 | 92152 | 2320 | 2444 | 220 | 414 | 2 |
| 3 | 627 | 849 | 1107 | 1323 | 1542 | 1801 | 20 | 52148 | 2316 | 2440 | 216 | 410 | 3 |
| 4 | 624 | 846 | 1104 | 1319 | 1538 | 1757 | 2001 | 2144 | 2312 | 2436 | 212 | 406 | 4 |
| 5 | 620 | 842 | 1100 | 1315 | 1534 | 1753 | 1957 | 2140 | 2308 | 2432 | 208 | 402 | 5 |
| 6 | 616 | 838 | 1056 | 1311 | 1530 | 1749 | 1953 | 2136 | 2304 | 2428 | 204 | 358 | 6 |
| 7 | 612 | 834 | 1052 | 1307 | 1526 | 1746 | 1949 | 2132 | 2300 | 2424 | 200 | 355 | 7 |
| 8 | 609 | 830 | 1048 | 1304 | 1522 | 1742 | 1946 | 2128 | 2256 | 2421 | 156 | 351 | 8 |
| 9 | 605 | 826 | 1044 | 1300 | 1518 | 1738 | 1942 | 2124 | 2253 | 2417 | 153 | 347 | 9 |
| 10 | 601 | 822 | 1040 | 1256 | 1515 | 1734 | 1938 | 2121 | 2249 | 2413 | 149 | 343 | 10 |
| 11 | 557 | 818 | 1036 | 1252 | 1511 | 1730 | 1934 | 2117 | 2245 | 2409 | 145 | 339 | 11 |
| 12 | 553 | 814 | 1032 | 1248 | 1507 | 1726 | 1930 | 2113 | 2241 | 2405 | 141 | 336 | 12 |
| 13 | 549 | 810 | 1028 | 1245 | 1503 | 1722 | 1926 | 2109 | 2237 | 2401 | 137 | 332 | 13 |
| 14 | 545 | 806 | 1025 | 1241 | 1459 | 1718 | 1922 | 2105 | 2234 | 2357 | 133 | 328 | 14 |
| 15 | 541 | 803 | 1021 | 1237 | 1455 | 1714 | 1919 | 2102 | 2230 | 2354 | 130 | 324 | 15 |
| 16 | 537 | 759 | 1017 | 1233 | 1451 | 1710 | 1915 | 2058 | 2226 | 2350 | 126 | 320 | 16 |
| 17 | 534 | 755 | 1013 | 1229 | 1447 | 1706 | 1911 | 2054 | 2222 | 2346 | 122 | 316 | 17 |
| 18 | 530 | 751 | 1009 | 1225 | 1443 | 1702 | 1907 | 2050 | 2218 | 2342 | 118 | 312 | 18 |
| 19 | 526 | 747 | 1005 | 1221 | 1440 | 1658 | 1903 | 2046 | 2214 | 2338 | 114 | 308 | 19 |
| 20 | 522 | 743 | 1002 | 1217 | 1436 | 1654 | 1859 | 2042 | 2210 | 2334 | 110 | 304 | 20 |
| 21 | 518 | 739 | 958 | 1213 | 1432 | 1651 | 1855 | 2038 | 2206 | 2330 | 106 | 300 | 21 |
| 22 | 515 | 735 | 954 | 1209 | 1428 | 1647 | 1851 | 2034 | 2202 | 2326 | 102 | 256 | 22 |
| 23 | 511 | 732 | 950 | 1205 | 1424 | 1643 | 1847 | 2030 | 2158 | 2322 | 2458 | 253 | 23 |
| 24 | 507 | 728 | 946 | 1201 | 1420 | 1639 | 1843 | 2026 | 2155 | 2318 | 2454 | 249 | 24 |
| 25 | 503 | 724 | 942 | 1158 | 1416 | 1635 | 1840 | 2023 | 2151 | 2314 | 2450 | 245 | 25 |
| 26 | 500 | 720 | 938 | 1154 | 1412 | 1631 | 1836 | 2019 | 2147 | 2310 | 2446 | 241 | 26 |
| 27 | 456 | 716 | 934 | 1150 | 1408 | 1627 | 1832 | 2015 | 2143 | 2306 | 2442 | 237 | 27 |
| 28 | 452 | 712 | 930 | 1146 | 1404 | 1623 | 1828 | 2011 | 2139 | 2302 | 2438 | 234 | 28 |
| 29 | 448 | 708 | 927 | 1142 | 1400 | 1619 | 1824 | 2007 | 2135 | 2258 | 2435 | 230 | 29 |
| 30 | 444 | 704 | 923 | 1138 | 1356 | 1615 | 1820 | 2003 | 2131 | 2254 | 2431 | 226 | 30 |
| 31 | 440 | 700 | 919 | 1134 | 1353 | 1612 | 1816 | 1959 | 2127 | 2250 | 2427 | 222 | 31 |
| अ | 436 | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | — | सितं 4 55 |

| दैनिक लगन सारणी | | | | | | | | | | | | | सिखार भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली | | | | | | | | | | | | |
|-----------------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|--|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|--|--|
| सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेघ | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | मेघ | वृष | मिथुन | कर्क | | |
| चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | | |
| 1 | 7 14 | 9 30 | 11 48 | 14 07 | 16 11 | 17 54 | 19 22 | 20 46 | 22 22 | 0 17 | 2 31 | 4 52 | 2 | 7 26 | 9 45 | 12 04 | 14 08 | 15 51 | 17 19 | 18 43 | 20 19 | 22 14 | 0 28 | | |
| 2 | 7 10 | 9 26 | 11 44 | 14 03 | 16 07 | 17 50 | 19 18 | 20 42 | 22 18 | 0 13 | 2 27 | 4 48 | 3 | 7 23 | 9 42 | 12 00 | 14 04 | 15 47 | 17 15 | 18 39 | 20 15 | 22 10 | 0 24 | | |
| 3 | 7 06 | 9 22 | 11 40 | 13 59 | 16 03 | 17 46 | 19 14 | 20 38 | 22 14 | 0 09 | 2 23 | 4 44 | 4 | 7 19 | 9 38 | 11 56 | 14 00 | 15 43 | 17 11 | 18 35 | 20 11 | 22 06 | 0 20 | | |
| 4 | 7 02 | 9 18 | 11 36 | 13 55 | 15 59 | 17 42 | 19 10 | 20 34 | 22 10 | 0 05 | 2 19 | 4 40 | 5 | 7 15 | 9 34 | 11 52 | 13 56 | 15 39 | 17 07 | 18 31 | 20 07 | 22 02 | 0 16 | | |
| 5 | 6 58 | 9 14 | 11 32 | 13 51 | 15 55 | 17 38 | 19 06 | 20 30 | 22 06 | 0 01 | 2 15 | 4 36 | 6 | 7 11 | 9 30 | 11 48 | 13 52 | 15 35 | 17 03 | 18 27 | 20 03 | 21 58 | 0 12 | | |
| 6 | 6 54 | 9 10 | 11 28 | 13 47 | 15 51 | 17 34 | 19 02 | 20 26 | 22 02 | 23 57 | 2 11 | 4 32 | 7 | 7 07 | 9 26 | 11 44 | 13 48 | 15 31 | 16 59 | 18 23 | 19 59 | 21 54 | 0 08 | | |
| 7 | 6 50 | 9 06 | 11 24 | 13 43 | 15 47 | 17 30 | 18 58 | 20 22 | 21 58 | 23 53 | 2 07 | 4 28 | 8 | 7 03 | 9 22 | 11 40 | 13 44 | 15 27 | 16 55 | 18 19 | 19 55 | 21 50 | 0 04 | | |
| 8 | 6 46 | 9 02 | 11 20 | 13 39 | 15 43 | 17 26 | 18 54 | 20 18 | 21 54 | 23 49 | 2 03 | 4 24 | 9 | 6 59 | 9 18 | 11 36 | 13 40 | 15 23 | 16 51 | 18 15 | 19 51 | 21 46 | 24 00 | | |
| 9 | 6 42 | 8 58 | 11 16 | 13 35 | 15 39 | 17 22 | 18 50 | 20 14 | 21 50 | 23 45 | 1 59 | 4 20 | 10 | 6 55 | 9 14 | 11 32 | 13 36 | 15 19 | 16 47 | 18 11 | 19 47 | 21 42 | 23 56 | | |
| 10 | 6 38 | 8 54 | 11 12 | 13 31 | 15 35 | 17 18 | 18 46 | 20 10 | 21 46 | 23 41 | 1 55 | 4 16 | 11 | 6 51 | 9 10 | 11 28 | 13 32 | 15 15 | 16 43 | 18 07 | 19 43 | 21 38 | 23 52 | | |
| 11 | 6 34 | 8 50 | 11 08 | 13 27 | 15 31 | 17 14 | 18 42 | 20 06 | 21 42 | 23 37 | 1 51 | 4 12 | 12 | 6 47 | 9 06 | 11 24 | 13 28 | 15 11 | 16 39 | 18 03 | 19 39 | 21 34 | 23 48 | | |
| 12 | 6 30 | 8 46 | 11 04 | 13 23 | 15 27 | 17 10 | 18 38 | 20 02 | 21 38 | 23 33 | 1 47 | 4 08 | 13 | 6 43 | 9 02 | 11 20 | 13 24 | 15 07 | 16 35 | 17 59 | 19 35 | 21 30 | 23 44 | | |
| 13 | 6 26 | 8 42 | 11 00 | 13 19 | 15 23 | 17 06 | 18 34 | 19 58 | 21 34 | 23 29 | 1 43 | 4 04 | 14 | 6 39 | 8 58 | 11 16 | 13 20 | 15 03 | 16 31 | 17 55 | 19 31 | 21 26 | 23 40 | | |
| 14 | 6 22 | 8 38 | 10 56 | 13 15 | 15 19 | 17 02 | 18 30 | 19 54 | 21 30 | 23 25 | 1 39 | 4 00 | 15 | 6 35 | 8 54 | 11 12 | 13 16 | 14 59 | 16 27 | 17 51 | 19 27 | 21 22 | 23 36 | | |
| 15 | 6 18 | 8 34 | 10 52 | 13 11 | 15 15 | 16 58 | 18 26 | 19 50 | 21 26 | 23 21 | 1 35 | 3 56 | 16 | 6 31 | 8 50 | 11 08 | 13 12 | 14 55 | 16 23 | 17 47 | 19 23 | 21 18 | 23 32 | | |
| 16 | 6 14 | 8 30 | 10 48 | 13 07 | 15 11 | 16 54 | 18 22 | 19 46 | 21 22 | 23 17 | 1 31 | 3 52 | 17 | 6 27 | 8 46 | 11 04 | 13 08 | 14 51 | 16 19 | 17 43 | 19 19 | 21 14 | 23 28 | | |
| 17 | 6 10 | 8 26 | 10 44 | 13 03 | 15 07 | 16 50 | 18 18 | 19 42 | 21 18 | 23 13 | 1 27 | 3 48 | 18 | 6 23 | 8 42 | 11 00 | 13 04 | 14 47 | 16 15 | 17 39 | 19 15 | 21 10 | 23 24 | | |
| 18 | 6 06 | 8 22 | 10 40 | 12 59 | 15 03 | 16 46 | 18 14 | 19 38 | 21 14 | 23 09 | 1 23 | 3 44 | 19 | 6 19 | 8 38 | 10 56 | 13 00 | 14 43 | 16 11 | 17 35 | 19 11 | 21 06 | 23 20 | | |
| 19 | 6 02 | 8 18 | 10 36 | 12 55 | 14 59 | 16 42 | 18 10 | 19 34 | 21 10 | 23 05 | 1 19 | 3 40 | 20 | 6 15 | 8 34 | 10 52 | 12 56 | 14 39 | 16 07 | 17 31 | 19 07 | 21 02 | 23 16 | | |
| 20 | 5 58 | 8 14 | 10 32 | 12 51 | 14 55 | 16 38 | 18 06 | 19 30 | 21 06 | 23 01 | 1 15 | 3 36 | 21 | 6 11 | 8 30 | 10 48 | 12 52 | 14 35 | 16 03 | 17 27 | 19 03 | 20 58 | 23 12 | | |
| 21 | 5 54 | 8 10 | 10 28 | 12 47 | 14 51 | 16 34 | 18 02 | 19 26 | 21 02 | 22 57 | 1 11 | 3 32 | 22 | 6 07 | 8 26 | 10 44 | 12 48 | 14 31 | 15 59 | 17 23 | 18 59 | 20 54 | 23 08 | | |
| 22 | 5 50 | 8 06 | 10 24 | 12 43 | 14 47 | 16 30 | 17 58 | 19 22 | 20 58 | 22 53 | 1 07 | 3 28 | 23 | 6 03 | 8 22 | 10 40 | 12 44 | 14 27 | 15 55 | 17 19 | 18 55 | 20 50 | 23 04 | | |
| 23 | 5 46 | 8 02 | 10 20 | 12 39 | 14 43 | 16 26 | 17 54 | 19 18 | 20 54 | 22 49 | 1 03 | 3 24 | 24 | 5 59 | 8 18 | 10 36 | 12 40 | 14 23 | 15 51 | 17 15 | 18 51 | 20 46 | 23 00 | | |
| 24 | 5 42 | 7 58 | 10 16 | 12 35 | 14 39 | 16 22 | 17 50 | 19 14 | 20 50 | 22 45 | 0 59 | 3 20 | 25 | 5 56 | 8 15 | 10 33 | 12 37 | 14 20 | 15 48 | 17 12 | 18 48 | 20 43 | 22 57 | | |
| 25 | 5 38 | 7 54 | 10 12 | 12 31 | 14 35 | 16 18 | 17 46 | 19 10 | 20 46 | 22 41 | 0 55 | 3 16 | 26 | 5 52 | 8 11 | 10 29 | 12 33 | 14 16 | 15 44 | 17 08 | 18 44 | 20 39 | 22 53 | | |
| 26 | 5 34 | 7 50 | 10 08 | 12 27 | 14 31 | 16 14 | 17 42 | 19 06 | 20 42 | 22 37 | 0 51 | 3 12 | 27 | 5 48 | 8 07 | 10 25 | 12 29 | 14 12 | 15 40 | 17 04 | 18 40 | 20 35 | 22 49 | | |
| 27 | 5 30 | 7 46 | 10 04 | 12 23 | 14 27 | 16 10 | 17 38 | 19 02 | 20 38 | 22 33 | 0 47 | 3 08 | 28 | 5 44 | 8 03 | 10 21 | 12 25 | 14 08 | 15 36 | 17 00 | 18 36 | 20 31 | 22 45 | | |
| 28 | 5 26 | 7 42 | 10 00 | 12 19 | 14 23 | 16 06 | 17 34 | 18 58 | 20 34 | 22 29 | 0 43 | 3 04 | 29 | 5 40 | 7 59 | 10 17 | 12 21 | 14 04 | 15 32 | 16 56 | 18 32 | 20 27 | 22 41 | | |
| 29 | 5 22 | 7 38 | 9 56 | 12 15 | 14 19 | 16 02 | 17 30 | 18 54 | 20 30 | 22 25 | 0 39 | 3 00 | 30 | 5 36 | 7 55 | 10 13 | 12 17 | 14 00 | 15 28 | 16 52 | 18 28 | 20 23 | 22 37 | | |
| 30 | 5 18 | 7 34 | 9 53 | 12 12 | 14 16 | 15 59 | 17 27 | 18 51 | 20 27 | 22 22 | 0 36 | 2 57 | 31 | 5 33 | 7 51 | 10 09 | 12 13 | 13 56 | 15 24 | 16 48 | 18 24 | 20 19 | 22 33 | | |
| अणु | 5 15 | | | | | | | | | | | | नव. | 5 29 | | | | | | | | | | | |

217

| दैनिक लग्न सारणी नवंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली | | | | | | | | | | | | | | दैनिक लग्न सारणी दिसंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली | | | | | | | | | | | | | |
|---|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|--|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|--|
| DELHI | | | | | | | | | | | | | | DELHI | | | | | | | | | | | | | |
| ता. | वृ.सिं. | धनु. | मकर. | कुम्भ. | मीन. | मेघ. | वृष. | मिथुन. | कर्क. | सिंह. | कन्या. | तुला. | वृ.सिं. | ता. | वृ.सिं. | धनु. | मकर. | कुम्भ. | मीन. | मेघ. | वृष. | मिथुन. | कर्क. | सिंह. | कन्या. | तुला. | |
| चं.सिं. | चं.सिं. | चं.सिं. | चं.सिं. | चं.सिं. | चं.सिं. | चं.सिं. | चं.सिं. | चं.सिं. | चं.सिं. | चं.सिं. | चं.सिं. | चं.सिं. | चं.सिं. | चं.सिं. | चं.सिं. | चं.सिं. | चं.सिं. | चं.सिं. | चं.सिं. | चं.सिं. | चं.सिं. | चं.सिं. | चं.सिं. | चं.सिं. | चं.सिं. | चं.सिं. | |
| 1 | 7 47 | 10 6 | 12 10 | 13 53 | 15 21 | 16 44 | 18 20 | 20 15 | 22 29 | 0 50 | 3 08 | 5 25 | 1 8 08 | 1 | 8 08 | 10 12 | 11 55 | 13 23 | 14 47 | 16 23 | 18 18 | 20 32 | 22 53 | 1 11 | 3 27 | 5 45 | |
| 2 | 7 43 | 10 2 | 12 06 | 13 49 | 15 17 | 16 40 | 18 16 | 20 11 | 22 25 | 0 46 | 3 04 | 5 21 | 2 8 04 | 2 | 8 04 | 10 08 | 11 51 | 13 19 | 14 43 | 16 19 | 18 14 | 20 28 | 22 49 | 1 07 | 3 23 | 5 41 | |
| 3 | 7 39 | 9 58 | 12 02 | 13 45 | 15 13 | 16 37 | 18 13 | 20 08 | 22 22 | 0 43 | 3 00 | 5 17 | 3 8 00 | 3 | 8 00 | 10 04 | 11 47 | 13 15 | 14 39 | 16 15 | 18 10 | 20 24 | 22 45 | 1 03 | 3 19 | 5 37 | |
| 4 | 7 35 | 9 54 | 11 58 | 13 41 | 15 09 | 16 33 | 18 09 | 20 04 | 22 18 | 0 39 | 2 56 | 5 13 | 4 7 56 | 4 | 7 56 | 10 00 | 11 43 | 13 11 | 14 35 | 16 11 | 18 06 | 20 20 | 22 41 | 0 59 | 3 15 | 5 33 | |
| 5 | 7 31 | 9 50 | 11 54 | 13 37 | 15 05 | 16 29 | 18 05 | 20 00 | 22 15 | 0 35 | 2 52 | 5 09 | 5 7 52 | 5 | 7 52 | 9 56 | 11 39 | 13 07 | 14 31 | 16 07 | 18 02 | 20 16 | 22 37 | 0 55 | 3 11 | 5 29 | |
| 6 | 7 27 | 9 46 | 11 50 | 13 33 | 15 01 | 16 25 | 18 01 | 19 56 | 22 10 | 0 31 | 2 48 | 5 05 | 6 7 48 | 6 | 7 48 | 9 52 | 11 35 | 13 03 | 14 27 | 16 03 | 17 58 | 20 12 | 22 33 | 0 51 | 3 07 | 5 25 | |
| 7 | 7 24 | 9 42 | 11 46 | 13 29 | 14 57 | 16 21 | 17 57 | 19 52 | 22 06 | 0 27 | 2 45 | 5 01 | 7 7 44 | 7 | 7 44 | 9 48 | 11 31 | 12 59 | 14 23 | 15 59 | 17 54 | 20 08 | 22 29 | 0 47 | 3 03 | 5 21 | |
| 8 | 7 20 | 9 38 | 11 42 | 13 25 | 14 53 | 16 17 | 17 53 | 19 48 | 22 02 | 0 23 | 2 41 | 4 57 | 8 7 40 | 8 | 7 40 | 9 44 | 11 27 | 12 55 | 14 19 | 15 55 | 17 50 | 20 04 | 22 25 | 0 43 | 2 59 | 5 17 | |
| 9 | 7 16 | 9 34 | 11 38 | 13 21 | 14 49 | 16 13 | 17 49 | 19 44 | 21 58 | 0 19 | 2 37 | 4 53 | 9 7 36 | 9 | 7 36 | 9 40 | 11 23 | 12 51 | 14 15 | 15 51 | 17 46 | 20 00 | 22 21 | 0 39 | 2 55 | 5 13 | |
| 10 | 7 12 | 9 30 | 11 34 | 13 17 | 14 45 | 16 09 | 17 45 | 19 40 | 21 54 | 0 15 | 2 33 | 4 49 | 10 7 33 | 10 | 7 33 | 9 37 | 11 20 | 12 48 | 14 12 | 15 48 | 17 43 | 19 57 | 22 18 | 0 36 | 2 52 | 5 10 | |
| 11 | 7 08 | 9 26 | 11 30 | 13 13 | 14 41 | 16 05 | 17 41 | 19 36 | 21 50 | 0 11 | 2 29 | 4 45 | 11 7 29 | 11 | 7 29 | 9 33 | 11 16 | 12 44 | 14 08 | 15 44 | 17 39 | 19 53 | 22 14 | 0 32 | 2 48 | 5 06 | |
| 12 | 7 04 | 9 22 | 11 26 | 13 09 | 14 37 | 16 01 | 17 37 | 19 32 | 21 46 | 0 07 | 2 25 | 4 41 | 12 7 25 | 12 | 7 25 | 9 29 | 11 12 | 12 40 | 14 04 | 15 40 | 17 35 | 19 49 | 22 10 | 0 28 | 2 44 | 5 02 | |
| 13 | 7 00 | 9 18 | 11 22 | 13 05 | 14 33 | 15 57 | 17 33 | 19 28 | 21 42 | 0 03 | 2 21 | 4 37 | 13 7 21 | 13 | 7 21 | 9 25 | 11 08 | 12 36 | 14 01 | 15 36 | 17 31 | 19 45 | 22 06 | 0 24 | 2 40 | 4 58 | |
| 14 | 6 56 | 9 14 | 11 28 | 13 01 | 14 29 | 15 53 | 17 29 | 19 24 | 21 38 | 23 59 | 2 17 | 4 33 | 14 7 17 | 14 | 7 17 | 9 21 | 11 04 | 12 32 | 13 56 | 15 32 | 17 27 | 19 41 | 22 02 | 0 20 | 2 36 | 4 54 | |
| 15 | 6 52 | 9 10 | 11 14 | 12 57 | 14 25 | 15 49 | 17 25 | 19 20 | 21 34 | 23 55 | 2 13 | 4 29 | 15 7 13 | 15 | 7 13 | 9 17 | 11 00 | 12 28 | 13 52 | 15 28 | 17 23 | 19 37 | 21 58 | 0 16 | 2 32 | 4 50 | |
| 16 | 6 48 | 9 06 | 11 10 | 12 53 | 14 21 | 15 45 | 17 21 | 19 16 | 21 30 | 23 51 | 2 09 | 4 25 | 16 7 09 | 16 | 7 09 | 9 13 | 10 56 | 12 24 | 13 48 | 15 24 | 17 19 | 19 33 | 21 54 | 0 12 | 2 28 | 4 46 | |
| 17 | 6 43 | 9 02 | 11 06 | 12 49 | 14 17 | 15 41 | 17 17 | 19 12 | 21 26 | 23 47 | 2 05 | 4 21 | 17 7 05 | 17 | 7 05 | 9 09 | 10 52 | 12 21 | 13 44 | 15 20 | 17 15 | 19 29 | 21 50 | 0 08 | 2 24 | 4 42 | |
| 18 | 6 39 | 8 58 | 11 02 | 12 45 | 14 13 | 15 37 | 17 23 | 19 08 | 21 22 | 23 43 | 2 01 | 4 17 | 18 7 11 | 18 | 7 11 | 9 05 | 10 49 | 12 17 | 13 41 | 15 16 | 17 11 | 19 25 | 21 46 | 0 04 | 2 20 | 4 38 | |
| 19 | 6 35 | 8 54 | 10 58 | 12 41 | 14 09 | 15 33 | 17 09 | 19 04 | 21 18 | 23 39 | 1 57 | 4 13 | 19 6 58 | 19 | 6 58 | 9 01 | 10 45 | 12 13 | 13 36 | 15 12 | 17 07 | 19 21 | 21 42 | 0 00 | 2 16 | 4 34 | |
| 20 | 6 31 | 8 50 | 10 54 | 12 37 | 14 05 | 15 29 | 17 05 | 19 00 | 21 14 | 23 35 | 1 53 | 4 09 | 20 6 53 | 20 | 6 53 | 8 57 | 10 41 | 12 09 | 13 32 | 15 08 | 17 03 | 19 17 | 21 38 | 23 56 | 2 12 | 4 30 | |
| 21 | 6 27 | 8 46 | 10 50 | 12 33 | 14 01 | 15 25 | 17 01 | 18 56 | 21 10 | 23 31 | 1 49 | 4 05 | 21 6 49 | 21 | 6 49 | 8 53 | 10 37 | 12 05 | 13 28 | 15 04 | 16 59 | 19 13 | 21 34 | 23 52 | 2 09 | 4 26 | |
| 22 | 6 23 | 8 43 | 10 47 | 12 30 | 13 58 | 15 22 | 16 58 | 18 53 | 21 07 | 23 28 | 1 46 | 4 02 | 22 6 45 | 22 | 6 45 | 8 49 | 10 33 | 12 01 | 13 24 | 15 00 | 16 55 | 19 10 | 21 30 | 23 49 | 2 05 | 4 22 | |
| 23 | 6 20 | 8 39 | 10 43 | 12 26 | 13 54 | 15 18 | 16 54 | 18 49 | 21 03 | 23 24 | 1 42 | 3 58 | 23 6 41 | 23 | 6 41 | 8 45 | 10 29 | 11 57 | 13 20 | 14 56 | 16 51 | 19 06 | 21 26 | 23 45 | 2 01 | 4 18 | |
| 24 | 6 16 | 8 35 | 10 39 | 12 22 | 13 50 | 15 14 | 16 50 | 18 45 | 20 59 | 23 20 | 1 38 | 3 54 | 24 6 37 | 24 | 6 37 | 8 42 | 10 25 | 11 53 | 13 16 | 14 52 | 16 48 | 19 02 | 21 23 | 23 41 | 1 57 | 4 14 | |
| 25 | 6 12 | 8 31 | 10 35 | 12 18 | 13 46 | 15 10 | 16 46 | 18 41 | 20 55 | 23 16 | 1 34 | 3 50 | 25 6 33 | 25 | 6 33 | 8 38 | 10 21 | 11 49 | 13 12 | 14 48 | 16 44 | 18 58 | 21 19 | 23 37 | 1 53 | 4 10 | |
| 26 | 6 08 | 8 28 | 10 31 | 12 14 | 13 42 | 15 06 | 16 42 | 18 37 | 20 51 | 23 12 | 1 30 | 3 46 | 26 6 30 | 26 | 6 30 | 8 34 | 10 17 | 11 45 | 13 09 | 14 44 | 16 40 | 18 54 | 21 15 | 23 33 | 1 49 | 4 06 | |
| 27 | 6 04 | 8 23 | 10 27 | 12 10 | 13 38 | 15 02 | 16 38 | 18 33 | 20 47 | 23 08 | 1 26 | 3 42 | 27 6 26 | 27 | 6 26 | 8 30 | 10 13 | 11 41 | 13 05 | 14 41 | 16 36 | 18 50 | 21 11 | 23 29 | 1 45 | 4 03 | |
| 28 | 6 00 | 8 19 | 10 23 | 12 06 | 13 34 | 14 58 | 16 34 | 18 29 | 20 43 | 23 04 | 1 22 | 3 38 | 28 6 22 | 28 | 6 22 | 8 26 | 10 09 | 11 37 | 13 01 | 14 37 | 16 32 | 18 46 | 21 07 | 23 25 | 1 41 | 3 59 | |
| 29 | 5 56 | 8 16 | 10 20 | 12 03 | 13 31 | 14 55 | 16 31 | 18 26 | 20 40 | 23 01 | 1 19 | 3 35 | 29 6 18 | 29 | 6 18 | 8 22 | 10 05 | 11 33 | 12 57 | 14 33 | 16 28 | 18 42 | 21 03 | 23 21 | 1 37 | 3 55 | |
| 30 | 5 53 | 8 12 | 10 16 | 11 59 | 13 27 | 14 51 | 16 27 | 18 22 | 20 36 | 22 57 | 1 15 | 3 31 | 30 6 14 | 30 | 6 14 | 8 18 | 10 01 | 11 29 | 12 53 | 14 29 | 16 24 | 18 38 | 20 59 | 23 17 | 1 33 | 3 51 | |
| | | | | | | | | | | | | | 31 6 10 | | | | | | | | | | | | | 32 6 06 | |
| | | | | | | | | | | | | | जन. | | | | | | | | | | | | | | |

अनुकूल कार्या सिद्धि के लिए होरा ज्ञान चक्र (मुहूर्त) और परल ज्ञान

सर्वकार्य सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त श्रेयस्कर है। होरा मुहूर्त के अनुसार कार्यारम्भ करके प्रत्येक मनुष्य अशुभ समय में से होरा के अनुसार अपना कार्य सिद्ध कर सकता है। सात ग्रहों के सात हारे हैं। सूर्य की होरा-टेंडर देने व नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होती है। चंद्रमा की होरा — सब कार्यों के लिए अच्छी होती है। मंगल की होरा-युद्ध, यात्रा, कर्ज देने, सभा-सोसाइटी में आना-जाना और मुकदमा के कार्यों में अच्छी होती है। बुध की होरा — में विद्यारम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छी होती है। गुरु की होरा — विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलना, कोषसंग्रह, नवीन काव्य लेखन आदि के लिए शुभ है। शुक की होरा — यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, प्रवास, सौभाग्यवर्धक कार्य के लिए शुभ है। शनि की होरा — भूमि, मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी, मिल्स कार्यारम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं।

प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो 'वार' होता है, उस वार के आरम्भ (अर्थात् सूर्योदय के समय) से १ घण्टा तक उसी वार को होरा रहता है। इसके बाद १ घण्टे का दूसरा होरा उस वार से छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे हारे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ हारे बीतने पर अगले वार के सूर्योदय समय उसी (आगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा उपयुक्त लिखी है, उसके अनुसार ही उस होरा में (१ घण्टे) में वह कार्य करेंगे तो अवश्य सफलता मिलेगी। ऋषियों ने होरा को 'क्षणवार' कहा है। वार से भी क्षण वार में प्रधानता मानी गई है। इसलिए यदि वार और 'क्षणवार' दोनों अनुकूल हों, तभी किसी कार्य को करना चाहिए। आवश्यकता में, यदि वार अनुकूल नहीं हो तो 'क्षणवार' अर्थात् होरा की अनुकूलता के अनुसार कार्य करना चाहिए। जैसे — परिचय की यात्रा रविवार में करने की आवश्यकता हो तो वार के अनुसार दिक्कूल पड़ेगा। इसलिए जिस समय सोम की होरा (क्षणवार) हो उस समय रविवार में पश्चिम की यात्रा की जा सकती है। नीचे चक्र के अनुसार रविवार की सोम की होरा सूर्योदय समय से ४, १९, १८ घण्टे बाद के एक-एक घण्टे तक आप सोम की होरा में जा सकते हैं। इसी प्रकार अन्य दिनों के होराओं के विषय में भी समझ लें।

| वार | होरा १ | होरा २ | होरा ३ | होरा ४ | होरा ५ | होरा ६ | होरा ७ | होरा ८ | होरा ९ | होरा १० | होरा ११ | होरा १२ | होरा १३ | होरा १४ | होरा १५ | होरा १६ | होरा १७ | होरा १८ | होरा १९ | होरा २० | होरा २१ | होरा २२ | होरा २३ | होरा २४ |
|------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| रवि. | रवि | शुक्र | बुध | शुक्र | शनि | गुरु | मंगल | रवि | शुक्र | शनि | गुरु | शनि | शुक्र | गुरु | रवि | शुक्र | बुध | शुक्र | शनि | गुरु | मंगल | रवि | शुक्र | बुध |
| सोम. | सोम | शनि | गुरु | शुक्र | रवि | शुक्र | मंगल | शुक्र | शनि | गुरु | मंगल | शुक्र | शनि | गुरु | शुक्र | शनि | गुरु | शुक्र | शनि | गुरु | मंगल | रवि | शुक्र | गुरु |
| मंगल | मंगल | रवि | शुक्र | शनि | गुरु | मंगल | शुक्र | शनि | गुरु | मंगल | शुक्र | शनि | गुरु | मंगल | शुक्र | शनि | गुरु | मंगल | शुक्र | शनि | गुरु | मंगल | रवि | शुक्र |
| बुध | बुध | शुक्र | गुरु | शुक्र | शनि | गुरु | मंगल | रवि | शुक्र | शनि | गुरु | शनि | गुरु | मंगल | शुक्र | शनि | गुरु | मंगल | शुक्र | शनि | गुरु | मंगल | रवि | शुक्र |
| गुरु | गुरु | शुक्र | शनि | शुक्र | गुरु | मंगल | शुक्र | शनि | गुरु | मंगल | शुक्र | शनि | गुरु | मंगल | शुक्र | शनि | गुरु | मंगल | शुक्र | शनि | गुरु | मंगल | रवि | शुक्र |
| शनि | शनि | गुरु | मंगल | शुक्र | रवि | शुक्र | मंगल | शुक्र | शनि | गुरु | मंगल | शुक्र | शनि | गुरु | शुक्र | शनि | गुरु | मंगल | शुक्र | शनि | गुरु | मंगल | रवि | शुक्र |

॥ रात्रौ रात्रियां मुहूर्त ॥

॥ रात्रौ रात्रियां मुहूर्त ॥

दिन की चौघडियां

| रवि | चन्द्र | मंगल | बुध | शुक्र | शनि | समय |
|--------|--------|--------|------|-------|------|-------|
| उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुक्र | काल | ६.०० |
| चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | ७.३० |
| लाभ | शुभ | चर | काल | शुक्र | अमृत | ९.०० |
| अमृत | रोग | लाभ | शुभ | शुक्र | काल | १०.३० |
| काल | उद्वेग | अमृत | रोग | शुक्र | लाभ | १२.०० |
| शुभ | चर | काल | शुभ | शुक्र | लाभ | १३.३० |
| रोग | लाभ | शुभ | चर | शुक्र | अमृत | ३.०० |
| उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुक्र | काल | ४.३० |

रात्रि की चौघडियां

| रवि | चन्द्र | मंगल | बुध | शुक्र | शनि | समय |
|--------|--------|--------|--------|-------|--------|-------|
| शुभ | चर | काल | उद्वेग | रोग | लाभ | ६.०० |
| अमृत | रोग | लाभ | शुभ | काल | उद्वेग | ७.३० |
| चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | शुभ | ९.०० |
| रोग | लाभ | शुभ | चर | काल | अमृत | १०.३० |
| काल | उद्वेग | अमृत | रोग | शुभ | चर | १२.०० |
| लाभ | शुभ | चर | काल | अमृत | रोग | १३.३० |
| उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | काल | ३.०० |
| शुभ | चर | काल | उद्वेग | रोग | लाभ | ४.३० |

शीघ्रता में कोई मुहूर्त न मिलता हो तो, तथा अचानक यात्रा करनी पड़ी तो, उस समय चौघडियां मुहूर्त का उपयोग करना श्रेयस्कर रहता है। दिन और रात्रि के आठ-आठ बराबर भाग करने से एक-एक चौघडियां मुहूर्त होता है। जब दिन और रात्रि बराबर अर्थात् १२ घण्टे का दिन तथा १२ घण्टे की रात्रि हो, तब एक चौघडियां मुहूर्त १२ घण्टे अर्थात् पौने चार घण्टा का होगा। इसलिए इसका नाम चौघडियां मुहूर्त पड़ा। रविवार, चंद्रवार आदि वार सूर्योदय से प्रारम्भ होकर अगले दिन सूर्योदय तक रहता है। प्रत्येक वार के सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय उस वार का दिनमान तथा सूर्यास्त से अग्रिम सूर्योदय तक का समय 'रात्रिमान' होता है। दिनमान और रात्रिमान में सू. उ. तथा सू. अ. के अन्तर आने के कारण घटते-बढ़ते रहते हैं। परन्तु 'वार सदैव' २४ घण्टा अर्थात् ६० घण्टी का होता है। रात्रिमान जानने के लिए पंचांगदिवाकर में दिए गए दिनमान को ६० घण्टी में घटा दें। जिस दिन यात्रा करनी हो उस दिन के दिनमान के अष्टमांश घटी पल का घण्टा मिनट बनाकर उस दिन के सूर्योदय समय में जोड़ते जाएँ तो क्रमशः उस दिन की ओर चौघडियों का समय ज्ञात हो जाएगा। इसी प्रकार जिस दिन रात्रि में यात्रा करनी हो तो उस दिन के रात्रिमान के अष्टमांश घटी-पल का घण्टा मिनट बनाकर सूर्यास्त समय में जोड़ते जाने से क्रमांशः रात्रि की प्रत्येक चौघडियों का समय ज्ञात हो जाएगा तथा शुभाशुभ जानने के लिए प्रत्येक वार के नीचे तथा चौघडियों के सामने तालिका में देखें।

द्वादश लगनों एवं राशियों का फल [ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) से उद्धृता]

मेष लगन-मेष लगन (राशि) का स्वामी मंगल है। जातक का मध्यम कद, मुख का वर्ण लाल अथवा गेहूँ आ होगा। राशिपति मंगल की स्थिति शुभ होने से रक्तवर्ण नेत्रों वाला, चंचल एवं उग्र स्वभाव, अत्यन्त साहसी, सतर्क एवं महत्वाकांक्षी होगा। जातक उद्यमी, तीव्र बुद्धि, स्वतन्त्र विचारों वाला, अस्थिर किन्तु तेज स्मरण शक्ति वाला, अत्यधिक उत्साही, स्पष्टवादी एवं भ्रमणप्रिय व्यक्ति होगा। प्रायः अपने परिश्रम के बल पर आय एवं धन के साधन जुटा लेगा। सगे सम्बन्धियों की ओर से सहायता व सुख कम होगा। यह राशि चर और अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण मेष राशि (लग्न) का जातक परिवर्तनशील प्रकृति, अस्थिर स्वभाव तथा शीघ्र कोपित हो जाने वाला एवं शीघ्र ही मान जावे। व्यवसाय में अनेक कठिनाईयों के बावजूद उन्नति के लिए प्रयास करता रहता है। जायदाद एवं व्यवसाय में कई प्रकार के झंझट (उलझने) आती हैं और इन्हीं कार्यों के द्वारा लाभ भी होता रहता है। पित्त, कफ, सिर दर्द, रक्त विकार, नेत्र विकार, त्वचा आदि रोगों का भय रहता है। मंगल शुभ होने पर जातक को खेल-कूद व संगीतादि में भी विशेष शौक रहता है। सामान्यतः मृगा मेष लगन वालों के लिए शुभ रहता है, परन्तु योग्य ज्योतिषी से परामर्श के बाद धारण करना चाहिए। भाग्योदयकारक वर्ष १६, २२, २८, ३२, ३६ वें होंगे।

वृष लगन-वृष लगन का स्वामी शुक्र है। यदि शुक्र शुभ हो तो जातक सुन्दर, सुगठित शरीर व मध्यम कद वाला होगा। गोल, बड़ी व चमकदार आँखें, सुन्दर वर्ण एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होगा। जातक परिश्रमी, हँसमुख एवं सौम्य प्रकृति वाला, धीर, शान्त एवं दृढ़ स्वभाव का होता है। जातक उदारहृदय, प्रसन्नहृदय और प्रभावशाली व्यक्ति होगा। स्वावलम्बी, उच्चाभिलाषी तथा भौतिक सुखों के लिए कठोर परिश्रम से भी पीछे नहीं हटता। जातक मधुरभाषी, सौन्दर्य प्रेमी, संगीत कला-साहित्यादि कार्यों में विशेष रुचि रखने वाला होगा। धर-दपस्तर आदि स्थानों पर सजावट रखेगा तथा ऐश्वर्य साधनों में निरन्तर वृद्धि करते रहने का प्रयास करेगा। जातक प्रायः अपनी इच्छानुसार ही कार्य करने वाला, ऐश्वर्ययुक्त जीवनयापन का इच्छुक, विपरीत योनि वालों के साथ मैत्री करने का आकांक्षी, व्यवहार कुशल तथा कठिन परिस्थितियों में भी अपना कार्य निकालने में कुशल होगा। जातक प्रायः चन्द्र-बुध की स्थिति शुभ होने पर कामर्स, गणित, बैंकिंग, एक्टिंग, वस्त्र उद्योग, क्रय-विक्रय (Trading) आदि में सफलता प्राप्त कर लेता है। शुभ नग हीरा है। भाग्योदयकारक वर्ष २८, ३६, ४२ एवं ४८ वें होंगे।

मिथुन लगन-मिथुन लगन (राशि) का स्वामी बुध है। मिथुन लगन वाला जातक, गौरवर्ण, चंचल आँखों वाला, सामान्य एवं ऊँचे कद वाला होगा। जातक अस्थिर किन्तु मौलिक विचारों से युक्त, तीव्र बुद्धि, परिवर्तनशील प्रकृति, मित्रों को हर प्रकार से सहायक तथा नीति के अनुसार आचरण करने वाला, तर्क-वितर्क करने में कुशल, दूर-दूर के स्थानों की यात्राएँ करने का सौभाग्य प्राप्त करेगा। जातक में बुद्धि तत्त्व एवं भाव तत्त्व दोनों प्रबल होने के कारण पठन-पाठन, कानूनी कार्य, व्यापार सम्बन्धी और लेखन सम्बन्धी कार्यों को बड़ी गम्भीरता से करेगा, मजबूत हृदय वाला परन्तु नर्म स्वभाव होने के कारण कमजोर समझा जाता है। द्विस्वभाव होने से एक ही समय पर एक से अधिक कार्य शुरू करने की प्रवृत्ति रहेगी, अपने कार्य-क्षेत्र (व्यवसाय) में प्रायः परिवर्तन करता रहता है तथा प्रायः अपने परिश्रम, बुद्धि एवं चातुर्य के बल पर जीवन में सफलता प्राप्त कर लेगा। नए-नए मित्र बनाने में कुशल, बातचीत करने की कला में निपुण होगा। क्रय-विक्रय, पुस्तक-लेखन, लेखाकार (Accounts), बैंक, वकालत, अध्यापन, इंजीनियरिंग, कल-पुर्जों के कार्य-व्यवसाय में सफलता प्राप्त हो सकती है। शुभ नग पन्ना है। स्त्रियों के लिए पुखराज भी अच्छा होगा। भाग्योदयकारक वर्ष २२, ३२, ३५, ३६, ४२ वें होंगे।

कर्क लगन-कर्क लगन (राशि) का स्वामी चन्द्रमा है। जल तत्त्व प्रधान एवं चर राशि होने से जातक सुन्दर एवं आकर्षक मुखकृति, गोल चेहरा और मध्यम कद होगा। चन्द्र-मंगल शुभ हो तो जातक बुद्धिमान, संवेदनशील, भावुकहृदय, नयाप्रिय व दयालु स्वभाव वाला होगा। सामान्यतः परिवर्तनशील स्वभाव, चंचल, जलीय वस्तुओं (Liquids) का प्रिय, उच्च कल्पनाशील, समयानुकूल काम निकालने में कुशल, मिलनसार प्रकृति होगी। यदि चन्द्रमा अशुभ हो तो चिड़चिड़ा स्वभाव, वातावरण से शीघ्र प्रभावित होने वाला होगा। प्राकृतिक सौन्दर्य, कला-संगीत व साहित्य में विशेष रुचि रखे तथा सौन्दर्यानुभूति भी विशेष रूप से रहे। ऐसा जातक परिस्थितानुसार ढल जाने वाला, प्यार करना चाहे कर ही लेता है। कल्पना (विचार) शक्ति प्रबल होती है, अन्य पुरुष के भावों को शीघ्र समझ लेने की विशेष क्षमता होती है। कर्क राशि वालों को मकर, वृश्चिक, मीन राशि वालों के साथ मित्रता शुभ रहती है। शुभ नग सुच्चा मोती तथा सफेद पुखराज है। भाग्योदयकारक वर्ष २४, २५, २८, ३२, ३६, ४० होंगे।

सिंह लगन-सिंह लगन (राशि) का स्वामी सूर्य है। इस लगन (राशि) में जन्म लेने वाला जातक सुन्दर-पुष्ट शरीर वाला, चौड़ा मस्तक, सुगठित, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होगा। जातक बुद्धिमान, उद्यमी, कर्मठ, निडर, स्वतन्त्र विचारों वाला, पराक्रमी, व्यवहार कुशल, नीति के अनुसार आचरण करने वाला, उच्चाकांक्षी, खानपान का शौकीन, देश-विदेश में भ्रमण करने वाला, शीघ्र कुदृष्ट हो जाने की प्रकृति होने पर भी अपने बुद्धि-चातुर्य से स्थिति को सम्भाल लेने वाला होगा। छोटी-छोटी एवं मामूली बातों को उपेक्षा की दृष्टि से देखने वाला होगा तथा बड़े-बड़े कामों को भी अपने उद्यम द्वारा पूरा करने से तत्पर हो जाएगा। भाई-बन्धु होने पर भी उनका सुख कम रहता है। उच्चाभिलाषी होने के कारण प्रलेक कार्य-व्यवसाय को बड़े पैमाने एवं उच्चस्तर पर करना पसन्द करेगा। उच्चस्तरीय, वैभवशाली एवं रईसी जीवन-यापन करने की प्रबल इच्छा रखेंगे जिसके कारण अपनी सीमा से बढकर भी खर्च कर डालते हैं। इस लगन वाले जातक का बाह्य रूप में आकर्षक रूप एवं अच्छा स्वास्थ्य रहता है। शुभ नग माणिक्य है। सिंह लगन (राशि) वालों को सूर्य उपासना करनी चाहिए। भाग्योन्नति वर्ष १६, २२, २४, २६, २८, ३२ होते हैं।

कन्या लगन-कन्या लगन (राशि) वाले जातक का मध्यम कद, कोमल शरीर, सुन्दर व आकर्षक आँखें, लम्बी नाक, वाणी तेज और बारीक होगी। जातक प्रियभाषी, हर कार्य में सहायक, लज्जशील प्रकृति, नर्म स्वभाव और नीति के अनुकूल काम करने वाला होगा। कल्पनाशील, सूक्ष्मदर्शी, एवं संवेदनशील (Sensitive) स्वभाव होगा। शान्तचित्त एवं एकान्तप्रिय प्रवृत्ति होगी। परन्तु कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं को ढालने का सामर्थ्य होगा। एक ही समय पर अनेक यात्राएँ एवं विषयों में पारंगत होने की चेष्टा करेगा। संगीत, कला एवं साहित्य की ओर विशेष दिलचस्पी रखेगा। द्विस्वभाव एवं परिवर्तनशील प्रकृति होने के कारण एक विषय पर चिरकाल तक स्थिर नहीं हो पाता। बुध-शुक्र का शुभ योग होने से लेखा-गणित, (Account), संगीत, कला, अध्यापन, लेखन, क्रय-विक्रय आदि की ओर विशेष झुकाव रहेगा तथा सफलता भी होगी। धन की अपेक्षा बौद्धिक कार्यों में विशेष रुचि रहती है। बुद्धिमान, तीव्र स्मरणशक्ति एवं अध्ययनशील प्रकृति होगी। शुभ नग पन्ना है। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २५, ३२ तथा ३५, ३६, ४२ वें वर्ष होते हैं।

तुला लगन-तुला लगन (राशि) का स्वामी शुक्र है। तुला लगन (राशि) में उत्पन्न जातक श्वेत

व सुन्दर वर्ण, मध्यम अथवा लम्बा कद, सौम्य एवं हंसमुख प्रकृति होगी। जातक/जातिका न्यायप्रिय, हंसमुख, व्यवहारशील एवं नीति के अनुसार कार्य करने में कुशल होगा। ईमानदार, मिलनसार, नए-नए मित्र बनाने में कुशल होगा। सौंदर्यानुभूति विशेष होगी, संगीत, कला, नाट्य की ओर विशेष झुकाव होगा। रहने-सहन का ढंग रईसी एवं प्रभावपूर्ण होगा। जातक पर संगीत का प्रभाव जल्दी होगा। चन्द्र-शुक्र शुभ हों, तो मानसिक एवं कल्पनाशक्ति प्रबल होगी, परन्तु मन की केन्द्रीय शक्ति बहुत देर तक नहीं रहती। जब तक किसी कार्य में लगा रहे तब तक दिलोजान और मजबूत दिल से करें, परन्तु अपने विचार व योजना में परिवर्तन करने में भी शीघ्र तैयार हो जाएंगे। जातक को देश-विदेशों में अनेक स्थानों पर भ्रमण करने के अवसर प्राप्त होते हैं। बुद्धिमान, तर्कशील, सावधान एवं सतर्क रहने वाला, मध्यस्थता एवं न्याय करने में कुशल, विपरीत यौनि (Sex) के प्रति विशेष झुकाव रखे। इनको हीरा (Diamond) अथवा श्वेत मोती शुभ नग हैं जोकि किसी सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार धारण करने चाहिए। जीवन के २५, २७, ३२, ३३, ३५ एवं ४७वें वर्ष भाग्य वृद्धिकारक होंगे।

बुधिक लग्न-वृश्चिक लग्न (राशि) का स्वामी मंगल है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक सुन्दर मुख वाला, परिश्रमी, अपने सामर्थ्य पर ही भरोसा करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति होगी। मंगल शुभ हो तो उत्साही, उदार, परिश्रमी, साहसी, ईमानदार, स्पष्टवादी, परोपकारी, व्यवहार-कुशल, कर्तव्यनिष्ठ, दृढ़ संकल्प शक्ति वाला होगा। भाई बहनों अथवा सम्बन्धियों की सहायता कम मिलती है, निजी पुरुषार्थ द्वारा ही निर्वाह योग्य आय के संसाधन जुटा पाते हैं। तनिक विरुद्ध बात हो जाने पर शीघ्र उत्तेजित हो जाएंगे, परन्तु सच्चाई अथवा सुपात्रता की दृष्टि से सुयोग्य जन की सहायता करने में अपने स्वार्थ की भी बलि देने से पीछे नहीं हटेंगे। जातक जिस कार्य को करने का निश्चय कर लेता है, उसे दृढ़तापूर्वक पालन करने का प्रयास करता है। कैमिस्ट, इंजीनियर, वकील, पुलिस, सेना विभाग, अध्यापन, ज्योतिष, अनुसंधानकर्ता के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करेंगे। शुभ नग मूंगा है। शुभ रंग लाल, सन्तरी, पीला, हल्का गुलाबी (Pink) है। अपनी आयु के २४, २८, ३२, ३६, ४४वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

धनु लग्न-धनु लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक का ऊँचा मस्तक, कान बड़े, लग्न भाव में कूर ग्रह होने की स्थिति में सिर मध्य अलंबाल अथवा गंजा हो सकता है। गुरु-बुध की स्थिति शुभ हो तो सौम्य एवं शान्त, सरल स्वभाव, धार्मिक प्रकृति, उदार हृदय, परोपकारी, संवेदनशील, करुणा-दया आदि भावनाओं से युक्त होगा। दूसरों के मनोभावों को जान लेने की विशेष क्षमता होगी, इस लग्न (राशि) प्रभावित व्यक्ति में बौद्धिक एवं मानसिक शक्ति की प्रबलता के साथ-साथ अश्व जैसी तीव्रता, उत्साह एवं उत्तेजना से कार्य करने की क्षमता होगी। द्विस्वभाव राशि के कारण शीघ्र कोई निर्णय नहीं ले पाएँ और इनको क्रोध जल्दी नहीं आता, परन्तु जब आता है तो देर तक क्रोधित रहते हैं। अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण कठिन से कठिन समस्याओं को अपने सब, साहस एवं परिश्रम के द्वारा सुलझा लेंगे तथा निजी पुरुषार्थ द्वारा जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति करने वाला, धन, सम्पदा, भूमि-जायदाद व सवारी आदि सुखों को प्राप्त करने में सफल होगा। मंगल-गुरु शुभ हो तो उच्च व्यवसायिक विद्या के योग है। शिक्षक, फार्म-प्रचारक, राजनीतिक, वैद्य-डॉक्टर, वकील, पुस्तक व्यवसाय आदि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। शुभ नग पुखराज है। अपनी आयु के २३, २७, ३२, ३६वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

मकर लग्न-मकर लग्न (राशि) का स्वामी शनि है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाले जातक का मध्यम कद, नयन नक्शा तीक्ष्ण, सुन्दर मुखाकृति, काले घने बाल एवं पतली कमर वाला होगा। जातक गम्भीर, भावुक, हृदय, संवेदनशील, उच्चाभिलाषी, सेवाधर्मी, मननशील एवं धार्मिक प्रवृत्ति वाला होगा। बुध व शुक्र शुभ होने पर व्यवहार-कुशल, गहन विचार एवं सूक्ष्म विश्लेषण के पश्चात् ही महत्वपूर्ण निर्णय लेते हैं। क्षमाशील प्रायः कम होते हैं तथा इन्हें बदले एवं शत्रुता की भावना

भुला पाना अत्यन्त कठिन होता है। घर राशि एवं लग्न होने से जातक की मानसिक एवं आत्मिक शक्ति प्रबल होगी। गुरु-शनि शुभ हो तो, जातक नर्म स्वभाव (विनम्र), विनयशील, व्यवहार-कुशल, नीति के अनुकूल आचरण करने वाला, तर्कशील, भली-बुरी बात की पहचान करने में कुशल, विश्वसनीय, मित्रता स्थापित करने में अत्यन्त सावधान (Selective) तथा ईमानदार होंगे। तर्क-वितर्क करने में कुशल, अपने विरुद्ध बात को हृदय से भुला पाना कठिन होता है। खांसी तथा वायु रोग से सावधानी बरतें। शुभ नग नीलम है। भाग्योन्नति वर्ष २२, २४, २८ एवं ३२, ४६ होते हैं।

कुम्भ लग्न-लग्नेश (राशिपति) शनि शुभ अवस्था में हो तो जातक मध्यम अथवा ऊँचे कद वाला, सुन्दर प्रभावशाली व्यक्तित्व होगा। बुद्धिमान, साधन सम्पन्न, तीव्र स्मरण शक्ति एवं गम्भीर प्रकृति वाला होगा। दूसरों के प्रति दयाभाव रखने वाला, परोपकारी मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए हर प्रकार से सहायक होगा। व्यवहार कुशल, मिलनसार, स्पष्टवादी एवं निस्वार्थ भाव से सेवा करने में तत्पर होगा। जातक स्वाभिमानी, स्वतन्त्रताप्रिय एवं नए-नए मित्र बनाने में भी पीछे नहीं हटेगा। उद्योगी, उद्यमी, परिश्रमी प्रकृति एवं प्रबन्धात्मक योग्यता विशेष होगी एवं उपयुक्त साधन उपलब्ध होने पर देश-विदेशों में जाने के सुअवसर प्राप्त होंगे। महत्त्वकांक्षी होते हुए भी क्रियात्मक दृष्टिकोण रखेंगे तथा अनेक विघ्न-बाधाओं व कठिनाइयों के होने पर भी जीवन में उच्च स्थिति, धन पदादि प्राप्त करने में सफल होंगे। कुम्भ लग्न में यदि गुरु मित्र क्षेत्री या शुभ में हो तो जातक उच्चाधिकारी, उच्चपदासीन, क्रय-विक्रय, प्रोफेसर, जज-वकील अथवा उच्च एवं धनी-व्यापारी होगा, प्रारम्भिक जीवन में आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष होगा। आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष व कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। शुभ नग नीलम है। स्त्रियों के लिए, पुखराज शुभ होगा।

मीन लग्न-मीन लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। मीन लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक बुद्धिमान, गम्भीर एवं सौम्य प्रकृति, परोपकारी कार्य करने में तत्पर, ईमानदार, सत्यप्रिय, धार्मिक, धर्म-कर्म एवं फिलासफी, साहित्य एवं गूढ़ विद्याओं की ओर विशेष अभिरुचि रखेगा। उच्चाभिलाषी, उच्चाकांक्षी एवं स्वाभिमानी प्रकृति, अपनी मान-मर्यादा एवं प्रतिष्ठा का विशेष ध्यान रखें। सेवाभाव रखने वाला, तीव्र बुद्धि, परिश्रमी, उद्यमी, दूरदर्शी, व्यवहार कुशल एवं नीति के अनुसार आचरण करने वाला, विश्वसनीय, ईमानदार तथा हर प्रकार से मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए सहायक होंगे। परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल लेने की अपूर्व क्षमता होगी। देव तुल्य प्रकृति होती है। दूसरों पर न तो अन्याय करेंगे न ही किसी भाँति अन्याय को सहन करेंगे। जातक कलाकार, चल-चित्र, व्यवसाय, खाने-पीने की वस्तुओं से सम्बन्धित, समाज सुधारक, अध्यापन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। शुभ नग पुखराज है। शुभ वैवाहिक जीवन के लिए पन्ना धारण करें। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २४, २८, ३३, ३८, ४५ वर्ष होते हैं।

ज्योतिषी तत्त्व-(लेखक पं. पन्ना लाल ज्योतिषी) इसमें भारतीय ज्योतिष के प्रारम्भिक इतिहास से लेकर ज्योतिष सम्बन्धी प्रारम्भिक ज्ञान-सम्पूर्ण बड़ी जन्म पत्री निर्माण शैली, ग्रहों के सप्तवर्षी बलाबल निकालना। भावों, राशियों एवं ग्रहों तथा फलादेश सम्बन्धी मूलभूत सिद्धान्तों को अत्यन्त सरल शैली में प्रस्तुत किया गया है। नवीन संशोधित संस्करण (मूल्य ६० रुपये)

वर्षफल चन्द्रिका-(नवीन संशोधित संस्करण) इसमें अब प्राचीन सूर्य सिद्धान्तीय वर्ष सारणी के अतिरिक्त नवीन वेध सिद्ध सारिणी का भी समावेश किया गया है। जातक फल, प्रश्नफल एवं गोचर फल कथन की विशेष रीतियों का विशद वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त वर्षफल बनाने और वर्ष भर की ठीक-ठाक फलादेश कहने के लिए उत्तम पुस्तक है। (मूल्य ६० रुपये)

ज्योतिष तत्त्व फलित (दो खण्डों में) द्वादश लग्नों में ग्रहों के राशिगत एवं भाव सम्बन्धी विस्तृत फलादेश दिए गए हैं। इन दो खण्डों के पास होने से आप एक सफल ज्योतिषी बन सकते हैं। (मूल्य २५० रु. प्रत्येक)

जब हमारी घड़ियां बारह (१२) बजाती हैं

विश्व के प्रत्येक देश का मानक समय (स्टैण्डर्ड टाइम) अलग-अलग होता है। एक ही समय में अनेक देशों के स्टैण्डर्ड टाइम में कई घण्टों का अन्तर रहता है। उदाहरणार्थ जब भारत में दोपहर के १२ बजे होते हैं, तो इंग्लैण्ड में प्रातः के साढ़े छः (६.३०) बजे होते हैं। एवं पाकिस्तान में प्रातः के साढ़े ग्यारह (११.३०) बजे होते हैं। ध्यान रहे, अमेरिका, इंग्लैण्ड आदि कई देशों में ऑरल के प्रथम रविवार से अक्टूबर के प्रथम सप्ताह तक सभी घड़ियों का समय एक घण्टा आगे बढ़ा दिया जाता है। जिससे उनके मानक समयान्तर (Difference of Standard Times) में एक घण्टे का अन्तर पड़ जाता है। नीचे भिन्न-भिन्न कुछ देशों के स्टे. समय और भारत के स्टे. समय का अन्तर स्पष्ट करते हैं। अमेरिका, कैनैडा, रूस आदि अति विस्तृत देशों में एक से अधिक स्टे, टाइम का निर्धारण किया जाता है।

| नाम देश | राजधानी | स्टै. समय | नाम देश | राजधानी | स्टै. समय |
|-------------|----------|--------------|--------------|-------------|-------------|
| अमेरिका | वाशिंगटन | १.३० प्रातः | भारत | नई दिल्ली | १२ दुपैहर |
| अफगानिस्तान | काबुल | ११.०० प्रातः | पाकिस्तान | इस्लामाबाद | ११.३० दुपै. |
| आस्ट्रेलिया | कैनबरा | ४.३० सायं | फ्रांस | पेरिस | ७.३० प्रातः |
| आयरलैंड | डबलिन | ६.३० प्रातः | स्विट्जरलैंड | जिनेवा | ७.३० प्रातः |
| इंडोनेशिया | जकार्ता | १.३० दुपै. | जापान | टोकियो | ३.३० दुपै. |
| इंग्लैंड | लन्दन | ६.३० प्रातः | चीन | पीकिंग | २.३० दुपै. |
| इटली | रोम | ७.३० प्रातः | रूस | मास्को | ९.३० प्रातः |
| ईरान | तैहरान | १०.०० प्रातः | सऊदी अरब | मक्का | ९.३० प्रातः |
| ओमान | मस्कट | १०.३० प्रातः | थाईलैंड | बैंकाक | १.३० दुपै. |
| कीनिया | नैरोबी | ९.३० प्रातः | डैनुमार्क | कोपनहैगन | ७.३० प्रातः |
| कैनेडा | ओटावा | १.३० प्रातः | श्रीलंका | कोलम्बो | १२.०० दुपै. |
| कुवैत | कुवैत | ९.३० प्रातः | सिंगापुर | सिंगापुर | २.०० दुपै. |
| बंगलादेश | ढाका | १२.३० दुपै. | मलेशिया | कुआलालम्पुर | २.०० दुपै. |
| द. कोरिया | सियोल | ३.३० सायं | न्यूजीलैंड | वेलिंगटन | ६.३० शाम |
| ग्रीस | एथेंस | ८.३० प्रातः | जर्मनी | बर्लिन | ७.३० प्रातः |
| जांबिया | लुसाका | ७.३० प्रातः | जार्डन | अमन | ७.३० प्रातः |
| कतर | अरब | ९.३० प्रातः | फिलिपाईन | मनीला | २.३० दुपै. |
| बर्मा | रंगून | १३.०० दुपै. | रोमानिया | बुखापेस्ट | ८.३० प्रातः |

चरणामृत ग्रहण करने का मन्त्र—

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधि विनाशनम् ।

विष्णोः पादोदकां पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥

त्रैदिक लवण सारणी में वार्षिक संस्कार

आगामी पृष्ठों में दी गई दैनिक लान सागणी ३१. १९ अक्षांश जालन्धर एवं २३. ३० अक्षांश पर आधारित है। इसमें प्रत्येक लान के सम्पादकाल अंग्रेजी तारीखों के मुताबक, भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में लिखा गया है। सूर्योदयास्त एवं लग्न के प्रारम्भ तथा सम्पादकाल आधार मुख्यतः अंग्रेजी तारीखें ली गई हैं। चूँकि पृथ्वी की अयनगति में प्रतिवर्ष परिवर्तन होता है, इसके अतिरिक्त तीन वर्षों के पश्चात् हर चौथे वर्ष लीप वर्ष (अर्थात् फरवरी मास के दिन २८ को अपेक्षा २९ होते हैं) होने के कारण लगनों के मान में प्रतिवर्ष कुछ स्थूलता आ जाती है। इसको सूक्ष्म बनाने के लिए वार्षिक संस्कार सागणी दी जा रही है। यह वार्षिक संस्कार (+ या -) करने से अभीष्ट सन एवं तारीख (Desired date and Year) का सूक्ष्मतम लान सम्पादकाल प्राप्त होगा। वार्षिक संस्कार सागणी में लीप वर्ष (Leap Year) दो बार लिखा गया है। जिस सन इसकी के साथ (A) का निशान दिया गया है, उस संस्कार तालिका को जनवरी की १ तारीख से २८ फरवरी तक के लिए जानें तथा जिस सन के साथ (B) का निशान है, उस संस्कार तालिका का प्रयोग १ मार्च से ३१ दिसम्बर तक की अवधि के लिए करें।

२९ फरवरी के लान मान के लिए २८ फरवरी के प्रत्येक लान (कुम्भ से यकत तक) सभा: काल: में से २७ मिमन्त हीन (कम्प) कर देवे। लीप रहित जिस सन् के लिए कोई निशान नहीं दिया गया उस संस्कार तालिका का प्रयोग ३ जनवरी से ३१ दिसंबर तक के महीनों के लिए करें। उदाहरणार्थ—ता. १६ अप्रैल, १९९५ को मेप लान समाप्ति देखना है तो सारणी में ता. १६ अप्रैल को ७.२९ पर मेप लान समाप्त हुआ। अतः इसमें वार्षिक संस्कार तालिका से हमें +२ मिमन्त प्राप्त हुए। अतः सन् १९९५ में मेप लान ७.३१ पर समाप्त होगा।

दैनिक लगन सारिणी में वार्षिक संस्कार तालिका

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मृत्यु संक्रान्तियों में प्रतिवर्ष परिवर्तन के कारण देशों प्रविष्ट एवं अंग्रेजी तारीखों में कई बार परस्पर एक दिन का अन्तर पड़ जाता है। सूक्ष्मता के लिए सारिणी का प्रयोग अंग्रेजी तारीखानुसार करें।

| दैनिक लग्न सारणी | | | | | | | | | | | | | | भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर | | | | | | | | | | | | | |
|-----------------------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|-----------------------------------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| पल्ल - पाठ्य (कालानु) | | | | | | | | | | | | | | भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर | | | | | | | | | | | | | |
| क्र.सं. | कुम्भ | मीन | मेघ | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | क्र.सं. | कुम्भ | मीन | मेघ | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ |
| क्र.सं. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | क्र.सं. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. | चं. मि. |
| 13 | १८३८ | १००० | ११३३ | १३२७ | १५४१ | १८०५ | २०२५ | २२४३ | २४०४ | २५२८ | २६५८ | २७९० | २९२३ | 14 | १८०६ | १३३१ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ |
| 14 | २८३४ | १५६१ | १२२१ | १३२३ | १४२५ | १५२७ | १६२९ | १७३१ | १८३३ | १९३५ | २०३७ | २१३९ | २२४१ | 15 | २८०२ | १३३५ | १२२१ | १३२३ | १४२५ | १५२७ | १६२९ | १७३१ | १८३३ | १९३५ | २०३७ | २१३९ | २२४१ |
| 15 | ३८३० | २५६७ | १३२५ | १४२७ | १५२९ | १६३१ | १७३३ | १८३५ | १९३७ | २०३९ | २१४१ | २२४३ | २३४५ | 16 | ३७५८ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ |
| 16 | ४८२६ | ३५७३ | १४२७ | १५२९ | १६३१ | १७३३ | १८३५ | १९३७ | २०३९ | २१४१ | २२४३ | २३४५ | २४४७ | 17 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ |
| 17 | ५८२२ | ४५७९ | १५२९ | १६३१ | १७३३ | १८३५ | १९३७ | २०३९ | २१४१ | २२४३ | २३४५ | २४४७ | २५४९ | 18 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ |
| 18 | ६८१८ | ५५७५ | १६३१ | १७३३ | १८३५ | १९३७ | २०३९ | २१४१ | २२४३ | २३४५ | २४४७ | २५४९ | २६५१ | 19 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ |
| 19 | ७८१४ | ६५७१ | १७३३ | १८३५ | १९३७ | २०३९ | २१४१ | २२४३ | २३४५ | २४४७ | २५४९ | २६५१ | २७५३ | 20 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ |
| 20 | ८८१० | ७५६७ | १८३५ | १९३७ | २०३९ | २१४१ | २२४३ | २३४५ | २४४७ | २५४९ | २६५१ | २७५३ | २८५५ | 21 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ |
| 21 | ९८०६ | ८५६३ | १९३७ | २०३९ | २१४१ | २२४३ | २३४५ | २४४७ | २५४९ | २६५१ | २७५३ | २८५५ | २९५७ | 22 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ |
| 22 | १०८०२ | ९५५९ | २०३९ | २१४१ | २२४३ | २३४५ | २४४७ | २५४९ | २६५१ | २७५३ | २८५५ | २९५७ | ३०५९ | 23 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ |
| 23 | ११८०८ | १०५८ | २१४१ | २२४३ | २३४५ | २४४७ | २५४९ | २६५१ | २७५३ | २८५५ | २९५७ | ३०५९ | ३१६१ | 24 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ |
| 24 | १२८०४ | ११५८ | २२४३ | २३४५ | २४४७ | २५४९ | २६५१ | २७५३ | २८५५ | २९५७ | ३०५९ | ३१६१ | ३२६३ | 25 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ |
| 25 | १३८०० | १२५८ | २३४५ | २४४७ | २५४९ | २६५१ | २७५३ | २८५५ | २९५७ | ३०५९ | ३१६१ | ३२६३ | ३३६५ | 26 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ |
| 26 | १४८०४ | १३५८ | २४४७ | २५४९ | २६५१ | २७५३ | २८५५ | २९५७ | ३०५९ | ३१६१ | ३२६३ | ३३६५ | ३४६७ | 27 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ |
| 27 | १५८०८ | १४५८ | २५४९ | २६५१ | २७५३ | २८५५ | २९५७ | ३०५९ | ३१६१ | ३२६३ | ३३६५ | ३४६७ | ३५६९ | 28 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ |
| 28 | १६८०४ | १६५८ | २६५१ | २७५३ | २८५५ | २९५७ | ३०५९ | ३१६१ | ३२६३ | ३३६५ | ३४६७ | ३५६९ | ३६७१ | 29 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ |
| 29 | १७८०८ | १७५८ | २७५३ | २८५५ | २९५७ | ३०५९ | ३१६१ | ३२६३ | ३३६५ | ३४६७ | ३५६९ | ३६७१ | ३७७३ | 30 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ |
| 30 | १८८०४ | १८५८ | २८५५ | २९५७ | ३०५९ | ३१६१ | ३२६३ | ३३६५ | ३४६७ | ३५६९ | ३६७१ | ३७७३ | ३८७५ | 31 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ |
| 31 | १९८०८ | १९५८ | २९५७ | ३०५९ | ३१६१ | ३२६३ | ३३६५ | ३४६७ | ३५६९ | ३६७१ | ३७७३ | ३८७५ | ३९७७ | अ. १ | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | |
| अ. १ | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | 2 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | |
| 2 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | 3 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | |
| 3 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | 4 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | |
| 4 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | 5 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | |
| 5 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | 6 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | |
| 6 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | 7 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | |
| 7 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | 8 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | |
| 8 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | 9 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | |
| 9 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | 10 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | |
| 10 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | 11 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | |
| 11 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | 12 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | |
| 12 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | 13 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | |
| 13 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | 14 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | |
| 14 | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | वै. १ | ४७५४ | १३३५ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | १३३३ | |

भारत के प्रमुख नगरों में लगनों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल जानना

इस पंचांग के गत पृष्ठों में जो दैनिक लनसारणी दी गई है, वह जालन्धर के अक्षांश ३१।१९ पर आधारित है। भारत के किसी अन्य नगर में लगनाम्भ अथवा समाप्तिकाल जानने के लिए नीचे दी गई तालिका में मेष, वृषादि राशियों के नीचे लिखे संस्कार अनुसार जालन्धर सारणी में जमा (+) करने अथवा (—) देने से आपको अभीष्ट तारीख एवं नगर में लगनों का समाप्तिकाल भा. स्टै. टाइम में ज्ञात हो जाएगा। उदाहरण स्वरूप—यदि आपने १६ जुलाई, २००५ को दिल्ली में कन्या लगन का समाप्तिकाल जानना है, तो सर्व प्रथम जालन्धर की दैनिक लगन सारणी में देखने पर हमें १६ जुलाई को कन्या लगन १२।४१ पर समाप्तिकाल लिखा मिला है। तदनन्तर आगे सारणी में दिल्ली के आगे कन्या लगन के नीचे देखने पर हमें—८ मिनट मिले। इन्हें जालन्धर में कन्या ल. समा., १२।४१ (घं. मिं.) में से और घटाने पर हमें १२।३३ (घं. मिं.) पर कन्या लगन समाप्तिकाल प्राप्त हुआ। कन्या लगन का समाप्तिकाल ही तुला लगन का प्रारम्भिकाल होगा। नोट—नीचे लगन संस्कार तालिका में यदि किसी अभीष्ट नगर का नाम न मिले, तो आप अपने निकटस्थ नगर का संस्कार ग्रहण कर सकते हैं। सुश्री निधि शर्मा M.Sc.

| नाम शहर | मेष मिन्ट | वृष मिन्ट | मिथु. मिन्ट | कर्क मिन्ट | सिंह मिन्ट | कन्या मिन्ट | तुला मिन्ट | वृश्चि. मिन्ट | धनु मिन्ट | मकर मिन्ट | कुम्भ मिन्ट | मीन मिन्ट |
|----------------|--------------|--------------|----------------|---------------|---------------|----------------|---------------|------------------|--------------|--------------|----------------|--------------|
| अमृतसर | +२ | +२ | +२ | +३ | +२ | +२ | +३ | +३ | +३ | +२ | +२ | +१ |
| अम्बाला | -५ | -५ | -५ | -३ | -३ | -६ | -५ | -५ | -५ | +६ | +६ | +३ |
| अजमेर | +१० | +१२ | +१३ | +१३ | +८ | +४ | -१ | -३ | +२ | +२ | +१ | +१ |
| अबोहर | +५ | +५ | +५ | +६ | +५ | +५ | +६ | +६ | -३ | -२ | -२ | -३ |
| अहमदाबाद | +२६ | +३० | +३० | +२५ | +१७ | +७ | -१ | -५ | -१७ | -१३ | -८ | -५ |
| अलाहाबाद | -१५ | -१२ | -१३ | -१५ | -२१ | -२१ | -३४ | -३७ | +१ | +१ | +१ | +० |
| अलीगढ़ | -४ | -३ | -३ | -५ | -७ | -१३ | -१६ | -१७ | -२१ | -३६ | -२७ | -२४ |
| अयोध्या | -१८ | -१८ | -१५ | -१९ | -२१ | -२५ | -२८ | -३० | -१ | -११ | -६ | -४ |
| अलवर | +३ | +४ | +४ | +४ | +१ | -४ | -६ | -७ | -७ | -७ | -६ | -६० |
| आगरा | -४ | -२ | -२ | -४ | -७ | -१२ | -१५ | -१६ | -१६ | -११ | -६ | -३ |
| इन्दौर | +१३ | +१७ | +१५ | +१० | +३ | -८ | -१४ | -१९ | +६ | +७ | +७ | +६ |
| ऊना (हि. प्र.) | -३ | -३ | -३ | -३ | -२ | -२ | -२ | -२ | -४१ | -४१ | -३७ | -३२ |
| उधमपुर | -२ | -२ | -२ | +११ | +३ | +४ | +७ | +७ | -५ | -५ | -५ | -५ |
| उज्जैन | +१३ | +१६ | +१४ | +६ | +० | -७ | -१४ | -१९ | +१ | +० | +३ | -४ |
| उदयपुर | +१९ | +२१ | +२० | +१३ | +७ | +२ | -४ | -८ | -७ | -७ | -२ | +३ |
| करनाल | -५ | -६ | -६ | -५ | -७ | -६ | -६ | -७ | -९ | -७ | -४ | -४ |
| कालका | -५ | -५ | -५ | -५ | -४ | -५ | -६ | -६ | -५ | -४ | -४ | -४ |
| कुरुक्षेत्र | -५ | -५ | -५ | -५ | -५ | -६ | -६ | -७ | +६ | +५ | +३ | +१ |
| करतारपुर | +१ | +१ | +० | +० | -१ | -१ | +१ | +१ | -२ | -१ | +१ | +१ |
| कोटखाई | -७ | -७ | -७ | -७ | -७ | -८ | -७ | -७ | -७ | -५ | -४ | -३ |
| कोटा | +१ | +१ | +१ | +१ | +५ | -६ | -११ | -१४ | +१० | +१३ | +१७ | +२२ |
| कपरथला | +१ | +१ | +० | +० | -० | -० | +० | -० | +१ | +१ | +१ | +१ |
| काठमाण्डू | -३२ | -३१ | -३१ | -३० | -३३ | -३८ | -४० | -४२ | -६३ | -५५ | -४६ | -३२ |
| कलकत्ता | -३७ | -३२ | -३५ | -४० | -४९ | -५८ | -६४ | -६९ | -१२ | -१० | -७ | -५ |
| कानपुर | -१० | -८ | -९ | -११ | -१५ | -२१ | -२५ | -२७ | -४२ | -३१ | -२१ | -१४ |
| कागडा | -५ | -५ | -६ | -५ | -५ | -५ | -५ | -५ | -१२ | -११ | -९ | -९ |
| कुल्लू | -७ | -७ | -७ | -७ | -६ | -६ | -५ | -४ | -४ | -४ | -४ | -४ |

| नाम शहर | मेघ मिन्ट | वृष मिन्ट | मिश्र मिन्ट | कर्क मिन्ट | सिंह मिन्ट | कन्या मिन्ट | तुला मिन्ट | वृश्चि मिन्ट | धनु मिन्ट | मकर मिन्ट | कुम्भ मिन्ट | मीन मिन्ट |
|----------------|-----------|-----------|-------------|------------|------------|-------------|------------|--------------|-----------|-----------|-------------|-----------|
| नाहन (हि.प्र.) | -६ | -६ | -६ | -५ | -५ | -६ | -६ | -७ | -७ | -१४ | -११ | -८ |
| नागल (पंजा.) | -३ | -३ | -३ | -४ | -४ | -४ | -४ | -४ | -४ | -६ | -६ | -५ |
| नैनीताल | -१२ | -११ | -११ | -१२ | -१३ | -१७ | -१८ | -२० | -१९ | -१७ | -१४ | -११ |
| नवलगढ़ | +७ | +९ | +९ | +८ | +६ | +३ | +१ | +२ | +२ | +२ | +१ | +१ |
| नवाशहर | -२ | -२ | -२ | -२ | -३ | -३ | -२ | -२ | -३ | -३ | -८ | -६ |
| नागपुर | +३ | +९ | +११ | +० | -१० | -२१ | -३० | -३४ | -५२ | -४० | -२३ | -०५ |
| नदौन (हि.प्र.) | -३ | -३ | -३ | -४ | -४ | -४ | -४ | -३ | -३९ | -२६ | -९ | +१० |
| नाभा (पंजा.) | -२ | -३ | -२ | -२ | -२ | -२ | -३ | -३ | +४ | +४ | +३ | +३ |
| पटियाला | -३ | -३ | -३ | -३ | -३ | -३ | -५ | -५ | -१ | -१ | -२ | -२ |
| पानीपत | -६ | -६ | -६ | -६ | -६ | -७ | -७ | -७ | -१२ | -३ | +१ | +२१ |
| पठानकोट | -२ | -२ | -३ | -२ | -२ | -२ | -२ | -२ | -३ | -४ | -४ | -४ |
| पुछ | -१ | -२ | -१ | +० | +४ | +८ | +१२ | +१४ | -५५ | -४८ | -३९ | -३१ |
| प्रयाग | -१६ | -१४ | -१५ | -१८ | -२४ | -३० | -३५ | -३७ | -१० | -८ | -५ | -३ |
| पूना (महा.) | +२८ | +३५ | +३७ | +२४ | +११ | -२ | -३ | -३ | -२ | -१ | -१ | -२ |
| पंचकूला | -५ | -५ | -५ | -४ | -४ | -६ | -६ | -६ | -३० | -२७ | -२३ | -१८ |
| पटना | -२९ | -२५ | -२१ | -२९ | -३५ | -४२ | -४७ | -४९ | -७५ | -७१ | -६५ | -६१ |
| पालमपुर | -६ | -६ | -६ | -५ | -५ | -५ | -६ | -६ | -१ | -७ | -७ | -५ |
| फरीदकोट | +३ | +३ | +२ | +३ | +३ | +२ | +४ | +३ | +११ | +७ | +६ | +१ |
| फगवाड़ा | -१ | -१ | -१ | -३ | -३ | -२ | -२ | -३ | -५ | -७ | -७ | -६ |
| फाजिल्का | +५ | +५ | +५ | +६ | +५ | +५ | +६ | +६ | -५ | -६ | -६ | -५ |
| फिरोजपुर | +३ | +३ | +३ | +४ | +३ | +३ | +४ | +४ | -१ | -१ | -५ | -६ |
| फरीदाबाद | -३ | -२ | -२ | -३ | -५ | -९ | -१२ | -१३ | -४ | -४ | -४ | -५ |
| बटाला | +१ | +१ | +१ | +२ | +१ | +१ | +२ | +२ | -८ | +१ | +२ | +२१ |
| वाराणसी | -२० | -१६ | -१२ | -२१ | -२६ | -३३ | -३८ | -४१ | -८ | +१ | +२ | +२१ |
| बिलासपुर | -५ | -५ | -५ | -४ | -४ | -५ | -४ | -४ | -३ | -३ | -३ | -३ |
| बंगलौर | +२१ | +२९ | +२७ | +१६ | -१ | -२१ | -३६ | -४४ | -११ | -११ | -१० | -९ |
| बरेली | -११ | -९ | -९ | -१० | -१२ | -१५ | -१७ | -१९ | -३९ | -३७ | -३५ | -१ |
| बीकानेर | +१३ | +१५ | +१५ | +१४ | +१३ | +९ | +८ | +६ | -१ | -१ | -३ | -३ |
| बड़ौदा | +२६ | +३० | +२९ | +२३ | +१६ | +७ | +२ | +५ | -४ | -४ | -२ | -४ |
| बुलन्दशहर | -५ | -५ | -५ | -६ | -८ | -१२ | -१४ | -१५ | -२२ | -११ | -१० | -९ |
| बनाराला | -१ | -१ | -२ | -१ | -१ | -१ | -१ | -१ | -७ | -७ | -७ | -७ |
| विशाखापटनम | -९ | -१ | +१ | -३३ | -२६ | -४० | -५२ | -५८ | -३ | +१ | +० | +२ |
| भटिण्डा | +३ | +३ | +२ | +३ | +३ | +२ | +४ | +३ | -२ | -२ | -२ | +२ |
| भुवनेश्वर | -२३ | -१७ | -१९ | -२५ | -३६ | -४९ | -५८ | -६३ | -१२ | -१२ | -१५ | -१ |
| भरतपुर | -२ | +० | -१ | -२ | -६ | -१२ | -१५ | -१७ | -२ | -२ | -२ | -४ |
| भोपाल | +६ | +१० | +९ | +५ | -३ | -१३ | -२० | -२३ | -५ | -४ | -१ | +२ |
| मेरठ (उ.प्र.) | -४ | -३ | -३ | -३ | -४ | -७ | -१० | -११ | -२ | +० | +१ | +२ |

अब्द्ध-शताब्दि पंचांग (दैनिक ग्रह स्पष्ट सहित)

पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज द्वारा ज्योतिषाचार्य एवं जन्मपत्री निर्माण के लिए उपयोग करने हेतु पहले पुराने पंचांगों को दोबारा परिवर्धित रूप में संवत् २००९ से संवत् २०५० तक तैयार किया गया है। दैनिक सूर्योदयास्त, दैनिक ग्रह स्पष्ट, सूर्य, चन्द्रादि ग्रहों के राशि प्रवेश दिए गए हैं। मूल्य-६४०/-

पता --- जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर-144008

द्वादश भावों, राशियों एवं नवग्रहों से रोग विचार

रोग विचार की दृष्टि से भावों का विशेष महत्व है क्योंकि भावगत होकर ही विभिन्न राशियों एवं ग्रह अपना शुभाशुभ फल प्रकट करते हैं। इन लग्न आदि द्वादश भावों द्वारा ही मनुष्य जीवन से सम्बन्धित प्रायः सभी विषयों के बारे में माना जा सकता है। जन्म कुण्डली का कोई भी भाव अशुभ राशि एवं पाप ग्रह से दूषित होने पर जातक के शरीरांग में ग्रह राशि से सम्बन्धित वैसे ही रोग को प्रकट करने लगता है। कौन-सा भाव किस प्रकार के रोगों की अभिव्यक्ति करता है ? उसका विचार निम्नानुसार करना चाहिए—

प्रथम भाव लग्न—शारीरिक गठन, स्वास्थ्य, मस्तिष्क रोग, सिर दर्द, मानसिक रोग, स्मरण शक्ति, नेत्र रोग, मुहाँसे, उन्माद, रक्ताघात, मिर्गी आदि, इस भाव का कारक सूर्य है।

द्वितीय भाव—मुख रोग, नेत्र रोग, कर्ण रोग, दन्त, नासिका एवं कण्ठ सम्बन्धी रोग, मुख, पक्षाघात, डिप्थीरिया, फोड़ा, फूँसी, मद्य-पान, दाहिनी आँख, वाक्शक्ति, वाणी, स्वर आदि इस भाव का कारक गुरु है।

तृतीय भाव—धैर्य, सामर्थ्य, बल, दाहिना कान, भुजाएँ, श्वास की नली, फेफड़े, खाँसी, दमा आदि श्वास रोग, पराक्रम, मस्तिष्क ज्वर, मानसिक असंतुलन, बाजु एवं कन्धे में पीड़ा या जकड़न, नकसीर, ब्रोंकाईटिस, एलर्जी, गले की खराबी, यात्रा में कष्ट, दुर्घटना आदि। इसका कारक मंगल है।

चतुर्थ भाव—छाती, हृदय एवं पसलियों के रोग, मानसिक विकार, अजीर्ण, उदर एवं पाचन सम्बन्धी रोग, रैस विकार, जलोदर, कैसर, वातरोग, माता को कष्ट आदि, इस भाव का कारक चन्द्र व बुध हैं।

पंचम भाव—पित्त रोग, जिगर एवं गुर्दे के रोग, जठराग्नि, पीलिया, हृदय सम्बन्धी रोग, नेत्र रोग, कमर में पीड़ा, ज्वर, बुद्धि, स्मरण शक्ति का ह्रास आदि, दिल की धड़कन कम या अधिक होना, उदर, गर्भाशय एवं मूत्राशय सम्बन्धी रोगों का विचार। इस भाव का कारक गुरु है।

षष्ठ भाव—यह भाव तो रोग का ही स्थान है। इस भाव से विशेष तौर पर रोग का विचार करते हैं। इस भाव से नाभि, पेट, कमर एवं अंतर्दियों (आंतों) सम्बन्धी रोग, अपचन, दस्त आदि दौंत, अमाशय सम्बन्धी, अपेंडिक्स, पथरी, हर्निया आदि इस भाव के मंगल व शनि कारक हैं।

सप्तम भाव—इस भाव से वस्ति, गुर्दे, मूत्राशय सम्बन्धी रोग, कमर-दर्द, प्रमेह, मधुमेह, प्रदर, पथरी, गर्भाशय, स्पाण्डलाइटिस, रीढ़ की हड्डी का दर्द, काम

एवं सैक्स एवं जननेन्द्रिय सम्बन्धी एवं गुप्त रोगों का विचार किया जाता है। इस भाव का कारक शुक्र है।

अष्टम भाव—आयु, मृत्यु, मृत्यु का कारण, वीर्य विकार, बवासीर, पथरी, हर्निया, मधुमेह, रक्त दोष, गुर्दे सम्बन्धी, वायु विकार, विचित्र पेचीदा रोग, गुदा, अण्डकोश, जननेन्द्रिय एवं गुप्तांग, दुर्घटना एवं चोट आदि स्त्रियों के मासिक धर्म की अनियमितता गर्भाशय एवं यौन रोगों आदि का विचार। इस भाव का कारक शनि है।

नवम भाव—लिवर एवं रक्त विकार, कमर एवं उसके आस-पास अंगों से सम्बन्धित रोग, गठिया, साइरिका, दुर्घटना, चोट, घाव, पक्षाघात, मज्जा एवं स्त्रियों के मासिक धर्म, पीठ, पेट एवं मेरूदण्ड से सम्बन्धित रोग, शुभाशुभ स्वप्न, गुप्त चिन्ता एवं अधिक यात्रा से उत्पन्न थकान, मन की शान्ति, सन्तोष आदि। इस भाव के कारक सूर्य व गुरु हैं।

दशम भाव—इस भाव से गठिया, एगजमा, त्वचा रोग, घुटनों, पीठ एवं जोड़ों के दर्द, मिर्गी, बाई जाँघ, दाँतों, हड्डियों सम्बन्धी एवं वायु सम्बन्धी रोगों का विचार किया जाता है। इस भाव के सूर्य, बुध, गुरु व शनि कारक हैं।

एकादश भाव—इस भाव से रक्त संचालन प्रक्रिया, श्वास-प्रक्रिया, नसों, जोड़ों में दर्द आदि, शीत विकार, हृदय रोग, स्नायु तन्त्र, गला, कान, बायाँ हाथ, पिंडलियों-पाँव (विशेषकर दाहिना) आदि में चोट, शीत लगना, ठण्ड आदि का विचार किया जाता है। इस भाव का कारक भी गुरु ही है।

द्वादश भाव—इस भाव से मानसिक एवं नेत्र रोग, कर्ण पीड़ा, शक्तिहीनता (कमजोरी), पीलिया, अनृजता (Allergy), बायाँ कान, दोनों पैर, काम जन्य एवं स्त्री (पत्नी) सम्बन्धी रोग, पक्षाघात, एड्डी में चोट आदि का विचार। इस भाव का कारक शनि है।

मेसादि द्वादश राशियों से रोग विचार

द्वादश भावों की भान्ति द्वादश राशियों एवं नवग्रहों के द्वारा भी अरिष्ट रोगों का निर्णय किया जाता है। जैसे—मेष राशि से सिर व मस्तिष्क रचना, वृष से नेत्र, जिह्वा, मुख, कण्ठ आदि में रोग का विचार किया जाता है। शरीर में किसी भी रोग का निदान करने के लिए नक्षत्र भाव, राशियों व ग्रहों से सम्बन्धित शरीरांगों एवं रोगों की जानकारी आवश्यक है। स्पष्टीकरण के लिए भाव एवं राशियों से सम्बन्धित शरीर अंग तथा रोगों का विवरण आगे दिया जाता है—

भावों एवं राशियों से सम्बन्धित शरीरांग एवं रोग

| भाव | राशि | तत्त्व | शरीरांग | सम्भावित रोग |
|-----------------|---------|--------|---|---|
| लग्न (प्रथम) | मेष | अग्नि | मस्तक, सिर, दिमाग, ऊपरी जबड़ा, मस्तिष्क संरचना, शिर सहित मुखाकार, पिट्यूटरी-रैलेण्ड। | मस्तिष्क रोग, स्मरण शक्ति, नेत्र रोग, उन्माद, मुहासे, मिर्गी, रक्ताघात, रक्तविकार, सिर दर्द, टाईफाइड, पित्त की गर्मी आदि। |
| द्वितीय | वृष | पृथ्वी | नेत्र, कान, नाक, गाल, होंठ, दाँत, मुख, जिह्वा कण्ठ, थायराईड, निचला जबड़ा, वाणी, ग्रासनली (Food-Pipe)। | नेत्र, मुख, कर्ण, दन्त, नासिका एवं कण्ठ सम्बन्धी रोग, मुख-विकार, डिन्थीरिया, फोड़ा, फुँसी, दाहिनी आँख, वाक्-शक्ति, मद्य-पान। |
| तृतीय | मिथुन | वायु | कन्धे, भुजाएँ, कोहनी, हथेली, ऊपरी पसली, कान, फेफड़े, कण्ठ, ग्रीवा, हाथ, बाजू, श्वास नली, कोशिकाएँ। | मस्तिष्क ज्वर, मानसिक असंतुलन, बाजू एवं कन्धों में पीड़ा, नकसीर, एलर्जी, सामर्थ्य खांसी, दमा आदि श्वास रोग, गले की खराबी, यात्रा में दुर्घटना, चोट। |
| चतुर्थ | कर्क | जल | फेफड़े, हृदय, नीचे की पसली, छाती, वक्षस्थल, स्तन, पेट, पाचन प्रक्रिया मानसिक शान्ति। | छाती एवं पसलियों के रोग, मानसिक विकार, अजीर्ण, पाचनशक्ति, गैस विकार, कैसर, हिस्टीरिया, जलोदर, वात रोग आदि। |
| पंचम | सिंह | अग्नि | लिवर, तिल्ली, हृदय, पीठ, कोख, कमर, रक्त, जिगर, मेरूदण्ड, पीठ। | पित्त, जिगर एवं गुर्दे के रोग, नेत्रों, कमर, ज्वर, हृदय, बुद्धि विक्षिप्ता, स्मरणशक्ति, दिल की धड़कन, मूत्राशय, गर्भाशय पीलिया व लिवर सम्बन्धी। |
| षष्ठ | कन्या | पृथ्वी | कमर, आँतें (आंतडियाँ) नाभि चक्र, वस्ति, पेट पैर, अमाशय, पैनक्रिया, पाचन प्रक्रिया। | नाभि चक्र, पेट, कमर एवं आँतों सम्बन्धी रोग, अपचन, दस्त, मरोड़, पथरी, हर्निया, मधुमेह, दुर्घटना से चोट आदि अपैडिक्स। |
| भाव | राशि | तत्त्व | शरीरांग | सम्भावित रोग |
| सप्तम | तुला | वायु | तुला | अण्डाशय, डिम्ब ग्रंथी गर्भाशय का ऊपर भाग वस्ति (पेड़), कटि। |
| अष्टम | वृश्चिक | जल | वृश्चिक | जननेन्द्रिय, गुदा, अण्ड-कोष, भ्रूण, लिंग, योनि, गर्भाशय, प्रोस्टेट। |
| नवम | धनु | अग्नि | धनु | जांघ, नितम्ब, कमर, लिवर, रीढ़ की हड्डी, घुटने। |
| दशम | मकर | पृथ्वी | मकर | दोनों घुटने, टांगें, हड्डियाँ, जोड़, बाल, नाखून, बाह्य त्वचा। |
| एकादश | कुम्भ | वायु | कुम्भ | नसों, जोड़ों, श्वास, रक्त, संचालन, दोनों पिण्ड-लियों, कान, घुटने, एड़ीयाँ। |
| द्वादश | मीन | जल | मीन | दोनों पैर, टखने, पाँव के तलवे, पैरों की अँगुलियाँ, नसें, दाँत आदि। |

उपरोक्त राशियों में जो राशि शुभ ग्रहों से युक्त एवं दृष्ट होती है, वह अंग पुष्ट तथा स्वस्थ होता है, जो राशि पाप ग्रहों से युक्त, पीडित, दृष्ट हो, वह अंग क्षीण एवं रोग युक्त होने की सम्भावना होती है।

ग्रहों एवं राशियों के तत्त्वानुसार रोगों की पहचान

द्वादश राशियों एवं नवग्रहों में कुछ अग्नि तत्त्व, कुछ वायु तत्त्व आदि का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन तत्त्वों की प्रकृति के आधार पर रोगों की पहचान सरलता से हो सकती है, जैसे—

(क) अग्नि तत्त्व—मेष, सिंह व धनु अग्नि तत्त्व प्रधान राशियाँ हैं तथा सूर्य एवं मंगल ग्रह भी अग्नि तत्त्व प्रमुख ग्रह हैं। यदि जन्म कुण्डली में अग्नि तत्त्व वाली राशि एवं सूर्यादि ग्रह स्वग्रही, उच्चादि ग्रहों से युक्त एवं दृष्ट हों, तो जातक का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा, आत्मिक बल, ओज एवं क्रियात्मक शक्ति तीव्र एवं अच्छी होती है। व्याधि एवं अस्वस्थता थोड़े काल की, परन्तु तीव्र हो सकती है। यदि मेषादि अग्नि तत्त्व की राशियाँ तथा सूर्य, मंगल, नीच, शत्रु आदि ग्रहों, राशि से युक्त या पाप ग्रहों से दृष्ट हों, तो जातक के निम्न रोगों से पीडित होने की सम्भावना होती है, जैसे—मस्तिष्क रोग, उच्चरक्तचाप, नेत्र विकार, अस्थि एवं चर्म रोग, तीव्र ज्वर, अग्नि शल्य, विषादि से कष्ट, माईग्रेन, मेरूदण्ड, अनिद्रा, तीव्र सिर दर्द, उदर एवं पीठ विकार, बवासीर, हृदय रोग, पित्तजनित रोग, अतिमार, चित्त व्याकुलता, नासूर, फोड़ा, घाव, जलन, पक्षाघात, शस्त्राघात, मुहाँसे, जननोद्भ्रियाँ आदि गुप्त अंग।

(ख) पृथ्वी तत्त्व—वृष, कन्या व मकर राशि पृथ्वी तत्त्व प्रधान राशियाँ हैं, तथा बुध ग्रह भी पृथ्वी तत्त्व के अन्तर्गत आता है। यदि कुण्डली में पृथ्वी तत्त्व वाली राशि एवं पृथ्वी तत्त्व ग्रह बुध शुभ भाव में एवं उच्च मित्रादि राशि में हों, तो जातक अत्यन्त बुद्धिमान, कार्य-कुशल, अध्ययनशील, सतर्क, प्रभावशाली वाणी, तार्किक, उच्चशिक्षित, स्वस्थ एवं तीव्र स्मरणशक्ति एवं कार्य सिद्ध करवाने में कुशल होता है। यदि उपरोक्त वृषादि पृथ्वी तत्त्व की राशि पाप ग्रहों से पीडित हो, एवं बुध नीच, शत्रु आदि राशिगत हो, तो जातक की निम्नलिखित रोगों में से राश्यनुसार रोग होने की सम्भावना होती है, यथा—

मस्तिष्क विकार, स्मरण शक्ति का हास, हकलाहट, पक्षाघात, सूंघने, वाणी, सुनने एवं बोलने की शक्ति का हास, दौरे पड़ना, त्वचा, नाखून, कश, नाड़ी एवं हड्डियों के रोग, नेत्र रोग, कण्ठ रोग, त्वचा, खुजली या कुष्ठ रोग, मन्दानि, मानसिक भ्रान्ति, नाड़ी एवं स्नायुतन्त्र की दुर्बलता, पीलिया, वात-पित्त-कफ त्रिदोष से उत्पन्न रोग, दुःस्वप्न, भ्रान्ति (वहम), सोच एवं वाणी में दुर्बलता आदि।

(ग) वायु तत्त्व—मिथुन, तुला एवं कुम्भ राशि—ये वायु तत्त्व की राशियाँ हैं, तथा शनि ग्रह भी वायु तत्त्व प्रधान है। यदि कुण्डली में वायु तत्त्व प्रधान राशियाँ शनि-शुक्र आदि मित्र ग्रह युक्त एवं शनि भी स्वग्रही, उच्चादि शुभ अवस्था में हों, तो जातक उत्साहशील, स्वाभिमान, उच्च-प्रतिष्ठित, राजनीतिज्ञ, चुस्त एवं स्वस्थ-चित्त एवं पुष्ट शरीर का होता है। यदि वायु तत्त्व राशियाँ सूर्य, मंगल आदि शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट अथवा उनकी दशाऽन्तरदशा हो, तो जातक को निम्नलिखित रोग होने की आशंका होती है—वायु और कफ जन्य रोग, अत्यधिक श्रम के कारण कमजोरी, ब्लडप्रेसर, कठिन उदर शूल, स्पाइलाइटिस, सनिपात, पत्थरी, लकवा आदि, पीलिया, पक्षाघात, वातशूल, मानसिक दुर्बलता, पत्नी एवं सन्तान सम्बन्धी कष्ट, पेड़, पत्थर या शस्त्र आदि से चोट, कैसर, मधुमेह, हाथ, पाँव एवं टांगों की दुर्बलता, प्रेत, पिशाच आदि जटिल मानसिक व कायिक रोग तथा प्राण वायु, अपान वायु आदि को संकेत करते हैं।

(घ) जल तत्त्व—कर्क, वृश्चिक एवं मीन—ये जल तत्त्व की राशियाँ हैं तथा चन्द्र व शुक्र भी जल तत्त्वोय ग्रह हैं। यदि उक्त राशियाँ चन्द्र-गुरु आदि ग्रहों के प्रभाव शुभस्थ हों तथा चन्द्र-शुक्र ग्रह स्वग्रही, उच्च-मित्र आदि राशियों में हों तो जातक तीव्र बुद्धिमान, दूसरों के मनोभावों को समझने में कुशल, धार्मिक एवं परोपकारी, देश-विदेशों की यात्राएँ करने वाला, स्वस्थ अंगों एवं पुष्ट शरीर का होगा।

यदि जलीय तत्त्व की राशियाँ तथा ग्रह शत्रु, नीच आदि ग्रहों से पीडित हों तो जातक को उनकी दशाऽन्तर दशा एवं मोचरवश नीचे लिखे रोग होने की सम्भावनाएँ होती हैं—

नेत्र रोग, कफ, शीत (ठण्ड), उदर रोग, श्वास रोग, पागलपन, उन्माद, मानसिक रोग, हिस्टीरिया, जननेन्द्रिय, गर्भशय, मासिक धर्म सम्बन्धी विक्रियों के रोग, डायरिया, हैजा, ड्राप्सी, रक्त, त्वचा, मज्जा, वीर्य एवं मूत्राशय सम्बन्धी, अतिमार, मन्दानि, कफ एवं वायु रोग, प्रमेह, मधुमेह, पत्थरी, धातु-विकार, शीत ज्वर, अनिद्रा, नाड़ी दौर्बल्य, मूत्र विकार, पाण्डु रोग (पीलिया), काम-जन्य गुप्त रोग आदि।

(ङ) आकाश तत्त्व से सम्बन्धित—यदि कुण्डली में गुरु स्वराशि, उच्चादि अवस्था में हो, तो जातक का शरीर स्थूल, पुष्ट एवं स्वस्थ होता है। यदि नीच राशिस्थ या पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो जातक को नीचे लिखे रोगों की सम्भावना होती है—

कफज रोग, मूर्छा, अंतर्द्वियों का ज्वर, लिवर अर्थात् यकृत सम्बन्धी पीलिया आदि रोग, अपचन, रक्त कैसर, उदर, वायु, गठिया, नाभिक्रम में दोष, कर्ण रोग, गुल्म (पेट का फोड़ा), टाइफाइड, हर्निया, शारीरिक स्थूलता या दुर्बलता, पेट-नौस, देव या ब्राह्मणों के शाप से कष्ट आदि।

(च) राहु के कारण होने वाले रोग—कुटिल मति, असत्य में रूचि, कुतर्क, हृदय में

रोग, कमचोरी, वातज पीड़ा, क्रमि रोग, पैर में चोट, दिल की जलन, कुष्ठ, पाँव में चोट, पीड़ा आदि, स्त्री, सन्तान आदि सम्बन्धी परेशानी, सर्प और प्रेत आदि के कारण कष्ट-भय, अरूचि, उचाटता, जोड़ों एवं वायु सम्बन्धी रोग।

(छ) केतु के कारण होने वाले रोग—चर्म रोग, श्वेत कुष्ठ, विष विकार, जलोदर, गर्भाशय सम्बन्धी, फोड़े, फुँसी, चेचक, विषादि के कारण उत्पन्न रोग, दुर्घटना से चोट आदि प्रेत-पिशाच आदि जनित रोग-कष्ट, पित्त जनित रोग तथा पुरुषों एवं स्त्रियों के गुप्त पेचीदा रोगों का विचार किया जाता है।

राहु व केतु दोनों के अनिष्ट प्रभावस्वरूप कई बार ऐसे पेचीदा एवं रहस्यात्मक रोग उत्पन्न हो जाते हैं, जिनका निदान कुशल डॉक्टरों द्वारा भी नहीं हो पाता है।

जन्म कुण्डली से रोग विचार

जन्म कुण्डली में किसी भी भाव से सम्बन्धित रोग कष्ट आदि जानने के लिए निम्नलिखित तथ्यों पर विचार करना अत्यन्त आवश्यक होता है, जैसे—(1) भाव में अशुभ ग्रहों को बैठना (2) भावेश ग्रह का त्रिकादि (6, 8, 12वें) भावों में बैठना (3) भावेश का शत्रु एवं पापी ग्रहों से युक्त होना (4) भावेश का पापी ग्रहों से वीक्षित होना (5) भाव का अशुभ (शत्रु नीच आदि) ग्रहों से देखा जाना (6) भाव सम्बन्धी कारक ग्रह की शुभाशुभ स्थिति (7) जातक की वर्तमान कालीन दशा-अन्तर्दशा का विचार तथा (8) गोचर ग्रहों का शुभाशुभ विचार।

ऊपरलिखित सभी तत्त्व भाव सम्बन्धी फल को प्रभावित करते हैं। भावों तथा भावेश सम्बन्धी ग्रहों की स्थिति जितनी अधिक खराब होगी, उतना ही उस भाव सम्बन्धी कष्ट होगा।

सामान्यतः लग्नेश ग्रह चाहे स्वयं शुभ ग्रह हो, या पाप ग्रह हो, वह जहाँ बैठ जाता है, उस स्थान की वृद्धि ही करता है। लग्नेश जिस भाव के स्वामी के साथ बैठा हो, उस भाव स्वामी के फल को बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त कुण्डली में सूर्य व चन्द्रादि के बलबल का भी विचार करना चाहिए। चन्द्रमा मस्तिष्क पर प्रभाव करता है, लग्न शरीर का द्योतक है और सूर्य आत्मा का। यदि कुण्डली में सूर्य और चन्द्रमा बली हों और शत्रु ग्रहों के प्रभाव से मुक्त हों, तो उस जातक का स्वास्थ्य अच्छा रहता है। भारतीय आयुर्वेद की यह प्रबल मान्यता है कि शारीरिक रोगों का मस्तिष्क की स्थिति के साथ गहरा सम्बन्ध है। इसी कारण प्राचीन काल से ही हमारे ज्योतिष शास्त्र में अरिष्ट आदि के सम्बन्ध में चन्द्रमा की स्थिति एवं बलबल पर विशेष ध्यान दिया जाता रहा है।

(1) यदि लग्नेश और षष्ठेश एक ही राशि में हों और उनके साथ सूर्य भी हो, तो जातक को षष्ठेश एवं सूर्य की दशाऽन्तर्दशा में तीव्र ज्वर, नेत्र रोग, स्त्री व संतान कष्ट, अग्नि पीड़ा

आदि कष्टों की सम्भावना होती है।

(2) लग्नेश, षष्ठेश और चन्द्रमा एक ही राशि में इकट्ठे हों, तो जातक की हैजा, शीत-प्रकोप, मानसिक कष्ट एवं जल-वायु से सम्बन्धित रोगों एवं अनिद्रा, मन्दानि, चित्त व्यकुलता आदि रोगों का भय होता है।

(3) यदि कुण्डली में लग्नेश, षष्ठेश व मंगल एक ही भाव में इकट्ठे हों, तो जातक को इन ग्रहों की दशा में दुर्घटना या शस्त्राघात से विस्फोट आदि से चोट, पीड़ा, फोड़े एवं आप्रेशनानि, ज्वर आदि रोगों की सम्भावना होती है।

(4) यदि लग्नेश व षष्ठेश के साथ बुध भी एक ही राशि में स्थित हों, तो जातक को वात-पित्त जनित रोग, अरूचि, उदर विकार, दुर्बलता, वाणी विकार, पत्थरी, वमन, डकार, मन्दानि, खुजली, दाद आदि त्वचा रोग, मति-भ्रम आदि विचित्र रोगों की सम्भावना होती है।

(5) यदि लग्नेश, षष्ठेश के साथ गुरु स्वर्गही, उच्चादि राशि में हों, तो जातक का शरीर प्रायः स्वस्थ होता है। परन्तु यदि गुरु व लग्नेश नीच, शत्रु आदि राशि में हो, तो जातक को कफ, कान, नाक, गला, लिवर, पीलिया, पत्थरी आदि रोगों का भय होता है।

(6) यदि लग्नेश, षष्ठेश व शुक्र एक साथ किसी अशुभ राशि में हों, तो जातक, प्रमेह, मधुमेह, गुप्त रोग, धातु क्षय सम्बन्धी रोग तथा स्त्री को भी शरीर कष्ट की सम्भावना होती है।

(7) यदि लग्नेश, षष्ठेश—दोनों शनि के साथ एक ही भाव में हों, तो जातक को दुर्बलता, वातज अर्थात् वायु प्रकोप, अपचन, श्वास रोग, हड्डियों, दाँतों एवं नेत्र सम्बन्धी रोगों का भय होता है।

(8) लग्नेश, षष्ठेश व राहु तीनों एक ही राशि में हों, तो हृदय में दुर्बलता, मानसिक, तनाव, सिर में पीड़ा, वायु प्रकोप, सर्प, प्रेत एवं चोरी आदि का भय होता है।

(9) लग्नेश, षष्ठेश व केतु तीनों एक ही भाव में हों, तो जातक को फोड़ा, फुँसी, चेचक सम्बन्धी, त्वचा रोग, विष प्रकोप तथा स्त्रियों को आप्रेशन, गर्भाशय, मासिक धर्म सम्बन्धी विकारों की सम्भावनाएँ होती हैं।

(10) यदि षष्ठ भाव या षष्ठेश के साथ बुध व शुक्र का सम्बन्ध हों, तो जातक को आहार व्यवहार में असंयम के कारण रोग होता है।

यदि षष्ठेश भौमादि पाप ग्रह के साथ लग्न में हों, तो जातक को दुर्घटना या चोटदि से व्रण या आप्रेशन होता है। यदि शनि हों, तो अपचन एवं वायु-विकार होता है।

नोट—विविध रोगों सम्बन्धी विभिन्न उदाहरण कुण्डलियों एवं शास्त्र सम्मत उपायों के साथ हमारे शीघ्र प्रकाशित होने वाली फलित और रोग सम्बन्धी आगामी पुस्तक की प्रतीक्षा करें। पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी गणितकर्ता पंचांग दिवाकर ॥

मानव जीवन को

सुधारने वाले धार्मिक ग्रन्थ

ग्रन्थ

गो० तुलसीकृत रामायण (भाषा-टीका)

आठ काण्ड वाली सम्पूर्ण रामायण जिसमें गो० स्वामी तुलसी कृत दोहे व चौपाइयों को इतनी सरल भाषा में दिया गया है कि साधारण पढ़ा लिखा व्यक्ति भी श्रीराम चरित की महिमा को हृदयगम कर सकता है। इस पवित्र रामायण को पठन-पठनार्थ घर में रखना अथवा दान-देहज में देना पुण्य का काम समझा जाता है। सुन्दर छपाई, चित्रों सहित व मोटे अक्षरों में इस रामायण की कीमत 25/- रुपये। आर्डर के साथ 50 रुपये पेशगी अवश्य भेजें। मध्यम रामायण का मूल्य 125 रुपये (डाक व्यय अलग)

बाल्मीकि रामायण (सचित्र)

हिन्दी भाषा में सुन्दर मोटे अक्षरों में प्राप्य हैं। (मूल्य 200 रु.) ये ग्रन्थ पंजाबी भाषा में भी उपलब्ध हैं। मूल्य 800 रुपये। डाक व्यय अलग।

श्री प्रेम सागर (सचित्र)

प्रेम, भक्ति और भावना से परिपूर्ण भगवन् श्री कृष्ण की बाल लीलाओं तथा उनके जीवन चरित्रों का सजीव एवं सचित्र वर्णन जिसे धर्म में श्रद्धा रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को पढ़ना चाहिए। मूल्य 100 रुपये, डाक व्यय अलग।

सुखसागर बड़ा

श्रीमद्भागवत पुराण के 12 स्कन्धों का सरल हिन्दी अनुवाद जिसमें भागवन् विष्णु के 24 अवतारों का विशद वर्णन,

बड़ा भक्ति सागर

जिसमें नित्यकर्म पद्धति, ईश्वर प्रार्थना, स्तोत्र, चालीसे, सन्ध्या व आरतियों का अपूर्व संग्रह प्रस्तुत किया गया है। मूल्य 40 रुपये।

श्रीमद्भागवत गीता (सचित्र)

भागवद् गीता विश्व ज्ञान का अपूर्व भण्डार है जिसमें कर्म, भक्ति और ज्ञान का अद्भुत समन्वय मिलता है। अर्जुन को दिया गया भगवान् कृष्ण का परम ज्ञान जो प्रत्येक भारतीय के लिए आवश्यक है। 18 अध्याय वाली महान्वय व अनेक आरतियों सहित यह पुण्य ग्रन्थ आज ही मांगवाएँ। मूल्य 100 रु।

चारों वेद (भा. टी.)

ऋग्वेद-4 खण्डों में, यजुर्वेद-1 खण्ड, अथर्ववेद-2 खण्ड, समावेद-1 खण्ड में उपलब्ध हैं जिसे प्रत्येक भारतीय को अवश्य पढ़ना चाहिए। आज ही मांगवाएँ। मूल्य सम्पूर्ण सेट-425 रु।

श्री शिव महापुराण (बड़ा) सचित्र

जिसमें शिव महिमा, पार्थिव, पूजन, शिव पूजन विधि, सृष्टि वर्णन, योग वर्णन इत्यादि पौराणिक कथाओं सहित विस्तृत वर्णन दिया गया है। शिव-भक्ति में श्रद्धा रखने वालों के लिए अनिवार्य ग्रन्थ है। मूल्य केवल 200 रु। मनीआर्डर के साथ 50 रुपये पेशगी अवश्य भेजें। डाक व्यय पृथक्।

शिवरात्रि व्रत कथा (भा. टी.) 25/-

कुछ अन्य उपयोगी ग्रन्थ

| | |
|--------------------------------|-------|
| योग वशिष्ठ (दो भाग) | 500/- |
| व्यापार रत्न | 300/- |
| धर्मसिन्धु | 250/- |
| निर्णयसिन्धु | 500/- |
| चाणक्य नीति | 40/- |
| विदुर नीति | 40/- |
| महाभृत्यज्येय साधना | 50/- |
| श्री गरुण पुराण (प्रेतकल्प) | 50/- |
| कर्मकाण्ड कुसुमाञ्जली | 35/- |
| कर्मकाण्ड प्रदीपः | 80/- |
| कर्मठगुरु | 80/- |
| कवच संग्रह | 20/- |
| भद्रबाहु संहिता (मंदा-तेजी पर) | 150/- |
| लाल किताब (सामुद्रिक) | 149/- |
| मंत्र महोदधि | 125/- |
| षोडश संस्कार पद्धति | 50/- |
| वास्तु शान्ति प्रयोग | 25/- |
| मन्त्र सागर | 100/- |
| बुलामुखी उपसना | 40/- |
| मंत्र द्वारा कामना सिद्धि | 40/- |
| मंत्र द्वारा रोग निवारण | 35/- |
| मंत्र शक्ति | 40/- |
| मनोकायना पूरक मंत्र | 60/- |
| वृहद् कौवा तंत्र | 30/- |
| सूर्यशक्ति से इलाज | 25/- |
| तंत्र द्वारा यश धन प्राप्ति | 30/- |
| आरती संग्रह ग्लेजचित्र | 30/- |
| योग वसिष्ठ महारामायण | 150/- |
| महालक्ष्मी व्रत कथा (लेज) | 25/- |
| गरुड पुराण भा. टी. | 30/- |
| विशाल हस्त सामुद्रिक | 100/- |
| वैशाख महान्वय | 25/- |
| विशाल भृगु संहिता पद्धति | 250/- |

| | |
|---|-------|
| पं. देवीदयालु का राशिफल (सन् 2005 ई.) | 30/- |
| माघ महाव्रत | 25/- |
| चन्द्र हस्त विज्ञान | 225/- |
| ज्योतिष शास्त्र | 35/- |
| कार्तिक महाव्रत | 25/- |
| व्यापारिक तेजी मन्दी ज्ञान | 25/- |
| नित्य कर्म पाठमाला | 40/- |
| ज्योतिष सर्व संग्रह | 40/- |
| वसिष्ठी हवन पद्धति | 25/- |
| असली आल्हाखण्ड | 101/- |
| विवाहपद्धति देवीदयालु | 45/- |
| दुर्गा सप्तशती (भा. टी.) | 65/- |
| सूर्य पुराण (भा. टी.) | 50/- |
| हस्त रेखा विज्ञान | 60/- |
| सूर्य उपसना (भाषा) | 40/- |
| तान्त्रिक सिद्धियाँ | 50/- |
| रामायण तर्ज राधेश्याम | 100/- |
| मन्त्र सिद्धि | 35/- |
| श्री हरिवंश पुराण वड़ा | 300/- |
| श्री हरिवंश पुराण (मध्यम) | 100/- |
| देवीभागवत पुराण बड़ा | 175/- |
| मन्त्रस्मृति | 40/- |
| देवी-देवता सिद्धि | 35/- |
| कर्मकाण्ड पद्धति | 100/- |
| भजन सरोवर | 100/- |
| लाल किताब (हिन्दी) | 500/- |
| लाल किताब (हिन्दी मध्यम) | 120/- |
| अपने आर्डर के साथ 50/- रुपये पेशगी अवश्य भेजें। अपना नाम व पता साफ पूरा लिखें। वी. पी. द्वारा भंगवाने का पता— | |

जनरल बुक डिपो

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर
फोन-2457959

पुस्तकों के महासागर में से मोती रूप पुस्तकें वी. पी. द्वारा मंगवाएँ

| धर में खने योग्य पुस्तकें | | चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तकें | |
|---------------------------------|---------|-------------------------------|----------|
| सह्ये का कल्प वृक्ष (मंदा-तेजी) | 100 रु. | एलोपैथिक चिकित्सा (कोकचा) | 200 रु. |
| मोटर मैकेनिक गाईड | 50 रु. | वृष्ट वृष्टि योगासन चिकित्सा | 180 रु. |
| मोटर वाइडिंग | 40 रु. | अमृतसागर | 200 रुपए |
| पशु चिकित्सा | 40 रु. | माधवनिदान | 100 रुपए |
| विवाहित आनन्द | 35 रु. | हृदय रोग | 40 रुपए |
| पत्नी गंध प्रदर्शक | 35 रु. | घर का वैद्य | 40 रुपए |
| लाटरी गाईड | 40 रु. | रसराज महोदधि | 40 रुपए |
| स्वर लिपि संग्रह | 50 रु. | सूर्य शक्ति से ईलाज | 25 रुपए |
| व्यापार रत्न | 300 रु. | आयुर्वेदिक गाईड | 150 रुपए |
| टेलीविजन वीडियो गाईड | 30 रु. | अनुपम आयुर्वेदिक गाईड | 35 रुपए |
| Dictionary (Big) | 250 रु. | एलोपैथिक मैडी. गाईड | 135 रुपए |
| Dictionary (Med.) | 120 रु. | न्यू एलोपैथिक मैडी. गाईड | 40 रुपए |
| ताश के जादू | 40 रु. | होमोपैथी द्वारा ईलाज | 50 रुपए |
| स्माल स्कूल इण्डस्ट्रीज (बड़ी) | 150 रु. | योगासन एवं साधना | 50 रुपए |
| इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स | 95 रु. | वृष्ट वृष्टि पंचार | 35 रुपए |
| कम्प्यूटर कोर्स (बड़ी) | 150 रु. | जाडू-बूटियाँ | 30 रुपए |
| रेडियो ट्रांजिस्टर गाईड | 30 रु. | आयुर्वेद सार संग्रह (वैधानाथ) | 150 रु. |
| इलेक्ट्रिक गाईड | 120 रु. | यूनानी चिकित्सा सार (वैधानाथ) | 150 रु. |
| फोटोग्राफी व कलर प्रोसेसिंग | 50 रु. | संचित योगासन | 30 रु. |
| जूडो कराटे सीखें | 60 रु. | | |
| हारमोनियम सीखिए | 50 रु. | | |
| होम टेलरिंग कोर्स | 50 रु. | | |
| होम कंटाई शिक्षा | 50 रु. | | |
| 101 मैजिक ट्रिक्स | 48 रु. | | |
| मोटर ड्राइवरी शिक्षा | 40 रु. | | |
| हिन्दी उर्दू टीचर | 25 रु. | | |
| तेजी मन्दा सद्दा | 35 रु. | | |
| मिलिंग मशीन | 45 रु. | | |
| महिलाओं के उद्योग | 120 रु. | | |
| पोल्ड्रो फार्मिंग | 50 रु. | | |
| मॉडर्न सोप इन्डस्ट्रीज | 300 रु. | | |
| कॉस्मेटिक्स इन्डस्ट्रीज | 200 रु. | | |
| इन्वर्टर सर्विसिंग | 80 रु. | | |
| ए. सी. मोटर वाइडिंग | 80 रु. | | |
| स्टीम बायलर्स और इंजन | 100 रु. | | |
| प्लास्टिक गुड्स इंडस्ट्रीज | 60 रु. | | |
| स्कीन प्रिंटिंग | 100 रु. | | |

| यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र | |
|-----------------------------|---------|
| काली किताब | 400 रु. |
| काली किताब (छोटी) | 150 रु. |
| महाइन्द्रजाल | 150 रु. |
| असली प्राचीन इन्द्रजाल | 100 रु. |
| शाबर मंत्र विद्या | 50 रु. |
| तंत्र-मंत्र-यंत्र रहस्य | 300 रु. |
| यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र (छोटी) | 35 रु. |
| इस्लामी तंत्र शास्त्र | 60 रु. |
| हिन्दू तंत्र शास्त्र | 60 रु. |
| श्री दुर्गा साधना तंत्र | 125 रु. |
| भारतीय तंत्र विद्या | 200 रु. |
| अनुभूत यंत्र तंत्र और टोटके | 120 रु. |
| वगुलामुखी रहस्यम् | 40 रु. |

| कर्मकाण्ड सम्बन्धी पुस्तकें | |
|------------------------------|---------|
| कर्मकाण्ड प्रदीपः | 80 रु. |
| विवाह पद्धति | 45 रु. |
| शिवरात्रि व्रत कथा (भा. टी.) | 25 रु. |
| कर्मकाण्ड पद्धति | 100 रु. |
| दुर्गा सप्तशती (भा. टी.) | 65 रु. |
| कार्तिक प्रसूता शान्ति | 12 रु. |

| | | | |
|-------------------------------|---------|------------------------------|---------|
| कालिका सिद्धि | 150 रु. | श्राद्ध पद्धति | 25 रु. |
| सिद्ध शाबर मन्त्र | 50 रु. | कर्मकाण्ड भास्कर | 100 रु. |
| तांत्रिक सिद्धियाँ | 60 रु. | कर्मकाण्ड भारती | 70 रु. |
| काली तंत्र शास्त्र | 50 रु. | पूजा पद्धति | 50 रु. |
| तारा तंत्र शास्त्र | 50 रु. | पूजा भास्कर | 40 रु. |
| तांत्रिक मुद्रा विज्ञान | 60 रु. | हवन रहस्यम् | 50 रु. |
| तंत्र विद्या के अद्भुत प्रयोग | 30 रु. | ग्रह नक्षत्र शान्ति रहस्यम् | 50 रु. |
| यंत्र-मंत्र-तंत्र टोटके | 40 रु. | नित्यकर्म व देवपूजा पद्धति | 55 रु. |
| छिन्मस्तका तंत्र शास्त्र | 60 रु. | हनुमान कवच | 15 रु. |
| धनप्रदायक तांत्रिक क्रियाएं | 50 रु. | श्री दुर्गा पूजन विधान | 15 रु. |
| तंत्र द्वारा यश धन प्राप्ति | 30 रु. | महालक्ष्मी पूजन विधान | 25 रु. |
| 11000 गंदे तबीज और टोटके | 150 रु. | नवग्रह पूजन विधान | 15 रु. |
| महाशक्तिशाली टोने टोटके | 150 रु. | गरुड़ पुराण (भाषा टीका) | 60 रु. |
| मंत्र रहस्य | 80 रु. | गरुड़ पुराण (भाषा) | 30 रु. |
| यंत्र विधान | 120 रु. | सनतन संस्कार विधि | 125 रु. |
| यंत्र विद्या के 121 प्रयोग | 75 रु. | संस्कार पद्धति | 60 रु. |
| नवग्रह अनुकूलन तंत्र | 50 रु. | श्राद्ध विवेक | 150 रु. |
| धन प्रदायक साधनाएं | 50 रु. | नित्यकर्म पद्धति | 40 रु. |
| ग्रह नक्षत्र तंत्रम् | 60 रु. | पितृकर्म पद्धति | 75 रु. |
| श्री यन्त्रम् महिमा | 60 रु. | सर्वदेव पूजा पद्धति | 20 रु. |
| मनोकामना सिद्धि | 30 रु. | सर्वदेव प्रतिष्ठा प्रकाश | 160 रु. |
| वीर्यकरण मन्त्र | 30 रु. | हवन पद्धति | 25 रु. |
| चीन बंगाल का जादू | 30 रु. | वशिष्ठी हवन पद्धति | 25 रु. |
| कामाक्षा मन्त्र | 30 रु. | नित्यकर्म प्रयोग माला | 40 रु. |
| सूर्य तन्त्रम् | 40 रु. | आदित्य हृदय स्तोत्र (भा.टी.) | 25 रु. |
| कामाख्या उपासना | 40 रु. | सर्वदेव प्रतिष्ठा समुच्चय | 50 रु. |
| रुद्रायमल तंत्र (बड़ा) | 125 रु. | अन्योष्टि संस्कार पद्धति | 15 रु. |
| महाविद्या मंत्र तंत्र | 30 रु. | सर्व व्रतोद्यापन प्रकाश | 100 रु. |
| परमसिद्धि 121 चमत्कारी यन्त्र | 80 रु. | नित्यकर्म पूजा प्रकाश | 35 रु. |
| श्री नवग्रह साधना रहस्य | 50 रु. | दुर्गाचर्चन पद्धति | 100 रु. |

| | | |
|-----------------------------|------------------------------|---------|
| कर्मकाण्ड सम्बन्धी पुस्तकें | कर्मकाण्ड प्रदीपः | 80 रु. |
| | विवाह पद्धति | 45 रु. |
| | शिवरात्रि व्रत कथा (भा. टी.) | 25 रु. |
| | कर्मकाण्ड पद्धति | 100 रु. |
| | दुर्गा सप्तशती (भा. टी.) | 65 रु. |
| | कार्तिक प्रसूता शान्ति | 12 रु. |

अपने आईड के साथ 50/- रु. पेशगी अवश्य भेजें। वी.पी. द्वारा संग्रहों के पना-

जनरल बुक डिपो

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर।

फोन-2457959

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र

| | |
|-----------------------------|---------|
| काली किताब | 400 रु. |
| काली किताब (छोटी) | 150 रु. |
| महाइन्द्रजाल | 150 रु. |
| असली प्राचीन इन्द्रजाल | 100 रु. |
| शावर मंत्र विद्या | 50 रु. |
| तंत्र-मन्त्र-यंत्र रहस्य | 300 रु. |
| यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र (छोटी) | 35 रु. |
| इस्लामी तंत्र शास्त्र | 60 रु. |
| हिन्दू तंत्र शास्त्र | 60 रु. |
| श्री दुर्गा साधना तंत्र | 125 रु. |
| भारतीय तंत्र विद्या | 200 रु. |
| अनुभूत यंत्र तंत्र और टोटके | 120 रु. |
| वगुलामुखी रहस्यम् | 40 रु. |

कर्मकाण्ड सम्बन्धी पुस्तकें

| | |
|------------------------------|---------|
| कर्मकाण्ड प्रदीपः | 80 रु. |
| विवाह पद्धति | 45 रु. |
| शिवरात्रि व्रत कथा (भा. टी.) | 25 रु. |
| कर्मकाण्ड पद्धति | 100 रु. |
| दुर्गा सप्तशती (भा. टी.) | 65 रु. |
| कार्तिक प्रसूता शान्ति | 12 रु. |

जनरल बुक डिपो

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर।
फोन-2457959

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिए उपयोगी रत्न (नग) एवं उपरत्न

लेखक—पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी (M.A., LL.B.)

शुभ ग्रहों के प्रभाव में वृद्धि और अनिष्ट ग्रहों के कुप्रभाव के निवारण हेतु उपयुक्त ग्रह रत्न (नग) धारण करना अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होते हैं। अपनी जन्म कुण्डली में स्थित ग्रहों की स्थिति एवं अपनी राशि के अनुसार ही उपयुक्त रत्न (नग) का चयन करना चाहिए, अन्यथा कई बार लाभ की अपेक्षा गलत नग धारण करने से हानि की सम्भावना हो जाती है। उनका परिचय से पूर्व यदि सुयोग्य ज्योतिषी से परामर्श कर लिया जावे तो लाभप्रद होगा। धारण करने की विधि, उपयोगादि का संक्षिप्त विवरण लिख रहे हैं—

सूर्य रत्न माणक (RUBY)

संस्कृत में इसे माणिक्य, पद्मराग, हिन्दी में माणक, मारिक, अंग्रेजी में रुबी कहते हैं। सूर्य रत्न होने से इस ग्रह रत्न का अधिकछाता सूर्यदेव है।

पहचान विधि—असली माणिक्य लाल सुर्ख वर्ण का पारदर्शी, स्निग्ध-कान्तियुक्त और कुछ भारीपन वजन लिए होते हैं। अर्थात् हथेली में रखने से हल्की ऊष्णता एवं सामान्य से कुछ अधिक वजन का अनुभव होता है। (२) कोंच के पात्र में रखने से इसकी हल्की लाल किरणें चारों ओर से निकलती दिखाई देंगी। (३) गाय के दूध में असली माणिक्य रखा जाये तो दूध का रंग गुलाबी दिखाई देगा।

धारण विधि—माणिक्य रत्न रविवार को सूर्य की होरा में, कृतिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों, रविपूष्य योग में सोने अथवा ताँबे की अंगूठी में जड़वा कर तथा सूर्य के बीजमन्त्रों द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ३, ५ ७ अथवा ९ रति के क्रम से होना चाहिए।

सूर्य बीज मन्त्र—ॐ, हां, ह्रीं, हौं सः सूर्याय नमः

धारण करने के पश्चात् गायत्री मन्त्र की ३ माला का पाठ, हवन एवं सूर्य भगवान को विधिपूर्वक अर्घ्य प्रदान करना तथा ताम्र बर्तन, कनक, नारियल, मानक, गुड़, लाल वस्त्रादि सूर्य से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना चाहिए।

विधिपूर्वक माणिक्य धारण करने से राजकीय क्षेत्रों में प्रतिष्ठा, भाग्योन्नति, पुत्र संतान लाभ, तेजबल में वृद्धिकारक तथा हृदय रोग, चक्षुरोग, रक्त विकार, शरीर दोषव्यादि में लाभकारी होता है।

मेघ, कर्क, सिंह तुला, वृश्चिक एवं धनु राशि अथवा इसी लग्न वालों को मानक धारण करना शुभ लाभप्रद रहता है अथवा जिनकी चन्द्र कुण्डली में सूर्य योगकारक होता हुआ भी प्रभावी न हो रहा हो, उन्हें भी माणिक्य धारण शुभ रहता है।

चन्द्र-रत्न मोती (PEARL)

चन्द्र-रत्न मोती को संस्कृत में मौक्तिक, चन्द्रमणि इत्यादि, हिन्दी-पंजाबी में मोती एवं अंग्रेजी में पर्ल (Pearl) कहा जाता है। मोती या पुक्ता रत्न का स्वामी चन्द्रमा है।

पहचान—शुद्ध एवं श्रेष्ठ मोती गोल, श्वेत, उज्ज्वल, चिकना, चन्द्रमा के समान कान्तियुक्त, निर्मल एवं हल्कापन लिए होता है।

परीक्षा—(१) गोमूत्र को किसी मिट्टी के बर्तन में डालकर उसमें मोती रात भर रखें, यदि वह अर्खण्डित रहे तो मोती को शुद्ध (सुच्चा) समझें। (२) पानी से भरे शीशे के गिलास में मोती डाल दें यदि पानी से किरणें सी निकलती दिखाई पड़ें, तो मोती असली जाँचें। सुच्चा मोती के अभाव में चन्द्रकान्त मणि अथवा स्पेफेद पुष्कराज धारण किया जा सकता है।

असली शुद्ध मोती धारण करने से मानसिक शक्ति का विकास, शारीरिक सौन्दर्य की वृद्धि, स्त्री एवं धनादि सुखों की प्राप्ति होती है। इसका प्रयोग स्मरण शक्ति में भी वृद्धिकारक होता है।

रोग शान्ति—चिकित्सा शास्त्र में भी मोती या पुक्ता भस्म का उपयोग मानसिक रोगों, मूर्छा-मिरगी, उन्माद, रक्तचाप, उदर-विकार, पत्थरी, दन्तरोगादि में।

धारण विधि—मोती चाँदी की अंगूठी में शुक्ल पक्ष के सोमवार को पूर्णिमा के दिन, चन्द्रमा की होरा में गंगा जल, कच्चा दूध व पाण्डुलादि में डूबोते हुए 'ॐ श्रां श्रीं श्रां सः चन्द्रमसे नमः' के बीजमन्त्र का पाठ ११००० की संख्या में करने के पश्चात् धारण करना चाहिए। तदुपरान्त चावल, चीनी, क्षीर, श्वेत फल एवं वस्त्रादि का दान करना शुभ होगा।

मोती २, ४, ६ अथवा ११ रति का अनामिका या कनिष्ठका अंगुली में हस्त, रोहिणी अथवा श्रवण नक्षत्र में सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा बताए गए मुहूर्त में धारण करना चाहिए। मेघ, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, मीन राशि/लग्न वालों को मोती शुभ रहता है।

चन्द्रमा का उपरत्न—चन्द्रकान्त मणि (Moon Light Stone)—यह उपरत्न चाँदी जैसे चमक लिए हुए चन्द्रमा का 'उपरत्न' (मोती का पूरः) माना जाता है। इसको हिलाने से, इस पर एक दृष्टिया जैसी प्रकाश रेखा चमकती है। यह रत्न भी मानसिक शान्ति, प्रेरणा, स्मरण शक्ति में वृद्धि तथा प्रेम में सफलता प्रदान करता है। लाभ की दृष्टि से चन्द्रकान्त मणि मलाई के रंग का (स्पेफेद और पीले के बीच का) उत्तम माना जाता है। इसे चाँदी में ही धारण करना चाहिए।

मंगल-रत्न मूंगा (CORAL)

इसे संस्कृत में अंगारकमणि तथा अंग्रेजी में कोरल (Coral) कहते हैं। गोल, चिकना, चमकदार एवं औसत से अधिक वजनी, सिन्धूरी से मिलते-जुलते रंग का मूंगा श्रेष्ठ माना जाता है। इसका स्वामी ग्रह मंगल है।

परीक्षा—(१) असली मूंगे को खून में डाल दिया जाये तो उसके चारों ओर गाढ़ा रक्त जमा होने लगता है। (२) असली मूंगा यदि गौ के दूध में डाल दिया जाए तो उसमें लाल रंग की झाई सी दीखने लगती है।

श्रेष्ठ जाति का मूंगा धारण करने से भूमि, पुत्र एवं धान्तु सुख, नौरोगता आदि की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त रक्त-विकार, भूत-प्रेत बाधा, दुर्बलता, मृदाग्नि, हृदय-रोग, वायु-कफादि विकार, पेट विकासादि में मूंगे की भस्म अथवा मिट्टी का प्रयोग किया जाता है। मेघ, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ व मीन राशि एवं लग्न वालों को सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शनुसार धारण करना लाभप्रद होगा।

धारण विधि—शुक्ल पक्ष के मंगलवार को प्रातः मंगल की होरा में मृगशिरा, चित्रा या धनिष्ठा नक्षत्र

बृहस्पत्ये नमः" के बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके धारण करना चाहिए। मन्त्र संख्या १९ हजार। यह नग शुक्ल पक्ष के गुरुवार की होरा में, अथवा गुरुपुष्य योग में या पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में धारण करना चाहिए।

पुखराज धनु, मीन राशि के अतिरिक्त मेष, कर्क, वृश्चिक, राशि वालों को लाभप्रद रहता है। धारण करने के पश्चात् गुरु से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना शुभ होता है।

गुरु का उपरत्न—सुनैला—इसे पुखराज का उपरत्न माना जाता है। पुखराज मूल्यवान होने के कारण सुनैला को उसके पूरक के रूप में धारण किया जा सकता है। श्रेष्ठ सुनैला हल्के पीले रंग (सरसों के जैसा पीलापन) का होता है। कई बार पुखराज से अधिक पीलापन लिए होता है तथा आंशिक मात्रा में पुखराज के समान ही उपयोगी होता है। धारण विधि पुखराज के समान ही होगी।

शुक्र-रत्न 'हीरा' (DIAMOND)

शुक्र ग्रह का मुख्य प्रतिनिधित्व 'हीरा' है।

संस्कृत में इसे वज्रमणि, हिन्दी में हीरा तथा अंग्रेजी में डायमण्ड (Diamond) कहते हैं। हीरा अत्यन्त चमकदार प्रायः श्वेत वर्ण का होता है।

पहचान—अत्यन्त चमकदार, चिकना, कठोर, पारदर्शी एवं किरणों से युक्त हीरा असली होता है।

परीक्षा—(i) धूप में यदि हीरा रख दिया जाये तो उसमें से इन्द्रधनुष जैसी किरणें दिखाई देती हैं। (ii) तोतेले बच्चे के मुंह में रखने से बच्चा ठीक से बोलने लगता है। (iii) अम्बरे में जुगनू की भान्ति चमकता है।

गुण—हीरे में वशीकरण करने की विशेष शक्ति होती है। इसके पहनने से वंश-वृद्धि, धन-लक्ष्मी व सम्पत्ति की वृद्धि, स्त्री एवं सन्तान सुख की प्राप्ति व स्वास्थ्य में लाभ होता है। वैवाहिक सुख में भी वृद्धिकारक माना जाता है।

औषधीय गुण—हीरे की भस्म शहद-मलाई आदि के साथ ग्रहण करने से अनेक रोगों में लाभ होता है जैसे—दौर्बल्यता, नपुंसकता, वायु प्रकोप, मन्दगति, वीर्य विकार, प्रमेह दोष, हृदय रोग, श्वेत प्रदर, विषैला व्रण, बच्चों में सूखा रोग, मानसिक कमजोरी इत्यादि।

धारण विधि—शुक्ल पक्ष के शुक्रवार वाले दिन, शुक्र की होरा में, भरणी, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा नक्षत्र, एक रति या इससे अधिक वजन का हीरा सोने की अंगूठी में जड़वा कर शुक्र के बीज मन्त्र (ॐ ह्रीं, द्रीं त्रीं सः शुक्राय नमः) का १६ हजार की संख्या में जाप करके शुभ मुहूर्त में धारण करना चाहिए। हीरा मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। धारण करने के दिन शुक्र ग्रह से सम्बन्धित वस्तुएं जैसे दूध, चाँदी, दही, मिश्री, चावल, श्वेत वस्त्र, चन्दनादि का दान यथाशक्ति करना चाहिए।

हीरा (धारण करने की तिथि से) सात वर्ष पर्यन्त प्रभावकारी बना रहता है। हीरा वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ राशि वालों को लाभदायक रहता है।

शुक्र के उपरत्न—(i) फिरोजा—नीले आकाशीय रंग जैसा यह नग शुक्र का उपरत्न माना गया है।

यह रत्न भूत, प्रेत, देवी आपदा तथा आने वाले कष्टों से धारक की रक्षा करता है। यदि इस रत्न को कोई भेटस्वरूप प्राप्त करके पहनेगा तो अधिक प्रभावशाली रहेगा। हल्के-प्रखर चमकदार रंग वाला रत्न उत्तम होता है। कोई भी कष्ट या रोग आने से पहले यह रत्न अपना रंग बदल लेता है। नेत्र रोग, सौन्दर्य, सिर दर्द, विषादि रोगों में विशेष लाभकारी रहता है।

में सोने या तंबे के अंगूठी में जड़वा कर, बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में ६, ८, १० या १२ रति के वजन में धारण करना कल्याणकर होता है। धारणोपरान्त मंगल स्तोत्र एवं मंगल ग्रह का दान करना शुभ होता है।

भौम बीज मन्त्र—ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः

शारीरिक स्वास्थ्य एवं कुं. में मंगल नीच राशिस्थ हो तो सफेद मूँगा भी धारण किया जाता है।

बुध रत्न पन्ना (EMERALD)

"पन्ना" बुध ग्रह का मुख्य रत्न है। संस्कृत में मरकतमणि, फारसी में जमरूद व अंग्रेजी में इमराल्ड (Emerald)। पन्ना रत्न हरे रंग, स्वच्छ, पारदर्शी कोमल, चिकना व चमकदार होता है। परीक्षा—(१) शीशे के गिलास में साफ पानी और पन्ना डाल दिया जाए तो हरी किरणें निकलती दिखाई देंगी। (२) शुद्ध पन्ने को हाथ में लेने पर वह हल्का, कोमल व आँखों को शीतलता प्रदान करता है।

गुण—'पन्ना' धारण करने से बुद्धि तीव्र एवं स्मरण शक्ति बढ़ती है। विद्या, बुद्धि, धन एवं व्यापार में वृद्धि के लिए लाभप्रद माना जाता है। पन्ना सुख एवं आरोग्यकारक भी है। यह रत्न जादू-टोने, रक्त विकार, पथरी, बहुमूत्र, नेत्र रोग, दमा, गुर्दे के विकार, पाण्डु, मानसिक विकलतादि रोगों में लाभकारी माना जाता है।

धारण विधि—यह नग शुक्ल पक्ष के बुधवार को अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, पू. फा. अथवा पुष्य नक्षत्रों में अथवा बुध की होरा में सोने की अंगूठी में दाएं हाथ की कनिष्ठिका (छोटी) अंगुली में बुधग्रह के बीजमन्त्र से अभिमन्त्रित करते हुए धारण करना चाहिए। इसका वजन ३, ६, ७ रति होना चाहिए।

बुध बीज मन्त्र—ॐ, ब्रां बीं ब्रौं सः बुधाय नमः

वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, मकर व मीन राशि वालों को विशेष लाभप्रद रहता है।

गुरु—रत्न पुखराज (TOPAZ)

पुखराज गुरु (बृहस्पति) ग्रह का मुख्य रत्न है। संस्कृत में इसे पुष्य राजा, हिन्दी में पुखराज, व अंग्रेजी में टोपाज (Topaz) कहते हैं।

पहचान विधि—जो पुखराज स्पर्श में चिकना, हाथ में लेने पर कुछ भारी लगे, पारदर्शी, प्राकृतिक चमक से युक्त हो वह उत्तम कोटि का माना जाता है।

परीक्षा—(i) जहाँ किसी विषेले कीड़े ने काटा हो, वहाँ पर असली पुखराज घिस कर लगाने से विष उतर जाता है। (ii) चौबीस घण्टे कच्चे दूध में रखने के बाद यदि चमक में अन्तर न पड़े तो पुखराज असली होगा। इत्यादि।

गुण—पुखराज धारण करने से बाल, बुद्धि, स्वास्थ्य एवं आयु की वृद्धि होती है। वैवाहिक सुख, पुत्र सन्तान कारक एवं धर्म-कर्म में प्रेरक होता है। प्रेत-वाधा का निवारण एवं स्त्री के विवाहसुख की बाधा को दूर करने में सहायक होता है।

औषधी प्रयोग—इसकी वैद्य के परामर्शनुसार केवड़ा एवं शहदादि के साथ देने से पीलिया, तिल्ली, पाण्डु रोग, खांसी, दन्त रोग, मुख की दुर्गन्धि, बवासीर, मन्दगति, पित्त-ज्वरादि में लाभदायक होता है।

धारण विधि—पुखराज रत्न ३, ५, ७, ९ या १२ रति के वजन का सोने की अंगूठी में जड़वा कर तर्जनी अंगुली में धारण करें, सुवर्ण या ताम्र वर्तन में कच्चा दूध, गंगाजल, पीले पुष्पों से एवं "ऊँ ऐं क्लीं"

(ii) ओपल (Opel): यह भी शुक्र का अन्य उपरतल है, इसको धारण करने से सदाचार, सदाचित्तन तथा धार्मिक कार्यों की ओर रुचि रहती है। अधिक लोकप्रिय नहीं है। इसके अतिरिक्त शुक्र के अन्य भी बहुत से उपरतल प्रचलित हैं।

शनि रत्न नीलम (SAPPHIRE)

नीलम शनिग्रह का मुख्य रत्न है। हिन्दी में नीलम तथा अंग्रेजी में सैफायर (Sapphire) कहते हैं। पहचान—असली नीलम चमकीला, चिकना, मोरपंख के समान वर्ण जैसा, नीली किरणों से युक्त एवं पारदर्शी होगा।

परीक्षा—(i) असली नीलम को गाय के दूध में डाल दिया जाए तो दूध का रंग नीला लगता है। (ii) पानी से भरे कांच के गिलास में डाला जाए नीली किरणें दिखाई देंगी। (iii) सूर्य की धूप में रखने से नीले रंग की किरणें दिखाई देंगी।

गण—नीलम धारण करने से धन-धान्य, यश-कीर्ति, बुद्धि, चातुर्य, सर्विस एवं व्यवसाय तथा वंश में वृद्धि होती है। स्वास्थ्य सुख का लाभ होता है।

ध्यान रहे, बहुधा नीलम चौबीस घण्टे के भीतर ही प्रभाव करना शुरू कर देता है। यदि नीलम अनुकूलन न बैठे तो भारी नुकसान की आशंका हो जाती है। अतएव परीक्षा के तौर पर कम से कम ३ दिन तक पास रखने पर यदि बुरे स्वप्न आए, रोग-उत्पन्न हो या चंहेरे की बनावट में अन्तर आ जाए तो नीलम मत पहनें।

रोग शान्ति—नीलम धारण करने या औषधि रूप में ग्रहण करने से दमा, क्षय, कुष्ठ रोग, हृदय रोग, अजीर्ण, मूत्राशय सम्बन्धी रोगों में लाभकारी है।

धारण विधि—नीलम ५, ७, ९, १२ अथवा अधिक रस्ति के वजन का, पंचधातु, लोहे अथवा सोने की अंगूठी में शनिवार को शनि की होरा में एवं पुष्य, उभा, चित्रा, स्वा, धनि या शतभिषा नक्षत्रों में शनि के बीज मन्त्र ॐ प्रां. प्रौ. सः शनये नमः मन्त्र से २३००० की संख्या में अभिमन्त्रित करके धारण करें। तत्पश्चात् शनि की वस्तुओं का दान दक्षिणा सहित करना कल्याणकारी होगा।

राहु रत्न-गोमेद (ZIRCON)

राहु रत्न गोमेद को संस्कृत में गोमेदक, अंग्रेजी झिरकन (Zircon) कहते हैं। गोमेद का रंग गोमूत्र के समान हल्के पीले रंग का, कुछ लालिमा तथा श्यामवर्ण होता है। स्वच्छ, भारी, चिकना गोमेद उत्तम होता है तथा उसमें शहद के रंग की झाई भी दिखाई देती है।

पहचान विधि—सामान्यतः गोमेद उल्लू अथवा बाज की आँख के समान होता है तथा गोमूत्र के समान, दल रहित अर्थात् जो परतदार न हो, ऐसे गोमेद उत्तम होंगे। (१) शुद्ध गोमेद को २४ घण्टे तक गोमूत्र में रखने से गोमूत्र का रंग बदल जाएगा।

धारण विधि—गोमेद रत्न शनिवार को शनि की होरा में, स्वाती, शतभिषा, आर्द्रा अथवा रविपुष्य योग में पंचधातु अथवा लोहे की अंगूठी में जड़वाकर तथा राहु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके दाएं हाथ की मध्यमा अंगूठी में धारण करना चाहिए। इसका वजन ५, ७, ९ रस्ती का होना चाहिए।

राहु बीज मन्त्र—“ॐ भ्रां भ्रौं, धौं सः राहवे नमः”
धारण करने के पश्चात् बीजमन्त्र का पाठ हवन एवं सूर्य भगवान को अर्घ्य प्रदान कर नीले रंग का वस्त्र, कम्बल, तिल, बाजरा आदि दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक गोमेद धारण करने से अनेक प्रकार की बीमारियां नष्ट होती हैं, धन-सम्पत्ति-सुख, त्तान वृद्धि, वकालत व राजपक्ष आदि की उन्नति के लिए अत्यन्त लाभकारी है। शत्रु-नाश हेतु भी का प्रयोग प्रभावी रहता है।

जिनकी जन्म कुण्डली में राहु १, ४, ७, ९, १० वें भाव में हो, उन्हें गोमेद रत्न पहनना चाहिए। मकर लान वालों के लिए गोमेद शुभ होता है।

केतु रत्न लहसनिया (CAT'S EYE STONE)

केतु-रत्न लहसनिया को संस्कृत में वैदूर्य, हिन्दी में लहसनिया, अंग्रेजी में Cat's eye Stone कहते हैं। यह नाग अश्वरे में बिल्ली की आँखों के समान चमकता है। लहसनिया ४ रंगों में पाया जाता है। काली तथा खैत आभा युक्त लहसनिया जिस पर यज्ञोपवीत के समान तीन धारियां खिंची हों, वह वैदूर्य ही उत्तम होता है।

पहचान—(१) असली लहसनिया को यदि हड्डी के ऊपर रख दिया जाए तो वह २४ घण्टे के भीतर हड्डी के आर-पार छेद कर देता है। (२) असली वैदूर्य में डाई या तीन सफेद सूत्र होते हैं, जो बीच में इधर-उधर घूमते हिलते रहते हैं।

धारण विधि—लहसनिया रत्न बुधवार के दिन अश्विनी, मघा, मूला नक्षत्रों में, रविपुष्य योग में पंचधातु की अंगूठी में कनिष्ठका अंगूली में धारण करें। धारण करने से पूर्व केतु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करें। ५ रस्ती से कम वजन का नहीं होना चाहिए। प्रत्येक ३ वर्ष पश्चात् नई अंगूठी में लहसनिया जड़वाकर उसे अभिमन्त्रित कर धारण करना चाहिए।

केतु बीज मन्त्र—“ॐ स्नां स्त्रीं, स्त्रीं, सः केतवे नमः”

रत्न धारण करने के पश्चात् बुधवार को ही किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण को तिल, तेल, कम्बल, धूम्रवर्ण का वस्त्र, सप्तधातु (अलग-अलग रूप में) यथाशक्ति दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक लहसनिया धारण करने से भूत प्रेतादि की बाधा नहीं रहती है। सन्तान सुख, धन की वृद्धि एवं शत्रु व रोग नाश में सहायता प्रदान करता है।

अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारे यहाँ 'रत्न ज्योतिष विज्ञान' पुस्तक 35 रु० भेजकर मांगवा सकते हैं। बृहदारत्न शास्त्र, मूल्य १०० रुपये, जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर।

घर बैठे ही अपना भविष्य जानें

(सही फलादेश का आधार वैज्ञानिक ढंग परनिर्मित शुद्ध जन्मपत्री है।)

जन्म कुण्डली टेवा : संक्षिप्त रूप से अपना भविष्य जानने के लिए अपनी जन्म तारीख, जन्म समय, जन्म स्थान, पिता का नाम, दादा का नाम, गोत्र लिखें भेजें जिसकी फीस 251 रुपए होगी।

वर्षफल आपके लिए यह वर्ष कैसा रहेगा। यह जानने के लिए जन्म कुण्डली की नकल अवश्य भेजें। यदि जन्म कुण्डली नहीं है तो पत्र लिखने का समय अंग्रेजी तारीख, स्थान तथा अपनी पारिवारिक व कारोबारी समस्या स्पष्ट लिखते हुए मनपसन्द फूलका नाम भी लिखें। विस्तारपूर्वक फलादेश के लिए फीस 275 रुपए होगी। कृपया पूर्ण राशि अग्रिम भेजें। विदेश के लिए 25 पौंड अथवा 31 डालर होंगे।

जन्मपत्री (सम्पूर्ण) : इसमें आपके जीवन में होने वाली महत्वपूर्ण घटनाओं, नौकरी, व्यवसाय, शिक्षा, विवाहादि के सम्बन्ध में विस्तृत रूप से विवरण दिया जाएगा जिसकी फीस 551 रुपए होगी। जन्मपत्री बनवाने के लिए जन्म समय, जन्म स्थान, जन्म तारीख, गोत्र, प्रसिद्ध नाम, पिता का नाम, दादा का नाम लिख भेजें। विदेश में पैदा होने वाले सज्जनों के लिए फीस 751 रुपए से 1500 रुपए होगी। कृपया पूरी राशि अग्रिम भेजें। विदेश के लिए 25 पौंड अथवा 40 डालर होंगे। डाक व्यय अलग होगा।

कम्प्यूटर द्वारा जन्मपत्री बनाने की दक्षिणा शुल्क 201 रुपए से लेकर 501 रुपए तक होगी।

पं. पन्ना लाल ज्योतिषी, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर-8 2457959-239

ज्योतिष सम्बन्धी अनुपम पुस्तकें बी० पी. पी. द्वारा मंगवाई

ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड)

इसमें भारतीय ज्योतिष के प्रारम्भिक इतिहास से लेकर ज्योतिष सम्बन्धी प्रारम्भिक ज्ञान—सम्पूर्ण बड़ी जन्मपत्री निर्माण शैली, ग्रहों से सप्तवर्षी बलाघात निकालना। भावों, राशियों एवं ग्रहों तथा फलादेश सम्बन्धी मूलभूत सिद्धान्तों को अत्यन्त सरल शैली में प्रस्तुत किया गया है। (मूल्य 60 रुपए)

वर्षफल चन्द्रिका

(नवीन संशोधित संस्करण)

इसमें अब प्राचीन सूर्य सिद्धान्तीय, नवीन वेधसिद्ध सारिणी के अतिरिक्त लाल किताब के अनुसार वर्षफल बनाने तथा पुराणोक्त, तान्त्रिक व लाल किताब के उपायों का समावेश किया गया है। प्रश्नकाल एवं गौरवफल कथन की रीतियों का विशद वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त वर्षफल बनाने और वर्ष भर का ठीक-ठीक फलादेश कहने के लिए उत्तम पुस्तक है। (मूल्य 60 रु.)

ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) प्रथम भाग

गत कई वर्षों से जो प्रकाशनाधीन था। अब छपकर आ चुका है। फलित ज्योतिष सम्बन्धी आरम्भिक जानकारी सहित प्रत्येक लान एवं राशि के अनुसार ग्रहों का फल, दृष्टि फल, तथा कुण्डली में बने वाले अनेकों योगों एवं फलादेश बताते हैं मूलभूत सिद्धान्तों को अत्यन्त सरल शैली में प्रस्तुत किया गया है। लेखक के अधिक परिश्रम का परिणाम है। मूल्य 250/-

ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) द्वितीय भाग

(फलित ज्योतिष सम्बन्धी सम्पूर्ण ज्ञान हेतु) फलादेश कथन में विशेष सूत्र, तुला से मीन लान राशियों तक के सम्बन्ध में गुण, स्वभाव, शिक्षा, कैरियर, स्वास्थ्य रोग, प्रेम विवाह, व्यवसाय उपायों आदि के सम्बन्ध में सूक्ष्म एवं विस्तृत जानकारी, कुण्डली में सभी ग्रहों

का अनेक उदाहरण कुण्डलियों सहित भागवत फलादेश, दो-तीन एवं अधिक ग्रहों के योग फल, दशाऽन्तर्दशाओं द्वारा फलादेश, विराश, ज्योतिष और रोग, स्त्री जातिकाओं सम्बन्धी फल एवं मंगलीक दोष आदि विषयों पर महत्त्वपूर्ण एवं शोधपूर्ण व्याख्याओं सहित अत्यन्त सरल शैली में प्रस्तुत किया गया है। मूल्य 250 रुपए।

पं० देवीदयालु ज्यो. एण्ड सन्स द्वारा

प्रकाशित 'राशिफल'—सन् 2005 ई.

जन्म एवं नाम राशि के आधार पर सन् 2005 ई० का दैनिक एवं सप्ताहिक राशिफल—जिसमें प्रत्येक स्त्री-पुरुष की वर्षभर में समय-समय पर घटने वाली घटनाएँ और उनका प्रभाव, व्यवसाय, दाम्पत्य सुख, स्वास्थ्य तथा अन्य समस्त विषयों के फलादेश सहित उपाए दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त संक्षिप्त लौहाद, राशि-सादेसमिति तथा रत्नों सम्बन्धी जानकारी भी दी गई है। (मूल्य—30 रु.)

ज्योतिष सम्बन्धी अन्य अपूर्व पुस्तकें

अर्द्ध शताब्दि पंचांग 640 रु०
श्री दशवर्षीय पंचांग 160 रु०
ग्रहों को कैसे शान्त करें —85 रु०
तनुभाव प्रकाश 30 रु०
मुफीद आलम जन्मी (हिन्दी-उर्दू-पंजाबी) 40 रु०
ज्यो. ज्ञान शास्त्र (पंजाबी) 75 रु०
ज्योतिष और सन्तान योग 50 रु०
ज्योतिष और रोग 50 रु०
ज्योतिष और व्यवसाय 50 रु०
भारतीय ज्योतिष (नैमिचन्द्र) 200 रु०
फलदीपिका 120 रु०
भृगु संहिता 200 रु०
भृगु संहिता (छोटी) 100 रु०
भारतीय ज्योतिष (लाल किताब) 155 रु०
लाल किताब ज्योतिष (पं. अशान्त) 200 रु०
शनि सादेसमिति से छुटकारा 40 रु०
पडवर्ग फलम 180 रु०

शिवरात्रि व्रत कथा (भा. टी.) शिवरात्रि पूजन कैसे करें ?

श्रीमहाशिवरात्रि का व्रत सब व्रतों में उत्तम एवं कल्याणकारी है। जैसे गंगा जी के समान कोई तीर्थ नहीं है। भगवान् शंकर के समान कोई दूसरा देवता नहीं है तथा शिवरात्रि से बढ़कर दूसरा कोई व्रत एवं त्यं नहीं है।

व्याख्याकार पं. पन्ना लाल द्वारा प्रणीत इस महाशिवरात्रि व्रत कथा में माहात्म्य, आध्यात्मिक रहस्य एवं सम्पूर्ण पूजन विधि, उद्यापन, व्रत कथा, रूद्राष्टक, शिव पंचाक्षर, शिव चालीसा, शिव षडक्षर स्तोत्र, शिवमानस पूजा, आरती सहित बहुत सरल एवं सुबोधगम्य ढंग से प्रस्तुत की गई है जिससे शिव भगत स्वयं शिवरात्रि पूजन कर पुण्य लाभ ले सकें।

पुस्तक खरीदते समय व्याख्याकार पं. पन्ना लाल ज्योतिषी का नाम तथा जनरल बुक डिपो का पता अवश्य देख लें अथवा सीधे वी.पी.पी. द्वारा मंगवाएं। मूल्य 25/- (डाक व्यय अलग)।

ज्योतिष की दुर्लभ

लाल किताब

अब हिन्दी में उपलब्ध मूल्य डाक व्यय सहित 500 रुपए उर्दू की फोटोस्टेट (असली) मूल्य—1500 रुपए

सभी प्रकार की पुस्तकें मंगवाने का पता—

जनरल बुक डिपो (पब्लिशर्स)

अड्डा होशियारपुर

जालन्धर शहर (पंजाब) फोन : 2457959

नोट—प्रत्येक आर्डर के साथ 50 रुपए अग्रिम राशि M.O. द्वारा भेजें। (डाक व्यय अलग)

हस्त रेखा विज्ञान—कोरो 60 रु०
हस्तरेखाएँ और दाम्पत्य जीवन 150 रु०
चमत्कार और दाम्पत्य ज्यो० द्वारा रोग विचार 175/-
ज्यो. और दाम्पत्य जीवन 125/-
ज्यो. और कालनिर्णय 200/-
कालपर्यं एवं घट विवाह 50/-
लान दर्शन पं. अशान्त (चार भाग) 100/-
ज्योतिष सर्वस्व 400/-
अनिष्ट ग्रह निवारण 200/-
सूर्य मिडान्त 40/-
लघु पराशरी 60/-
सर्वार्थ निरामांज 70/-
सुनहरी किताब 40/-
अष्टकवर्ग से भविष्य ज्ञान 150/-

—वास्तुशास्त्र विज्ञान पर—

सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र 100 रु०
वास्तुशास्त्रानुसार भवन निर्माण 120 रु०
रेमिडियल वास्तु शास्त्र 150 रु०
भारतीय वास्तुशास्त्र 120 रु०
व्यवहारिक वास्तुशास्त्र 100 रु०
कर्मशैल्यल वास्तुशास्त्र 150 रु०
पर्यावरण वास्तुशास्त्र 150 रु०
वास्तुकला और भवन निर्माण 120 रु०
वास्तुशास्त्र रहस्य 250 रु०
वास्तु द्वारा धन प्रवेश 300 रु०
समरगण वास्तुशास्त्र 70 रु०
सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र 200 रु०
वास्तु दोष निवारण 100 रु०
फेंग शुई 151 स्वर्णिम सूत्र 100 रु०

रत्न ज्योतिष

रत्न ज्योतिष 50 रु०
रत्न पहने भाग्य बदलें 60 रु०
रत्न प्रदीप 100 रु०
सम्पूर्ण रत्न विज्ञान 110 रु०
रत्न, रूद्राक्ष और भाग्य 150 रु०
रत्न और रूद्राक्ष 40 रु०
रत्न परिचय 150 रु०
रत्नों का रहस्यमय संसार 200 रु०
रेखाओं का रहस्यमय संसार 195 रु०

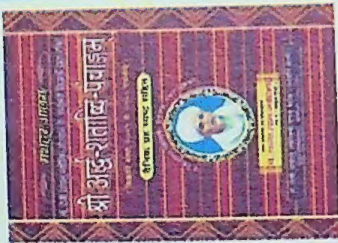
पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान वालों की

"श्री अर्द्धशताब्दि पंचांग"

(दैनिक ग्रह स्पष्ट सहित)

(संवत् 2001 से संवत् 2050 तक)

नवीन संशोधित संस्करण



(गत 50 वर्षों में उत्पन्न किसी भी जातक की जन्मपत्री मिनटों में बनाएँ)

मशहूर आलम पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान द्वारा प्रकाशित पुरातन पंचांगों (संवत् 2001 से संवत् 2050 तक) तक का एक सम्पूर्ण ग्रामाणिक संग्रह ग्रंथ है, जो संस्थान के अनुभवी विद्वानों द्वारा पुनः संशोधित करके तैयार किया गया है इसमें तिथि, नक्षत्र, योग आदि घड़ी/पलों के साथ-साथ सभी ग्रहों के राशि परिवर्तनों का विवरण अलग से घण्टा-मिनटों में दिया गया है, जिससे यह पंचांग संकलन ग्रन्थ आधुनिक संदर्भ में भी सभी ज्योतिषी भाइयों के लिए अत्यन्त उपयोगी हो गया है। इसके अतिरिक्त इसमें भारत के प्रसिद्ध नगरों के तथा विदेशी नगरों के भी अक्षांश-रेखांश, घड़ी पलों का घण्टों मिनटों (स्टैंड टाई) में परिवर्तन सारणी, विविध नगरों की लग्नसारणियाँ, विश्व के सभी स्थलों के सूर्योदयास्त जानने की सारणियाँ तथा ज्योतिष सम्बन्धी अनेक उपयोगी विषयों का समावेश किया गया है, जिससे यह ग्रंथ अखिल भारतवर्ष के ज्योतिषियों के लिए अत्यन्त उपयोगी हो गया है।



ज्योतिषियों एवं जन्मपत्री निर्माण वालों के लिए एक संग्रहणीय ग्रंथ है।
640 रुपये का मनीआर्डर भेजकर रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा मंगवाएँ।

मंगवाने का पता : — जनरल बुक डिपो (पब्लिशार्ज)

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पिन—144008) फोन : (0181) 2457959

पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान वालों की

श्री दशवर्षीय पंचांग

(दैनिक ग्रह स्पष्ट सहित)

(संवत् 2051 से संवत् 2060 तक)

(सन् 1994 से सन् 2004-05 ई० तक)

सम्पादक : पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी



हमारे ज्योतिष संस्थान से गत वर्ष से प्रकाशित 'अर्द्ध शताब्दी पंचांग'—(संवत् 2001 से संवत् 2050 तक) को ज्योतिष के विद्वानों द्वारा हृदय से सराहा गया है। द्वितीय संशोधित संस्करण भी छप गया है। ज्योतिष विद्वानों के विशेष अनुरोध पर अब संवत् 2051 से 2060 तक वर्षों की दस वर्षीय पंचांग भी आकर्षक बड़िया जिल्द तथा अन्य ज्योतिष तथा जन्मपत्री निर्माण सम्बन्धी विषयों सहित छप कर तैयार हो चुकी है। इस पंचांग की सहायता से आप पिछले दस वर्षों में उत्पन्न बालक/बालिका की जन्मपत्री का निर्माण (बिना गहन गणित किए) शीघ्र बना सकते हैं। आशा है, यह ज्योतिष संकलन ग्रन्थ भी 'अर्द्ध शताब्दी पंचांग' की भांति ज्योतिष भाइयों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।

मूल्य 160 रुपये + 30 रुपये = 190 रुपये भेजकर रजिस्टर्ड पैकेट द्वारा मंगवाएँ।



ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) दो भागों में छपकर तैयार हो चुका है।
मूल्य 250 रुपये प्रत्येक

→ समस्त भारत में **ऐम बी डी** का एकछत्र राज्य ←

अनुभव और अनुभवी अध्यापकों का कमाल

ऐम बी डी पुस्तकें

एक चमत्कार

ऐम बी डी पुस्तकें

आपकी सफलता बनाए यादगार

ऐम बी डी पुस्तकें

सफलता के ताने पर बुनीं

ऐम बी डी पुस्तकें

→ सम्पूर्ण, अभूतपूर्व एवं नवीनतम पाठ्यक्रमों के सभी प्रश्न उत्तर सहित
अन्य परीक्षायोगी प्रश्नों का समावेश
स्कूल और कालेज की सभी कक्षाओं के सभी विषयों पर

सम्पूर्ण भारत में सर्वत्र उपलब्ध

